ब्लूमफील्ड

भाषा

अनु॰ डॉ॰ विश्वनाथ प्रसाद

भाषा

[ब्लूमफील्ड की 'लैंग्वेज' का अनुवाद]

अनुवादक

डा० विश्वनाथ प्रसाद

एम० ए०, पी-एच० डी० (लन्दन)

भूतपूर्व निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, तथा अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षामंत्रालय, भारत सरकार

सहायक

डा० रमानाथ सहाय

रीडर, क० मु० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली :: वाराणसी :: पटना

बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
चौक, वाराणसी-1 (उ० प्र०)
अशोक राजपथ पटना-4 (बिहार)

By arrangement with M/s George Allen & Unwin Ltd., London
प्रथम संस्करण
1968

श्री सुन्दर लाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–7 द्वारा प्रकाशित तथा श्री शांतिलाल जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, बंगलो रोड, जवाहर, नगर, दिल्ली–7 द्वारा मुद्रित ।

दो शब्द

हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में पुस्तकों के प्रकाशन की विभिन्न योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही हैं। हिन्दी में अभी तक ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है, इसलिए ऐसे साहित्य के प्रकाशन को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इस उद्देश्य से जो योजनाएँ बनाई गई हैं, उनमें से एक योजना प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकें प्रकाशित करने की है। इस योजना के अधीन भारत सरकार प्रकाशित पुस्तकों की निश्चित संख्या में प्रतियां खरीदकर उन्हें मदद पहुँचाती है।

प्रस्तुत पुस्तक इसी योजना के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है। इसके अनुवाद और कापी राइट इत्यादि की व्यवस्था प्रकाशक ने स्वयं की है तथा इसमें शिक्षा-मंत्रालय द्वारा स्वीकृत शब्दावली का उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक ब्लूमफ़ील्ड कृत "लैंग्वेज" नामक ग्रन्थ का अनुवाद है। यह ग्रंथ भाषा-विज्ञान के आधारभूत ग्रंथों में गिना जाता है। यद्यपि इसकी रचना आज से तीन दशक पूर्व हुई थी फिर भी भाषा-विज्ञान के मूल-तत्वों की समझ के लिए इसकी उपयोगिता आज निर्विवाद है।

संयोग है कि इस ग्रंथ का अनुवाद केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के भूतपूर्व निदेशक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष और देश के जाने-माने भाषा वैज्ञानिक स्वर्गीय डा० विश्वनाथ प्रसाद के हाथों संपन्न हुआ। उनकी साधना और श्रमशीलता का परिचय स्थल-स्थल पर मिलता है।

आशा है इस विषय में रुचि रखने वाले विद्वान् और अध्येता इस अनुवाद का स्वागत करेंगे।

हमें विश्वास है कि प्रकाशकों के सहयोग से प्रकाशित साहित्य हिन्दी को समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होगा और इस व्यवस्था के फलस्वरूप ज्ञान-विज्ञान से संबंधित अधिकाधिक पुस्तकें हिन्दी के पाठकों को उपलब्ध हो सकेंगी।

आशा है यह योजना सभी क्षेत्रों में लोकप्रिय होगी।

ए. चंद्रहासन

(ए० चन्द्रहासन)
निदेशक
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

प्रकाशकीय वक्तव्य

हिन्दी को राजभाषा गौरव प्रदान होने के उपरान्त भी भाषा-शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का सर्वथा अभाव-सा है। अन्य भाषाओं में तो इस विषय पर प्रचुर मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए हमने कुछ बहुचर्चित पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कराने की योजना बनाई है। सर्वप्रथम हमने स्वर्गीय डा० पी० डी० गुणे की अंग्रेजी पुस्तक *Introduction to Comparative Philology* का हिन्दी अनुवाद तुलनात्मक भाषा विज्ञान के पंडित डा० भोलानाथ तिवारी द्वारा अनूदित प्रस्तुत किया।

प्रस्तुत पुस्तक ब्लूमफील्ड की *Language* का हिन्दी अनुवाद है जो इस लड़ी की दूसरी कड़ी है। हमारे विशेष अनुरोध पर भाषाविज्ञान के प्रकांड विद्वान् स्वर्गीय डा० विश्वनाथ प्रसाद ने अपने व्यस्त जीवन में भी अनुवाद का भार स्वीकार किया। खेद है कि हम पुस्तक को उनके जीवन काल में प्रस्तुत न कर सके। आशा है कि इस पुस्तक से हिन्दी में भाषा-विज्ञान की एक बड़ी कमी दूर हो सकेगी।

प्रकाशक

प्रस्तावना

प्रस्तुत कृति मेरी "Introduction to the Study of Language" पुस्तक का संशोधित संस्करण है जो सर्वप्रथम सन् 1914 में हेनरी होल्ट एंड कम्पनी द्वारा न्यूयार्क में प्रकाशित हुई थी। मैंने प्रस्तुत संस्करण में बहुत परिवर्धन किया है, क्योंकि प्राचीन और नवीन दोनों संस्करणों के रचना काल के बीच भाषाविज्ञान का बहुत विकास हुआ है। वैज्ञानिक एवं साहित्यिक मनीषी इस विज्ञान को अब विशेष महत्त्व देने लगे हैं।

मैंने अपनी पहली कृति के समान इस कृति को साधारण पाठक के लिए तैयार किया है और साथ-ही-साथ उस छात्र के लिए भी जो अभी भाषा-क्षेत्र में प्रविष्ट हुआ है। प्रस्तुत विषय-प्रवेशिका के बिना भाषा-विज्ञान की विशिष्ट कृतियाँ उसके समझ में नहीं आ सकतीं। कोई भी साधारण पाठक किसी भी विषय के विशिष्ट अध्ययन को वैसा महत्व नहीं देता जैसाकि वह उसके व्यवस्थित व सुसम्बद्ध व्याख्यान को देता है; क्योंकि विशिष्ट विषय, जब तक उसकी पृष्ठ भूमिस्पष्ट नहीं होती, समझ में नहीं आता। अत: कोई भी व्यक्ति जिसने एक बार भी भाषा के वैचित्र्य, सौन्दर्य और महत्व को समझा है उसकी ऐतिहासिक व्याख्या की ओर ध्यान नहीं देगा।

भाषासम्बन्धी कुछ गम्भीर, महत्वपूर्ण तथ्य प्रारम्भिक अध्ययन की कृतियों में नहीं, अपितु प्रौढ अध्ययन की कृतियों में पाए जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन तथ्यों को सरल शब्दों में कहने का प्रयास किया गया है और साथ-ही-साथ यह समझाने की भी चेष्टा की गई है कि मानवीय कार्य-कलाप पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है। सन् 1914 में मैंने विल्हेल्म वुन्ड की मानसशास्त्रीय प्रणाली को अपनी व्याख्यात्मक शैली का आधार बनाया जिसे विद्वानों ने बहुमत से स्वीकृत किया। तबसे आज तक मानसशास्त्र की दिशा में बहुत कुछ उथल-पुथल हुआ है। हमने सीखा, जैसाकि हमारे एक शिक्षक ने तीस वर्ष पहले अनुभव किया था, कि हम मानसशास्त्र के सिद्धान्तों का आश्रय लिए बिना भी भाषा का अध्ययन कर सकते हैं। ऐसा करने पर हमारे निष्कर्ष भी सही उतरते हैं और भाषा-क्षेत्र में प्रगतिशील व्यक्तियों को उनसे लाभ भी होता है। प्रस्तुत पुस्तक में

मैंने भाषा-विज्ञान के लिए किसी अन्य विज्ञान की आश्रयता को स्थान नहीं दिया। सिर्फ तुलनात्मक दृष्टिकोण से मैंने कहीं-कहीं व्यक्त किया है कि मानसशास्त्र की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ किस प्रकार भाषाशास्त्र की व्याख्यात्मक प्रणाली को विविध प्रकार से प्रभावित करती हैं। मानसशास्त्र के विद्वान् मानस सम्बन्धों से भाषासम्बन्धी तथ्यों की व्याख्या करते हैं। किन्तु मानस-शास्त्र की भिन्न-भिन्न शाखाओं में इन तथ्यों का स्वरूप भिन्न-भिन्न हो जाता है। यांत्रिक वैज्ञानिकों का विचार है कि भाषा-विज्ञान के तथ्यों को किन्हीं अतिरिक्त वैज्ञानिक तथ्यों की आश्रयता के बिना प्रस्तुत किया जाय। मैंने इस कृति में इस माँग की पूर्ति करने का भरसक प्रयत्न किया है, केवल इसलिए नहीं कि मेरी यह धारणा है कि यांत्रिक विज्ञान वैज्ञानिक व्याख्या का एक आवश्यक रूप है किन्तु इसलिए भी कि अपने बल पर खड़ा हुआ व्याख्यान अपेक्षाकृत दृढ़ होता है और साथ ही सुविधापूर्वक समझा जा सकता है। दूसरी ओर जो व्याख्यान अन्य विज्ञानों के परिवर्तनशील सिद्धान्तों से जगह-जगह पर प्रभावित होते हैं, उतने दृढ़ और सरल नहीं होते।

इस पुस्तक के सभी प्रकरणों में मैंने बहुसम्मत विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है और अत्युपयोगी मानिक उदाहरण भी दिए हैं। विवादास्पद विषयों पर मैंने कभी अपनी सम्मति प्रकट नहीं की। ऐसे विषयों को केवल प्रस्तुत करके छोड़ दिया है। बहु-सम्मत और विवाद-ग्रस्त विषयों पर मैंने पादटिप्पणियों में तथा ग्रन्थसूची में कई ग्रन्थों के प्रसङ्ग दिए हैं। पाठक यदि चाहेगा तो उनसे अपने निष्कर्ष निकाल लेगा।

अन्त में मैं उन सब मनीषियों का आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य में सहयोग दिया और भाषा-विज्ञान के तथ्यों से मुझे अवगत कराया। मैं प्रकाशक मुद्रक और उस योग्य वर्णयोजक कर्मचारी का आभारी हूँ जिनका इस पुस्तक के प्रकाशन में विशेष योगदान रहा है।

शिकागो, जनवरी 1933

—ब्लूमफील्ड

विषय-सूची

अध्याय 1

भाषा का अध्ययन

1.1 भाषा का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है, किन्तु कदाचित् अत्यधिक परिचय के कारण बहुत ही कम लोग इस पर ध्यान देते हैं, और बहुधा साँस लेने अथवा चलने के समान इसे सहज रूप से स्वीकार कर लेते हैं। इसके अतिरिक्त, भाषा के प्रभाव असाधारण हैं--उसके कारण मनुष्य अन्य जीवों से भिन्न है, किन्तु हम लोगों के शैक्षिक कार्यक्रमों में अथवा हमारे दार्शनिकों के अनुशीलनों में इसे कोई स्थान नहीं मिला है।

कुछ ऐसी परिस्थितियाँ अवश्य हैं जिनमें परम्परागत शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति भाषाविषयक तथ्यों पर विचार-विवेचन करता है। कभी-कभी 'शुद्धता' के प्रश्न पर विवाद खड़ा हो जाता है--जैसे भाषा का अमुक रूप 'शुद्ध' है या अमुक (उदाहरणार्थ--अंग्रेजी में It's I शुद्ध है या it's me)। किन्तु ऐसे स्थलों पर उसके विवेचन प्रायः दृढ़बद्ध प्रतिमान का अनुकरण करते हैं। यदि संभव हो सका तो वह उत्तर के लिए लेखन-परम्परा की ओर देखता है, जैसे often अथवा soften जैसे शब्दों में t का उच्चारण हो या न हो, इस प्रश्न के उत्तर में; अन्यथा वह आप्तता का आश्रय लेता है। वह यह विश्वास करता है कि एक प्रकार का भाषण-प्रयोग निसर्गतः सही है और दूसरा गलत, और कुछ विद्वान्, विशेषतः व्याकरण अथवा कोषों के रचयिता, हमें बता सकते हैं कि कौन प्रयोग सही है और कौन गलत। फिर भी अधिकतर वह इन आप्तग्रन्थों को काम में न लाकर इन विचारणीय प्रश्नों को ऐसी दार्शनिक तर्कना से हल करना चाहता है जिसमें 'उद्देश्य' 'कर्म' 'विधेय' आदि पदावली प्रयुक्त होती है। यह भाषाविषयक समस्याओं को हल करने की एक सामान्यज्ञानिक पद्धति है। किन्तु यह पद्धति वस्तुतः उसी प्रकार अत्यन्त वाक्छलपूर्ण है जैसी कि अपने को सामान्यज्ञानिक कहने वाली अन्य पद्धतियाँ होती हैं, और इसका मूल प्राचीन अथवा मध्यकालीन दार्शनिकों के अनुशीलनों में है।

किन्तु पिछली सदी में या उसके आसपास पहले-पहल भाषा का अध्ययन एक वैज्ञानिक पद्धति में सावधान और व्यापक प्रेक्षण द्वारा किया गया। इसके पूर्व के इस प्रकार के अध्ययन अपवाद रूप हैं और उन पर अभी तुरन्त विचार किया

जाएगा। भाषाशास्त्र (अर्थात् भाषा का अध्ययन) अभी प्रारंभिक अवस्था में है। उसके द्वारा प्राप्त ज्ञान अभी हमारी परम्परागत शिक्षा का अंग नहीं बन पाया है। हम लोगों के स्कूलों में 'व्याकरण' और अन्य भाषाशास्त्रीय शिक्षण परम्परागत धारणाओं के विवेचन में ही सीमित है। बहुत-से लोगों को भाषा-अध्ययन के प्रारम्भ में कठिनाई होती है किन्तु वह कठिनाई नई रीतियों और परिणामों को (जो कि पर्याप्त सरल हैं) सीखने में नहीं होती है बल्कि उन पूर्व-धारणाओं को दूर करने में होती है जो हमारे प्रचलित-शैक्षिक सिद्धान्तों ने हमारे ऊपर थोप रक्खी हैं।

1.2 प्राचीन ग्रीसवासियों में ऐसा बुद्धिकौशल था कि वे उन तथ्यों अथवा घटनाओं पर चिन्तन करते थे जिन्हें अन्य लोग सहज रूप से स्वीकार करते थे। उन्होंने भाषा के उद्गम, इतिहास और संघटन पर दृढ़ता और निरन्तरता से चिन्तन किये हैं। यूरोप में प्रचलित भाषा-विषयक परम्परागत सिद्धान्त मुख्यतया इन्हीं पर आधारित हैं।

हेरोडोटस (Herodotus) (पांचवीं सदी ईसा-पूर्व) बताता है कि मिश्र के राजा सैमेटिकुस (Psammetichus) ने यह पता लगाने के लिए कि मानवों में कौन-सा राष्ट्र प्राचीनतम है, हाल में पैदा हुए दो बच्चों को एक पार्क में सबसे पृथक् करके रक्खा। जब उन्होंने बोलना प्रारंभ किया तो वे 'बेकोस' (bekos) शब्द बोले जो कि रोटी के लिए प्रयुक्त फ्रीजी शब्द था।

अपने संवाद क्रेटीलस (cratylus) में प्लेटो (427-347 ई० पू०) ने शब्दों की उत्पत्ति पर विवेचना की है और विशेषतः इस प्रश्न पर कि शब्दों और शब्दों से द्योतित पदार्थों के बीच का सम्बन्ध कोई नैसर्गिक समवाय-सम्बन्ध है, अथवा मानवीय पारम्परिक परिणाम-मात्र है। इस संवाद में हमें सदियों से चली आ रही विधिवादियों (Analogists) और अनियमवादियों (Anomalists) के वाद-विवाद की पहली झलक मिलती है। प्रथम मत को मानने वाले यह विश्वास करते थे कि भाषा स्वाभाविक है और मूलतः नियमित और तर्कसंगत है। द्वितीय मत को मानने वाले यह विश्वास करते थे कि ऐसा नहीं है, और वे भाषिक संघटन में अनियमितताएँ प्रदर्शित करते थे।

विधिवादियों का यह विश्वास था कि शब्दों के उद्गम और असली अर्थ का पता उनकी आकृति से लग सकता है और वे ऐसी खोज को व्युत्पत्ति (etymology) कहते थे। इस वाद के उदाहरण कुछ अंग्रेजी शब्दों से दिये जा सकते हैं। blackbird शब्द में स्पष्टतया दो भाग black और bird हैं। इस पक्षी का नाम उसके रंग के कारण पड़ा। वे काले (black) भी हैं और पक्षी (bird) भी हैं। इसी प्रकार gooseberry और goose के बीच ग्रीसवासी कुछ गहरा संबन्ध

स्थापित करते और यह व्युत्पत्तिशास्त्रियों का काम होता कि पता लगाएँ कि यह सम्बन्ध है क्या । mush-room शब्द इससे भी कठिन समस्या प्रस्तुत करता । कभी-कभी शब्द के भाग अदल-बदल करके भी आते हैं, इस प्रकार breakfast शब्द ध्वनियों में अन्तर होने पर भी स्पष्टतया वह भोजन है जो fast (व्रत) को break (भंग) करता है और manly शब्द man-like का ह्रस्वतर रूप है ।

फिर भी ग्रीक में अंग्रेजी के समान, अधिकांश शब्दों का ऐसा विश्लेषण संभव न था । अंग्रेजी का early, manly के समान है किन्तु अन्तिम ly को छोड़ शेष अस्पष्ट है । woman शब्द man के सदृश है किन्तु यह प्रथम अक्षर (wo-) क्या है ? इसके अतिरिक्त छोटे सरल शब्द बच जाते हैं जोकि अन्य शब्दों से नहीं मिलते हैं, जैसे, man, boy, good, bad, eat, run आदि । ऐसे स्थलों पर ग्रीकवासी और उनके चेले रोमवासी तुक्का लगाते थे। उदाहरण के लिए ग्रीसवासियों ने ग्रीक शब्द lithos (पत्थर) की व्युत्पत्ति पदसंहिति lian theein (अत्यधिक दौड़ना) से मानी है, क्योंकि पत्थर यह क्रिया बिल्कुल नहीं करता । इस प्रकार की एक लैटिन व्युत्पत्ति तो लोकोक्ति ही बन गयी : lucus a non lucendo " 'वृक्षवाटिका' का नाम lucus इसलिए पड़ा क्योंकि वहाँ lucendo (प्रकाश) नहीं है ।"

फिर भी, इन व्युत्पत्तियों से यह प्रकट होता है कि ग्रीसवासी यह अनुभव करते थे कि भाषिक रूप कालक्रम से बदलते रहते हैं। इन्हीं परिवर्तनों के व्यवस्थित अध्ययन से आधुनिक भाषाविद् को अधिकांश भाषाविषयक समस्याओं के हल करने का मार्ग मिला है, यद्यपि प्राचीन विद्वानों ने इन भाषिक-परिवर्तनों का सावधान अध्ययन जमकर कभी नहीं किया था ।

प्राचीन ग्रीसवासियों ने अपनी भाषा के अतिरिक्त किसी भाषा का अध्ययन नहीं किया था । उन्होंने यह सहजरूप से मान लिया था कि उनकी भाषा के संघटन में मानव-विचार के सार्वभौमिक, अथवा कदाचित् विश्वव्यापी रूप विद्यमान हैं । तदनुसार, उन्होंने व्याकरणिक प्रेक्षण तो किए, किन्तु उन्हें केवल एक भाषा ग्रीक तक सीमित रक्खा और उन्हें दार्शनिक रूप में प्रस्तुत किया । उन्होंने अपनी भाषा के शब्द-भेदों का, वाक्य-संरचनाओं का, विशेषतः उद्देश्य और विधेय का, और लिंग वचन, कारक, पुरुष, काल, वृत्ति आदि प्रमुख व्याकरणिक रूप-साधक संवर्गों का अध्ययन किया । उन्होंने इनकी परिभाषा पहिचान में आनेवाले भाषिकरूपों की पदावली में नहीं दी, बल्कि उस अमूर्त-पदावली से दी जिसे भाषिक वर्गों के अर्थ निकालने थे । ये अध्ययन सर्वाधिक विस्तार से डाइअनिशिअस थ्रेक्श (Dionysius Thrax) (द्वितीय शताब्दी ईसा-पूर्व) और

अपालोनिअस डिस्कोलस (Apollonius Dyscolus) (द्वितीय शताब्दी ईसवी) के व्याकरणों में मिलते हैं।

ग्रीसवासियों ने कुछ प्रेक्षण विस्तार से भी किये थे किन्तु दुर्भाग्यवश उनके कार्य का यह अंश परवर्ती विद्वानों पर बहुत कम प्रभाव डाल सका। उनके दो महाकाव्य—ईलियड (Iliad) और ओडेसी (Odyssey)—, जिन्हें वे पवित्र ग्रन्थों के समान मानते थे, पुरातन और अन्यथा अप्रचलित ग्रीक में लिखे गए थे। इनके पाठों को समझने के लिए और इनकी शुद्ध प्रतिलिपि बनाने के लिए लोगों को उनकी भाषा जाननी होती थी। इस ओर सबसे महत्त्वपूर्ण कृति अरिस्टार्कस (Aristarchus—प्राय: 216-144 ईसा पूर्व) की है। ग्रीक-साहित्य की अन्य कृतियाँ विभिन्न आंचलिक बोलियों के परम्पराबद्ध रूपों में रची गई थीं। ग्रीसवासियों को इस प्रकार अपनी भाषा के विभिन्न परिवर्तित रूपों के अध्ययन करने का अवसर मिला था। जब इन प्रसिद्ध एथेन्सवासी लेखकों की भाषा चौथी शताब्दी में पुरानी पड़ गई तब उसका विशेष अध्ययन हुआ क्योंकि वह लिखित भाषा का आदर्शरूप बन गई थी। इन सब अध्ययनों में भाषा के विभिन्न अंगों का सावधान प्रेक्षण आवश्यक था। कुछ उत्तरकालीन वैयाकरणों ने, विशेषत: अपालोनिअस डिस्कोलस (Apollonius Dyscolus) के पुत्र हिरोडिअन (Herodian) ने प्राचीन ग्रीक के रूपसाधन और बलाघात जैसे विषयों पर मूल्यवान् सूचनाएँ संकलित की थीं।

1.3 भाषा के सम्बन्ध में ग्रीसवासियों द्वारा प्रस्तुत सामान्यीकरण अठारहवीं सदी तक बिना किसी सुधार के चलते रहे। अठारहवीं सदी में विद्वानों ने भाषा को ईश्वरप्रदत्त एक सीधी देन मानना अस्वीकार कर दिया और वे उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न वाद प्रस्तुत करने लगे। भाषा या तो प्राचीन वीर-पुरुषों का आविष्कार थी या लोक की रहस्यात्मक चेतना की परिणति। इसका प्रारंभ मनुष्यों द्वारा ध्वनियों के अनुकरण (बो-वो वाद) से, अथवा स्वाभाविक अनुरणनजनित अनुक्रियाओं (डिंग-डांग वाद) से, अथवा प्रबल उद्‌गार अथवा उद्‌घोषों (पूह्-पूह् वाद) से हुआ।

किन्तु भाषिकरूपों की व्युत्पत्तिगत व्याख्याओं में कोई सुधार नहीं हुआ। वाल्टेयर् (Voltaire) के सम्बन्ध में प्रचलित है कि वह कहता था कि व्युत्पत्ति-शास्त्र वह विज्ञान है जिसमें स्वरों की कुछ भी महत्ता नहीं है और व्यंजनों की अत्यल्प।

रोमन लोगों ने लैटिन व्याकरण को ग्रीक-व्याकरण के अनुकरण पर बनाया। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध डानटस (Donatus) (चौथी सदी ई०) और प्रिशिअन

(Priscian) (छठी सदी ई०) की कृतियाँ पूरे मध्ययुग में पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रयुक्त होती रहीं। मध्ययुग में, जबकि लैटिन अपने पुरातनरूप से उन रूपों में परिवर्तित हो रही थी जिसे हम आज रोमानी-भाषाएँ (फ्रेंच, इतालवी, स्पेनी आदि) कहते हैं, परम्परा यह थी कि जो कुछ लिखा जाए वह यथासंभव लैटिन के प्राचीन साहित्य-परिनिष्ठित रूप में ही लिखा जाए। फलस्वरूप मध्ययुगीन विद्वान् लैटिन-देशों में तथा अन्यत्र केवल साहित्य-परिनिष्ठित लैटिन का ही अध्ययन करते थे। शिक्षा-शास्त्रज्ञ दार्शनिकों ने लैटिन व्याकरण की कुछ विशेषताओं को खोज निकाला था जैसे कि संज्ञा और विशेषणों का अन्तर, समन्विति (Concord), अभिशासन (government) और समानाधिकरण (apposition) का अन्तर, आदि। किन्तु इनका योगदान उन प्राचीन वैयाकरणों की तुलना में बहुत कम था जिन्हें कम-से-कम अधीत भाषाओं का प्रत्यक्ष ज्ञान तो था। मध्ययुगीन विद्वान् साहित्य-परिनिष्ठित लैटिन में मानवभाषण का तर्कसंगत सामान्य रूप देखते थे। अभी हाल में इस मत की परम्परा में कुछ 'सामान्य व्याकरण' (general grammars) लिखे गए हैं जिनमें यह प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है कि विभिन्न भाषाओं, विशेषत: लैटिन, के संघटन में सार्वत्रिक वैध तर्कमूलक नियम विद्यमान हैं। इस प्रकार की कृतियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति पोर्तरायेल (Port-Royal) के कान्वेन्ट (Convent) की 1660 ई० में प्रकाशित Grammaire gènèralè et raisonnèe (सामान्य एवं तर्कमूलक व्याकरण) है। यह मत उन्नीसवीं सदी में भी मिलता है। उदाहरणार्थ, प्रसिद्ध विद्वान् गोटफ्रिड हर्मन (Gottfried Hermann) की कृति De emendanda ratione Graecae grammaticae (1801 ई०) इसी प्रकार की है। यह अब भी यूरोप में स्कूली-परम्परा में विद्यमान है जहाँ भाषाओं पर तार्किक-मानक प्रयुक्त किये जाते हैं। अब तक भी दार्शनिक कभी-कभी विश्वव्यापी सच्चाई की खोज में लग जाते हैं जिसमें वस्तुत: किसी-न-किसी भाषा के रूपात्मक-अभिलक्षण ही झलकते हैं, न कि कोई सच्चाई।

इस सामान्य व्याकरण की धारणा से एक दुर्भाग्यपूर्ण विश्वास यह उत्पन्न हुआ कि वैयाकरण अथवा कोषकार अपनी तर्कबुद्धि के बल पर भाषा का तर्कमूलक आधार निश्चित कर सकता है और यह निर्धारित कर सकता है कि लोग कैसे बोलें। अठारहवीं सदी में भाषाप्रसार के कारण अनेक उपभाषाओं के वक्ताओं को उच्चवर्गीय भाषिक-रूप सीखने पड़े। इससे प्रयोगनिर्धारक वैयाकरणों को अवसर मिला। उन्होंने प्रयोगनिर्धारी व्याकरणों (normative grammars) की रचना की और उनमें प्राय: उन्होंने वास्तविक प्रयोग की अवहेलना

कर ऊहापोहात्मक धारणाओं को स्वीकार किया। "आप्तता" में श्रद्धा और कुछ मनःकल्पित नियम (जैसे अंग्रेजी में shall अथवा will का प्रयोग)—ये दोनों अब भी स्कूलों में प्रचलित हैं।

मध्ययुगीन विद्वान् के लिए, जैसा कि पुस्तकों से विदित होता है, भाषा का तात्पर्य केवल साहित्यपरिनिष्ठित लैटिन ही था। अन्य भाषाओं के रूपों के प्रति अनुरुचि के कदाचित् ही उदाहरण मिलते हैं। पुनर्जागरण के काल में ज्ञान-विस्तार बढ़ा। मध्ययुग के अन्त में ग्रीकभाषा के अध्ययन का फिर से प्रचलन चला। तुरन्त बाद, हेब्रू और अरबी का भी अध्ययन होने लगा। इससे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि विभिन्न देशों में कुछ विद्वानों ने अपने समय की भाषाओं में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया।

नए-नए देशों की खोज के साथ बहुत-सी भाषाओं का ऊपरी ज्ञान लोगों को मिला। यात्रीगण वहां से नए-नए शब्द लाए और मिशनरी लोग इन नए खोजे हुए देशों की भाषाओं में धर्म-पुस्तकों का अनुवाद करने लगे। कुछ लोगों ने इन विदेशी-भाषाओं के व्याकरण तथा कोष सम्पादित किये। स्पेनी धर्मप्रचारकों ने यह कार्य 16वीं सदी से ही प्रारम्भ कर दिया था, अमेरिका और फिलीपाइन की भाषाओं पर अनेक कृतियां इन्हीं लोगों की दी हुई हैं। इन कृतियों को विशेष सावधानी के साथ प्रयुक्त किया जा सकता है क्योंकि इनके रचयिता, विदेशी भाषणध्वनियों के अभिज्ञान में दीक्षित न होने के कारण, उनका यथार्थ अंकन नहीं कर पाए थे और केवल लैटिन व्याकरण की पदावली से अभिज्ञ होने के कारण लैटिन ढाँचे में डालने के लिए इन भाषाओं को विकृत कर देते थे। आजकल भी बिना विशेष भाषा-दीक्षा के लोगों ने इस प्रकार की कृतियाँ प्रस्तुत कर डाली हैं और फलस्वरूप इतना परिश्रम भी व्यर्थ गया तथा साथ-ही-साथ पर्याप्त जानकारी भी इस प्रकार नष्ट हो गई।

वाणिज्य और यात्रा की वृद्धि के कारण समीपवर्ती भाषाओं के भी व्याकरण और कोष बनने लगे। अठारहवीं सदी के अन्त में भाषा-ज्ञानप्राचुर्य का सर्वेक्षण एक 285 शब्दों की सूची में मिलता है जिसमें यूरोप और एशिया की 200 भाषाओं के शब्द दिए गए हैं। यह सूची 1786 ई० में रूसकी महारानी कैथरीन की इच्छा से पी० एस० पल्लास (1741-1841 ई०) महोदय द्वारा बनाई गई थी। सन् 1791 ई० में इसका दूसरा संस्करण निकला और इसमें 80 और भाषाएँ, कुछ अफ्रीकी और अमेरिकन भी, ले ली गई थीं। सन् 1806 और 1871 के बीच एक चार खण्ड वाली कृति मिथ्रदात (Mithridates) के नाम से निकली। इसमें इसके सम्पादक जे० सी० एडेलुंग (Adelung) और जे०

एस० वातर (J.S. Vater) ने करीब 500 भाषाओं में ईश-प्रार्थना (Lord's Prayer) दी थी ।

पुनर्जागरण ने कुछ विद्वानों की रुचि अपनी भाषा के पुरातन आलेखों की ओर भी जोड़ी। फ्रांसिस जूनिअस (Francisus Junius) (1589-1677 ई०) ने अंग्रेजी और उससे समीपतया सम्बद्ध फ्रीजी, डच, जर्मन, स्कैंडीनेवीयन और गॉथी भाषाओं के पुरातन आलेखों के अध्ययन की ओर एक अतिविशाल मात्रा में कार्य किया। इनमें गॉथी का, जो अब नहीं बोली जाती है, परिचय जूनियस को प्रसिद्ध सिल्वर कोडेक्स (Silver Codex) नामक छठी सदी के हस्तलिखित ग्रन्थ से मिला था जिसकी प्रति तभी सर्वप्रथम प्रकाश में आई थी और जिसमें 'प्रवचन' (Gospel) का खण्डित अनुवाद था। इसको जूनियस ने एंग्लो-सैक्सन 'प्रवचनों' के साथ प्रकाशित किया था। जार्ज हिक्स (George Hickes) (ई० 1642-1715) ने यह कार्य चालू रक्खा और एक गॉथी तथा एंग्लो-सैक्सन का व्याकरण लिखा। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी और उसकी समकालिक सम्बद्ध भाषाओं की प्राचीन अवस्था के सम्बन्ध में विविध सूचनाओं का कोष (थैसोरस) भी इन्होंने संकलित किया।

1.4 अठारहवीं सदी के विद्वानों का भाषाविषयक ज्ञान कितना था, यह उपरिवर्णित विकास की रूपरेखा से स्पष्ट है। वे भाषा के व्याकरणिक अभिलक्षणों को दार्शनिक पदावली में प्रस्तुत करते थे, किन्तु लैटिन व्याकरण के ढांचे में अपने वर्णनों को ठूसने के कारण अभिलक्षणों को अस्पष्ट बना देते थे। उन्होंने भाषणध्वनियों का प्रेक्षण नहीं किया था और उन्हें वे वर्णमाला के लिखित संकेतों से सम्मिश्रित कर देते थे। वास्तविक भाषण और लेखन प्रयोग के इस अन्तर को न समझ सकने के कारण भाषा के इतिहास के सम्बन्ध की उनकी धारणाएँ विकृत हो गई थीं। उन्होंने देखा कि मध्ययुग में और तत्कालीन युग में उच्च सुसंस्कृत व्यक्ति साधु-लैटिन लिखते थे (और बोलते भी थे), जबकि कम शिक्षित अथवा असावधान लिपिक बहुत-सी अशुद्धियाँ करते थे। वे यह न समझ सके कि लैटिन में लिखना एक कृत्रिम और शैक्षिक अभ्यासमात्र था, अतः उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षित और सावधान वक्ताओं द्वारा भाषा सुरक्षित रहती है और अशिक्षितों की अशुद्धियों से परिवर्तित हो जाती है। अंग्रेजी जैसी आधुनिक भाषाओं के सम्बन्ध में उनकी इसी प्रकार की यह धारणा बनी कि किताबों और उच्चवर्गीय वार्तालापों के भाषिकरूप अधिक पुराने और अधिक शुद्ध स्तर को प्रदर्शित करते हैं। इसी शुद्धतर स्तर से सामान्य मनुष्य की 'अशिष्टताएं' 'भाषा-ह्रास' की प्रक्रिया द्वारा 'अपभ्रंशता' के रूप को पहुँच गई हैं। फलस्वरूप वैया-

करण तर्क की दृष्टि से व्युत्पन्न मनःकल्पित नियमों को निर्धारित करने में अपने को स्वतन्त्र मानने लग गये ।

इन कुधारणाओं के कारण विद्वान् लोग अपने सम्मुख स्थित सामग्री का उपयोग करने में असमर्थ रहे । यह सामग्री उनके सम्मुख आधुनिक-भाषाओं, बोलियों, प्राचीन-भाषाओं के आलेखों, विदेशी-भाषाओं पर विवरणों, और ऐसे पत्रलेखादि के रूप में थीं जो एक ओर उसी भाषा की क्रमिक अवस्थाओं को, जैसे, एंग्लो-सैक्सेन (प्राचीन अंग्रेजी) और वर्तमान अंग्रेजी, अथवा, लैटिन और वर्तमान रोमानी भाषाएँ, प्रदर्शित करते थे । वे जानते थे कि कुछ भाषाएँ आपस में मिलती-जुलती हैं किन्तु भाषा-ह्रास के सिद्धान्तों के कारण वे इस संबंध का व्यवस्थित अध्ययन नहीं कर पाते थे क्योंकि वे लैटिन से आधुनिक फ्रेंच के मध्यवर्ती परिवर्तनों को केवल अव्यवस्थित ह्रास मानते थे ।

लैटिन अन्य रोमानी भाषाओं के साथ-साथ अपरिवर्तित रूप में अब भी चल रही है, इस भ्रान्ति के कारण विद्वान् लोग समकालीन भाषाओं को एक-दूसरे से व्युत्पन्न मानने लग गए । अधिकांश ने हैब्रू को इन सब भाषाओं की जननी (मूल स्रोत) माना, किन्तु कुछ लोगों ने जैसे एन्टवर्प (Antwerp) के गोरोपिउस बेकानुस (Goropius Becanus) ने देशभक्ति के कारण डच-भाषा को सबकी जननी माना ।

यह स्पष्ट था कि यूरोप की अधिक प्रचलित भाषाएँ पारस्परिक समानता के आधार पर तीन वर्गों में रक्खी जा सकती थीं । ये समानता निम्नलिखित शब्दों में मिल रही है :—

	जर्मन वर्ग		रोमानी वर्ग		स्लावी वर्ग	
'हाथ'						
	अंग्रेजी	hand	फ्रेंच	main	रूसी	ruka
	डच	hand	इतालवी	mano	पोली	ręka
	जर्मन	Hand	स्पेनी	mano	बोहेमी	ruka
	डेनी	haand			सर्वियाई	ruka
	स्वेडी	hand				
'पैर'						
	अंग्रेजी	foot	फ्रेंच	pied	रूसी	noga
	डच	voet	इतालवी	piede	पोली	noga
	जर्मन	Fusz	स्पेनी	pie	बोहेमी	noha

डेनी	fod			सर्वियाई	noga
स्वेडी	fot				

'शीतऋतु'

अंग्रेजी	winter	फ्रेंच	hiver	रूसी	zima
डच	winter	इतालवी	inverno	पोली	zima
जर्मन	Winter	स्पेनी	invierno	बोहेमी	zima
डेनी	vinter			सर्वियाई	zima
स्वेडी	vinter				

'पीना'

अंग्रेजी	drink	फ्रेंच	boire	रूसी	pit'
डच	drinken	इतालवी	bere	पोली	pic'
जर्मन	trinken	स्पेनी	beber	बोहेमी	pitī
डेनी	drikke			सर्वियाई	piti
स्वेडी	dricka				

इन वर्गों में भी इससे कम किन्तु स्पष्ट पारस्परिक समानता दृष्टिगोचर होती थी और समानता कुछ अन्य भाषाओं, जैसे ग्रीक, तक फैली थी। जैसे—

'माता' : ग्रीक mētēr लैटिन māter (और रोमानी भाषाओं में इसके सजातीय रूप), रूसी mat' (षष्ठी materi—और ऐसे ही रूप अन्य स्लावी-भाषाओं में), अंग्रेजी mother (ऐसे ही रूप अन्य जर्मन-भाषाओं में)।

'दो' : ग्रीक duo लैटिन duo रूसी dva अंग्रेजी two

'तीन' : ग्रीक treis लैटिन trēs रूसी tri अंग्रेजी three

'है' : ग्रीक esti लैटिन est रूसी jest' अंग्रेजी is (जर्मन) ist

1.5 यूरोप के बाहर अनेक राष्ट्रों ने भाषावैज्ञानिक सिद्धान्त विकसित किये थे यद्यपि उनके आधार में मुख्यतः पुरातत्त्वज्ञान था। अरबवासियों ने अपनी भाषा के उस परिनिष्ठितरूप का व्याकरण बनाया था जो कि कुरान में मिलता है। इसी के अनुकरण में मुस्लिम देशों में रहने वाले यहूदियों ने हेब्रूव्याकरण बनाए। पुनर्जागरण के समय यूरोप के विद्वान् इस परम्परा से परिचित हुए। उदाहरणार्थ शब्द root जो शब्द के केन्द्रिक भाग के लिए आता है हेब्रू व्याकरण से आया है। सुदूर पूर्व में चीनियों को पुरातन भाषावैज्ञानिक ज्ञान का पर्याप्त परिचय था, विशेषकर कोषरचना के कारण। जापानी व्याकरण भी अपने आप संवृद्ध हुए थे।

फिर भी यह भारतवर्ष था जहाँ ज्ञान का ऐसा विस्तार हुआ कि उसने यूरोपवासियों के भाषाविषयक विचारों में क्रान्ति ला दी। ब्राह्मण-धर्म ने धार्मिक-ग्रंथों के रूप में कुछ अत्यन्त पुरानी सूक्त-संहितियों को सुरक्षित रक्खा। इन संहिताओं में सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद है जो कि अंशतः अनुमान से 1200 ई० पू० से बाद का नहीं है। जैसे-जैसे इन ग्रन्थों की भाषा पुरानी होती गई, इन मन्त्रों का उच्चारण और व्याख्या विद्वानों के विशेष वर्ग का कार्य बन गया। भाषा में इस प्रकार उत्पन्न पुरातत्त्वात्मक रुचि आगे चलकर अधिक व्यावहारिक-क्षेत्र में फैल गई। हिन्दुओं में भी, यूरोपीयों की भांति, विभिन्न वर्गों की भाषणपद्धतियों में विभिन्नता है। प्रत्यक्षतः ऐसी स्थिति थी कि उच्चवर्गीय वक्ताओं को निम्नवर्गीय भाषणरूपों को अपनाना पड़ता था। इस प्रकार हिन्दू वैयाकरणों का ध्यान वैदिक-भाषा से उच्चवर्गीय भाषा की ओर गया और उन्होंने भाषण के शुद्ध प्रतिरूप संस्कृत के लिए नियम और रूपसूचियाँ बनाईं। समय पाकर उन्होंने व्याकरण और कोष के व्यवस्थित विन्यास निकाले। कई पीढ़ियों के ऐसे परिश्रम के बाद हमें प्राचीनतम व्याकरण, पाणिनि-व्याकरण, मिलती है। यह व्याकरण जो कि 350 ई० पू० और 250 ई० पू० के आसपास रचा गया होगा मानव बुद्धिमत्ता की प्रमुखतम कृतियों में से एक है। इसमें रचयिता की भाषा का सर्वांगीण विवेचन है। क्या रूप-साधन, क्या शब्द-साधन, क्या समास-रचना, क्या वाक्य-रचनात्मक प्रयोग––सभी के सम्बन्ध में छोटी-से-छोटी बातों का वर्णन है। कोई भी भाषा अभी तक इतनी सम्पूर्णता से वर्णित नहीं हो पाई है कदाचित् यह अंशतः इसी सर्वोत्तम नियमबद्धता का परिणाम था कि आगे चलकर संस्कृत पूरे ब्राह्मणी-भारत की राज्य-भाषा और साहित्यिक-भाषा बनी। किसी भी व्यक्ति से मातृभाषा के रूप में व्यवहृत न होने के बहुत बाद तक संस्कृत (यूरोप में परिनिष्ठित लैटिन की भाँति) पाण्डित्यपूर्ण अथवा धार्मिक रचनाओं की कृत्रिम माध्यम बनी रही।

संस्कृत और हिन्दू व्याकरण का कुछ ज्ञान सोलहवीं और सत्रहवीं सदी ईसवी में मिशनरियों द्वारा यूरोप में पहुँच गया था। अठारहवीं सदी में भारत-स्थित अंग्रेजों ने अधिक पूर्व विवरण यूरोप भेजे और उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में संस्कृत का ज्ञान यूरोपीय विद्वानों का आवश्यक अंग बन गया।

1.6 भारतीय व्याकरण ने यूरोपीय विद्वानों के सम्मुख सर्वप्रथम एक भाषा-विशेष का ऐसा पूर्ण और यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया जिसका आधार सैद्धान्तिक न होकर प्रेक्षणात्मक था। इसके अतिरिक्त संस्कृत की विवृति ने भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की सम्भावना प्रकट की।

प्रारंभ में सम्बद्ध भाषाओं की धारणा को इस बात से सविशेष पुष्टि मिली कि यूरोप की परिचित भाषाओं की एक बहिन बहुत दूर भारत में विद्यमान है। उदाहरणार्थ 1.4 में उल्लिखित शब्दों के संस्कृत समानार्थक रूपों को देखें :

माता	कर्म में मातरम् "माता"
द्वौ	'दो'
त्रयः	'तीन'
अस्ति	'है'

किन्तु इससे महत्त्वपूर्ण यह था कि यथार्थ एवं सुव्यवस्थित हिन्दू-व्याकरण से उन्हें भाषा-संघटन के विषय में अन्तर्दृष्टि मिली। अब तक, लोग केवल अस्पष्ट तथा अस्थिर समानता देखते थे क्योंकि ग्रीक-प्रतिमान पर बने तत्कालीन व्याकरण प्रत्येक भाषा के अभिलक्षणों को स्पष्टतया पृथक्-पृथक् नहीं कर पाते थे। हिन्दू-व्याकरण ने यूरोप वालों को भाषिकरूपों का विश्लेषण सिखाया। जब संरचक-अंगों की तुलना की जाने लगी तब अब तक अस्पष्टरूप से मान्य समानता निश्चिति और यथार्थता से प्रकट होने लगी।

भाषा-सम्बन्ध की पुरानी भ्रान्तियुक्त धारणा, कुछ दिनों तक इस विचार-धारा में चलती रही कि यूरोप की भाषाएं संस्कृत से निकली हैं। किन्तु शीघ्र ही स्पष्ट तथा शुद्ध व्याख्या सामने आ गई कि संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि भाषाएँ किसी एक प्रागैतिहासिक भाषा के विभिन्नतया विकसित रूप हैं। यह व्याख्या कदाचित् सर्वप्रथम सर विलियम जोन्स (1746-1794 ई०) ने जोकि संस्कृत के प्रथम यूरोपीय विद्वान् थे, सन् 1786 में अपने भाषण में व्यक्त की थी। व्याख्या यह थी कि संस्कृत में ग्रीक और लैटिन से ऐसी घनिष्ठ समानता मिलती है जोकि आकस्मिक नहीं हो सकती है, बल्कि यह स्पष्ट करती है कि तीनों किसी सामान्य स्रोत से निकली हैं जोकि अब नहीं है, और गॉथी एवं केल्टी भी कदाचित् इसी स्रोत से निकली हैं।

इन भाषाओं की तुलना के लिए निस्सन्देह प्रत्येक की वर्णनात्मक सामग्री की आवश्यकता थी। फिर भी, तुलना की प्रत्याशा और तुलना से प्रकट प्राचीन भाषिकरूपों, जातीय निष्क्रमणों, और व्यक्तियों तथा उनकी रीतियों के उद्गम आदि के ज्ञान इतने लुभावने थे कि किसी ने संस्कृत के प्रतिमान पर अन्य भाषाओं के विश्लेषण के कठिन कार्य को नहीं उठाया। यूरोपीय विद्वानों को लैटिन और ग्रीक का गहरा ज्ञान था और अधिकांश वे कोई-न-कोई जर्मन-भाषा मातृ-भाषारूप में बोलते थे। संस्कृत व्याकरण के किसी निश्चित कथन पर अथवा सावधान विश्लेषित शब्द-रूप देखकर वे प्रायः अधिक परिचित भाषाओं में से

कुछ के तत्समान अभिलक्षण स्वयं ढूंढ़ निकालते थे। निस्सन्देह यह एक वस्तुतः अल्पकालिक विधि थी। तुलनाकर्ता को प्रायः तथ्यों की स्थापना के लिए प्रारम्भिक अन्वेषणा करनी पड़ती थी और कभी-कभी प्रणालीबद्ध सामग्री के अभाव से उसे भटकना भी पड़ता था। यदि यूरोपीय विद्वानों के पास वहां की भाषाओं का संस्कृत व्याकरणों के समान वर्णन प्राप्त होता तो इन्डोयूरोपियन (भारत-यूरोपीय) भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की प्रगति कहीं अधिक वेग से और यथार्थता से होती। फिर भी, स्वल्पसाधनों के होते हुए भी, यह कार्यकर्ताओं का सबल उत्साह था कि भारतयूरोपीय भाषाओं का ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन एक प्रमुख और उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय विज्ञान का एक सफल अधीतविषय बन गया।

फारस की (ईरानी भाषाओं के नाम से प्रसिद्ध) भाषाएँ संस्कृत से इतना घनिष्ठतया मिलती थीं कि उन दोनों का सामीप्य प्रारम्भ से ही निश्चित था। इसी प्रकार का, यद्यपि कम मात्रा में, सम्बन्ध बाल्टिक-भाषाओं (लिथुएनी, लेट्टी, प्राचीन प्रशियाई) और स्लावी भाषाओं के बीच मिला था। जोन्स महोदय की यह कल्पना कि लैटिन, ग्रीक, संस्कृत से जर्मन भाषाएँ सम्बद्ध हैं तुरन्त सच्ची सिद्ध हो गई और उसी प्रकार केल्टी (आइरी, वेल्श, कॉर्नी, ब्रेटन और गाल की प्राचीन भाषा) के सम्बन्ध में कल्पना सच्ची निकली। बाद में आमनियाई और अल्बानी भाषाएँ तथा कुछ केवल प्राचीनलिखित आलेखों मात्र में प्राप्त प्राचीन भाषाएँ भी इसी भारतयूरोपीय परिवार की सदस्य निकलीं।

यद्यपि विस्तार में कुछ मतभेद था तथापि ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषा-अध्ययन के सामान्य सिद्धान्त शीघ्र स्पष्ट हो गए। भाषाएँ समय के साथ-साथ बदलती हैं। कुछ सुस्पष्ट अपवाद, जैसे यूरोप में मध्ययुग अथवा वर्तमान युग में लैटिन का प्रयोग (अथवा भारत में संस्कृत का प्रयोग) केवल यही सिद्ध करता है कि लम्बे शिक्षाभ्यास से लोग प्राचीन भाषाओं के लेखनों का अनुकरण करना सीख सकते हैं। यह पुरातत्त्वात्मक कौशल माता-पिता से बच्चों को प्रेषित भाषा के प्रासामान्य प्रेषण से नितान्त भिन्न है। वस्तुतः सभी लेखन अपेक्षाकृत नवीन आविष्कार हैं और प्रायः अभी तक केवल कुछ चुने हुए लोगों में ही सीमित हैं। अतएव रूपों पर और वास्तविक भाषण के विकास पर लेखन का प्रभाव नगण्य है।

यदि कोई भाषा एक विस्तृत क्षेत्र में, अथवा निष्क्रमण द्वारा अनेक पृथक्-पृथक् क्षेत्रों में बोली जाती है तो वह विभिन्न स्थानों में विभिन्नतया परिवर्तित होगी और परिणामस्वरूप परस्परसम्बद्ध भाषाओं का एक समूह बन जाएगा,

जैसे, इतालवी, फ्रेंच, स्पेनी, पुर्तगाली, रोमानियाई और अन्य रोमानी बोलियाँ। हम अनुमान लगाते हैं कि सम्बद्ध भाषाओं के अन्य वर्ग, जैसे जर्मन वर्ग (अथवा स्लावी वर्ग, अथवा केल्टी वर्ग) जिनमें इसी प्रकार की परस्पर समानता मिलती है, इसी प्रकार विकसित हुए होंगे। यह इतिहास के संयोग की बात है कि इन वर्गों के लिए भाषा की उस पूर्वकालीन अवस्थाओं के कोई लिखित आलेख नहीं मिल पा रहे हैं जब कि उनमें भेदीकरण प्रारंभ नहीं हुआ था। इस बिना आलेखों वाली पूर्वकालीन भाषाओं को हम 'आदिम' (primitive) शब्द लगाकर प्रकट करते हैं, जैसे, 'आदिम जर्मन' (आदिम स्लावी, आदिम केल्टी आदि। इसी प्रकार, यह देखकर कि इन सब भाषाओं और वर्गों में (संस्कृत, ईरानी, आर्मेनियाई, ग्रीक, अल्बानी, लैटिन, केल्टी, जर्मन, बाल्टिक, स्लावी में) इतनी अधिक समानता है कि वह केवल संयोगवश नहीं हो सकती है, हम उन्हें भारतयूरोपीय परिवार (Indo-European family) की भाषाएँ कहते हैं, और जोन्स महोदय के समान इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि वे एक ही प्रागैतिहासिक भाषा के, जिसे हम 'आदिम भारतयूरोपीय' कहते हैं, विभिन्न विकसित रूप हैं।

तुलना की पद्धति तो प्रारम्भ से ही स्पष्ट थी। सामान्यतया सभी अथवा अनेक सम्बद्ध भाषाओं में मिलनेवाला अभिलक्षण उनकी पूर्वतर सर्वनिष्ठ भाषा में, अर्थात् 'जननी-भाषा' में, अवश्य उपस्थित रहा होगा। इस प्रकार 'माता' के लिए प्रयुक्त पूर्वोल्लिखित शब्दों से यह स्पष्ट है कि आदिम-भारत-यूरोपीय में इसका प्रारम्भ ऐसी ध्वनि से अवश्य होता रहा होगा जिसे हम लेखन से 'म' (m) से प्रदर्शित करते हैं। जहाँ सम्बद्ध भाषाओं में एकरूपता नहीं है, वहां सभी में अथवा कुछ में कुछ परिवर्तन हुए हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'माता' के लिए प्रयुक्त आदिम भारत-यूरोपीय शब्द में दूसरा व्यंजन 'त' (t) ध्वनि था और अंग्रेजी की mother में स्थित th ध्वनि (और इसी प्रकार प्राचीन अंग्रेजी mōdor की d ध्वनि) परिवर्तन से उद्भूत है।

1.7 भारतयूरोपीय भाषाओं की विधिवत् तुलना का प्रारम्भ सन् 1816 में प्रकाशित फ्रान्त्स बॉप (1791-1867) (Franz Bopp) के एक ग्रन्थ से है जिसमें संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, फारसी और जर्मन भाषाओं के तिङन्त प्रत्ययों पर विचार है। सन् 1818 में रैज़्मस क्रिस्टियन रैस्क (1787-1832) (Rasmus Kristian Rask) ने प्रदर्शित किया कि जर्मन भाषाओं के शब्दों का अन्य भारतयूरोपीय भाषाओं के शब्दों से ध्वनि के विषय में नियत आकारनिष्ठ सम्बन्ध है। उदाहरणार्थ जहां अन्य भाषाओं में 'प' (p) है, जर्मन भाषाओं में 'फ़' (f) है, जैसे, अंग्रेजी father लैटिन pater, अंग्रेजी

foot, लैटिन pes, अंग्रेजी five, ग्रीक pente, अंग्रेजी few, लैटिन pauci सन् 1819 में यकोव् ग्रिम (1787-1863) (Jacob Grimm) ने अपने Deutsche Grammatik ('जर्मन व्याकरण') का प्रथम खण्ड प्रकाशित किया। जैसा कि आजकल शीर्षक से प्रकट होता है, इसमें केवल जर्मनभाषा का व्याकरण नहीं है। इसमें जर्मन भाषाओं (गॉथी, स्कैंडीनेवियाई, अंग्रेजी, फ्रीजी, डच, और जर्मन) का तुलनात्मक व्याकरण है। 1822 में इस ग्रंथ के दूसरे संस्करण में ग्रिम ने जर्मन-वर्ग और अन्य भारत-यूरोपीय भाषाओं के व्यंजनों की अनुरूपताओं का पद्धतिबद्ध वर्णन दिया है। तब से ये अनुरूपताएँ अंग्रेजी भाषी विद्वानों के बीच 'ग्रिम नियम' नाम से प्रसिद्ध हैं। ये अनुरूपताएं ऐतिहासिक विवरण की वस्तु हैं किन्तु इनकी महत्ता बहुव्यापी है क्योंकि ये प्रदर्शित करती हैं कि मानव-क्रियाएँ, सामूहिक रूप में, कभी भी अव्यवस्थित नहीं होती हैं बल्कि नियमितता से होती हैं, यहाँ तक कि एक भाषण-उच्चार में पृथक्पृथक् ध्वनियों की उच्चारणविधि में भी नियमितता है। जर्मनवर्गीय भाषाओं की ग्रिम द्वारा की गई तुलना अभी तक अद्वितीय है। इसके तीन और खण्ड 1826, 1831 तथा 1837 में निकले और पाँचवाँ जिसमें वाक्यरचना के ऊपर विचार करना था अप्रकाशित ही रहा।

सन् 1838 में बॉप (Bopp) ने अपनी सर्वांगीण कृति, भारत-यूरोपीय भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण, का प्रकाशन प्रारंभ किया। सन् 1833 और 1866 के बीच पॉट (August Friedrich Pott) सन् 1802-1887) की पुस्तक Etymological Investigations (व्युत्पत्तिपरक खोजें) सर्वप्रथम प्रकाश में आई। यहां व्युत्पत्ति (etymology) का वैसा ही स्थिर और निश्चित अर्थ लिया गया है जैसा कि आजकल लिया जाता है। किसी भी भाषिक-रूप की व्युत्पत्ति उसका इतिहासमात्र है और उसका पता उस भाषिक-रूप के उसी भाषा में पुराने रूपों से तथा सम्बद्ध भाषाओं के उन रूपों से लगता है जो कि उसी पूर्व-रूप के विभिन्न रूप हैं। इस प्रकार अंग्रेजी शब्द mother "माता" की व्युत्पत्ति का अर्थ यह बताना होगा कि इस आधुनिक रूप का नवीं सदी की प्राचीन अंग्रेजी में mōdor रूप था और इसका सम्बन्ध प्राचीन नार्स mōðer, प्राचीन फ्रीसी mōder, प्राचीन सैक्सन mōdar, प्राचीन उच्च-जर्मन muoter से (ये रूप इन-इन भाषाओं के प्राचीनतम आलेखों में मिले हैं) इस अर्थ में है कि ये सब रूप एक अकेले आदिम-जर्मनवर्गीय शब्द के जिसे *mōder से संकेतित करते हैं, विभिन्न परकालीन विकासप्राप्त रूप हैं और इन जर्मनवर्गीय शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत 'माता', अवेस्ती (प्राचीन फारसी) mātā, प्राचीन आर्मेनियाई

mair प्राचीन ग्रीक meter, अल्बानी motre (जिसका अर्थ 'बहिन' है), लैटिन māter, प्राचीन आइरी māthir, लुथुएनी motē (जिसका अर्थ 'पत्नी' है), प्राचीन बल्गेरियाई (स्लावी) mati से, और इन भाषा वर्गों की अन्य भाषाओं के शब्दों से, इस अर्थ में है कि ये सब आदिम भारतयूरोपीय भाषा के एक ही शब्द के, जिसे mātēr से संकेतित करते हैं, परकालीन विभिन्न रूप हैं। जैसा कि इस उदाहरण से स्पष्ट है आधुनिक अर्थ में व्युत्पत्ति का कार्य शब्दों के प्राचीनतर और स्पष्टतर अर्थों को अवश्यमेव बताना नहीं है। भारत-यूरोपीय भाषाओं की हमारी आधुनिक व्युत्पत्तियाँ अधिकांश पॉट महोदय की खोजों का ही परिणाम हैं।

इसके बाद के दशकों में प्रगति इतनी तीव्र गति से हुई कि छोटी-छोटी कृतियाँ और बड़ी-बड़ी पुस्तकें सभी शीघ्रता से पुरानी पड़ती गईं। बॉप की पुस्तक, अपने नये संस्करणों के होते हुए भी, सन् 1861 में आगुस्ट श्लाइख़र (August Schleicher) (1823-1866) की पुस्तक Compendium of the Comparative Grammar of the Indo-European Languages (भारतयूरोपीय भाषाओं की तुलनात्मक व्याकरण की भूमिका) द्वारा पुरानी पड़ गई। सन् 1886 में कार्ल ब्रुगमन् (Karl Brugmann) (1849-1919) और डैलब्रुक (Bërthold Delbrück) (1842-1922) ने अपनी पुस्तक Outline of the Comparative Grammar of Indo-European Languages (भारत-यूरोपीय भाषाओं की तुलनात्मक व्याकरण की रूपरेखा) निकालना प्रारंभ किया। इसका द्वितीय संस्करण जो 1897 से 1917 के बीच प्रकाशित हुआ है, अभी तक प्रामाणिक सन्दर्भ ग्रन्थ है।

जैसे-जैसे काम बढ़ता गया, भारत-यूरोपीय परिवार की पृथक् शाखाओं पर भी जर्मनवर्गीय भाषाओं पर ग्रिम की कृति की भाँति, अनेक परिपूर्ण कृतियाँ निकलने लगीं। फ्रेडरिख़ डीज़ (Friedrich Diez) (सन् 1894-1876) ने रोमानी भाषाओं का गंभीर अध्ययन अपनी पुस्तक Grammar of the Romance Languages (रोमानी भाषाओं का व्याकरण) (1836-1844) में किया। ज़उस् (Johann Kaspar Zeuss) (1806-1856) ने ऐसा ही कार्य केल्टी भाषाओं पर अपनी पुस्तक Grammatica Celtica (केल्टी व्याकरण) (1853) द्वारा किया। मिक्लोसिख़ (Franz von Miklosich) (1813-1891) ने स्लावी भाषाओं पर Comparative Grammar of the Slavic Languages (स्लावी भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण) (1852-1875) निकाला।

1.8 इन अध्ययनों से इतिहास और पुरातत्त्व पर तो प्रकाश पड़ा, किन्तु

इनकी तात्कालिक रुचि मानव-भाषण विषयक थी। यद्यपि विभिन्न भारत-यूरोपीय भाषाओं का सामान्य उद्‌गम था, तथापि उनका परकालीन विकास स्वतंत्र था। फलस्वरूप अध्येताओं के सम्मुख मानवभाषण के परिवर्तनविषयक विवरणों का ऐसा विशाल संग्रह था जिससे इस परिवर्तन की विधियों को सामान्यीकृत किया जा सकता था।

भाषाएँ किस प्रकार परिवर्तित होती हैं—इस ओर निकाले गए निष्कर्षों ने प्राचीनतर समयों के ऊहापोहों को वैज्ञानिक आगमनों के परिणामों से विस्थापित कर दिया। विलियम ड्वाइट ह्विटनी (William Dwight Whitney) (1827-1894) नामक अमेरिकन विद्वान् ने Language and the Study of Language (भाषा और भाषा का अध्ययन) (1867) और The Life and growth of Language ("भाषा का जीवन और विकास") (1874) नाम की दो पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों के अनेक यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुए हैं और आज भी, वे कुछ अपूर्ण अवश्य हैं, किन्तु कठिनाई से पुरानी पड़ी हैं और भाषाविषयक अध्ययन में उत्कृष्ट प्रवेशिका के रूप में चलती हैं। सन् 1880 में हर्मन पाउल (Hermann Paul) (1846-1921) की पुस्तक Principles of Linguistic History (भाषाई इतिहास के सिद्धान्त) निकली और यह अपने परवर्ती संस्करणों द्वारा (पाँचवां 1920 में निकला है) ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की विधियों पर प्रामाणिक कृति है।

पाउल की पुस्तक Principles (सिद्धान्त) ने भारत-यूरोपीय अध्ययनों से प्रकट भाषा-परिवर्तनों की विधियों को बहुत बड़ी संख्या में उदाहरणों द्वारा प्रदर्शित किया है। ह्विटनी की कृति की तुलना में यह उतनी सुष्ठुलिखित तो नहीं है परन्तु अधिक विस्तृत और विधिपूर्वक है। इस पुस्तक का भाषाविषयक अध्ययनों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है और जो हाल की पीढ़ी के विद्वान् इसकी उपेक्षा कर रहे हैं इसमें हानि उन्हीं की है। शुष्क शैली के अतिरिक्त इसमें, Principles में कुछ ऐसी त्रुटियाँ हैं जो आज बहुत स्पष्टतया लक्षित हैं किन्तु उन्नीसवीं सदी की भाषावैज्ञानिक स्थिति में इनका होना सहज ही था।

इनमें से एक त्रुटि तो यह है कि पाउल ने भाषा के वर्णनात्मक अध्ययन की उपेक्षा की। उसने यह तो अवश्य स्वीकार किया था कि भाषाओं का वर्णन आवश्यक है किन्तु उसने अपने विवेचनों को भाषा-परिवर्तन तक ही सीमित रक्खा। यह न्यूनता उस युग की देन थी। हम भाषा-परिवर्तनों का अध्ययन सम्बद्ध भाषाओं अथवा एक ही भाषा की विभिन्न ऐतिहासिक अवस्थाओं की तुलना से ही कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी, फ्रीजी, डच, जर्मन, स्कैंडी-

निर्वेयाई, गाथी भाषाओं की समानताओं और विभिन्नताओं को ज्ञात करके इन सब की उस पूर्वकालीन भाषा ('आदिम-जर्मन') की धारणा कर सकते हैं जिससे ये सब भाषाएँ समयक्रम में बदल गई हैं और हम इनमें से प्रत्येक परकालीन भाषा में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन कर सकते हैं। इसी प्रकार प्राचीन अंग्रेजी (राजा एल्फ्रेड के समय की कृतियों में विद्यमान अंग्रेजी) के नमूनों से आधुनिक अंग्रेजी की तुलना करके हम यह पता लगा सकते हैं कि अंग्रेजी किस प्रकार पिछले हजार वर्षों में बदली है। स्पष्टतया तुलना करने का सामर्थ्य तुलना की जाने वाली वस्तुओं के ज्ञान पर निर्भर है। उदाहरणार्थ, अनेक जर्मनवर्गीय भाषाओं में शब्दों का समास (जैसे अंग्रेजी blackbird अथवा footsore) कैसे होता है इसका हमारा ज्ञान निश्चयतः अपूर्ण है। फलस्वरूप इस दिशा में हम वह तुलनात्मक अध्ययन गहराई तक नहीं कर सकते हैं जिससे हमें यह विदित होता है कि आदिम जर्मन में शब्दों का समास किस प्रकार होता था और यह प्रवृत्ति आगे चलकर प्रत्येक जर्मनवर्गीय भाषाओं में किस प्रकार बदलती गई। उन्नीसवीं सदी के ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के अध्येता इन्हीं सीमाओं में बंधे थे किन्तु उन्होंने कदाचित् कठिनाई की प्रकृति को नहीं पकड़ पाया था।

पाउल के Principles की दूसरी बड़ी कमी उसका 'मनोवैज्ञानिक' व्याख्या पर अड़ा रहना है। भाषा के सम्बन्ध में प्रत्येक वक्तव्य के साथ उसने मनोवैज्ञानिक व्याख्या दी है और उसमें उन मानसिक प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में कहा है जो पाउल के अनुसार वक्ता में हुई होंगी। इन मानसिक प्रक्रियाओं का साक्ष्य केवल भाषावैज्ञानिक प्रक्रियाएँ हैं, और ये मानसिक व्याख्याएँ विवेचन को स्पष्ट न करके और धूमिल करती हैं। पाउल की पुस्तक में और अधिकतर आजकल भी भाषाविज्ञान में प्राचीन ग्रीकवासियों के दार्शनिक ऊहापोह के प्रभाव परिलक्षित होते रहते हैं। पाउल और उनके समवर्ती विद्वानों ने केवल भारतयूरोपीय भाषाओं पर विवेचन किया है और विवरणात्मक समस्याओं की उपेक्षा के कारण अज्ञात इतिहास वाली भाषाओं पर उन्होंने बिल्कुल काम नहीं किया है। इस सीमा ने उन्हें व्याकरणिक संघटनाओं के विदेशी प्रतिरूपों के ज्ञान से वंचित रक्खा अन्यथा उन्हें यह विदित हो जाता कि भारतयूरोपीय व्याकरण के आधारभूत तत्त्वों तक में, जैसे शब्द-भेद (part of speech) पद्धति में, कोई सार्वत्रिकता नहीं है। किन्तु इस दृष्टि के अभाव में वे इन तत्त्वों को सार्वत्रिक मानते रहे और जब-कभी इन पर विचार किया गया तब इनकी दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक मिथ्या-व्याख्याएँ दी गईं।

1.9 फिर भी, ऐतिहासिक खोज के साथ-साथ, एक सामान्य भाषा-

वैज्ञानिक धारा भी चलती रही। यह यद्यपि छोटी थी तथापि थी प्रवेगवाली। हिन्दुओं का संस्कृत व्याकरण कभी पूरी तरह भुलाया नहीं गया था। जबकि अधिकांश अध्येता बिना उसके अस्तित्व को जाने उसके निष्कर्षों को काम में लाते थे, विद्वान् लोग जो अपने विज्ञान के पूर्वरूपों से सुपरिचित थे, उसका ऊँचा मूल्यांकन करते थे। अल्पविदित भारतयूरोपीय भाषाओं के लिये वर्णनात्मक अध्ययन अपरिहार्य था। निश्चयतः यह आकस्मिक नहीं है कि इस भाँति की सर्वोत्तम कृति, स्लावी और बाल्टिक भाषाओं का एक अध्ययन, अगस्त लेस्कीन (August Leskien) (1840-1916) नामक विद्वान् द्वारा लिखित थी जो कि खोज की ऐतिहासिक विधि के एक प्रमुख संस्थापक थे।

फिर भी, अधिकांश वर्णनात्मक अध्ययनों का ऐतिहासिक अध्ययन की मुख्य धारा से संगम न था। कुछ अध्येता भारत-यूरोपीय वर्ग से बाहर की भाषाओं की संघटनात्मक विशेषताओं से आकृष्ट थे यद्यपि इन भाषाओं का इतिहास अविदित था। कुछ अध्येताओं ने अनेक प्रकार की भाषाओं का परीक्षण किया ताकि मानव-भाषण का कुछ दार्शनिक सर्वेक्षण निकल आए। वस्तुतः पिछली वर्णनात्मक कृतियों का अधिकांश आज प्रायः समझ के बाहर है, क्योंकि वह उन दार्शनिक धारणाओं से व्याप्त है जिससे हम अब परिचित नहीं हैं।

सामान्य भाषाविज्ञान की प्रथम विशाल कृति विल्हेल्म फान हम्बोल्ड्ट (Wilhelm Von Humboldt) (1767-1835) की मानव-भाषण की विविधताओं पर लिखी कृति है जो सन् 1836 को प्रकाशित हुई थी। एच० स्टाइनथाल (H. Steinthal) (1823-1899) ने भाषा के आधारभूत तत्त्वों पर अनेक सामान्य कृतियों के अतिरिक्त सन् 1861 में भाषा-संघटना के प्रमुख प्रतिरूपों पर एक पुस्तक लिखी थी। जी० वानदेर गव्रेलेन्ज़ (G. Ven der Gabelentz) (1840-1893) की भाषाशास्त्र पर लिखी कृति (सन् 1891) बहुत कम दर्शन-प्रधान है। अध्ययन की इस दिशा का उत्कर्ष हमें दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विल्हेल्म वुन्ड्ट (Wilhelm Wundt) (1832-1920) के भाषा पर लिखित महान् ग्रंथ में मिलता है जो समाज-मनोविज्ञान के ऊपर लिखे ग्रन्थ के पूर्वांश के रूप में सन् 1900 में निकला। वुन्ड ने भाषण के मनोविज्ञान को समझने के लिए भाषाओं के सभी उपलब्ध विवरण पढ़े थे। आज भारत-यूरोपीय विद्वान् के लिए डेलब्रुक की कृति और वुन्ड का उस पर आलोचनात्मक उत्तर—जो दोनों अगले वर्ष प्रकाशित हुई थीं, पढ़ना मनोरंजक विषय है। डेलब्रुक ने वुन्ड द्वारा अविदित इतिहास वाली भाषाओं के उपयोग पर आक्षेप किया था, उनके अनुसार भाषा-अध्ययन का एकमात्र क्षेत्र

कालक्रम में होने वाले भाषा-परिवर्तन ही हैं। इसके विपरीत, वुन्ड अपनी पद्धति की पदावली में मनोवैज्ञानिक व्याख्या के महत्त्व पर बल देते थे जबकि डेलब्रुक के अनुसार एक भाषाविद् कौन-सी मनोविज्ञान की पद्धति अपनाता है, यह एक महत्त्व की बात नहीं है।

इसी बीच कुछ अध्येताओं ने वर्णनात्मक और ऐतिहासिक अध्ययनों के बीच नैसर्गिक-सम्बन्ध को अधिक और अधिकतर स्पष्टतया देखा। ओटो बोटलिंक (Otto Böhtlingk) (1815-1904) ने, जिन्होंने पाणिनि का आधुनिक यूरोपीय संस्करण निकाला, वर्णनात्मक-प्रविधि को एक पूर्णतया विभिन्न संघटनावाली भाषा, एशियाई रूस की 'यकूत' भाषा पर (सन् 1851) प्रयुक्त किया। फ्रेडरिक मुलर (Friedrich Múller) (1834-1898) ने एक भाषाविज्ञान की रूपरेखा (सन् 1876-1888) प्रकाशित की जिसमें संसार की भाषाओं के संक्षिप्त विवेचन थे और इस बात का कोई विचार नहीं किया गया था कि उनका ऐतिहासिक विवेचन संभव है या नहीं। फ्रोज निकोलस फिंक (Franz Nikolaus Finck) (1867-1910) ने अपने सैद्धान्तिक निबन्ध (1905) में और अपनी छोटी कृति में (1910), जिसमें आठ ऐतिहासिक रूप में असम्बद्ध भाषाओं का विवरणात्मक विश्लेषण था, यही आग्रह किया था कि विवरणात्मक अध्ययन ऐतिहासिक खोज और दार्शनिक सामान्यीकरण, दोनों के लिए सामान्य आधार है। फर्डीमंड द सासुर (1853-1913) ने अनेक वर्षों तक इसी विषय को अपने विश्वविद्यालयी भाषणों में प्रस्तुत किया। ये भाषण उनकी मृत्यु के बाद सन् 1915 में पुस्तक रूप में प्रकाशित हुए।

इस दिशा में सर्वाधिक निश्चायक कार्य भारतयूरोपीयेतर भाषा-परिवारों का ऐतिहासिक विवेचन है। एक ओर तो तुलनात्मक कार्य के लिए वर्णनात्मक सामग्री की आवश्यकता स्वयं-स्पष्ट है, दूसरी ओर (परिणामों) से यह प्रदर्शित होता था कि भाषाई परिवर्तनों की प्रक्रियाएं सभी भाषाओं में एक-सी हैं और अपनी-अपनी व्याकरणिक संघटनाओं से प्रभावित नहीं होती हैं। फ़ीनी-उग्री (फीनी, लैप्पी, हंगेरियाई, और सजातीय) भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन सन् 1799 से प्रारम्भ हुआ और उसका अत्यन्त विस्तार हुआ है। हम्बोल्ड्ट की कृति के द्वितीय खण्ड ने मलय-पालोनेशियाई भाषा-परिवार के तुलनात्मक व्याकरण की स्थापना की। आजकल अन्य परिवारों के भी तुलनात्मक अध्ययन विद्यमान हैं, जैसे, सामी परिवार अथवा अफ्रीका का बांटू परिवार। वर्णनात्मक सामग्री की आवश्यकता के मामले में अमरीकी भाषाओं के अध्येता आत्मप्रवंचना नहीं कर सकते हैं। मैक्सिको के उत्तर ही में दर्जनों पूर्णतया परस्पर असम्बद्ध भाषाओं

के वर्ग हैं और बड़ी विभिन्न-विभिन्न संघटनाओं को प्रस्तुत करते हैं। पूर्णतया अपरिचित भाषिकरूपों के अंकित करने पर बल देने से यह तुरन्त स्पष्ट हो गया कि दार्शनिक पूर्वधारणाएँ केवल बाधारूप हैं।

इन दो ऐतिहासिक-तुलनात्मक और दार्शनिक-वर्णनात्मक अध्ययन-धाराओं के संगम से कुछ ऐसे सिद्धान्त स्पष्ट हो गये जो कि उन्नीसवीं सदी के हर्मन पाउल जैसे भारतयूरोपीय मनीषियों को स्पष्ट न थे। भाषा का ऐतिहासिक अध्ययन पूर्णतया वर्णनात्मक सामग्री के दो या दो से अधिक समुच्चयों की तुलना पर निर्भर रहता है। यह अपने सम्मुख विद्यमान सामग्री के अनुसार ही यथार्थ अथवा सम्पूर्ण हो सकता है। एक भाषा के वर्णन के लिए ऐतिहासिक ज्ञान आवश्यक नहीं है, वस्तुतः वह प्रेक्षक जो अपने इस प्रकार के प्रत्यक्षज्ञान को ऐतिहासिक ज्ञान से प्रभावित करना चाहता है अवश्यमेव अपनी सामग्री को विकृत करता है। हमारा वर्णन पक्षपात-विहीन होना चाहिए यदि उसको तुलनात्मक कार्य के लिए एक ठोस आधार बनना है।

भाषा के सम्बन्ध में एकमात्र सहायक सामान्यीकरण आगमनात्मक (inductive) सामान्यीकरण है। वे तत्त्व (अभिलक्षण) जिन्हें हम सार्वत्रिक समझते हैं कदाचित् अगली नई उपलब्ध भाषा में अविद्यमान हो सकते हैं। कुछ अभिलक्षण, उदाहरणार्थ, संज्ञा जैसे शब्दों का क्रिया जैसे शब्दों से पृथक् शब्दभेद का होना, बहुत-सी भाषाओं में सामान्य है, किन्तु कुछ में बिल्कुल नहीं मिलता है। यह तथ्य कि कुछ अभिलक्षण, किसी-न-किसी रूप में बहुप्रचलित हैं, उल्लेखनीय तथ्य है और व्याख्या की अपेक्षा रखता है। जब हमारे पास अनेक भाषाओं की पर्याप्त सामग्री हो जाएगी तब हम सामान्य व्याकरण की समस्याओं पर पुनर्विचार करेंगे और समानताओं और विभिन्नताओं की व्याख्या ढूंढेंगे, किन्तु यह अध्ययन जब कभी होगा, ऊहापोहात्मक न होकर आगमनात्मक होगा।

जहाँ तक भाषा में परिवर्तन का सम्बन्ध है, हमारे पास यह दिखाने के लिए पर्याप्त सामग्री है कि परिवर्तन की सामान्य प्रक्रियाएँ सभी भाषाओं में एक-सी हैं और एक ही दिशा में सक्रिय हैं। यहाँ तक कि परिवर्तन के अत्यन्त विशिष्ट प्रतिरूप भी अत्यधिक विभिन्न भाषाओं में एक ही समान, यद्यपि स्वतंत्ररूपेण, होते हैं। ये तथ्य भी किसी दिन, जब हमारा ज्ञान-क्षितिज विस्तृत होगा, पद्धति-बद्ध सर्वेक्षण और सुयोजित सामान्यीकरण के रूप में प्रकट होंगे।

अध्याय 2

भाषा की उपयोगिता

2.1 भाषा के अध्ययन का सबसे कठिन चरण उसका पहला चरण है। बार-बार विद्वानों ने भाषा के अध्ययन का प्रयास किया, किन्तु वास्तविक प्रवेश उन्हें न मिल पाया। भाषाविज्ञान कुछ अपेक्षाकृत व्यावहारिक कार्य-वृत्तियों से निकला था जैसी कि, लिपि की उपयोगिता, साहित्य का (विशेषतः प्राचीन आलेखों का) अध्ययन, परिमार्जित भाषिक-रूपों का निर्धारण, यद्यपि इन विषयों पर लोग बिना भाषाविज्ञान पढ़े यथेच्छ विवेचन कर सकते हैं। चूंकि इस विषय में किसी विद्यार्थी को अब भी वैसा ही गतिरोध हो सकता है जैसा कि पहले होता रहा है, अतएव यह अच्छा होगा कि भाषा के अध्ययन-संबंधी इन विषयों का भाषाविज्ञान से जो भेद है उसे स्पष्ट करा लिया जाए।

लेखन भाषा नहीं है, वह दृश्यमान चिन्हों द्वारा भाषा को अंकित करने का साधनमात्र है। चीन, मिश्र, मेसोपोटामिया जैसे कुछ देशों में हजारों वर्षों से लेखन व्यवहार में है, किन्तु आजकल बोली जाने वाली अधिकांश भाषाओं के लिए लेखन का प्रयोग अपेक्षाकृत हाल में हुआ है या, अभी तक हुआ ही नहीं है। इसके अतिरिक्त मुद्रण के आविष्कार तक साक्षरता इने-गिने व्यक्तियों तक ही सीमित थी। सभी भाषाएँ, अपने पूरे इतिहास में, सदैव ऐसे लोगों के द्वारा भी बोली जाती रही हैं जिन्हें पढ़ना या लिखना नहीं आता था। ऐसे लोगों की भाषा भी उतनी ही स्थायी, नियमित और समृद्ध होती रही है जितनी कि लेखन जानने वाले राष्ट्रों की भाषा। इसके अतिरिक्त किसी भाषा का स्वरूप ज्यों का त्यों बना रहता है चाहे वह किसी भी लिपि प्रणाली से अंकित की जाए[1], जिस प्रकार एक व्यक्ति का वैसे का वैसा व्यक्तित्व बना रहता है चाहे उसका किसी भी माध्यम से चित्र खींचा जाए। जापानी भाषा तीन लिपि-प्रणालियों से अंकित की जाती है और चौथी लिपिप्रणाली विकसित हो रही है। तुर्क लोगों ने सन् 1928 में अरबी अक्षरों के स्थान पर रोमनाक्षरों को अपनाया, किन्तु रोमनाक्षर अपनाने के बाद भी भाषा का उसी ढंग से व्यवहार करते रहे जैसा कि पहले करते थे।

अनुवादक की टिप्पणी : 1. भारत में संस्कृत भाषा की यही स्थिति है।

लेखन जानने के लिए भाषा जानना आवश्यक है किन्तु भाषा जानने के लिए लेखन जानना आवश्यक नहीं है। अधिक निश्चय के लिए हम प्रायः लिखित-आलेखों द्वारा पूर्वकालीन भाषा के संबंध में सूचना प्राप्त करते हैं—और इस कारण हम एक अन्य प्रसंग में लिपि के इतिहास का अध्ययन करेंगे—किन्तु ऐसा करना बाधा से खाली नहीं है। वास्तविक ध्वनि-अंशों के रूप में लिखित-चिह्नों की व्याख्या करते समय हमें बड़ा ध्यान रखना पड़ता है और प्रायः हम इसमें असफल होते हैं, अतएव हमें बोले गए श्रव्य शब्दों को ही अधिक महत्त्व देना चाहिए।

साहित्य, चाहे वह उच्चारित रूप में प्राप्य हो, अथवा, जैसा कि आजकल प्रचलन है, लिखितरूप में प्रस्तुत हो, सुन्दर और उल्लेखनीय उच्चार-खण्डों का समूह है। साहित्य के विद्यार्थी किसी विशिष्ट व्यक्ति (जैसे, शेक्सपियर), के उच्चार-खण्डों का निरीक्षण करते हैं और उनका ध्यान अर्थविचार और रूपों की अपसामान्य विशेषताओं पर अधिक होता है। लिखित भाषा के अध्येता (philologist) की रुचि इससे अधिक विस्तृत है और वह पढ़ी हुई वस्तु की पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक महत्ता भी समझना चाहता है। इसके विपरीत उच्चारित भाषा का भाषावैज्ञानिक (linguist) सभी व्यक्तियों के उच्चार-खण्डों को एकरूप से देखता है। एक बड़े लेखक की वैयक्तिक विशेषताओं का, जिनसे लेखक की भाषा उस समय और उस स्थान की सामान्य भाषा से भिन्न होती है, इस भाषा-वैज्ञानिक के लिए उतना ही कम महत्त्व है, जितना कि एक व्यक्ति की भाषण-शैली का दूसरे व्यक्ति की भाषण-शैली से भिन्न होने का; किन्तु सभी वक्ताओं में मिलने वाली सामान्यताओं पर उसका सबल आग्रह है।

भाषण की 'साधुता-असाधुता' अथवा 'शुद्धता-अशुद्धता' कुछ सामाजिक स्थितियों का परिणाम है। भाषावैज्ञानिक इनका भी निरीक्षण उसी प्रकार करता है जिस प्रकार अन्य भाषावैज्ञानिक तथ्यों का। वक्तागण किसी भाषणरूप को 'साधु' या 'शुद्ध' मानते हैं, अथवा 'असाधु' या 'अशुद्ध' मानते हैं, यह तथ्य भाषिकरूपों के संबंध में भाषावैज्ञानिक द्वारा संगृहीत तथ्यों का अंगमात्र है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसे कथनों से प्रभावित होकर उसे विश्लेषण के समय अपनी कुछ सामग्री छोड़ देने का, अथवा अपने आलेखों को दूषित करने का अधिकार नहीं है—उसे सभी भाषिक-रूपों को बिना पक्षपात देखना है। यह उसके कार्य का अंग है कि वह मालूम करे कि किन परिस्थितियों में वक्ता किसी रूप को 'शुद्ध' या 'अशुद्ध' कहते हैं और प्रत्येक ऐसे भाषिकरूप में यह पता लगाये कि ऐसा क्यों कहते हैं—उदाहरणार्थ बहुत लोग कहते हैं कि अंग्रेजी में ain't प्रयोग अशुद्ध है और am not प्रयोग शुद्ध है। किन्तु यह शुद्धाशुद्ध

विचार भाषा-विज्ञान की अनेक समस्याओं में से एक है और कोई आधारभूत समस्या नहीं है। इसका तभी विचार करना ठीक होगा जब भाषा के संबंध में बहुत से अन्य तथ्य मालूम हो जाएँ। यह आश्चर्य की बात है कि लोग किसी भाषा-वैज्ञानिक प्रशिक्षण के बिना ही इस शुद्धाशुद्ध विचार के बेकार वाद-विवाद को लेकर बड़ा कड़ा परिश्रम करते हैं और स्वयं भाषा के अध्ययन में नहीं जुट जाते, जब कि केवल ऐसा अध्ययन ही उनके सामने विचार-परामर्श के मूलतत्त्वों को प्रकट कर सकता है।

लेखन, साहित्य, लिखित भाषा तथा शुद्धाशुद्ध भाषिकरूपों पर विचार करने वाले अध्येताओं को, यदि वे निरन्तर धैर्य और ठीक प्रणाली से कार्य करते रहे हैं, कुछ निरर्थक प्रयासों के बाद अवश्य अनुभव हुआ होगा कि यह बेहतर होता कि वे पहले भाषा के सम्बन्ध में जान लेते और फिर इन समस्याओं पर विचार करते। हम लोग इस घूम-फेर से बच सकते हैं यदि हम सीधे सामान्य-भाषण पर ध्यान दें। इसका प्रारम्भ हम एक अत्यन्त सरल परिस्थिति में प्रयुक्त उच्चार-खण्ड की क्रियाओं के निरीक्षण से करेंगे।

2.2 मान लीजिए कि मोहन और राधा[1] एक गली से जा रहे हैं। राधा को भूख लगी है और उसे एक पेड़ पर सेब दिखाई पड़ता है। वह अपने स्वरयन्त्र, जीभ और ओठों से कुछ ध्वनि निकालती है। मोहन चारों ओर लगी बाड़ को फाँदकर अन्दर जाता है, पेड़ पर चढ़ता है, सेव तोड़ता है और लाकर राधा के हाथ पर रख देता है। राधा तब उसे खा लेती है।

इस घटना-क्रम का कई प्रकार से अध्ययन किया जा सकता है, किन्तु भाषा का अध्ययन करने वाले हम स्वभावत: भाषण की क्रियाओं और उन अन्य क्रियाओं में, जिन्हें हम क्रियात्मक घटनाओं के नाम से पुकारेंगे भेद करेंगे। इस दृष्टि-कोण से इस घटनाक्रम के समय के पूर्वापर के अनुसार तीन अंग हैं —

A. भाषणक्रिया के पूर्व घटित क्रियात्मक घटनाएँ,

B. भाषणक्रिया,

C. भाषणक्रिया के बाद घटित क्रियात्मक घटनाएँ।

हम पहले इनमें से A और C में घटित क्रियात्मक घटनाओं पर विचार करेंगे। A की घटनाओं का मुख्य संबंध वक्ता 'राधा' से है। वह भूखी थी अर्थात् उसकी किन्हीं पेशियों में कुंचन हो रहा था और कुछ द्रवों का, विशेषत: पेट में, स्रवण हो रहा था। शायद वह प्यासी भी थी और लाल सेब से परावर्तित प्रकाश-तरंगें उसके नेत्रों पर पड़ीं। उसने अपने बगल में मोहन को देखा।

---

1. मूल में Jack और Jill।

मोहन के साथ राधा के अब तक के सम्बन्ध अब घटनाक्रम को प्रभावित करते हैं। मान लीजिए कि वे दोनों परस्पर संबंधी हैं जैसे कि भाई-बहिन अथवा पति-पत्नी। इन सब घटनाओं को, जो राधा के भाषण के पूर्व की हैं और जिनका संबंध राधा से है, **हम वक्ता का उद्दीपन** कहते हैं।

अब हम C अर्थात् राधा के भाषण के बाद की क्रियात्मक घटनाओं पर विचार करेंगे। इसके अन्तर्गत सेब लाने और राधा को देने की घटनाएँ आती हैं जिनका मुख्य सम्बन्ध श्रोता मोहन से है। भाषण के बाद जो क्रियात्मक घटनाएँ घटित होती हैं और जिनका संबंध श्रोता से है, उन्हें **श्रोता की अनुक्रिया** कहते हैं। भाषण के बाद जो घटनाएँ हैं उनका संबंध राधा से भी है और यह एक महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है क्योंकि फल राधा के हाथ ही लगता है और वह उसे खाती है।

यह सुस्पष्ट है कि हम लोगों की पूरी कहानी का आधार A और C से सम्बद्ध पुराने सम्बन्ध हैं। प्रत्येक मोहन और राधा ऐसा न करते। यदि राधा शर्मीली होती या उसके मोहन के साथ अच्छे अनुभव न होते तो वह भूखी होते हुए भी और सेब देखते हुए भी कुछ न बोलती, यदि मोहन राधा से नाराज होता तो राधा के माँगने पर भी सेब तोड़कर न लाता। भाषण की शब्द-रचना और उससे पहले और बाद की घटनाएँ—ये सब वक्ता और श्रोता के पूर्व-जीवन पर निर्भर हैं। वर्तमान स्थिति में हम यह मानकर चले हैं कि ये सब प्रवर्तक घटक ऐसे थे कि घटना उसी प्रकार घटित हुई जैसे कि वर्णित की गई है। यह सब मानते हुए हम यह जानना चाहते हैं कि भाषण-क्रिया B का वर्णित घटनाक्रम में क्या महत्त्व है।

यदि राधा अकेली होती, संभवतः भूखी भी होती और प्यासी भी होती और संभवतः सेब को पेड़ पर लटका हुआ भी देखती, फिर भी यदि उसका सामर्थ्य होता, वह बाड़ फाँदना और पेड़ पर चढ़ना जानती होती तो सेब पा सकती और खा सकती, यदि ऐसा न होता, तो भूखी बनी रहती, अकेली राधा की वह स्थिति होती जो कि एक न बोलने वाले मूक पशु की। यदि कोई एक पशु भूखा है और भोजन देखता या सूंघता है तो उसकी ओर बढ़ता है, वह उस भोजन को पाता है या नहीं, यह उसके अपने सामर्थ्य और कौशल पर निर्भर है। भूख की स्थिति और भोजन के दर्शन अथवा गन्ध उद्दीपन हैं (उद्दीपन को हम S चिन्ह से प्रदर्शित करेंगे) और उस भोजन की ओर उसका बढ़ना उसकी अनुक्रिया है (अनुक्रिया को हम R चिन्ह से प्रदर्शित करेंगे)। अकेली राधा और मूक पशु एक-सा आचरण करते हैं, अर्थात्

S (उद्दीपन)——→R (अनुक्रिया)

अगर वे काम करते हैं तो भोजन मिल जाता है, यदि नहीं करते हैं—उनमें की क्रियाओं से भोजन पाने का पर्याप्त सामर्थ्य अथवा कौशल नहीं है—तो वे भूखे रह जाते हैं ।

निश्चयतः यह राधा के हित में है कि उसे सेब मिले । बहुत से अवसरों पर यह जीवन-मरण का प्रश्न नहीं बनता है, यद्यपि कभी-कभी ऐसा हो सकता है । किन्तु लम्बी अवधि में राधा को (या किसी पशु को), जिसे भोजन मिलता रहता है, इस पृथिवी पर आबादी फैलाने और जीवित बने रहने का अधिक अवसर मिलता है । अतएव वे प्रबन्ध जिनसे राधा को सेब मिलने से अधिक संयोग हैं राधा के लिए अत्यन्त उपयोगी और हितकारी हैं । बोलने वाली राधा ने हमारे वर्णन में ऐसे ही प्रबन्ध का लाभ उठाया है । प्रारम्भतः सेब पाने के लिए वही सम्भाविता है जोकि एक अकेली राधा या मूक पशु को है । इसके अतिरिक्त बोलने वाली राधा के लिए ऐसी संभाविता भी है जो और न बोलने वालों को नहीं है । उस बाड़ पर फाँदने और पेड़ पर चढ़ने के स्थान पर उसने अपने कण्ठ और मुख का कुछ संचलन किया जिससे कुछ ध्वनि निकली । तुरन्त मोहन राधा की ओर से अनुक्रियाएँ करने लगा, उसने राधा के सामर्थ्य से परे क्रियाओं को किया और अन्त में राधा को सेब मिला । **भाषा के द्वारा यहाँ यह संभव हो पाया कि एक व्यक्ति समुचित अनुक्रिया करता है जबकि उद्दीपन किसी दूसरे व्यक्ति को हुआ है ।**

आदर्श स्थिति में परस्पर बातें कर सकने वाले वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति को वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य और कौशल से लाभ उठाने का अवसर है । जितने ही भिन्न-भिन्न कौशल वाले व्यक्ति हैं उतनी ही विस्तृत सीमा में वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति है । केवल एक ही व्यक्ति को ऊँचे-ऊँचे पेड़ पर चढ़ने का कौशल आना आवश्यक है, क्योंकि वह शेष के लिए फल ला सकता है; केवल एक ही व्यक्ति को अच्छा मछवाहा होना आवश्यक है, क्योंकि वह शेष के लिए मछली लाकर दे सकता है । **श्रम विभाजन और उसके साथ मानव समाज के सारे कार्य-चालन के मूल में भाषा है ।**

2.3 अभी हमें अपनी कहानी की भाषण-घटना B पर विचार करना शेष है । निश्चयतः यह हमारी कथा का वह अंश है जिसका हम भाषा के जिज्ञासुओं से मुख्य संबंध है । हम अपने सभी कार्यों में B का निरीक्षण करते हैं, A और C का हमसे इसी कारण संबंध है कि वे B से सम्बद्ध है । शरीर-रचनाविज्ञान और भौतिक विज्ञान के हम आभारी हैं जिनके कारण हम भाषण-घटना के संबंध में इतना जान सके हैं कि B के निम्नलिखित तीन अंग होते हैं—

(B–1) वक्ता राधा ने अपनी घोषतंत्रियों को कंठमणि के भीतर (दो

सूक्ष्म पेशियों को), अपने नीचे के जबड़े को, अपनी जीभ को ऐसा हिलाया कि वायु को ध्वनितरंगों के रूप में निकलना पड़ा। वक्ता के ये संचलन उद्दीपन S की अनुक्रियारूप हैं। क्रियात्मक (अथवा संचालनात्मक) अनुक्रिया R के स्थान पर—अर्थात् स्वयं उस सेब को पाने के लिए शारीरिक चेष्टा करने के स्थान पर—उसने एक वाचिक संचलन अर्थात् **भाषणात्मक (प्रतिस्थापित)** अनुक्रिया की (जिसे हम r चिन्ह से सूचित करेंगे)। संक्षेप में, राधा को एक बोलने वाले प्राणी के रूप में उद्दीपन की, न केवल एक प्रत्युत दो प्रकार की, अनुक्रियाएँ करने की सम्भावना है—

S>————————→R (क्रियात्मक अनुक्रिया)

S>— — — — — — — →r (वाचिक प्रतिस्थापित अनुक्रिया)

उपरिर्वणित स्थिति में उसने दूसरी संभावना अपनायी थी।

(B-2) राधा के मुख—स्थित वायु में सृजित ध्वनितरंगों ने चारों ओर की वायु को सम तरंगों में गतिमान कर दिया।

वायु में गतिमान ये ध्वनि-तरंगें मोहन के कर्ण-पटह (कान के पर्दे) पर जाकर टकराईं और वहां उन्होंने कम्पन उत्पन्न किया जिससे मोहन की तंत्रिकाओं (ज्ञान-तंतुओं) को प्रभावित किया, अर्थात् मोहन ने भाषण सुना। इस श्रवण ने मोहन के लिए उद्दीपन का काम किया। हम उसे दौड़ते हुए पाते हैं, वह सेब को राधा की पहुँच में पहुँचाता है और ऐसा लगता है कि राधा की भूख तथा सेब उद्दीपन ने स्वयं उसी को प्रभावित किया है। यदि कोई दूसरे ग्रह का प्राणी, जो यह न जानता हो कि मानवों में भाषा नाम की कोई चीज़ है, यह सब देखे तो वह यही समझेगा कि मोहन के शरीर में कहीं-न-कहीं कोई ज्ञानेन्द्रिय है जिससे उसे सूचना मिली कि राधा भूखी है और उसने एक सेब देखा है। संक्षेप में, मोहन, एक बोलने वाले प्राणी में दो प्रकार के उद्दीपनों से अनुक्रियायें उत्पन्न होती हैं—(1) **क्रियात्मक** उद्दीपन S प्रकार का (जैसे भूख और भोजन के दर्शन) और (2) **वाचिक (प्रतिस्थापित)** उद्दीपन (जैसे कर्ण-पटह के कुछ कम्पन) जिसे हम S से सूचित करेंगे। जब हम मोहन को किसी कार्य में (जैसे सेब लाने में) लगे हुए देखते हैं तो उसके कार्य के मूल में, एक पशु के कार्य के समान, केवल क्रियात्मक उद्दीपन (पेट में भूख अथवा सेब का दर्शन) नहीं होता है बल्कि प्रायः वाचिक उद्दीपन होता है। उसके कार्यकलाप न केवल एक प्रत्युत दो प्रकार के उद्दीपनों से प्रेरित होते हैं :—

(क्रियात्मक उद्दीपन) S>————————→R

(वाचिक प्रतिस्थापित उद्दीपन) S>— — — — — — — →R

यह स्पष्ट है कि राधा के वाचिक संचलन B_1 और मोहन के श्रवण B_3 के

बीच बहुत कम अनिश्चिति अथवा परिवर्तन है, क्योंकि इनके बीच में केवल वायु में गतिमान ध्वनितरंगें हैं। यदि हम इस संबंध को बिन्दुदार रेखाओं से खींचें तो मानवों में एक उद्दीपन से दो प्रकार प्रभावित होकर अनुक्रिया करने को निम्न दो आरेखों से सूचित कर सकते हैं :—

मूक अनुक्रिया S>————→R

भाषणमध्यान्तरित अनुक्रिया S>————→r . . . . s>————→R

इन दोनों प्रकारों में भिन्नता सुस्पष्ट है। मूक अनुक्रिया उसी प्राणी में होगी जिसे उद्दीपन मिला है, और जिसे उद्दीपन मिला है वही प्राणी अनुक्रिया करता है। अतएव यह अनुक्रिया उन्हीं क्रियाओं में सीमित हैं जो उद्दीपन पाने वाला प्राणी कर सकता है। इसके विपरीत भाषण-मध्यान्तरित अनुक्रिया ऐसे व्यक्तियों में भी हो सकती है जिन्हें स्वयं क्रियात्मक उद्दीपन नहीं मिला है, उद्दीपन पाने वाला व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को समुचित अनुक्रिया करने के लिए प्रेरित कर सकता है और वह प्राणी वे कार्य भी कर सकता है जो कि वक्ता नहीं कर पाता है। आरेख में तीर-चिन्ह एक व्यक्ति के भीतर ही हो रहे घटनाक्रम को प्रदर्शित करता है—घटनाक्रम जिसे हम तन्त्रिकाप्रणाली के किसी गुणधर्म के कारण मानते हैं। अतएव मूक अनुक्रिया उसी शरीर में होती है जिसे उद्दीपन मिला है। इसके विपरीत भाषण-मध्यान्तरित अनुक्रिया में एक कड़ी है, जिसे बिन्दुदार रेखा से प्रदर्शित करते हैं। इस कड़ी के अन्तर्गत वायु में गतिशील ध्वनि तरंगें आती हैं। भाषण-मध्यान्तरित अनुक्रिया किसी भी व्यक्ति के शरीर में उत्पन्न हो सकती है जो कि भाषण सुनता है। परिणामतः अनुक्रिया की संभावना बहुत अधिक मात्रा में बढ़ जाती है क्योंकि विभिन्न श्रोताओं में विविध भांति की क्रियायें करने का सामर्थ्य है। वक्ता का शरीर और तंत्रिका-प्रणाली वक्ता के शरीर और तंत्रिका-प्रणाली से पृथक् है, यह पार्थक्य स्वर-तरंगों द्वारा एकबद्ध किया जाता है।

जीव-विज्ञान की दृष्टि से मूक तथा वाचिक घटनाक्रमों में, दोनों में, एक सी महत्त्वपूर्ण बातें हैं, अर्थात् S (भूख और भोजन के दर्शन) और R (संचलन जिनसे भोजन मिलता है या नहीं मिल पाता है)। ये घटनाक्रम के क्रियात्मक चरण हैं। भाषण की घटना s . .r केवल एक साधन है जिससे S और R भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में हो सकें। एक सामान्य मनुष्य की रुचि केवल S और R में रहती है, यद्यपि वह भाषा को काम में लाता है और उससे समृद्ध होता है तथापि उस पर कुछ ध्यान नहीं देता है। 'सेब' शब्दमात्र का उच्चारण या श्रवण किसी की भूख नहीं मिटा सकता है। वह, शेष भाषण के समान, अपने सहकर्मियों से सहायता प्राप्त करने का साधनमात्र है। किन्तु भाषा के जिज्ञासुओं के रूप में हम लोगों का ठीक उसी भाषण घटना (s . . . . r)

से संबंध है जो कि स्वयं में अमहत्त्वपूर्ण होते हुए भी महान् उद्देश्यों का साधन है। हम अपने अध्ययन के विषय—भाषा और क्रियात्मक घटनाओं—उद्दीपन और अनुक्रिया में भेद मानते हैं। जब ऊपर से महत्त्वहीन दिखाई पड़ने वाली वस्तु अन्ततः किसी और महत्त्वपूर्ण वस्तु से निकटतया सम्बन्ध निकालती है, तब हम कहते हैं कि उसका अर्थ है, अर्थात् वह उस महत्त्वपूर्ण वस्तु का 'द्योतक' है। इस प्रकार, हम कहते हैं कि भाषण उच्चारण स्वयं में तुच्छ और महत्त्वहीन होते हुए भी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उसका 'अर्थ' है। 'अर्थ' से तात्पर्य उन महत्त्वपूर्ण वस्तुओं से है जिनसे उच्चार-खण्ड (B) सम्बद्ध है, अर्थात् क्रियात्मक घटनाओं A और C से है।

कुछ सीमा तक कुछ जीव दूसरों के उद्दीपन से प्रभावित होते हैं। स्पष्टतया एक चींटी अथवा मधुमक्खियों के झुण्ड में दृश्यमान अद्भुत तालमेल किसी-न-किसी अन्योन्य क्रिया के परिणामस्वरूप हैं। इस प्रयोजन में ध्वनि को साधनरूप से प्रयुक्त करने के अनेक उदाहरण हैं। उदाहरणार्थ, झींगुर दूसरे झींगुरों को घर्षणनाद से बुलाते हैं, वे अपनी टांगों को शरीर से रगड़ते हैं जिस घर्षण से नाद उत्पन्न होता है। कुछ प्राणी जैसे कि मानव, मौखिक ध्वनि निकालते हैं। चिड़ियाँ शब्दिनी सिरिंग्स (syrinx) के द्वारा ध्वनितरंगें उत्पन्न करती हैं (सिरिंग्स फेफड़ों के ऊर्ध्वभाव में स्थित पिपहरी जैसा अवयव है)। उच्चस्तर के स्तनपायी प्राणियों में स्वरयन्त्र (काकल) (larynx) होता है जो श्वासनालिका के ऊपरी भाग में स्थित एक उपास्थि-पिटक है। स्वरयंत्र के भीतर दाहिने ओर बायें नली की दीवाल से सटी दो टाड़ (shelf-like) -सी पेशियाँ हैं। जब ये पेशियाँ, घोषतन्त्रियों (vocal chords) तनकर खिंची रहती हैं तब निकलने वाली श्वास उनमें नियमित कम्पन उत्पन्न करती है जिससे ध्वनि उत्पन्न होती है। इस ध्वनि को हम **घोष ध्वनि** (voice) कहते हैं।

मनुष्यों की वाणी प्राणियों की—यहाँ तक कि 'वाणी' प्रयुक्त करने वाले प्राणियों की—संकेतवत् क्रियाओं से भिन्न है क्योंकि उसमें अधिक मात्रा में विभेदीकरण है। उदाहरणार्थ, कुत्ते केवल दो या तीन प्रकार की ध्वनि करते हैं—जैसे कि, भोंकना, गुर्राना, केकियाना। और इन इने-गिने संकेतों द्वारा एक कुत्ता दूसरे कुत्ते में अनुक्रिया उत्पन्न करता है। तोते भी भाँति-भाँति की ध्वनियाँ निकाल सकते हैं किन्तु प्रत्यक्षतः विभिन्न ध्वनियों से विभिन्न अनुक्रियायें नहीं करते हैं। मनुष्य भाँति-भाँति की वाचिक ध्वनियाँ निकालता है और उस विभिन्नता से लाभ उठाता है। विशेष भाँति के उद्दीपनों के बीच वह विशेष भाँति की वाचिक-ध्वनि करता है और उसके साथी उनको सुनकर समुचित अनुक्रियायें करते हैं। संक्षेप में मानव-प्राणी में विभिन्न ध्वनियों के विभिन्न अर्थ

होते हैं। इस विशिष्ट ध्वनियों के विशिष्ट अर्थों से समन्वय का अध्ययन ही भाषा का अध्ययन है।

इस समन्वय से यह सम्भव हो सका है कि मनुष्य सुनिश्चिति से अन्योन्य-क्रिया कर सकता है। जब हम किसी को ऐसे मकान का पता बताते हैं जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा है तब हम ऐसा कार्य करते हैं जो कोई जानवर नहीं कर सकता है। प्रत्येक मनुष्य के उपयोग के लिए न केवल शेष अन्य मनुष्यों की समर्थताएँ हैं, अपितु यह सहकारिता बहुत सुनिश्चित है। इस सहकारिता की मात्रा और सुनिश्चिति हमारे सामाजिक संघटन की सफलता का माप है। समाज को जीवितप्राणी के समान अंगयुक्त-संघटना मानना रूपकमात्र नहीं है। मनुष्यों का एक सामाजिक वर्ग वास्तव में एक एकाकी जीव की अपेक्षा उसी प्रकार उच्चकोटिक इकाई है जिस प्रकार एक बहुकोषिक प्राणी एक एककोषी प्राणी की अपेक्षा उच्चकोटिक इकाई है। जिस प्रकार एक बहुकोषिक प्राणी के अनेक एकाकी कोष तंत्रिका-प्रणाली जैसे व्यवस्थापनों द्वारा सहकार्य करते हैं, उसी प्रकार मानव-समाज में सभी एकाकी व्यक्ति ध्वनितरगों द्वारा सहकार्य करते हैं।

भाषा के द्वारा जिन विभिन्न दिशाओं में हम लाभान्वित होते हैं वे इतनी स्पष्ट हैं कि उनमें से कुछेक का ही यहां उल्लेख करना पर्याप्त है। हम संसूचना को पुनः प्रेषित कर सकते हैं (अर्थात् आगे बार-बार भेज सकते हैं)। उदाहरणार्थ जब कुछ व्यापारी या किसान यह कहते हैं कि हमें इस नदी की धारा के ऊपर एक पुल चाहिए तो यह सूचना नगरसभा, विधानसभा, लोकनिर्माण विभाग, इंजीनियर वर्ग, ठेकेदारों के दफ्तर इन सबसे गुजरती है। यह संसूचना बहुत-से वक्ताओं से गुजरती है और बार-बार एक से दूसरे को मिलती है और अन्त में किसानों के क्रियात्मक उद्दीपन की अनुक्रिया में मजदूरों की टोली पुल बनाने की क्रियात्मक क्रिया करती है। भाषण की पुनःप्रेषणता के गुण से निकटतया सम्बद्ध एक अन्य गुण है, वह है अमूर्तत्व का गुण। क्रियात्मक उद्दीपन और क्रियात्मक अनुक्रिया के बीच स्थित पुनःप्रेषण का कोई तात्कालिक क्रियात्मक प्रभाव नहीं है। अतएव मध्यवर्ती पुनःप्रेषण किसी भी रूप में रक्खे जा सकते हैं, केवल प्रतिबन्ध यह है कि अन्तिम क्रियात्मक अनुक्रिया के तत्कालपूर्व उन्हें फिर यथार्थतः पूर्वतम (जिस रूप से पुनः प्रेषण प्रारम्भ हुआ था उस) रूप में लाया जा सके। पुल का रूप-विधान बनाने वाला इंजीनियर स्वयं वास्तविक कड़ियाँ या शहतीर (गर्डर) नहीं लगाता है, वह, गणना में संख्या के समान, केवल वाचिक रूपों को काम में लाता है। यदि उससे प्रकलन में कोई गलती होती है तो उसे असली सामान नष्ट नहीं करना पड़ता है, केवल वास्तविक निर्माण के पूर्व उन गलत

वाचिक रूपों (या गलत रेखाचित्रों) को सही रूपों में बदलना होता है। यही अपने से बोलने अर्थात् सोचने का लाभ है। बचपन में हम आवाज करते हुए अपने से बोलते हैं किन्तु बड़ों के टोकने से हम शीघ्र ध्वनि उत्पन्न करने वाले संचलनों को दबा देते हैं और केवल बहुत थोड़ी और न सुनाई पड़नेवाली ध्वनि निकालते हैं। दूसरे शब्दों में हम शब्दों द्वारा सोचने लगते हैं। सोचने की (विचार की) उपयोगिता गिनती की प्रक्रिया से प्रदर्शित की जा सकती है। भाषा के प्रयोग के बिना केवल सीमित संख्या तक संख्या का अनुमान लगाया जा सकता है। इसकी पुष्टि हम एक खाने में रखी किताबों को दृष्टिमात्र से गिनने के प्रयास से कर सकते हैं। वस्तुओं के दो समुच्चय संख्या में बराबर हैं—इस कथन का तात्पर्य है कि यदि पहले समुच्चय से एक वस्तु उठायें और उसे दूसरे समुच्चय की एक वस्तु के पास रक्खें और इसी प्रकार एक-एक करके रखते रहें तो अन्त में कोई भी वस्तु बिना जोड़े की नहीं रह जायेगी। किन्तु हम सदैव ऐसा नहीं कर सकते हैं। वे वस्तुएँ, बहुत संभव है, बहुत भारी हों या हिलाए न हिलें, या संसार के अलग-अलग भागों में हों या अलग-अलग समय में हों (जैसे कि तूफान के पहले और बाद एक भेड़ों का झुण्ड)। ऐसी स्थिति में भाषा सहायता के लिए आती है। संख्यावाचक शब्द एक, दो, तीन, चार आदि शब्दों की एक ऐसी श्रेणी है जिसे हमने एक नियतक्रम में कहना सीख लिया है और जो उपरिवर्णित प्रक्रिया का (एक वस्तु को उठाकर दूसरे समुच्चय की वस्तु के पास रखने का) स्थानापन्न है। उन्हें काम में लाके, वस्तुओं के किसी भी समुच्चय को संख्यावाचक शब्दों से एकैक-संगति में (जैसा कि गणितज्ञ पुकारते हैं) रखते हुए 'गिन' सकते हैं—अर्थात् वस्तु समुच्चय की पहली वस्तु के लिए 'एक', दूसरी के लिए 'दो', अगली के लिए 'तीन,' इस प्रकार केवल यह ध्यान में रखते हुए कि प्रत्येक वस्तु एक बार ही पुकारी जाए, तब तक कहते जाते हैं जब तक कि सभी वस्तुएँ समाप्त न हो जाएँ। मान लीजिए कि जब हमने 'उन्नीस' कहा तब कोई वस्तु शेष न रही। उसके बाद कभी भी और कहीं भी हम एक नए समुच्चय के साथ केवल वही गिनने की प्रक्रिया प्रयुक्त करके यह निर्धारित कर सकते हैं कि उस वस्तु समुच्चय में उतनी ही वस्तुएँ हैं या नहीं जितनी कि एक पहले के समुच्चय में थीं। गणित में, जहाँ भाषा का आदर्श प्रयोग है, इसी प्रक्रिया का विस्तार-प्रसार है। संख्या का प्रयोग अपने से बात करने की उपयोगिता का सबसे सरल स्पष्ट उदाहरण है, किन्तु प्रयोग के अन्य स्थल भी हैं। हम कोई भी काम करने के पूर्व सोच अवश्य लेते हैं।

2.5 विशेष उद्दीपन से प्रभावित होकर जो विशेष वाचिक अनुक्रिया हम करते हैं, वह विभिन्न मनुष्यों के समुदाय में विभिन्न हैं, अर्थात् मनुष्य अनेक बोलियाँ प्रयुक्त करते हैं। व्यक्तियों का एक समुदाय, जो एक से वाचिक-संकेतों

की पद्धति का प्रयोग करता है, एक भाषिक-समुदाय (speech-community) कहलाता है। स्पष्टतया भाषा का मूल्य इसी में है कि लोग उसको एक ही भाँति प्रयुक्त करते हैं। एक सामाजिक वर्ग का प्रत्येक मनुष्य उचित अवसरों पर समुचित भाषिक-ध्वनियों को प्रयुक्त करता है और जब दूसरों से इन भाषिक-ध्वनियों को सुनता है तो समुचित अनुक्रिया करता है। वह ऐसा बोले कि दूसरे समझ सकें और जो दूसरे कहते हैं उसे स्वयं समझ सके, कम से कम सभ्य समुदायों में भी यह प्रतिबन्ध आवश्यक है, जहाँ कहीं भी मनुष्य मिलता है, वह बोलते हुए प्राणी के रूप में मिलता है।

वर्ग में उत्पन्न प्रत्येक बच्चा इन भाषण और अनुक्रियाओं की वृत्तियों को अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में सीख लेता है। यह निस्सन्देह एक सबसे बड़ा बौद्धिक आश्चर्यमय काम है जो कि एक मानव कर सकता है। बच्चे बोलना कैसे सीख लेते हैं यह ठीक-ठीक पता नहीं है किन्तु सीखने की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार की मालूम होती है :—

(1) विभिन्न उद्दीपनों से प्रभावित होकर बच्चा पुकारता है और वाचिक ध्वनियों को दोहराता है। यह एक वंशागत-गुण है। मान लीजिए कि वह एक ध्वनि करता है, जिसे हम 'ब' से सूचित करते हैं। यद्यपि, निस्सन्देह, वास्तविक संचलन और तद्जनित ध्वनि परम्परागत हिन्दी भाषण ध्वनि 'ब' से भिन्न है।[1] स्वरकंपन बच्चे के श्रवण पटह पर टकराते रहते हैं जबकि वह इन संचलनों को दोहराता है। इससे एक वृत्ति बन जाती है। फलस्वरूप जब कभी तत्समान ध्वनि कान में पड़ती है वह प्रायः इन मुख के संचलनों को प्रारम्भ कर देता है अर्थात् 'ब' ध्वनि दोहराता है। यह एक ही अक्षर को दोहराने की वृत्ति कान में पड़ने वाली वाचिक-ध्वनि को उत्पन्न करना सिखाती है।

(2) कोई व्यक्ति, जैसे बच्चे की मां, बच्चे की उपस्थिति में कोई ध्वनि करती हैं जो कि बच्चे की एकाक्षर ध्वनि से मिलती है, जैसे उसने कहा 'बबुआ' 'बाबा'।[2] जब ये ध्वनियाँ बच्चे के कान में पड़ती हैं तो (1) में वर्णित वृत्ति काम में आती है और वह उससे अधिकतम मिलती-जुलती अपनी एकाक्षर ध्वनि 'ब' कहता है। तब हम कहते हैं कि बच्चा नकल करना सीख रहा है। बड़ी आयु वाले (वयस्क) लोगों ने सभी जगह ऐसा देखा होगा क्योंकि प्रत्येक भाषा में नर्सरी शब्द (शिशु-शब्द) होते हैं जो बच्चों की एकाक्षर ध्वनियों के दोहराने से

---

1. मूल में da ध्वनि है और उसका परम्परागत अंग्रेजी से भेद प्रकट किया गया है।

2. मूल में doll।

बने प्रतीत होते हैं जैसे मामा, दादा, नाना[1] आदि। निस्सन्देह इनका प्रचलन इस कारण भी हुआ कि बच्चे इन्हें आसानी से दोहरा सकते हैं।

(3) मां, निस्संदेह समुचित उद्दीपन में ही अपना शब्द प्रयुक्त करती है। वह कहती है 'बबुआ'[2] जबकि वह सचमुच में बच्चे को बबुआ दिखा रही है या दे रही है। बबुए को देखना और पकड़ना और 'बबुआ' (अर्थात् 'ब') का सुनना और कहना बार-बार साथ-साथ होता है, और बच्चे की एक नई वृत्ति पड़ जाती है। बबुए का दर्शन और स्पर्शमात्र 'ब' कहलाने के लिए पर्याप्त होता है। उसे एक शब्द प्रयुक्त करना आ गया। बड़ों को कदाचित् यह अपने शब्द के समान न लगे, किन्तु यह केवल अपूर्णता के कारण है। इसकी सम्भावना बहुत कम है कि कभी बच्चा नया शब्द गढ़ ले।

(4) बबुए को देखते ही 'ब' कहने की वृत्ति से अगली वृत्तियाँ बनती हैं। मान लीजिए प्रतिदिन बच्चे को नहाने के तुरन्त बाद बबुआ मिलता है (और वह ब ब ब करता है) उसे नहाने के बाद ब ब कहने का अभ्यास हो गया है। फिर यदि एक दिन मां नहाने के बाद उसे बबुआ नहीं देती है तो भी वह अभ्यासवश ब ब कहता है। मां समझती है कि वह बबुआ माँग रहा है और उसका ऐसा सोचना ठीक भी है क्योंकि वयस्क व्यक्ति का माँगना ऐसी ही परिस्थिति की कुछ जटिल प्रकार की स्थिति है। बच्चे ने प्रथम बार अमूर्त (abstract) अथवा प्रतिस्थापित (substitute) भाषण का प्रयोग किया है। उसने वस्तु के सामने न होते हुए भी वस्तु का संकेत किया है।

(5) बच्चे की भाषण-वृत्ति अपने परिणामों द्वारा दृढ़ हो जाती है। यदि वह ब ब स्पष्टतया उच्चारित करता है तो उसके बड़े समझ जाते हैं और उसे बबुआ देते हैं। जब ऐसा होता है तो बबुए का दर्शन और स्पर्श एक अतिरिक्त उद्दीपन का काम करता है और बच्चा शब्द का सफल उच्चारण दोहराता है और अभ्यास करता है। इसके विपरीत यदि वह ब ब अपूर्णतया उच्चारित करता है—अर्थात् बड़ों के परम्परागत उच्चारण 'बबुआ' से पर्याप्त भिन्नता से उच्चारित करता है—तो उसके बड़े उसे बबुआ देने के लिए प्रेरित नहीं होते हैं। बबुए के दर्शन और स्पर्श के अतिरिक्त उद्दीपन के स्थान पर बच्चों को दूसरे ध्यानाप-कर्षक उद्दीपन मिलते हैं, अथवा कदाचित नहाने के बाद खिलौना न मिलने की अनजानी परिस्थिति में वह मचल जाता है जो उसके हाल में पड़े कारण-चिन्हों

---

1. मूल में mama, dada
2. मूल में doll और da ध्वनि है।

को गड़बड़ा देता है। संक्षेप में, उसके उच्चारण के कहीं अधिक पूर्ण (सफल) प्रयास बार-बार दोहराने से दृढ़ हो जाते हैं और उसकी असफलताएँ भ्रान्तियों में मिट जाती हैं। यह प्रक्रिया कभी रुकती नहीं है। बहुत आगे चलकर यदि वह कहता है 'बाबा ने यह लाये थे' तो उसे यह निराशाजनक उत्तर मिलता है, 'नहीं तुम्हें यह कहना चाहिए कि बाबा लाए थे'। यदि वह यह कहता है कि 'बाबा लाए थे' तो सम्भवतः यह रूप सुनने को मिलेगा 'हां, यह बाबा लाए थे'[१] और उसे एक अनुमूल क्रियात्मक अनुक्रिया मिलती है।

साथ ही साथ उसी प्रक्रिया से बच्चा श्रोता के रूप में भी व्यवहार करना सीख जाता है। जब कि वह बबुए को पकड़े है, वह अपने को ब ब कहते सुनता है और उसकी मां कहती है 'बबुआ'। कुछ समय के बाद इस शब्द के श्रवणमात्र से वह 'बबुआ' पकड़ने लगता है। जब बच्चा अपनी इच्छा से हाथ हिला रहा है, या मां उसके हाथ को पकड़कर हिला रही है तब मां कहेगी 'अपना पापा को हाथ हिलाकर टा-टा करो'। बच्चा परम्परागत प्रकार से भाषण सुनकर आचरण करने की वृत्ति पैदा कर लेता है।

यह भाषण-वृत्तियों का दुहरा रूप अधिक और अधिकतर एकीभूत होता जाता है क्योंकि ये दोनों पहलू साथ-साथ होते हैं। प्रत्येक स्थिति में जहाँ बच्चा S——→r सम्बन्ध सीखता है (जैसा कि, बबुआ देखकर बबुआ कहना), वह s-—————→R यह सम्बन्ध भी सीखता है (जैसा कि बबुआ शब्द सुनकर बबुए की ओर बढ़ना या पकड़ना)। बहुत संख्या में ऐसे दोहरे समुच्चय सीखने से उसमें ऐसी वृत्ति विकसित हो जाती है कि एक पहलू दूसरे पहलू से सम्बद्ध हो जाता है। जैसे ही वह एक नया शब्द बोलना सीखता है, वैसे ही दूसरों द्वारा बोले शब्द सुनकर समुचित अनुक्रिया करने में सक्षम हो जाता है। इसी प्रकार जैसे ही किसी नए शब्द से अनुक्रिया करना सीखता है, वैसे ही समुचित अवसर पर उसे बोलने में प्रायः सक्षम हो जाता है। यह दूसरी कोटि का संक्रमण दोनों में अधिक दुष्कर है। बाद के जीवन में हम देखते हैं कि बच्चा अनेक भाषणरूप समझता तो है पर उनको कदाचित् ही या कभी नहीं प्रयुक्त करता है।

2.6 हमारे आरेख में बिन्दुदार रेखा से प्रदर्शित घटनाक्रम भलीभाँति समझा हुआ है। वक्ता की घोषतंत्रियाँ, जिह्वा, ओंठ आदि निःश्वास की धारा में ऐसी बाधा डालती हैं कि स्वरतरंगें उत्पन्न होती हैं। ये तरंगें हवा में माध्यम से प्रसृत होती हैं और श्रोता के कर्णपटह में टकराती हैं, जोकि तरंगों के अनुकूल

---

१. मूल में क्रमशः Daddy bringed it, No !, you must say "Daddy brought it."

कम्पित होता है। किन्तु तीरों से प्रदर्शित घटनाक्रम अत्यधिक अस्पष्ट है। हम उस यान्त्रिकी को समझ नहीं पाए हैं जिससे विशेष परिस्थितियों में विशेष वक्तव्य कहते हैं, और न हम उस यान्त्रिकी को जानते हैं जिससे हम उन भाषण-ध्वनियों के कर्णपटह पर टकराने पर समुचित अनुक्रिया करते हैं। स्पष्टतया यह यांत्रिकी हमारे सामान्य उपस्करण का अंग है जिनसे हम उद्दीपनों की अनुक्रिया करते हैं, चाहे वे वाचिक हों या अन्य। ये यान्त्रिकी शरीर-प्रक्रिया विज्ञान और विशेषतः मनोविज्ञान के विषय हैं। उनके विशिष्ट भाषाविषयक महत्त्व भाषण के मनोविज्ञान अर्थात् भाषिकी-मनोविज्ञान (linguistic psychology) का अध्ययन है। वैज्ञानिक श्रम-विभाजन में भाषा-वैज्ञानिक का सम्बन्ध भाषण संकेत (r. . . . . . .s) से ही है, वह शरीर प्रक्रिया या मनोविज्ञान की समस्याओं को सुलझाने में सक्षम नहीं है। भाषण-संकेतों के अध्ययन करने वाले भाषा-वैज्ञानिक के परिणाम मनोवैज्ञानिक के लिए भी बड़े मूल्यवान होंगे यदि वे मनोविज्ञान की पूर्वधारणाओं से तोड़े-मरोड़े नहीं गए हैं। हमने देखा है कि अनेक पहले के भाषा-वैज्ञानिकों ने इसका ख्याल नहीं रक्खा, उन्होंने अपने सभी विवरणों को मनोविज्ञान के किसी विशेष सिद्धान्त के अनुसार प्रस्तुत करने में तोड़ा-मरोड़ा है। इस दोष से निश्चयतः हम बच सकेंगे यदि हम भाषिकी-मनोविज्ञान के कुछ अधिक स्पष्ट पहलुओं का कुछ सर्वेक्षण कर लें।

वह यान्त्रिकी जिसमें भाषण-प्रक्रिया चालित होती है अवश्य बहुत जटिल और नाजुक है। यदि हम वक्ता के सम्बन्ध में बहुत काफी जान भी जाएँ और उन उद्दीपनों को भी जान जाएँ जिनसे वह प्रभावित हो रहा है, तब भी हम पहले से यह नहीं कह सकते कि वह बोलेगा या नहीं, और बोलेगा तो क्या बोलेगा। तब राधा और मोहन की कहानी में यह मानकर चले थे कि हम तथ्यों के अनुसार सब कुछ जानते ही हैं। यदि वास्तव में हम वहां उपस्थित होते, तो भी पहले से कुछ नहीं कह पाते कि राधा सेब देखने पर कुछ बोलती या नहीं, और यदि बोलती तो क्या बोलती। मान लीजिए कि वह सेब मांगती, तब भी हम पहले से यह नहीं कह पाते कि अपने निवेदन से पूर्व 'मैं भूखी हूँ' यह जोड़ती या 'कृपया' जोड़ती या वह कहती 'मुझे सेब की इच्छा है', या 'मुझे सेब ला-दीजिये' या 'काश' मेरे पास यह सेब होता' आदि। ऐसे वाक्यों की प्रायः असीमित संभावनाएँ थीं। इस विशाल परिवर्तन-क्षमता से मानवीय आचरण तथा उसके अन्तर्गत भाषा के संबंध में दो सिद्धान्त निकले हैं।

पहला सिद्धान्त मानसिकवाद (मनोवाद) (mentalistic theory) सिद्धान्त है। यह अपेक्षाकृत पुराना है और अब भी जन-सामान्य और वैज्ञानिकों दोनों के बीच प्रचलित और बहुमान्य है। यह वाद मानता है कि कोई एक

अभौतिक गुणक-मनस् या मनःशक्ति या आत्मा—(ग्रीक psyche जिससे psychology निकला है) है जो प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान है और जिसके कारण मनुष्यों के आचरण में विविधता है। इस मत के अनुसार यह मनस् भौतिक पदार्थ से सर्वथा भिन्न है। अतएव एक अन्य प्रकार के कारणकार्य-नियम का पालन करता है, अथवा पालन करता ही नहीं है। राधा बोलेगी या नहीं और क्या बोलेगी यह उसके 'मनस्' पर निर्भर है और यह मनस् भौतिक संसार में दृष्ट कारण कार्यक्रमों का पालन नहीं करता अतएव हम पहले से कुछ भी नहीं कह सकते।

दूसरा सिद्धान्त भौतिकवाद (materialistic) (या अच्छा होगा यदि कहें यान्त्रिकीवाद (mechanistic) है। इसके अनुसार भाषण तथा मानवीय आचरण की विविधता (बहुरूपता) इस कारण से ही है कि मानवीय शरीर एक बड़ी जटिल पद्धति है। इस भौतिकवाद के अनुसार मानवीय आचरणों में भी वही कारणकार्य भाव वर्तमान है जिसका हम भौतिकी, रसायनशास्त्र आदि में अध्ययन करते हैं। फिर भी मानवीय शरीर संरचना में इतना जटिल है कि एक अपेक्षाकृत बड़ा मामूली परिवर्तन, जैसे कि लालटैन से आई प्रकाश की किरणों का आखों की पुतली पर पड़ना, बड़ी उलझी हुई परिणामों (कार्यों) की लड़ी को चालू कर देता है और (इसके विपरीत) शरीर की अवस्था में अति सूक्ष्म अंतर इस प्रकाश-किरणों की अनुक्रिया में बहुत बड़ा अन्तर डाल सकता है। हम मनुष्यों की भी क्रियाओं का अनुमान लगा सकते हैं (जैसे कि एक निश्चित उद्दीपन से वह बोलेगा या नहीं, और यदि बोलेगा तो किन-किन शब्दों का उच्चारण करेगा। यदि हमें तत्कालीन शरीर की स्थिति का ठीक-ठीक पता हो, दूसरे शब्दों में, यदि हम पूर्व स्थिति में जन्म या पहले व्यक्तिवि शेष के अवयवों का ठीक-ठीक संगठन जान सकें और उस समय के बाद सभी अवयवों में होने वाले सभी परिवर्तनों का (इस शरीर पर पड़ने वाले एक-एक उद्दीपन का) लेखा-जोखा रखते रहें तो उस व्यक्ति की क्रियाओं को पहले से कह सकेंगे।

शरीर का वह अवयव जिससे यह नाजुक और विविध समंजन होते हैं शरीर का तंत्रिका-तन्त्र '(nervous system) है। यह तंत्रिका-तन्त्र बहुत ही जटिल तंत्र है। इससे शरीर के एक अंग पर परिवर्तन (आंखों में एक उद्दीपन) शरीर के दूसरे अंग पर (हाथ बढ़ा कर पहुँचने का या स्वरतंत्रियों या जीभ को हिलाने की अनुक्रिया का) प्रभाव डालता है। इसके अतिरिक्त यह स्पष्ट है कि तन्त्रिका-तन्त्र उस समय के लिए या स्थायीरूप से इस आचरण की प्रक्रिया से परिवर्तित हो जाता है, हमारी अनुक्रिया वैसे ही या उन्हीं उद्दीपनों से पहले हुई

अनुक्रियाओं पर बहुत अधिक निर्भर रहती है। राधा बोलेगी या नहीं यह बहुत कुछ इस पर रहता है कि सेब उसे अच्छा लगता है या नहीं, और मोहन के साथ उसके पहले के क्या अनुभव हैं। हम याद रखते हैं, वृत्तियाँ बनाते हैं और सीखते हैं। तंत्रिका-तंत्र प्रत्यक्षरूपेण एक ट्रिगर मशीन (घोड़ा दबाने से ही चालू होने वाली मशीन (trigger-mechanism) है। एक बहुत ज़रा-सा परिवर्तन एक बड़े विशाल विस्फोटक सामग्री के भण्डार में आग लगा सकता है। उदाहरणार्थ—वायु तरंगों की कर्णपटह पर हल्की टक्कर जैसा केवल बहुत मामूली परिवर्तन मोहन के सेब लाने जैसे बहुत बड़े संचलन को चालू कर देता है, इसकी व्याख्या के लिए हम अपनी रुचि का राधा-मोहन का उदाहरण ले सकते हैं।

तंत्रिका-तंत्र की कार्यविधि बाहर से प्रेक्षणीय नहीं है और व्यक्ति के पास कोई ऐसी इन्द्रिय नहीं होती (जैसा कि, उदाहरणार्थ, हाथ की पेशियों की कार्य-विधि के लिए) जिससे वह पता लगा सके कि उसके ज्ञान-तंतुओं में क्या हो रहा है। अतएव मनोवैज्ञानिक के सामने अप्रत्यक्ष अध्ययन की ही विधियाँ रह जाती हैं।

2.7 इन विधियों में से एक विधि प्रयोगों की विधि है। मनोवैज्ञानिक (एक बड़ी सामान्य परिस्थिति में) ध्यानपूर्वक पूर्व-व्यवस्थापित उद्दीपनों से अनेक व्यक्तियों को प्रभावित करता है, और उनकी अनुक्रियाओं को अंकित करता है। प्रायः वह इन व्यक्तियों से, वे स्वयं क्या अनुभव कर रहे हैं यह पूछता है, अर्थात् जहाँ तक संभव हो उनके अन्दर तब क्या हो रहा है जब उन्हें उद्दीपन मिला, उसका वर्णन उन व्यक्तियों से चाहता है। ऐसे अवसरों पर मनोवैज्ञानिक भाषावैज्ञानिक-ज्ञान न होने से प्रायः भटक जाते हैं। जैसे कि यह मानना कि व्यक्ति उन प्रक्रियाओं का अनुभव भाषा द्वारा व्यक्त कर सकता है जिसके लिए उसके पास कोई ज्ञानेन्द्रिय नहीं है, एक ग़लत बात है जैसे अपनी तन्त्रिका-तन्त्र की कार्य प्रणाली का अनुभव)। उसके शरीर में क्या हो रहा है इसका वर्णन करने में प्रेक्षक को अतिरिक्त लाभ केवल यही है कि वह उन अतिरिक्त उद्दीपनों (stimulation) को बता सकता है जिसे बाहर से प्रेक्षक नहीं भाँप सकता है जैसे कि आंखों में दर्द या गले में खरखराहट। यहाँ भी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा एक शिक्षण और अभ्यास की वस्तु है। यह सम्भव है कि एक व्यक्ति आन्तरिक उद्दीपन को केवल इस कारण अभिव्यक्त न कर सके कि उसकी वाचिक वृत्तियों के भण्डार में उसे अभिव्यक्त करने का कोई सूत्र नहीं था। ऐसा हमारे कुछ कम लाभदायक कर्मों के संबंध में है जैसा कि अपने आन्तरिक ज्ञानेन्द्रियों में क्या हो रहा है। इसका बताना प्रायः हमारे शरीर की संरचना ही हमसे गलत विवरण दिलवा देती है, हम अपने डाक्टर को बताते हैं कि यहाँ-यहाँ दर्द हो रहा है जब कि डाक्टर वास्तविक पीड़ा-स्थल उसके कुछ दूर बिन्दु पर देखता है क्योंकि

हमारे गलत विवरण से तुरन्त सही स्थल ढूंढ़ निकालने का उसको अनुभव है। इस सम्बन्ध में अनेक मनोवैज्ञानिक अपने प्रेक्षकों (सूचकों) को किसी अस्पष्ट उद्दीपन के लिए पारिभाषिक शब्दों की विशिष्ट पदावली को प्रयुक्त करना सिखाने के कारण भटक जाते हैं और फिर सूचकों के इन पदों के प्रयोग पर विशेष महत्त्व स्थापित करते हैं।

वे असामान्य स्थितियाँ जिनमें भाषण विकृत रूप से निकलता है कुछ साधारण ग़लत समंजनों अथवा विकारों की सूचक हैं और भाषा की विशेष यांत्रिकी पर कुछ भी प्रकाश नहीं डालतीं। तुतलाना (Stuttering) कदाचित् दोनों प्रमस्तिष्क गोलार्धों के अपूर्ण विशेषीकरण से होता है, सामान्य वक्ता का बाँया गोलार्ध (अथवा यदि बाँए हत्था हुआ तो दाहिना गोलार्ध) अधिक सुकुमार क्रियाओं का, जैसे भाषण का, स्वामी होता है। तुतलाने वाले व्यक्ति का गोलार्ध विशेषीकरण अपूर्ण होता है। विशिष्ट ध्वनियों के अपूर्ण उच्चारण '(हकलाना) भी, जहाँ वह ध्वनि अवयवों के शरीर रचना विषयक विकारों का परिणाम नहीं है, इस प्रकार ग़लत समायोजन से होता है। सिर पर आघात और सिर की बीमारियों से जिन से मस्तिष्क पर चोट पहुँचती है, प्रायः वाचाघात वाचिक अनुक्रिया करने में और भाषण की अनुक्रिया करने में व्याघात, उत्पन्न होता है। डा० हेनरी हेड (Henry Head) को घायल सिपाहियों में वाचाघात के अध्ययन का बड़ा अच्छा संयोग मिला था, उन्होंने चार प्रकार के वाचाघातों का पता लगाया है।

प्रकार 1--प्रथम प्रकार के वाचाघात में मनुष्य दूसरों के भाषण की अनुक्रिया करता है। हल्की बीमारी में उचित वस्तुओं के लिए समुचित शब्द प्रयुक्त करता है किन्तु अपने शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करता है, गड़बड़ा जाता है। भारी बीमारी में बीमार हाँ या नहीं के अलावा कुछ नहीं बोल सकता है। एक मरीज बड़ी कठिनाई से विवरण कहता है--"मैं जानता हूँ... यह सही..... उच्चारण ....नहीं है.......मैं सदा......सही (correct) नहीं कर सकता हूँ.....क्योंकि सही-सही नहीं आता है......पांच-छह बार में......जब तक कोई मेरी ओर से न कह दे।' गम्भीर बीमारी में एक मरीज अपना नाम पूछने पर Thomas के स्थान पर Honus, first के स्थान पर erst और second के स्थान पर hend कहता था।

प्रकार 2--सामान्य भाषण की पर्याप्त ठीक अनुक्रिया करता है, और समुचित शब्दों और छोटे पद समुदायों का उच्चारण कर लेता है किन्तु परम्परागत संरचना में नहीं। वह एक समझ में न आने वाला अनर्गल प्रलाप होता है यद्यपि प्रत्येक शब्द स्वयं में सही होता था। "क्या तुमने खेल खेला ?" इस प्रश्न के

उत्तर में मरीज उत्तर देता है "खेला खेल, हाँ, एक खेला, दिन में, बगीचा।" वह कहता है "बाहर जाओ, नीचे लेटो, सोने जाओ, कभी चला जाता है। यदि रसोई में बैठा है, घूम-घूमकर काम करता है, मुझे और खराब (बीमार) कर रहा है।" वह कहता है "अजीब चीज, यह खराब, उस भांति की चीज." और मानो व्याख्या कर रहा हो, as और at शब्द लिख देता है। हम आगे चलकर देखेंगे कि सामान्य भाषा की गठन ऐसी होती है कि अर्थ-परक और व्याकरण-परक भाषण-वृत्तियों में भेद स्पष्ट करना पड़ता है, यह भेद उन मरीजों में मिट जाता है।

प्रकार 3—वस्तुओं के नाम की कठिनाई से अनुक्रिया करता है और उसे सही शब्द ढूंढ़ने में, विशेषतः किसी-किसी वस्तु के नाम ढूंढ़ने में बड़ी कठिनाई होती है। उसका उच्चारण और क्रमविन्यास ठीक होता है किन्तु उन शब्दों के लिए जिन्हें वह ढूंढ़ नहीं पाता है बहुत अद्भुत घुमा-फिराकर कहना पड़ता है। कैंची के लिए ऐसा मरीज 'जिससे आप काटते हैं', काले के लिए ऐसा मरीज 'व्यक्ति जो मर गए हैं—अन्य आदमी जो नहीं मरे हैं उनका रंग'। वह कैंची के लिए 'बटन'—ऐसा ग़लत शब्द प्रयुक्त करता है।

प्रकार 4—प्रायः दूसरों के भाषण की सही-सही अनुक्रिया नहीं करता है। उसे अकेले शब्द का उच्चारण करने में कोई कठिनाई नहीं होती है किन्तु वह सम्बद्ध भाषण को समाप्त नहीं कर सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि ये मरीज चेष्टा-अक्षमता से पीड़ित हैं। वे अपना रास्ता नहीं ढूंढ़ सकते हैं और यदि सड़क के दूसरी ओर उन्हें छोड़ दिया जाय तो वे गड़बड़ा जायेंगे। एक मरीज ने कहा, "जो आप कहते हैं उसे मै पूरा-पूरा समझ नहीं पाता हूं, और फिर मैं भूल जाता हूं कि मुझे क्या करना है।" दूसरे मरीज ने कहा जब मैं खाने की मेज पर होता हूं, मैं अपनी चाही वस्तु जैसे दूध के बर्तन को उठाने में बहुत देर लगाता हूँ। पहले तो मैं तुरंत उसे देख नहीं पाता हूँ. . . . . मुझे वे सब वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं किन्तु उन्हें एक-एक करके देख नहीं पाता हूँ। जब मैं नमक मसाला या चम्मच चाहता हूँ, मुझे एकदम से उसकी उपस्थिति का भान होता है :" एक दूसरे मरीज के इस उत्तर से भाषण का व्याघात प्रकट होता है "ओह्, हां, मैं सिस्टर और नर्स का भेद कपड़ों से जानती हूँ—सिस्टर के कपड़े नीले, नर्सों के—ओह्, मैं गड़बड़ा गया, मामूली नर्स के कपड़े सफेद, नील. . . . . ।"

सन् 1861 में ब्रोका (Broca) ने प्रदर्शित किया था कि मस्तिष्क के बाएँ गोलार्ध में तीसरी ललाट-लहरिका में क्षति पहुँचती है तो वाचाघात हो जाता है। किन्तु यह तभी से विवाद का विषय रहा है कि क्या ब्रोका-केन्द्र और कारटैक्स (cortex प्रान्तस्था) के अन्य प्रांत भाषण के क्षेत्र के विशिष्ट केन्द्र हैं। हैड महोदय का वाचाघात के चारों प्रकारों और विकारों के विभिन्न स्थलों के कार्य के

बीच सह-संबंध है। कारटैक्स प्रदेश के विभिन्न अंशों का सदैव किसी विशेष इन्द्रिय से ही संबंध है। मस्तिष्क के एक विशेष प्रदेश पर चोट लगने से दाहिने पैर पर पक्षाघात गिरता है, एक अन्य निश्चित प्रदेश पर चोट पहुँचने से दृष्टि-पटल (retina) के बाएँ भाग पर उद्दीपनों की कोई अनुक्रिया नहीं होती, आदि। भाषण एक अत्यन्त जटिल कार्यकलाप है। इसमें सभी प्रकार के उद्दीपन गले और मुख में एक उच्च कोटि के विशिष्ट संचलन उत्पन्न करते हैं। ये अंग भी शरीर प्रक्रिया के अनुसार 'ध्वनि-अवयव' (एक ध्वनि इन्द्रिय) नहीं हैं क्योंकि प्राणीशास्त्र के अनुसार मनुष्यों और अन्य मूक प्राणियों में पहले अन्य कार्य में आते हैं। अतएव तन्त्रिका-तन्त्र की नाना प्रकार की क्षतियाँ भाषण में व्याघात पहुँचाएँगी और विभिन्न क्षतियों से विभिन्न प्रकार के व्याघात उत्पन्न होंगे, किन्तु कारटैक्स के बिन्दु का पदवाक्यरचना जैसी विशिष्ट सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण भाषण की विशिष्टताओं से निश्चयतः सह-सम्बन्ध नहीं है। यह विभिन्न भांति के भाषण-केन्द्रों की खोज में निरन्तर परिवर्तित और परस्पर विरोधी परिणामों से भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। हम यह आशा करते हैं कि शरीर-प्रक्रिया के विशेषज्ञ कहीं अच्छे परिणाम निकालेंगे जब वे कारटैक्स के विचित्र बिन्दुओं से भाषण से सम्बद्ध विशिष्ट शरीर-प्रक्रियात्मक गतिविधियों में सहसम्बन्ध निकाल लेंगे (जैसे कि विशिष्ट पेशियों का संचलन, कण्ठ और जिह्वा से गतिबोधक उद्दीपनों का प्रेषण आदि)। तंत्रिका-तंत्र के शरीररचनात्मक परिभाषित अंगों और सामाजिक परिभाषित गतिविधियों में सहसम्बन्ध ढूँढ़ने का दोष स्पष्ट है, जब हम कुछ शरीर-प्रक्रिया विशेषज्ञों को 'दृश्य शब्द केन्द्र' की खोज में पाते हैं जो पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया को परिचालित करता है। यह भी संभव है कि लोग तार-विद्या, मोटरकार प्रचालन, अथवा अन्य नए आविष्कार के लिए भी मस्तिष्क में केन्द्र ढूँढ़ने लगेंगे। शरीर-प्रक्रिया के अनुसार, भाषा किसी कार्यविधि की इकाई नहीं है, बल्कि बहुत-सी गतिविधियों से मिलकर बनती है और इनका वृत्तियों की एक अत्यन्त जटिलता में मिलकर एक होना व्यक्ति के प्रारम्भिक जीवन में पुनः प्राप्त उद्दीपनों पर निर्भर है।

2.8 मानवीय अनुक्रियाओं के अध्ययन की दूसरी विधि उन्हें समूह में देखने की है। कुछ क्रियायें प्रत्येक व्यक्ति में अत्यधिक परिवर्तनशील होती हैं किन्तु जब व्यक्तियों के एक बड़े वर्ग में उन्हें देखते हैं तो पर्याप्त एक-सी दिखाई पड़ती हैं। हम यह भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं कि आगामी बारह महीनों में अमुक अविवाहित व्यक्ति शादी करेगा या नहीं, या अमुक व्यक्ति जेल जायेगा, किन्तु यदि पर्याप्त बड़ा समुदाय दिया हो और पिछले वर्षों के आँकड़े और कदाचित कुछ और सूचना भी जैसे कि आर्थिक परिस्थितियाँ कैसी हैं आदि दी

हों तो संख्या-शास्त्री पहले से कह देगा कि इतने विवाह होंगे, इतनी आत्महत्या की घटनाएँ होंगी, इतने अपराधों में जेल जायेंगे आदि, और ऐसा होगा भी। यदि यह सम्भव है और परिश्रम के अनुपात में फल देने वाला है कि बड़े समुदाय में एक-एक भाषण-खण्ड अंकित कर लिया जाए तो निस्संदेह हम यह पूर्व कथन में समक्ष होंगे कि 'नमस्ते !' "मैं तुम्हें प्यार करता हूँ" "आज नारंगियां कितनी हैं ?" आदि कुछ नियत दिनों में कितने बार बोले जायेंगे। इस प्रकार का विस्तृत अध्ययन बहुत-कुछ बताएगा—विशेषतः– इन परिवर्तनों के सम्बन्ध में जो निरन्तर भाषा में होते जा रहे हैं।

फिर भी एक अन्य और सरल विधि मानवीय क्रियाओं को समष्टि में अध्ययन करने की है—वह है परम्परागत क्रियाओं का अध्ययन। जब हम एक अजनबी देश में पहुँचते हैं, हम तुरंत क्रियाओं की एक अनेक सुस्थापित पद्धतियों को सीख लेते हैं। जैसे कि नाप-तोल और मुद्रा की प्रणाली, सड़क पर चलने के नियम (अमेरिका, जर्मनी की भाँति दाहिने, इंग्लैण्ड, स्वेडेन की भाँति बाएँ), शिष्टाचार, भोजन-समय आदि। एक यात्री इसके लिए आँकड़े एकत्र नहीं करता है, कुछ थोड़े-से प्रेक्षणों से ही वह सीख लेता है और ये आगे होने वाले अनुभवों से पुष्ट अथवा ठीक होते रहते हैं। यहाँ भाषा-वैज्ञानिक एक अनुकूल स्थिति में हैं। एक वर्ग की गतिविधियाँ किसी अन्य दिशा में इतनी दृढ़ मानवीकृत नहीं होती हैं जितनी कि भाषा के रूपों के सम्बन्ध में। लोगों का बड़ा वर्ग उसी शब्दावली और व्याकरणिक संघटनाओं से अपना-अपना उच्चारण बनाता है। अतएव एक भाषा-वैज्ञानिक प्रेक्षक एक समुदाय की वाचिक-वृत्तियों को बिना आँकड़े इकट्ठे किए वर्णित कर सकता है। यह कहना बेकार है कि वह ईमानदारी से कार्य को, और विशेषतः प्रत्येक रूप जो वह पा सकता है, अंकित करे। किन्तु वह पाठकों के व्यावहारिक ज्ञान या दूसरी किसी भाषा की गठन या किसी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त और सबसे बढ़कर यह सोचते हुए कि लोगों को ऐसा बोलना चाहिए था, वह तथ्यों में से चयन न करे और न तोड़े-मरोड़े। इसके अतिरिक्त इस भाँति का एक सार्थक और पक्षपातहीन वर्णन मनोविज्ञान के लिए भी बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रलेख का काम देगा। खतरा यहाँ मनोविज्ञान के मानसिकवादी (मनोवादी दृष्टि-कोण से है, जिसके मोह में प्रेक्षक ठीक-ठीक तथ्यों को प्रस्तुत करने की अपेक्षा शुद्ध आध्यात्मिक मानकों को प्रस्तुत करने लगता है। उदाहरणार्थ, यह कहना कि शब्दों के संयोजन में जो समास-सा लगता है, केवल एक उच्च बलाघात होता है (जैसे blackbird और black bird), व्यर्थ का कथन है क्योंकि हमारे पास कोई साधन नहीं होता है जिससे पता लगा सकें कि वक्ता को क्या

'लगता' है। प्रेक्षकों का कार्य था कि कुछ ग्राह्य अभिलक्षणों को बताएँ और यदि ऐसा नहीं संभव है तो एक सूची दें जिसमें वे शब्द-संयोग हों जिनका उच्चारण एक ही उच्च बलाघात से होता है। मनोविज्ञान के भौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाने वाले कार्यकर्त्ता को ऐसा कोई मोह नहीं होता है। यह सिद्धान्त के रूप में कहा जा सकता है कि भाषाविज्ञान जैसे विज्ञानों में, जहां कुछ विशिष्ट प्रकार की मानवीय गतिविधियों का पर्यालोचन होता है, कार्यकर्ता को बिल्कुल इस प्रकार चलना चाहिए कि मानों उसका भौतिकवादी दृष्टिकोण है। यह क्रियात्मक प्रभावन वैज्ञानिक भौतिकवाद के पक्ष में सर्वाधिक सबल तर्क है।

इस समूह-प्रेक्षण द्वारा किसी समुदाय की भाषण वृत्तियों का विवरण देने वाला प्रेक्षक उस या किसी भी समुदाय की भाषा में हो रहे परिवर्तनों के संबंध में कुछ भी नहीं बता सकता है। ये परिवर्तन तभी ज्ञात होते हैं जब एक पर्याप्त लम्बे काल तक वास्तविक सांख्यिकीय प्रेक्षणों से उन्हें देखा जाए। इसके अभाव में हम भाषावैज्ञानिक परिवर्तनों के संबंध में अनेक तथ्य नहीं जान पाते हैं। इस दिशा में भी भाषाविज्ञान अनुकूल परिस्थिति में है क्योंकि अध्ययन की तुलनात्मक और भौगोलिक विधियाँ समूह-प्रेक्षणों द्वारा ही, पर्याप्त ऐसे तथ्यों को प्रकट कर देती हैं जिन्हें हम सांख्यिकीय-विधि से पाते। इन विधियों में हमारे विज्ञान की अनुकूल परिस्थिति इस कारण है कि भाषा सबसे सरल और सबसे मौलिक सामाजिक (अर्थात् केवल मानव समाज में प्राप्य गतिविधि है। एक और दिशा में भी भाषा-विज्ञान को जो भाषापरिवर्तनों को जानने में सहायता मिली है, और जो आकस्मिक है—वह है पूर्वकालीन भाषिकरूपों का लिखित आलेखों में अस्तित्व।

2.9 जिस उद्दीपन से वाणी निकलती है उससे कुछ और अनुक्रियायें भी होती हैं। इनमें से कुछ बाहर से द्रष्टव्य नहीं हैं—ये पेशियों और ग्रंथियों में होने वाली क्रियायें हैं जिनका वक्ता के साथियों के लिए कोई महत्त्व नहीं है। कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक अनुक्रियायें हैं जैसे हिलना-डुलना या वस्तुओं को इधरसे उधर रखना। कुछ अन्य अनुक्रियायें भी दृश्य हैं किन्तु उनका कोई सीधा महत्त्व नहीं है। वे वस्तु-स्थापन (व्यवस्था) में कोई अन्तर नहीं डालतीं किन्तु भाषा के साथ-साथ श्रोता के लिए उद्दीपन का कार्य करती हैं। ये अनुक्रियायें हैं—चेहरे की अभिव्यंजना, नकल करते हुए बोलना, वाणी का सुर (जहाँ तक ये भाषा के परस्परागत नियमों से निर्धारित नहीं होते हैं), वस्तुओं की अमहत्त्वपूर्ण चेष्टाएँ (जैसे एक रबड़ की पट्टी का निरन्तर खींचना और छोड़ना) और सब से अधिक इंगित (gesture) चेष्टाएँ (अंगविक्षेप)।

अंगविक्षेप (इंगित) सभी भाषणों के साथ-साथ चलते रहते हैं। प्रकार और मात्रा में वह एक वक्ता से दूसरे वक्ता में भिन्न होता है किन्तु यह बड़ी सीमा तक सामाजिक परम्परागत नियमों से प्रभावित होता है। इटलीवासी अंग्रेजों की अपेक्षा अधिक अंगविक्षेप करते हैं, अंग्रेजी सभ्यता में उच्च कोटि के व्यक्ति सबसे कम अंगविक्षेप करते हैं। कुछ सीमा तक वैयक्तिक अंगविक्षेप भी परम्परागत होते हैं और विभिन्न समुदायों में विभिन्न होते हैं। विदाई के समय नमस्ते (good bye) करते अंग्रेज हथेली बाहर की ओर करके हाथ हिलाते हैं, नैपिल्स (Neapolitans) (इटली) के वासी हथेली अपनी ओर करके हिलाते हैं।

अधिकांश अंगविक्षेप (इंगित) स्पष्टतया निर्देशित करने या चित्रित करने के प्रयास से अधिक नहीं है। समभूमि के अमेरिकन-इण्डियन अथवा जंगली कबीले शर्मीले अंगविक्षेपों के साथ कहानी सुनाते हैं जो हम लोगों के लिए अजनबी होते हुए भी समझ में आ जाते हैं। ठीक आंखों के नीचे हाथ और हथेली अन्दर करना और अंगूठा ऊपर करना गुप्तचर की दृष्टि रखने का इंगित है, हथेली में मुट्ठी मारना गोली मारने का इंगित है, दो अंगुलियाँ चलते मनुष्य तथा चार दौड़ते घोड़ा का इंगित है। जहाँ अंगविक्षेप प्रतीकात्मक हैं वहाँ भी वे स्पष्टता से परे नहीं हैं जैसे कि जब अतीतकाल सूचित करने के लिए अपने कन्धे के पीछे इशारा करता है।

कुछ समुदायों में अंगविक्षेप भाषा होती है जिसे कभी-कभी भाषा के स्थान में प्रयुक्त करते हैं। नैपिल्स वासियों में निम्नश्रेणी के लोगों में ऐसी अंगविक्षेप भाषा मिली है। ट्रेपीय (Trappist) साधुओं (जिन्होंने मौन-व्रत ले रक्खा है) पश्चिमी मैदानों के इण्डियन (जहाँ विभिन्न भाषा-भाषी कबीले लड़ाई या व्यापार में एक-दूसरे से मिलते हैं) और गूंगे बहरों के बीच भी अंगविक्षेप भाषा मिलती है।

यह निश्चित है कि ये अंगविक्षेप-भाषाएँ सामान्य अंगविक्षेपों का ही विकसित रूप हैं और सभी जटिल तथा तुरंत समझ में न आ पाने वाले अंगविक्षेपों के मूल में भी सामान्य भाषा की परम्परा है। यहाँ तक कि इतना स्पष्ट अर्थान्तरण कि अतीतकाल के लिए पीछे इशारा किया जाए, कदाचित् इसलिए उत्पन्न हुआ होगा क्योंकि भाषा में 'पीछे' और 'अतीतकाल' के लिए––दोनों के लिए––एक ही शब्द था। इन दोनों की चाहे कैसी भी उत्पत्ति क्यों न हो, अंगविक्षेप इतने अधिक लम्बे समय से भाषा के आधिपत्य में गौणरूप से काम में आ रहा है कि उसने अपने सभी स्वतंत्र अभिलक्षण खो दिए हैं। कुछ लोगों की भाषाएँ इतनी अपूर्ण हैं कि उनकी अपूर्णता को अंगविक्षेपों द्वारा पूरा किया जाता है–ये सब निरे किस्से हैं। निस्सन्देह (जिससे भाषा विकसित हुई है) वह जानवरों

द्वारा वाचिक-ध्वनियों का जनन मूलतः अनुक्रिया-संचलन (अर्थात् डायफ्राम का कुंचन तथा कण्ठ का तनूभवन) है जिससे ध्वनि निकल पड़ी। यह भी निश्चित है कि इससे आगे विकास में भाषा सदैव अंगविक्षेपों के आगे रही है।

यदि कोई किसी वस्तु को हिलाते हुए अंगविक्षेप करता है जिससे दूसरी वस्तु पर कुछ निशान बाकी रह जाते हैं, तो समझिए चिन्हित करने और चित्रित करने की प्रक्रिया का श्रीगणेश हो गया। इस प्रकार की अनुक्रिया का स्थायी चिह्न छोड़ने का लाभ है, जो पुनः पुनः (और बीच का समय छूट जानेपर भी) उद्दीपन के रूप में आ सकता है और दूरस्थित व्यक्तियों को उद्दीप्त करने के लिए भेजा जा सकता है। इसी कारण निस्सन्देह बहुत-से लोग चित्रों में (सौन्दर्य मूल्य के अतिरिक्त जो हम लोग भी मानते हैं) जादू-टोने की शक्ति निहित समझते हैं।

संसार के कुछ भागों में चित्र खींचना चित्रलिपि में विकसित हो गया। इसका विस्तृत विवरण हम बाद में देखेंगे। रुचि का विषय यहाँ केवल इतना है कि एक रूप-रेखा खींचने की क्रिया भाषा से गौण-क्रिया है। एक विशेष प्रकार की रेखाएँ खींचना एक निश्चित भाषिकरूप के उच्चारण का सहचर अथवा प्रतिस्थापक होने की क्रिया है।

भाषण के विशिष्टरूपों को विशिष्ट दृश्यमान अंकनों से प्रतीक रूप में बनाने की कला ने भाषा की प्रभावशाली उपयोगिता को और अधिक बढ़ाया है। एक वक्ता कुछ दूरी तक ही और कुछेक क्षण के लिए ही सुना जा सकता है। लिखित-रूप कहीं भी ले जाया जा सकता है और कितने ही लम्बे समय तक सुरक्षित रक्खा जा सकता है। हम उतने ही समय में कहीं अधिक वस्तुएँ देख सकते हैं जितने समय में कान से सीमित ध्वनियाँ सुनते हैं। इसके अतिरिक्त दृश्यमान वस्तुओं का हम अधिक उपयोग कर सकते हैं। चार्ट, रेखाचित्र, लिखित-गणन, और इसी प्रकार की अन्य विधियों से हम जटिल से जटिल कार्य सुलझा सकते हैं। दूरवर्ती मनुष्यों के, विशेषतः अतीत के व्यक्तियों के, भाषाई उद्दीपन हमारे लिए लिपि के माध्यम से सुरक्षित हैं। इससे ज्ञान का संचय संभव हो पाया है। वैज्ञानिक सदैव (किन्तु शिक्षार्थी कभी-कभी) अपने पूर्वकालीन कार्यकर्ताओं के परिणामों का अध्ययन करते हैं और उन स्थलों से आगे बढ़ने के लिए शक्ति लगाते हैं जहां पूर्वज छोड़ गए थे। बार-बार फिर से प्रारम्भ करने की अपेक्षा विज्ञान पुराने ज्ञान को संचित करके आगे बढ़ता है और तीव्र गति से बढ़ता है। यह कहा जाता है कि जैसे-जैसे हम अधिक और अधिकतर उच्च कोटि के और उच्च वैशिष्ट्य के व्यक्तियों की भाषाई अनुक्रियाओं को अपने पास लेखबद्ध करते जायेंगे वैसे-वैसे, आदर्श सीमा के रूप में, उस स्थिति पर पहुँचते जायेंगे जहाँ संसार की

सभी—अतीत, वर्तमान और भविष्य की—घटनाएँ एक विशाल पुस्तकालय के आकार-विस्तार में (एक प्रतीकात्मक रूप में जिससे कोई भी पाठक अनुक्रियावान हो सकता है) संकुचित हो जायेंगी। इस में कोई आश्चर्य नहीं है कि मुद्रण के आविष्कार ने, जिससे एक लिखित प्रलेख किसी भी वांछित प्रतिलिपियों में निकल सकता है, हमारे जीवन की सभी रीतियों में वह क्रान्ति ला दी है जो कई सदियों से प्रारम्भ हुई है और अब भी पूरे जोरों पर है।

अंकित करने, प्रेषित करने और भाषण को बहुगुणित करने के, जैसे तार, टेलीफून, ग्रामोफोन, रेडियो आदि अन्य साधनों की महत्ता पर अधिक कहना व्यर्थ है। भाषा के सामान्य उपयोगों में उनकी महत्ता सुस्पष्ट है जैसे कि जहाज डूब जाने पर बेतार के तार की।

लम्बी अवधि में किसी भी वस्तु का जो भाषा की वर्धिष्णुता को बढ़ाती है, एक अप्रत्यक्ष किन्तु अधिक व्यापक प्रभाव अवश्य पड़ता है। तात्कालिक एवं विशिष्ट अनुक्रियाओं को न उत्पन्न करने वाली भाषण-क्रियायें भी श्रोता के आगे आने वाली अनुक्रियाओं की ओर झुकाव को बदल सकती हैं। उदाहरणार्थ एक सुन्दर कविता श्रोता को आगे आनेवाले उद्दीपनों के लिए पूर्वानुकूल बनाने में समर्थ हो सकती है। इन मानवीय अनुक्रियाओं के सामान्य परिष्कार और तीव्रीकरण के लिए पर्याप्त भाषाई अन्योन्य-क्रियायें होनी चाहिएँ। शिक्षा अथवा संस्कृति अथवा अन्य किसी भी नाम से पुकारी जाने वाली यह सत्ता व्यापक मात्रा में भाषण की पुनरावृत्ति और प्रकाशन पर निर्भर है।

अध्याय 3

भाषिक-समुदाय

3.1. भाषिक-समुदाय ऐसे व्यक्तियों का समुदाय है जो भाषण के माध्यम से अन्योन्य-क्रिया करते हैं (देखिए § 2.5.)। मनुष्य के ये सब तथाकथित उच्चकोटिक कार्यकलाप हम लोगों के विशिष्टतया माननीय क्रियाकलाप व्यक्तियों के बीच उस घनिष्ठ समंजन से उत्पन्न होते हैं जिसे हम 'समाज' नाम से पुकारते हैं, और यह समंजन स्वयं भाषा पर निर्भर है। अतएव भाषिक-समुदाय सामाजिक वर्गों में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकार का समुदाय है। सामाजिक संमजन के अन्य रूपों का, जैसे आर्थिक, राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक समूहनों का, भाषिक-समुदाय से उत्पन्न समूहन से कुछ सम्बन्ध अवश्य है किन्तु ये समूहन प्रायः एकीभूत हुए नहीं मिलते हैं। मुख्यतया सांस्कृतिक अभिलक्षण प्रायः सदैव भाषा-विशेष के विस्तार से कहीं अधिक विस्तृत होते हैं। श्वेतों (यूरोपवासियों) के आगमन के पूर्व एक ही भाषा बोलने वाली स्वतन्त्र अमेरिकन वन्य-जाति एक ही भाषिक-समुदाय और एक ही राजनीतिक और आर्थिक इकाई बनाती थी, यद्यपि धर्म और सांस्कृतिक मामलों में वह निस्सन्देह पड़ौस की वन्यजाति से मिलती थी। अधिक जटिल स्थितियों में भाषा और अन्य समूहनों के बीच यह सह-सम्बन्ध और भी कम मात्रा में मिलता है। अंग्रेजी बोलनेवाले व्यक्तियों का भाषिक-समुदाय दो राजनीतिक समुदायों में बँटा है—अमेरिका का संयुक्तराष्ट्र और ब्रिटिश साम्राज्य। इन समुदायों के भी उपविभाग मिलते हैं। अमेरिका का संयुक्त-राष्ट्र और केनाडा राजनीतिक रूप की अपेक्षा आर्थिक रूप में अधिक घनिष्ठ है, सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अमेरिकावासी उस विशाल क्षेत्र के अंग हैं जो पश्चिमी यूरोप से फैला है। इसके विपरीत, इन वर्गों में, छोटे-छोटे राजनीतिक संयुक्तराष्ट्र जैसे वर्ग में भी, अनेक व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो अंग्रेजी नहीं जानते हैं—जैसे, अमेरिकन आदिवासी, दक्षिण-पश्चिम के स्पेनीभाषी, भाषात्मक आत्मसात् न हुए आप्रवासी; औपनिवेशिक आधिपत्य में, जैसे फिलीपाईन और भारतवर्ष में, एक भाषिक-समुदाय को आर्थिक और राजनीतिक रूप में दूसरे विदेशी समुदाय के अधीन होना पड़ता है। कुछ देशों में आबादी कई ऐसे भाषिक-समुदायों में बँटी हुई मिलती है जिनके बीच कोई भौगोलिक विभाजक-रेखा नहीं है, जैसे, पोलैण्ड के एक ही नगर में पोली और जर्मन बोलने वाले मिलते हैं। धर्म से पोलीभाषी

कैथोलिक और जर्मनभाषी यहूदी हैं, और अभी हाल तक प्रत्येक वर्ग के बहुत कम लोगों ने दूसरे वर्ग की भाषा समझने का कष्ट किया है।

हमने प्राणिशास्त्रात्मक समूहन के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा है क्योंकि यह, अन्य समूहनों के समान अपने अस्तित्व के लिए भाषा पर निर्भर नहीं है। पति-पत्नी भाव प्राय: समान भाषा बोलने वालों में होता है, अतएव भाषिक-समुदाय सदैव अन्त:प्रजात वर्ग-सा होता है। फिर भी इसके बहुत-से अपवाद हैं। विभिन्न भाषा बोलने वालों में पति-पत्नी भाव होने पर एक-दूसरे की भाषा सीख ली जाती है। इससे महत्त्वपूर्ण स्थिति तब होती है जब विदेशियों का पूरा वर्ग, जैसे आप्रवासी, हारे हुए लोग या बन्दी, दूसरे भाषिक-समुदाय में आत्मसात् हो जाते हैं। ये अपवाद इतने अधिक हैं कि, यदि हमारे पास आलेख होते, तो निस्सन्देह मालूम होता कि बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं कि जिनके कुछ ही पूर्व पीढ़ियों के पूर्वज एक भाषा बोलते थे। फिर से भी जिस तथ्य का हम लोगों से सीधा सम्बन्ध है वह यह है कि भाषात्मक गुण प्राणिशास्त्रीय अर्थ में वंशानुगत नहीं है। एक बच्चा पैदा होते ही चिल्लाता है और कुछ समय बाद निस्सन्देह गूं-गा करता है या एकाक्षर ध्वनि निकालता है किन्तु कौन-सी भाषा वह बोलेगा यह पूर्णतया उसके पर्यावरण पर निर्भर है। गोद में लिए जाने या निराश्रित होने के कारण कभी-कभी एक बच्चा एक वर्गविशेष में आकर पलता है। वह उस वर्ग की भाषा को उसी प्रकार सीख लेता है जैसे कि उसी वर्ग में पैदा हुआ बच्चा, और बोली सीख लेने के बाद उसकी बोली में उसके माँ-बाप की बोली का अंश-मात्र भी नहीं मिलता है। एक सामान्य मनुष्य के स्वर-यन्त्र. मुँह, ओठ आदि की रचना में जो वंशानुगत विभिन्नता मिलती है वह निश्चयत: इतनी नहीं है कि भाषा उत्पन्न करने वाली क्रियाओं को प्रभावित कर सके। मनुष्य जो सबसे पहले भाषा सीखता है वह उसकी **नैसर्गिक भाषा** है और वह भाषा का **नैसर्गिक वक्ता** है।

3.2 आकार में भाषिक-समुदायों में बड़ी विभिन्नता है। अमेरिकन वन्य-जातियों में से अनेक केवल कुछ सौ व्यक्तियों वाली वन्यजातियों की अपनी भाषा है। इसके विपरीत, आधुनिक संवादवहन (संचार) और यातायात के पूर्व भी, कुछ भाषिक समुदाय बहुत बड़े-बड़े थे। ईसवी संवत् की प्रारम्भिक शताब्दियों में लैटिन और ग्रीक, दोनों, भूमध्यसागर के परिवर्ती विशाल क्षेत्रों में लाखों व्यक्तियों द्वारा बोली जाती थीं। आधुनिक परिस्थितियों में कुछ भाषिक समुदायों का अतिविशाल आकार (विस्तार) है येस्पर्सन (Jespersen) महोदय के अनुमान से सन् 1600 और 1912 में प्रधान यूरोपीय भाषाओं के वक्ताओं की संख्या, लाखों में, निम्नलिखित थी :—

	इंग्लिश	जर्मन	रूसी	फ्रेंच	स्पेनी	इतालवी
सन् 1600	60	100	30	140	85	95
सन् 1912	1500	900	1060	470	520	370

इस प्रकार के आंकड़ों का बड़ा अनिश्चित मूल्य है क्योंकि कोई ठीक-ठीक सदैव नहीं कह सकता है कि कौन-कौन-से भौगोलिक-वर्ग भाषिक-समुदाय बना रहे हैं। Tesnière महोदय ने सन् 1920 के लिए प्रस्तुत अनुमानों में 40 करोड़ वक्ताओं वाली चीनी भाषा को संसार का सबसे बड़ा भाषिक-समुदाय माना था, किन्तु 'चीनी-भाषा' शब्द एक परस्पर असम्बोध्य भाषाओं के समूह का नाम है। निस्सन्देह इनमें से एक, उत्तरी चीनी, के आजकल अन्य भाषाओं की अपेक्षा सबसे अधिक वक्ता हैं किन्तु लेखक को इनकी संख्या का कोई अनुमान नहीं है। इसी वर्ग की एक दूसरी भाषा, कैन्टनी (Cantonese) कदाचित् विशालतम भाषिकसमुदायों में से एक है। प्रत्येक दशा में अंग्रेजी (Tesnière के अनुमानानुसार) दूसरे नम्बर पर है और उसके वक्ताओं की संख्या 17 करोड़ है। रूसी भाषा तीसरे नंबर पर है। Tesnière ने इसकी संख्या को तीन भागों में बाँटा है—महारूसी (8 करोड़), लघुरूसी (उक्रेनी 3.4 करोड़) और श्वेतरूसी (65 लाख)। किन्तु ये सब परस्पर-सम्बोध्य हैं और इनमें विभिन्नता उसी कोटि की है जैसी ब्रिटिश और अमेरिकन इंग्लिश में। इसी प्रकार Tesnière ने चौथे नम्बर की भाषा, जर्मन भाषा, के भेद किए हैं—जर्मन (8 करोड़), और जूडो-जर्मन (75 लाख)। यद्यपि शेष आंकड़ों में बोलीगत भिन्नताएँ नहीं दी गई हैं, तथापि येस्पर्सन का 9 करोड़ का अनुमान प्रायः ठीक है।

Tesnière के अवशिष्ट आंकड़ों में 'जावा' की भाषा का उल्लेख नहीं है, यद्यपि उसके 2 करोड़ नैसर्गिक-वक्ता हैं। इन परिवर्तनों के साथ उसके आंकड़े इस प्रकार हैं :—

स्पेनी	6.5 करोड़	जावानी	2.0 करोड़
जापानी	5.5 करोड़	मराठी[1]	1.9 करोड़
बंगाली[1]	5.00 करोड़	तामिल[2]	1.9 करोड़
फ्रेंच	4.5 करोड़	कोरियाई	1.7 करोड़
इतालवी	4.1 करोड़	पंजाबी[1]	1.6 करोड़

1. भारत में बोली जाने वाली भारत-यूरोपीय भाषाएँ। गुजराती [एक करोड़ वक्ता] भी इनमें सम्मिलित की जा सकती हैं।
2. भारत में बोली जाने वाली द्रविड़ कुल की भाषाएँ।

तुर्कतातारी	3.9 करोड़	अन्नामी	1.4 करोड़
पश्चिमी हिंदी	3.8 करोड़	रूमानियाई	1.4 करोड़
अरबी	3.7 करोड़	राजस्थानी[1]	1.3 करोड़
बिहारी[1]	3.6 करोड़	डच	1.3 करोड़
पुर्तगाली	3.6 करोड़	बोहिमया-स्लोवी	1.2 करोड़
पूर्वी हिंदी	2.5 करोड़	कन्नड़[2]	1.0 करोड़
तेलुगू[2]	2.4 करोड़	उड़िया[1]	1.0 करोड़
पोली	2.3 करोड़	हंगेरी	1.0 करोड़

इस प्रकार के आंकड़ों में दूसरी प्रकार की अनिश्चितता भाषिक-समुदायों के बीच में वर्तमान अन्तरों के कारण है। डच और जर्मन वस्तुतः एक ही भाषिक-समुदायों के इस अर्थ में अंग हैं कि स्थानिक भाषिक-रूपों में कहीं भी विच्छिन्नता नहीं है, यद्यपि बाह्यतम भाषिकरूप परस्पर-असम्बोध्य हैं और राजनैतिक वर्गों ने (एक ओर फ्लेमिश बेल्जियम और नीदरलैण्ड, और दूसरी ओर जर्मन, आस्ट्रिया, और जर्मन स्विट्ज़रलैण्ड ने) दो परस्पर-असम्बोध्य भाषिकरूप—मानक डच—फ्लेमिश और मानक—जर्मन—अपनी शासकीय-भाषाओं के रूप में अपनाएँ हैं। इसके विपरीत तुर्कतातारी और हमारी सूची में उल्लिखित कुछ भारतीय-भाषाएँ कदाचित् उतनी ही बड़ी मात्रा में परस्पर-भिन्न हैं, यद्यपि बाह्यतमरूप स्थानिक श्रेणीकरणों (क्रमबन्धों) से सम्बद्ध हैं। एक अन्तिम और दुर्लंघ्य कठिनाई लोगों द्वारा विदेशी भाषाएँ सीखने के कारण है। यदि हम यह निश्चित करें कि विशेष दक्षता के बाद सीखने वाला व्यक्ति उस सीखी हुई विदेशी भाषा के भाषिक-समुदाय का सदस्य हो जाता है, तो संसार भर में बोली जाने वाली अंग्रेजी भाषा की संख्या बहुत कहीं अधिक बढ़ी मिलेगी।

Tesnière का अनुमान है कि मलायाई भाषा मातृ-भाषा के रूप में 30 लाख व्यक्तियों से बोली जाती है, किन्तु विदेशी भाषा के रूप में, विशेषतः व्यापार में, प्रायः 3 करोड़ व्यक्तियों से बोली जाती है।

3.3 प्रत्येक स्थिति में किसी भाषिक-समुदाय में ठीक-ठीक कितने वक्ता हैं इसके निर्धारण की कठिनता या असाध्यता अकारण नहीं है, बल्कि भाषिक समुदाय की प्रकृति से ही उद्भूत है। यदि हम पर्याप्त ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि कोई भी दो मनुष्य—या कदाचित् एक ही मनुष्य दो विभिन्न समयों

1. भारत में बोली जाने वाली भारत-यूरोपीय भाषाएँ। गुजराती [एक करोड़ वक्ता] भी इनमें सम्मिलित की जा सकती है।
2. भारत में बोली जाने वाली द्रविड़ कुल की भाषाएं।

पर—बिल्कुल ठीक एक-सा नहीं बोलते हैं। निश्चयतः एक अपेक्षाकृत समांगी वक्ता-समूह में, जैसे संयुक्तराष्ट्र के मध्यपश्चिमी भाग के अंग्रेजी के नैसर्गिक-वक्ताओं में, संचार-व्यवस्था की आवश्यकताओं को देखते हुए कहीं अधिक भाषणरूपों की एकरूपता है। इसका प्रमाण हमें तब मिलता है जब कि एक बाहरी वक्ता—जैसे, दक्षिणी अंग्रेज या अंग्रेजी पढ़ा विदेशी—अमेरिकन लोगों के बीच में आता है। उसकी बोली अमेरिकनों से इतनी अधिक मिलती-जुलती है कि संचार में कुछ भी कठिनाई नहीं पड़ती है, फिर भी 'बलाघात' अथवा 'मुहावरा-प्रयोग' आदि गौण भेदों के कारण उसका बाहरीपन बिल्कुल स्पष्टतया प्रकट हो जाता है। तिस पर भी, मध्यपश्चिमी अमरिकन जैसे अपेक्षाकृत एकरूप वर्ग के नैसर्गिक-वक्ताओं के बीच भी अनेक अन्तर मिलते हैं, और जैसा अभी देखा है, एक-समूचे भाषिक-समुदाय (जैसे, अंग्रेजी) में तो इससे भी अधिक अन्तर मिलते हैं। इन अन्तरों का भाषाओं के इतिहास में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषावैज्ञानिक को बलात् इन पर सावधानी से विचार करना पड़ता है यद्यपि अपने कुछ कार्यों में कार्यनिर्वाह के लिए इसकी उपेक्षा भी करनी पड़ती है। जब वह ऐसा करता है वह केवल अमूर्त्तकरण की विधि को काम में ला रहा है जो कि वैज्ञानिक जाँच के लिए अत्यावश्यक विधि है। किन्तु अधिकतर अगले कार्यों में प्रयुक्त करने के पूर्व इस प्रकार प्राप्त परिणामों को संशोधित करना आवश्यक है।

वक्ताओं के बीच का अन्तर आंशिक रूप से शारीरिक गठन और कदाचित् बिल्कुल वैयक्तिक वृत्तियों के कारण है। हम अपने मित्रों को टेलीफोन पर अथवा दूसरे कमरे में बोली गई आवाज़ से पहिचान लेते हैं। कुछ लोगों में भाषण करने की कहीं अधिक प्रतिभा होती है, वे कहीं अधिक संख्या में शब्दों और पद-संहितियों को याद रखते हैं और परिस्थिति में भली-भाँति प्रयुक्त करते हैं और एक प्रीतिकारी शैली में उन्हें संयोजित करते हैं। इसकी चरमकाष्ठा साहित्यिक प्रतिभावालों में मिलती है। कभी-कभी परम्परा विशेष भाषिकरूपों को विशेष वक्ताओं से सम्बद्ध कर देती है, जैसे कि जब एक सिपाही सुप्रशिक्षित नौकर या किन्हीं स्कूलों में बच्चा कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के लिए sir अथवा ma'm कहना सीखता है, यद्यपि वे प्रत्युत्तर नहीं देते हैं। कुछ उद्गार जैसे Goodness gracious अथवा Dear me अधिकतर स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त करने के लिए सुरक्षित हैं। कुछ समुदायों में परम्परा से स्त्री और पुरुषों के लिए भिन्न-भिन्न भाषिकरूप निर्धारित हैं। इसका बहु-उदाहृत उदाहरण अमेरिकन वन्यजाति 'कैरिब' का है। अभी हाल में प्रमाणपुष्ट उदाहरण उत्तरी कैलिफोर्निया में मिलने वाली 'यान' (Yana) वन्यजाति की भाषा का है। 'यान' भाषा के शब्दों का नमूना नीचे दिया जा रहा है।

	पुरुषों की शब्दावली	स्त्रियों की शब्दावली
अग्नि	'auna	'auh
मेरी अग्नि	'aunija	'au'nich'
हिरण	bana	ba'
भूरा रीछ	t'en'na	t'et'

यान भाषा के इन दो शब्द-समुच्चयों का अन्तर पर्याप्त जटिल नियम-समूहों से प्रदर्शित किया जा सकता है ।

3.4. एक समुदाय के अन्दर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाषिकरूपों का अन्तर संचार-घनत्व में अन्तरों के कारण है । बच्चा अपने चारों ओर के लोगों की भाषा सीखता है, परन्तु हमें ऐसा सोचना ठीक नहीं है कि इस शिक्षण का एक निश्चित अन्त हो जाता है । कोई भी घड़ी या दिन ऐसा नहीं है जब हम यह कह सकें कि इस व्यक्ति ने भाषा सीखना समाप्त कर दिया है । इसके विपरीत मृत्यु-पर्यन्त मनुष्य बच्चे के समान भाषा सीखता रहा है । उसका (§ 2.5) वर्णन, अनेक दिशाओं में, भाषण की सामान्य प्रक्रियाओं का धीमी चाल वाला चित्रण है । प्रत्येक वक्ता की भाषा, कुछ वैयक्तिक-घटकों के अतिरिक्त, जिनकी हम यहाँ उपेक्षा कर रहे हैं, उसका सम्मिलित परिणाम होता है जो वह अन्य व्यक्तियों से सुनता है ।

कल्पना कीजिए कि एक बड़ा चार्ट है जिसमें भाषिक-समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक-एक बिन्दु है । और कल्पना कीजिए कि जब कभी एक आदमी एक वाक्य बोलता है चार्ट में वक्ता के बिन्दु से सभी श्रोताओं के बिन्दुओं तक एक-एक तीर खींचा जाता है । एक निश्चित समय के, मान लीजिए 70 वर्ष के, अन्त में यह चार्ट उस समुदाय के अन्दर संचारघनत्व प्रदर्शित करेगा । कुछ वक्ता घनिष्ठ संचार से संबद्ध मिलेंगे । एक से दूसरे तक अनेक तीर मिलेंगे और एक, दो, या तीन मध्यवर्ती वक्ताओं को सम्बद्ध करने वाले तीरों की श्रेणियाँ मिलेंगी । इसके दूसरे छोर पर कुछ काफी दूर-दूर पृथक् वक्ता मिलेंगे जिन्होंने कभी एक-दूसरे को बोलते नहीं सुना है और अनेक मध्यवर्ती वक्ताओं से होते हुए तीरों की लम्बी शृंखला से ही सम्बद्ध हैं । यदि हम समुदाय के विभिन्न वक्ताओं के बीच सादृश्य अथवा वैसा दृश्य समझाना चाहते हैं अथवा दूसरे रूप में, दो दिए हुए वक्ताओं के बीच सादृश्य की मात्रा पहले से कहना चाहते हैं, तो हम पहले यह करेंगे कि उनकी बिन्दुओं को सम्बद्ध करने वाले तीरों और तीरों की श्रेणियों का मूल्य और संख्या मालूम करेंगे । अभी हम देखेंगे कि यह केवल प्रथम-चरण होगा । उदाहरणार्थ, इस पुस्तक के पाठक के द्वारा सुविख्यात भाषणकर्ता से सुने

भाषिक-रूपों को दोहराने की अधिक संभावना है बजाय सड़क के भंगी से सुने भाषिक-रूपों के।

इस चार्ट की, जिसकी हमने कल्पना की है, रचना असंभव है। दुर्लंघ्य और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कठिनाई समय की कठिनाई है। इस समय जीवित व्यक्तियों से प्रारम्भ कर हमें उस प्रत्येक वक्ता के लिए बिन्दु स्थापित करना होगा जिससे इस समय जीवित किसी भी व्यक्ति ने सुना था, फिर उन वक्ताओं के लिए बिन्दु स्थापित करना होगा जिससे उन्होंने सुना था, और इस प्रकार इतिहास-ज्ञात काल तक और फिर पूर्वकालीन इतिहास से परे अनिश्चित पूर्वकाल में प्रथम मानव-समाज के आदिमकाल तक बिन्दु बनाते रहना होगा। हमारे वर्तमान भाषिक-रूप पूर्णतया अतीत के भाषिक-रूपों पर निर्भर हैं।

चूंकि हम ऐसा चार्ट नहीं बना सकते हैं, अतएव अप्रत्यक्ष परिणामों के अध्ययनों पर निर्भर होते हैं और परिकल्पनाओं का सहारा लेते हैं। हम विश्वास करते हैं कि भाषिक-समुदाय के बीच संचार-घनत्व (density of communication) का अन्तर न केवल वैयक्तिक और व्यक्तिपरक है अपितु समुदाय उपवर्गों के विभिन्न अवस्थाओं में विभाजित है। प्रत्येक उपवर्ग का व्यक्ति अपने उपवर्ग के अन्य व्यक्तियों से उपवर्ग के बाहर के व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक वार्तालाप करता है। यदि हम तीरों के अनुक्रमों को एक जाल के रूप में देखें, तो हम यह कह सकेंगे कि इस मौखिक संचार के जाल में ये उपवर्ग दुर्बलताओं की रेखाओं (lines of weakness) से परस्पर पृथक् किए गए हैं। ये दुर्बलता की रेखाएँ, और तदनुसार, एक भाषिक-समुदाय में भाषिक-रूपों के अन्तर स्थानिक (local) (केवल भौगोलिक पार्थक्य के कारण) और स्थानिकेतर (non-local), अथवा जैसा हम कहेंगे, सामाजिक (social) हैं। उन देशों में, जहाँ भाषिक-समुदाय अभी हाल में फैला तथा बसा है, स्थानिक अन्तर अपेक्षाकृत कम है, जैसे कि संयुक्तराष्ट्र (विशेषतः पश्चिमी भाग) या रूस में। उन देशों में जहाँ एक ही भाषिक-समुदाय बहुत-बहुत दिनों से बसा है, स्थानिक अन्तर बड़ी मात्रा में मिलते हैं, जैसे कि इंग्लैण्ड में जहाँ 1500 वर्षों से अंग्रेजी बोली जा रही है, या फ्रांस में जहाँ लैटिन '(अब फ्रेंच के नाम से) दो हजार वर्षों से बोली जा रही है।

हम सबसे पहले एक सरलतर स्थिति पर विचार करेंगे जोकि संयुक्तराष्ट्र (अमेरिका) में मिलती है। वहाँ भाषा में भेद की सर्वाधिक स्पष्ट रेखा सामाजिक वर्गीकरण से सम्बद्ध है। वे बच्चे जो कि धन, कुलपरम्परा अथवा शिक्षा की दृष्टि से सुसम्पन्न परिवार में पैदा हुए हैं, वे उस बोली के नैसर्गिक-वक्ता बनते हैं जो साधु-अंग्रेजी ("good" English) के नाम से प्रसिद्ध है और जिसे भाषा-

वैज्ञानिक एक भावनाशून्य नाम 'मानक' (standard) अंग्रेजी के नाम से कहना पसन्द करते हैं। वे बच्चे जो इतने भाग्यशाली नहीं हैं 'असाधु' अथवा अशिष्ट अंग्रेजी बोलनेवाले बनते हैं, जिसे भाषावैज्ञानिक अ-मानक अंग्रेजी के नाम से पुकारना पसन्द करते हैं। उदाहरणार्थ, I have none, I haven't any, I haven't got any ये रूप मानक (साधु) अंग्रेजी के हैं किन्तु I ain't got none अमानक (असाधु) अंग्रेजी का रूप है।

अमेरिकन अंग्रेजी के ये दो मुख्य प्रकार एक-से व्यवहृत नहीं होते हैं। स्कूल, चर्च और पूरे समुदाय से सम्बद्ध, जैसे, कचहरी, विधानसभा आदि सरकारी कार्यों में मानकरूप ही प्रयुक्त होते हैं। सभी लेखादि (प्रहसन-व्यंग्य को छोड़कर) मानक-भाषा में होते हैं और ये ही मानकरूप व्याकरण, कोषादि और विदेशी पाठकों को सिखाने के लिए भाषाशिक्षण की पाठ्यपुस्तकों में मिलते हैं। मानक और अमानक—दोनों वर्गों के वक्ता 'मानकरूपों को 'साधु' अथवा 'शुद्ध' और अमानकरूपों को 'असाधु', 'अशुद्ध' 'अशिष्ट' अथवा कभी-कभी 'गैर-अंग्रेजी' भी पुकारने में सहमत हैं। मानक अंग्रेजी का वक्ता अमानक-अंग्रेजी सीखने के लिए कुछ प्रयत्न नहीं करता है किन्तु अमानक अंग्रेजी के बहुत काफी वक्ता मानक-रूपों को प्रयुक्त करने का प्रयत्न करते हैं। कम भाग्यशाली वर्ग का सदस्य यदि धन अथवा राजनीतिक-प्रतिष्ठा से ऊँचा उठ जाता है तो निश्चयतः यथासंभव मानक भाषिकरूप सीख लेता है क्योंकि वस्तुतः I seen it अथवा I done it जैसे एकाध भूल से उच्चारित प्रयोगों से उसकी नव-अर्जित प्रतिष्ठा पर आँच तक आ सकती है।

मानकभाषा के बीच गौण अन्तर मिलते हैं। यहाँ भी विरुद्ध-प्रयोगों में ऊँच-नीच का भेद है। उदाहरणार्थ, एक शिकागो-वासी जो laugh, half, bath, dance, can't आदि शब्दों से सामान्यतया उच्चारित man के a स्वर (ऐ) के स्थान पर father का ah स्वर (ऑ) बोलता है, "उच्चतर-कोटि" की अंग्रेजी बोलनेवाला माना जाता है। किन्तु इस प्रकार की स्थितियों में लोगों में मतभेद रहा है, बहुत-से शिकागोवासी भी इस ah- रूपों को नासमझी का और बनावटी रूप मानते हैं। मानक-अंग्रेजी के वक्ता प्रायः इस पर वादविवाद करते हैं कि it's I अथवा it's me, forehead अथवा "forrid" इन दोनों में से कौन रूप अधिक अच्छा है। इन वादविवादों का कभी कोई निर्णय नहीं हो पाया है क्योंकि वादार्थियों ने कभी 'अधिक अच्छापन' (साधुतरत्व) की परिभाषा में एकमत होने का प्रयास नहीं किया। यह एक ऐसा विषय है जिस पर आगे चलकर चर्चा करेंगे।

इसके अतिरिक्त मानकभाषा में अन्य अन्तर मिलते हैं जोकि स्पष्टतया

संचार-घनत्व पर निर्भर है। विभिन्न आर्थिक वर्ग—जैसे कि उच्च वर्ग, विभिन्न क्रमबन्धों में तथाकथित 'मध्यमवर्ग'—भाषा के विषय में भिन्न-भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्ति को मिली शिक्षा में—चाहे स्कूल की, चाहे कुल परम्परा की —अन्तर मिलता है। ये अन्तर फिर तकनीकी पेशों के कुछ कम महत्त्वपूर्ण विभाजनों से संकरित होते हैं। विभिन्न प्रकार के कारीगर, व्यापारी-वर्ग, इंजीनियर, वकील, डाक्टर, वैज्ञानिक, कलाकार आदि कुछ भिन्न-भिन्न प्रकार की भाषा व्यवहृत करते हैं। खेलकूद और विभिन्न शौकों की कम-से-कम अपनी निजी शब्दावली होती है। वयः सीमा से भी बड़ा प्रभाव पड़ता है जिसकी आगे चलकर चर्चा करेंगे। यह एक बड़ा शक्तिशाली बल है, किन्तु बिल्कुल गुप्त रूप से कार्य करता है और वर्तमान चर्चा के स्तर पर कदाचित् ही प्रकट होता है, सिवाय इसके कि नवयुवकों में विचित्रोक्ति (slang) का बड़ा शौक होता है।

सबसे अधिक स्थिर और ध्यानाकर्षक अन्तर, संयुक्तराष्ट्र में भी और वहाँ की मानक-अंग्रेजी में भी, भौगोलिक अन्तर होते हैं। संयुक्तराष्ट्र में मानक-अंग्रेजी के तीन बड़े भौगोलिक प्रतिरूप हैं—न्यू इंग्लैण्ड, मध्यपश्चिमी, दक्षिणी, इन प्रतिरूपों में स्वयं छोटे भौगोलिक अन्तर हैं। देश के पुराने बसे भाग के अंग्रेजी वक्ता अपने साथी वक्ता का मूलप्रदेश काफी ठीक-ठीक सीमाओं तक प्रायः बता सकता है। विशेषतः उच्चारण के विषय में अमेरिका में मानक-अंग्रेजी की परिसर-सीमाएँ विस्तृत हैं। बहुत भिन्न उच्चारण भी, जैसे कि उत्तरी कैरोलिना और शिकागो के, बराबर तौर से मानक मान लिए जाते हैं। केवल रंगमंच पर हम एकरूप उच्चारण की आशा करते हैं और वहाँ अभिनेता अमेरिकन-अंग्रेजी के स्थान पर ब्रिटिश-अंग्रेजी बोलते पाए जाते हैं। इंगलैण्ड में भी इसी प्रकार के प्रान्तिक-रूप मिलते हैं किन्तु उन्हें समान प्रतिष्ठा नहीं मिली है। दक्षिण की 'पब्लिक-स्कूल' अंग्रेजी को सर्वाधिक सामाजिक प्रतिष्ठा मिली है। उस अंग्रेजी से निश्चयतः प्रान्तिक-मानक तक असंख्य क्रमबन्ध मिलते हैं और जैसे-जैसे वे सर्वाधिक प्रतिष्ठितरूपों से भिन्न होते गए हैं वैसे-वैसे उन्हें कम प्रतिष्ठा मिलती गई है। स्काटलैण्ड, यार्कशायर और लंकाशायर से आए मानक-अंग्रेजी के वक्ता की सामाजिक मान्यता अंशतः इस पर निर्भर होती है कि कितनी घनिष्ठता से उसका उच्चारण उच्चवर्गीय दक्षिणी लोगों के उच्चारण से मिलता है। इंगलैण्ड में, किन्तु कदाचित् ही संयुक्तराष्ट्र में, मानक अंग्रेजी का प्रान्तिक रंग सामाजिक स्तर के अन्तरों से सहसम्बद्ध है।

3.6 अमानक भाषिकरूपों में मानक की अपेक्षा अधिक भिन्नता दिखाई पड़ती है। अमानक भाषा के वक्ता का समाज में जितना ऊँचा स्थान होता है उतनी ही उसकी बोली मानक-भाषा से मिलती है। ऊपरी की ओर मध्यवर्ती

(transitional) वक्ता हैं जो प्रायः भाषण के मानकरूपों को प्रयुक्त करते हैं। इनके भाषण में केवल कहीं-कहीं अमानकरूप मिलते हैं किन्तु उच्चारण में स्पष्टतया प्रान्तीयत्व झलकता है। नीचे की ओर निर्भ्रान्ततया गंवार वक्ता हैं जोकि मानकरूप प्रयुक्त करने का आडम्बर भी नहीं करते हैं।

इस निरन्तर क्रमबन्ध के अतिरिक्त, अमानक वक्ताओं के विभिन्नवर्ग अपने निजी भाषिकरूप प्रयुक्त करते हैं। पेशेवर वर्गों की, जैसे कि मछवाहों, ग्वालों हलवाइयों, अर्क निकालनेवालों की, कम-से-कम अपनी तकनीकी भाषाएँ होती हैं। विशेषतः वे अल्पसंख्यक वर्ग, जो बृहत् जनसमूह से किसी भाँति विच्छिन्न हैं, स्पष्टतया अभिव्यक्त विविध भाषणरूपों को प्रयुक्त करते हैं। नाविक लोग अपने ही प्रकार की अमानक-अंग्रेजी बोलते हैं। आवारगर्द और अन्य अपराधियों के भी अपने भाषणरूप होते हैं, इसी प्रकार सर्कसवालों और अन्य यायावर मनोरंजन करने वालों में अपनी बोली होती है। जर्मन के अमानक वक्ताओं में ईसाई और यहूदी और कहीं-कहीं कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट लोगों के भी अनेक भाषणरूप परस्पर भिन्न-भिन्न हैं। यदि किसी विशिष्ट वर्ग का शेष समुदाय से मेल नहीं है तो वह अपनी बोली की विशिष्टताओं को एक 'रहस्य' (कूट) बोली के रूप में प्रयुक्त कर सकता है जैसे अंग्रेजी बोलने वाले जिप्सी। विभिन्न देशों में अपराधियों ने भी इसी प्रकार '**रहस्य**' (कूट) बोलियाँ विकसित कर ली हैं।

फिर भी अमानकभाषा में सर्वाधिक वैभिन्य भौगोलिक कारण से है। संयुक्त-राष्ट्र के मानक-अंग्रेजी में विद्यमान भौगोलिक अन्तर अमानक-भाषा में कहीं अधिक मात्रा में सुनाई पड़ते हैं। देश के प्राचीनतर बसे हुए भागों के दूरवर्ती जिलों में ये स्थानिक वैशिष्ट्य इतने अधिक प्रखर हैं कि उन्हें स्थानिक बोली के रूप में वर्णित कर सकते हैं।

प्राचीनतर बसे हुए भाषिक-समुदायों में, जिनका उदाहरण फ्रांस या अंग्रेजी-भाषियों में ब्रिटिश भाग है, स्थानिक बोलियों का कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन समुदायों में अमानक-भाषा को स्थूल रूप से और बिना सुस्पष्ट विभाजक रेखा के दो भागों में बांट सकते हैं—**उप-मानक** (sub-standard) भाषा जोकि पूरे देश में सम्बोध्य है यद्यपि एकरूप नहीं है, और **स्थानिक बोली** (local dialects) जो कि एक स्थान से दूसरे स्थान में इतना बदल जाती है कि कुछ दूर के ही रहनेवाले परस्पर समझ नहीं पाते हैं। ऐसे देशों में, उपमानक भाषा उस 'निम्न मध्यवर्ग' की बोली है जिसके अन्तर्गत उच्चाभिलाषी छोटे व्यापारी, मशीनों के कारीगर और नगर में काम करने वाले आते हैं, और स्थानिक बोलियाँ किसानों और शहर के गरीब लोगों से बोली जाती हैं।

भाषावैज्ञानिक के लिए स्थानिक बोलियों का परम महत्त्व है। यह न केवल इस कारण है कि उसे उनकी बड़ी विभिन्नता से काम करने को मिलता है अपितु इस कारण भी है कि मानक और अमानक भाषण-विधियों का उद्गम और इतिहास स्थानिक बोलियों की पृष्ठभूमि में ही समझा जा सकता है। विशेषतः पिछली दशाब्दियों में भाषावैज्ञानिकों को इसका अनुभव हुआ कि **बोली-भूगोल** (dialect-geography) से अनेक समस्याओं की व्याख्या संभव है।

इटली और फ्रांस में (जहाँ इस दिशा में इंगलैण्ड की तुलना में अधिक अध्ययन हुए हैं) प्रत्येक गाँव की, या अधिक से अधिक दो या तीन गाँवों के प्रत्येक वर्ग की, अपनी स्थानिक बोली है। पड़ोस की स्थानिक बोलियों में प्रायः मामूली अन्तर हैं किन्तु वे पहिचान में आ जाते हैं। गाँव के रहनेवाले तुरन्त बता देते हैं कि पड़ोस गांव की बोली उनकी बोली से किस प्रकार भिन्न है और प्रायः वे उनको उन विशिष्टताओं के सम्बन्ध में चिढ़ाया करते हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान जाने में मामूली अन्तर मिलते हैं किन्तु एक ही दिशा में बढ़ते चलें तो अन्तर बढ़ते जाएँगे यहाँ तक कि एक छोर के वासी दूसरे छोर के वासी को समझ भी न पाएँगे यद्यपि उन दोनों छोरों के बीच कहीं भी स्पष्ट भाषात्मक विभाजन रेखा नहीं है। कोई ऐसा क्रमिक-संक्रमणों का भौगोलिक क्षेत्र एक **बोली क्षेत्र** (dialect area) कहलाता है।

एक बोली क्षेत्र के अन्तर्गत हम भाषा के किसी भी प्रयोग-वैशिष्ट्य की दृष्टि से भिन्न स्थानों के बीच रेखायें खींच सकते हैं। ये रेखायें समभाषांश रेखायें (isoglosses) कहलाती हैं। यदि एक गाँव में किसी भाषिकरूप के सम्बन्ध में विचित्र प्रयोग है तो इस विचित्र प्रयोग के आधार पर खिंची समभाष रेखा उस गांव के चारों ओर गोल खिंची रेखा होगी। इसके विपरीत यदि कोई विशिष्ट प्रयोग बोली-क्षेत्र के अधिकांश भाग पर फैला है तो इस प्रयोग के आधार पर खिंची समभाष-रेखा पूरे बोली क्षेत्र को दो भागों में बांटने वाली लम्बी रेखा होगी। उदाहरणार्थ जर्मनी में bite के t का उच्चारण उत्तरी बोलियों में अंग्रेजी के t के उच्चारण के समान होता है, किन्तु दक्षिण-बोलियों में मानक-जर्मन beiszen की s-ध्वनि के समान होता है। इन दो उच्चारणरूपों को पृथक् करने वाली समभाष-रेखा पूरे जर्मनी-भाषा-प्रदेश में पूर्व से पश्चिम तक एक लम्बी टेढ़ी-मेढ़ी रेखा है। इंग्लैण्ड के उत्तर और उत्तरपूर्व में एक ऐसा क्षेत्र पृथक् किया जा सकता है जहाँ bring का भूतकालिकरूप brang मिलता है। किसी भाषा-प्रदेश के उन मानचित्रों के संग्रह जहाँ समभाष-रेखायें खिंची हैं, **बोली मानचित्र** कहलाते हैं। ये भाषावैज्ञानिक के महत्त्वपूर्ण साधन हैं।

स्थानिक बोलियों के प्रति वक्ताओं का रुख विभिन्न देशों में प्रायः विभिन्न है। इंग्लैण्ड में स्थानिक बोलियों की कोई प्रतिष्ठा नहीं है, उच्चवर्गीय वक्ता उनकी कोई परवाह नहीं करता है और एक स्थानिक बोली का नैसर्गिक-वक्ता सामाजिक श्रेणी में ऊपर उठते ही उसे छोड़ देने का प्रयत्न करता है चाहे उसके स्थान पर कोई उपमानक भाषा का रूप ही क्यों न प्रयुक्त करे। इसके विपरीत जर्मनवासियों में पिछली शताब्दी में स्थानिक बोलियों के लिए एक प्रकार का भावुकतापूर्ण मोह विकसित हो गया है। वहां एक मध्यवर्गीय वक्ता, जिसे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा निश्चित नहीं लगती है, उन (स्थानिक बोलियों) से दूर रहना चाहता है, किन्तु कुछ उच्चवर्गीय वक्ताओं ने अपने घरों में स्थानिक बोली बोलने का नियम ले रखा है। जर्मन, स्विट्ज़रलैण्ड में तो यह प्रवृत्ति और आगे है। वहाँ उच्चवर्गीय स्विस भी, जो मानक जर्मन से भलीभाँति परिचित है, स्थानिक बोली को अपने परिवार और पड़ोसियों के बीच सामान्य वार्तालाप के माध्यम के रूप में प्रयुक्त करता है।

3.7 एक जटिल भाषिक-समुदाय में मुख्य प्रकार की भाषण-विधियों को स्थूल रूप से निम्नलिखित वर्गों में वर्गबद्ध किया जा सकता है :–

(1) साहित्यिक मानक,—यह अधिकांश औपचारिक वार्तालापों में और लेखादि में मिलता है, (जैसे I have none);

(2) बोलचाल का मानक,—यह विशेष सुविधा प्राप्त वर्ग की बोली है। (उदाहरणार्थ I haven't any अथवा I haven't got any इंग्लैण्ड में यदि दक्षिणी 'पब्लिक स्कूल' ध्वनि और अनुतान से ही बोला जाए);

(3) प्रान्तीय-मानक,—संयुक्तराष्ट्र में प्रायः (2) से भिन्न नहीं माना जाता है मध्यवर्गियों से (2) से बहुत कुछ मिलता-जुलता बोला जाता है किन्तु एक प्रान्त में दूसरे प्रान्त से कुछ भिन्न-भिन्न होता है (उदाहरणार्थ I haven't any अथवा I haven't got any इंग्लैण्ड में यदि 'पब्लिक स्कूल' उच्चारण से भिन्न ध्वनियों और सुर-क्रम से बोला जाए);

(4) उप-मानक—(1), (2) और (3) के स्पष्टतया भिन्न है। यूरोपीय देशों में निम्न मध्यवर्गियों से और संयुक्त राष्ट्र में (2) और (3) प्रकार के वक्ताओं से अतिरिक्त प्रायः सभी से बोला जाता है। यह स्थानिक भिन्नता से भिन्न-भिन्न होता है किन्तु स्थानिक-अन्तर केवल मामूली होते हैं। (उदाहरण—I ain't got none);

(5) स्थानिक-बोली—यह न्यूनतम सुविधा प्राप्त वर्ग की बोली है। संयुक्त राष्ट्र में किंचित् विकसित है, स्विट्ज़रलैण्ड में अन्य वर्गों से भी घर में

बोली जाती है। एक गाँव से दूसरे गाँव में बदल जाती है। इसमें प्रायः इतनी विभिन्नतायें होती हैं कि परस्पर और (2, 3, 4) के वक्ताओं की समझ में नहीं आती है। (उदाहरण—a hae nane).

3.8 भाषिक-समुदाय के भीतर विद्यमान अन्तरों के सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि एक भाषिक-समुदाय के सदस्य इतनी मात्रा में एक-सा बोल सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की बोली समझ लेता है, और इतनी मात्रा में भिन्न भी बोल सकते हैं कि कुछ दूर के ही व्यक्ति एक दूसरे व्यक्ति को नहीं समझ पाते हैं। प्रथम स्थिति के उदाहरण में अमेरिकन वन्य-जाति है जिनके कुछ सौ ही वक्ता होते हैं। दूसरी स्थिति के उदाहरण में अंग्रेजी-भाषियों को ले सकते हैं, जहाँ एक अमेरिकावासी और यार्कशायर की बोली बोलनेवाला एक-दूसरे को समझ नहीं पाता है। वास्तव में इन दोनों स्थितियों के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं खींच सकते हैं क्योंकि सम्बोधि और असम्बोधि के बीच के सभी क्रमबन्ध मिलते हैं। एक अमेरिकन और एक यार्कशायरवासी एक-दूसरे को समझ सकते हैं या नहीं, यह कई बातों पर निर्भर है—दोनों व्यक्तियों की कितनी बुद्धि है, उन्हें विदेशी भाषा और बोली का कितना सामान्य अनुभव है, उस क्षण उनकी मानसिक स्थिति कैसी थी, किस मात्रा तक परिस्थितियाँ भाषण के महत्त्व को प्रकट कर देती थीं, इत्यादि। इसके अतिरिक्त स्थानिक-बोली और मानक-बोली के बीच अनन्त क्रमबन्ध मिलते हैं। फिर, दोनों या दोनों में से एक व्यक्ति कुछ बोलने में रियायतें दे देते हैं ताकि दूसरा सरलता से समझ सके और ये रियायतें प्रायः मानक-भाषा की ओर झुकी होती हैं।

इन सब कारणों से बहुत-से भाषिक-समुदायों की सीमा के चारों ओर सामान्य रेखा खींचना कठिन हो जाता है। स्पष्ट स्थितियाँ तब होती हैं जब दो परस्पर-असम्बोध्य भाषाएँ एक-दूसरे को छूती हैं, जैसे उत्तरी अमेरिका के दक्षिण पश्चिम में अंग्रेजी और स्पेनी भाषाएँ। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति की (यदि, सरलता के लिए वन्यजाति और हाल में आए आप्रवासियों को छोड़ दें) भाषा या तो अंग्रेजी है या स्पेनी, और हम एक काल्पनिक रेखा, एक भाषा-विभाजक रेखा (भाषा-सीमा), खींच सकते हैं जो अंग्रेजी-भाषियों को स्पेनी भाषियों से पृथक् करती है। निस्सन्देह यह भाषा सीमा दो भौगोलिक दृष्टि से घने संलग्न समुदायों के बीच एक सरल और निश्चित रेखा के रूप में नहीं होती है। पूर्णतया स्पेनभाषियों के क्षेत्र में कहीं-कहीं अंग्रेजी-भाषियों की बस्ती बिखरी मिल जाती है जो **भाषाई-द्वीप** (speech-islands) सी लगती है और इसी प्रकार स्पेनी भाषाई-द्वीप चारों ओर से अंग्रेजी-भाषियों से घिरे मिलते हैं।

प्रत्येक वर्ग के परिवार और व्यक्ति दूसरे वर्ग के बीच बसे मिलते हैं और भाषा-सीमा के मानचित्र बनाने में पृथक्-पृथक् छोटे-छोटे वृत्त बनाते हैं। इस प्रकार हमारी भाषा-सीमा न केवल एक टेढ़ी-मेढ़ी बड़ी रेखा के रूप में चित्रित होती है अपितु इसके भीतर उन भाषाद्वीपों के चारों ओर अनेक छोटे-छोटे बन्द वृत्त भी होते हैं जिनके अन्तर्गत कभी-कभी केवल एक परिवार या एक व्यक्ति ही आता है। इस प्रकार की ज्यामितीय जटिलता और दिन-प्रतिदिन की परिवर्तन-शीलता के होते हुए भी यह भाषा-सीमा किसी-न-किसी मात्रा में एक स्पष्ट भेद प्रदर्शित करती है। यह सच है कि भाषावैज्ञानिकों ने अंग्रेजी और स्पेनी के बीच पर्याप्त समरूपता पाई है और उनसे निस्सन्देह दोनों भाषाएँ सहसम्बद्ध भाषाएँ सिद्ध होती हैं किन्तु इस समरूपता और सहसम्बद्धता से हमारी इस समस्या का दूर से भी सम्बन्ध नहीं है जो इस समय हमारे सामने है।

यह बात उदाहरण के लिए जर्मन और डैनी के सम्बन्ध में है। जटलैण्ड अन्तरीप के बीच से फ्लेन्सवर्ग के शहर के ठीक उत्तर से हम इन दोनों भाषाओं के मध्य एक सीमारेखा खींच सकते हैं और यह सीमा, कुछ छोटे पैमाने पर वही विशेषतायें प्रदर्शित करती है जो अमेरिका के दक्षिण-पश्चिम में अंग्रेजी-स्पेनी सीमा। किन्तु इस उदाहरण में दोनों भाषाओं के बीच इतनी अधिक समरूपता है कि कुछ और सम्भावना भी लक्षित होती है। दोनों भाषाएँ परस्पर असम्बोध्य हैं किन्तु परस्पर इतना अधिक मिलती हैं कि बिना किसी भाषावैज्ञानिक अनु-संधान के ही सहसम्बद्धता स्पष्ट है। यदि कोई इन दोनों की तुलना कर सके तो दोनों में परस्पर अन्तर स्विट्ज़रलैण्ड में बोली जर्मन और स्लोएविक में बोली स्थानिक-बोली के मध्य अन्तरों से अधिक नहीं है। जर्मन और डैनी में, जहाँ वे एक-दूसरी को छूती हैं, परस्पर उतनी ही मात्रा में अंतर है जितनी मात्रा में वे एक अकेले स्थानिकरूप से भेदीकृत भाषिक-समुदाय में हो सकते हैं। इतना अन्तर अवश्य है कि स्थानिकरूप से भेदीकृत भाषिक-समुदाय में मध्यवर्ती क्रमबन्ध मिलते जाते हैं जबकि जर्मन और डैनी के बीच कोई मध्यवर्ती बोली नहीं है।

इस अन्तर की शुद्ध सापेक्षिक प्रकृति अन्य उदाहरणों में अधिक स्पष्ट है। हम फ्रेंच और इतालवी, स्वेडी और नार्वेजी, पोली और बोहेमी को पृथक् भाषाएँ मानते हैं क्योंकि ये समुदाय राजनीतिक रूप से भिन्न हैं, और भिन्न-भिन्न मानक-भाषाओं को प्रयुक्त करते हैं, किन्तु इन सब उदाहरणों में सीमांत प्रदेशों में स्थानिक भाषिक रूपों का अन्तर अपेक्षाकृत मामूली है और उससे अधिक नहीं है जो इन भाषिक-समुदायों के भीतर स्वयं मिलता है। प्रश्न यह रूप धारण करता है कि

आसन्न भाषिक-रूपों के बीच किस मात्रा तक अन्तर भाषासीमा के नाम को युक्तिसंगत सिद्ध करता है। स्पष्टतया हम अन्तरों का उतनी यथार्थता से महत्त्व-निरूपण नहीं कर सकते हैं जितना अन्य का। निस्संदेह कुछ स्थितियों में नाम-करण की हमारी प्रवृत्तियाँ भाषात्मक स्थितियों में प्रयुक्त नहीं हो पाती हैं। स्थानिक बोलियों के प्रमाण पर हम उन दो भाषाओं के बीच रेखा नहीं खींच सकते हैं जिन्हें हम जर्मन कहते हैं और डच-फ्लेमी कहते हैं। डच जर्मन भाषाई क्षेत्र भाषाविज्ञान की दृष्टि से एक इकाई है और दोनों में भेद एक मुख्यतया राज-नीतिक भेद है। यह भेद भाषाई इसी अर्थ में है कि राजनीतिक इकाइयाँ यहाँ विभिन्न मानक-भाषाओं को प्रयुक्त कर रही हैं। संक्षेप में भाषिक-समुदाय पद का केवल सापेक्षिक मूल्य है। वर्गों के बीच और व्यक्तियों के बीच संचार की संभावना शून्य से लेकर अत्यधिक सूक्ष्म समंजनों तक है। यह स्पष्ट है कि मध्यवर्ती संभावनाओं से मानवहित और उन्नति को बड़ा योगदान मिलता है।

3.9 संचार की सम्भावनाएँ और बढ़ जाती हैं तथा भाषिक-समुदाय की सीमा-रेखायें और धूमिल पड़ जाती हैं यदि हम इस महत्त्वपूर्ण तथ्य पर विचार करें कि व्यक्ति विदेशी भाषा भी सीख सकता है। यह कोई एक आधुनिक दक्षता नहीं है। सरलतर सभ्यताओं के व्यक्तियों के बीच भी, जैसे अमेरिकन आदि-वासियों की कुछ जातियों में, कुछ कुलीन व्यक्ति पड़ोस की जातियों की एक से अधिक बोलियाँ प्रायः बोल लेते हैं। विदेशी भाषाओं के सीखने का भी कोई माप-दण्ड नहीं बन सकता क्योंकि दक्षता पूर्णता से लेकर इतनी अल्पता तक हो सकती है कि व्यावहारिक लाभ ही न हो। सीखने वाला अपनी संचार-दक्षता के अनुसार ही किसी भाषा का विदेशी वक्ता माना जाता है। हम पहले देख चुके हैं कि कुछ भाषाओं की, जैसे अंग्रेजी और मलयाई की, उपयोगिता अंशतः उसके विदेशी वक्ताओं के समर्थन पर निर्भर है। प्रायः पर्याप्त मात्रा में अंग्रेजी, जैसा कि भारतीय शिक्षित वर्ग में, संचार का माध्यम है जब कि वक्ता एक दूसरे की मातृ-भाषा को नहीं समझते हैं।

कुछ लोग विदेशी भाषा की स्वीकृति में पूर्णतया अपनी मातृभाषा को छोड़ बैठते हैं। यह संयुक्तराष्ट्र के आदिवासियां के बीच प्रायः होता है। यदि आप्रवासी अपने ही देश से आये आप्रवासियों के बीच नहीं बसता है, और विशेषतः यदि वह अपने मूल राष्ट्र से भिन्न राष्ट्र के व्यक्ति से विवाह करता है तो उसे अपनी मातृ-भावा प्रयुक्त करने का अवसर ही नहीं मिलता है। विशेषकर कम शासित व्यक्तियों के साथ ऐसा होता है कि कुछ समय बाद, परिणामरूप, वे अपनी मातृभाषा को पूरी तौर पर भूल जाते हैं; इस कोटि के व्यक्ति अपनी मातृभाषा

समझ तो लेते हैं यदि कोई दूसरा उसे बोले, किन्तु स्वयं प्रवाह के साथ अथवा सम्बोधियोग्य मात्र बोल नहीं पाते हैं । उन्होंने भाषा-विवर्तन (shift of language) किया है । उनका एकमात्र संवादवहन अंग्रेजी के माध्यम से होता है और उनके लिए अंग्रेजी मातृभाषा तो नहीं बन पाई है किन्तु अभिस्वीकृत-भाषा (adopted language) अवश्य है । कभी-कभी ये बड़ी अपूर्ण मात्रा में ही अंग्रेजी सीख पाते हैं और तब ये किसी भी भाषा को सप्रवाह बोलने में अक्षम होते हैं ।

भाषा-विवर्तन की अन्य अधिक सामान्य स्थिति आप्रवासियों के बच्चों में होती है । प्रायः अधिकतर माता-पिता घर में अपनी मातृभाषा बोलते हैं और उनके बच्चों की भी वह मातृभाषा होती है किन्तु वे बच्चे जैसे ही बाहर खेलने-कूदने लगते हैं या स्कूल जाने लगते हैं, घर की भाषा बोलना पसन्द नहीं करते हैं, और कुछ समय बाद घर की भाषा बोलना भूल जाते हैं सिवाय टूटे-फूटे रूप में, और केवल अंग्रेजी बोलते हैं । उनके लिए अंग्रेजी जैसा कि हम कह सकते हैं, वयस्क (adult) भाषा है । सामान्यतया वे उसे सप्रवाह बोलते हैं, अर्थात् चारों ओर के उस भाषा के नैसर्गिक वक्ताओं से अभिन्न प्रकार से बोलते हैं । किन्तु कुछ लोग अपनी मातृभाषा की विशेषताएँ अर्जित भाषा में ले जाते हैं । अपनी मातृभाषा को वे पूर्णतया या बिल्कुल नहीं बोल पाते हैं किन्तु उसे सुनने पर उनका समझ लेना कुछ बेहतर होता है । वेल्स में जहां वेल्सभाषी माता-पिताओं के बच्चे ने अंग्रेजी सीखी है ऐसे उदाहरण मिलते हैं और उनके अध्ययन से दिखाई पड़ता है कि इस प्रक्रिया से बच्चे के विकास में बाधा पहुँचती है ।

3.10 विदेशी भाषा सीखने की चरमस्थिति में सीखनेवाला वक्ता इतना दक्ष हो जाता है कि उसे चारों ओर के नैसर्गिक वक्ताओं से भिन्न करना असम्भव हो जाता है । यह प्रायः भाषा के वयस्क-विवर्तनों में और अधिकतर अभी ऊपर वर्णित शैशव-विवर्तनों में होता है । जब पूर्ण विदेशी भाषा सीख लेने पर भी मातृ-भाषा में दक्षता नहीं छोड़ता है तो द्विभाषिकता (bilingualism) की स्थिति होती है, जहां एक व्यक्ति दो भाषाओं में नैसर्गिक-वक्ता के समान दक्ष होता है । शैशव के बाद कुछ ही व्यक्तियों के पास पर्याप्त मांसपेशियों का और तंत्रिकाजन्य स्वातंत्र्य होता है या विदेशी भाषा में पूर्णता पाने का पर्याप्त अवसर तथा अवकाश होता है, तथापि इस प्रकार की द्विभाषिकता कल्पना से अधिक सामान्य है चाहे वह उपरिवर्णित आप्रवासियों के सम्बन्ध में हो, चाहे वह भ्रमण, विदेश में अध्ययन आदि के परिणामस्वरूप हो । फिर भी कोई पूर्णता की उस मात्रा का निर्धारण

नहीं कर सकता जब कि अच्छा विदेशी वक्ता एक द्विभाषी बन जाता है, यह भेद केवल सापेक्षिक है ।

सामान्यतया एक द्विभाषी अपनी द्वितीय भाषा को प्रारम्भिक बाल्यकाल में सीखता है । ऐसा अधिकतर भाषाई -सीमांत प्रदेशों में स्थित समुदायों में, अथवा भाषा-द्वीप में रहनेवाले परिवारों में, अथवा विभिन्न भाषाभाषी माता-पिता वाले परिवारों में होता है । अनेक सम्पन्न यूरोपीय परिवारों में बच्चों को विदेशी नर्सों अथवा शिक्षिकाओं द्वारा द्विभाषी बनाया जाता है । एक शिक्षित स्विस-जर्मन व्यक्ति इस अर्थ में द्विभाषी है कि वह स्थानिक-बोली और उससे अत्यधिक भिन्न मानक-जर्मन दोनों बोलता है । संयुक्तराष्ट्र में सुशिक्षित आप्रवासी प्रायः अपने बच्चों को द्विभाषी बनाने में सफल होते हैं । इस विकास से विभिन्न स्थिति कम सुविधा प्राप्त वर्गों में है जहां भाषा परिवर्तन होता है । इन सभी स्थितियों में दोनों भाषाओं का द्विभाषी के जीवन में प्रत्यक्षतः विभिन्न महत्त्व है । प्रायः एक भाषा गृह-भाषा (home-language) होती है जबकि दूसरे का क्षेत्र विस्तृततर होता है; किन्तु विपरीत भी होता है । कलाकारों और वैज्ञानिकों के बीच द्विभाषियों की बहुलता बच्चे के सामान्य विकास पर द्विभाषिकता के अच्छे प्रभाव को सूचित करती है । इसके विपरीत, इससे केवल यह सिद्ध हो सकता है कि द्विभाषिकता सामान्यतया अनुकूल शिशुकालीन पर्यावरणों से उत्पन्न होती है ।

———

अध्याय 4

संसार की भाषाएँ

4.1 आजकल बोली जाने वाली भाषाओं में से कठिनता से ही थोड़ी भाषाएँ भाषा-विज्ञानविदों को सन्तोषपूर्वक और भलीभांति विदित हैं। बहुत-सी भाषाओं के सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाएँ अपर्याप्त हैं और बहुतों के सम्बन्ध में तो कुछ भी मालूम नहीं है। कुछ आधुनिक भाषाओं के और कुछ प्रलुप्त (अब न बोली जाने वाली) भाषाओं के प्राचीन रूप हमें लिखित सामग्री से ज्ञात हैं किन्तु इन सामग्रियों से उस अतीतकाल के भाषिक-रूपों का अत्यल्प मात्रा में ही ज्ञान मिलता है। कुछ प्रलुप्त भाषाएँ नामभर के अभिलेखों से, जैसे कुछ व्यक्तिवाचक नाम आदि से, विदित हैं, अन्य बहुत-सी केवल उन के बोलने वालों के नाम से विदित हैं, किन्तु निस्सन्देह अति विशाल संख्या में भाषाएँ बिना किसी अवशिष्ट-चिन्हों के लुप्त हो चुकी हैं। आजकल बोली जाने वाली भाषाओं में से अनेक, विशेषतः अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका में, बिना आलेखबद्ध अस्तित्वविहीन हो जाएँगी।

अपने ज्ञान की अपर्याप्तता के कारण अनेक भाषाओं के बीच सम्भाव्य सम्बन्ध का निर्धारण असम्भव हो गया है। सामान्यतया अल्पविदित भाषाओं के साथ विद्यार्थी अपर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर ही सम्बन्ध स्थापित कर बैठते हैं। भाषाओं में पारस्परिक सम्बन्ध से हमारा तात्पर्य निस्सन्देह समानता से होता है और समानता की व्याख्या इसी धारणा पर होती है कि ये विवेच्य भाषाएँ एक पुरातन भाषा के ही विविध रूप हैं। ऐसी समानताएँ अध्याय 1 में उल्लिखित ध्वन्यात्मक-अनुरूपताओं द्वारा प्रदर्शित होती हैं और ये अनुरूपताएँ केवल विस्तृत और यथार्थ सूचना-सामग्री के आधार पर निर्धारित की जा सकती हैं। भाषाएँ जितनी ही अल्पमात्रा में विदित होती हैं और विद्यार्थी जितना ही कम निपुण होता है, पारस्परिक सम्बन्ध की उतनी ही अधिक मिथ्या धारणा स्थापित करने की सम्भावना होती है। यहाँ तक कि नितान्त पक्के निर्णय भी सूक्ष्म समीक्षा के बाद अपर्याप्त साक्ष्यों पर स्थापित निकलते हैं।

4.2 अंग्रेजी के कदाचित् उत्तरी-चीनी को छोड़कर अन्य सभी भाषाओं की अपेक्षा अधिक नैसर्गिक वक्ता हैं। यदि हम विदेशी वक्ताओं पर भी ध्यान दें तो अंग्रेजी सर्वाधिक प्रचलित भाषा है। सन् 1920 में अंग्रेजी के नैसर्गिक-

वक्ताओं की संख्या 17 करोड़ अनुमानित की गई थी। प्रायः ये सभी वक्ता मानक अथवा उप-मानक अंग्रेजी प्रयुक्त करते हैं। स्थानिक बोलियाँ अल्प मात्रा में हैं और अधिकतर परस्पर सम्बोध्य हैं।

अंग्रेजी निर्भ्रान्ततया अन्य जर्मनवर्गीय भाषाओं से सम्बद्ध है किन्तु साथ-ही-साथ उन सभी से स्पष्टतया भिन्न है। इतिहास से मालूम होता है कि यह ब्रिटेन में हमलावरों की भाषा के रूप में आई। ये हमलावर आंग्ल, सैक्सन, और जूट लोग थे जिन्होंने ईसा की पाँचवीं सदी में ब्रिटेन-द्वीप को जीता था। अंग्रेजी का उत्तरी समुद्र के महाद्वीपीय तटों पर बोली जाने वाली जर्मनीय बोलियों से स्पष्ट वैभिन्य प्रायः डेढ़ हजार वर्षों के पार्थक्य के कारण हैं। अंग्रेजी के पुरातन आलेख जोकि आठवीं अथवा नवीं सदी के हैं इस तथ्य की पुष्टि करते हैं क्योंकि उनकी भाषा तत्कालीन महाद्वीपीय जर्मनवर्गीय बोलियों के प्राचीन आलेखों से बहुत मिलती है। एक बोली-प्रदेश प्रवासन से किस प्रकार विभाजित होती है इसका एक आदर्श उदाहरण अंग्रेजी का विपाटन है।

यह समानता अंग्रेजी और फ्रीज़ी के बीच घनिष्ठतम है। फ्रीज़ी बोलियाँ उत्तरी समुद्र के तटों और तटवर्तीय द्वीपों पर बसे प्रायः 350.000 व्यक्तियों द्वारा बोली जाती हैं। यह समानता अत्यन्त स्पष्ट रूप से प्राचीन फ्रीज़ी ग्रन्थों में मिलती हैं जो 13वीं सदी के उत्तरार्ध के हैं। हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि अंग्रेजी उस इंगलिश-फ्रीज़ी (Anglo-Frisian) (इंग्विओनिक (Ingweonic) बोली प्रदेश की एक शाखा है जो कि ब्रिटेन में प्रवासन के पूर्व पर्याप्त विस्तृत रूप से फैला हुआ था।

फ्रीज़ी को छोड़ देने पर यूरोप के (स्कैंडिनेविया के अतिरिक्त) मुख्य भूभाग जर्मनवर्गीय-भाषाई प्रदेश में कोई सुस्पष्ट विभाजन नहीं मिलता है। विभाजन-सी एक वस्तु अवश्य है। वह है जर्मनी के बीच से पूर्व से पश्चिम तक जाती हुई समभाष-रेखाओं का घना बन्डल। इस बन्डल के उत्तर में hope, bite, make जैसे शब्दों में p, t, k बोला जाता है किन्तु दक्षिण में मानक-जर्मन जैसे hoffen, beiszen, machen शब्दों में f, s, kh बोला जाता है। उत्तरी प्रतिरूप की भाषा निम्न जर्मन (लोउ जर्मन) (Low German) के नाम से और दक्षिणी प्रतिरूप की भाषा उच्च (हाई जर्मन) (High German) के नाम से प्रसिद्ध है। चूंकि विभिन्न समभाष-रेखाएँ बिल्कुल एक-दूसरे पर समारोपित नहीं हैं अतएव अन्तर तभी स्पष्टतया अंकित किया जा सकता है जब हम कुछ यादृच्छिक परिभाषा दें। यह अन्तर प्राचीनतम उपलब्ध आलेखों में भी, जो अंग्रेजी में उपलब्ध प्राचीनतम आलेखों के समकालीन हैं, मिलता है। अनेक भाँति के साक्ष्यों

के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दक्षिणी प्रतिरूप में वैभिन्य उन परिवर्तनों के कारण है जो पाँचवीं अथवा छठी ईसवी में दक्षिण में हुए थे। इंग्लिश-फ्रीज़ी में अन्तर करने के लिए महाद्वीपीय पश्चिमी जर्मन (Continental West Germanic) नाम से प्रसिद्ध बोलियों का मध्ययुग में वेग से पूर्व में विस्तार हुआ था। मुख्य क्षेत्र के पूर्व अथवा दक्षिण-पूर्व में कुछ भाषाई-द्वीप, विशेषतया उच्च जर्मन प्रतिरूप के, विद्यमान हैं, जैसे, पोलैण्ड और रूस में यिडिश (Yiddish)। महाद्वीपीय पश्चिम जर्मन बोलियाँ प्रायः 10 करोड़ व्यक्तियों से बोली जाती हैं। इनमें दो मानकभाषाएँ विकसित हुई हैं–डच-फ्लेमी (Dutch-Flemish) और आधुनिक-उच्च जर्मन (New High German)। डच-फ्लेमी बेल्जियम और नीदरलैण्ड में प्रयुक्त होती है और निम्न जर्मन प्रतिरूप की पश्चिमी तटीय बोलियों पर आधारित है। आधुनिक उच्च जर्मन के मूल में उस क्षेत्र की पूर्वी केन्द्रीय बोलियाँ थीं जो मध्य युग में विस्तार से उपलब्ध हुआ था।

इंग्लिश-फ्रीज़ी और महाद्वीपीय पश्चिम जर्मन भाषाएँ परस्पर पर्याप्त रूप से घनिष्ठतया सम्बद्ध हैं और उन्हें, स्कैंडिनेवी (Scandinavian) (उत्तरी जर्मनवर्गीय) वर्ग के व्यतिरेक में, पश्चिमी जर्मन-वर्गीय (West Germanic) इकाई के रूप में देखा जाता है। स्कैंडिनेवी वर्ग में, तद्वर्गीय अन्य भाषाओं से आइसलैंडी (Icelandic) स्पष्टतया भिन्न है क्योंकि हजारों वर्ष पूर्व पश्चिमी नार्वे के लोग आइसलैंड में बसे थे। आइसलैंडी प्रायः एक लाख व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है। फ़ैरो द्वीप (Faroese Islands) की भाषा आइसलैंडी से घनिष्ठतया सम्बद्ध है और उसके वक्ता प्रायः 23,000 हैं। शेष क्षेत्र में––डेन्मार्क, नार्वे, स्वेडन, गाट्लैंड और फिनलैंड के तट को कुछ अंश में––कोई विशेष भेद नहीं है और इसके प्रायः $1\frac{1}{2}$ करोड़ वक्ता हैं। उत्तरी जर्मन-वर्गीय भाषा के प्राचीनतम नमूने अभिलेखों के रूप में हैं जिनमें से कुछ चौथी सदी ईसवी से प्रारंभ हो गए हैं। प्राचीनतम हस्तलिखित ग्रन्थ बारहवीं सदी के हैं किन्तु ग्रन्थ की भाषा, विशेषतया कुछ आइसलैंडी साहित्य में, कुछ सदी और पुरानी होगी। आजकल यहां की मानक-भाषाएँ हैं—आइसलैंडी, डैनी, डैनी-नार्वेजी, नार्वेजी, लैण्ड्स्माल और स्वेडी।

हमारे पास कुछ ऐसी जर्मनवर्गीय भाषाओं की सूचना है जो अब नहीं बोली जाती हैं, जैसे, गॉथ, वन्डाल, बुरगैन्डी, और लोम्बार्ड लोगों की बोलियाँ। चौथी सदी ईसवीय में विशप उल्फिला (Bishop Ulfila) द्वारा विसिगॉथ लोगों की गॉथी (Gothic) में किये बाईबल के अनुवाद का कुछ अंश छठी सदी के हस्तलिखित ग्रन्थों में, विशेषतया सिल्वर कोडेक्स (Silver Codex)

में, सुरक्षित है। लोम्बार्ड की भाषा पश्चिमी जर्मनवर्गीय प्रतीक होती है किन्तु गॉथी सहित अन्य स्कैंडीनेवी से अधिक मिलती है और प्रायः पूर्वी-जर्मनवर्गीय (East Germanic) भाषा मानी जाती हैं। पूर्वी जर्मनी के निवासियों ने कदाचित् अपनी भाषा को क्रिमिया तथा काले सागर के आसपास अठारहवीं सदी तक बनाए रक्खा।

अभी तक उल्लिखित सभी भाषाएँ अन्य भाषाओं के व्यतिरेक में परस्पर घनिष्ठतया सम्बद्ध रही हैं और तदनुसार सभी मिलकर भाषाओं का जर्मनवर्गीय (Germanic) परिवार बनाती हैं। ये सब उस एक अकेली प्रागैतिहासिक भाषा के आधुनिक विकसित रूप हैं, जिसे आदिम-जर्मनवर्गीय भाषा (§ 1.6) कहा जाता है।

4.3 जर्मनवर्गीय परिवार की यूरोप और एशिया के कुछ अन्य भाषाओं से और भाषापरिवारों से सजातीयता केवल मिथ्या और ऊपरी नहीं है बल्कि पिछली सदी की खोजों से सुस्थापित है। ये सब भाषाएँ मिलकर इण्डो-यूरोपियन (भारत-यूरोपीय) Indo-European) (आर्य) परिवार बनाती हैं।

जर्मनवर्गीय भाषाओं के पश्चिम में हमें आजकल केल्टी (Celtic) परिवार के अवशेष मिलते हैं। हम आठवीं सदी ईसवीय से हस्तलिखित साहित्य द्वारा आइरी (Irish) भाषा से परिचित हैं, कुछ शिलालेख इससे भी कुछ पुराने हैं। आइरी के प्रायः 4 लाख वक्ता हैं और उसकी एक शाखा स्काच गैली (Scotch Gaelic) के प्रायः 1½ लाख वक्ता हैं, मैंक्स (Manx) के तो बोलनेवाले कुछ एकाध सौ व्यक्ति ही हैं और वह भी घर में इसे अंग्रेजी के अतिरिक्त बोलते हैं। केल्टी परिवार की दूसरी शाखा के अन्तर्गत वेल्श (Welsh) और ब्रीटन (Breton) भाषाएँ आती हैं जिनके प्रत्येक वक्ता प्रायः 10 लाख हैं और जो आठवीं सदी से लिखित अभिलेखों द्वारा विदित हैं। ब्रीटन फ्रांस के उत्तर-पश्चिमी तट पर बोली जाती हैं और वहाँ वह कदाचित् चौथी सदी में ब्रिटेन से लाई गई थी। इस शाखा की एक अन्य भाषा कार्नी (Cornish), जिसके प्राचीनतम लेख नवीं सदी से मिलते हैं, 1800 ईसवीय के आसपास विलुप्त हो गई। स्थान नामों के साक्ष्य और इतिहास से यह पता चलता है कि प्राचीन काल में केल्टी-परिवार की भाषाएँ यूरोप के एक बड़े भूभाग पर बोली जाती थीं जहां आजकल बोहेमिया, आस्ट्रिया, दक्षिण जर्मनी, उत्तरी इटली और फ्रांस है। इन क्षेत्रों में यह रोमन-विजयों के कारण लैटिन द्वारा, और ईसा के प्रारम्भिक सदियों में हुए विशाल पैमाने पर प्रवासनों के कारण जर्मनवर्गीय भाषाओं द्वारा विस्थापित हुई। ईसापूर्व पहली सदी के आसपास से गॉल (Gaul) की प्राचीन केल्टी के कुछ विरल अभिलेख हमें उपलब्ध हैं।

जर्मनवर्गीय-भाषाओं के पूर्वोत्तर में बाल्टिक (Baltic) परिवार की भाषाएँ हैं। इस परिवार की दो अभी तक विद्यमान भाषाएँ लिथुएनी '(Lithuanian) कोई 25 लाख व्यक्तियों द्वारा और लेट्टी (Lettish) कोई 15 लाख व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है। इनमें सोलहवीं सदी से अभिलेख उपलब्ध हैं और लिथुएनिआ और लेटिविया, इन दो देशों के राजनैतिक स्वातन्त्र्य के पश्चात् ये दोनों बोलीवर्ग सुदृढ़ मानक-भाषा के रूप में विकसित हो रहे हैं। इस वर्ग की एक तीसरी भाषा, प्राचीन प्रशियाई (Old Prussian) पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदी के कुछ अभिलेखों द्वारा हम लोगों को विदित है किन्तु सत्रहवीं सदी में यह एक विलुप्त भाषा बन गई।

बाल्टिक भाषाओं के दक्षिण में और जर्मनवर्गीय भाषाओं के दक्षिण पूर्व में हमें एक विशाल भाषा परिवार मिलता है, वह है स्लावी (Slavic) परिवार। पश्चिमी स्लावी शाखा की अनेक भाषाएँ मध्ययुग में जर्मनभाषा के पूर्वीय विस्तार से दब चुकी हैं। इनमें से एक लुसेशन (Lusation) (वेन्डी Wendish सोर्बी Sorbian) ऊपरी सेक्सोनी में प्रायः 30 हजार व्यक्तियों वाले एक भाषाद्वीप के रूप में अब भी विद्यमान है। एक दूसरी पोलाबी (Polabian) अठारहवीं सदी तक विद्यमान थी और अब इसके कुछ अभिलेख-मात्र रह गए हैं। शेष सब बोलियाँ समाप्त हो चुकी हैं, केवल जर्मनप्रभावित स्थाननामों में अवशिष्ट चिन्हों के रूप में वे रह गई हैं। संघर्ष के परिणामस्वरूप. इन दो विशाल और अब तक विद्यमान पश्चिमी स्लावी बोली क्षेत्रों की विचित्र भौगोलिक स्थिति है—मुख्य पोली (Polish) क्षेत्र के उत्तर में विस्तुला के साथ-साथ डेन्ज़िग की ओर भाषाद्वीपों की एक तंग पट्टी मिलती है और पश्चिम में बोहेमी (Bohemian) एक प्रायद्वीप के समान जर्मनक्षेत्र में घुस पड़ी है। चौदहवीं सदी से अभिलेखों द्वारा विदित पोली प्रायः 2 करोड़ लोगों से बोली जाती है। बोहेमी क्षेत्र में जो मानकभाषाओं के आधार पर चेक और स्लोवक दो भागों में बँटा है, प्रायः 1.4 करोड़ वक्ता हैं, प्राचीनतम अभिलेख तेरहवीं सदी से मिलते हैं। पूर्वी स्लावी (East Slavic) में एक बहुत बड़ा बोली-क्षेत्र है—रूसी (Russian) इसके प्रायः 11 करोड़ वक्ता हैं और जिसके अभिलेख बारहवीं सदी से हैं। दक्षिणी स्लावी (South Slavic) शाखा अन्य शाखाओं से हंगेरी (Hungarian) भाषा द्वारा, जो इनसे पूर्णतया असम्बद्ध है, पृथक् की जाती है इसके अन्तर्गत बल्गेरी (Bulgarian) जिसके प्रायः 50 लाख वक्ता हैं सर्बोक्रोटी (Serbo-Croatian) जिसके प्रायः 1 करोड़ वक्ता हैं और स्लोवी (Slovene) जिसके कोई 15 लाख वक्ता हैं—

ये भाषाएँ आती है। स्लावी परिवार में सबसे पुराने अभिलेख नवीं सदी के प्राचीन बल्गेरी के अभिलेख हैं जो नवीं सदी के हैं, यद्यपि हस्तलिखित रूप में दसवीं सदी में आबद्ध हुए थे, और प्राचीन स्लोवी का एक दसवीं सदी का विरल ग्रन्थ है। कुछ विद्वान् बाल्टिक और स्लावी वर्गों में अपेक्षाकृत घनिष्ठ सादृश्य मानते हैं और उन दोनों को भारत-यूरोपीय परिवार में सम्मिलित रूप से बाल्टो-स्लावी (Balto-Slavic) उपवर्ग पुकारते हैं।

जर्मनवर्गीय भाषाओं के दक्षिण में रोमानी (Romance) भाषाएं बोली जाती हैं—पुर्तगाली—स्पेनी—कैटलन (Portuguese-Spanish-Catalan) क्षेत्र (जिसमें ये तीन मानक भाषाएँ हैं) में 10 करोड़, फ्रेंच (French) क्षेत्र में 4½ करोड़ इतालवी (Italian) क्षेत्र में 4 करोड़, और लिडीन (Ladin) (Rhaeto-Romanic रीटोरोमानी) स्विट्ज़रलैण्ड में कोई 16 हज़ार हैं। एक अन्य वर्ग डैल्मेशन (Dalmatian) अब विलुप्त है। इसकी एक बोली रागुसन (Ragusan) पन्द्रहवीं सदी में और दूसरी बोली वेलिओते (Veliote) उन्नीसवीं सदी में आकर समाप्त हुई। काले सागर के पास पूर्व में रूमानियाई (Roumanian) भाषा है जिसके वक्ता प्राय: 1.4 करोड़ है। यह भाषा (पश्चिमी बोलियों से)दक्षिणी स्लावी के अन्त:प्रवेश के कारण पृथक् हो चुकी है। निश्चयत: ये सब रोमानी भाषाएँ लैटिन (Latin) भाषा के वर्तमान रूप हैं। लैटिन रोमनगर की एक प्राचीन बोली थी और इसके प्राचीनतम अभिलेख 300 ईसापूर्व के आसपास के हैं। मध्ययुग और आधुनिक युग में लैटिन केवल लेखन में विद्वत्-लेखों का कृत्रिम-माध्यम मात्र रह गई है। प्राचीन उत्कीर्ण लेखों से पता चलता है कि इटली में लैटिन की कुछ समकालीन बोलियाँ भी थीं जिनमें ओस्की (Oscan) और उम्ब्री (Umbrian) प्रसिद्ध हैं। ये और अन्य बोलियां जो रोमन विस्तार के कारण लैटिन से विस्थापित हो चुकी थीं, लैटिन भाषा के साथ मिलकर एक भाषा परिवार बनाती हैं जिसे इटाली (Italic) परिवार कहते हैं। कुछ विद्वान् इटाली और केल्टी में विशेष सादृश्य पाते हैं और इस कारण भारतयूरोपीय परिवार में इटाली-कैल्टी (Italo-Caltic) उपवर्ग की स्थापना करते हैं।

एड्रियाटिक के पूर्व में और सर्बोक्रोटी के दक्षिण में अल्बानी (Albanese) क्षेत्र है। सत्रहवीं सदी से अभिलेखों द्वारा विदित यह भाषा प्राय: 15 लाख लोगों से बोली जाती है। यद्यपि पड़ोसी-भाषाओं से आगतशब्दों द्वारा इसका शब्द भण्डार भरा हुआ है तथापि रूपों की न्यष्टि सूचित करती है कि यह भारत-यूरोपीय परिवार की पृथक् शाखा है।

ग्रीक (Greek) भाषा के प्राय: 70 लाख वक्ता हैं। इसकी अनेक स्थानीय बोलियाँ हैं और बहुव्यापक मानक भाषा है। आजकल की सभी बोलियाँ पूर्णतया उस मानक-भाषा (कोइनी Koine) से निकली हैं जो ईसवीय प्रारंभिक सदियों में वहाँ फैली थी, और जिसने प्राचीन काल की स्थानीय और प्रान्तीय बोलियों को विस्थापित कर दिया था। प्राचीन ग्रीक-बोलियों का पता हमें सातवीं सदी ईसा पूर्व से मिलने वाले अनेक आलेखों से या ईसापूर्व चौथी सदी से मिलने वाले कागज पर (papyrus)[1] पर लिखे खण्डित लेखों से या उस विशाल साहित्य से मिलता है जो निश्चयत: बहुत बाद की हस्तलिखित प्रतियों द्वारा उपलब्ध है किन्तु जिसकी प्राचीन तक कृतियां होमर के काव्य, कम-से-कम 800 ईसा पूर्व के हैं।

एशिया माइनर में हमें भारत-यूरोपीय परिवार की एक और शाखा आर्मेनी (Armenian) मिलती है जिसके प्राय: 30-40 लाख वक्ता हैं। आर्मेनी के प्राचीनतम आलेख पाँचवीं सदी ईसवीय से मिलते हैं।

भारत-यूरोपीय परिवार की विशाल एशियाई-शाखा हिन्द-ईरानी (Indo-Iranian) वर्ग के नाम से प्रसिद्ध है। इसके दो उपवर्ग हैं—ईरानी (Iranian) और भारतीय (Indic) (इण्डोआर्य Indo-Aryan)। ये दोनों आजकल बहुत भिन्नहैं किन्तु इनके प्राचीनतम आलेखों में रूपों का इतना अधिक साम्य है कि हम निश्चयत: कह सकते हैं कि ये आदिमहिन्दईरानी मूल-भाषा के दो विकसित रूप हैं।

आधुनिक ईरानी की मुख्य बोलियाँ हैं—फारसी (Persian) (इसकी एक उच्च मान्यता की मानक-भाषा है और 70-80 लाख वक्ताओं द्वारा बोली जाती है), क़ैस्पी (Caspian) वर्ग, और कुर्दी (Kurdish) पूर्व की ओर पामीरी (Pamir) बोलियाँ, अफगान (पश्तो (Pushto) (जिसके 40 लाख वक्ता हैं) और बलूची (Baluchi), और सुदूर पश्चिम में काकेशस में ओसेती (Ossete) है जिसके $2\frac{1}{4}$ लाख वक्ता हैं। ईरानी के प्राचीनतम आलेख प्राचीन फारसी (old Persian) में लिखे महान् सम्राट् डेरिअस (Darius) और उसके वंशजों (छठी से चौथी सदी ईसा पूर्व) के शिलालेख हैं और अवेस्ता (Avestan) में लिखे पारसी-धर्म के पवित्र ग्रन्थ हैं, जिनके प्राचीनतम अंश 600 ईसा पूर्व तक अवश्य रच लिए गए थे, यद्यपि उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियाँ अपेक्षाकृत पर्याप्त हाल की हैं और उनके पाठों में कई गम्भीर लिपिविषयक परिवर्तन-संशोधन हो चुके हैं। बीच की भाषाओं के स्वरूप,

---

1. पेपरिस—श्रीपत्र के डण्ठलों से बना कागज।

पहलवी (Pehlevi) को छोड़कर बहुत कम विदित हैं, किन्तु इस सदी के प्रारम्भ में चीनी-तुर्किस्तान में कुछ हस्तलिखित-खण्ड मिले हैं जिनसे उन अन्य मध्ययुगीन ईरानी भाषाओं का ज्ञान मिला है जिसे हमने पार्थी (Parthian), साग्दी (Sogdian) और शकी (Sakian) बोलियों से अभिज्ञान किया है।

हिन्द-ईरानी की दूसरी उपशाखा भारतीय-आर्य के 23 करोड़ से अधिक वक्ता हैं और भारतवर्ष के बहुत बड़े भूभाग पर व्याप्त है । इसके अन्तर्गत निम्नलिखित महान भाषाएँ प्रमुख रूप से आती हैं--मराठी (1.9 करोड़), गुजराती (1 करोड़), पंजाबी (1.6 करोड़), राजस्थानी (1.3 करोड़), पश्चिमी हिन्दी (3.8 करोड़), पूर्वी हिन्दी (2.5 करोड़), उड़िया (1 करोड़), बिहारी (3.6 करोड़), बंगाली (5 करोड़) । जिप्सी लोगों की बोली (जिप्सी अथवा रोमनी Romani) उत्तर पश्चिम भारत में प्रचलित पैशाची प्रदेश की निष्क्रमित शाखा है। भारतीय आर्य भाषाओं के सबसे पुराने लिखित आलेख राजा अशोक के शिलालेख हैं जिनकी तिथि तीसरी सदी ईसापूर्व है। ये भारतीय आर्य की कई बोलियों में हैं जो प्राकृत (मध्य भारतीय आर्य) के नाम से प्रसिद्ध है। प्राकृत अवस्था की भारतीय आर्य भाषाओं का स्वरूप हमें परकालीन अभिलेखों द्वारा और हस्तलिखित ग्रन्थों द्वारा मिलता है, इनमें धर्म ग्रन्थों की भाषा पालि भी है। भारतीय बोलियों का एक पूर्वतर रूप, संस्कृत (अथवा प्राचीन भारतीय आर्य) हमें आश्चर्य रूप से कुछ बाद के आलेखों से मिलता है । इस प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के प्राचीनतम ग्रंथ वेद हैं, और इसके प्राचीनतम संहिता ऋग्वेद के प्राचीनतम अंश की मूल रचना 1200 ईसापूर्व हो चुकी थी। ये वैदिक सहिताएँ ब्राह्मण-धर्म की धार्मिक पुस्तकें हैं। एक दूसरी और कुछ भिन्न प्राचीन भारतीय आर्य की भाषा 'संस्कृत' (वैदिक संस्कृत के व्यतिरेक में लौकिक संस्कृत) है जिस का रूप हमें ब्राह्मण-धर्म के गद्य-ग्रन्थ "ब्राह्मण", पाणिनि की व्याकरण "अष्टाध्यायी" और उसके सहायक ग्रंथों से मिलता है। यह संस्कृत भाषा चौथी सदी ईसापूर्व कहीं पश्चिमोत्तर भारत में उच्च वर्ग द्वारा बोली जाती थी। एक मानक-भाषा के रूप में और बाद में साहित्यिक और विद्वद्वर्गीय-भाषा के रूप में यह भाषा शनैः शनै पूरे ब्राह्मण भारत में राजभाषा के रूप में व्यवहृत होने लगी थी। शिलालेखों अथवा ताम्रलेखों में यह सर्वप्रथम 150 ई० पूर्व प्रयुक्त हुई थी और कुछ सदियों बाद इसने प्राकृत-बोलियों के प्रयोग को पूर्णतया विस्थापित कर दिया था। तब से आज तक, पाणिनि व्याकरण के नियमों के अनुसार लिखित यह भाषा, कलात्मक और विद्वद्वर्गीय साहित्य के विशाल कलेवर का माध्यम बनी हुई है।

अब तक उल्लिखित इन शाखाओं के अतिरिक्त, जो सभी आज तक बोली जा रही है, विभिन्न समयों में आदिम भारतयूरोपीय की कुछ शाखाएँ

अवश्य रही होंगी जो अब अप्राप्य हैं। इन विलुप्त शाखाओं में से कुछ अब तक सुरक्षित शाखाओं से घनिष्ठतया सम्बद्ध रही होंगी, कुछ बीच की स्थिति में रही होंगी और कुछ बिल्कुल ही भिन्न रही होंगी। इन भाषाओं के सम्बन्ध में हमें बहुत ही कम ज्ञान है। एड्रियाटिक के चारों ओर इलिरी (Illyrian) प्राचीन काल में बोली जाती थी, यह केवल कुछ व्यक्तिवाचक नामों में सुरक्षित हैं, वेनेटी (Venetic) चौथी से दूसरी सदी ईसा पूर्व के कुछ अभिलेखों से विदित है, मिसेपी (Messapian) दक्षिणी इटली में 450 से 150 ईसापूर्व के अभिलेखों से विदित है। बाल्कन प्रायद्वीप के पश्चिमी भाग में थ्रेसी (Thracian) के अवशेष कुछ नामों में, कुछ शब्दों में और 400 ई० पू० के आसपास के एक अकेले अभिलेख में मिले हैं। इसका घनिष्ठ सम्बन्ध एशिया-माइनर की फ्रिज़ी (Phrygian) से रहा है जो कि आठवीं सदी ईसापूर्व के अभिलेखों से और फिर जाकर ईसवीय संवत् की प्रारम्भिक सदियों के अभिलेखों से विदित है। मैसूडोनी (Macedonian) का सम्बन्ध ग्रीक से घनिष्ठ था। लिग्युरी (Ligurian) (रिवीएर के आस-पास) और सिसिली (Sicilian) (सिसिली में) इटाली के समीप थी। मध्य एशिया की तोखारी (Tocharian) हमें चीनी तुर्किस्तान में उपलब्ध छठी सदी ईसवीय की खण्डित हस्तलिखित प्रतियों के माध्यम से विदित है।

किन्तु आदिम भारतयूरोपीय स्वयं अन्य भाषाओं से सम्बद्ध रही होगी। एक भाषापरिवार को छोड़कर वे सब या तो विलुप्त हो चुकी हैं या ऐसी परिवर्तित हो चुकी हैं कि उनकी सजातीयता का पता लगाना ही असम्भव है। अपवाद रूप हिट्टाइट (हित्ती) (Hittite) है जो एशियामाइनर की प्राचीन भाषा थी और जो 1400 ईसा पूर्व के आस-पास के कीलाक्षरीय अभिलेखों से विदित है। यह सम्बन्ध यद्यपि दूर का है फिर भी इसकी सहायता से आदिम भारत-यूरोपीय का प्रागितिहास पुनर्गठित हो सकता है और सम्भावित आदिम इण्डो-हिट्टाइट मूल भाषा के कुल अभिलक्षण पता लगाए जा सकते हैं।

4.4 चूंकि भारतयूरोपीय परिवार की विभिन्न भाषाएँ आजकल एक बड़े विशाल भूखण्ड पर फैली हुई हैं, उन्होंने उस क्षेत्र में कभी बोली जाने वाली अन्य असम्बद्ध भाषाओं को अवश्यमेव विस्थापित किया होगा। ऐसी एक भाषा के अवशेषरूप बैस्क (Basque) है जो पश्चिमी पेरीनीज़ में कोई 50 हज़ार लोगों से बोली जाती है। बैस्क के प्राचीनतम नमूने सोलहवीं सदी से उपलब्ध हैं। यह भाषा उस प्राचीन इबेरी (Iberian) भाषा का नमूना प्रचलित रूप है जो किसी समय पूरे दक्षिणी फ्रांस और स्पेन में बोली जाती थी और जो अभिलेखों और स्थाननामों में सुरक्षित है।

ऐसी ही अन्य विलुप्त भाषाओं के सम्बन्ध में बहुत-सी कम सूचना हमें प्राप्त है। इटली में इत्रुस्कन (Etruscan) थी। यह लैटिन से नितान्त असम्बद्ध पड़ोसी भाषा थी किन्तु लैटिन-भाषियों पर इसका शक्तिशाली प्रभाव था। यह अनेक अभिलेखों में मिलती है जो छठी सदी ईसापूर्व से मिलने लगते हैं। ये ग्रीक वर्णमाला में है और पढ़े तो जा सकते हैं किन्तु समझे नहीं जा सकते हैं। प्राचीन रीटी (Rhaetian) से पता लगता है कि वह इत्रुस्कन परिवार की थी। 600 ईसा पूर्व के आसपास का अभिलेख जो लेम्नोस द्वीप पर मिला था और एशिया माइनर में सार्डिस से अधिकांश प्राप्त चौथी और तीसरी सदी ईसा-पूर्व के अभिलेखों से प्रकट होता है कि इत्रुस्कन का सम्बन्ध लेम्नी (Lemmian) और लिडी (Lydian) से था जिनमें केवल लिडी के नमूने व्याख्यात हुए हैं।

प्राचीन क्रीट (Crete) से हमें ग्रीक वर्णमाला में लिखे अनेक अभिलेख मिले हैं जिसकी भाषा अविदित है। इनमें दो अभिलेख चौथी सदी ईसा पूर्व के हैं और एक, जो प्राइसोस् नगर से मिला है कुछ पुराना है। इससे कहीं पूर्व के, प्रायः 1500 ईसा पूर्व के, हमें कुछ क्रीटी अभिलेख मिले हैं जो अंशतः चित्रलिपि में और अंशतः उससे व्युत्पन्न कुछ सरलीकृत लिपि में लिखे हुए हैं।

एशिया माइनर में हमें लिशी (Lycian) के प्रचुर मात्रा में अभिलेख मिले हैं जो पाँचवीं और चौथी ईसा पूर्व के हैं। वहीं कैरी (Carian) के भी कुछ अभिलेख मिले हैं जो सातवीं सदी ईसा पूर्व के हैं। प्रथम ग्रीक वर्णमाला में हैं और अंशतः समझे जा चुके हैं, द्वितीय की भी लिपि उसी भाँति है किन्तु उन्हें अभी तक समझा नहीं गया है। सीरिया और उससे जुड़े हुए एशियामाईनर के भूभाग में चित्रलिपि में प्रचुरमात्रा में अभिलेख मिले हैं। ये 1000 से 550 ईसा पूर्व के बीच के हैं और हिट्टाइट भाषा के माने गए हैं किन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं है कि ये बिना समझे गए अभिलेख उन्हीं लोगों द्वारा लिखे गए हैं जिन्होंने हमारे हिट्टाईट के कीलाक्षरी आलेख (§ 4.3) लिखे हैं।

समीप-पूर्व से मिले पत्थर और मिट्टी के कीलाक्षरी अभिलेख द्वारा प्राचीन समय के अनेक अधुना-विलुप्त भाषाओं से हम परिचित हुए हैं—मेसोपोटामिया की सुमेरी (Sumerian) (4000 ईसा पूर्व से), फारस की इलमाई (Elamitic) (2000 ईसा पूर्व से), मेसोपोटामिया के पूर्व के प्रदेश के कसी (Cossean) के थोड़े से अभिलेख, और वहीं की मितैनी (Mitanni) भाषा (1400 ईसा पूर्व)। उसी क्षेत्र में वान-झील के पास वान की भाषा नवीं अथवा आठवीं सदी ईसा पूर्व की थी और एशिया माईनर के हिट्टाइट साम्राज्य के भीतर अनेक अव्याख्यात भाषाओं के नमूने मिले हैं। इस प्रकार के

आलेखों में विद्यमान अन्य भाषाओं में प्राचीन फारसी और हिट्टाइट (§ 4.3) को उल्लेख कर चुके हैं और अगले अनुच्छेद में ही सामी परिवार की एक भाषा बेबिलोनी असीरी (Babylonian-Assyrian) के सम्बन्ध में कहेंगे ।

4.5 भारत-यूरोपीय के अगल-बगल के आधुनिक भाषा-परिवारों में कुछेक उससे दूर से सम्बद्ध हो सकते हैं--सामी-हामी (Semitic-Hamitic) और फ़ीनी-उग्री (Finno-Ugrian) परिवार भारत-यूरोपीय से कुछ अंश में समान है--किन्तु बड़े प्रयत्न के बाद भी कोई निर्णायिक साक्ष्य अभी तक नहीं मिल पाया है ।

सामी-हामी परिवार की चार शाखाएँ हैं जो एक-दूसरे से दूरतः सम्बद्ध हैं--सामी (Semitic), मिस्री (Egyptian), बर्बर (Berber) और कुशी (Cushite) ।

सामी परिवार की दो शाखाएँ हैं । पूर्वी शाखा में बेबिलोनी-असीरी भाषा आती है जो अब विलुप्त है और जो हमें प्रायः 2500 ईसा पूर्व के बाद से पत्थर और चिकनी मिट्टी पर कोलाक्षरों से लिखी मिलती हैं । यह भाषा ईसवीय प्रारंभिक सदियों में ऐरमेई (Aramaic) द्वारा विस्थापित हो गई थी । सामी की पश्चिमी शाखा की भी दो उपशाखाएँ हैं--एक उत्तरी और दूसरी दक्षिणी । उत्तरी उपशाखा में कैननी (Canaanite) है जो 1400 ईसा पूर्व के पास तेल्अल्-अमर्ना के पास प्राप्त कीलाक्षरी गुटिकाओं में शब्दावलीमात्र में मिलती हैं और मोआबी (Moabite) है जो नवीं सदी ईसापूर्व में राजा मेष के प्रसिद्ध अभिलेखों में मिलती है । फनीशी (Phoenician), जिससे हम सर्व-प्रथम नवीं सदी ईसापूर्व के अभिलेखों से परिचित हुए न केवल फनीशिया में बोली जाती थी जहाँ वह ईसा संवत् के पूर्व ही विलुप्त हो चुकी थी, बल्कि कार्थेज की फनीशी उपनिवेश में भी बोली जाती थी जहां वह कुछ सदियों बाद तक रही । हिब्रू (Hebrew) भी उसी काल के अभिलेखों से और ओल्ड टेस्टामेन्ट की हस्तलिखित परम्परा से हमें विदित है । ओल्ड टेस्टामेन्ट के प्रारम्भिक अंश 1000 ईसापूर्व रचे जा चुके थे । दूसरी सदी ईसा पूर्व में ऐरमेई से हेब्रू विस्था-पित हुई यद्यपि लेखन में यह पूरे मध्ययुग तक प्रयुक्त होती रही और अभी हाल में इसे कृत्रिमतया ऐरमेई मौखिक भाषा का स्थान देने का प्रयत्न किया जा रहा है । अन्त में, ऐरमेई के अन्तर्गत एक बोलियों का वर्ग आता है जोकि सर्वप्रथम आठवीं सदी ईसा पूर्व के अभिलेखों द्वारा विदित हुआ था । ईसवीय संवत् के ठीक पूर्व की सदियों में विस्तार की भीषण तरंगों में यह ऐरमेई भाषा, ग्रीक की प्रतिस्पर्धा में, पूरे सीरिया और एशिया के एक बड़े भूभाग पर फैल गई थी और

उसने हिब्रू, असीरी आदि अनेक भाषाओं को विस्थापित कर दिया था। कोई एक हजार साल तक (प्रायः 300 ईसा पूर्व से प्रायः 650 ईसवी तक) यह समीप-पूर्व (Near East) की प्रमुख शासकीय और लिखित भाषा बनी रही। लिखित रूप में इसने एशिया की अनेक लेखन-पद्धतियों को प्रभावित किया है। किन्तु यह स्वयं अरबी '(Arabic) के विस्तार से विस्थापित हो गयी और आजकल कोई दो लाख व्यक्तियों से पृथक्-पृथक् क्षेत्र में बोली जाती है। सामी की दक्षिणी शाखा में अनेक जीवित एवं सम्पन्न भाषाएँ हैं। दक्षिणी-अरबी, जो 800 ईसा पूर्व से छठी सदी ईसवी तक के अभिलेखों से विदित है, अब अनेक बोलियों के रूप में अरब के दक्षिणी समुद्रतटवर्ती प्रदेश में और सोकोत्रा के द्वीप में बोली जाती है। अरबी, जिसके प्राचीनतम आलेख 328 ईसवी के अभिलेख हैं, सातवीं सदी ईसवी के मुसलमान अरबों के विजयों के कारण विस्तृत हुई है। यह अब कोई 3.7 करोड़ लोगों से बोली जाती है और इसके अतिरिक्त सदियों से इस्लाम की धार्मिक, साहित्यिक और प्रशासकीय भाषा रही है। अफ्रीका के पूर्वी-तट पर अबीसिनिया प्रदेश में इथिओपी (Ethiopian) भाषा हमें सर्व प्रथम चौथी सदी ईसवी के अभिलेखों द्वारा विदित है और आजकल इस वर्ग की भाषाएँ टिग्रे (Tigre) टिग्रीञ्ञा (Tigriña) और ऐम्हैरी (Amharic) हैं।

सामी-हामी परिवार की मिस्री, बर्बर और कुशी शाखाएँ सामान्यतया एक सामूहिक नाम हामी (Hamitic) भाषाओं से प्रसिद्ध हैं।

मिस्री (Egyptian) हमें 4000 ईसा पूर्व के बीजाक्षरी (गूढ़ाक्षरी) अभिलेखों से विदित है। इस भाषा का परवर्ती रूप, जो काप्टी (Coptic) के नाम से प्रसिद्ध है ईसवी काल के एक हस्तलिखित साहित्य के रूप में मिलता है। मिस्री सत्रहवीं सदी में अरबी से विस्थापित होकर विलुप्त बन चुकी है।

हामी-सामी परिवार की बर्बर शाखा चौथी सदी ईसा पूर्व के लिबियाई (Libyan) भाषा के अभिलेखों द्वारा हमें प्राचीन समय से विदित है। आजकल इस शाखा की त्वारेग (Tuareg) और कबाइल (Kabyle) जैसी विभिन्न भाषाएँ हैं जिन्होंने अपने को उत्तरी अफीका में अरबी द्वारा विस्थापित होने से बचाए रखा है और कोई 60-70 लाख वक्ताओं से बोली जाती हैं।

सामी-हामी की चौथी शाखा मिस्र के दक्षिण में कुशी है। इसके अन्तर्गत अनेक बोलियाँ हैं, जैसे, सामाली (Somali) और गल्ला (Galla)। गल्ला के कोई 80 लाख वक्ता हैं।

4.6 उत्तरी अफ्रीका के अरब और बर्बर प्रदेश के दक्षिण में अनेक भाषाओं की एक चौड़ी पट्टी महाद्वीप में फैली है जिसके पूर्व में इथिओपी और कुशी प्रदेश हैं और पश्चिम में गिनी खाड़ी है। इस विशाल पट्टी की भाषाएँ जो कि अनुमान से कोई 5 करोड़ लोगों से बोली जाती हैं, बहुत ही कम विदित है। कुछ विद्वान केवल अत्यल्प साक्ष्य हर इन्हें परस्पर सम्बन्द्ध मानते हैं, कुछ इन्हें हामी परिवार से सम्बद्ध करते हैं और कुछ बान्टू परिवार से। इस प्रदेश की भाषाएँ जो अधिकतर उल्लेख में आती हैं, ——सेनेगल की वोलॉफ़ (Wolof) और फ़ूल (Ful), गिनी तट की ग्रेबो (Grebo), एवे (Ewe) और यॉरब (Yoruba), मध्यप्रदेश में हाउस (Haussa), और पूर्व में खारतुम के चारों ओर एक बड़े क्षेत्र में नूब (Nuba), उसके दक्षिण में डिन्क (Dinka) और उससे भी दक्षिण में मसाइ (Masai)।

गिनी और सूडानी पट्टी के दक्षिण में बैन्टू (Bantu) परिवार की भाषाएँ हैं जो कि यूरोपवासियों के आक्रमण के पूर्व दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका के अतिरिक्त अफ्रीका में सर्वत्र बोली जाती थीं। बैन्टू परिवार की भाषाएँ जिनके कोई 5 करोड़ वक्ता, हैं अनेकानेक हैं। कुछ अधिक परिचितों में हैं——लुगान्दा (Luganda), स्वाहीली (Swaheli), कैफ़र (Kaffir), ज़ूलू (Zulu) टेबेल (Tebele), सूबीय (Subiya) और हरेरो (Herero)।

दक्षिणपश्चिमी अफ्रीका का वह अंश जहां बैन्टू भाषाएँ नहीं बोली जाती रही हैं यूरोपवासियों के आप्रवास के पूर्व दो असम्बद्ध भाषिक-प्रदेशों में विभक्त था——बुश्मन (Bushman) जिसके कोई 60 हजार वक्ता हैं और हॉटंटाट (Hottentot) जिसके $2\frac{1}{2}$ लाख वक्ता हैं।

4.7 यूरेशिया महाद्वीप की ओर फिर से ध्यान दें तो हम देखेंगे कि इण्डो-यूरोपियन भाषाओं के पूर्व में और स्थाननिरूपण की दृष्टि से उसमें अन्तःप्रविष्ट फीनी-उग्री (Finno-Ugrian) भाषा परिावर है। इस परिवार की छः मुख्य शाखाएँ हैं। प्रथम है फ़ीनी-लैपीनी (Finnish-Lapponic)। नार्वे के उत्तर-भाग में स्वेडन और फिनलैण्ड में कोई 30 हजार व्यक्ति लैपी (Lappish) बोलते हैं। इसी शाखा की दूसरी भाषाएँ एक परस्पर-घनिष्ठ वर्ग बनाती हैं, जिसे फीनी (Finnish) (अथवा बाल्टिक-फीनी (Baltic-Finnish) कहते हैं। इस उपशाखा की सबसे बड़ी भाषा फीनी है। यह सर्वप्रथम तेरहवीं सदी के खण्डित आलेखों में तथा सन् 1544 ई० से मुद्रित पुस्तकों में मिलती है। इसके नैसर्गिक वक्ता प्रायः 30 लाख हैं। एस्थोनी (Esthonian), जिसके पूर्वतम आलेख भी इसी काल के हैं, कोई 10 लाख व्यक्तियों से बोली जाती

हैं। फीनी और एस्थोनी, दोनों की मानक-भाषाएँ हैं, जो क्रमशः फिनलैण्ड और एस्थोनिया गणतन्त्रों की शासकीय भाषा है। बाल्टिक उपशाखा की अन्य भाषाएँ हैं—करीली (Carelian), ओलोनेत्शी (Olonetsian), लूडी (Ludian), वेप्सी (Vepsian), लिवोनी (Livonian), इंग्री (Ingrian) और वोती (Votian), ये सब बहुत छोटी-छोटी भाषाएँ हैं और मृतप्राय हैं। फीनी-उग्री की अगली चार शाखाएँ यूरोपीय और एशियाई रूस के भूभाग में अवशिष्ट-अंशों में मिलती हैं। ये हैं— (मार्द्विन (Mordvine) (10 लाख वक्ता), चेरमिस (Cheremiss) (3.75.C00 वक्ता), पर्मी (Permian) जिसमें दो उपशाखाएँ वोत ऐक् (Votyak) (4,20,000 वक्ता) और ज़िरी (Zyrian) (2.58.000 वक्ता हैं) और जिसकी ज़िरी उपशाखा में चौदहवीं सदी से अभिलेख मिलते, हैं ऑव-उग्री (Ob-Ugrian) जिसकी दो उपशाखाएँ हैं—आस्तीऐक (Ostyak) (18,0C0 वक्ता) और वोगुल (Vogule) (5 000 ववता)। फीनी-उग्री की छठी शाखा हंगेरी (Hungarian) है जो आक्रान्ताओं द्वारा नवीं सदी में मध्य यूरोप में लाई गई थी। लैटिन आलेखों में इने-गिने शब्दों के अतिरिक्त हंगरी के प्राचीनतम अभिलेख तेरहवीं सदी से मिलते हैं। इसकी एक समृद्ध मानकभाषा है और अनेक स्थानीय बोलियाँ हैं और इन सबके कोई 1 करोड़ नैसर्गिक वक्ता हैं।

ओस्त्यक प्रदेश के पूर्व में, येनेसी नदी के साथ-साथ कोई 18,000 व्यक्ति समोएदी (Samoyede) परिवार की भाषाएँ बोलते हैं। ये भाषाएँ एक विस्तृत-क्षेत्र में फैली हुई हैं और इनमें बड़ी स्थानिक विभिन्नताएँ हैं। कुछ अन्वेषक समोयदी और फ़ीनी-उग्री को परस्पर सम्बद्ध मानते हैं।

4.8 तुर्की (Turkish) (तुर्कतातारी Turco-Tartar अथवा अल्ताई Altaic) भाषापरिवार एक विशाल मुख्य भूभाग में फैला हुआ है। एशिया माईनर से जो मध्ययुग के अन्त में ओटोमन तुर्कों से जीता गया था, येनीसी नदी के ठीक ऊपर के भाग तक यह फैला हुआ है। ये भाषाएँ कुछ विभेदीकरणों के साथ कोई 3.9 करोड़ लोगों से बोली जाती रही हैं। इनमें से अधिक परिचित भाषाएँ हैं—तुर्की, तातारी, किरगीज़ (Kirgiz), उज़्बेक (Uzbeg), एज़रबाइ ज़ानी (Azerbaijani)। प्राचीनतम आलेख साइबेरिया के अभिलेख हैं जो आठवीं सदी ईसवी से मिलते हैं। इसके अतिरिक्त ग्यारहवीं सदी ईसवी की एक तुर्की-अरबी शब्दसूची और चौदहवीं सदी ईसवी की एक लैटिन-फारसी तुर्की शब्दसूची भी मिलती है। यकूत (Yakut) इस वर्ग की अन्य भाषाओं से पृथक् किन्तु उनसे बहुत भिन्न है और साईबेरिया के सुदूर उत्तर में 2 लाख

से अधिक व्यक्तियों से बोली जाती है। कुछ लोग यह मानते हैं कि तुर्कतातारी का सम्बन्ध मंगोल और मान्चू परिवारों से है, कुछ अन्य, उनसे भी कम साक्ष्यों पर, इन सब का सम्बन्ध फ़ीनी-उग्री और समोएदी से मानते हैं और दोनों को सम्मिलित नाम, उराल-अल्ताई (Ural Altaic) भाषापरिवार, से पुकारते हैं।

मंगोल (Mongol) भाषाएँ अधिकांश तुर्कतातारी के पूर्व मंगोलिया में बोली जाती हैं किन्तु ये एशिया के विभिन्न भागों में और यूरोपीय रूस में भी बोली जाती हैं क्योंकि मंगोलिया की वन्यजातियाँ पहले घुमक्कड़ और लुटेरी जातियाँ थीं। इन भाषाओं के बोलनेवाले अनुमान से 30 लाख निश्चित किए गए हैं। प्राचीनतम उपलब्ध आलेख तेरहवीं सदी में चिगिस खां (चंगेज़खान) (Gengis Khan) के समय का एक अभिलेख है।

तुंगूज़ी-मान्चू (Tunguse-Manchu) भाषापरिवार मंगोल के उत्तर में याकूत को शेष तुर्कतातारी प्रदेश से विभाजित करता हुआ स्थित है। तुंगूजी को 70,000 व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है जो कि साइबेरिया में अपेक्षाकृत बड़े भूखण्ड पर बसे हुए हैं। मान्चू के वास्तविक वक्ताओं की संख्या अनिश्चित है क्योंकि चीन स्थित तथाकथित मान्चू-वक्ता केवल चीनी बोलते हैं। डैनी (Deny) महोदय ने अनुमान से इन्हें 10 लाख से कम माना है। साहित्यिक और शासकीय भाषा के रूप में मान्चू सन् 1647 से मुद्रित हो रही है किन्तु हस्तलिखित ग्रन्थ इससे भी पहले के मिलते हैं।

विशाल हिन्द-चीनी (Indo-Chinese) अथवा चीनी-तिब्बती (Sino-Tibetan) परिवार में तीन शाखाएँ हैं। इनमें से एक चीनी (Chinese) है जो प्रायः 40 करोड़ लोगों से बोली जाती है। यह एक अत्यन्त विस्तृत-क्षेत्र में फैली है और इसके अन्तर अनेक अंशतः परस्पर-असम्बोध्य बोलियाँ अथवा भाषाएँ हैं। ये चार मुख्य वर्गों में वर्गीकृत की गई हैं--मन्दारी (Mandārin) वर्ग जिसमें पेकिंग की भाषा के साथ उत्तरी चीनी (North Chinese), नान्किंग के साथ मध्य चीनी (Middle Chinese) और सेनुएन में पश्चिमी चीनी (West Chinese) आती हैं, मध्यतटीय (Central Coastal) वर्ग जिसके अन्तर्गत शंघई (Shanghai) निन्गपो (Ningpo) और हांग्काऊ (Hangkow) आती हैं, किआंग्सी (Kiangsi) वर्ग और दक्षिण चीनी (South Chinese) वर्ग जिसके अन्तर्गत फूचाउ (Foochow) आमॉइ स्वाताउ (Amoy Swotow) और कैन्टनी-हाक्का (Cantonese-Hakka) आती हैं। प्राचीनतम उपलब्ध आलेख अभिलेख हैं जिनमें से कुछ 2,000

ईसा-पूर्व तक के हैं किन्तु चूँकि चीनी लिपि में प्रत्येक शब्द के लिए पृथक्-पृथक् चिन्ह है और उससे ध्वनि के सम्बन्ध में कुछ भी संकेत नहीं मिलता है, सम्बोध्य आलेख से भी भाषा के सम्बन्ध में कुछ पता नहीं चलता है, अथवा चलता है तो बहुत थोड़ा चलता है। हिन्द चीनी की दूसरी शाखा थाई (Tai) शाखा है जिसके अन्तर्गत स्यामी (Siamese) आती है जोकि 70 लाख व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है। इसका प्राचीनतम आलेख एक 1293 ईसवीय का अभिलेख है। तीसरी शाखा तिब्बती-बर्मी (Tibeto-Burman) है जिसके चार वर्ग हैं :—तिब्बती (Tibetan) वर्ग, जिसमें तिब्बती भाषा सबसे महत्त्वपूर्ण है और इसके आलेख नवीं सदी ईसवीय तक के हैं, बर्मी (Burmese) वर्ग, जिसमें बर्मी भाषा सबसे महत्त्वपूर्ण है और इसके वक्ता कोई 80 लाख व्यक्ति हैं, और बोदो-नागा-कचिन (Bodo-Naga-Kachin) वर्ग और लो-लो (Lo-lo) वर्ग जिनमें छोटी-छोटी बोलियाँ हैं।

हाइपर बोरी (Hyper borean) परिवार एशिया के सुदूर उत्तर-पूर्वी किनारे पर है। इसमें चुक्ची (Chukchee) (वक्ता संख्या प्राय 10 हजार), कारयैक (Koryak) (वक्ता संख्या प्रायः 10 हजार) और काम्छदाल (Kamchadal) (वक्ता संख्या 1,000) भाषाएँ हैं।

येनिसी-नदी के साथ-साथ येनिसी-ओस्त्यक (Yenisei-Ostyak) भाषा के करीब 1,000 वक्ता हैं और कोट्टी का (Cottian), जो कि अब तक विलुप्त हो चुकी होगी, एक स्वतन्त्र परिवार है।

पूर्वी एशिया की अनेक अन्य भाषाओं के बीच का सम्बन्ध निश्चित नहीं हो पाया है। गिल्यक (Gilyak) सखालिन द्वीप और अमूर नदी के मुहाने के आसपास बोली जाती है। ऐनू (Ainu) जापान में कोई 20,000 व्यक्तियों से बोली जाती है। जापानी (Japanese) के प्रायः 5.6 करोड़ वक्ता हैं और लिखित सामग्री आठवीं सदी से मिलने लगी है। कोरियाई '(Korean) के 1.7 करोड़ वक्ता हैं।

4.9 यूरोप के दक्षिण-पूर्व में काकेशस प्रदेश में अनेक भाँति की भाषाएँ हैं। ओसेती को छोड़कर जो एक ईरानी भाषा है, भाषाएँ दो परिवारों में से किसी एक की हैं—उत्तरी काकेशी (North Caucasian) और दक्षिणी काकेशी (South Caucasian)। प्रत्येक के वक्ता एक लाख और दो लाख के बीच में हैं। इनमें सर्वाधिक विदित भाषा जार्जी (Georgian) है जो दक्षिणी वर्ग की है और जिसके आलेख दसवीं सदी ईसवी से मिलने लगते हैं।

भारतवर्ष में भारतीय-आर्य भाषाओं के दक्षिण में एक विशाल परिवार है—

द्रविड़ परिवार । इसमें अनेक छोटी बोलियाँ और चार विशाल भाषिक-क्षेत्र (और मानक साहित्यिक भाषाएँ) हैं—तामिल (1.8 करोड़), मलयालम (60 लाख), कन्नड़ (Canarese) 1 करोड़, प्राचीनतम अभिलेख पाँचवीं सदी ईसवी का है। और तेलुगू (2.4 करोड़) एक अकेली द्रविड़-भाषा, ब्राहुई (Brahui) (वक्ता संख्या 1.74.000) शेष भाषाओं से बिल्कुल पृथक् बलूचिस्तान के पहाड़ों में बोली जाती है। ऐसा लगता है कि यह उस समय का अवशेष है जब भारतीय आर्य और ईरानी भाषाओं के आक्रमण के पूर्व द्रविड़ परिवार कहीं अधिक विस्तृत-क्षेत्र पर फैला हुआ था ।

मुन्डा (Munda) परिवार की भाषाएँ कोई 30 लाख व्यक्तियों द्वारा भारतवर्ष के दो पृथक्-पृथक् भागों में बोली जाती हैं। ये भाग हैं--हिमालय के दक्षिणी ढाल और मध्य-भारत में छोटा-नागपुर के पठार।

मोनख्मेर (Mon-Khmer) परिवार निकोबार द्वीप और मलाया प्रायद्वीप के कुछ भूभागों को लेता हुआ दक्षिणपूर्व एशिया में खण्डों में फैला हुआ है। प्राचीनतम अलेख कम्बोजी (Cambogian) में सातवीं सदी ईसवी के हैं। इस परिवार के अन्तर्गत तक विशाल सांस्कृतिक भाषा अनामी (Annamite) है जिसके 1.4 करोड़ वक्ता हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि मुण्डा और मोन्ख्मेर, दोनों परिवार मलय-पोलीनेशियाई परिवार की है और इन सबसे मिलकर आस्ट्री (Austric) परिवार बनता है।

मलयपॉलीनेशियाई (Malayo-Polynesian) अथवा आस्ट्रोनेशियाई (Austronesian) परिवार मलय प्रायद्वीप से लेकर प्रशान्त महासागर पर ईस्टर द्वीप तक फैला हुआ है। इसकी चार शाखाएँ हैं। प्रथम शाखा मलयाई (Malayan) आती है जो प्रायः 30 लाख नैसर्गिक वक्ताओं द्वारा बोली जाती है और वाणिज्य तथा पूर्व के बड़े-बड़े द्वीपों की भाषाएँ भी आती हैं, जैसे, फ़ार्मूसी (Formosan) जावी (Javanese) (2 करोड़ वक्ता), सुन्दानी (Sundanese) (65 लाख वक्ता), मदुराई (Maduran) 30 लाख), बाली (Balinese), (10 लाख), और अनेक फिलीपाइनी भाषाएं (Philippine) जिसमें बिसया (Bisiya) (27½ लाख) और तगलॉग (Tagalog) 15 लाख) हैं। एक दूरवर्ती भाषा मलगसी (Malagasy) है जो अफ्रीका में मैडागास्कर में कोई 30 लाख व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है। दूसरी शाखा मेलेनेशियाई (Melanesian) है। इसके अन्तर्गत छोटे-छोटे द्वीपसमूहों की अनेक भाषाएँ आती हैं जैसे कि सालोमन द्वीप की भाषा और फ़ीजी (Fijian)। तीसरी शाखा माइक्रोनेशियाई (Micronesian) में

और भी छोटे प्रदेशों की भाषाएँ हैं, जैसे, गिल्बर्ट, मार्शल, कैरोलीन, मेरिअने द्वीपसमूह और याप द्वीप की भाषाएँ। चौथी शाखा पॉलीनेशियाई (Polynesian) के अन्तर्गत मओरी (Maori) (जो कि न्यूजीलैण्ड की नैसर्गिक भाषा है) और अधिक पूर्वी प्रशान्तमहासागरीय द्वीपों की भाषाएँ, जैसे—समोअई (Samoan), ताहिती (Tahitian) और हवाई (Hawaŭan) और इस्टर द्वीप की भाषा है।

इस भूखण्ड के अन्य परिवारों का अभी कोई अध्ययन नहीं हुआ है—ये हैं. पापुआ (Papuan) परिवार जो नई गिनी और तत्समीपवर्ती द्वीपों पर है और आस्ट्रेलियाई (Australian) परिवार।

4.10 अब केवल अमेरिका भूखण्ड रह जाता है।

यह अनुमान किया गया है कि मेक्सिको के उत्तर में स्थित भूभाग में यूरोपवासियों के आने के पूर्व कोई 1½ करोड़ वन्य अमेरिकन थे। इसी प्रदेश में अमेरिकन वन्य भाषाओं के वक्ता ढाई लाख से अधिक नहीं हो सकते और अंगरेजी बड़ी तीव्रता से इन पर बढ़ रही है। चूंकि भाषाओं का अपर्याप्त अध्ययन हुआ है अतएव वे केवल कामचलाऊ रूप से परिवारों में वर्गीकृत की जा सकती हैं। अनुमानतः 25 से लेकर 50 असम्बद्ध परिवार इस प्रदेश में हैं। अधिकांश भूभाग बड़े-बड़े भाषा-परिवारों से व्याप्त हैं किन्तु कुछ क्षेत्रों में, विशेषतः पुजेट साउन्ड और कैलीफोर्निया के तटीय जिलों के आसपास, छोटे-छोटे अनेक भाषिक-समुदाय भरे हुए हैं। प्रायः आधे दर्जन भाषा परिवार निश्चिततया विलुप्त हो चुके हैं। इस समय विद्यमान परिवारों में कुछ बड़े-बड़े परिवारों के नामों का उल्लेख किया जा रहा है। सुदूर उत्तर में एस्किमो (Eskimo) परिवार है जो ग्रीनलैण्ड से बफिनलैंड और अलास्का पर होता हुआ एलेउशियन द्वीप तक फैला है। इसमें घनिष्ठतया गठित बोली वर्ग है। ऐलगान्की (Algonquian) परिवार महाद्वीप के उत्तरपूर्व भूभाग पर फैला हुआ है और इसके अन्तर्गत पूर्वी और मध्य कनाड़ा की भाषाएँ (मिक्मैक, मान्तया क्री, न्यू-इंग्लैंड, की (पनाब्ज़कट, मैसिचूसिट्, नेतिक, नैरगोन्सेत् महीकन, आदि और दक्षिण में डेलवैअर), ग्रेटलेक प्रदेशों की (ओजिब्बे पातवातमी, मिनामनी, सैक, फॉक्स, किकप, पीओरीअ इल्नॉइ, माइऐमी आदि) और पश्चिम की कुछ इनसे भौगोलिक रूप से पृथक् भाषाएँ (ब्लैक फुट, शीऐन, अरैपहो) आती हैं। अथबस्की (Athabascan) परिवार में उत्तर पश्चिमी कनाड़ा के तटीय प्रदेशों के अतिरिक्त कनाडा है चिपवाइअन बीवर, ड़ाग्रिब, सारसी आदि)। ये कैलीफोर्निया में अनेक पृथक्-पृथक् वर्गों में (जैसे, हूप और मतोल) और दक्षिण के एक विशाल क्षेत्र में (अपैची

और नवहो भाषाएँ) बोली जाती हैं । इक्वाइयन (Iroquoian) परिवार एल्गान्की के बीच में बोला जाता है। इसके अन्तर्गत ह्यू रन (अथवा वाइउन्दात) भाषा और एक्वाइयन प्रतिरूप की भाषाएँ (मोहॉक, ओनाइड, आनन्दाग, कीऊग, सेनिक, तुस्करोर) आती हैं। दक्षिण में पृथक् प्रदेश में चेरकी बोली जाती है। मस्कोगीअन (Muskogean) परिवार में चाक्ता, चिकसा, क्रीक, सेमनोल और अन्य भाषाएँ आती हैं। सूअन (Siouan) परिवार में डकोट, टेटैन, ऑग्लाल, असिनवाँ, कैन्ज, ओमहा, ओसेज, आइअवा, मिज़ूरी विनबेगो मैन्देन और क्रो आदि भाषाएँ आती हैं। सम्भावित सम्बन्ध के आधार पर एक यूटो-ऐजटेकी (Uto-Aztecan) परिवार की प्रस्तावना की गई है जिसके अन्तर्गत पीमन, (Piman) परिवार (कैलीफोर्निया की खाड़ी के पूर्व में) शशोनी Shoshonian परिवार (दक्षिणी कैलीफोर्निया और पूर्व में—इसमें यूट, पाइयूत, शशोन, कमैन्छी और होपी भाषाएँ आती हैं) और मैक्सिको में विशाल नावात्लन (Nahuatlan) परिवार आता है जिसमें प्राचीन सभ्यता की ऐजटेक बोली है।

शेष अमेरिका में अमेरिकन वन्य भाषाओं के बोलनेवालों की संख्या अनिश्चित है। हाल के अनुमानों के आधार पर केवल मैक्सिको में 45 लाख, पेरू और ब्राज़ील में 30-30 लाख, मैक्सिको और मध्य अमेरिका में कुल मिलाकर 60 लाख, और दक्षिणी अमेरिका में 85 लाख वक्ता हैं। भाषाओं की संख्या और उनके पारस्परिक सम्बन्ध अविदित हैं । कोई बीसेक स्वतन्त्र परिवार मेक्सिको और मध्य अमेरिका में और कोई 80 दक्षिण अमेरिका में स्थापित किये गए हैं। मेक्सिको और मध्य अमेरिका में नावात्लन के अतिरिक्त माइयन (Mayan) परिवार है जो युकतन में प्राचीन सभ्यता का वाहक है। दक्षिण अमेरिका में उत्तर पश्चिम में ऐरवाक (Arawak) और कैरिब (Karib) परिवार हैं जो कि कभी वेस्टइण्डीज तक फैले थे, टुपीग्वारनी परिवार ब्राजील के तटों पर फैला हुआ है, चिली में अरैउकान (Araucanian) और इन्का सभ्यता की भाषा किचुआ (Kechuan) है। ऐज़टेक और माइयन दोनों में लेखन की पद्धति विकसित हो चुकी थी किन्तु चूंकि दोनों पद्धतियाँ मुख्यतया बीजाक्षरी हैं और अशतः समझी गई हैं, ये आलेख भाषा के पूर्वतर रूपों के सम्बन्ध में कुछ भी सूचना नहीं देते हैं।

———

अध्याय 5

स्वनिम (फोनीम)

5.1. अध्याय 2 में हमने भाषण-क्रिया की तीन क्रमागत घटनाओं में भेद स्पष्ट किया था—(A) वक्ता की स्थिति, (B) वक्ता का भाषण-ध्वनियों को बोलना और उनका श्रोता के कान में जाकर टकराना और (C) श्रोता की अनुक्रिया। इन तीन प्रकार की घटनाओं में (A) और (C) के अन्तर्गत वे सब स्थितियाँ आ जाती हैं जिनसे प्रेरित होकर एक मनुष्य बोलता है और वे सब कार्यकलाप आते हैं जिन्हें श्रोता अनुक्रिया के रूप में करता है। संक्षेप में (A) और (C) दोनों मिलकर वे बाह्य जगत् बनाते हैं जिसमें हम रहते हैं। इसके विपरीत, भाषणध्वनि एक साधनमात्र है जिसके द्वारा हम स्थितियों के प्रति अनुक्रिया करते हैं और ठीक-ठीक अनुक्रिया करते हैं। इस (B) के न होने पर वे स्थितियाँ या तो हमें बिना प्रभावित किए चली जातीं या कुछ कम उपयोगी अनुक्रियामात्र प्रेरित करतीं। सिद्धान्ततः भाषाशास्त्र के विद्यार्थी का सम्बन्ध केवल वास्तविक भाषण (B) से है, वक्ता की स्थितियों और श्रोता की अनुक्रियाओं का (A और C का) अध्ययन समस्त मानवीय ज्ञान के अध्ययन के बराबर है। यदि हमें प्रत्येक वक्ता की स्थितियों और प्रत्येक श्रोता की अनुक्रियाओं का सही-सही ज्ञान हो (ऐसा होने पर हम सर्व-ज्ञानी-से बन जाएँगे) तब हम किसी भी भाषण-उच्चार (B) के अर्थ (A—C) के रूप में इन दो तथ्यों को निर्दिष्ट कर सकेंगे और अपने अध्ययन को ज्ञान की अन्य शाखाओं से पूर्णतया पृथक् कर सकेंगे। भाषण-उच्चार स्वयं प्रायः वक्ता की स्थितियों को और श्रोता की अनुक्रियाओं को प्रभावित करते हैं —इससे वस्तुस्थिति जटिल अवश्य हो जाती है किन्तु यह कोई विशेष गम्भीर कठिनाई नहीं है। इस आदर्शतल पर हमें भाषा-विज्ञान में दो मुख्य खोजें करनी हैं—(1) ध्वनिविज्ञान, (स्वनविज्ञान) जहाँ हम भाषण-उच्चार का बिना अर्थ-निर्देश के अध्ययन करते हैं, अर्थात् जहाँ केवल वक्ता के ध्वनिजनक संचालनों का, ध्वनितरंगों का और श्रोता के कर्ण-पटह पर उन ध्वनियों के पड़ने का अध्ययन करते हैं, और (2) अर्थविज्ञान, जहाँ हम इन अभिलक्षणों का अर्थ के अभिलक्षणों से सम्बन्ध देखते हैं अर्थात् यह प्रकट करते हैं कि इस प्रकार की भाषणध्वनि इन विशिष्ट प्रकार की स्थितियों में बोली गई थीं और श्रोता ने तब इन विशिष्ट प्रकार की अनुक्रियाएँ की थीं।

किन्तु वास्तव में जिस बाह्य जगत् में हम रहते हैं उसका हमारा ज्ञान इतना अपूर्ण है कि भाषिकरूप के अर्थ के सम्बन्ध में सही-सही वक्तव्य हम कदाचित् ही दे पाते हैं। उच्चार को प्रेरित करने वाली स्थितियों (A) और श्रोता की अनुक्रियाओं (C) के अन्तर्गत अनेक ऐसी वस्तुएँ आती हैं जिनके सम्बन्ध में अभी विज्ञान पूरा-पूरा नहीं जानता है। यदि हम बाह्य जगत् को इससे अधिक जान भी जाएँ तो भी वक्ता और श्रोता की तत्कालीन मानसिक-प्रवणता का ख्याल रखना पड़ेगा। हम पहले से कदापि नहीं कह सकते हैं कि अमुक स्थिति में एक व्यक्ति बोलेगा या नहीं, और बोलेगा तो क्या बोलेगा, या कि अमुक भाषण-उच्चार से वह कैसी अनुक्रिया करेगा।

यह सच है कि हमारा मुख्य सम्बन्ध उतना प्रत्येक व्यक्ति से नहीं है, जितना पूरे समुदाय से। हम उस व्यक्ति की जो कि मान लीजिए 'आम' कहता है सूक्ष्म तन्त्रिकीय प्रक्रियाओं की आगे खोज नहीं करते हैं, बल्कि इतना निर्धारण करने से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं कि अधिकतर समुदाय के सभी व्यक्तियों का 'आम' शब्द से एक विशेष प्रकार के फल से तात्पर्य है। फिर भी, जैसे ही हम सूक्ष्मतया इसका अध्ययन करने लगते हैं, हमें पता चलता है कि समुदाय में पारस्परिक मतैक्य कहीं अधिक अपूर्ण है और प्रत्येक व्यक्ति अनोखे ढंग से भाषणरूपों को प्रयुक्त करता है।

5.2 जब तक हम उच्चार के अर्थ पर ध्यान नहीं देते हैं तभी तक भाषा का अध्ययन बिना विशेष पूर्वकल्पना के हो सकता है। भाषा-अध्ययन का यह चरण स्वनविज्ञान (ध्वनिविज्ञान) (phonetics) (प्रायोगिक स्वनविज्ञान, प्रयोगशालीय स्वनविज्ञान) के नाम से प्रसिद्ध है। स्वनविज्ञानी वक्ता के ध्वनि-जनन करने वाले संचालनों का (शरीरप्रक्रियात्मक स्वनविज्ञान का) अध्ययन कर सकता है, या निकली ध्वनितरंगों का (भौतिकध्वनि-विज्ञान, ध्वानिकी acoustic phonetics)। किन्तु श्रोता के कर्णपटह पर इन तरंगों से क्या क्रिया उत्पन्न होती है, इसके अध्ययन की कोई विधि अभी तक नहीं निकली है।

शरीर-प्रक्रियात्मक स्वनविज्ञान का प्रारम्भ निरीक्षणों से हुआ। उदाहरण के लिए, लैरिंगोस्कोप (laryngoscope) दर्पण की ऐसी युक्ति है जिससे प्रेक्षक दूसरे की (या अपनी) घोषतंत्रियों को देख सकता है। इस प्रकार की अन्य युक्तियों के समान यह भी स्वाभाविक भाषण में बाधा डालती है और निरीक्षण के कुछेक चरणों में ही काम में आती है। एक्स-रे जहाँ अपनी सीमाओं को पार कर पाया है, बड़ा अच्छा काम करता है। उदाहरण के लिए जीभ की ऊपरी सतह पर पतली धातु की पट्टी या जंजीर डालकर जिह्वा-स्थितियों की

फोटो भी ली गई हैं। अन्य युक्तियों से स्थानान्तरित अंकन भी मिलते हैं। उदाहरण के लिए कृत्रिम तालु को उसके ऊपर रंग देने वाली वस्तु छिड़क कर मुँह में रक्खा जाता है, जब वक्ता कोई ध्वनि बोलता है तो जीभ तालु को जहाँ कहीं छूती है वहाँ रंग छूट जाता है और स्पर्श-स्थान का पता लग जाता है। इस प्रकार की अधिकांश युक्तियों में वक्ता के ध्वनि-अवयव, जैसे कि अवटु-उद्वर्ध (कण्ठ-मणि adam's apple) पर एक भाँति का बल्व लगा दिया जाता है। इस कण्ठमणि के संचालनों को यांत्रिकी विधि से एक कलम की निब के ऊर्ध्वाधर संचालनों में बदल दिया जाता है जो कि एक कागज की पट्टी को छूती है। कागज की पट्टी एक एक-सी गति से चलती रहती है, फलस्वरूप निब का ऊर्ध्वाधर संचलन कागज पर लहरियों-सा बन जाता है। अंकन करने की यह विधि काइमोग्राफ कहलाती है। ध्वानिकी-(ध्वनिविज्ञान) (acoustic phonetics) में स्वर लहरियों के चित्रण प्राप्त किये जाते हैं। फोनोग्राफ-डिस्क के रूप में हम लोग इन अंकनों से परिचित हैं। ध्वनि-विज्ञानविद् ऐसे अंकनों के अधिकाधिक अभिलक्षणों को विश्लेषित करने में अभी तक सफल नहीं हो पाए हैं।

भाषण-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिकांश सूचना अभी बताई इन्हीं विधियों से मिली है। फिर भी प्रयोगशालीय-स्वनविज्ञान भाषण-ध्वनियों को अर्थों से सम्बद्ध करने में असमर्थ है, वह भाषण-ध्वनियों का केवल मांसपेशीय संचालनों के रूप में अथवा हवा में विक्षोभ के रूप में अध्ययन करता है। संचार में इनके उपयोग पर ध्यान नहीं देता है। इस अध्ययन-तल पर हमें पता लगता है कि भाषणध्वनियाँ अनन्त रूप से जटिल और बहुरूपी हैं।

एक छोटे-से छोटा उच्चार भी निरन्तर (अनवच्छिन्न) होता है, उसके अन्तर्गत अनवच्छिन्न क्रमिक संचालन और ध्वनिलहरियाँ आती हैं। सूक्ष्म अध्ययन के लिए अपने अंकन को चाहे कितने ही क्रमिक खण्डों में बाँट दें, उससे बढ़कर सूक्ष्मतर विश्लेषण सर्वथा कल्पनीय है। एक भाषण-उच्चार वह वस्तु है जिसे गणितज्ञ सांतत्यक (कन्टिनुउम) (continuum) कहते हैं, इसे किसी भी अभीष्ट संख्या में क्रमिक-विभाजनों में बाँटा जा सकता है।

भाषण-उच्चार अनन्ततः बहुरूपी है। प्रतिदिन का अनुभव हमें बताता है कि विभिन्न व्यक्ति विभिन्नतया बोलते हैं, क्योंकि हम लोगों को उनकी आवाजों से पहिचान लेते हैं। ध्वनि-विज्ञानी को पता लगा है कि कोई दो उच्चार ठीक-ठीक एक-से नहीं होते हैं।

स्पष्टतया भाषा की कार्यकारिता क्रमिक-उच्चारों के बीच मिलने वाली

समानता से है। उच्चारों में, जिन्हें सामान्य-जीवन में एक ही भाषिक-रूपों से बना समझते हैं, (जैसे, "मैं भूखा हूँ" इस वाक्य के क्रमिक उच्चारों में) स्पष्टतया ध्वनिलहरियों के कुछ अचर अभिलक्षण हैं, जो कि इसी भाषिक-रूप के सभी उच्चारों में सर्वनिष्ठ (सामान्य) हैं। भाषा के हमारे साधारण प्रत्येक प्रयोग के मूल में केवल यही कल्पना है। फिर भी, ध्वनिविज्ञानी इन अचर अभिलक्षणों के सम्बन्ध में निश्चित नहीं है जब तक वह कथित वाक्य के अर्थ की उपेक्षा कर रहा है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि ध्वनि-विज्ञानी के पास एक उच्चार के दो अंकन हैं जिसे वह "man" इस अक्षर को प्रदर्शित करता हुआ पहिचानता है, यद्यपि वे दो विभिन्न सुरों में बोले गये हैं। अगर इन उच्चारों की भाषा अंग्रेजी है तो हम यह कह सकते हैं कि दोनों एक ही भाषिक-रूप man को प्रदर्शित करते हैं, किन्तु यदि ये उच्चार चीनी भाषा में हैं तो दोनों अंकन दो विभिन्न भाषिक-रूपों को प्रदर्शित करेंगे क्योंकि चीनी भाषा में स्वराघात-योजना में अन्तर अर्थों के अन्तर से सम्बद्ध है। वहां man शब्द में यदि उच्चआरोही स्वराघात है तो उसका अर्थ होता है 'धोका', और यदि अवरोही स्वराघात है तो उसका अर्थ होता है 'धीमा'। जब तक हम अर्थों पर ध्यान न देंगे तब तक हम यह निश्चित नहीं कर पाएँगे कि दो उच्चार 'एक' हैं या 'विभिन्न'। ध्वनिविज्ञानी यह नहीं बता सकता है कि कौन-से अभिलक्षण संचार के लिए महत्त्वपूर्ण हैं और कौन-से महत्त्वहीन। किन्हीं भाषाओं और बोलियों के लिए महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण अन्य भाषाओं के लिए महत्त्वहीन हो सकता है।

5.3 एकाक्षरी man के दो विभिन्न स्वराघात से बोले दो उच्चार अंग्रेजी में 'एक ही' भाषिकरूप हैं और चीनी भाषा में 'विभिन्न भाषिकरूप हैं—यह तथ्य प्रकट करता है कि भाषा की कार्यकारिता इस पर निर्भर है कि हम लोग स्वभाव से और परम्परा से ध्वनियों के कुछ अभिलक्षणों में भेद रखते हैं और अन्य अभिलक्षणों के भेदों की उपेक्षा करते हैं। किसी उच्चार की ध्वनियों के प्रयोगशाला में अंकित अभिलक्षण उस उच्चार के स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षण हैं। इन ध्वानिकी अभिलक्षणों के कुछ अंश नगण्य अपरिच्छेदक (non-distinctive) हैं और केवल कुछ अंश ही अर्थों से सम्बद्ध और संचार के लिए अपरिहार्य हैं और इस भाँति परिच्छेदक (distinctive) हैं। ध्वनियों के परिच्छेदक और अपरिच्छेदक अभिलक्षणों का अन्तर सम्पूर्णतया वक्ताओं की आदत पर निर्भर है। एक भाषा में जो एक अभिलक्षण परिच्छेदक है, वही दूसरी भाषा में अपरिच्छेदक हो सकता है।

चूंकि उच्चार के परिच्छेदक अभिलक्षणों को तभी पहिचान सकते हैं जब कि हम अर्थ को जानते हों, अतएव हम शुद्ध ध्वनिविज्ञान के अध्ययन-तल पर उन्हें नहीं पहचान सकते हैं। हमें मालूम है कि अंग्रेजी रूपों man और men का अन्तर परिच्छेदक है, क्योंकि यह हमें सामान्य जीवन से मालूम है कि दोनों रूप पृथक्-पृथक् स्थितियों में प्रयुक्त होते हैं। यह सम्भव है कि भाषाविज्ञान से अन्य कोई विज्ञान इस अन्तर को सही-सही शब्दों में परिभाषित कर सके, और उसमें ऐसे प्रयोगों की भी गुंजायश हो जहां man एक से अधिक व्यक्तियों के लिए (man wants but little here below) प्रयुक्त होता है। फिर भी, किसी भी दिशा में यह अन्तर शुद्ध ध्वनिवैज्ञानिक निरीक्षण से जाना नहीं जा सकता है, man और men इन दो स्वरों का अन्तर कुछ भाषाओं में अपरिच्छेदक है।

भाषा के परिच्छेदक अभिलक्षणों को पहिचानने के लिए हमें शुद्ध ध्वनि-विज्ञान की भूमि को छोड़ना पड़ेगा और ऐसा करना होगा कि मानों विज्ञान इतनी अधिक प्रगति कर चुका है कि हम उन सब स्थितियों और अनुक्रियाओं को पहिचान लेते हैं जिनसे भाषिकरूपों के अर्थ बनते हैं। अपनी निजी भाषा के सम्बन्ध में हम अपने प्रतिदिन के ज्ञान पर आस्था रखते हैं कि ये भाषिक रूप 'एक' ही हैं या 'विभिन्न'। इस प्रकार, हम जानते हैं कि विभिन्न सुरों में बोला हुआ man शब्द अंग्रेजी में एक ही शब्द है और उसका एक ही और वही अर्थ है, किन्तु man और men (या pan और pen) विभिन्न अर्थ वाले विभिन्न शब्द हैं। अपरिचित भाषाओं के सम्बन्ध में हमें ऐसे तथ्यों का पता 'परीक्षण और त्रुटि' (trial and error) (अटकल) से लगाते हैं या उस भाषा को जानने वाले से अर्थ का पता लगाते हैं।

परिच्छेदक भाषण-ध्वनियों का अध्ययन ध्वनिप्रक्रिया विज्ञान (phonology) अथवा व्यावहारिक ध्वनिविज्ञान (practical phonetics) कहा जाता है। ध्वनि-प्रक्रिया विज्ञान में अर्थों का भी ध्यान रक्खा जाता है। भाषिकरूपों का अर्थ वैज्ञानिकरूप से तभी परिभाषित हो सकता है जबकि विज्ञान की सभी शाखाओं का, विशेषतः मनोविज्ञान और शरीर प्रक्रिया-विज्ञान का, ज्ञान अधिक से अधिक पूर्ण हो जाए। तब तक ध्वनिप्रक्रिया-विज्ञान और उसके साथ भाषाई अध्ययन के अर्थसम्बन्धी सभी चरण के मूल में एक पूर्व-कल्पना—भाषाविज्ञान की आधारभूत पूर्वकल्पना है कि **प्रत्येक भाषिक-समुदाय में कुछ उच्चार रूप और अर्थ में एकसे होते हैं।**

5.4 थोड़े से ही परीक्षणों से प्रकट हो जाता है कि भाषिक-रूपों के महत्त्वपूर्ण

(परिच्छेदक) अभिलक्षण संख्या में सीमित हैं । इस दिशा में महत्त्वपूर्ण (परिच्छेदक) अभिलक्षणों की तुलना स्थूल ध्वनिकीय अभिलक्षणों से है जो कि, जैसा हम देख चुके हैं, एक अविच्छिन्न पूर्णता बनाते हैं और अभीष्ट संख्या में विभाजित किए जा सकते हैं। अपनी निजी भाषा में रूपों के परिच्छेदक अभिलक्षण पहिचानने के लिए हमें केवल यह निर्धारित करना होता है कि ध्वनि के कौन-कौन-से अभिलक्षण संचारहेतु 'विभिन्न' हैं। उदाहरण के लिए मान लीजिए शब्द pin से प्रारम्भ करें। शब्दों को जोर-जोर से कहने के कुछ परीक्षण ही निम्नलिखित समानताओं और विषमताओं को प्रकट कर देते हैं :—

(1) pin के अन्त में वही ध्वनि है जो fin, sin, tin में है, किन्तु प्रारम्भ में विभिन्नता है। इस प्रकार की समानताओं से हम परिचित हैं क्योंकि परम्परा के अनुसार छन्दों का अन्त प्रायः तुकान्त होता था,

(2) pin में ध्वनि in है, किन्तु इसके प्रारम्भ में कोई ध्वनि अधिक जुड़ी है,

(3) pin के अन्त में वही ध्वनि है जो man, sun, hen में है, किन्तु (1) और (2) की अपेक्षा सादृश्य कम है,

(4) pin के प्रारम्भ में वही ध्वनि है जो pig, pill, pit में है, किन्तु अन्त दूसरी प्रकार से है,

(5) pin के प्रारम्भ में वही ध्वनि है जो pat, push, peg में है किन्तु (4) की अपेक्षा सादृश्य कम है,

(6) pin के प्रारम्भ और अन्त में वही ध्वनियाँ हैं जो pen, pan, pun में हैं, किन्तु मध्यभाग भिन्न है,

(7) pin के प्रारम्भ और अन्त dig, fish, mill में भिन्न हैं किन्तु मध्यभाग एक-सा है।

इस प्रकार शब्द के तीन अंशों में से प्रत्येक को बदल-बदल कर हम उन रूपों का पता लगा सकते हैं जिनका pin से अंशतः सादृश्य है। हम पहले एक अंश को बदलें और फिर शेष दोनों में से फिर एक को बदलें, तब भी आंशिक सादृश्य रहेगा। अगर हम पहला अंश बदलते हैं और फिर दूसरा अंश बदलते हैं, तो pin-tin-tan जैसी श्रेणी बनती है, अगर हम पहला अंश बदलते हैं फिर तीसरा अंश, तो pin-tin-tick जैसी दूसरी श्रेणी बनती है, अगर हम दूसरा अंश बदलते हैं और फिर तीसरा अंश तो pin-pan-pack जैसी श्रेणी बनती है। किन्तु यदि हम तीनों अशों को बदल दें तो कुछ भी सादृश्य नहीं बनेगा, जैसे, pin-tin-tan-tack.

अब और परीक्षणों से शब्द pin के अन्य अधिक परिवर्त्य अंश प्रकट नहीं हो रहे हैं, अतएव हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि इस शब्द के परिच्छेदक अभिलक्षण तीन अविभाज्य इकाइयाँ हैं। इनमें से प्रत्येक इकाई अन्य संयोजनों में भी मिलती है किन्तु आंशिक-सादृश्यों द्वारा आगे विश्लेषित नहीं हो सकती है। तीनों में से प्रत्येक इकाई परिच्छेदक **ध्वनि-अभिलक्षण की लघुतम इकाई, स्वनिम (फ़ोनीम** (phoneme) **है।** इस प्रकार हम कहते हैं कि शब्द pin में तीन स्वनिम हैं : इनमें से पहला pet, pack, push और अन्य अनेक शब्दों में मिलता है, इनमें से दूसरा fig, hit, miss और अन्य अनेक शब्दों में मिलता है, और इनमें से तीसरा tan, run, hen और अन्य अनेक शब्दों में मिलता है। pin के उदाहरण में रोमन लिपि में ये तीन स्वनिम तीन लिपि-चिन्हों p, i, n से प्रदर्शित किए गए हैं, किन्तु लिपि की परम्पराएँ एक अविश्वसनीय प्रदर्शन हैं। उदाहरण के लिए thick शब्द में रोमन लिपि में दो लिपिचिन्हों से प्रथम स्वनिम और अन्य दो लिपिचिन्हों ck से तीसरा स्वनिम प्रदर्शित हुआ है।

थोड़े से अभ्यास से प्रेक्षक एक स्वनिम को पहचानने लगता है चाहे वह शब्दों के विभिन्न भागों में आ रहा हो, जैसे,—pin, apple, mop में p । कभी-कभी हमारा शब्दसमूह तत्काल सादृश्य और अन्तर प्रकट नहीं करता है। उदाहरण के लिए शब्द then स्पष्टतया तीन ध्वनियों से बना हुआ है, किन्तु (विशेषतः अपनी रोमन लेखनपद्धति के प्रभाव से) हम यह प्रश्न उठा सकते हैं कि क्या इसका पहला स्वनिम वही है जो thick का पहला स्वनिम है, या नहीं। एक बार यदि हमें शब्द-युग्म thigh और thy अथवा mouth और mouthe मिल जाएँ तो हमें उन दोनों को भिन्न-भिन्न स्वनिम सिद्ध करने में कठिनाई न होगी।

5.5 अतएव किसी उच्चार के स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षणों में से कुछ परिच्छेदक हैं और ये क्रमिक उच्चारों में पहिचान-योग्य और अपेक्षाकृत अचर आकृति में मिलते हैं। ये परिच्छेदक अभिलक्षण समूह में मिलते हैं और उनमें से प्रत्येक एक स्वनिम (फ़ोनीम) कहलाता है। वक्ता को ऐसी दीक्षा मिली होती है कि वह ध्वनिजनक संचालनों को ऐसा करता है कि स्वनिम अभिलक्षण ध्वनि-तरंगों में मिलने लगते हैं और उसे ऐसी दीक्षा भी मिली होती है कि वह केवल इन्हीं अभिलक्षणों पर अनुक्रिया करता है और शेष कान तक पहुँचने वाले स्थूल ध्वानिकीय सूचनाओं की उपेक्षा करता है।

अपरिच्छेदक सामग्री से विलग शुद्ध दशा में परिच्छेदक अभिलक्षणों को

उत्पन्न करने के सभी प्रयत्न बेकार होंगे। उदाहरण के लिए अंग्रेजी शब्दों में स्वराघात का महत्त्व नहीं है अर्थात् उच्चार में विद्यमान स्वराघात के अभिलक्षण अपरिच्छेदक हैं, किन्तु कोई भी अंग्रेजी वक्ता man जैसे शब्द को सर्वथा बिना स्वराघात के अभिलक्षणों के नहीं बोल सकता है। शब्द के उच्चार में कहीं-न-कहीं स्वराघात अवश्य रहेगा—समतल, आरोही, अवरोही, उच्च, मध्य, निम्न आदि। भाषा के स्वनिम (फोनीम) ध्वनियाँ नहीं हैं, वे केवल ध्वनियों के अभिलक्षण हैं, जिन्हें उत्पन्न करने की वक्ता को और जिन्हें वास्तविक भाषणध्वनि में पहिचानने की वैसी ही दीक्षा है जैसा कि मोटर-चालक को लाल संकेत चिन्ह के आगे रोक देने की, चाहे वह बिजली का संकेत हो, चाहे लैम्प या झंडी का, यद्यपि इन वास्तविक संकेतों से पृथक् कोई अमूर्त ललाई नहीं होती है।

वास्तव में, जब हम पास से निरीक्षण करते हैं, विशेषतः अपने से अपरिचित भाषा में, तब प्रायः अपरिच्छेदक अभिलक्षणों को विस्तीर्ण परास (परिसर) में पाते हैं और परिच्छेदक अभिलक्षणों में अपेक्षाकृत कुछ संगति पाते हैं। मिनामनी (अमेरिकन) भाषा में 'जले' के लिए प्रयुक्त शब्द को हम nipew से यहाँ प्रदर्शित करेंगे, किन्तु मध्यवर्ती स्पर्श व्यंजन कभी तो हमें प p सुनाई पड़ता है और कभी ब b। कारण यह है कि इस भाषा में स्वनिमीय (अर्थात् अपरिहार्य) अभिलक्षण केवल इतना है कि दोनों ओंठ बन्द रहें और प्रश्वास नासिका-विवर से न निकले। अन्य अभिलक्षण जिनमें वे अभिलक्षण भी सम्मिलित हैं, जिनसे हम p और b में भेद करते हैं, इस भाषा में अपरिच्छेदक हैं। इसके विपरीत, व्यंजन के पूर्व निश्वास का ज़रा-सा झटका अथवा गले में ज़रा-सी रुकावट—जो दोनों अंग्रेजी (अथवा हिन्दी) श्रोता के कानों से कदाचित् छूट जाएँगे—इस मिनामनी भाषा में दो पूर्णतया विभिन्न स्वनिम उत्पन्न करते हैं, और ये सामान्य p-b स्वनिम से प्रभिन्न हैं।

इसी प्रकार एक चीनी प्रेक्षक, जिसे पहले से चेतावनी नहीं दी गई है, कदाचित् काफी परेशान होता रहेगा जब तक कि उसे यह पता नहीं चल पाएगा कि अंग्रेजी शब्दों का 'एक ही' अर्थ होता है चाहे उसे किसी भी स्वराघात से बोला जाए।

आंशिकरूप में अपरिच्छेदक लक्षणों पर पर्याप्त परम्परागत विवेचन उपलब्ध है। जब एक विदेशी वक्ता हमारे स्वनिमों का ऐसा प्रयोग करता है कि हम उसके प्रयोजन को तो समझ जाते हैं, किन्तु वह अपरिच्छेदक अभिलक्षणों को हमारी आदत के अनुसार प्रयुक्त नहीं कर पाता है, तो हम कहते हैं कि वह हमारी भाषा तो पर्याप्त बोल पाता है किन्तु बोली में विदेशीपना (foreign

accent) है। अंग्रेजी में, उदाहरण के लिए, pin, tin, kick का प्रथम स्वनिम स्पर्शमोचन के समय निःश्वास के कुछ ज़ोर से (महाप्राणत्व से) बोला जाता है, किन्तु इनके पूर्व यदि s आए, जैसे spin, stick, skin तो यह महाप्राणत्व सामान्यतया नहीं रहता है। चूंकि यह भेद परिच्छेदक नहीं है अतएव एक विदेशी वक्ता, जो इसे स्पष्टतया भिन्न नहीं बोल पाता है, समझ में तो आ जाता है किन्तु उसकी बोली अंग्रेजों को अजीब-सी लगती है ।

फ्रेंच-लोग प्रायः इस सम्बन्ध में असफल होते हैं क्योंकि फ्रेंच में अंग्रेजी से मिलते p, t, k स्वनिम सदैव महाप्राणत्व के बिना बोले जाते हैं। इसके विपरीत, एक अंग्रेज अथवा अमेरिकन जो समझ जाने योग्य पर्याप्त अच्छी फ्रेंच बोल लेता है p, t, k, को महाप्राणत्व से बोल-बोलकर फ्रेंच-वक्ताओं को असन्तुष्ट कर सकता है ।

अपरिच्छेदक अभिलक्षण सभी भाँति के वितरणों में मिलते हैं। अमेरिकन अंग्रेजी की अधिकांश बोलियों में water अथवा butter जैसे शब्दों में मिलने वाला t- स्वनिम कुछ ऐसा बोला जाता है कि जिह्वा-नोक ऊपरी वर्त्स से प्रायः क्षणिक स्पर्शमात्र करती है, और इस प्रकार बोली ध्वनि अमेरिका में तो d- स्वनिम को ही पर्याप्ततया प्रदर्शित करती है। किन्तु इंग्लैण्ड में यह उच्चारण-भेद अज्ञात है और इस उच्चारण से वे प्रायः स्वनिम का कोई रूपान्तर समझते हैं। इसी कारण अमेरिकन लोगों को यह अनुभव होता है कि वे अंग्रेजों से समझे नहीं गए हैं जबकि वे पानी (water) मांगते हैं ।

साधारणतया अपरिच्छेदक अभिलक्षणों की परिवर्तिता सीमित होती है। और एक स्वनिम (फोनीम) उस भाषा के अन्य स्वनिमों से प्रभिन्न रक्खा जाता है। इस प्रकार pen जैसे शब्द का स्वर अनेक-अनेक भाँति बोला जाता है किन्तु उस भाँति कदापि नहीं बोला जाता है जिस प्रकार pin का स्वर बोला जाता है, या pan का स्वर बोला जाता है। तीनों उच्चारण-प्रकार दृढ़ता से प्रभिन्न बनाए रक्खे जाते हैं ।

5.6 यह तथ्य कि एक भाषा या बोली में परिच्छेदक अन्तर अन्य भाषाओं में अपरिच्छेदक है और विभिन्न स्वनिमों के बीच की सीमा विभिन्न भाषाओं और बोलियों में भिन्न-भिन्न है, तब सर्वाधिक स्पष्ट होता है जब हम किसी विदेशी भाषा या बोली को सुनते हैं या बोलने का प्रयत्न करते हैं। अमेरिकन इंगलिश किस प्रकार इंग्लैण्ड में ग़लत समझी जा सकती है, इसका एक उदाहरण अभी ऊपर दिया गया है। अमेरिकन इंगलिश में fob, bomb, hot आदि शब्दों का स्वर, ब्रिटिश अंग्रेजी के far, balm, pa आदि शब्दों के स्वर से बहुत

अधिक मिलता है, अमेरिकन-इंग्लिश की कुछ बोलियों में शब्दों की इन दो श्रेणियों में वास्तव में एक-ही सा स्वर बोला जाता है। दक्षिणी प्रान्त के अंग्रेजों ने far जैसी शब्दों की r ध्वनि का लोप कर दिया है। लन्दन का एक गाड़ी-चालक लेखक को नहीं समझ पाया जब कि लेखक ने comedy theatre ले चलने को कहा, क्योंकि तब वे भूल गए थे कि वे लन्दन में हैं और असावधानी से comedy के प्रथम स्वर को अमेरिकन-ढंग से बोल गए थे, और इस उच्चारण को अंग्रेज केवल car जैसे शब्द में मिलनेवाले स्वर-स्वनिम से सम्बद्ध कर सकते हैं, अतएव गाड़ी चालक ने carmody theatre सुना, और ऐसा कोई स्थान लन्दन में है ही नहीं।

जब हम किसी विदेशी भाषा या बोली बोलने का प्रयास करते हैं, तो इसकी पर्याप्त संभावना रहती है कि हम उस बोली के स्वनिमों के स्थान पर तत्समान निजी भाषा या बोली के स्वनिमों को प्रयुक्त करने लगें। कभी-कभी हमारे निजी स्वनिम और विदेशी स्वनिम अंशतः समक्षेत्री हो जाते हैं, फलस्वरूप उच्चारण का कुछ अंश सही होता है और कुछ अंश विदेशी ध्वनि की सीमा के बाहर होता है। इस प्रकार एक अमेरिकन, जो अंग्रेजी शब्द ma'm के स्वर के समान फ्रेंच शब्द meme ('वही') बोलता है, आंशिक रूप से फ्रेंच स्वनिम के परम्परागत उच्चारण का अनुकरण करता है किन्तु अधिकांश रूप में एक ऐसी ध्वनि उत्पन्न करता है जो कि निश्चयतः फ्रेंच-लोग से सुनने में अभ्यस्त स्वरध्वनि से भिन्न है।

ऐसी स्थितियों में विषमता इस कारण नहीं आ पाती है कि श्रोता में स्वयं अनुपूरक अयथार्थता होती है जब हम विदेशी भाषण ध्वनियाँ सुनते हैं तो हम ऐसी अनुक्रिया करते हैं कि मानों उनमें अपनी निजी भाषा के ध्वानिकीय-समान कुछ स्वनिमों की विशेषताएँ हैं। विभेद हमें विक्षुब्ध करते हैं और हम कहते हैं कि विदेशी गड़बड़ाकर बोल रहा है या अजीब ढंग से बोल रहा है, किन्तु हम यह नहीं जान पाते कि भेद है कहाँ। अपने उदाहरण में, एक फ्रेंच-आदमी अमेरिकन के même के उच्चारण को अधिकतर समझ लेता है चाहे उस उच्चारण में कोई ऐसा स्वर उच्चरित हो रहा हो, जो फ्रेंच व्यक्ति के निजी उच्चारण में कभी भी न आता हो। फिर भी, यदि हमारा उच्चारण भेद विदेशी स्वनिम से बहुत दूर का है और विशेषतः विदेशी भाषा के किसी अन्य स्वनिम से मिलने लगा है तो हम ग़लत समझे जाएँगे। इस प्रकार फ्रेंच même के लिए प्रयुक्त अमेरिकन ma'm के कुछ उच्चारण बिल्कुल नहीं समझे जाएँगे क्योंकि फ्रेंच व्यक्ति उसे भिन्न स्वनिम का जैसे, lame ('फलक') शब्द में मिलने वाले स्वनिम का, उच्चारण भेद (उच्चारणान्तर) मानता है।

यह परिभ्रान्ति (द्विविधा) और भी गम्भीर हो जाती है यदि दो या तीन विदेशी स्वनिम निजी भाषा के किसी एक स्वनिम के सदृश हो जाते हैं। हमारा बचपन का भाषा-ग्रहण हमें ऐसी दीक्षा देता है कि हम उन अन्तरों की उपेक्षा करने लगते हैं जो हमारी भाषा में परिच्छेदक (स्वनिमीय) नहीं हैं। एक अंग्रेजी वक्ता मिनामनी भाषा के इन रूपों में—a' käh (हाँ, अवश्य), ahkäh (केतली) और akähsemen (प्लम का फल) के प्रथम भाग में—कोई अन्तर नहीं सुन पाता है। इन रूपों में से प्रथम अंग्रेजी से मिलते स्वनिम के पूर्व गले में कुछ पकड़-सी (काकल्य स्पर्श) होती है जिसे यहाँ ऊर्ध्वचिन्ह (') से प्रदर्शित किया गया है, द्वितीय में k के साथ श्वास का झटका (महाप्राणत्व) भी है जिसे यहाँ h से प्रदर्शित किया गया है, और तृतीय में ये अभिलक्षण नहीं हैं। अंग्रेजी वक्ता को बचपन में ही सिखा दिया गया है कि गले की कुछ पकड़ या व्यंजन के पूर्व कुछ महाप्राणत्व पर कोई अनुक्रिया नहीं करनी चाहिए, यदि कोई साथी ऐसा करता है तो उसके ऐसे करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

मिनामनी वक्ता, इसके विपरीत, अंग्रेजी के t और d के भेद को पहिचान नहीं पाता है। उसे bad और bat ये शब्द एक-से सुनाई पड़ते हैं। उदाहरण के लिए, इसी कारण, मिनामनी लोगों ने Swede शब्द को sweet (मीठा) से अनूदित किया है मानों उसका सम्बन्ध sayĕwe net (मीठा) से हो। मिनामनी में एक ऐसा स्वनिम अवश्य है जो t और d दोनों से मिलता है और मिनामनी वक्ता निस्सन्देह प्रायः इस स्वनिम के उच्चारणान्तरों को बोलता है जो t स्वनिम की सीमा में आते हैं और कभी-कभी d स्वनिम की सीमा में आ पड़ते हैं; किन्तु बचपन से उसे सिखाया गया है कि ध्वनि के ये भेद उपेक्षणीय हैं।

जब हम विदेशी भाषा बोलने का प्रयत्न करते हैं तो हम, ऐसे स्थलों पर, कई विदेशी स्वनिमों को अपने एक स्वनिम से उच्चारित करते हैं। उस भाषा का नैसर्गिक वक्ता भी हमारे स्वनिम पर ऐसी अनुक्रिया करता है कि मानों वह उसके कई स्वनिमों में से एक है। इस प्रकार, एक जर्मन tin और thin के प्रारम्भिक स्वनिमों में कोई अन्तर नहीं सुनता है क्योंकि ये दोनों उसके निजी स्वनिमों में से एक से मिलते हैं। जब वह अंग्रेजी बोलता है तो वह अपना जर्मन स्वनिम प्रयुक्त करता है। उसे सुनकर अंग्रेज ऐसी अनुक्रिया करते हैं कि वह मानों उनका t स्वनिम है। कम-से-कम इस निष्कर्ष में तो वे ठीक हैं कि जर्मन-वक्ता tin और thin भेद नहीं कर पाता है। बिल्कुल इसी प्रकार जब अंग्रेजी वक्ता जर्मन भाषा सुनता है तो वह उनके दो भिन्न स्वनिमों पर

ऐसी अनुक्रिया करता है कि मानों वे अंग्रेजी के उस एक स्वनिम से तादात्म्य वाले हों जो कि cat जैसे शब्दों के प्रारम्भ में है, और फलस्वरूप वह कुछ शब्दों में, जो जर्मन के अनुसार विभिन्न हैं, भेद करने में असफल होता है।

अन्य स्थलों पर, विदेशी भाषा के कई स्वनिमों के स्थान पर जो अपना एक स्वनिम स्थापित करते हैं वह ध्वानिकीय दृष्टि से मध्यवर्ती होता है और उस भाषा के नैसर्गिक वक्ता हमें ध्वनियों को अदलता-बदलता पाते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी p और b के क्षेत्र में कुछ जर्मनों (जैसे एलसेशन Alsatians) के पास एक स्वनिम हैं जिसकी मध्यवर्ती ध्वानिकीय विशेषताएँ हैं, और अंग्रेजी बोलते समय वे उसे इन दोनों (p, b) के स्थान पर बोलते हैं। जब वे अंग्रेजी का pie बोलते हैं, तो अंग्रेजी वक्ता उसके b के ओर झुकाव से प्रभावित होकर ऐसी अनुक्रिया करता है कि मानों buy शब्द बोला है, और उसके विपरीत जब वह buy बोलता है तो उस मध्यवर्ती स्वनिम के p की ओर झुकाव से प्रभावित होकर ऐसी अनुक्रिया करते हैं कि मानों उसने pie बोला हो। अतएव अंग्रेजों (और फ्रेंच लोगों) को ऐसा लगता है कि जर्मन दोनों ध्वनियाँ p और b बोल तो लेता है लेकिन शायद दुराग्रह से एक के स्थान पर दूसरा बोलता है।

सबसे अधिक कठिनाई तब होती है जब कोई भाषा उन अभिलक्षणों का महत्त्वपूर्ण प्रयोग करती है जो हमारी भाषा में हैं ही नहीं। अंग्रेजी वक्ता, जो चीनी (या उसी प्रकार की कोई भाषा) सुनता है, समझ नहीं पाता है या समझाते हुए बोल नहीं पाता है जब तक कि सापेक्षिक सुर (स्वराघात) के भेदें को, जो कि प्रत्येक अक्षर पर महत्त्वपूर्ण है, वह जान नहीं पाता और सुनने व बोलने में समर्थ नहीं हो पाता है। पहले वह उन पर अनुक्रिया नहीं कर पाता है क्योंकि बचपन से उसे ऐसी दीक्षा मिली है कि man जैसे शब्द के क्रमिक उच्चारों में विभिन्न सुर (स्वराघात) का होना कोई महत्त्व की वस्तु नहीं है। किन्तु इसके विपरीत चीनी बच्चा ऐसा दीक्षित किया जाता है कि वह सुरों (स्वराघातों) के विभिन्न प्रकारों पर अनुक्रिया करता है।

जब विदेशी भाषा में सामान्य ध्वानिकीय प्रतिरूप का केवल एक स्वनिम है जहाँ हमारी भाषा में एक से अधिक स्वनिम हैं, तब हमें प्रायः ऐसा लगता है कि मानों विदेशी नितान्त भिन्न ध्वनियों को बिना उचित भेद के प्रयुक्त कर रहा है। इस प्रकार मिनामनी के या अल्सेशन के p-b स्वनिम अंग्रेजों के कान में कभी p और कभी b सुनाई पड़ेंगे।

कुछ व्यक्तियों में विदेशी भाषण ध्वनियों को सुनने व बोलने की स्वाभाविक

रुझान होती है, ऐसे व्यक्तियों को हम अच्छा अनुकरण-करने वाला मानते हैं या कहते हैं कि उनके कान तेज हैं। अधिकांश अन्य व्यक्ति समय से समझना और समझाना सीख लेते हैं यदि वे विदेशी-भाषा को काफी सुनें था वे यत्न-पूर्वक सिखाए जाएँ। व्यावहारिक-ध्वनिविज्ञान के जानने वाले कभी-कभी सभी भाँति के अद्भुत ध्वनियों को बोलने में और पृथक्-पृथक् पहिचानने में निपुणता प्राप्त कर लेते हैं। इसमें भी, निश्चय ही, भाषावैज्ञानिक कार्यों में कुछ खतरा है। अनेक प्रकार की ध्वनियों का पृथक्-पृथक् सुनना सीखकर ध्वनिविज्ञानविद् नई या परिचित भाषा में उन नए सीखे हुए भेदों को अंकित करने का हठ करता है चाहे वे उस भाषा में अपरिच्छेदक हों और उनका कुछ भी महत्त्व न हो। उदाहरण के लिए भाषा के अध्ययन में p, t, k के महाप्राणयुक्त रूप (जैसे pin, tin, kick आदि शब्दों में) और महाप्राणहीन रूप (जैसे फ्रेंच में या spin, stick, skin जैसे शब्दों में) के भेद, सीखकर ध्वनिविज्ञान-विद् अंग्रेजी के अंकनों में जहाँ-जहाँ उसे सुनाई पड़ा है वहाँ-वहाँ महाप्राणत्व के चिन्ह भर देगा, हालाँकि उन चिन्हों के होने या न होने से कहे हुए के अर्थों में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। इस प्रक्रिया के विरुद्ध मुख्य आपत्ति यह है कि यह असंगत है। ध्वनिविज्ञानविद् की यह योग्यता वैयक्तिक और आकस्मिक है वह उन ध्वानिकीय अभिलक्षणों को सुनता है जिन्हें उसने अपनी जानी-पहचानी भाषाओं में पृथक् किया है। उसके सर्वाधिक यथार्थ अंकनों में भी ध्वनियों के असंख्य अपरिच्छेदक अभिलक्षण छूट जाएँगे। अंकनों में जो अपरिच्छेदक अभिलक्षण दिखाई पड़ रहे हैं, वे इस प्रकार आकस्मिक और वैयक्तिक कारकों से चुने गए हैं। इसमें कोई आपत्ति नहीं है कि एक भाषा-वैज्ञानिक उन सब ध्वानिकीय अभिलक्षणों को वर्णित करे जो वह सुनता है किन्तु आपत्ति तब उठती है जब वह उन्हें स्वनिमीय अभिलक्षणों से मिलाने लगता है। उसे यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि अपरिच्छेदक अभिलक्षणों का उसका सुनना उसकी वैयक्तिक अर्जित योग्यता पर निर्भर है और उसका सर्वाधिक विस्तृत वर्णन (अंकन) मशीन द्वारा लिए अंकनों के मूल्य को दूर से भी पहुँच नहीं पाता है।

केवल दो प्रकार के भाषाई अंकन वैज्ञानिक रूप से प्रसंगोचित हैं। पहले में वे मशीनों द्वारा स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षणों के अंकन आते हैं जो कि ध्वनि-विज्ञान-प्रयोग शाला में लिए गए हैं। दूसरे स्वनिम-सापेक्ष अंकन हैं जहाँ भाषा के लिए अपरिच्छेदक सभी अभिलक्षण छोड़ दिए जाते हैं। जब तक कि ध्वानिकी (acoustics) का हमारा ज्ञान वर्तमान स्थिति से कहीं अधिक उन्नत नहीं

हो जाता है तब तक दूसरे प्रकार के अंकन ही किसी ऐसे अध्ययन में प्रयुक्त हो सकेंगे जोकि कथित उच्चार के अर्थों पर भी समुचित विचार कर रहा है।

वस्तुतः, प्रयोगशालीय-ध्वनिविज्ञान का जानकार प्रायः दूसरे स्रोतों से अपनी अधीत भाषणध्वनियों का स्वनिमीय रूप जानता है। वह प्रायः अपनी समस्याओं को शुद्ध ध्वानिकीय शब्दावली में प्रस्तुत नहीं करता है, बल्कि व्यावहारिक-ध्वनिविज्ञान से गृहीत शब्दावली में प्रयुक्त करता है।

5.7 अपने निरीक्षणों को अंकित करने के लिए हमें एक लिखित संकेतों की ऐसी पद्धति की आवश्यकता पड़ती है जिसमें अंकनीय भाषा के प्रत्येक स्वनिम के लिए केवल एक लिपिचिन्ह हो। संकेतों का ऐसा समुच्चय स्वनवर्णमाला (phonetic alphabet) कहलाता है, और इन संकेतों में भाषण को अंकित करना स्वन-प्रतिलेखन (phonetic transcription (अथवा केवल प्रतिलेखन) कहलाता है।

प्रत्येक स्वनिम के लिए एक संकेत रक्खा जाए, यह सिद्धान्त परम्परागत वर्णात्म (alphabetic) लिपियों में माना जाता है किन्तु परम्परागत लिपिप्रणालियाँ इस नियम का भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए पर्याप्त मात्रा में पालन नहीं करती हैं। रोमन-लिपि में sun और son विभिन्न लिखे जाते हैं किन्तु दोनों में एक ही स्वनिम है। इसके विपरीत lead (संज्ञा) और lead (क्रिया) अभिन्न लिखे जाते हैं यद्यपि इनके स्वनिम भिन्न-भिन्न हैं। शब्द oh, owe, so, sew, sow, hoe, beau, though इन सबके अन्त में एक ही स्वनिम है यद्यपि लिपि में भिन्न-भिन्न प्रदर्शित किए गए हैं। शब्द though, bough, through cough, tough, hiccough विभिन्न स्वनिमों में अन्त होते हैं किन्तु लिपिचिन्ह--ough से ही प्रदर्शित हैं। रोमन का x चिन्ह अनावश्यक है, क्योंकि इसके द्वारा भी स्वनिम युग्म ks (जैसे, tax में) अथवा gz (जैसे, examine में) प्रदर्शित किया जाता है। रोमन का c चिन्ह भी अनावश्यक है, क्योंकि वह स्वनिम k को (जैसे cat में) अथवा स्वनिम s को (जैसे cent में) प्रदर्शित करता है। यद्यपि jam के पहले स्वनिम के लिए लिपिचिन्ह j है, फिर भी इसी स्वनिम को g से (जैसे gem में) भी प्रदर्शित करते हैं। शिकागो में बोली जाने वाली मानक अंग्रेजी में 32 सरल मुख्य स्वनिम हैं और रोमन के 26 चिन्ह उन्हें स्वनात्मरूप में अंकित करने में नितान्त असमर्थ हैं। कुछ स्वनिमों के लिए चिन्ह-युग्म (digraphs) प्रयुक्त किए जाते हैं, जैसे thin में प्रारम्भिक स्वनिम के लिए th, chin में ch, shin में sh, sing में अन्तिम स्वनिम के लिए

ng—इस प्रयोग से असंगति और बढ़ती है। then में चिन्ह-युग्म th—एक भिन्न स्वनिम को प्रदर्शित करता है, और hot house में दो स्वनिमों को जो कि सामान्यतया पृथक् चिन्हों t और h से प्रदर्शित किए जाते हैं, और Thomas में उस स्वनिम को जिसे सामान्यतया t से प्रदर्शित किया जाता है। singer में ng एकल स्वनिम के लिए है जैसे sing में, किन्तु finger में चिन्ह-युग्म ng द्वारा यह स्वनिम और साथ में सामान्यतया g से (जैसे go में) प्रयुक्त स्वनिम, दोनों, प्रदर्शित होते हैं। यह परम्परागत वर्णात्मि लिपि केवल कुछ ही भाषाओं में यथार्थता प्रदर्शित करती है, जैसे स्पेनी, बोहेमी, पोली और फ़ीनी। इन भाषाओं में यह लिपि उन व्यक्तियों द्वारा स्थिर की गई है अथवा सुधार कर प्रयुक्त की गई है जिन्होंने अपनी भाषाओं की स्वनिमीय पद्धति पता लगा ली थी।

5.8 परम्परागत लेखन की अपूर्णताओं को और अपनी (रोमन या लैटिन) वर्णमाला में पर्याप्त चिन्हों की कमी देखकर विद्वानों ने अनेक स्वन-वर्णमाला गढ़ीं।

इनमें से कुछ पद्धतियाँ हमारे लेखन के परम्परागत अभ्यासों से नितान्त भिन्न हैं। इनमें बेल (Bell) महोदय की "दृश्य-भाषण" (विज़िबल स्पीच—Visible speech) पद्धति सर्वाधिक प्रसिद्ध है, मुख्यतया इस कारण कि हेनरी स्वीट (Henry Sweet) (1845-1912) ने इसे प्रयुक्त किया। इस वर्णमाला के चिन्ह विभिन्न स्वनिमों के उच्चारण में स्थिति वागिन्द्रियों के सरल और स्थिरीकृत आरेख हैं। 'विज़िबल स्पीच' को लिखना कठिन और छापना बड़ा मंहगा है।

एक दूसरी पद्धति, जो कि ऐतिहासिक परम्परा से भिन्न है, येस्पर्सन महोदय की "मिश्र-संकेतपद्धति" (Analpha betic Notation) है। इसमें प्रत्येक स्वनिम को एक संकेत समुच्चय से प्रदर्शित किया जाता है जिसमें ग्रीक लिपि-चिन्ह, अरबी संख्या-चिन्ह, और रोमन चिन्ह (घातांकरूप में)—सभी प्रयुक्त होते हैं। प्रत्येक ग्रीक लिपिचिन्ह एक वागिन्द्रिय का द्योतक है, प्रत्येक संख्या चिन्ह विवृति (opening) की मात्रा का द्योतक है। जैसे, अ ओठों को प्रदर्शित करता है o संवृति को, इस प्रकार ao सूत्रों में उन सब स्वनिमों के प्रदर्शन में प्रयुक्त होगा जिसमें ओंठ बन्द है, जैसे p, b, m। अंग्रेजी के m (जैसे man में) के लिए सूत्र है ao δ2 ε1 जहाँ δ2 का तात्पर्य है कि पश्चतालु झुकाया गया है और ε1 का तात्पर्य है कि घोष-तंत्रियाँ कम्पन में हैं। इस संकेत-पद्धति की श्रेष्ठता स्पष्ट है, किन्तु निस्सन्देह यह पूरे-पूरे उच्चारों को अंकित करने के लिए नहीं बनाई गई है।

अधिकांश स्वन-वर्णमाला परम्परागत वर्णमाला के आपरिवर्तन हैं। सामान्य लिपिचिन्हों की संख्या की कमी को ये कई युक्तियों द्वारा पूरी करती हैं, जैसे लघु-आकार बृहत्-अक्षर (small capital), ग्रीक वर्णमाला के चिन्ह, परम्परागत चिन्हों के विकार, परम्परागत चिन्हों में ऊपर नीचे गौण चिन्ह लगाना (जैसे, ā,ä) आदि। इस भांति की अनेक लिपिपद्धतियाँ हैं (वर्णमालाएँ हैं), जैसे, अफ्रीकी-भाषाओं में लेप्सी (Lepsius) द्वारा, स्वेडी भाषाओं में लुण्डल (Lundell), द्वारा, जर्मन-बोलियों में ब्रेमर (Bremer) द्वारा, अमेरिकन आदिभाषाओं में "अमेरिकन नृतत्त्वशास्त्रीय परिषद्" (America । Anthropological Association) द्वारा। इस प्रस्तुत पुस्तक में अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनिविज्ञान-परिषद् ((International Phonetic Association) द्वारा प्रयुक्त वर्णमाला काम में लाई गई है, यह वर्णमाला एलिस (Ellis), स्वीट (Sweet), पैसी (Passy) और डैनियल जोन्स (Daniel Jones) द्वारा विकसित की गई थी। ध्वन्यात्म-वर्णमाला का एक स्थूल रूप अधिकांश शब्द कोशों में "उच्चारण संकेत" (key to pronunciation) के रूप में मिलता रहा है। ऐसी ही कुछ युक्तियाँ कुछ भाषाओं की परम्परागत लिपि में स्वयं विकसित हुई हैं, जैसे, जर्मन-लेखन में स्वरों पर दो बिन्दु लगाने की (ä, ö, ü), बोहेमी के लेखन में उपरिचिन्ह लगाने की (रोमन ch के लिए č, रोमन sh के लिए Š)। रूस और सर्बिया की वर्णमालाओं में ग्रीक-वर्णमाला को अनेक अतिरिक्त चिन्हों द्वारा पूरा किया गया है।

सिद्धान्त में एक स्वनात्म-वर्णमाला उतनी ही अच्छी है जितनी की दूसरी, क्योंकि उसके लिए एकाध दर्जन संकेत चाहिएँ जो अंकनीय भाषा के प्रत्येक स्वनिम को प्रदर्शित कर दें। किन्तु व्यवहार में सभी वर्णमालाओं में गम्भीर अपूर्णताएँ मिलती हैं। जब वे रची गई थीं तब स्वनिम-सिद्धान्त स्पष्ट रूप में सम्मान्य न हो पाया था। वर्णमाला स्थिर करने वालों का उद्देश्य यह था कि वर्णमाला इतनी समृद्ध और लचीली हो कि किसी भी भाषा में प्रयुक्त किसी भी ध्वानिकीय तत्त्व को संकेतबद्ध करने में असमर्थ न हो पाए। अब यह स्पष्ट हो गया है कि ऐसा अंकन केवल ध्वनितरंगों का मशीनकृत अंकन हो सकता है जिसमें कोई भी उच्चार एक-से नहीं होते हैं। व्यवहार में, स्वनिमीय सिद्धान्त अपने-आप आ जाता है, प्रायः प्रत्येक स्वनिम के लिए एक संकेत प्रयुक्त किया जाता था, किन्तु ये संकेत अत्यन्त विभेदीकृत थे और ऊपर-नीचे चिन्हों से भरपूर थे ताकि "यथार्थ" ध्वानिकीय मान प्रदर्शित हो सकें। इस भांति विभिन्नीकृत विभेद वे ही थे जो उस समय ध्वनिविज्ञानियों द्वारा पकड़ में आ पाए थे। हेनरी

स्वीट ने अपेक्षाकृत एक सरल युक्ति अपनाई। वह लैटिन (रोमन) लिपि पर आधारित थी, उसे उसने रोमिक (Romic) कहा और "विज़िबल स्पीच" के साथ प्रयुक्त किया। जब उन्हें स्वनिमीय-सिद्धान्त स्पष्ट हुए तो उन्हें यह लगा कि रोमिक संकेतपद्धति अधिक सरल करने पर भी पर्याप्त बनी रहेगी। तद-नुसार उन्होंने एक सरलीकृत रूप, "स्थूल रोमिक" (Broad Romic), अपनाया। इसमें प्रत्येक स्वनिम के लिए एक-एक संकेत था। किन्तु वे फिर भी इसमें विश्वास करते थे कि अधिक जटिल रूप "सूक्ष्म रोमिक" (Narrow Romic) "अधिक यथार्थ" और वैज्ञानिक कार्यों में अधिक उपयुक्त है।

स्वीट महोदय के रोमिक से अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनिविज्ञान परिषद् की वर्ण-माला विकसित हुई। इसमें रोमन संकेतों के अतिरिक्त कुछ बनाए हुए लिपि-चिन्ह और कुछ ऊपर-नीचे वाले चिन्ह हैं। कुछ अपरिवर्तनों के साथ हम इसे इस पुस्तक में प्रयुक्त कर रहे हैं और जैसी कि परम्परा है ध्वन्यात्म-संकेत में छपी सामग्री को बड़े-कोष्ठक चिन्हों के बीच रक्खा है।

अन्तर्राष्ट्रीय वर्णमाला के मूल में यह सिद्धान्त है कि सामान्य लिपिचिन्हों को प्रायः वही मान दिया जाए जो उनका कुछ प्रमुख योरोपीय भाषाओं में है, और जब कभी किसी प्रकार विशेष स्वनिम सामान्य लिपिचिन्हों की संख्या से अधिक हों तब कुछ कृत्रिम चिन्हों से या ऊपर-नीचे के चिन्हों से यह कमी पूरी की जाए। इस प्रकार, अगर किसी भाषा में अंग्रेजी (t ध्वनि के) सामान्य-प्रकार का एक स्वनिम है, तो इस स्वनिम को [t] से सूचित करेंगे चाहे वह ध्वानिकीय दृष्टि से अंग्रेजी ध्वनि से मिलता हो, चाहे फ्रेंच ध्वनि से। किन्तु यदि भाषा में इस सामान्य-प्रकार के दो स्वनिम हैं, तो उनमें से केवल एक को [t] से सूचित कर सकते हैं और दूसरे के लिए कोई युक्ति अपनानी पड़ेगी और उसे चाहे [T] या [*t*] या और किसी युक्ति से प्रदर्शित करना होगा। इसी प्रकार यदि किसी भाषा में pen में उच्चारित ध्वनि के सामान्य-प्रकार के दो स्वनिम हैं तो एक के लिए [e] और दूसरे के लिए पूरक संकेत (ɛ) (जैसे pan (pɛn) में प्रयुक्त करते हैं।

सन् 1912 जैसे पूर्वकाल में निश्चित ये अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनिविज्ञान-परिषद् के सिद्धान्त स्वयं उसके सदस्यों द्वारा उपेक्षित रहे। अधिकांश ध्वनिविद् उस समय, जब स्वनिमीय-सिद्धान्त को मान्यता नहीं मिली थी, समय की परम्परा से अपने को विच्छिन्न करने में असमर्थ थे। इस प्रकार, अधिकांश लेखक अंग्रेजी स्वनिमों के लिए विचित्र-विचित्र संकेत प्रयुक्त करने लगे थे क्योंकि उन्हें पता

था कि अंग्रेजी स्वनिम तदनुरूप फ्रेंच स्वनिमों से भिन्न हैं। उदाहरण के लिए फ्रेंच eau [o] "जल" के स्वनिम के लिए संकेत [o] स्थिर कर लेने के बाद, ये लेखक son में अंग्रेजी स्वर को अंकित करने में यह संकेत नहीं प्रयुक्त करते थे, क्योंकि अंग्रेजी स्वनिम फ्रेंच स्वनिम से भिन्न है। पुस्तक के इस संस्करण में जहां ब्रिटिश उच्चारण के उदाहरण दिए गए हैं, वहां परम्परागत लेखन, जैसे top[tɔp] अपनाया गया है।

जहाँ कई भाषाओं या बोलियों का विवेचन हो रहा हो, वहाँ प्रत्येक को उसके अपने स्वनिमों द्वारा अंकित करना चाहिए। स्वनिमों में मिलने वाले अन्तरों का यथासम्भव वर्णन एक शाब्दिक विवरण द्वारा दे देना चाहिए किन्तु अपने संकेतों को उनसे मुक्त रखना चाहिए। इस प्रकार, एक ध्वनिविज्ञानी भी, जो समझता है कि वह शिकागो में और लन्दन में बोले जाने वाली मानक-अंग्रेजी के स्वनिमों के अन्तरों को यथार्थ-शब्दों से वर्णित कर सकता है, इन दोनों स्वनिमों के समुच्चय में से किसी एक के लिए विचित्र-विचित्र संकेतों को प्रयुक्त करके अपने विवरणों के मान को नहीं बढ़ा सकता है। यह जानकर कि सामान्य लिपिचिन्ह किसी अन्य भाषा के किंचित् भिन्न स्वनिमों को अंकित करने में प्रयुक्त हुए हैं, यदि वह दोनों के लिए इन अप्रयुक्त संकेतों को प्रयुक्त करता है, तो वह अंकन को केवल और दुर्बोध बना देगा।

एक संकेत, एक स्वनिम––यह सिद्धान्त बिना किसी हानि के आपरिवर्तित किया जा सकता है यदि इसमें कोई दुविधा (भ्रान्ति) नहीं उत्पन्न होती है। जहाँ किसी भ्रान्ति की संभावना नहीं है, वहाँ इस कड़े सिद्धान्त से हटना वांछित है बशर्ते कि ऐसा करने से उन अतिरिक्त संकेतों से बच जाता है जो पाठक को बाधा पहुँचाने वाले और छपाई में मंहगे हों। कुछ भाषाओं में अंग्रेजी [p, t, k] जैसी ध्वनियां कुछ महाप्राणत्व से बोली जाती हैं, और फ्रेंच महाप्राणत्वहीन [p, t, k] ध्वनियों से भिन्न हैं, उन भाषाओं में यदि (h) स्वनिम नहीं है या [h] स्वनिम कभी [p, t, k] के बाद नहीं आता है, तो पूर्वप्रकार के लिए [ph, th, kh] संयुक्त-संकेतों को प्रयुक्त करना सुरक्षित और सुविधाजनक रहेगा।

5.10 न केवल अनेक स्वनात्म वर्णमालाओं का अस्तित्व, बल्कि स्वन-प्रतिलेखन के साथ-साथ दो अन्य विधियों का भी बहुधा प्रयोग भाषाओं को अंकित करने में जटिलता उत्पन्न करता है।

इनमें एक विधि परम्परागत-लिपि में शब्दों व शब्दरूपों का उद्धरण

(citation) है। यह प्रायः तब प्रयुक्त की जाती है जब अंकनीय भाषा रोमनलिपि में लिखी जाती हो। लेखक यह पहले से मानकर चलता है कि पाठक को उच्चारण आता है, या, प्राचीन भाषाओं के सम्बन्ध में उच्चारण जानने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। 'उद्धरण-विधि' उन पाठकों की प्रायः सहायक है जो सामान्य लिपि से परिचित हैं, फिर भी उद्धरण के आगे प्रतिलेखन देना अच्छा रहता है, जैसे फ्रांसीसी eau [o] 'पानी'। प्राचीन भाषाओं के सम्बन्ध में भी उच्चारण का अनुमान लगाना उपयोगी होता है, जैसे पुरानी अंग्रेजी geoc [jok] 'जुआ'। केवल बोहेमी अथवा फ़ीनी जैसी भाषाओं में, जहाँ परम्परागत लिपि पूर्णतया ध्वन्यात्म है, प्रतिलेखन को हटाया जा सकता है। लैटिन भाषा के सम्बन्ध में उद्धरण में दीर्घ स्वरों के ऊपर सीधी रेखा ही (जैसे, amāre 'प्यार करना') पर्याप्त है क्योंकि हम जानते हैं कि रोमन-लिपि ध्वन्यात्म थी सिवाय स्वरों के मामले में, जहाँ दीर्घ और ह्रस्व का अन्तर प्रदर्शित नहीं हो पाता था।

रोमन-लिपि प्रयुक्त न करने वाली भाषाओं में 'उद्धरण' का प्रयोग विरल है। प्रायः ग्रीक भाषा के, और उससे कम, रूसी के सबन्ध में 'उद्धरण' देने की प्रथा है, किन्तु यह सब प्रकार से अवांछनीय है। कुछ खर्चीले प्रकाशन हेब्रू, अरबी और संस्कृत टाईपों से भी उद्धरणों को मुद्रित करते हैं। समुचित अपवाद केवल चीनी अथवा प्राचीन मिश्री के हो सकते हैं जहाँ संकेतों का, जैसा कि आगे चलकर देखेंगे, अर्थगत मूल्य ध्वन्यात्म शब्दों में प्रदर्शित नहीं हो सकता हैं।

उन भाषाओं के सम्बन्ध में, जिनकी लिपि रोमन लिपि से भिन्न है, प्रायः **अनुलेखन** (लिप्यन्तरण) (transliteration) प्रयुक्त किया जाता है, न कि प्रतिलेखन। अनुलेखन में मूल वर्णमाला के प्रत्येक चिन्ह के लिए रोमन वर्णमाला का एक लिपिचिन्ह (अथवा एकाधिक लिपिचिन्ह, अथवा कोई बनावटी चिन्ह) निर्धारित कर दिया जाता है, और इस प्रकार तद्भाषीय लिपि को रोमन-लिपि में प्रस्तुत कर दिया जाता है। दुर्भाग्यवश, विभिन्न भाषाओं को अनुलेखित करने की विभिन्न परम्पराएँ बन गई हैं। संस्कृत को अनुलेखित करने में रोमन लिपिचिन्ह c संस्कृत के उस स्वनिम को प्रदर्शित करता है जो अंग्रेजी के chin जैसे शब्दों की आदि-ध्वनि में मिलता है, किन्तु स्लावीलिपि को अनुलेखित करने में यही लिपिचिन्ह hats में मिलने वाले अंग्रेजी संयोग ts को प्रदर्शित करता है। अधिकांश भाषावैज्ञानिक कार्यों में स्वनात्म प्रतिलेखन को प्रयुक्त करना श्रेयस्कर है।

5.11 अपनी वर्णात्म-लिपि से मिलने वाली सहायता के होते हुए भी, निजी भाषा के स्वनिमों की सूची बनाना कोई कठिन कार्य नहीं है। बस केवल मामूली संख्या में शब्दों को लेकर, जैसे pin के साथ किया था, प्रत्येक स्वनिम पहिचाना जा सकता है। विभिन्न भाषाओं में सरल प्राथमिक (simple primary) स्वनिमों की संख्या 15 से लेकर 50 है। शिकागो में बोली जाने वाली मानक अंग्रेजी में 32 स्वनिम हैं। संयुक्त-स्वनिम (compound phoneme) प्राथमिक (मूल) के संयोग हैं जो अर्थ में और शब्द संरचना में इकाई के समान आचरण करते हैं। buy जैसे शब्द में और संयुक्त स्वर far में मिलने वाले स्वर और yes के प्रारम्भिक स्वनिम के संयोग से बना माना जा सकता है। मानक अंग्रेजी में ऐसे 12 संयोग हैं।

किन्तु **गौण स्वनिमों** को (secondary phonemes) पहिचानना कुछ अधिक कठिन है। ये स्वयं में किसी सरल सार्थक भाषिक रूप के अंश नहीं हैं। ये केवल तब मिलते हैं जब दो या अधिक भाषिक रूप मिलकर एक बृहत्तर रूप बनाते हैं अथवा जब भाषिक रूप किसी विशेष ढंग से, जैसे वाक्य में, प्रयुक्त किये गए हैं। इस प्रकार अंग्रेजी में, जब कभी अनेक सरल भाषण-तत्त्वों को दो या अधिक अक्षर वाले शब्दों में संयोजित करते हैं, तब हम सदैव बलाघात (stress) का गौण स्वनिम प्रयुक्त करते हैं। इस बलाघात में इन अक्षरों में से किसी एक अक्षर को दूसरों की अपेक्षा अधिक बल (अधिक ज़ोर) देकर बोलते हैं। foretell में tell को fore की अपेक्षा अधिक बल मिलता है, किन्तु foresight में fore को sight की अपेक्षा अधिक बल है। संज्ञा contest में प्रथम अक्षर पर बलाघात है, और क्रिया contest में द्वितीय अक्षर पर। **सुर** स्वराघात (pitch) के अभिलक्षण भी अंग्रेजी में गौण स्वनिम के रूप में, मुख्यतया वाक्य के अन्त में, मिलते हैं। जैसे सुरभेद से प्रश्न और उत्तर का अन्तर, at four o'clock ? और at four o'clock का अन्तर स्पष्ट होता है। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि चीनी में, और कुछ अन्य भाषाओं में, 'सुर' एक मूल स्वनिम के रूप में आता है। गौण स्वनिमों का पता लगाना, मूल स्वनिमों की अपेक्षा कठिन है क्योंकि वे संयोजनों में ही मिलते हैं, अथवा सरल रूपों के विशेष प्रयोग में मिलते हैं, (जैसे John की तुलना में John ?)।

इन उपरिनिर्दिष्ट सिद्धान्तों की सहायता से कदाचित् लेखन-प्रयोग को जाननेवाला व्यक्ति अपनी भाषा को प्रतिलेखित करने की पद्धति निकाल लेगा। इस पुस्तक में अंग्रेजी के उदाहरण, जहाँ अन्यथा सूचित नहीं है, दक्षिणी इंग्लैण्ड

के शिक्षित वक्ताओं के उच्चारण के अनुसार प्रतिलेखित किए गए हैं। इसमें 32 मूल स्वनिमों और 8 गौण स्वनिमों की आवश्यकता पड़ी है। फिर भी प्रतिलेखन की प्रथागत पद्धति के अनुसार हम कुछ अतिरिक्त संकेत भी प्रयुक्त करेंगे।

मूल स्वनिम

[a:]	*half*	[ha:f]	[g]	*give*	[giv]	[p]	*pick*	[pik]
[λ]	*up*	[λp]	[h]	*hut*	[hλt]	[r]	*red*	[red]
[b]	*big*	[big]	[i]	*inn*	[in]	[s]	*set*	[set]
[d]	*dig*	[dig]	[j]	*yes*	[jes]	[ʃ]	*shop*	[ʃɔp]
dʒ	*jam*	[dʒem]	[k]	*cut*	[kλt]	[t]	*tip*	[tip]
[ð]	*then*	[ðen]	[l]	*lamb*	[lɛm]	[tʃ]	*chin*	[tʃin]
[e]	*egg*	[eg]	[m]	*met*	[met]	[θ]	*thin*	[θin]
[ɛ]	*add*	[ɛd]	[n]	*net*	[net]	[u]	*put*	[put]
[ə]	*better*	['betə]	[ŋ]	*sing*	[siŋ]	[v]	*van*	[vɛn]
[ə:]	*bird*	[bə:d]	[ɔ]	*odd*	[ɔd]	[w]	*wet*	[wet]
[f]	*fat*	[fɛt]	[ɔ:]	*ought*	[ɔ:t]	[x]	*zip*	[zip]
			[ʒ]	*rouge*	[ruwz]			

संयुक्त मूल स्वनिम

[aj]	*buy*	[baj]	[aw]	*cow*	[kaw]	[ɛə]	*care*	[kɛə]
[ej]	*bay*	[bej]	[ow]	*low*	[low]	[ie]	*fear*	[fiə]
[ij]	*bee*	[bij]	[uw]	*do*	[duw]	[ɔə]	*door*	[dɔe]
[ɔj]	*boy*	[bɔj]	[juw]	*few*	[fjuw]	[uə]	*sure*	[ʃue]

गौण स्वनिम

[॥], मूल संकेतों के पूर्व लगकर सर्वाधिक बलाघात सूचित करता है।

... That's mine ! [ðɛt s "majn !]

[।], मूल संकेतों के पूर्व लगकर सामान्य बलाघात को सूचित करता है :

examine [ig'zɛmin], I've seen it [aj v'sijn it]

[।], मूल संकेतों के पूर्व लगकर सामान्य से कम बलाघात सूचित करता है।

milkman ['milk, mɛn), keep it up [ˌkijp it ˈʌp]

[।] मूल संकेत [l,n], के नीचे लगकर एक मामूली बलाघात सूचित करता है और मूल स्वनिम को अपने से पहले और बादवाले स्वनिम

की अपेक्षा बलशाली बनाता है : brittler ['britḷə], buttoning ['bʌtṇiŋ].

[.], मूल संकेतों के बाद लगकर वक्तव्य के अन्त में अवरोही सुर को बताता है। I've seen it (aj v 'sijn it].

[?], मूल संकेतों के बाद लगकर हाँ-नहीं प्रश्न के अन्त में आरोही सुर को प्रकट करता है। Have you seen it ? [həv ju'sijn it ?]

[!], मूल संकेतों के बाद, उद्गारों में सुर-पद्धति की विकृति को सूचित करता है। It's on fire ! [it s on 'fajə], Seven o'clock ? ['sevn ə'klɔk ? !

[,], मूल संकेतों के बीच में लगकर, प्रायः आरोही सुर के बाद, यह सूचित करता है वाक्य अभी चालू है। John, the older boy, is away at school ['dzɔn, ðij 'owldə 'bɔj, iz ə'wej ət 'skuwl].

अध्याय 6

स्वनिमों के प्रतिरूप

6.1. पिछले अध्याय में वर्णित सामान्य सिद्धान्तों द्वारा एक प्रेक्षक अपनी निजी बोली की ध्वन्यात्मक-संघटना का विश्लेषण तो कर सकता है किन्तु एक अपरिचित भाषा के विवेचन में, वे सिद्धान्त प्रारम्भ में कुछ भी सहायता नहीं कर पाते हैं। जब एक प्रेक्षक एक अपरिचित भाषा सुनता है तब वह उन स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षणों पर ध्यान देता है जो उसकी अपनी भाषा में अथवा अन्य अधीत भाषाओं में स्वनिमों को प्रदर्शित करते हैं, किन्तु उसके पास कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे वह जान सके कि ये अभिलक्षण उस अपरिचित भाषा में महत्त्वपूर्ण भी हैं या नहीं। इसके अतिरिक्त उसके ध्यान से वे ध्वानिकीय अभिलक्षण छूट भी जाते हैं जो उसकी भाषा अथवा अधीत अन्य भाषाओं में तो महत्त्वहीन (अपरिच्छेदक) हैं किन्तु इस नई भाषा में महत्त्वपूर्ण (परिच्छेदक) हैं। इस प्रकार प्रेक्षक के प्रारम्भिक अंकनों में अनेक व्यर्थ के भेद प्रदर्शित रहते हैं और कई अपरिहार्य भेद छूट जाते हैं। इस प्रारम्भिक स्थिति में मशीनों द्वारा अंकन भी कुछ सहायता नहीं कर पाते क्योंकि वे भी स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षणों को अंकित करते हैं और कौन सार्थक (महत्त्वपूर्ण) हैं और कौन नहीं, इस पर कुछ प्रकाश नहीं डाल पाते हैं। केवल यह पता लगाकर कि कौन उच्चार अर्थ में समान हैं और कौन असमान हैं, एक प्रेक्षक स्वनिमीय भेदकों को पहिचानना सीख सकता है। जब तक अर्थगत विश्लेषण विज्ञान की शक्ति के बाहर है, तब तक भाषाओं का अंकन और विश्लेषण एक कला अथवा अभ्यास-सिद्ध कौशल रहेगा।

अनुभव बताता है कि व्यक्ति इस कौशल को और सरलता से प्राप्त कर सकता है यदि उसे पहले से ही इस बात का ज्ञान करा दिया जाए कि विभिन्न भाषाओं में किन-किन प्रकार की भाषण-ध्वनियाँ परिच्छेदक हैं, यद्यपि यह सत्य है कि कोई भी नई भाषा कुछ भी अपूर्वदृष्ट परिच्छेदक प्रदर्शित कर सकती है। यह सूचना सबसे अधिक सरलता से मिल सकती है यदि वह वाग्-अवयवों की चेष्टाओं के मामूली वर्णनों के रूप में रक्खी जाए। इस मामूली

वर्णन को ही हम व्यावहारिक-ध्वनिविज्ञान (practical phonetics) के पद से व्यक्त करते हैं। जब एकबार प्रेक्षक को यह पता लग जाता है कि स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षणों में से कौन-कौन उस भाषा में महत्त्वपूर्ण (परिच्छेदक) हैं, तब महत्त्वपूर्ण अभिलक्षणों के वर्णन मशीनों के अंकन द्वारा उदाहृत किए जा सकते हैं।

6.2 भाषण के लिए कोई विशेष अवयव नहीं है, भाषण-ध्वनियाँ उन्हीं अवयवों से निकलती हैं जिन्हें हम श्वास लेने में और भोजन करने में प्रयुक्त करते हैं। अधिकांश ध्वनियाँ निःश्वास (निकलती हुई श्वास) में कुछ विकार उत्पन्न करने से पैदा होती हैं। इसके अपवाद में क्लिक (clicks) अथवा अन्तःस्फोटी ध्वनियाँ (suction—sounds) हैं। आश्चर्य-प्रकाशन में भाषिकेतर चिन्ह के रूप में (और घोड़ों को तेज भगाते समय) हम क्लिक ध्वनियाँ करते हैं, जिन्हें उपन्यासकार टिक्-टिक् से प्रदर्शित करते हैं और जिनके उच्चारण में जीभ ऊपर के दाँत के ठीक ऊपर मसूढ़े पर लगती है। भाषण-ध्वनियों के रूप में मुख के विभिन्न भागों में बनी विभिन्न क्लिक-ध्वनियाँ कुछ अफ्रीकी भाषाओं में प्रयुक्त होती हैं।

6.3 निकलती हुई श्वास में सबसे पहला विकार स्वर-यन्त्र (larynx) में होता है। स्वर-यन्त्र वायु-नली के ऊपरी भाग में उपस्थि (कार्टिलेज) का पिटक है जो बाहर से कण्ठमणि (अवटु उद्वर्ध) (adam's apple) के रूप में दिखाई पड़ता है। स्वर-यन्त्र के भीतर दाहिने और बाएँ दो फलकाकार मांसपेशीय उभार हैं जिन्हें घोषतन्त्रियाँ कहते हैं। उन दोनों के बीच का मार्ग, जहाँ से श्वास निकलती है, श्वासद्वार (ग्लॉटिस glottis) कहलाता है। सामान्य सांस लेने में घोषतंत्रियाँ ढीली पड़ी रहती हैं और निःश्वास श्वास-द्वार से निर्मुक्त निकलती रहती है। स्वरयन्त्र के अग्रभाग में घोषतंत्रियाँ दो चलनशील उपास्थीय कब्जों से जुड़ी हुई हैं जिन्हें दर्विकाभ-उपास्थि (ऐरिटि-नाइड कार्टिलेज arytenoids) कहते हैं। ऐसी सूक्ष्म माँसपेशीय व्यवस्था है कि दोनों—घोषतंत्रियाँ और दर्विकाभ उपास्थि—अनेक स्थितियों में रक्खे जा सकते हैं। चरम सीमा में एक ओर पूर्णतया खुली (सामान्य श्वास के लिए) स्थिति है और दूसरी ओर दृढ़ बन्द स्थिति है जो पूरे खुले मुँह के साथ साँस रोक लेने की स्थिति होती है। विभिन्न भाषाएँ श्वासद्वार की अनेक मध्यवर्ती स्थितियों को अपने काम में लाती हैं।

इनमें से एक स्थिति घोषत्व (voicing) की स्थिति है। घोषत्व में घोष-

तंत्रियाँ दृढ़ता से तनाव के साथ एक-दूसरे के पास रहती हैं ताकि निःश्वास उनके बीच में केवल क्षण-क्षण भर के लिए निकलती रहे। उनके बीच में से निकलती श्वास-धारा घोषतंत्रियों में कम्पन उत्पन्न कर देती है। कम्पनों की आवृत्ति संख्या 80 के आसपास से 1000 कम्पन प्रति सेकिण्ड रहती है। ये कम्पन बाहरी हवा में संचारित होकर, हम लोगों के कानों में एक संगीतीय ध्वनि के रूप में पहुंचते हैं और इन्हें हम घोष (voice) कहते हैं। घोष सभी भाषणध्वनियों में प्रयुक्त नहीं होता है, हम सघोष और अघोष (श्वास) भाषण-ध्वनियों में भेद करते हैं। यदि कोई कण्ठमणि (adam's apple) पर अंगुली रक्खे, अथवा, अच्छा हो कि अपनी हथेलियों को कानों पर कसकर दबाए रक्खे, तो सघोष ध्वनि, जैसे (v) या [z] बोलने पर घोषत्व एक कम्पन या स्पन्दन के रूप में मालूम पड़ेगा। [f] या [s] जैसी अघोष ध्वनियों में इसके विपरीत यह कम्पन अथवा स्पन्दन नहीं मिलेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक भाषा में कुछ स्वनिम ऐसे अवश्य हैं जहाँ घोषत्व का न होना एक स्थिर अभिलक्षण है। अधिकांश अघोष ध्वनियों के उत्पादन में कण्ठद्वार उसी प्रकार पूरा खुला रहता है जैसा कि सामान्य साँस में।

अनेक ऐसी व्यवस्थाएँ हैं जिनसे आवाज का जोर घटाया-बढ़ाया जा सकता है और घोषध्वनि के सुर और अनुनाद (resonance) के गुणों को अदला-बदला जा सकता है। इन बाद के परिवर्तनों का, जैसे शीर्ष आलेख्य (head-register), वक्ष-आलेख्य (chest-register), आच्छन्न ध्वनि (muffled sound), धात्विक ध्वनि (metallic sound) आदि का, शरीर प्रक्रिया के अनुसार विश्लेषण अभी तक नहीं हो पाया है।

श्वास और घोषत्व के बीच अनेक स्थितियाँ हैं और उनमें कुछ उल्लेखनीय हैं। यदि घोषतंत्रियाँ इतनी दूर-दूर कर दी जाएँ कि घोष शुद्ध ध्वनि न रह पाए किन्तु निःश्वास में श्वासद्वार से निकलते समय संघर्षध्वनि मिल जाए, तो हम मर्मर (murmur) पाते हैं। अंग्रेजी में बलाघातहीन स्वर प्रायः बुदबुदाहट के साथ बोले जाते हैं, न कि घोषत्व के साथ। स्वनिम के रूप में मर्मरध्वनि बोहेमी में मिलती है, जहाँ इसे संकेत [h] के द्वारा प्रतिलेखित करते हैं जोकि इस भाषा की परम्परागत लिपि में भी है। यदि श्वासद्वार और अधिक खोल दिया जाए तो घोषत्व बन्द हो जाता है और केवल एक संघर्षी ध्वनि रह जाती है। यह संघर्षी ध्वनि अंग्रेजी के स्वनिम [h] (जैसे, hand [hɛnd] में [h] में विद्यमान है। दूसरी मध्यवर्ती स्थिति फुसफुसाहट (उपांशुध्वनि) (whisper) की है। इसमें केवल उपस्थि-मार्ग (अर्थात् दर्विकाभ उपस्थि के

बीच का मार्ग) खुला रहता है किन्तु घोषतन्त्रियाँ परस्पर जुड़ी रहती हैं। जिसे हम सामान्यतया फुसफुसाना कहते हैं, उसमें घोष ध्वनियाँ फुसफुसाहट से बोली जाती हैं और अघोष ध्वनियाँ सामान्य भाषण की भाँति बोली जाती हैं।

घोषत्व में घोषतंत्रियों के कम्पनों से उत्पन्न ध्वनिलहरियाँ उस मार्ग की आकृति और लचकीलेपन (प्रत्यास्थता) से आपरिवर्तित होती हैं जिसके बीच में से निकलकर वे बाहरी हवा तक पहुँचती हैं। अगर हम घोषतंत्रियों की वातयन्त्र (जैसे बांसुरी) की नरई (reads) से तुलना करें, तो हम मुख को, या कहिए, घोषतंत्रियों से ओठों तक के पूरे विवर को (कभी-कभी नासिका विवर को भी इसी में सम्मिलित करते हुए) अनुनाद-कक्ष (resonance-chamber) मान सकते हैं। मुख को विभिन्न स्थितियों में रखकर, मुख को या नासिका को बहिर्मार्ग बनाकर और इस प्रदेश की मांसपेशियों पर तनाव या ढील डालकर हम बाहर निकलती स्वरलहरियों के विन्यास को अदल-बदल सकते हैं।

संगीतात्मक ध्वनियों के व्यतिरेक में, कर्कशध्वनियाँ (ख) (noises) हैं। ये ध्वनिलहरियों के अनियमित संयोजनों से बनी हैं, और श्वासद्वार, जिह्वा और ओष्ठों द्वारा उत्पन्न होती हैं। कुछ सघोष ध्वनियाँ जैसे, [a, m, l] शुद्ध संगीतात्मक हैं अर्थात् कर्कशत्व से दूर हैं जबकि कुछ में, जैसे [v, z] में कर्कशत्व (रवत्व) और संगीतात्मक-घोषत्व मिश्रित हैं। अघोष ध्वनियाँ केवल कर्कशत्वयुक्त (रवयुक्त) ध्वनियाँ हैं, जैसे, [p, f, s]।

6·4 जब निःश्वास स्वरयन्त्र से बाहर निकलती है तो सामान्य श्वासप्रक्रिया में वह नासिका से निकलती है। किन्तु अधिकांश भाषण में हम इस निर्गमन-मार्ग को कोमल-तालु (velum) द्वारा अवरुद्ध कर देते हैं। कोमल-तालु तालु का कोमल और पीछे का एक चलनशील भाग है और सबसे पीछे अलिजिह्वा (कौवा) (uvula) में समाप्त होता है। अलिजिह्वा छोटी ललरी है जो मुँह में बीचोंबीच लटकती हुई दिखाई पड़ती है। यदि कोई शीशे के सामने खड़ा होता है, नाक और मुँह से शान्तिपूर्वक सांस लेता है और फिर स्पष्ट [a] बोलता है तो वह अलिजिह्वा को ध्यानपूर्वक देखने पर कोमलतालु का उठना देख सकता है। जब कोमलतालु उठता है तो उसकी कोरें श्वासमार्ग की पिछली दीवार से लग जाती हैं और निःश्वास का नासिकाविवर से निकलना अवरुद्ध हो जाता है। भाषण की अधिकांश ध्वनियाँ शुद्ध मुखनिःसृत (oral) हैं, कोमलतालु पूर्णतया उठा होता है और नासिकाविवर से निःश्वास का कुछ भी

अंश नहीं निकलता है। यदि कोमलतालु पूर्णतया उठा नहीं होता है तो निःश्वास का कुछ अंश नासिकाविवर से भी निकलता है और भाषणध्वनियों में एक अनोखा अनुनाद-गुण आ जाता है—ऐसी ध्वनियाँ सानुनासिक (nasalized) ध्वनियाँ कहलाती हैं। अंग्रेजी में शुद्ध मुखनिःसृत और सानुनासिक ध्वनियों का अन्तर परिच्छेदक नहीं है, उसमें स्वनिम [m, n, ŋ] के पूर्व अथवा पश्चात् के स्वर प्रायः सानुनासिक हो जाते हैं, और अंग्रेजीवक्ता प्रायः थके होने पर अथवा आराम करते समय सामान्य से अधिक बार सानुनासिक स्वर बोलते हैं। किन्तु कुछ भाषाओं में सानुनासिक ध्वनियाँ, अधिकतर स्वर, पृथ्क् स्वनिम हैं और तदनुरूप निरनुनासिक ध्वनियों से भिन्न हैं। सानुनासिकत्व का सामान्य संकेत वर्ण के नीचे एक छोटा हुक (यह पोली की परम्परागत लिपि में) अथवा वर्ण के ऊपर (⁓) चिन्ह (यह पुर्तगाली लिपि अथवा अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनिविज्ञान परिषद् की लिपि में) है। फ्रेंच में चार सानुनासिक स्वर स्वनिम स्तर पर हैं और वे तदनुरूप शुद्ध मुखनिःसृत स्वरों से पृथक् हैं—has [ba] 'मोजा' किन्तु banc [bã] 'बैन्च', mot [mo] 'शब्द' किन्तु mont [mõ] 'पर्वत'।

यदि कोमलतालु उठाया नहीं जाता है और निःश्वास का मुखविवर से निकलना किसी प्रकार रोक दिया जाता है तो, सामान्य साँस लेने की भाँति पूरी साँस नाक से निकल जाती है। जहाँ ऐसी स्थिति है वहाँ स्वनिम नासिक्य (nasal) कहलाते हैं। अंग्रेजी में तीन नासिक्य ध्वनियाँ हैं: [m] जिसमें ओठ बन्द रहते हैं, [n] जिसमें जिह्वा मसूढ़ों पर दबाई जाती है, और, [ŋ] (जैसे sing [siŋ] में) जिसमें जिह्वा का पिछला भाग तालु पर सटा दिया जाता है। ये शुद्धरूप से संगीतात्मक ध्वनियाँ हैं, जो मुखनासिका विवर के विभिन्न आकारों द्वारा घोष की संगीतात्मक ध्वनि को दिए अनुनादों से लक्षित होती हैं। किन्तु कुछ भाषाओं में स्वनिमों के रूप में मिलने वाले नासिक्य अघोष होते हैं। ये ध्वनियाँ श्वास-धारा के बहुत-थोड़े घर्षण-रव से इतना श्रवणयोग्य नहीं बनती हैं जितना कि पूर्वस्थ और परस्थ ध्वनियों के व्यतिरेक से और उन मध्यवर्ती अपरिच्छेदक विसर्पण स्वनों से बनती हैं जो वागवयवों द्वारा स्थितिपरिवर्तन से उत्पन्न हुई हैं।

सानुनासिकत्व का एक अच्छा परीक्षण यह है कि एक डोरे को क्षैतिज रखा जाए। उसका एक सिरा ऊपरी ओठ से दबा हो और दूसरा एक ठण्डे शीशे से दबा हो। यदि कोई व्यक्ति शुद्ध मुखनिःसृत ध्वनि उत्पन्न करता है,

जैसे [aː] तो शीशे पर केवल डोरी के नीचे भाप जम जाएगी, यदि सानुनासिक ध्वनि है, जैसे [ãː] तो शीशे पर डोरी के नीचे और ऊपर, दोनों ओर, भाप जायेगी और यदि शुद्ध नासिक्य ध्वनि है, जैसे, [m] तो शीशे पर डोरी के ऊपर ही भाप जायेगी।[1]

6.5 हम निचले जबड़े, जिह्वा और ओठों को विभिन्न स्थितियों पर रखकर मुखविवर के आकार को बदल सकते हैं। इसके अतिरिक्त गले अथवा मुख की मांसपेशियों को तानकर अथवा ढीलाकर अनुनाद को प्रभावित कर सकते हैं। इन साधनों से प्रत्येक भाषा अनेक **संगीतात्मक-ध्वनियों** को स्वनिमों के रूप में प्रयुक्त करती है, जैसे अंग्रेजी में palm [paːm] में [aː], *pin* [pin] में [i] *put* [put] में [u] rubber ['rʌ bə] में [r] आदि। इनमें से कुछ में जिह्वा वस्तुतः तालु प्रदेश को छूती है किन्तु एक पार्श्व में या दोनों पार्श्वों में पर्याप्त स्थान छोड़े रखती है जिससे निःश्वास बिना गम्भीर घर्षण ध्वनि के निकल जाती है। ऐसी ध्वनियाँ पार्श्विक (laterals) कहलाती हैं, जैसे अंग्रेजी के little ['litl,] में [l]। अघोष पार्श्विकों में, जोकि वेल्श और अनेक अमेरिकन वन्य-भाषाओं में मिलती है, श्वासधारा का घर्षणरव अघोष नासिक्य की अपेक्षा अधिक श्रवणगोचर है।

हम मुखविवर में जिह्वा और ओठों की विविध चेष्टाओं से रव करते हैं। यदि हम इन अवयवों को (अथवा श्वासद्वार को) ऐसा रखते हैं कि बीच में एक अत्यन्त संकीर्ण मार्ग बचता है, तो निःश्वास घर्षण-रव करती है। इस रव से लक्षित स्वनिम संघर्षी (spirants) (fricatives) कहलाते हैं। ये अघोष भी होते हैं, जैसे, अंग्रेजी के [f] और [s] अथवा सघोष होते हैं, जैसे, अंग्रेजी के [v] और [z]। चूंकि घर्षण की मात्रा किसी भी परिमाण तक परिवर्तित हो सकती है, संघर्षी और [i] अथवा [l] जैसी संगीतात्मक ध्वनियों के बीच कोई यथार्थ सीमा नहीं है, विशेषतया घोष संघर्षी विभिन्न भाषाओं में विभिन्न परिमाणों के अवरोधों में मिलते हैं।

यदि हम जिह्वा अथवा ओठों (अथवा श्वासद्वार) को ऐसा रखते हैं कि निर्गमन-मार्ग बिलकुल अवरुद्ध हो जाता है, और निःश्वास को अवरोध स्थान के पहले जमा होने देते हैं और फिर अचानक अवरोध को मुक्त कर देते हैं, तो

1. भारत में यह परीक्षण ठण्डे दिनों में अथवा ठण्डे स्थानों में ही सम्भव है। —अनुवादक

निःश्वास कुछ फक् के साथ या स्फोट के साथ निकलती है। इस प्रकार जनित ध्वनियाँ स्पर्श (स्फोट) (stops plosives, explosives) कहलाती हैं, जैसे अंग्रेजी की अघोष [p, t, k] अथवा सघोष [b, d, g]) । स्पर्श का विशिष्ट-अभिलक्षण सामान्यतया स्फोटन है, किन्तु अवरोध बनाना (स्पर्शन) और यहाँ तक कि अवरोध की क्षणिक समयावधि भी स्वनिम को लक्षित कर सकती है। इस प्रकार अंग्रेजी में कभी-कभी अन्तिम [p.t.k] के स्फोटन की स्थिति छोड़ दी जाती है। ये विविध ध्वनियाँ या तो पूर्ववर्ती और परवर्ती के व्यतिरेक (ध्वनि का अचानक रुक जाना अथवा विराम का एक क्षण) द्वारा, अथवा जिह्वा या ओठों के संचलन के दौरान संक्रमण ध्वनियों द्वारा श्रवणयोग्य बनती है। इसके अतिरिक्त सघोष स्पर्श के अवरोध के क्षण में घोष की आच्छन्न ध्वनि आदमी सुन सकता है।

चूँकि ओठ, जिह्वा और अलिजिह्वा लचीले हैं, वे ऐसे रखे जा सकते हैं कि निःश्वास उन्हें कम्पित करने लगती है और उनमें स्पर्श और मोचन के क्रम से एक के बाद एक क्षण आने लगते हैं। ऐसी कम्पनजात ध्वनियाँ[1] बहुत-सी भाषाओं में हैं। ब्रिटिश इंग्लिश का उदाहरण red अथवा horrid शब्द का "लुण्ठित *r*" है।

स्वनिमों के प्रमुख प्रतिरूपों पर हम निम्नक्रम से विचार करेंगे :

रव-ध्वनियाँ :

- स्पर्श
- कम्पित
- संघर्षी

संगीतात्मक ध्वनियाँ :

- नासिक्य
- पार्श्विक
- स्वर

6·6· स्पर्श (stops) कदाचित् प्रत्येक भाषा में मिलते हैं। अंग्रेजी में स्थान-भेद के अनुसार ये तीन प्रकार के हैं : ओष्ठ्य (labial) अधिक यथार्थरूप से द्व्योष्ठ्य bilabial) जिसमें दोनों ओठ अवरोध बनाते हैं, [p, b]; दन्त्य (dental) (अधिक यथार्थरूप से वर्त्स्य alveolar अथवा gingival)

1. इन्हें लुण्ठित भी कहते हैं

जिसमें जिह्वा-नोक (जिह्वाग्र) ऊपरी मसूढ़ों के ठीक ऊपर ऊर्ध्वस्थल पर अवरोध उत्पन्न करती है]t, d], और कोमलतालव्य (velar) (पहले गलत नाम कण्ठ्य guttural से प्रसिद्ध), जिसमें जिह्वा-पश्च कोमलतालु से सटाया जाता है, [k, g] ।

ये अन्तिम दो प्रतिरूप अनेक भेद-प्रभेद में मिलते हैं। यह जिह्वा की चलनशीलता के कारण सम्भव हो सका है । जिह्वा की नोक (जिह्वाग्र) (tip) के द्वारा संस्पर्श हो सकता है (जिह्वाग्रीय उच्चारण apical articulations), अथवा नोक के पास का पूरा भाग (blade) (जिह्वा फलक) के द्वारा संस्पर्श हो सकता है (जिह्वाफलकीय उच्चारण coronal articulation) । यह संस्पर्श ऊपरी दाँत के किनारे पर हो सकता है (अन्तर्दन्त्य स्थिति interdental position), ऊपरी दाँत के ऊपरी भाग पर हो सकता है (दन्त-पृष्ठीय स्थिति post-dental), ऊपरी दाँत के ऊपर ऊर्ध्वस्थल पर हो सकता है (वर्त्स्य स्थिति gingival position) अथवा तालुप्रदेश में और ऊपर किसी बिन्दु पर हो सकता है । (मूर्धन्य cerebral, अथवा ककुद्जात cacuminal अथवा अधिक यथार्थ रूप से विपर्यस्त inverted अथवा शिखरीय domal स्थिति) । इस प्रकार शिखरीय (domal) स्थिति पर जिह्वाग्रीय उच्चारण (जिह्वाग्र प्रायः मुखविवर के ऊपरी उच्चतम भाग को छूती है) अमेरिकन अंग्रेजी के वर्त्स्य उच्चारण [t,d] के साथ-साथ अपरिच्छेदक परिवर्त्य के रूप में रहता है । फ्रेंच में अंग्रेजी [t, d] से समीपतम ध्वनियाँ वर्त्स्य नहीं हैं बल्कि दन्तपृष्ठीय हैं (जिह्वाग्र अथवा जिह्वा-फलक दन्तमूल को छूता है) । संस्कृत और अन्य अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं में दन्तपृष्ठीय और शिखरीय (प्रायः वर्ण के नीचे बिन्दु लगाकर प्रदर्शित अथवा तिर्यक्-अक्षरों से प्रदर्शित अथवा जैसा कि इस पुस्तक में [T, D] से प्रदर्शित) भिन्न-भिन्न स्वनिम हैं ।

इसी प्रकार जिह्वापश्च के विभिन्न भाग उठाकर तालुप्रदेश के विभिन्न भागों को छू सकते हैं (पृष्ठीय dorsal उच्चारण) । प्रायः इसमें स्थिति की दृष्टि से तीन भेद किए जाते हैं : अग्र अथवा तालव्य स्थिति (anterior अथवा palatal), पश्च अथवा कोमलतालव्य posterior, velar) और पीछे अलिजिह्वीय (uvular) स्थिति । अंग्रेजी में कोमलतालव्य [k.g] कुछ ध्वनियों के साथ, kin, give में, आगे बढ़कर अवरोध करते हैं, और कुछ ध्वनियों के साथ, जैसे cook, good में, पीछे खिसककर अवरोध करते हैं, calm और guard में ये दोनों प्रतिरूप व्यतिरेक में हैं किन्तु ये परिवर्त्य

परिच्छेदक नहीं हैं। कुछ भाषाओं में जैसे हंगेरी में, तालव्य और कोमल-तालव्य प्रतिरूपों में पृथक् स्वनिम हैं जिसे हम प्रतिलेखन में तालव्य अघोष के लिए [c] और कोमलतालव्य अघोष के लिए [k] से प्रदर्शित करते हैं। अरबी में कोमल तालव्य अघोष स्पर्श [k] अलिजिह्वीय अघोष स्पर्श [q] से भिन्न स्वनिम है।

घोषतंत्रियों को तानकर पास-पास लाने से और तत्पश्चात् निःश्वास के दबाव से उन्हें कमानियों (स्प्रिंग) के समान झटककर खुलने देने से श्वासद्वारीय (glottal) अथवा स्वरयन्त्रीय (काकलीय) (laryngal) स्पर्श बनता है। अंग्रेज लोग इसे कभी-कभी आदि-स्थिति बलाघातयुक्त स्वर के पूर्व बोलते हैं यदि वे कुछ दबाव में बोल रहे हैं, किन्तु जर्मन भाषा में यह सामान्य प्रयोग है। स्वनिम के रूप में स्वरयन्त्रीय (काकलीय) स्पर्श कई भाषाओं में मिलता है, जैसे डैनी में जहाँ उदाहरणार्थ *hun* [hun] 'वह (स्त्री)' और *hund* [hun ?] कुत्ता यहाँ [?] प्रभेदक है।

अवरोध उत्पन्न करने के प्रयत्न भी कई प्रकार से हो सकते हैं। सघोष और अघोष का अन्तर दिखा चुके हैं। इसके अतिरिक्त श्वास-दबाव की मात्रा और ओठ अथवा जिह्वा की क्रियाओं की शक्ति पर भी भेद होते हैं। यह दबाव और तनाव अशक्त ध्वनियों (lenes) में शिथिल और सशक्त ध्वनियों (fortes) में दृढ़ होते हैं। मोचन-अशक्त (solution lenes) में मोचन अपेक्षाकृत धीमा है और उन्मोच (स्फोट) बहुत ही दुर्बल होता है। अघोष स्पर्श के पश्चात् अघोष श्वास का झोंका आता है (aspiration) अथवा अघोष स्पर्श के पूर्व ऐसा झोंका आता है (preaspiration)। सघोष स्पर्श भी इसी प्रकार अघोष श्वास अथवा मर्मर के पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती बन सकते हैं। अवरोध युगपत्‌रूप में दो स्थितियों में हो सकता है, जैसे कुछ अफ्रीकी भाषाओं में [gb] स्पर्श। बहुत-सी भाषाओं में (glottalized) मुखनिःसृत स्पर्श मिलते हैं, इनमें श्वासद्वारीय (glottalized) स्पर्श [p.t.k] के स्फोट के साथ युगपत्‌रूप से अथवा पहले अथवा बाद आता है। अंग्रेजी में अघोष-स्पर्श सप्राण एवं सशक्त हैं किन्तु दूसरे प्रतिरूप भी अपरिच्छेदक परि-वर्त के रूप में मिलते हैं, विशेषतः [s] के बाद spin, stone, skin आदि में जहाँ अप्राण एवं अशक्त स्पर्श हैं। अंग्रेजी के सघोष स्पर्श अशक्त हैं, शब्द के प्रारम्भ और अन्त में वे पूरी अवधि में सघोष नहीं रहते हैं। फ्रेंच में अघोष-स्पर्श [p, t, k] सशक्त हैं और अपरिच्छेदक परिवर्त्य के रूप में युगपद्

श्वासद्वारीय-स्पर्श के साथ-साथ आते हैं किन्तु सप्राण कभी नहीं होते हैं। फ्रेंच के [b, d, g] अशक्त हैं और अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक घोषवान् हैं। उत्तरी चीनी में सप्राण और अप्राण (महाप्राण और अल्पप्राण) अघोष-स्पर्श विभिन्न स्वनिम हैं, जैसे, [pha] और [pa] किन्तु सघोष-स्पर्श केवल [pa] का अपरिच्छेदक परिवर्त है। अनेक दक्षिण-जर्मन बोलियों में अघोष अप्राण स्पर्श के सशक्त और अशक्त दोनों प्रभेद हैं जिन्हें हम [p, t, k] और [b, d, g] से प्रतिलेखित कर सकते हैं क्योंकि सघोष परिवर्त प्रभेदक नहीं है। संस्कृत में चार प्रकार के स्पर्श हैं : अघोष, अल्पप्राण [प], महाप्राण [फ], सघोष अल्पप्राण [ब], महाप्राण [भ]।

6.7 सामान्य कम्पित ध्वनियाँ जिह्वाग्रीय (apical) अर्थात् जिह्वाग्र-कम्पित (tongue-tip trill) हैं जिनमें जीभ की नोक मसूढ़ों पर कई टक्कर बड़े वेग से काँपते हुए मारती है। यह ब्रिटिश इंग्लिश, इतालवी, रूसी और अनेक भाषाओं का लुण्ठित r है। बोहेमी में इस प्रतिरूप के दो स्वनिम हैं जिनमें एक में साथ में सबल घषण ध्वनि चलती है। अलिजिह्वीय-कम्पित (uvular trill) में अलिजिह्व जिह्वा के उठे हुए पश्चभाग पर टक्कर मारकर कम्पित होता है। यह डैनी में मिलता है, और फ्रेंच, जर्मन और डच में सामान्यतया और अंग्रेजी की कुछ बोलियों ('नार्थम्बरी अस्पष्टध्वनि') में भी मिलता है। इन भाषाओं में और नार्वेजी और स्वेडी में भी अलिजिह्वीय कम्पित और जिह्वानोक-कम्पित एक ही स्वनिम के भौगोलिक परिवर्त हैं। कम्पित के लिए ध्वन्यात्म संकेत [r] है, यदि उस भाषा में दूसरा कम्पित भी है तो उसके लिए सरलता से [R] संकेत प्रयुक्त हो सकता है।

यदि जिह्वा की नोक को केवल एक झटका दिया जाता है और मसूढ़े अथवा तालुप्रदेश पर केवल एक त्वरित संस्पर्श होता है तो जिह्वा-उत्क्षेप (tongue-flip) कहलाता है। अमेरिकन इंग्लिश के केन्द्रीय-पश्चिमी प्रतिरूप में एक सघोष वर्त्स्य जिह्वा-उत्क्षेप [t] के एक अपरिच्छेदक परिवर्त के रूप में, जैसे water, butter, at all में मिलता है। नार्वेजी और स्वेडी बोलियों में कई प्रकार के जिह्वा-उत्क्षेप मिलते हैं।

6.8 अंग्रेजी में संघर्षी-ध्वनियों (spirants) की स्थितियाँ स्पर्शों की स्थितियों से भिन्न हैं। एक युग्म में, दन्त्योष्ठ्य (labiodental) [f, v] में, निःश्वास को ऊपरी दाँत और निचले ओठ के बीच से निकलना पड़ता है। एक दूसरे युग्म में, दन्त्य (dental) [θ, ð] जैसे thin [θin], then [ðen] में

जिह्वाफलक ऊपरी दाँत को छूता है। अंग्रेजी वर्त्स्य (gingival संघर्षी (spirants) हिस्-ध्वनियाँ (hisses) अथवा सिस्-ध्वनियाँ (sibilants) हैं। इनके उच्चारण में जिह्वा इस प्रकार सिकोड़ी जाती है कि पार्श्व उभड़ आते हैं और बीच में एक संकीर्ण मार्ग छोड़ते हैं जिससे निःश्वास बलपूर्वक मसूढ़ों और दाँतों से टकराकर एक मुखर शीत्कार अथवा गुंजन के साथ निकलती है। यदि हम जिह्वा को इस स्थित से खिसका दें---अंग्रेजी में वस्तुतः पीछे खिसकाते हैं---निःश्वास मसूढ़ों और दाँतों से कम तीव्रता से टकराती है और निर्गमनद्वार से निकलने के पहले भंवर खा जाती है। अंग्रेजी में से हश्-ध्वनियाँ (hushes) अथवा अपसामान्य (abnormal) सिस्-ध्वनियाँ (sibilants पृथक् स्वनिम हैं, जैसे shin [ʃin], vision ['vizn] में [ʃz.] इनमें से प्रत्येक स्थिति में हमें युग्म मिलता है---एक अघोष और दूसरा सघोष। अनेक अन्य भेद-प्रभेद भी हैं, जैसे द्व्योष्ठ्य संघर्षी जिसमें दोनों ओठ मिलकर सकीर्ण मार्ग बनाते हैं (जापानी में एक अघोष प्रतिरूप और स्पेनी में सघोष मिलता है। फ्रेंच में सिस्-ध्वनियाँ पश्चदन्त्य हैं, अंग्रेजी के कानों में तब ऐसा लगता है कि फ्रेंचवक्ता तुतला-सा रहा है। जर्मन में, जहाँ [ʒ] ध्वनि नहीं है, [s] के लिए बने ओठों को पर्याप्त आगे निकाला जाता है जिससे भंवरवाली ध्वनि और तीव्र हो जाती है। स्वेडी में [ʃ] का बहुत चौड़ा विवार है जोकि अंग्रेजों के कान में बहुत अजीब लगता है।

अंग्रेजी में कोई पृष्ठीय (dorsal) संघर्षी नहीं है किन्तु अनेक भाषाओं में ये अनेकभांति की स्थितियों में, पार्श्विक प्रतिरूप में भी, मिलते हैं। जर्मन में अघोष तालव्य संघर्षी है जिनमें जिह्वामध्य तालुप्रदेश के उच्चतम भाग की ओर उठाया जाता है, इसके अपरिच्छेदक परिवर्त के रूप में जर्मन में कोमलतालव्य प्रतिरूप है---एक अघोष सघर्षी जोकि अंग्रेजी के [k, g, ŋ] स्थिति में है। जर्मन की परम्परागत लिपि में तालव्य प्रतिरूप के लिए [ç] जैसे ich [i~] 'मैं' और कोमलतालव्य प्रतिरूप के लिए [x] जैसे, ach [ax] 'ओह' जर्मन उच्चारण के कुछ प्रतिरूपों में इसी स्थिति में यह घोष संघर्षी [x] स्पर्श [g] के परिवर्त के रूप में मिलता है। किन्तु डच और आधुनिक ग्रीक में पृथक् स्वनिम हैं। अलिजिह्वीय संघर्षी uvular spirants) डैनी में अलिजिह्वीय कम्पित के परिवर्त के रूप में मिलते हैं किन्तु कुछ अन्य भाषाओं में ये दोनों पृथक्-पृथक् स्वनिम हैं।

अंग्रेजी में हमें एक अघोष श्वासद्वारीय संघर्षी मिलता है, जैसे *hit* [hit] *when* [hwen] *hew* [hjuw] में [h]। इसमें घर्षण बहुत थोड़े

खुले कण्ठद्वार से निकलती हुई श्वास से उत्पन्न होता है। बोहेमी में ऐसी ही एक ध्वनि है जिसमें घर्षण मर्मर के साथ-साथ होता है ।अरबी में श्वासद्वारीय संघर्षी का एक अन्य युग्म, अघोष ('कर्कश h hoarse h) और सघोष (ऐन्), मिलता है । इनके लक्षण हैं गले की मांसपेशियों को तानना ।

प्रयत्न की दृष्टि से संघर्षियों में स्पर्शों की अपेक्षा कम विविधता है । उन भाषाओं में जहाँ दोनों प्रकार के प्रयत्नों में भेद है, फ्रेंच में [v, z, ʒ) अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक पूर्णतया घोषवान् हैं। कुछ भाषाओं में श्वासद्वारीय रंजित संघर्षी मिलते हैं जिनमें संघर्षी के साथ, पूर्व, अथवा पश्चात् श्वासद्वारीय स्पर्श आता है।

6.9 नासिक्यों (nasals) की स्थिति बहुत अधिक स्पर्शों की भाँति होती है । अंग्रेजी में [m, n, ŋ,] उन्हीं स्थितियों से बोले जाते हैं जिनसे स्पर्श बोले जाते हैं। [p, b] के समान (m) उभयोष्ठ्य, (t, d) के समान [n] वर्त्स्य, और [k, g] के समान कोमलतालव्य (ŋ) है जैसे sing [siŋ] sink [siŋk] singer (siŋə] finger ['fiŋgə] में । इसी सिद्धान्त पर, फ्रेंचवक्ता अपने दन्तपृष्ठीय [n] को अपने [t, d] के स्थिति पर बोलता है । इसके विपरीत फ्रेंच में कोई कोमलतालव्य नासिक्य नहीं है किन्तु उसमें एक तालव्य नासिक्य है जिसमें जिह्वामध्य को तालुप्रदेश के उच्चतम स्थान पर पहुँचाया जाता है, जैसे signe[siŋ] 'चिन्ह' में । स्पर्शों के समान संस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं में दन्त्य [ŋ] मूर्धन्य [N], (ण) से भिन्न है ।

6.10 अंग्रेजी में पार्श्विक [l] वर्त्स्य स्थिति पर जिह्वाग्रीय ध्वनि है । शब्द के अन्त में अंग्रेज लोग एक अपरिच्छेदक प्रकार का पार्श्विक बोलते हैं जिसमें जिह्वा का मध्य अत्यधिक मात्रा में नीचा किया जाता हैं । यह व्यतिरेक अंग्रजी less और well की 'ल' ध्वनियों के उच्चारण में मिलता है। जर्मन और फ्रेंच में [l] ऐसा बोला जाता है कि जिह्वा का तल अधिक ऊँचा उठाया जाता है, इससे उसका ध्वानिकीय प्रभाव भिन्न होता है । इसके अतिरिक्त फ्रेंच में संस्पर्श दन्तपृष्ठीय है। इतालवी में एक तालव्य पार्श्विक है जोकि दन्त्य से भिन्न है । इसमें जिह्वा का पश्च तालुप्रदेश के उच्चतम भाग को छूता है किन्तु एक पार्श्व में या दोनों पार्श्वों में मुक्तमार्ग छोड़ देता है, जैसे figlio ['fiho] 'पुत्र' । कुछ अमेरिकन भाषाओं में पार्श्विकों की पूरी श्रेणी मिलती है और उनमें स्थितियों का, जिह्वाद्वारीयांजन अथवा अनुनासिकत्व का भेद होता है । अघोष पार्श्विक में, विशेषतः यदि संस्पर्श विस्तृत हो, संघर्षत्व रहता है । सघोष पार्श्विक,

यदि संस्पर्श क्षणिक है, स्वर-वत् हो जाता है। इस प्रकार पोली के दोनों पार्श्विक स्वनिमों में एक अंग्रेजों को बिल्कुल [w]-सा लगता है। इसके विपरीत, मध्य-पश्चिमी अमेरिकन इंग्लिश में, जैसे *red* [red] *fur* [fr̩] *far* [far] में, स्वर [r] घनिष्ठतया पार्श्विक के समान है क्योंकि जिह्वाग्र मूर्धन्य स्थिति पर उठती है किन्तु संस्पर्श नहीं करती है। प्रतिलेखन में हम यही संकेत [r] प्रयुक्त करते हैं जो अन्य भाषाओं में कम्पित के लिए प्रयुक्त होता है। यह प्रयोग सुविधाजनक है, क्योंकि अमेरिकन और ब्रिटिश अंग्रेजी के red के कम्पित एक ही स्वनिम का भौगोलिक परिवर्त है।

6.11. स्वर([Vowels] वे ध्वनियाँ हैं जिसमें जिह्वा अथवा ओठों द्वारा कोई अवरोध, घर्षण अथवा संस्पर्श नहीं होता है। ये सामान्यतया सघोष होते हैं किन्तु कुछ भाषाओं में विभिन्न घोष-गुणों के अनुसार भेद होता है, जैसे, स्वरतंत्रियों के धीमे कम्पनों के साथ आच्छन्न (muffled) स्वर, मर्मर (murmured) स्वर अथवा फुसफुसाहटवाले उपांशु (whispered) स्वर जिसमें दर्विकाभ-उपास्थि (ऐरिटिनाइड कार्टिलेज) के बीच का कम्पन घोष-तंत्रियों के कम्पन के स्थान पर होता है[1]

प्रत्येक भाषा कम-से-कम कई स्वर स्वनिमों में अन्तर करती है। इन स्वनिमों में अन्तर अधिकतर जिह्वास्थिति के अन्तरों पर निर्भर है और ध्वानिकी दृष्टि से अधिस्वरकों (overtones) के वितरणों के अन्तरों पर निर्भर है। किन्तु इन सिद्धान्तों पर भी मतभेद है। आगे हम जिह्वास्थितियों का सामान्यतया मान्य योजना के अनुसार वर्णन करेंगे। इसमें यह गुण है कि अनेक भाषाओं की स्वनात्म और व्याकरणिक पद्धतियों में प्रदर्शित स्वर संबन्धों से यह मेल खाता है। स्वर-स्वनिमों के अन्तरों को स्थापित करने वाले अन्य

---

1. स्वरों के व्यतिरेक में, अन्य ध्वनियाँ (स्पर्श, कम्पित, संघर्षी, नासिक्य, पार्श्विक) कभी-कभी व्यंजन (consonants) कही जाती हैं। अंग्रेजी के स्कूलों की व्याकरण में 'स्वर' और 'व्यंजन' शब्दों का असंगत रीति से प्रयोग मिला करता है और ये शब्द ध्वनियों को न प्रदर्शित कर लिपि-वर्णों को प्रदर्शित करते हैं। एकाकी भाषाओं के वर्णन में इन शब्दों को अन्य रीति से प्रयुक्त करना सुविधाजनक है और इन्हें sonant अथवा अर्धस्वर (Semi-vowel) ऐसे शब्दों से परिपूरित कर लेना चाहिए जैसा कि हम अगले अध्याय में करेंगे।

घटक हैं, जिह्वा और अन्य मांसपेशियों की दृढ़ता और शिथिलता, और ओठों की विभिन्न स्थितियाँ जैसे आगे निकालने की अथवा पीछे खींचने की ।

अमेरिकन इंग्लिश के मध्य-पश्चिमी प्रतिरूप में नौ (9) विभिन्न स्वर-स्वनिम हैं । इनमें से एक [r] का वर्णन हो चुका है, यह उलटी हुई जिह्वास्थिति के कारण विचित्र है । अन्य आठ रूप 2-4 की व्यवस्था में हैं स्थिति की दृष्टि से ये युग्मों में आते हैं । प्रत्येक युग्म में एक अग्र (front) स्वर है जोकि जिह्वामध्य को तालुप्रदेश के उच्च स्थान पर उठाने से उत्पन्न होता है और एक पश्च (back) स्वर है जोकि जिह्वा पश्च को कोमल तालु की ओर उठाने से उत्पन्न होता है । चारों युग्मों में अन्तर इस बात पर निर्भर है कि जिह्वा तालुप्रदेश के कितने समीप है । इस प्रकार उठान की चार सापेक्ष दशाएँ हैं : उच्च (high), उच्चतरमध्य (higher-mid), निम्नतरमध्य (lower mid) और निम्न (low) । कुछ लेखक उच्च और निम्न के स्थान पर संवृत (close) और विवृत (open) लिखते हैं । इस प्रकार निम्नलिखित परियोजना बनती है :–

	अग्र	पश्च
उच्च	i	u
उच्चतरमध्य	e	o
निम्नतरमध्य	ɛ	ɔ
निम्न	a	ɑ

उदाहरण हैं : *in*, inn [in], egg [eg], add [ɛd], alms [amz] *put* [put], *up* [op], ought [ɔt], odd [ɔd] इन स्वनिमों के अनेकानेक अपरिच्छेदक परिवर्त होते हैं जिनमें से कुछ परिवर्ती ध्वनियों पर निर्भर होते हैं और जिन पर आगे चलकर विचार करेंगे ।

दक्षिणी ब्रिटिश इंग्लिश में भी यही व्यवस्था है किन्तु पश्चस्वरों के स्वनिमों का वितरण विभिन्न है । उसमें odd [ɔd] में उच्चतर मध्य और और up [ʌp] में निम्न है और इस दृष्टि से अमेरिकन इंग्लिश से उलटा है । किन्तु ब्रिटिश इंग्लिश को प्रतिलेखित करने की एक परम्परा बन गई है । यह आई० पी० ए० वर्णमाला के सिद्धान्तों के अनुसार, जैसा कि इस पुस्तक में है, नहीं है । बल्कि इसमें विचित्र-विचित्र संकेत प्रयुक्त हुए हैं

जोकि पाठक को अंग्रेजी और फ्रेंच स्वर स्वनिमों के अन्तरों को बताते हैं यद्यपि ऐसा अन्तरों का बताना पर्याप्त व्यर्थ है।

	आई० पी० ए० के अनुसार शिकागो का उच्चारण	आई० पी० ए० के अनुसार ब्रिटिश उच्चारण	ब्रिटिश उच्चारण को प्रदर्शित करने की व्यवहृत पद्धति
inn	in	in	in
egg	eg	eg	eg
add	ɛd	ɛd	ɛd
alms	amz	amz	a:mz
put	put	put	put
odd	ad	od	ɔd
ought	ɔt	ɔt	ɔ:t
up	op	ap	ʌp

नवें स्वर स्वनिम को मध्य पश्चिमी अमेरिकन इंग्लिश में [r] से सूचित करते हैं, जैसे bird [bṛd] में। इसका दक्षिणी ब्रिटिश इंग्लिश में अथवा न्यू इंग्लैण्ड में अथवा दक्षिणी अमेरिकन इंग्लिश में कोई एक समान अनुरूप स्वनिम नहीं है। स्वरों के पूर्व ब्रिटिश इंग्लिश में जिह्वानोक कम्पित है जिसे हम [r] से प्रतिलेखित करते हैं, जैसे [red] में [r]। जहाँ मध्यपश्चिमी अमेरिकन में स्वरों के बाद [r] है, ब्रिटिश में केवल स्वर का कोई आपरिवर्तन (कुछ स्थलों पर दीर्घत्व) है जिसे हम [:] (कोलन चिह्न) से द्योतित करते हैं, जैसे part और form में [pa:t, f:ɔm]। जहाँ मध्य-पश्चिमी अमेरिकन में [r] के न तो पूर्व में और न पश्चात् में स्वर है वहाँ ब्रिटिश इंग्लिश में मिश्र-स्वर (mixed vowel) प्रयुक्त होता है जोकि अग्र और पश्च स्थितियों के बीच है और जिसे [ɘ:] अथवा [ɘ] से प्रतिलेखित करते हैं, जैसे bird और better को [bɘ:d], [ˈbitɘ] से।

6.12 कुछ अमेरिकन अंग्रेजी के मध्य-पश्चिमी प्रतिरूपों [a] और [α] का अन्तर नहीं है। ऐसे वक्ताओं का निम्न स्वर लेखक के कानों में [a] लगता था, जैसे alms और odd में। किन्तु अपने स्वनिमीय व्यवस्था में उसकी स्थिति न तो अग्र है और न पश्च, बल्कि उदासीन है क्योंकि इस उच्चारण में केवल एक निम्न-स्वर स्वनिम है। ऐसी ही व्यवस्था, बिना विचित्र [r] स्वर

के इतालवी में भी मिलती है। इसे हम सप्त-स्वरी व्यवस्था कह सकते हैं।

	अग्र	उदासीन	पश्च
उच्च	i		u
उच्च-मध्य	e		o
निम्न-मध्य	ɛ		ɔ
मध्य		a	

इतालवी के उदाहरण हैं : *si* [si] "हाँ" pesca ['peska] "मछली पकड़ना", pesca [pɛska] "आड़ू", *tu* [tu] "तू", *pollo* ['pollo] "चूजा", *olla* ['ɔlla] "बर्तन", ama ['ama] "प्यार करता है।"

कुछ भाषाओं में सरलतर व्यवस्थाएं हैं, जैसे कि स्पेनी अथवा रूसी की पंचस्वरी व्यवस्था :

	अग्र	उदासीन	पश्च
उच्च	i		u
मध्य	e		o
निम्न		a	

स्पेनी उदाहरण क्रम से यों हैं : *si* [si] "हां", *pesca* ['peska] "मछली पकड़ना" *tu* [tu] "तू" *pomo* ['pomo] "सेब", ama ['ama] "प्यार करता है।"

इसमें भी सरलतर व्यवस्था त्रि-स्वरी व्यवस्था है जोकि कुछ भाषाओं में मिलती है, जैसे तगलाँग में :

	अग्र	उदासीन	पश्च
उच्च	i		u
निम्न		a	

स्वर-व्यवस्था में जितने ही कम स्वर-स्वनिम होते हैं उतनी ही अधिक प्रत्येक स्वनिम के अपरिच्छेदक परिवर्तों के होने की संभावना है। उदाहरणार्थ स्पेनी में मध्यस्वर अंग्रेजों के कानों में ध्वनिकीय गुणों की दृष्टि से उच्चतर और निम्नतर स्थितियों के बीच इतना अधिक परिवर्तित होता रहता है कि इतालवी में ठीक उतने परिवर्तन होने पर दो पृथक् स्वनिमों का पृथक्कारी होता है। रूसी-स्वरों में बड़ा विस्तृत परिवर्तन होता है। यह मुख्यतया पूर्ववर्ती

अथवा परवर्ती स्वनिमों पर निर्भर होता है। विशेषतः उच्च अग्र स्वर का एक परिवर्त, जैसे [sin] 'son' "पुत्र" में, अंग्रेजी वक्ताओं के कानों में विचित्र लगता है क्योंकि इस परिवर्त में जिह्वा अंग्रेजी के उच्च अग्र स्वर के किसी भी परिवर्त की अपेक्षा कहीं अधिक पीछे जाती है। तगलाग की त्रि-स्वरी व्यवस्था में प्रत्येक स्वनिम में परिवर्तनों का परिसर इतना अधिक है कि वह हम लोगों के कानों को बहुत ही अधिक-लगता है। तगलॉग के [i] और [u] से प्रदर्शित स्वनिम अंग्रेजी के उच्च स्वरों से लेकर निम्न-मध्य स्वरों तक के सभी स्वरों के समान बोले जाते हैं।

6.13 ओठों की विभिन्न अवस्थाएँ अमेरिकन इंग्लिश के स्वरों में कोई अन्तर नहीं लाती हैं। केवल एक गौण तथ्य है जिस पर हम बाद में विचार करेंगे। किन्तु बहुत-सी भाषाओं में ओष्ठों की स्थिति विभिन्न स्वरों के गुणों को सुव्यक्त करती है: अग्रस्वरों को ओठों के खिंचाव (प्रत्याकर्षण) (retraction) (मुख के कोनों को पीछे की ओर खींचने) से और पश्चस्वरों को ओठों को आगे बढ़ाने (बहिःसरण) (protrusion) तथा गोल (वर्तुलित) करने (rounding) से पुष्टि मिलती थी। सामान्यतया स्वर जितना ही उच्च होता है, ओठों की स्थिति उतनी ही सुस्पष्ट होती है। ये अभिलक्षण अधिकांश यूरोपीय भाषाओं में हैं और अमेरिकन स्वरों तथा उन भाषाओं के स्वरों में अन्त लाते हैं। यहाँ भी हम निश्चित अन्तर पाते हैं: स्केडिनेवी भाषाओं में विशेषतः स्वेडी में, अन्य यूरोपीय भाषाओं की अपेक्षा पश्चस्वर अधिक वर्तुल ओठ बनाते हैं, जैसे स्वेडी bo [*bo*:] "रहना" में स्वेडी की वही जिह्वास्थिति है जो जर्मन so [zo:] "इस प्रकार" अथवा फ्रेंच beau [bo] "सुन्दर" में जर्मन अथवा फ्रेंच [o] की, किन्तु स्वेडी में जर्मन *du* [du:] "तू" अथवा फ्रेंच *bout* [bu] "अन्त" के उच्च स्वर [u] के समान ओठों का वर्तुलनकरण है। अंग्रेजी वक्ता को ऐसा लगता है कि यह [o] और [u] के बीच की कोई ध्वनि है।

उपरिउल्लिखित भाषाएँ ओष्ठ-स्थिति को स्वनिमों का परिच्छेदक भी मानती हैं। एक इस प्रकार का अतिसामान्य अन्तर है: अग्र सामान्य स्वरों (प्रत्याकर्षित retracted ओष्ठस्थिति के साथ) और वर्तुल अग्रस्वरों (समकक्ष पश्चस्वरों के समान ओष्ठस्थिति के साथ) के बीच का अन्तर। इस प्रकार फ्रेंच में अमेरिकन इंग्लिश के समान आठ स्वर स्वनिमों के वितरण के

अतिरिक्त तीन अग्र वर्तुल स्वर हैं :

	अग्र अ-वर्तुल	वर्तुल	पश्च वर्तुल
उच्च	i	y	u
उच्चमध्य	e	ϕ	o
निम्नमध्य	ɛ	œ	ɔ
निम्न	a		ɑ

उदाहरण : *fini* [fini] "समाप्त कर लिया", *été* [ete] "ग्रीष्म" lait [lɛ) "दूध", bat [ba] "पीटता है"; rue [ry] "सड़क", feu [fϕ] "आग", peuple [poepl] "लोग"; roue (ru] "चक्र", eau [o] "जल" honme [ɔm] "आदमी" bas [ba] "निम्न" ।

इनके अतिरिक्त पृथक् स्वनिम के रूप में चार सानुनासिक स्वर (देखिए § 6.4 हैं : pain [pɛ̃] "रोटी", bon [bõ] "अच्छा" un [œ̃] "एक", banc [bã] "बेंच"। इसके अतिरिक्त फ्रेंच में [œ] का एक लघुरूप है, जैसे cheval [fɔval] "घोड़ा" में, जिसे [ɔ] से प्रतिलेखित किया जाता है।

संकेत [γ,ϕ] डैनी की परम्परागत लिपिचिह्नों में से लिए गए हैं। जर्मन (और फ़ीनी) लिपि में इनके लिये ü और ö संकेत प्रयुक्त होता है।

विद्यार्थी वर्तुल अग्रस्वरों का अभ्यास अपने सामने शीशे में ओष्ठस्थिति को ठीक रखकर कर सकता है। पहले [i,e,ɛ] प्रतिरूप के अग्रस्वरों को ओष्ठ प्रत्याकर्षण के साथ सीखना चाहिए, फिर [u,o,ɔ] प्रतिरूप के पश्चस्वरों को ओठ गोल करके तथा आगे निकालकर (ओष्ठ बहिःक्षेपण के साथ) सीखना चाहिए, फिर [i] का उच्चारण करता रहे और जिह्वा की स्थिति को सुरक्षित रखे किन्तु ओठों को [u] के उच्चारण के समान वर्तुल करें, तो[y] का उच्चारण हो जाएगा। इसी प्रकार [e] और [ɛ] के उच्चारणों में ओठों को गोल करके क्रमशः [ϕ] [œ] बोला जा सकता है।

एक अन्य अन्तर लाया जा सकता है यदि हम पश्चस्वरों को वर्तुल करके बोलने के अतिरिक्त परिच्छेदक रूप में अ-वर्तुल करके बोलें। इस अतिरिक्त घटक के कारण तुर्की स्वर व्यवस्था त्रि-विमितीय (three-dimensional)

स्वर-व्यवस्था है : प्रत्येक स्वर स्वनिम या तो अग्र है या पश्च, या तो उच्च है या निम्न, या तो वर्तुल या अ-वर्तुल :

	अग्र		पश्च	
	अ-वर्तुल	वर्तुल	अ-वर्तुल	वर्तुल
उच्च	i	y	ï	u
निम्न	e	ϕ	a	o

6.14. स्वरजनन में एक अन्य घटक है मांसपेशियों की दृढ़ता (तनाव) की स्थिति (tense) अथवा शिथिलता (ढलाव) की स्थिति (loose)। अंग्रेजी वक्ता के कानों में दृढ़ प्रतिरूप के स्वर स्पष्टतर और कदाचित् अत्यधिक यथार्थ लगते हैं क्योंकि अंग्रेजी के स्वर शिथिल हैं। कुछ इन्हें दृढ़ और शिथिल के स्थान पर संकीर्ण (narrow) और विस्तृत (wide) कहते हैं। अंग्रेजों के कान में फ्रेंच स्वरों का सर्वाधिक विचित्र लक्षण यह लगता है कि वे दृढ़ प्रतिरूप के होते है। ओष्ठ-स्थिति के अतिरिक्त यह सापेक्षिक दृढ़ता है जिससे इतालवी के स्वर अंग्रेजी के स्वरों से बहुत भिन्न हैं यद्यपि दोनों भाषाओं में उतनी ही संख्या में अन्तर माने गए हैं।

जर्मन और डच भाषाओं में दृढ़ता और शिथिलता के आधार पर स्वर-स्वनिमों में भेद है। जर्मन में, और कुछ सीमा तक डच में, दृढ स्वर की कालमात्रा (जिस पर आगे विचार करेंगे) शिथिल की अपेक्षा अधिक है। यदि हम कालमात्रा के आधिक्य को दृढता से मिलाकर संकेत के बाद कोलन (:) से प्रदर्शित करें तो हमें इन भाषाओं में निम्नलिखित व्यवस्था मिलेगी जिसमें प्रत्येक स्थिति में स्वनिमों का एक युग्म है।

	अग्र		उदासीन	पश्च
	अ-वर्तुल	वर्तुल		वर्तुल
उच्च	i : i	γ : γ		u : u
मध्य	e : e	ϕ : ϕ		o : o
निम्न			a : a	

जर्मन के उदाहरण हैं :—

ihn (i:n) "उसे", *in* [in] "में" Beet [be:t] "कियारी" Bett

1. डच में ह्रस्व [ϕ] नहीं है।

[bet] "बिछौना" Tür [ty:r] "द्वार", hübsch hyp∫] "सुन्दर", könig ['kɸ : nik] "राजा" zwolf [tsvɸlf] "बारह" Fusz [fu:s] "पैर", Flusz [flus] "नदी", hoch [ho:x] "ऊंचा", Loch [lox] "छेद". Ḳam [ka:m] "आया (क्रिया)" Kamm [Kam] "कंघा" ।

विभिन्न भाषाओं के स्वरों के अन्तर पर्याप्ततया विवेचित नहीं हैं । फिर भी यह सम्भावना है कि एक और वही स्वनिम उसी भाषा में वागवयवों के बिल्कुल भिन्न चेष्टाओं से प्राय: उत्पन्न हो सके किन्तु उसका श्रौतिकी प्रभाव समान, और नैसर्गिक वक्ता के लिए बिल्कुल वही, होता है । यह उपकल्पना की जाती है कि ऐसे स्थलों पर एक अवयव के स्थानच्युति (जैसे, विभिन्न जिह्वा स्थिति) की क्षतिपूर्ति किसी दूसरे अवयव की विभिन्न चेष्टा (जैसे कण्ठ की विभिन्न चेष्टा) द्वारा हो जाती है ।

अध्याय 7

आपरिवर्तन

7.1 पिछले अध्याय में वर्णित वाग्-अवयवों की प्रतिरूप-क्रियाएँ एक ऐसे आधार के रूप में देखी जा सकती हैं जिसमें विभिन्न भांति से आपरिवर्तन होते हैं। ये आपरिवर्तन इस प्रकार हैं: कालावधि (Duration) जिसके दौरान में ध्वनि चलती रही है, प्रबलता (loudness), जिससे ध्वनि उत्पन्न हुई है, घोष का संगीतात्मक-तात्मव (musical pitch of the voice), जोकि उत्पत्ति के समय में रहा है, अवयवों की स्थिति जो अभिविशिष्ट क्रिया से तत्काल सम्बद्ध नहीं है, और, एक अभिविशिष्ट स्थिति से दूसरी में वाग्-अवयवों के पहुँचने की विधि आधारभूत वाग्-ध्वनियों और आपरिवर्तनों के बीच का यह प्रभेद विषय के स्पष्टीकरण में सुविधाजनक है, किन्तु भाषाओं की स्वनात्म व्यवस्थाओं में इसे सदैव मान्यता नहीं मिल पाई है; बहुत-सी भाषाएँ आपरिवर्तनों में से कुछ को आधारभूत वाग्-ध्वनियों के स्वनिमों के समकक्ष रखती है। उदाहरणार्थ हम देख चुके हैं कि सुर के अभिलक्षणों को चीनी भाषा ने मुख्य स्वनिम के रूप में प्रयुक्त किया है और कालावधि के अभिलक्षण जर्मन-भाषा में मुख्य स्वनिमों के प्रभेदक हैं। इसके विपरीत अधिकांश भाषाएँ केवल इस सीमा तक इन दोनों में प्रभेद बनाए रखती हैं कि वे कुछ अपरिवर्तक अभिलक्षणों को गौण स्वनिम के रूप से प्रयुक्त करती हैं—अर्थात् ये स्वनिम उन भाषाओं में सरलतम भाषिकरूपों के अंग तो नहीं हैं किन्तु ऐसे रूपों के संयोजनों अथवा विशिष्ट प्रयोगों को अंकित अवश्य करते हैं।

7.2 कालावधि (कालमात्रा) (Duration (quantity)) समय की वह सापेक्षिक अवधि है जिसमें वाग्-अवयव एक स्थितिविशेष में टिके रहे हैं। कुछ भाषाएँ भाषणध्वनियों के दो या अधिक कालावधियों में प्रभेद मानती हैं। इस प्रकार हम §6.14 में देख आए हैं कि जर्मन में दृढ-स्वर शिथिलस्वरों की अपेक्षा अधिक समय लेते हैं, कालावधि का यह अन्तर दृढ़ता की अपेक्षा अधिक ध्यानाकर्षक है। दीर्घ स्वनिम के लिए कोलन चिन्ह (:) लगता है जोकि ध्वनि के लिए निर्दिष्ट सामान्य संकेत के बाद लगता है, जर्मन Beet

[be:t] "कियारी'," किन्तु Bett [bet] "बिछौना" । यदि कालमात्रा की (दीर्घत्व की) इससे अधिक क्रम-कोटियाँ दिखानी हैं तो एक मध्यबिन्दु (.) अथवा अन्य चिह्न प्रयुक्त किये जा सकते हैं। दीर्घमात्रा को प्रदर्शित करने की दूसरी विधि है संकेत को दो बार लिखना । यह फ़ीनी लिपिप्रणाली में प्रयुक्त होती है, जैसे kaappi "कपबोर्ड",—इसमें [a] और [p] दोनों दीर्घ हैं।

अमेरिकन अंग्रेजी में स्वरों की कालमात्रा परिच्छेदक नहीं है। निम्न और निम्नतर-मध्य स्वर, जैसे pan, palm, pod, pawn के स्वर, pin, pen, pun, pull के स्वरों की अपेक्षा अधिक दीर्घ हैं। इसके अतिरिक्त ये सभी स्वर सघोष ध्वनियों के पूर्व अघोष ध्वनियों की तुलना में दीर्घतर हैं, इस प्रकार pan और pad का [ɛ] pat और pack के [ɛ] की तुलना में दीर्घतर है, pin और bid का [i], pit और bit के [i] की तुलना में दीर्घतर है । निस्सन्देह ये अन्तर परिच्छेदक नहीं है क्योंकि ये स्वरों की उच्चता और परवर्ती स्वनिमों पर निर्भर हैं ।

कालमात्रा विवेचन में सापेक्षिक कालावधि की एक यादृच्छिक इकाई मात्रा (arbitrary unit) मान लेना सुविधाजनक रहता है । इस प्रकार यदि हम कहते हैं कि ह्रस्व स्वर एक मात्रा काल तक रहता है तो उसी भाषा के दीर्घस्वरों को हम $1\frac{1}{2}$ या 2 मात्राओं का मान सकते हैं ।

फ्रेंच-भाषा में दीर्घ और ह्रस्व स्वरों का अन्तर विचित्र रीति से काम करता है । दीर्घस्वर केवल शब्द के अन्तिम व्यंजन अथवा व्यंजनसमूह के पूर्व आता है । दीर्घस्वर की उपस्थितिमात्र फ्रेंच में यह प्रदर्शित करती है कि अगले व्यंजन अथवा व्यंजनसमूह में शब्द का अन्त होने जा रहा है । इसके अतिरिक्त इस स्थिति में स्वयं स्वनिमों की प्रकृति से स्वरों का दीर्घत्व अधिकांशतया पूर्ण-रूपेण निर्धारित होता है। सानुनासिक स्वर [ã, ɛ̃ õ, œ] और स्वर [o ɸ] इन स्थितियों में सर्वदा दीर्घ रहते हैं: tante [tãt] 'चाची', faute [fo:t] "त्रुटि"। शेष स्वर सदैव दीर्घ हैं यदि अन्तिम व्यंजन [j. r. v. vr. z. ʒ] है, जैसे, cave [ka:v] 'कोठरी vert, [vɛ:r] "हरा" में केवल उन स्थलों पर जो इन दो नियमों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, स्वरदीर्घत्व परिच्छेदक है, जैसे, bête [bɛ:t] "पशु" किन्तु bette [bɛt] "चुकन्दर" ।

अंग्रेजी में दीर्घव्यंजन पदसंहितियों और समासों में मिलते हैं, जैसे, pen-knife ['pen, najf] अथवा eat two ['ijt 'tuw] । एक ही शब्द के

भीतर [nn], रूपों के उच्चारण परिवर्तों में मिल सकता है, जैसे, meanness के ['mijnnis] और ['mijnis] । किन्तु सरल शब्दों के भीतर दो व्यंजन दीर्घतत्त्वों का प्रभेद इतालवी में प्रसामान्य है, जैसे, fatto ['fatto] "क्रिया", किन्तु fato ['fato['भाग्य'; इसी प्रकार का भेद फ़ीनी और अन्य अनेक भाषाओं में है । स्वेडी और नार्वेजी में एक व्यंजन केवल बलाघातयुक्त ह्रस्व स्वर के बाद सदैव दीर्घ रहता है और इस प्रकार व्यंजन दीर्घत्व प्रभेदक नहीं है । डच-भाषा में दीर्घ व्यंजन नहीं हैं, यहां तक कि जब समान व्यंजन पदसंहिति के पास-पास आते हैं तब भी व्यंजन एक मात्रा का करके बोला जाता है, इस प्रकार पदसंहिति *dat* [dat] "वह" + tal [*tal*] "संख्या" का उच्चारण ['da 'tal] है ।

7.3 बलाघात (Stress) अर्थात् तीव्रता (intensity) अथवा तारस्वनता (प्रबलता) (loudness)—में स्वरलहरियों के आयाम (amplitude) का आधिक्य होता है । बलाघात अधिक शक्तिशाली संचालनों के द्वारा उत्पन्न होता है जैसे अधिक श्वास निकालना, घोषतंत्रियों को घोषत्व के लिए अधिक पास लाना, और मुखनिःसृत ध्वनियों के जनन में मांसपेशियों को अधिक दृढ़ता से प्रयुक्त करना । अंग्रेजी के तीन गौण स्वनिम हैं जिनमें सबल बलाघात है और वे उन स्वनिमों से भिन्न हैं जिन्हें हम बलहीन कह सकते हैं । अंग्रेजी का उच्चतम बलाघात (highest stress)["] विरोध को अथवा प्रतिवाद को और सबल बनाने में प्रयुक्त होता है, उच्च अथवा सामान्य बलाघात high stress, ordinary stress) ['] प्रसामान्यतया प्रत्येक शब्द के किसी-न-किसी एक अक्षर पर होता है, और निम्न अथवा गौण बलाघात (low stress. secondary stress) [ˌ] समासपदों अथवा लम्बे शब्दों के एक अथवा एकाधिक अक्षरों पर होता है । पद-संहितियों में कुछ शब्दों में उच्च बलाघात के स्थान पर निम्न बलाघात अथवा बलाघात का अभाव मिलता है । उदाहरणार्थ :

This is *my* birthday present [ð'is iz "maj bəːodej 'preznt]

It *isn't my* fault, and it is *your* fault[it "iz nt maj 'fɔːlt, ən it "iz "jɔː'fɔːlt]

I'm going out [aɟm, gowing jawt]

let's go back ['lets 'gow 'bᵋk]

business man ['biznis 'mᵋn]

gentleman ['dzentlmənj]
dominating ['dɛmi'nejtiŋ]
domination ['dɔmi'n ejʃn]

जर्मन वर्ग की सभी भाषाओं में ऐसी ही व्यवस्थाएँ मिलती हैं । अन्य भाषाओं में जैसे, इतालवी, स्पेनी, स्लावी, चीनी आदि में भी ऐसी ही व्यवस्था है । बलाघात को काम में लानेवाली इन भाषाओं में बलाघात भाषिकरूपों के संयोजनों को लक्षित करता है । प्रतिरूपात्मक उदाहरण में पदसंहिति के प्रत्येक शब्द में एक उच्च बलाघात प्रयुक्त होता है, अपवादस्वरूप केवल कुछ शब्दों पर बलाघाताभाव अथवा निम्न बलाघात मिलता है । किन्तु इस प्रतिरूप की कुछ भाषाओं में एक से अधिक अक्षर वाले सरल भाषिकरूप (जैसे कि अविश्लेष्य शब्द) मिलते हैं जोकि बलाघात के स्थान के अनुसार प्रभिन्न होते हैं, जैसे रूसी ['gorot] 'नगर', और [mo'ros] 'पाला' । ये दोनों सरल अविश्लेष्य शब्द हैं अर्थात् इनमें पूर्वप्रत्यय अथवा परप्रत्यय नहीं लगा है, इस प्रकार यहाँ बलाघात का स्थान (place of stress) मुख्य स्वनिम है ।

कुछ भाषाओं में तारस्वनता की क्रमकोटियाँ अपरिच्छेदक अभिलक्षण हैं । मिनॉमनी भाषा में वाक्य में अंग्रेजी वाक्य की भाँति उच्चता-निम्नता का निर्धारण पूर्णतया मुख्यस्वनिमों द्वारा होता है और अर्थ के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है । फ्रेंच में बलाघात का वितरण केवल अंगविक्षेप के एक भेद के समान है, वहां सामान्यतया पदसंहिति का अन्त शेषांश से अधिक तारस्वन होता है, कभी-कभी, सबल भाषण में, कुछ अन्य अक्षर विशेषतः तारस्वन होता है, और प्रायः बलाघात के विशेष उतार-चढ़ाव के बिना अक्षरों के एक लम्बे पूर्वापरक्रम (अनुक्रम) को हम सुनते हैं ।

7.4 बलाघात प्रयुक्त करने वाली भाषाओं में भी इस विषय पर कुछ अन्तर होता है कि बलाघात किस प्रकार प्रयुक्त किया जा रहा है । अंग्रेजी में एक अपरिच्छेदक परिवर्तन है जहाँ बलहीन (बलाघातहीन) शब्दों और अक्षरों के स्वर 'दुर्बलीकृत' (weakened) रूप में मिलते हैं—उनकी कालावधि अपेक्षाकृत कम है और वे कुछ अधिक शिथिल मांसपेशियों से बोले जाते हैं, घोषत्व कभी-कभी मर्मरमात्र रह जाता है और जिह्वा एक-सी स्थिति पर, कहीं उच्च-मध्य स्थिति के आस-पास, टिकने लगती है । दुर्बलता की क्रमकोटि एक उच्चार से दूसरे उच्चार में भिन्न होती है और अंग्रेजी के विभिन्न

भौगोलिक और सामाजिक प्रतिरूप के अनुसार अत्यधिक भिन्न होती है। सब से कम बलाघात वाले अक्षरों के स्वर, निस्सन्देह ह्रस्व और शिथिल होते हैं, ये स्वर landed ['lɛndidl], glasses ['gla:siz, heavy ['hevi'] में अत्यधिक शिथिल [i] ; bitter ['bitə], bottom ['bɔtən]parrot ['pɛrɔt] में [ɔ:] से मिलता हुआ किन्तु निस्सन्देह ह्रस्वमात्रिक एक अत्यधिक शिथिल स्वर [ə], और, अन्त में, bottle ['bɔtl], button '[bAtn] [l] [n] में आक्षरिक [l] और [n] हैं। जहाँ हमें वही रूल किन्हीं संयोजनों में बलाघातयुक्त और अन्य में बलाघातहीन मिलता है, वहां स्पष्ट विरोध दिखलाई पड़ता है, जैसे--

con--['kɔn-] : Convict, (संज्ञा)]'kɔnvikt]
[kən-] : Convict,(क्रिया) [kən'vikt)
re--['rij-] : reflex ['rijfleks], ['re-] : refuse, (संज्ञा) ['refjuws]
[ri]reflect [ri'flekt], refuse (क्रिया) [ri'fjuws]
pro--['prow-] : protest (संज्ञा) ['prowtest], ['prɔ-] :
progress संज्ञा ['prɔgress] और ['prowgres]
[prə-] : protest, (क्रिया) ['prətest], progress (क्रिया) [prə'gres]

vac—['vejk-] : vacant ['vejkənt]
[vək-] : vacation [və'kejfn]
—bel [-'bel] : rebel (क्रिया) [ri'bəl]
[-bl] : rebel (संज्ञा) ['sebl]
-tom [-'tɔm] : atomic [ə'tɔmik]
[-tɛm] : atom ['ɛtəm]
-tain [-'tejn] : maintain [mən'tejn, mejn'tejn]
[-tin] : maintenance ['mejntinəns]

इन प्रकार के स्थलों पर दुर्बलत्व की कई कोटियाँ साथ-साथ मिलती हैं और उच्चार की गति और चित्तवृत्ति (औपचारिक, परिचित आदि) के अनुसार प्रयुक्त होती हैं। स्थानिक और सामाजिक अन्तर भी मिलते हैं। अमेरिकन इंलिग्श में dictionary ['dikʃn̩'ejr ij] secretary ['sekre, tejrij] (तुलना कीजिए secretarial ['sekre'tejrijl), किन्तु ब्रिटिश इंग्लिश में दुर्बलतर रूप ['dikfn̩n, sekrətri] मलते हैं। इसके विपरीत Latin

['lɛtn,], Martin ['martn,] आदि रूपों में दुर्बलता की यह क्रमकोटि निश्चयतः इंग्लैण्ड में अमानक है, और वहाँ ['lɛtin, 'ma:tin] मानक उच्चारण है।

बलाघात को परिच्छेदक में प्रयुक्त करने वाली सभी भाषाओं में बलाघातहीन स्वर दुर्बल हो जाएँ ऐसी बात नहीं है। अंग्रेजी-भिन्न जर्मनवर्गीय भाषाओं में बलाघातहीन अक्षरों के स्वर बिल्कुल उसी प्रकार उत्पन्न होते हैं जिस प्रकार बलाघातयुक्त स्वर; जर्मन Monat ['mo:nat] "मास" kleinod ['klajno:t] 'रत्न' Armut ['armu:t] 'निर्धनता' के बलाघातहीन स्वर *hat* [hat] अंग्रेजी has, Not [no:t] 'आपत्ति', Mut [mu:t] 'साहस' में मिलने वाले बलाघातयुक्त स्वरों के समान है। इन भाषाओं में केवल एक स्वर, ह्रस्व [e], बलाघातहीन स्थिति में दुर्बल परिवर्त में मिलता है। इस प्रकार जर्मन hatte ['hate] अंग्रेजी had, अथवा gebadat [ge'ba:det] अंग्रेजी bathed में [e]–स्वर ह्रस्वतर रूप में बोला जाता है और Bett [bet] 'बिछौना, की अपेक्षा जिह्वा कम ऊँची और अग्र है। और baden ['ba:den] 'नहाना' (क्रि०), जैसे रूप में द्वितीय अक्षर ध्वानिकीय दृष्टि से अंग्रेजीरूप sodden ['sɔdn] के द्वितीय अक्षर के समान है तथा जर्मन denn [den] 'तब' से बहुत भिन्न है। ध्वनिविज्ञानविद् प्रायः दुर्बलीकरण को [e] के बलाघातहीन रूप [ə] द्वारा प्रदर्शित करते हैं, और hatte, [baden] को ['hatə], 'ba:den] अथवा ['ba:dn] के रूप में प्रतिलेखित करते हैं, किन्तु यह अनावश्यक है क्योंकि बलाघात चिह्नमात्र दुर्बलीकरण को द्योतित करने में समर्थ है।

अन्य बलाघातप्रयोगी भाषाओं में, जैसे इतालवी, स्पेनी, बोहेमी, पोली में बलाघातहीन स्वरों के लिए कोई विशेष परिवर्त प्रयुक्त नहीं होते हैं। उदाहरणार्थ, तुलना कीजिए, अंग्रेजी restitution [,resti'tuwsn,] की इतालवी restituzione [restitutsione] से। बोहेमी शब्द *kozel* ['kozel] 'बकरा,' में [e] बिल्कुल उसी प्रकार पूर्णतया जनित होता है जिस प्रकार Zelenec ['Zelenets] "सदाबहार" में।

7.5 बलाघात प्रयोगी भाषाओं के बीच एक अन्य अन्तर इस बात का होता है कि तारस्वनता की वृद्धि किस बिन्दु (स्थान-बिन्दु) से प्रारम्भ हुई है। अंग्रेजी में, यदि शब्द के प्रथम अक्षर पर बलाघात है, तो तारस्वनता में ठीक शब्द के प्रारम्भ पर वृद्धि प्रारम्भ होती है। तदनुसार, नीचे दिये युग्मों जैसों में अन्तर आ जाता है:

a name [ɔ'nejm] an aim [ən'ejm
that sod ['ʒɛt 'sɔd] that's odd ['ʒɛts'ɔd]
that stuff ['ʒɛt 'stʌf] that's tough ['ʒɛts 'tʌf

ऐसी ही प्रवृत्ति जर्मनी और स्कैंडीनेविया की भाषाओं में मिलती है। वस्तुतः जर्मन में बलाघात का आरंभ इतना बलशाली होता है कि बलाघात-युक्त शब्द अथवा तत्व के प्रारंभिक स्वर के पूर्व एक अपरिच्छेदक श्वासद्वारीय-स्पर्श सा सुनाई पड़ता है, जैसे ein Arm [ein'arm] (एक भुजा), अथवा Verein [fer-'ajn] (समुदाय) में जहाँ ver–एक बलाघातहीन पूर्व-प्रत्यय है।

इसके विपरीत, अनेक बलाघात प्रयुक्त करने वाली भाषाओं में बलाघात का प्रारम्भ-बिन्दु पूर्णतया मुख्य स्वनिमों की प्रकृति से निर्धारित होता है। उदाहरणार्थ डच भाषा में यदि बलाघातयुक्त अक्षर के स्वर के पूर्व एकाकी व्यंजन हो, तो वह एकाकी व्यंजन तारस्वनता का भागी होता है चाहे शब्द-विभाजन कहीं हो और अर्थदृष्टि से असंगत हो। जैसे, een aam (आम–(40 गैलन का एक नाप) और een naam (नाम) दोनों का उच्चारण [e'na:m] है, और, पद-संहिति het ander oog (दूसरा नेत्र) का उच्चारण [e'tande'ro:x] है। ऐसी ही प्रवृत्ति इतालवी, स्पेनी और स्लावी भाषाओं में है।

7.6 तारत्व (pitch) के अन्तर, अर्थात् ध्वनि के संगीतात्मक पक्ष में कम्पन-आवृत्तियों (frequency of vibrations) के अन्तर, अंग्रेजी में और कदाचित् अधिकांश भाषाओं में गौण स्वनिमों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। वास्तविक ध्वानिकी रूप अत्यन्त परिवर्तनशील है, कुछ भौगोलिक परिवर्तन भी होते हैं। अंग्रेजों के Thank you ! में आरोही सुर ((rising pitch) अमेरिकावासियों के कानों में खटकता है और कुछ सामान्य कथनों में अंग्रेजों का आरोही सुर अमेरिकावासियों को इस भ्रम में डाल देता है कि कथन हाँ––अथवा––नहीं प्रकार का प्रश्न है। इसके अतिरिक्त सुरों के अभिलक्षणों को हम बहुत अधिक अंगविक्षेपों की भाँति प्रयुक्त करते हैं, जैसे कि जब हम कठोरता, अवज्ञा, अवहेलना, धृष्टता, स्नेह अथवा प्रसन्नता आदि से बोलते हैं। अंग्रेजी में और सामान्यतया यूरोप की भाषाओं में सुर एक ऐसा ध्वानिकी अभिलक्षण है जहाँ अपरिच्छेदक किन्तु सामाजिकतया प्रभावशाली अंगविक्षेपवत् विभिन्नताएँ वास्तविक भाषिक प्रभेदों से घनिष्ठतया आकर मिलती हैं। भाषण में अपरिच्छेदक किन्तु सामाजिकतया प्रभावशाली प्रतिमानों की खोज, जोकि

कठिनता से अब होना प्रारम्भ हुई है, तदनुसार बहुत कुछ सुर से सम्बद्ध है। इसी कारण उन स्थलों को ठीक-ठीक निर्दिष्ट करना सरल कार्य नहीं है जहाँ अंग्रेजी में सुर के अभिलक्षणों को गौण स्वनिमों का वास्तविक स्थान प्राप्त है।

यह स्पष्ट है वाक्यान्त (एक पद जिसे बाद में परिभाषित करेंगे) सदैव सुर के कुछ विशेष वितरण से चिह्नित रहता है। हम "It's ten o'clock I have to go home" को एक वाक्य के रूप में बोल सकते हैं और तब अन्त में अन्तिम-सुर (final-pitch) आएगा या दो वाक्यों के रूप में बोल सकते हैं और तब दो बार अन्तिम-सुर आएगा––पहला clock पर और दूसरा अन्त में : It's ten o'clock. I have to go home अन्तिम-सुर के बाद हम किसी समय भी समय तक के लिए चुप रह सकते हैं अथवा बात-चीत का अन्त कर सकते हैं।

अन्तिम-सुर के क्षेत्र के भीतर अनेक स्वानिमीय अन्तरों में भेद किया जा सकता है। सामान्य कथन के रूप में It's ten o'clock प्रश्नवाचक It's ten o'clock? से भिन्न है क्योंकि प्रश्नवाचक में अन्त आरोह में होता है न कि अवरोह में। प्रश्नों में भी It's ten o'clock? अथवा Did you see the show? जैसे हाँ—अथवा––नहीं (yes-or-no) प्रश्नों की सुर-योजना (pitch-scheme), What time is it? अथवा Who saw the show जैसे पूरक प्रश्नों के सुरक्रम (अनुतान) से भिन्न है। पूरक प्रश्नों के अन्त में अपेक्षाकृत कम आरोह है और उत्तर विशिष्ट शब्दों अथवा पदसंहितियों द्वारा दिया जाता है। प्रतिलेखन में इन्हें प्रश्नवाचक चिह्न को उल्टा करके [¿] प्रदर्शित करते हैं। यह प्रभेद वहाँ स्पष्टतया मिलता है जहाँ एक पूरक प्रश्न और उस हाँ-अथवा-नहीं प्रश्न का विरोध है जो यह पूछता है कि पूरक प्रश्न का उत्तर दिया जाए या नहीं, जैसे Who saw the show? ['huw'sɔ ðə∫o¿] किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में पूछता है, किन्तु ['huw 'sɔ:ðə '∫ow¿] यह पूछता है कि क्या तुम यह प्रश्न पूछ रहे थे?

ये अन्तिम-सुर के तीनों प्रतिरूप निम्नलिखित उदाहरण में साथ-साथ मिलते हैं। यदि कोई कहता I'm the man who—who— तो उसके बीच में बोलने वाला अन्य व्यक्ति, सामान्य-कथन के अन्तिम सुर के साथ कह सकता है Who took the money [huw 'tuk ðə 'mʌni] यह उस पूरक-प्रश्न Who took the money ['huw 'tuk ðə 'mʌni¿] के व्यतिरेक में जिस पर बीच में बोलने वाला अन्य व्यक्ति इस बात का निश्चय करने के लिए कि

यह प्रश्न है अथवा औपचारिक प्रारम्भ-बिन्दु बनाने के लिए एक हाँ-अथवा-नहीं प्रश्न के रूप में बोल सकता है, जैसे, Who took the money ?['huw 'tuk ðə 'mʌni?] (I'll tell you who took it.... मैं बताऊंगा किसने लिया है) ।

फिर भी, ऐसा लगता है कि सुर और बलाघात के विषय में ये तीनों प्रतिरूपों के वाक्य, अपसामान्य रूप से भी बोले जाते हैं, यदि वक्ता किसी सबल उद्दीपन से प्रभावित होकर बोल रहा होता है। इस प्रकार के वाक्य के लिए हम निस्सन्देह एक अन्य गौण स्वनिम--उद्गारात्मक-सुर (exclamatory pitch)--स्थापित कर सकते हैं। इसे संकेत [!] से प्रदर्शित करते हैं। इस प्रतिरूप के अन्तर्गत अनेकविध उपभेद आते हैं, जैसे क्रोध, आश्चर्य आह्वान, अवज्ञा आदि का सुरक्रम (अनुतान) (intonation) और ये अंगविक्षेपवत् विभिन्नताओं के समान (अपरिच्छेदक) हैं। उद्गारात्मक-सुर स्वनिम किसी भी अन्तिम-सुर स्वनिम के साथ आ सकता है। प्रश्न के उत्तर के रूप में दिए John [dʒɔn] के विरोध में [John ! ['dʒɔn !] है जो श्रोता (John) की उपस्थिति अथवा ध्यानाकर्षण के लिए बोला जाता है। इसी प्रकार सामान्य प्रश्न के रूप में दिए John ? [dʒcn ?](Is that John ?) के विरोध में John ?! ['dʒɔn ?!] है जहाँ प्रश्न के साथ उद्गारात्मक सुर है और जहाँ तात्पर्य है कि "आशा करता हूँ यह John नहीं है। इसी प्रकार Who was watching the door [¿] के विरोध में उद्गारात्मक Who was watching door [¿!] है जो तात्कालिक सहायता अथवा आपत्ति के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।

अंग्रेजी में पाँचवें गौण स्वनिम के रूप में हम अर्धविराम-सुर (pause pitch) अथवा विलम्बन-सुर (suspension-pitch) [।] को ले सकते हैं जिसमें वाक्य के अन्तर्गत विराम के पूर्व सुर में आरोह होता है। अन्तिम-सुरों के विरोध में इसका प्रयोग यह प्रदर्शित करता है कि वाक्य का उस बिन्दु पर अन्त नहीं हो रहा है जहाँ पर शब्द संहिति के रूप से वाक्यान्त संभव हो रहा था, जैसे; I was waiting there[।] when in came the man. John [।] the idiot [।] missed us (विरोध में : John the Baptist was preaching)। The man [।] who was carrying a bag [,] came upto our door. (यहाँ एक ही आदमी है और वह झोला लिए आया है) किन्तु इसके विरोध में The man who was carrying a bag

came up to our door है (यहाँ लगता है कि अनेक आदमी हैं, उनमें से एक के पास झोला है, और वह आया है) ।

7.7 अंग्रेजी में इस प्रकार बलाघात और सुर (स्वराघात) दोनों केवल गौण स्वनिमों के रूपों में मिलते हैं किन्तु दोनों के प्रकार्य में अन्तर है । बलाघात-स्वनिम केवल तब काम में आता है जबकि भाषण के दो या अधिक तत्त्व जुड़कर एक रूप बनाते हैं, अतएव John जैसे सरल शब्द में बलाघात का परिच्छेदक अभिलक्षण नहीं लग सकता है । बलाघात के परिच्छेदक अभिलक्षण के लिए पदसंहिति अथवा समास अथवा कम-से-कम contest जैसा दो या अधिक अंशों वाला शब्द चाहिए । इसके विपरीत सुर (स्वराघात) स्वनिम प्रत्येक उच्चार में आते हैं चाहे वह अकेला शब्द ही क्यों न हो, जैसे, John ! John ? John इसके अतिरिक्त अंग्रेजी में सुर (स्वराघात) सिद्धान्ततः किसी शब्दविशेष अथवा पदसंहिति विशेष के साथ नहीं लगता है प्रत्युत अन्यथा बिल्कुल एक से रूप में अर्थ के अन्तर से बदलता रहता है ।

सुर (स्वराघात) के गौण स्वनिमों के प्रयोग में अनेक भाषाएँ अंग्रेजी से भिन्न हैं । उनमें जिस प्रकार अंग्रेजी का बलाघात एकाधिक तत्त्वों वाले शब्दों अथवा पद-संहितियों पर लगता है उसी प्रकार सुर लगता है । स्वेडी और नार्वेजी में उदाहरणार्थ दो अक्षर वाले शब्द में अंग्रेजी की भाँति एक पर सामान्य उच्च बलाघात होता है, किन्तु इसके अतिरिक्त, बलाघातयुक्त अक्षर दो विभिन्न सुर-योजना से विभिन्नीकृत हैं । बलाघात के साथ-साथ आरोही सुर भी आ सकता है और पूरे का ध्वानिकीय प्रभाव वैसा ही पड़ता है जैसा कि अंग्रेजी के उच्च बलाघात का, उदाहरणार्थ, नार्वेजी ['bøner] (किसान) अथवा ['a'ksel] (कन्धा) । इसके विरोध में (परिच्छेदक अन्तर से) बलाघात के साथ-साथ अवरोही सुर भी आ सकता है, जैसे [ˇbøner] (सेम) अथवा [ˇaksel] (धुरी) । यह परिच्छेदक शब्द-सुर (word-pitch) इस कारण और भी महत्त्वपूर्ण है कि सुर और बलाघात के गौण स्वनिमों के प्रयोग में अन्य सभी दृष्टियों से स्वेडी और नार्वेजी अंग्रेजी से घनिष्ठतया मिलती-जुलती है ।

जापानी भाषा में दो सापेक्षिक सुरों, प्रसामान्य और उच्चतर, में प्रभेद है । जैसे, ['hana] (नाक) में दोनों अक्षरों पर प्रसामान्य सुर है, ['hana] (प्रारंभ) में प्रथम अक्षर पर उच्चतर सुर है और [ha'na] (फूल) में दूसरे अक्षर पर उच्चतर-सुर है । यहाँ शब्द-बलाघात के गौण-स्वनिम नहीं दिखाई पड़ते हैं ।

और अन्य भाषाओं में सुर का अभिलक्षण मुख्य-स्वनिम के रूप में प्रयुक्त मिलता है। उत्तरी-चीनी में इनमें से चार प्रभिन्नतया स्पष्ट हैं, जिन्ह हम संख्या (ऊपर लिखी संख्या) से संकेतित करते हैं :

[1[	उच्च सम	: [ma¹]	(माँ)
[2]	उच्च आरोही	: [ma²]	(जूट)
[3]	निम्न आरोही	: [ma³]	(घोड़ा)
[4]	निम्न अवरोही	: [ma⁴]	(डाँट)

कैन्टनी बोली में ऐसे छह् सुर मिलते हैं। वस्तुतः, सुर के मुख्य स्वनिम बहुत-सी अन्य भाषाओं में भी मिलते हैं, चाहे कुछ सरल प्रतिरूपों में, जैसे लिथुएनी, सर्बी, प्राचीन ग्रीक में अथवा चाहे जटिल प्रतिरूपों में, जैसे अफ्रीकी भाषाओं में।

यह उल्लेखनीय है कि अमेरिकन-अंग्रेजी में बलाघातयुक्त स्वरों पर अपरिच्छेदक सुर-विभिन्नताएँ मिलती हैं। अघोष ध्वनि के पूर्व, जैसे map अथवा mat में, सुर-योजना सरल है, किन्तु सघोष ध्वनि के पूर्व, जैसे mad अथवा man में, साधारणतया और तारस्वन बलाघात के साथ स्पष्टतया, आरोही-अवरोही सुर मिलता है।

7.8 जहाँ एक बार हमें इसकी धारणा स्पष्ट हो जाए कि स्वनिम कैसे उत्पन्न हुआ, वहाँ फिर विभिन्न आपरिवर्तनों (modifications) पर उनकी उत्पत्ति के अनुसार विचार कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी स्वनिम [k,g] जिह्वापश्च द्वारा कोमलतालु पर बने पूर्णविरोध से उत्पन्न होते हैं। अगर हम ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि पूर्णविरोध आगे बढ़कर हुआ है जबकि अगला स्वनिम अग्रस्वर है, जैसे, *kin* [kin], keen [kijn], give [giv], gear [giə] में, और पूर्णविरोध पीछे हटकर है जबकि अगला स्वर एक पश्चस्वर है, जैसे, cook [kuk], coop [kuwp], good [gud], goose [guws] में। यह प्रसामान्य स्थिति, जैसे, car [ka:], cry [kraj] guard [ga:d] grey [grej], के व्यतिरेक में है। अंग्रेजी स्वनिम [h] परवर्ती स्वर की मौखिक-स्थिति से उत्पन्न होता है। ये परिवर्त परिच्छेदक नहीं हैं चूँकि ये पूर्णतया परवर्ती स्वनिमों पर निर्भर हैं। उन भाषाओं में, जहाँ इस प्रकार के अन्तर प्रभेदक हैं, हमें उन्हें "आपरिवर्तन" नाम से पुकारने का कोई अधिकार नहीं है, चूँकि इन भाषाओं में ये स्वनिम के अनिवार्य अभिलक्षण हैं। हम "आपरिवर्तन" पद का चाहें तो ध्वनिजनन में घोषत्व के अक्रियत्व अथवा

सक्रियत्व के लिए, अथवा अनुनासिकत्व की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति के लिए, अथवा स्वर-जनन में ओठों के गोलाव अथवा खिंचाव के लिए प्रयुक्त कर सकते हैं। फिर भी, कुछ भाषाओं में स्वानिमीय किन्तु प्रायः कम परिचित अभिलक्षणों पर इस प्रकार विचार करना सुविधाजनक है।

इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण तालव्यरंजन (palatalization) है। व्यंजन ध्वनि के जनन में जिह्वा और ओठ, जहाँ तक स्वनिम के मुख्य अभिलक्षणों से अविरुद्ध है, [i] अथवा [e] जैसे अग्रस्वर की स्थिति ग्रहण करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी [k], और [g] का, अग्रस्वर के पूर्व अपरिच्छेदक तालव्यरंजन होता है। तालव्यरंजन कुछ भाषाओं में, उल्लेखनीय रूप से कुछ स्लावी भाषाओं में परिच्छेदक अभिलक्षण के रूप में प्रयुक्त होता है। उदाहरण के लिए रूसी में अधिकांश व्यंजन-स्वनिमों के युग्म हैं और उनमें परिच्छेदक अन्तर शुद्ध (plain) बनाम तालव्यरंजित (palatalized) का है। तालव्य-रंजित व्यंजनों के प्रतिलेखन के लिए नानाविध विधियाँ काम में लाई गई हैं, जैसे संकेत के ऊपर बिन्दु (˙), गोलाई (‚), अथवा काकपद (ˇ) चिन्ह, अथवा (संकेत के बाद में) घातांक के रूप में (ʹ) अथवा बलाघात चिन्ह (ʹ), अथवा तिर्यक् अक्षरों का प्रयोग। इस पुस्तक में मुद्रण की सर्वाधिक सुविधा के लिए तिर्यक्-अक्षरों का प्रयोग किया गया है। [*pat*] "पाँच" जैसे रूसी शब्द में मुँह के कोने पीछे खींचे जाते हैं और जिह्वा दोनों व्यंजनों के जनन में अग्रस्वर की स्थिति में ऊँची बनी रहती है। निश्चय ही [t] के सम्बन्ध में इसका तात्पर्य यह हुआ कि जब जिह्वा की नोक और कोर ऊपरी दाँत के मूल में अवरोध बना रहीं थीं, जिह्वाफलक तालुप्रदेश की ओर बढ़ रहा था। इसी प्रकार ['*dada*] "चाचा" अथवा ['*nana*] "आया (संज्ञा)" जैसे शब्दों में है। अन्तर का परिच्छेदकत्व इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है: [bit] "सत्ता", [bi*t*] "होना (क्रि०)" [*bit*] 'पीटना (क्रि०)"।

कुछ भाषाएँ कोमलतालव्यरंजित (velarized) व्यंजनों को भिन्न मानतीं हैं। इनके उत्पादन में जिह्वा पश्चस्वर की स्थिति तक पीछे खींची जाती है। यदि व्यंजन के उत्पादन में ओठ गोल किए जाते हैं तो व्यंजक ओष्ठ्यरंजित (labialized) व्यंजन कहा जाता है। तालव्य-ओष्ठ्यरंजित (labiovelarized) व्यंजनों में ये दोनों आपरिवर्तन साथ-साथ आते हैं।

7.9 वाग्-अवयव जिस रीति से अक्रियता से स्वनिम के निर्माण में सक्रिय होते हैं, अथवा एक स्वनिम से दूसरे स्वनिम को निर्मित करते हैं,

अथवा स्वनिम के निर्माण से अक्रियता तक पहुँचते हैं, वह रीति भी प्रायः विविधता प्रदर्शित करती है जिन्हें हम संक्रमण (transitions) कहते हैं। इस 'संक्रमण' पद का प्रयोग पर्याप्त तब ठीक हैं जबकि अन्तर परिच्छेदक नहीं है, किन्तु, जब वे परिच्छेदक हैं तब हमें वस्तुतः कोई अधिकार नहीं है कि स्वनिमों के कुछ अनिवार्य अभिलक्षणों को आधारभूत कहें और अन्य को संक्रमण कहें।

निःशब्दता (मूकता) की स्थिति से घोष व्यंजनों के उत्पादन में, जैसे bay, day, gay में, अंग्रेजी में घोषणा-क्रिया धीरे-धीरे करते हैं और इन सघोष ध्वनियों से मूकता की स्थिति के पहुँचने में, जैसे ebb, add, egg में, घोषणक्रिया को धीरे-धीरे कम करते जाते हैं। यह फ्रेंच रीति से व्यतिरेक में है। फ्रेंच में इन स्थितियों में व्यंजन, प्रारम्भ से अन्त तक, पूर्णतः घोषवान् हैं। अंग्रेजी में मूकता की स्थिति से बलाघातयुक्त स्वर के उत्पादन में घोष का क्रमिक प्रारम्भ होता है, किन्तु उत्तरी जर्मन-भाषा में पहले कण्ठद्वार बन्द किया जाता है और तब अचानक पूर्ण घोषत्व प्रारम्भ हो जाता है, फलस्वरूप एक (अपरिच्छेदक) श्वासद्वारीय स्पर्श उत्पन्न होता है। कभी-कभी, एक अपरिच्छेदक परिवर्त के रूप में अंग्रेज जर्मन-शैली से, और जर्मन अंग्रेजी-शैली से बोल सकता है, फ्रेंच में और अमानक दक्षिणी अंग्रेजी में एक तीसरी भाँति का प्रारम्भ अपरिच्छेदक में मिलता है जिसमें कण्ठद्वार [h]-स्थिति से गुजरता है। मानक अंग्रेजी में और जर्मन में यह भेद परिच्छेदक है, जैसे अंग्रेजी heart [ha:t] की तुलना में art [a:t]। स्वर से मूकता की ओर, उल्लिखित भाषाएँ एक अभी तक कोमल (मन्द, क्रमिक) समाप्ति-संसर्पण (off–glide) से कार्य करती हैं। किन्तु कुछ अन्य स्थिति से गुजरती हैं अथवा श्वासद्वारीय स्पर्श में अचानक समाप्त होती हैं और कुछ अन्य भाषाओं में ये अन्तर स्वनिमीय हैं। अघोषध्वनि से सघोष ध्वनि विशेषतः स्वर की ओर जाने में, स्फोट के क्षण से ही घोषण-क्रिया प्रारम्भ हो जाती है अथवा घोषणक्रिया कुछ क्षण पीछे रह सकती है। प्रत्येक स्थिति में वह या तो मन्दभाव से प्रारम्भ होता है या श्वासद्वारीय स्पर्श से। ये अन्तर कुछ भाषाओं में स्वनिमीय हैं और § 6.6 में इनका विवेचन हो चुका है। तालव्यरंजित व्यंजनों के पूर्व अथवा पश्चात् अग्रस्वर से मिलता हुआ संसर्पण (glide) हो सकता है। इसी प्रकार कोमल तालव्य व्यजन पश्चस्वर संसर्पण के साथ आ सकते हैं।

व्यंजनों के पूर्वानुपरक्रम (अनुक्रम) में मुख्य संक्रमणीय अभिलक्षण दृढ़ (close) और शिथिल (open) संक्रमण के अन्तर का प्रतीत होता है। अंग्रेजी

में दृढ़ संक्रमण प्रयुक्त होता है। जब अंग्रेजी में एक स्पर्श से दूसरे पर जाया जाता है तो पहले के स्फोटन के पूर्व दूसरे का स्पर्शन बना लिया जाता है : उदाहरणार्थ, actor ['ektə] जैसे शब्द में [k] के स्फोटन के लिए जिह्वापश्च के कोमलतालु से हटने से पूर्व, जिह्वाग्र [t] के लिए मसूढ़ों को छूने लगती है इसी प्रकार, अंग्रेजी में स्पर्श संघर्षी के बीच दृढ़ संक्रमण होता है, जैसे, । Betsy, cupful, it shall में । इनमें स्पर्श-स्फोटन के पूर्व ही अवयव यथासंभव परवर्ती संघर्षी की स्थिति में पहुँच जाते हैं और इस प्रकार स्पर्श का स्फोटन अपूर्ण रहता है। यह उच्चारण फ्रेंच के शिथिल संक्रमण के व्यतिरेक में हैं। फ्रेंच में स्पर्शों का संघर्षी के पूर्व ही पूर्ण स्फोटन हो जाता है, जैसे, cette scéne [sɛt ʃɛ:z] "यह दृश्य," étappe facile [etap fasil] "सरल स्थिति", cette chais [sɜt fɛ:z] "यह कुर्सी"। यही अन्तर तथा-कथित द्वित्व (double) व्यंजनों में मिलता है जहाँ एक ही व्यंजन पूर्वानुपरक्रम में दो बार जाता है। अंग्रेजी में grab-bag ['grɛb, bɛg], hot time ['hct 'tajm], pen-knife ['pen, najf] जैसे रूपों में वर्ग [bb, tt, nn] के लिए एक ही स्पर्शन मिलता है, यह स्पर्शन (अवरोध) एक एकाकी व्यंजक के स्पर्शन की अपेक्षा दीर्घकालिक होता है। द्वित्व व्यंजन में एक विशिष्टता यह भी है कि स्पर्शन पर बलाघात (अंग्रेजी में, दुर्बल) और स्फोटन पर बलाघात (अंग्रेजी में, प्रबल) भिन्न-भिन्न होता है। फ्रेंच में इसी प्रकार की स्थितियों में जैसे cette table [sɛt table] "यह मेज" में सामान्यतया दो स्फोटन मिलते हैं, दोनों व्यंजनों के स्पर्शन तथा स्फोटन हैं।

यदि संक्रमण के दोनों प्रतिरूप एक भाषा में मिलते हैं तो यह अन्तर स्वनिमीय-प्रभेद के लिए काम में लाया जा सकता है। इस प्रकार, पोली में अधिकतर फ्रेंच की भाँति शिथिल संक्रमण है, जैसे, trzy [tʃi] "तीन" में। किन्तु [t] और [ʃ] का संयोजन दृढ़ संक्रमण में भी मिलता है और एक स्वनिम के रूप में मिलता है, जिसे हम [tʃ] से प्रदर्शित करते हैं, जसे czy [tfi] "क्या ? । इसी पोली में, एक पृथक् स्वनिम के रूप में, तालव्यरंजित रूप [tʃ] भी मिलता है, जैसे ci [ᵗfi] "तुम्हें" में।

अन्तिम उदाहरण से हमें संयुक्त स्वनिम (compound phonemes) के के अस्तित्व का पता चलता है—अर्थात् ध्वनियाँ जो उसी भाषा के या अधिक स्वनिमों के पूर्वानुपरक्रम (अनुक्रम) से मिलती हैं, किन्तु किसी रीति से ऐसे

पूर्वानुपरक्रम से भिन्न हैं और पृथक् स्वनिम के रूप में प्रयुक्त होती हैं। अनेक संयुक्तस्वनिमों में, अपने उदाहरणों में प्राप्त स्वनिमों की भाँति, एक स्पर्श और एक संघर्षी अथवा अन्य स्पर्श मिलते हैं। इस प्रकार के स्वनिम स्पर्श-संघर्षी (affricate) कहलाते हैं। अंग्रेजी में, जहाँ सभी व्यंजनगुच्छ में दृढ-संक्रमण मिलता है यह स्वनिमीय अभिलक्षण नहीं माना जा सकता है। फिर भी अंग्रेजी में दो स्पर्शसंघर्षी स्वनिम [tʃ] और [dʒ] हैं, जैसे church [tʃɔ:t] और judge [dʒʌdʒ] में। ये स्पर्शसंघर्षी सदैव तालव्यरंजित हैं और यह वह अभिलक्षण है जिसमें ये beet-sugar ['bijt, ʃagɔ], it shall [it 'ʃɛl], did Jeanne [did 'za:n] में मिलनेवाले [t] धन [ʃ] अथवा [d] धन [ʒ] के संयोजनों से भिन्न हैं।

7.10 स्वरों और प्रमुखतया संगीतात्मक ध्वनियों के पूर्वानुपरक्रमों (अनुक्रमों) के प्रतिपादन से बहुविधता मिलती है और संक्रमण के अनेक प्रतिरूप किसी-न-किसी भाषा में परिच्छेदक के रूप में मिलते हैं।

ध्वनियों के किसी भी पूर्वानुपरक्रम में कुछ ध्वनियाँ अन्यों की अपेक्षा कानों पर अधिक बल से पड़ती हैं। श्रव्यता (sonority) का अन्तर स्वरों और स्वरतुल्य ध्वनियों के संक्रमणीय प्रभावों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार, यदि अन्य अभिलक्षण एक से हैं (विशेषतः बलाघात), तो एक निम्न स्वर जैसे [a], उच्च स्वर जैसे [i] की अपेक्षा अधिक श्रव्य होता है। प्रत्येक स्वर व्यंजन की अपेक्षा अधिक श्रव्य हैं। नासिक्य, कम्पित अथवा पार्श्विक, स्पर्श और संघर्षी की अपेक्षा अधिक श्रव्य हैं। सिस्-ध्वनियाँ, जिनमें निःश्वासधारा संकीर्ण मार्ग में घनीभूत होती है, अन्य संघर्षियों की अपेक्षा अधिक श्रव्य हैं। संघर्षी स्पर्श की अपेक्षा अधिक श्रव्य होता हैं। एक सघोष ध्वनि अघोष की अपेक्षा अधिक श्रव्य होती है। इस प्रकार स्वनिमों के प्रत्येक पूर्वानुपरक्रम में श्रव्य का उतार-चढ़ाव होता है। [tatatata] जैसी श्रेणी में [ɑ] ध्वनियाँ [t] की अपेक्षा अधिक श्रव्य हैं। निम्नलिखित उदाहरण में श्रव्यता की चार क्रमकोटियाँ संख्या द्वारा प्रदर्शित हो रही हैं :—

Jack	caught	a	red	bird
[dʒɛk	kɔ:t	ə	red	bə:d
314	414	1	213	313

स्पष्टतया कुछ स्वनिम उन अन्य स्वनिमों (अथवा मूकता) की अपेक्षा

अधिक (श्रव्य) होते हैं जोकि तुरन्त बाद में या पहले आए हैं । यह हमारे उदाहरण में (1) से अंकित स्वनिमों के लिए सत्य है और उदाहरणार्थ egg [eg] के [e] और saw [sɔ:] के [ɔ:] के लिए सत्य है । प्रत्येक स्वनिम जोकि पूर्ववर्ती स्वनिम (अथवा मूकता) की अपेक्षा अधिक तारस्वन (प्रबल) है और साथ-ही-साथ परवर्ती स्वनिम (अथवा मूकता) की अपेक्षा अधिक तारस्वन है, श्रव्यता का शीर्ष (crest of sonority) अथवा आक्षरिक (syllabic) है, अन्य स्वनिम अनाक्षरिक (non-syllabic) हैं । इस प्रकार red में [e] और bird में [ə:] आक्षारिक हैं किन्तु इन दोनों में [r] और [d] अनाक्षरिक हैं । एक उच्चार में उतने ही अक्षर (Syllables) (प्राकृतिक अक्षर) कहे जाते हैं जितने उसमें आक्षरिक होते हैं । अक्षर-व्यवस्था (Syllabication) का उतार-चढ़ाव सभी भाषाओं के ध्वन्यात्म-संघटन में महत्त्वपूर्ण है ।

प्रत्येक भाषा में, स्वनिमों में से केवल कुछ निश्चित स्वनिम ही आक्षरिक होते हैं । किन्तु सिद्धान्ततः कोई भी ध्वनि अपनी परिवेशी ध्वनियों से अधिक श्रव्य हो सकती है । विस्मयादि-बोधक p st [pst], और Sh [ʃ!] जिन्हें लोगों को शान्त करने के लिए हम प्रयुक्त करते हैं, सामान्य अंग्रेजी शब्दों के प्रयोगों से भिन्न हैं क्योंकि इनमें [s] और [ʃ] आक्षरिक हैं । वस्तुतः प्रत्येक भाषा में अधिकांश स्वनिम केवल अनाक्षरिक रूप में आते हैं, जैसे, अंग्रेजी में [p t, k] । ये व्यंजन (consonant) कहे जाते हैं । अन्य स्वनिम, जैसे अंग्रेजी में [eʌ,a] जोकि संख्या में कम होते हैं, केवल आक्षरिक रूप में मिलते हैं, ये स्वर (vowel) कहे जाते हैं । अधिकांश भाषाओं में एक तीसरा वर्ग, मध्यम वर्ग, भी होता है । इन्हें अन्तस्थ (Sonant) कहते हैं जोकि आक्षरिक एवं अनाक्षरिक स्थितियों दोनों में आते हैं । इस प्रकार अमेरिकन-इंग्लिश के मध्यपश्चिमी प्रतिरूप में [r] bird [brd] में आक्षरिक किन्तु *red* [red] में अनाक्षरिक है ।

किसी शब्द में अन्तस्थ आक्षरिक है अथवा अनाक्षरिक है, इसका निर्धारण भाषाओं में भिन्न-भिन्न भाँति से होता है । यदि अन्तस्थ का आक्षरिक अथवा अनाक्षरिक रूप पूर्णतया परिवेशी स्वनिमों पर, (जैसे bird बनाम red में) निर्भर होता है तो अन्तर परिच्छेदक नहीं माना जाता है और जहाँ तक प्रति-लेखन का प्रश्न है हमें एक से अधिक संकेत की आवश्यकता नहीं है । फिर भी, बहुत से स्थलों में अन्तस्थ के आक्षरिक अथवा अनाक्षरिक रूप का निर्धारण यादृच्छिकरूप से होता है और उससे स्वनिमीय अन्तर होता है । इस प्रकार

stirring ['stṛiŋ] में [r] आक्षरिक है, किन्तु string [striŋ], में वह अनाक्षिरिक है। pattern ['pɛtṛn] के द्वितीय अक्षर में [r] आक्षरिक और [n] अनाक्षरिक है, किन्तु patron ['petṛn,]ŋ के द्वितीय अक्षर में [r] अनाक्षरिक है और [n] आक्षरिक। ऐसे स्थलों पर हमें दो स्वनिमों के लिए पृथक्-पृथक् संकेत चाहिए। दुर्भाग्यवश अंग्रेजी की प्रतिलेखन की आदत इस दिशा में न तो एकरूप है और न संगत है। कुछ स्थलों पर वे भिन्न-भिन्न संकेत प्रयुक्त करते हैं : [i. u y] सामान्यतया आक्षरिक मानों के लिए प्रयुक्त होते हैं और j. w y] क्रमशः तदनुरूप अनाक्षरिक मानों में प्रयुक्त होते हैं। किन्तु बहुत से प्रतिलेखक [i. u. y] को कुछ अनाक्षरिक स्थलों पर भी प्रयुक्त करते हैं। दूसरी विधि है [i, u, y, e, o, a] संकेतों के ऊपर या नीचे छोटा गोल चिन्ह लगाकर अनाक्षरिकत्व प्रदर्शित करना है। इसके विपरीत [r, l, m, n] के नीचे प्रायः बिन्दु [ ] छोटा वृत्त चिन्ह [.] अथवा खड़ी रेखा [ı] लगाकर आक्षरिकत्व प्रदर्शित किया जाता है।

जब अन्तस्थ का आक्षरिकत्व 'अथवा अनाक्षरिकत्व परिवेशी स्वनिमों (अथवा मूकता) द्वारा निर्धारित होता है तो वितरण को प्राकृतिक (natural) कहते हैं। इस प्रकार मानक जर्मन में, स्वनिम [i. u] अनाक्षरिक हैं यदि पूर्व अथवा पश्चात् में कोई स्वर है, अन्यत्र ये आक्षरिक हैं। अनाक्षरिक [u] केवल [ɑ] के बाद आता है, जैसे, Haus [haws] "घर" में। [ɑ] के बाद, जैसे Ei [aj] "अण्डा" में [o] (अथवा [ϕ]) के बाद जैसे neu [noj, nϕj] "नया" में, और स्वरों तथा [u] के पूर्व जैसे ja [ja:] "हाँ" jung [juŋ] "युवक" में अनाक्षरिक [i] आता है। स्वर के बाद परिवर्त निश्चयतः निम्नीकृत है, और अनाक्षरिक [i] आक्षरिकों के पूर्व दृढ़ संस्पर्श से बोला जाता है जिससे निश्चयतः संघर्षी ध्वनि उत्पन्न होती है। किन्तु ये अन्तर परिच्छेदक नहीं है, परम्परा से प्रतिलेखक पहले प्रतिरूप के लिए संकेत [i,u] और बाद के प्रतिरूप के लिए [j] का प्रयोग करते आए हैं।

अनेक स्थलों पर अन्तस्थ का आक्षरिकत्व अथवा अनाक्षरिकत्व प्राकृतिक वितरण से भिन्न प्रकार से निर्धारित होता है। कुछ भाषाएँ अन्तस्थ को आक्षरिक बनाने के लिए वहाँ कुछ बलाघात बढ़ाकर प्रयुक्त करते हैं यदि स्वाभाविक श्रव्यता पर्याप्त नहीं है। इस प्रकार कुछ अंग्रेजी उच्चारणों में, bottling, brittler, buttoning त्र्याक्षरिक करके बोले जाते हैं। [l] अथवा [n] पर बलाघात का कुछ आधिक्य अधिक उत्कर्ष का क्षण उत्पन्न करता है।

हम इसे bottḷing ['bɔtliŋ], brittler['britḷə], buttoning ['bʌtṇiŋ] इस प्रकार प्रतिलेखित करते हैं। यहाँ आक्षरिक बलाघात (syllabic—stress) गौण स्वनिम के रूप में काम में आता है और इसके लिए संकेत [ˌ] है। मध्य-पश्चिमी अमेरिकन इंग्लिश में यह आक्षरिक बलाघात बड़ा महत्वपूर्ण है। यह stirring ['stṛiŋ] और string [striŋ] में mackerel ['mɛkṛl] और minstrel ['minstrl] में battery ['bɛtˌrij] और pantry ['pentrij] में और apron ['ejprṇ और pattern ['pɛˌrn] में व्यतिरेक उत्पन्न करता है और इसके कारण bearer ['bejrṛ] error ['erṛ], stirrer ['stṛṛ] रूप सम्भव हो सके हैं। अंग्रेजी के इन रूपों में आक्षरिक बलाघात एक परिच्छेदक अभिलक्षण है और गौण स्वनिम है।

ब्रिटिश और अमेरिकन अंग्रेजी की कुछ बोलियों में स्वरों [ə] के साथ कुछ संयोजन मिलते हैं जिनमें पूर्ववर्ती स्वर आक्षरिक होता है। यह बलाघात के आधिक्य के कारण ही सम्भव है। उदाहरणार्थ : fear [fiə] में [iə], sure [ʃuə] में [uə], fair, fare [fɛə] में [ɛə], coarse, course [kɔəs] में [ɔə]। [r—ə:] स्वनिम के इस अनाक्षरिक प्रयोग के लिए कोई विशेष चिह्न की आवश्यकता नहीं है क्योंकि पूर्ववर्ती स्वर चिह्न इसका लक्षण प्रकट कर देता है। इन संयोजनों के प्रथम स्वर [c, u, ɛ, ɔ] स्वरों के स्वतन्त्र रूपों से स्पष्टतया भिन्न हैं, और इसी कारण इनके पृथक् संकेतों की आवश्यकता नहीं है। यही बात अमेरिकन उच्चारण के कुछ भेदों में, [r] के पूर्व स्वरों और सन्ध्यक्षर (diphthongs) के आपरिवर्तित रूपों के सम्बन्ध में है, जैसे fear [fijr], fair, fare [fejr], fire [fajr], sure [ʃuwr], coarse, course [kowrs] Mary ['mejrij] marry ['mᵋrij], hoarse [howrs], horse [hors], war [wɔr] sorry ['sarij] इन संयोजनों में अमेरिकन इंग्लिश के अनेक भेद सामान्य स्वरों और सन्ध्यक्षरों के विभिन्न आपरिवर्तन प्रदर्शित करते हैं।

आक्षरिक-बलाघात के प्रयोग से कुछ भाषाएँ प्राकृतिक श्रव्यता के सम्बन्धों को विपरीत कर देती हैं। इस प्रकार, दक्षिण जर्मन बोलियों में (liab) 'प्रिय', [guat] 'अच्छा', [gryan] 'हरा' जैसे रूपों में [c, u, y] आक्षरिक और [a] अनाक्षरिक है।

अन्तस्थों के आक्षरिक और अनाक्षरिक प्रकार्यों को पृथक् करने से उच्चारणगत अन्तरों का प्रयोग एक दूसरे भाँति का वितरण है। प्रायः इसमें अना-

क्षरिक ध्वनियाँ आक्षरिक ध्वनियों की अपेक्षा अधिक अवरोधवान् होतीं हैं। अंग्रेजी में अन्तस्थ [i] और [u] स्वरों के बाद और पहले अनाक्षरिक हैं । इन अनाक्षरिक प्रयोगों को [j] और [w] से संकेतित करने पर yes [jes] say [sej] buy [baj , boy[bɔj] में [j] और well [wel] go [gow], now [naw] में [w] मिलता है । इन उदाहरणों में [j] और [w] का अनाक्षरिकत्व प्राकृतिक श्रव्यता से पर्याप्ततया निर्धारित होता है चूंकि उनके पूर्व अथवा पश्चात् एक अधिक विवृत स्वर है । अतएव ध्वनि-उत्पादन की रीति में वास्तविक परिवर्तन यहाँ अपरिच्छेदक हैं। स्वरों के बाद [j, w], विशेषतः [aj, ɔj, aw] प्रतिरूपों में, बहुत विवृत हैं और [a] भी सामान्य [a] से बिल्कुल भिन्न है। yes, well आदि में स्वर के पूर्व [j] आक्षरिक [i] की अपेक्षा अधिक उच्च अग्र जिह्वा स्थिति वाला है, और [w] की, आक्षरिक [u] की अपेक्षा अधिक उच्च जिह्वा-स्थिति है और वह ओठों के कुछ संकोचन के साथ बोला जाता है। अंग्रेजी में ये अन्तर स्वनिमीय अन्तरों के काम में आते हैं। यहाँ तक कि जहाँ यह प्रकार्य प्राकृतिक श्रव्यता से निर्धारित नहीं भी होता है, वहाँ भी अधिक संवृत अनाक्षरिक [j, w] को अधिक विवृत आक्षरिक [i, u] की तुलना में पृथक् स्वनिम मानते हैं। इस प्रकार ooze [u, w, z] के [uw] और wood [wud] के [wu] में तथा ease [ijz] के [ij] और अपबोली के yip jip] 'कीकना (क्रि०) 'के [ji] में भेद मानते हैं और yeast [jijst], woo [wuw] में [jij, wuw] जैसे संयोजन भी पाते हैं। जब समुच्चय [i, u, r] के दो विभिन्न सदस्य किसी बलाघातयुक्त अक्षर में साथ-साथ आते हैं तो पहला अनाक्षरिक होता है जैसे, you [juw] yearn [jɔ:n] win [*win*], *work* [wɔ:k] *rid* [rid] room [rum] में । यह इस कारण संभव हो पाया है क्योंकि अंग्रेजी में [j] और [w] का, एक अनाक्षरिक ध्वनि [bit] अथवा अन्तिम स्थिति (say) की अपेक्षा आक्षरिक अन्तस्थ अथवा स्वर के पूर्व अन्तिम दृढ़ उच्चारण है। एक अनाक्षरिक अन्तस्थ, जोकि कुछ आपरिवर्तनों के कारण तदनुरूप आक्षरिक अन्तस्थ से स्वनिमीय दृष्टि से भिन्न है, अर्धस्वर (semi-vowel) कहा जाता है।

इसी प्रकार फ्रेंच के hier[je:r] 'बीता हुआ कल', oie [wa] 'हँस', ail [a:j] 'लहसुन', huile [yil] 'तेल' में उच्च स्वरों [i, u, y] का उच्चारण अधिक अवरोध और अधिक दृढता से होता है यदि वे अनाक्षरिक हैं ।वहाँ ये प्रतिरूप पृथक् अर्धस्वर स्वनिम है उदाहरणार्थ oui [wi] 'हाँ' और

houille [u:j] 'अंगाराश्म' में अन्तर माना गया है और fille [fi:j] 'पुत्री' में अनुक्रम [ij] को प्रयुक्त किया है।

7.11 स्वर और अन्तस्थ संयोजित होकर संयुक्त स्वनिम बनाते हैं जो सन्ध्यक्षर (द्विस्वरक) (diphthongs), अथवा, यदि तीन अवयव हैं तो त्रि-स्वरक (triphthongs) कहे जाते हैं। स्वनिमों का पूर्वानुपरक्रम (अनुक्रम) एक संयुक्त स्वनिम माना जाय या नहीं, यह भाषा की ध्वन्यात्म संघटना पर पूर्णतया निर्भर है। अंग्रेजी में yes में [je], अथवा well में [we] पूर्वानुपरक्रम, व्यंजन और स्वर के किसी भी अनुक्रम के समान दो स्वनिम हैं किन्तु स्वर और अर्धस्वर के संयोजन संयुक्त स्वनिम माने जाते हैं। अंग्रेजी में ऐसे सात संयोजन हैं, और अर्धस्वर+स्वर+अर्धस्वर का एक स्वरक है :

see [sij]	seeing ['sijiŋ]
say [sej]	saying ['bsejiŋ]
buy [baj]	buying ['b ajin]
boy [bɔj]	boyish ['bɔjif]
do [duw]	doing ['duwiŋ]
go [gow]	going ['gowiŋ]
bow [baw]	bowing ['bawiŋ
hew [hjuw]	hewing ['hjuwiŋ]

हम अगले अध्याय में देखेंगे कि अंग्रेजी भाषिक रूपों की ध्वन्यात्म संघटना में ये संयोजन सरल स्वर स्वनिमों के समान हैं। अवयवों के विचित्र अपरिच्छेदक आपरिवर्तन, विशेषतः [a, j. w] के जिनका अभी हम वर्णन कर चुके हैं, प्रायः सन्ध्यक्षरों में मिलते हैं, किन्तु इस तथ्य का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। अनिवार्य अभिलक्षण तो विचित्र संघटनात्मक प्रतिपादन में है। दूसरी विचित्रता [ij] और [uw] के दृढ़तापूर्ण उच्चारण में है, इसमें सरल स्वर [i, u] की अपेक्षा जिह्वा और ओठों की मांसपेशियां अधिक बलपूर्वक संकुचित होती हैं। अनेक ध्वनि-विज्ञानविद् इन प्रतिरूपों को दृढ़ दीर्घ स्वरों के वर्ग में रखते हैं और इन्हें [i :] और [u :] से प्रतिलेखित करते हैं।

चार सन्ध्यक्षरों का एक अन्य समुच्चय स्वर+अनाक्षरिक (ə) से संयोजित होकर बनता है :

fear [fiə]	sure [ʃuə]

fair [fɛə] shore [ʃɔə]

कुछ उच्चारणों में आपरिर्वातित भेद-प्रभेद किसी भी सरल स्वर से भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए मध्यपश्चिमी अमेरिकन इंग्लिश को लें।

Mary ['mejrij] wore [wowr], hoarse [howrs]
merry ['merij] horse [hors]
marry ['mᵋrij] war [wɔr]

फिर भी उच्चारण के अनेक प्रतिरूपों में इनमें से कुछ या सभी अन्तर नहीं मिलते हैं। इन प्रतिरूपों में या तो कुछ सन्ध्यक्षर अथवा कुछ सरल स्वर के पूर्व नहीं आते हैं।

सन्ध्यक्षर उन भाषाओं में भी मिलते हैं जिनमें आक्षरिक और अनाक्षरिक स्वरों को पृथक् स्वनिम नहीं माना गया है। जर्मन में संयोजन [aj] जैसे Eis [ajs] "बर्फ", [oj] जैसे neu [noj] "नया", और [aw] जैसे Haus [haws] "घर", संघटना की दृष्टि से इकाई स्वनिम माने जाते हैं। अंग्रेजी की भाँति संरचक अपने साधारण रूप से बहुत अधिक भिन्न रहते हैं: अनाक्षरिक के मध्य-स्वरीय गुण होते हैं न कि उच्च, और [oj] के विशेषतः अनेक भेद प्रभेद हैं, जो कुछ उच्चारणों में, [ϕ y] जैसे से मिलते हैं न कि वर्तुल अग्रस्वरों के किसी संयोजन से।

अंग्रेजी और जर्मन से सन्ध्यक्षर, जहाँ आक्षरिक अंश पूर्वांश होता है, अवरोही (falling) सन्ध्यक्षर कहे जाते हैं। ये उन सन्ध्यक्षरों के व्यतिरेक में हैं जहाँ आक्षरिक अंश उत्तरांश होता है और जो आरोही (rising) सन्ध्यक्षर कहे जाते हैं। इस प्रकार फ्रेंच में, [jɛ] के समान संयोजन, जैसे fier [fjɛːr] "गर्वपूर्ण" में और [wa] के समान संयोजन, जैसे moi [mwa] "मैं" संघटना की दृष्टि से इकाई स्वनिम हैं। किन्तु इतालवी में संयोजन [jᵋ, wɔ] और स्पेनी में [je we] सन्ध्यक्षर माने जाते हैं।

कुछ भाषाओं में आक्षरिक स्वरों और अनाक्षरिक व्यंजनों के संयोजनों से बने संयुक्त स्वनिम मिलते हैं। लिथुएनी में स्वनिम [l, r. m. n.] कभी आक्षरिक नहीं है किन्तु [al, ar, am, an] जैसे संयोजन संघटना की दृष्टि से और बलाघात से [aj] अथवा [aw] के समान सन्ध्यक्षर हैं।

7.12 चूंकि अक्षरीकरण स्वनिमों के सापेक्षिक तारस्वनता पर निर्भर है अतएव यह बलाघातों के समंजनों द्वारा दृढ़तर अथवा प्रभावहीन बनाया जाता है। दृढ़कारी प्रवृत्ति कदाचित् अधिकांश भाषाओं में है। फ्रेंच में जहाँ बलाघात

अपरिच्छेदक है, प्रत्येक अक्षर अपने आक्षरिक पर बलाघात के किंचित् आधिक्य द्वारा दृढ़तर होता है। यदि आक्षरिक के पूर्व केवल एक अनाक्षरिक है तो इस अनाक्षरिक से वृद्धि प्रारम्भ होती है, यदि दो है, तो विभिन्न समूह विभिन्न रूप से प्रतिपादित होते हैं pertinacite' [pεr-ti-na-si-te] हठ patronnesse, [pa·trɔ-nεs]। "आश्रयदात्री"। बलाघात का किंचित् आधिक्य और न्यूनत्व का वितरण अपरिच्छेदक है चूंकि इसका निर्धारण पूर्णतया मुख्य स्वनिमों के स्वरूप पर होता है। इस कारण फ्रेंच-भाषा अंग्रेजी श्रोताओं के काम में एक द्रुत पट्-पट् अथवा डम्-डम् ध्वनि करती सी लगती है। ऐसी प्रवृत्ति अनेक बलाघात प्रयोगी भाषाओं में, जैसे इतालवी, पोली, बोहेमी, और रूसी तक में, मिलती है। इन भाषाओं में न केवल बलाघात परिच्छेदक है अपितु बलाघातहीन स्वरों में निर्बलता भी आती है। इस प्रकार इतालवी pertinacia [per-ti'-na-tʃa] "हठ" अथवा patronessa [pa-tro-nes-sa] "आश्रयदात्री" में अक्षर बलाघात के उतार-चढ़ावों से विभाजित होते हैं जो सबलाघात अक्षरों में सुस्पष्ट और अन्य पर धूमिल हैं।

अंग्रेजी और अन्य जर्मनवर्गीय भाषाओं में बलाघातहीन अक्षर बलाघात के उतार-चढ़ाव से विभाजित नहीं हैं। dimity ['dimiti] "मोटा सूती कपड़ा," अथवा patroness ['pejtrənis] "आश्रयदात्री" में बलाघात प्रथम अक्षर के उच्चबिन्दु से केवल उतर जाता है। स्पष्टतया इसमें तीन अक्षर हैं, क्योंकि स्वाभाविक श्रव्यता के इसमें तीन शिखर हैं किन्तु यह कहना कठिन है कि कहाँ एक अक्षर समाप्त होता है और दूसरा प्रारम्भ। pertinacity [ˌpɔːti'nεsiti] 'हठ' अथवा procrastination [prə, krεsti' nejʃn] 'टालमटोल' जैसे रूपों में बलाघातयुक्त अक्षरों का प्रारम्भ बलाघात के प्रारम्भ से स्पष्टतया अंकित है, किन्तु अन्य कोई अक्षरसीमा इस प्रका सुस्पष्टतया विभाजित नहीं।

बलाघात के वितरण से श्रव्यता के ऐसे शिखर बन सकते हैं जोकि स्वनिमों की प्राकृतिक श्रव्यता से निरपेक्ष हैं। हम देख चुके हैं कि अंग्रेजी में स्वनिम [l. n] परिवेशी स्वनिमों की अपेक्षा अधिक तारस्वन हो सकते हैं और बलाघात के किंचित् आधिक्य पर आक्षरिक बन सकते हैं।

बलाघात का वितरण प्राकृतिक श्रव्यता के सम्बन्धों को विपरीत भी कर सकता है। [dzd] जैसे संयोजन में [z] दोनों [d] की अपेक्षा अधिक श्रव्य

है, और [kst] में [s] अन्य स्पर्शों की अपेक्षा अधिक श्रव्य है, किन्तु अंग्रेजी में adzed [ɛdʒd] "वसूले से छीला' text [tekst], *step* [step] में वर्तमान अकेला उच्च बलाघात इतना तारस्वन है कि वह श्रव्यता के इन क्षुद्र अन्तरों को दबा देता है। कुछ बलाघात प्रयोगी भाषाएँ इस प्रकार प्रमुखतया संगीतीय ध्वनियों की श्रव्यता तक को दबा देती हैं, जैसे रूसी में इन शब्दों को बलाघात के प्रभाव से एकाक्षरी शब्दों के समान बोला जाता है [lba] 'मस्तक का', [rta] "मुख का" अथवा इसी प्रकार पोली में trwa [trva] "वह बना रहता है", msza [mʃa] 'समूह'।

अध्याय 8

ध्वन्यात्म संघटना

8.1. भाषणध्वनियों का वर्णन, जोकि पिछले दो अध्यायों में हुआ है, केवल आकस्मिक प्रेक्षणों पर आधारित है। ये वर्णन वक्ता के संचलनों के शब्दों में किये गये हैं किन्तु अधिक सूक्ष्म शरीरप्रतिक्रियात्मक प्रेक्षणों से पता चलता है कि इनमें से कुछ गलत हैं। इससे भी गम्भीर बात यह है कि वे अन्तर और भेद-प्रभेद जो देखे गये हैं, जैसे, फ्रेंच और अंग्रेजी के अघोष स्पर्श [p, t, k] का अन्तर, किन्हीं स्थिर सिद्धान्तों पर (जिन्हें ध्वानिकी किसी दिन हमें दे सकेगी) निर्धारित नहीं हैं। ये अन्तर संयोगवश चल पड़े हैं और इनको चलानेवाले कुछ प्रेक्षक हैं जिनकी ध्वनिग्रहण की शक्ति बहुत यथार्थ है और जिन्होंने इन दोनों को सुना है। जिस प्रकार दक्षिण-जर्मन बोलियों अथवा कुछ अमेरिकन वन्य-जातियों की भाषाओं का विवेचन मानक अंग्रेजी और मानक फ्रेंच से प्राप्त अघोष स्पर्शों के भेद-प्रभेद को बढ़ा देता है, उसी प्रकार प्रायः प्रत्येक नई बोली का अध्ययन अन्तरों के उस संग्रह को बढ़ा देगा जोकि एक ध्वनि-विज्ञानविद् सुनता है। प्रेक्षण की सीमा अव्यवस्थित और आकस्मिक है, अतएव उसकी यथार्थता संदिग्ध है और साथ ही साथ वह शब्दावली जिसके द्वारा उसका वर्णन हुआ है, अस्पष्ट है। व्यावहारिक ध्वनिशास्त्र एक कौशल है, भाषाओं के अध्येताओं के लिए प्रायः बहुत ही उपयोगी कौशल है, किन्तु उसकी वैज्ञानिक महत्ता नगण्य है।

इस कारण किसी भाषा के सामान्य (श्रौती) प्रभावों का विश्लेषण करना हमारी शक्ति के बाहर है। हम कुछ ऊपरी प्रभावों की व्याख्या कर सकते हैं---अंग्रेजों के कानों में इतालवी की पट्-पट् अक्षरविभाजन के कारण है, और अंग्रेजों को जो डच में कण्ठ्य-ध्वनियों का बाहुल्य सुनाई पड़ता है, वह अलिजिह्वीय कम्पितों (§ 6.7) और कोमलतालव्य संघर्षियों (§ 6.8) के कारण है। किन्तु सामान्यतया उच्चारण के आधार के विषय में ऐसे सोचे हुए विचार अवश्यमेव अस्पष्ट होंगे। अंग्रेजी में (फ्रेंच अथवा जर्मन के व्यतिरेक में) जबड़ा पीछे खिचता है, मध्य और पश्चिमी अमेरिकन इंग्लिश में जिह्वाग्र ऊपर

रखने की प्रवृत्ति है। जर्मन और फ्रेंच में (अंग्रेजी के व्यतिरेक में) जबड़ा आगे रखा जाता है और मांसपेशियां सुदृढ़ रहती हैं—जर्मन में विशाल और व्यापक संचलन है, किन्तु फ्रेंच में संचलन छोटे और अधिक यथार्थ होते हैं, विशेषतः मुख के अग्रभाग में। डैनी में माँसपेशियां मध्यरेखा की ओर खिंचती हैं। ऐसे प्रेक्षण प्रायः उच्चारण को समझने अथवा अनुकरण करने के लिए सहायक हैं, किन्तु ये धूमिल और अयथार्थ हैं। हमें सूक्ष्म और विश्वसनीय कथनों के लिए प्रयोगशालीय-ध्वनिविज्ञान के निष्कर्षों की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

किन्तु भाषा के विषय में महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि वह किस प्रकार बोली गई है या उसमें किस प्रकार ध्वनियाँ निकलती हैं, बल्कि यह है कि भाषा किस प्रकार वक्ता के उद्दीपन को (§ 2.2 का A) श्रोता की अनुक्रिया (§ 2.2 का C) से जोड़ती है, क्योंकि वक्ता के संचलन, वायु में विक्षोभ और श्रोता के कर्णपटह के कम्पन (§ 2.2 का A), ये सब स्वयं में कुछ महत्व के नहीं हैं। यह A का C से साथ जोड़, जैसा कि हम § 5.4 में देख आए हैं, ध्वानिकीयरूप के अपेक्षाकृत कम अभिलक्षणों पर ही निर्भर है और ये अभिलक्षण स्वनिम कहे जाते हैं। भाषा के अच्छे प्रकार्य के लिए इतना पर्याप्त है कि प्रत्येक स्वनिम अन्य सभी से निर्भ्रान्ततया भिन्न हो। बस यह विभेदीरणक तो महत्वपूर्ण है, इसके विपरीत भेद-प्रभेद की परास और उनके ध्वानिकीय लक्षण व्यर्थ हैं। कोई भी भाषा किसी भी अन्य सुस्पष्ट परस्पर भिन्न संकेतों से पुनः स्थापित की जा सकती है और उसमें मूल के वे सब 'मान रह सकते हैं, यदि उस भाषा के प्रत्येक स्वनिम के लिए एक, और केवल एक, संकेत प्रयु त किया जाए। शुद्ध ध्वन्यात्म प्रतिलेखन में ऐसा ही पुनः स्थापन होता है। इस पुनः स्थापन में यथार्थता और सार्थकता की मांगें पूरी हो जाती हैं यदि प्रत्येक स्वनिम के लिए एक और केवल एक-ही संकेत प्रयुक्त किया जाए। अपूर्णतया, किन्तु व्यावहारिक कार्यों के लिए पर्याप्ततया ऐसा पुनःस्थापन परम्परागत वर्णमालावाली लिपियों द्वारा मिलता है। अतएव स्वनिम की महत्ता इसमें नहीं है कि उसमें ध्वनिलहरियों का कौनसा वस्तुतः समूहन (configuration) है, महत्ता केवल इसमें है कि वह समूहन उसी भाषा के अन्य सभी स्वनिमों के समूहनों से किस प्रकार भिन्न है।

इस कारण ध्वानिकी का पूर्णीकृत ज्ञान भी, स्वयं से, हमें भाषा की ध्वन्यात्मक संघटना नहीं दे पाएगा। हमें सदैव यह ज्ञात करना पड़ेगा कि वक्ताओं के लिए अर्थ की दृष्टि से कौन-से स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षण "वही"

हैं और कौन "भिन्न"। इसके दिग्दर्शक केवल वक्ता की परिस्थितियां और श्रोता की अनुक्रियाएं हैं। कोई भी वर्णन जो परिच्छेदक अभिलक्षणों को अपरिच्छेदक अभिलक्षणों से भिन्न नहीं कर पाता है, हमें उस भाषा की संघटना के विषय में कुछ नहीं बता सकता है या बहुत ही थोड़ा बता सकता है। इस दिशा में मशीनी अंकनों में कम-से-कम यह गुण तो होता है कि वे ध्वानिकीय तथ्यों को तोड़ते-मरोड़ते नहीं हैं। उत्साही ध्वनिविज्ञानविद् और विशेषज्ञ के "यथार्थ" मुक्तहस्त अंकनों में यह संभावना अधिक रहती है कि वे व्यर्थ के ध्वानिकीय अन्तरों पर अड़े रहें जिनका संकेतन केवल इस कारण हुआ है कि प्रेक्षक विशेषज्ञ ने उनसे अनुक्रिया करना सीख लिया है। इस आधार पर यह संभव है कि हम पूर्णतया विभिन्न स्वनिमीय संघटना वाली भाषाओं के लिए वही "ध्वनियों" का समुच्चय प्रयुक्त करें। उदाहरण के लिए, मानों, दोनों भाषाओं में सात समान स्वर "ध्वनियां" हैं। भाषा "ख" के तो ये सात पृथक् स्वनिम हो सकते हैं, जबकि भाषा "क" में [ɛ] और [ɔ[, [a] के अपरिच्छेदक परिवर्त हो सकते हैं और [e, o] क्रमशः [i, u] के अपरिच्छेदक परिवर्त हो सकते हैं। दोनों भाषाएं सम्भवतः स्वरों में दो कालावधियां प्रदर्शित कर रहीं हैं, किन्तु इनमें भाषा "क" (जैसे जर्मन) में ये अन्तर स्वनिमीय हो सकते हैं जबकि भाषा "ख" में केवल अपरिच्छेदक परिवर्त। दोनों में वे शुद्ध और सप्राण अघोष स्पर्श हो सकते हैं, किन्तु यह सम्भावना है कि प्रथम में वे पृथक् स्वनिम हैं और द्वितीय में अपरिच्छेदक परिवर्त। इसी प्रकार दोनों में सघोष संघर्षियों की श्रेणी हो सकती है किन्तु भाषा "ख" में यह परिच्छेदक है जबकि भाषा "क" में यह स्वरों के मध्य में स्पर्शों के परिवर्त हैं।

भाषा के केवल स्वनिम उसकी संघटना के लिए सार्थक होते हैं—अर्थात् वे अपने प्रकार्य के लिए सार्थक होते हैं। अपरिच्छेदक अभिलक्षणों का वर्णन अत्यन्त रुचिकर हो सकता है किन्तु इसके लिए उसे आजकल से अधिक पूर्ण और अधिक व्यापक होना पड़ेगा।

8.2. अतएव किसी भाषा की स्वनिमों की सूची अथवा तालिका में सभी अपरिच्छेदक अभिलक्षणों की उपेक्षा करनी चाहिए। सी सूचियां अथवा तालिकाएं प्रायः व्यावहारिक ध्वन्यात्मक वर्गीकरणों के आधार पर बनाई जाती हैं।

मानक अंग्रेजी

स्पर्श, अघोष	p	t	k		
सघोष	b	d	g		
स्पर्श संघर्षी, अघोष		tʃ			
सघोष		dʒ			
संघर्षी, अघोष	f	θ	s	ʃ	h
सघोष	v	ð	z	ʒ	
नासिक्य	m	n		ŋ	
पार्श्विक			l		
कम्पित (लुंठित)			r		
अर्धस्वर			j	w	
स्वर, उच्च			i	u	
उच्चतरमध्य			e ɜ: ə	ɔ:	
निम्नतरमध्य			ɛ	ɔ	
निम्न			ʌ:	ɑ	

गौण स्वनिम :

बलाघात ″ ′ ।

आक्षरिक बलाघात ′

सुर (स्वराघात) . ¿ ? ! ,

इस प्रकार की तालिकाएं, अपरिच्छेदक अभिलक्षणों को बहिष्कृत करने पर भी भाषा की संघटना के लिए व्यर्थ हैं, क्योंकि इसमें स्वनिम, अपने शरीर प्रक्रियात्मकस्वरूप के अनुसार, जैसा कि भाषातत्वज्ञ ने उन्हें देखा है, वर्गीकृत होते हैं, नकि भाषा कार्यकरण में अपने योगदान के अनुसार । ऊपर की तालिका में, उदाहरणार्थ, यह नहीं प्रदर्शित किया गया है कि [l, n] कभी-कभी बलाघातहीन अक्षरों (§ 7.10) में आक्षारिक बनते हैं । इसमें यह भी नहीं प्रदर्शित किया गया है कि कौनसे स्वर अर्धस्वर [j] और [w] के आक्षरिक अनुरूपी हैं अथवा उच्चारण की वे क्या विशेषताएं है जिनके द्वारा वे अर्धस्वर पृथक् स्वनिम हैं और [ə :] बनाम [r] के सरलतर वितरण के व्यतिरेक में हैं । यह भी इससे प्रदर्शित नहीं होता है कि कौन-से स्वर और अर्धस्वर संयुक्त स्वनिमों में संयोजित होते हैं । ये सब संघटनात्मक तथ्यों

को प्रदर्शित करने के लिए हमें एक ऐसी पूरक तालिका चाहिए जैसी नीचे दी जा रही है :

1. **मुख्य स्वनिम**

(क) व्यंजन, सदैव अथवा कभी-कभी अनाक्षरिक :

(1) स्पर्श और संघर्षी, सदैव अनाक्षरिक :
[p. t. k. b. d. g, tʃ. dʒ, f. θ. s. ʃ, h. v. ʃ. z.ʒ.m.ŋ]

(2) अन्तस्थ, कभी-कभी (sonants) आक्षरिक :

(अ) व्यंजनजात (consonantoids)—आक्षरिकता अंशतः आक्षरिक बलाघात से निर्धारित; सन्ध्यक्षर नहीं बनता है : [n l]

(आ) स्वरजात (Vocaloids)—सन्ध्यक्षर बनता है :

(1) अर्धव्यंजन : आक्षरिकता पूर्णतः परिवेशी ध्वनियों से निर्धारित : [r—ɔ :]

(2) अर्धस्वर : आक्षरिकता उच्चारण प्रयत्न से भी निर्धारित :

(अ) अनाक्षरिक : [j, w]
(आ) आक्षरिक : [i, u]

(ख) स्वर, सदैव आक्षरिक :

(1) सन्ध्यक्षर (द्विस्वरक) एवं स्वरक, संयुक्त स्वनिम :
[ij, uw, ej, ow, aj, aw, ɔj, juw, iɔ, uɔ, ɛɔ, ɔɔ]

(2) सरल स्वर : [e. ɛ. ʌ. ɔ. ɔ : ɑ :]

2. **गौण स्वनिम** :

(क) आक्षरिक-बलाघात—अर्धव्यंजनों पर प्रयुक्त : [ˌ]
(ख) रूप-बलाघात—अर्थवान् रूपों पर [" ' ˌ]
(ग) सुर, उच्चारान्त से सम्बद्ध :
(1) मध्यवर्ती : [,]
(2) अन्तिम : [. ¿ ? !]

8.3. अंग्रेजी-भाषा की संघटना में स्वनिमों का महत्त्व, वस्तुतः अभी

ऊपर दिया है--उससे कहीं अधिक विविध है। वास्तव में हम यह सरलता से प्रदर्शित कर सकते हैं कि कोई भी दो स्वनिम संघटना में एक समान कार्य नहीं करते हैं।

चूँकि परिभाषा के अनुसार प्रत्येक उच्चार में कम-से-कम एक आक्षरिक स्वनिम होना चाहिए, अतएव किसी भाषा की ध्वन्यात्म संघटना को वर्णित करने का सरलतम उपाय यह है कि यह पता लगा लिया जाए कि तीनों संभावित स्थितियों में कौन-कौन से अनाक्षरिक स्वनिम अथवा अनाक्षरिक स्वनिम गुच्छ (cluster) आते हैं। ये तीन संभावित स्थितियाँ हैं। आद्य (initial), उच्चार के प्रथम आक्षरिक के पूर्व; अन्त्य (final), उच्चार के अन्तिम आक्षरिक के पश्चात्; और मध्य (medial), आक्षरिकों के बीच।

इस दृष्टि से अंग्रेजी में सन्ध्यक्षर (द्विस्वरक) और त्रिस्वरक का वही कार्य है जो सरल स्वरों का और यही यथार्थ में तथ्य है जिसके कारण हमने उन्हें संयुक्त-स्वनिम माना है न कि स्वनिमों का अनुक्रम।

सुविधा के लिए यहाँ प्रत्येक उस स्वनिम अथवा स्वनिमगुच्छ के पूर्व एक संख्या लगाई जा रही है जो संघटना में कोई विचित्रता दिखा रहा है।

पहले आद्य अनाक्षरिकों पर ध्यान दें तो सबसे प्रारम्भ में हमें यह पता लगेगा कि स्वनिमों में दो स्वनिम उच्चार के प्रारम्भ में कभी नहीं आते हैं, ये हैं (1) [ŋ, ʒ]। विदेशी रूपों की, जैसे फ्रेंच नाम Jeanne [ʒan] की, उपेक्षा की गई है।

इसके अतिरिक्त, आद्यस्थिति में मिलनेवाले अनाक्षरिकों में से छः आद्य-गुच्छ के सदस्यरूप में नहीं मिलते हैं : (2) [v. ð. z tʃ dʒ. j]

सभी आद्यगुच्छ इन अनाक्षरिकों में किसी एक से प्रारम्भ होते हैं : (3) [p. t. k. b. d. g. f· θ. s. ʃ, h]। यहाँ पर हमें संघटनात्मक वर्गनिबन्धन और शरीरप्रक्रियात्मक वर्णन में मेल मिलता है क्योंकि संघटना-वर्ग (3) यथार्थतः स्पर्श और अघोष संघर्षियों के वर्ग से मेल खाता है।

यदि गुच्छ का प्रथम व्यंजन (4) [s] है तो उसके बाद समुच्चय (5) [p. t. k. f. m. n.] में से कोई एक आ सकता है, जैसे, spin, stay, sky, sphere, small, snail में।

वर्ग (3) के सभी आदि व्यंजनों के, और (4) [s] के (6) [p. t. k] के साथ व्यंजनों के पश्चात् समुच्चय (7) [w. r. l] में से एक, निम्नलिखित प्रतिबन्धों के भीतर, आ सकता है :

(8) [w] न तो कभी (9) [p. b. f. ʃ] के बाद आता है और न (4) [s] के (10) [t] के साथ बने संयोजन के बाद। वास्तविक गुच्छ इस प्रकार इन शब्दों से उदाहृत हैं : twin, quick, dwell, Gwynne, thward, swim, when [hwen], squall.

(11) [r] कभी (12) [s. h] के बाद नहीं आता है। अतएव [r] से संयोजित गुच्छ इन उदाहरण शब्दों में है : pray, tray, crow, bray, dray, gray, fray, three, shrink, spray, stray, scratch.

(13) [l] न तो कभी (14) [t. d. θ. ʃ. h] के बाद आता है और न (4) [s] के (15) [k] के साथ बने संयोजन के बाद। तदनुसार गुच्छों के उदाहरण इन शब्दों में हैं : play, clay, blue, glue, flew, slew, split.

8.4 अब हम अन्त्य-गुच्छों पर आते हैं। इन पर एक यह सामान्य प्रतिबन्ध है कि वही (एक ही) स्वनिम दो समीपवर्ती स्थितियों में नहीं आता है : [s,s] अथवा [t. t] जैसे अन्त्य-गुच्छ नहीं मिल सकते। यह नियम आद्य-गुच्छों पर भी लागू है और जो अभी इनका वर्णन दिया है उसमें अन्तर्निहित है, किन्तु यह, जैसा अभी देखेंगे, मध्य-गुच्छों पर लागू नहीं होता है।

हमने स्वर और [j] अथवा [w] के संयोजनों को एक संयुक्त स्वनिम (सन्ध्यक्षर) के रूप में माना है और तदनुसार उन्हें इन संयोजनों में अर्धस्वरों को अन्त्य आक्षरिक अथवा गुच्छों का अवयव नहीं मान सकते हैं। तदनुसार यदि इन स्थलों (जैसे, say [sej], go [gow]) को अपनी विवेचन-परिधि से बाहर कर दें तो हमें विदित होगा कि (16) [h. j. w] अन्तिम अनाक्षरिक अथवा अन्तिम गुच्छों के सदस्य के रूप में नहीं आते हैं। शेष सभी अनाक्षरिक दोनों प्रकार्यों में आते हैं।

अंग्रेजी में अन्त्य गुच्छ दो, तीन अथवा चार अनाक्षरिकों का होता है। इन संयोजन का वर्णन इस प्रकार सरल हो सकता है यदि हम यह कहें कि प्रत्येक गुच्छ में एक मुख्य-अन्तिम (main final) व्यंजन होता है जिसके पूर्व एक उपान्तिम (pre—final) और उससे भी पूर्व एक पूर्व-उपान्तिम (second final) हो सकता है और स्वयं मुख्य अन्तिम व्यंजन के पश्चात् एक परान्तिम (post-final) आता है। इससे छह् सम्भावनाएँ बनती हैं :

	बिना परान्तिम के	परान्तिम के साथ
मुख्य-अन्तिम एकाकी :	(bet [-t]	bets [-ts]
उपान्तिम+मुख्य-अन्तिम :	test [-st]	tests [-sts]

पूर्व-उपान्तिम + उपान्तिम
+ मुख्य अन्तिम : text [-kst] texts [-ksts]

व्यंजनों में (17) [t. d. s. z] परान्तिम स्थिति में आते हैं। test अथवा text जैसे रूपों में हम [-t] को मुख्य अन्तिम मानते हैं, क्योंकि tests, texts जैसे रूप मिलते हैं जिनमें एक और व्यंजन (परान्तिम व्यंजन) जोड़ा जाता है, किन्तु wished [wiʃt] जैसे रूप में [t] को परान्तिम मानते हैं क्योंकि गुच्छ [-ʃt] के समानान्तर कोई गुच्छ नहीं है जिसमें एक और व्यंजन जुड़ा हो अर्थात् हमें [-ʃts] जैसा अन्त्य-गुच्छ नहीं मिलता है।

परान्तिमों का उपागम तीन महत्त्वपूर्ण प्रतिबन्धों से सीमित है : परान्तिम (18) [t, s] ही मुख्य-अन्तिम (19) [p. t. k, tʃ, f ,θ, s. ʃ.] के बाद आ सकते हैं, ये ही परान्तिम किसी अन्य ध्वनि के बाद नहीं आते हैं, और परान्तिम (20) [t, d] ही मुख्य-अन्तिम (21) [tʃ, dʒ, s, z, ʃ,ʒ] के बाद आते हैं। यह उल्लेखनीय है कि समुच्चय (19) [h] ध्वनि के अतिरिक्त, अघोष ध्वनियों के शरीर प्रक्रियात्मक वर्ग से मेल खाता है और समुच्चय (21) स्पर्शसंघर्षी और सिस्-ध्वनियों के शरीर प्रक्रियात्मक वर्ग से मेल खाता है। ये प्रतिबन्ध मुख्य-अन्तिमों को 6 वर्गों में बांटते हैं :

जो (19) में हैं किन्तु (21) में नहीं हैं, उनके पश्चात् [t, s] आते हैं, जैसे, help, helped, helps में [p]

जो न तो (19) में हैं और न (21) में, उनके पश्चात् [d, z] आते हैं, जैसे, grab, grabbed, grabs में [b]

जो (19) में भी हैं और (21) में भी हैं, उनके पश्चात् केवल [t] आता है, जैसे, reach, reached में [tʃ]

जो (21) में तो हैं किन्तु (19) में नहीं हैं, उनके पश्चात् केवल [d] आता है, जैसे, urge, urged में [dʒ]

द्वित्व को वर्जित करने वाले नियम के अनुसार [t] के पश्चात् जो (19) में है किन्तु (21) में नहीं है, केवल [s] आ सकता है।

इसी नियम से [d] के पश्चात् जो न तो (19) में और न (21) में है केवल [z] आ सकता है, जैसे fold, folds में।

अब हम उपान्तिमों पर विचार करते हैं। मुख्य व्यंजन (22) [g, ð, ʒ, ŋ, r] कभी उपान्तिमों के साथ नहीं आते हैं और व्यंजन (23) [b, g, tʃ, dʒ, v, ʃ, r] कभी उपान्तिम के रूप में नहीं आते हैं। अब जो संयोजन

बचते हैं वे भी निम्नलिखित प्रतिबन्धों के भीतर आते हैं :

उपान्तिम (24) [l, r] मुख्य-अन्तिम (25) [z] के पूर्व नहीं आते हैं। तदनुसार इनके संयोजन निम्नलिखित उदाहरणों में मिलते हैं : harp, barb, heart, hard, hark, march, barge, scarf, carve, hearth, farce, harsh, arm, barn, help, bulb, belt, held, milk filch, bilge. pelf, belve, wealth, else, welsh, elm, kiln.

उपान्तिम (25) [n] केवल मुख्य-अन्तिम (27) [t, d, tʃ, dʒ, θ, s, z] के पूर्व आता है, जैसे ant, sand, range, month, once, bronze में।

उपान्तिम (28) [m] केवल मुख्य-अन्तिम (29) [p, t, f, θ] के पूर्व आता है, जैसे camp, dreamt, nymph में, मुख्य अन्तिम (30) के साथ इसका संयोजन एक पूर्व-उपान्तिम (11) [r] को लेता है : warmth.

उपान्तिम (31) [ŋ] केवल (32) [k, ϕ] के पूर्व आता है, जैसे link, length.

उपान्तिम (4) [s] केवल (6) [p, t, k] के पूर्व आता है, जैसे weap, test, ask में। (10) [t] के पूर्व यह एक पूर्व-उपान्तिम (15) [k] के साथ आता है, जैसे text में

उपान्तिम (33) [ð, z] केवल मुख्य-अन्तिम (28) [m] के पूर्व आते हैं, जैसे, rhythm, chasm में।

उपान्तिम (10) [t] केवल मुख्य-अन्तिम (34) [θ, s] के पूर्व आता है, जैसे eighth [ɛjtθ] में, और Ritz (तुलना कीजिए, वर्ग बोली ritzed [ritst] 'भर्त्सना किया', जिसमें परान्तिम [t] जुड़ा है)। इसका मुख्य अन्तिम (4) [s] के साथ संयोजन पूर्व-उपान्तिम (11) [r] के साथ आता है, जैसे quartz में।

उपान्तिम (35) [d] केवल (36) [θ, z] के पूर्व आता है, जैसे width, adze में।

उपान्तिम (37) [p, k] केवल मुख्य-अन्तिम (18) [t, s] के पूर्व आते हैं, जैसे crypt, lapse, act, tax में। इनमें से दो, उपान्तिम (15) [k] मुख्य-अन्तिम (4) [s] के साथ पूर्व-उपान्तिम (31) [ŋ] के साथ आता है, जैसे, minx (तुलना कीजिए, अप-बोली में jinxed [dʒinkst), 'अमंगलसूचक' जहां परान्तिम [t] जुड़ा हुआ है। [p] पूर्व-उपान्तिम (28) [m] के साथ आता है, glimpse, tempt.

उपान्तिम (38) [f] केवल (10) [t] के पूर्व आता है, जैसे, [lift] में।

अंग्रेजी के मध्य (medial) अनाक्षरकों के अन्तर्गत सभी अन्त्य और आद्यों के संयोजन आते हैं। एक छोर पर सन्ध्यभाव (hiatus) है जहाँ अनाक्षरिक का पूर्ण अभाव है, जैसे saw it ['sɔ:it] दूसरे छोर पर ऐसे गुच्छ हैं जैसे glimpsed, strips में [-mpst, str] और इन्हीं में स्वनिम द्वित्व भी हैं, जैसे that time में [-tt-] अथवा ten nights में [-nn-]।

8.5 अनाक्षरिकों के 38 प्रकार्यात्मक समुच्चयों के सर्वेक्षण से यह प्रदर्शित होगा कि यह वर्गीकरण अंग्रेजी भाषा के प्रत्येक अनाक्षरिक स्वनिम की परिभाषा देने में समर्थ है। इसी प्रकार, अधिकांश अथवा सम्भवतः सभी आक्षरिक स्वनिमों की भी भाषा की संघटना में प्रकार्य की दृष्टि से परिभाषा दी जा सकती है। चूंकि मानक अंग्रेजी के विभिन्न प्रतिरूप आक्षरिक स्वनिमों के वितरण में पर्याप्त भिन्न हैं अतएव नीचे केवल कुछ प्रतिमान अभिलक्षणों पर विवेचन किया जा रहा है।

आक्षरिक अर्धस्वर [u] कभी आदि में अथवा अन्त में नहीं आता है, यह मध्य में केवल [t, k, d, s, ʃ, m, l] के पूर्व आता है, जैसे, put, look, wood, puss, push, room, pull में। स्वरों में, केवल [ɑ:] और [ɔ:] और बलाघातहीन [ə] और [i] शब्द के अन्त में आते हैं। दक्षिणी ब्रिटिश में और अमेरिकन इंग्लिश के कुछ रूपों में स्वर और सन्ध्यक्षर अपने परिवर्ती [r] से अन्तिम स्थिति में ओर व्यंजन के पूर्व सम्मिश्रित हो जाते हैं और एक विशेष भाँति का उच्चारण (§6.11) होता है : [ij-–r], [iɔ] के समान लगता है (fear, feared); [uw–r], [uɔ] के समान लगता है (cure, cured); [ej—r] [ɛə] (care, cared) के समान लगता है [ow—r[, [ɔə] या [ɔ:] के समान लगता है (bore, bored) और [a:—r], [a:] के समान लगता है (spar, sparred)। संघटना की दृष्टि से या तो हम ये तुल्यरूपताएँ स्थापित करते हैं (जैसे हमने § 8.4 में किया था जहाँ [r] को उपान्तिम और पूर्व-उपान्तिम माना था), अथवा, यह कह सकते हैं कि आक्षरिक [ɑ:iɔ,uɔ, ɜɔ, ɔɔ, ə] विचित्र रूप से आक्षरिक के पूर्व [r] जोड़ते हैं, जैसे stirring, fearing, curing, caring sparing, boring प्रत्येक स्थिति में हम यह देखते हैं कि [iɔd, ɛɔd] के परान्तिम [d] के साथ संयोजन विरल है, weird, laird संघटना की दृष्टि से विचित्र शब्द है, इसी प्रकार [ɛɔn] के साथ cairn है। यद्यपि [i, e, ɛ, ɔ, ʌ], [r] के पूर्व आते हैं, जैसे spirit, merit,

carry, sorry, curry में तथापि वे अन्तिम अथवा व्यंजन-पूर्व [r] के समतुल्य के पूर्व नहीं आते हैं ।

स्वर [ɔ:[[g] के पूर्व नहीं आता है और स्वर [ɑ:] आद्य अनाक्षरिक अन्तस्थ [w] के पश्चात् नहीं आता है। उपान्तिम [l] के पूर्व केवल सन्ध्यक्षर [ij, aj, ow] आ सकते हैं, और प्रथम दो केवल तभी आते हैं जब [d] बाद में आता है, जैसे field, mild, old, colt में। उपान्तिम [n] के पूर्व केवल [aj, aw] पूर्ण स्वतन्त्रता के आ सकते हैं, जैसे, pint, mount, bind, bound में। [ɔj, ej] तभी आता है जब बाद में [t] आता है जैसे paint, point में। सन्ध्यक्षर के η पूर्व नहीं आते हैं।

त्रि स्वरक (juw), [j] और स्वर अथवा सन्ध्यक्षर से बने साधारण संयोजनों (yaṅk, year, yale) से भिन्न है चूँकि यह आद्य-व्यंजनों के बाद आता है, जैसे, pew, cue, beauty, gules, few hew, view, muse में, और गुच्छ [sp, st, sk] के बाद आता है, जैसे spew stew, skew में। दन्त्य के पश्चात्, विशेषतः [θ. s. z. l] के पश्चात्, कुछ वक्ता [juw] और कुछ [uw] उच्चारित करते हैं : thews, sue, presume, lute किन्तु [t, d, n] के बाद [juw] परिवर्त बहुलता से आता है, जैसे, tune, dew, new में। त्रिस्वरक आद्य [tʃ, dʒ, ʃ, ʒ, r] के बाद और व्यंजन [l] के बाद नहीं आता है ।

हम यह देखेंगे कि भाषा की व्याकरणिक संघटना में भी स्वनिमों का वर्गनिबन्धन होता है जो पूर्वानुपरक्रम (अनुक्रम) के आधार पर परिभाषित वर्गों के परिपूरक बनते हैं (13.6) ।

8.6 संघटनात्मक प्रतिमान भिन्न-भिन्न भाषाओं में अत्यधिक भिन्न-भिन्न होते हैं और हमें संयुक्त स्वनिमों के विभिन्न प्रतिरूप मानने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए जर्मन की संघटनात्मक परियोजना कुल मिलाकर बहुत कुछ अंग्रेजी के समान है किन्तु इसमें कुछ आश्चर्यजनक विभिन्नताएं हैं। सघोषस्पर्श और संघर्षी [b, d, g, v, z] कभी अन्तिम स्थिति में नहीं आते हैं। आद्य वर्ग तभी सरलतया वर्णित हो सकते हैं जब संघर्षी संयोजन [pf. ts] को संयुक्त स्वनिम माना जाए। जैसे, Pfund [pfunt] 'पाउन्ड', zehn [tse:n] "दस", zwei [tsvaj] "दो" सन्ध्यक्षर केवल [aj, au, oi] हैं। इस दिशा में संघटना की सरलता के कारण स्वन विज्ञानविद इन्हें [ai, au, oi] से प्रतिलेखित करते हैं क्योंकि ऐसा करने से कोई भ्रान्ति उत्पन्न नहीं होती है।

फ्रेंच व्यवस्था न केवल विशेष गुच्छों में अपितु इससे विस्तृतरूप में भिन्न है। सन्ध्यक्षर आरोही है, जैसे [jɛ, wa]। सर्वाधिक अन्तर स्वर स्वनिम [ə] के प्रयोग में जिसका उपागम मुख्यतया स्वनात्म प्रतिमान पर निर्भर है और ऐसा लगता है वह मुख्य स्वनिम न होकर गौण स्वनिम है। स्वनिम [ə] वहाँ-वहाँ आता है जहाँ-जहाँ पर यदि वह न आता तो अमान्य व्यंजन गुच्छ बन जाता। इस प्रकार, यह le chat [ləʃa] 'बिल्ली में आता है क्योंकि [lʃ] आद्य "गुच्छ के रूप में स्वीकार्य नहीं है किन्तु l'homme [l ɔm] "आदमी" में ऐसा नहीं है क्योंकि वहाँ कोई गुच्छ उत्पन्न नहीं होता है। यह cheval [ʃəval] "घोड़ा" में आता है क्योंकि गुच्छ [ʃv] आदिस्थिति में स्वीकार्य नहीं है, किन्तु un cheval œ̃j ʃval] "एक घोड़ा" मिलता है क्योंकि यह गुच्छ मध्यस्थिति में स्वीकार्य है। मध्यस्थिति में गुच्छ केवल दो व्यंजनों तक सीमित रहता है, इस प्रकार [rt] अन्तिम गुच्छ के रूप में तो स्वीकार्य है, जैसे porte [pɔrt] "वह ले जाता है", किन्तु यदि कोई आद्य व्यंजन बाद में आता है, तो अ [ə] बीच में आ जाता है, जैसे, porte bien [pɔrtə bjɛ̃] "भलीभाँति ले जाता है।" प्लेन्स क्री (Plains cree) जैसी भाषा में एक पूर्णतया विभिन्न व्यवस्था मिलती है। संघटना के अनुसार स्वनिम पाँच समुच्चयों में वर्गीकृत होते हैं: (1) स्वर [a, a:, e:, i, i:, u,o:] ये ही आक्षरिक स्वनिम हैं, (2) चार प्रतिरूप के व्यंजन : स्पर्श संघर्षी [tʃ] सहित स्पर्श [p. t. k.]; संघर्षी [s. h] नासिक्य [m, n] और अर्धस्वर [j, w]। आदिस्थिति में ये आ सकते हैं : कोई भी व्यंजन न हो, कोई एक व्यंजन हो, स्पर्श, संघर्षी अथवा नासिक्य+अर्धस्वर मध्यस्थिति में ये सँभावनाएँ हैं : कोई एक व्यंजन; स्पर्श, संघर्षी+अथवा नासिक्य अर्धस्वर; संघर्षी+स्पर्श; संघर्षी+स्पर्श+अर्धस्वर। अन्तस्थिति में केवल एक व्यंजन आने की संभावना है। फ़ाक्स (Fox) भाषा में, जिसमें इसी प्रकार प्रतिमान है, अन्त में कोई व्यंजन नहीं आ सकता है, प्रत्येक उच्चार के अन्त में एक ह्रस्व स्वर अवश्य होना चाहिए।

अंग्रेजी-भाषा में व्यंजन गुच्छों की विशेष बहुलता है फिर भी इनसे भिन्न व्यंजन गुच्छ अन्य भाषाओं में मिलते हैं, जैसे आदि स्थिति में [pf-, pfl-, pfr-, ts-, tsv-, ʃv-, kn-, gn-] जर्मन में, अथवा [tk-, mm-, ftf-, lftf-] रूसी में। इनके उदाहरण हैं, जर्मन में Pflaume ['pflawme] "एक प्रकार का बेर", schwer [ʃve:r] "भारी" knie [kni:] "घुटना (संघ)" और

रूसी में [tku] "मैं बुनता हूँ", [mnu] "मैं निचोड़ता हूँ", [ʃtʃi] "गोभी की तरकारी", [lʃtʃu] "मैं चापलूसी करता हूँ।" अंग्रेजी में न मिलने वाले अन्तिम गुच्छ अन्यत्र मिलते हैं, जैसे, जर्मन में [rpst] (Herbst [herpst] "शरत्") और रूसी में [rʃtʃ] ([borʃt]) "चुकन्दर की तरकारी") मिलते हैं।

8.7 यदि एक बार हमने स्वनिमों की परिभाषा इस प्रकार कर ली कि ये वे लघुतम इकाइयाँ हैं जो अर्थ में भिन्नता लाती हैं तो हम सामान्यतया प्रत्येक पृथक्-पृथक् स्वनिम की परिभाषा भाषिकरूपों की संघटनात्मक व्यवस्थान में उसके द्वारा दिये योगदान से कर सकेंगे। हम विशेषतः देखते हैं कि संघटनात्मक व्यवस्था के कारण हमें संयुक्त स्वनिम स्वीकार करने पड़ते हैं जो अन्य स्वनिमों के पूर्वानुपरक्रम से तो मिलते हैं किन्तु अन्य सरल स्वनिमों के समान कार्य करते हैं और थोड़े से ही ध्वनिकी अन्तर जैसे अंग्रेजी में, [l, n] पर आक्षरिक बलाघात अथवा आक्षरिक [i, u] की तुलना में [j, w] पर कुछ अधिक सशक्तता उन्हें पृथक्-पृथक् स्वनिम बना देते हैं।

इस प्रकार परिभाषित स्वनिम संकेतन की इकाइयाँ हैं। भाषा के अर्थवान् रूप मुख्य और गौण स्वनिमों के विन्यासों के रूप में वर्णित किये जा सकते हैं। यदि हम भाषण का एक बड़ा नमूना ले लें, तो उससे स्वनिमों और संयोजनों की सापेक्षिक आवृत्तियों (बारंबारताएँ) गिनी जा सकती हैं। यह कार्य भाषाविदों द्वारा उपेक्षित रहा है और अनुरागी जनों से बहुत अपूर्णतया किया गया है क्योंकि उन्होंने स्वनिम को मुद्रित-अक्षरों से सम्मिश्रित कर दिया है। उद्धरण के स्वनिमों के महायोग को 100 प्रतिशत मानने पर, अंग्रेजी के लिए की गई एक हाल की गणना के अनुसार व्यंजन स्वनिमों की निम्नलिखित प्रतिशत आवृत्तियाँ (बारंबारताएँ) निकलीं :—

n	7.24	ð	3.43	p	2.04	g	0.74
t	7.13	z	2.97	f	1.84	j	0.60
r	6.88	m	2.78	b	1.81	tʃ	0.52
s	4.55	k	2.71	h	1.81	dʒ	0.44
d	4.31	v	2.28	ŋ	0.96	θ	0.37
l	3.74	w	2.08	ʃ	0.82	ʒ	0.05

[r, l, m] की संख्याओं में इनके आक्षरिक प्रयोगों की भी गणना सम्मिलित है। [j] और [w] की संख्याओं में वे प्रयोग नहीं गिने गए हैं जिनमें ये स्वनिम सन्ध्यक्षर (द्विस्वरक) अथवा त्रिस्वरक के अंश हैं। स्वर

स्वनिमों की गणना इतनी जटिल है कि उसके परिणाम सरलतया प्रदर्शित नहीं किये जा सकते हैं। स्थूलरूप से [e] सर्वाधिक प्रयुक्त है और इसकी आवृत्ति 8 प्रतिशत है। इसके पश्चात् [ij] आता है जिसकी आवृत्ति 6 प्रतिशत से ऊपर है। इसके पश्चात् [ɛ] है जिसकी आवृत्ति 3½ प्रतिशत है। स्वनिमगुच्छों के लिए गिनी संख्याएँ प्रयोग में लाने योग्य नहीं है। इस और इसी प्रकार की अन्य गणनाओं से स्पष्ट है कि भाषा के स्वनिम आवृत्ति की दृष्टि से अति विभिन्न महत्व के हैं। फिर भी भाषाओं के बीच कुछ सादृश्य मिलता है। इस प्रकार भाषाओं में जो स्पर्शी के दो प्रतिरूपों को काम में लाते हैं, जैसे अंग्रेजी में [p. t. k] और [b, d. g] प्रत्येक युग्म का अघोष स्पर्श तदनुरूप अघोष स्पर्श की अपेक्षा अधिक प्रचलित है, उदाहरण के लिए [t], [d] की अपेक्षा बहुत है। इस तथ्य पर गंभीर विवेचन की अपेक्षा है।

8.8 हम लोगों ने भाषणध्वनियों के अध्ययन की तीन रीतियों पर विचार कर लिया है। ध्वनिविज्ञान अपने संकुचित अर्थ में––अर्थात् प्रयोगशालीय ध्वनिविज्ञान के रूप में––हमें शुद्ध ध्वानिकीय अथवा शरीरप्रक्रियात्मक वर्णन देता है। वह केवल स्थूल ध्वानिकीय अभिलक्षणों को प्रकट करता है। व्यवहार में प्रयोगशालीय-ध्वनिविज्ञानविद् प्रायः किसी ऐसे अभिलक्षण को अध्ययन के लिए छाँट लेता है जो उसने अपने साधारण ज्ञान से स्वनिम का लक्षण समझा है। व्यावहारिक-ध्वनिविज्ञान एक कला अथवा कौशल है, न कि विज्ञान, और व्यावहारिक-ध्वनिविज्ञानविद् स्वनिमीय इकाइयों की प्रतिदिन की पहिचान को स्पष्टतया स्वीकार करता है और यह बताने का प्रयत्न करता है कि वक्ता उसे कैसे उत्पन्न करता है। ध्वनिप्रक्रिया (phonology) शब्द कभी-कभी ध्वनिविज्ञान के इन दो रूपों के व्यतिरेक में प्रयुक्त होता है। ध्वनिप्रक्रिया स्वनिमों की ध्वानिकीय प्रकृति की उपेक्षा करती है और उन्हें केवल पृथक्-पृथक् इकाइयों के रूप में स्वीकार करती है। यह प्रत्येक स्वनिम की परिभाषा भाषिक रूपों की संघटना में उनके महत्व के आधार पर करती है। यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि व्यावहारिक-ध्वनिविज्ञान और ध्वनिप्रक्रिया के विवेचन के लिए अर्थ-ज्ञान आवश्यक है, बिना इस ज्ञान के हम स्वनिमीय अभिलक्षणों को निश्चित नहीं कर सकते हैं।

अतएव भाषा का वर्णन ध्वनिप्रक्रिया से प्रारम्भ होता है जहाँ प्रत्येक स्वनिम की परिभाषा दी जाती है और उनके संयोजनों का कथन होता है। प्रत्येक स्वनिम संयोजन जो भाषा में आता है, उस भाषा में उच्चारण साध्य होता है और उसका एक ध्वन्यात्मक रूप होता है। उदाहरणार्थ [mnu]

संयोजन अंग्रेजी में उच्चारण साध्य नहीं है किन्तु संयोजन [men] उच्चारण-साध्य है और उसका ध्वन्यात्मरूप भी है।

जब भाषा की ध्वनि प्रक्रिया स्थापित हो जाती है तो यह बताना रह जाता है कि अनेक विभिन्न ध्वन्यात्मरूपों से क्या अर्थ संलग्न है। वर्णन का यह चरण अर्थप्रक्रिया (semantics) है। इसके साधारणतया दो भाग हैं—व्याकरण (grammar) और शब्दसमूह (lexicon)।

जिन ध्वन्यात्मरूपों का अर्थ है, वे भाषिक रूप (linguistic form) कहे जाते हैं। इस प्रकार कोई भी अंग्रेजी का वाक्य, पदसंहति अथवा शब्द एक भाषिक रूप है और इसी प्रकार एक अर्थवान् अक्षर भी भाषिक रूप है, जैसे, maltreat में [mɛl] अथवा monday में [mʌn]। एक अर्थवान्‌रूप में एक अकेला स्वनिम तक हो सकता है, जैसे अंग्रेजी बहुवचनान्त hats, caps, books में [s] जिसका अर्थ "एकाधिक" है। आगे के अध्यायों में हम देखेंगे कि अर्थ किस प्रकार भाषिक रूपों से सम्बद्ध होता है।

अध्याय 9

अर्थ

9.1. भाषणध्वनियों का अर्थ-निरपेक्ष (अर्थ का विचार न करते हुए) अध्ययन एक अमूर्त व्यवहार है, वास्तविक प्रयोग में भाषण ध्वनियाँ संकेत के रूप में उच्चरित होती हैं। हमने भाषिक रूप के अर्थ की परिभाषा उस परिस्थिति से की थी जिसमें वक्ता उसे उच्चारित करता है, और उस अनुक्रिया से की थी जो वह श्रोता में उत्पन्न करता है। हममें से प्रत्येक कभी वक्ता के रूप में और कभी श्रोता के रूप में आचरण करना सीखता है, इस वस्तुस्थिति के कारण वक्ता की परिस्थिति और श्रोता की अनुक्रिया परस्पर घनिष्ठतया समन्वित हैं। कारण-कार्य श्रेणी में :

वक्ता की परिस्थिति——→भाषा——→श्रोता की अनुक्रिया है। इसमें वक्ता की परिस्थिति की, अपनी पूर्वतर स्थिति के कारण, श्रोता की अनुक्रिया की अपेक्षा सरल अवस्थिति है। इसी कारण हम प्रायः अर्थ की विवेचना और परिभाषा वक्ता के उद्दीपन के दृष्टिकोण से देते हैं।

लोगों को भाषण के लिए प्रेरित करने की जो परिस्थितियाँ हैं उनके अन्तर्गत विश्व की प्रत्येक वस्तु एवं घटना आती है। भाषा के प्रत्येक रूप के अर्थ की वैज्ञानिक एवं यथार्थ परिभाषा देने के लिए हमें वक्ता के संसार में प्रत्येक वस्तु का वैज्ञानिक एवं यथार्थ ज्ञान आवश्यक है। इसकी तुलना में मानवीय ज्ञान की वास्तविक परिधि अत्यन्त छोटी और सीमित है। हम भाषिक रूपों का सही-सही अर्थ परिभाषित कर सकते हैं जबकि इस अर्थ का संबंध उन पदार्थों से है जिनका हमें वैज्ञानिक ज्ञान है। उदाहरणार्थ, हम खनिजों के नाम की परिभाषा रसायनशास्त्र और खनिजशास्त्र की शब्दावली में दे सकते हैं, जैसे कि, अंग्रेजी के साधारण प्रयुक्त शब्द Salt (नमक) को हम सोडियम-क्लोराइड (Sodium Chloride (NaCl) से परिभाषित करते हैं। इसी प्रकार पौधों और पशुपक्षियों के नामों को हम वनस्पतिशास्त्र और जन्तुशास्त्र की शब्दावली से परिभाषित करते हैं। किन्तु 'प्रेम' 'घृणा' जैसे शब्दों को ठीक-ठीक परिभाषित करने का कोई मार्ग नहीं है क्योंकि इनका संबंध उन

परिस्थितियों से है जिनका ठीक-ठीक वर्गीकरण नहीं हो पाया है, और इस श्रेणी के अन्तर्गत अधिकांश भाषिक-रूप हैं ।

इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक (अर्थात् सर्वमान्य एवं यथार्थ) वर्गीकरण के होते हुए भी हम प्रायः देखते हैं कि भाषा में अर्थ इस वर्गीकरण के अनुसार नहीं मिलते हैं। जर्मनभाषा में व्हेल को मछली कहकर (Walfisch-('val-'fiʃ) और चमगादड़ को चूहा कह कर (Fledermaus [fleider-maws]) पुकारते हैं । भौतिकविज्ञानविदों ने वर्ण-स्पेक्ट्रम को 40 से 72 मिलीमीटर के लाखवें भाग वाली दैर्घ्यों की विभिन्न प्रकाश तरंगों का एक निरन्तर श्रेणीक्रम माना है किन्तु भाषाएँ इस श्रेणीक्रम के विभिन्न भागों को violet (बेंगनी), blue (नीला), green (हरा), yellow(पीला), orange (नारंगी), red (लाल) आदि वर्णों के नामों के अर्थों द्वारा पूर्णतया यदृच्छा से और बिना सूक्ष्मसीमा के बांट देती हैं। व्यक्तियों के सम्बन्धनाम (नातेदारी के नाम) एक सरल वस्तु लगते हैं किन्तु विभिन्न भाषाओं में प्रयुक्त पारिवारिक शब्दावली का विश्लेषण एक बड़ी कठिन समस्या है ।

अतएव अर्थों का विवेचन भाषा-अध्ययन का एक दुर्बल अंग है और ऐसा तब तक रहेगा जब तक कि मानवीय ज्ञान अपनी वर्तमान स्थिति से बहुत अधिक बढ़ नहीं जाएगा। व्यवहार में, भाषिकरूपों के अर्थों को, यथासम्भव अन्य शास्त्रों की शब्दावली से परिभाषित करते हैं, जहां यह असम्भव है वहां अन्य उपाय ढूंढते हैं। एक उपाय है उस वस्तुविशेष का निदर्शन करना (demonstration) । यदि कोई सेब (फल) का अर्थ नहीं जानता है तो हम उसे कोई सेब हाथ में देकर अथवा किसी सेब को दिखाकर यह अर्थ सिखा सकते हैं और उसको, जब तक वह गलती करना बन्द नहीं कर देता है तब तक सेब देते रहते हैं या दिखलाते रहते हैं अर्थात् तब तक सिखाते रहते हैं जब तक परम्परागतरूप से शब्द प्रयुक्त करना नहीं सीख लेता है। मूलतः यही वह प्रक्रिया है जिससे बच्चे भाषिकरूपों को सीखते हैं। दूसरा उपाय है उस वस्तु के सम्बन्ध में घुमा-फिराकर कहना—वाग्विस्तार (circumlocution) जो शब्द-कोषों में प्रायः मिलता है, और तब प्रयुक्त होता है जब जिज्ञासु हमारी भाषा जानता है। जैसे "सेब" को परिभाषित करने के लिए ऐसा वाग्विस्तार प्रयुक्त करना होगा जो उन सब स्थितियों में लग सके जहां "सेब" शब्द लगता है, जैसे "सेब" के लिए यह वाग्विस्तार प्रयुक्त करें "एक प्रसिद्ध पक्के गूदेवाला, मुलायम छिलकेवाला, गोल अथवा अण्डगोलक मालुस (malus) जाति के वृक्ष का पोम फल जो आकार, शक्ल,

रंग और अम्लता की मात्रा में परस्पर अत्यधिक भिन्न होते हैं"। इसके अतिरिक्त यह भी उपाय है कि उसे अनुवाद (translate) करके समझाया जाय। यह तब सम्भव है जब हम जिज्ञासु की भाषा को जानते हों। इसमें उस भाषा में स्थूल तत्तुल्य शब्द का उच्चारण करते हैं। उदाहरण के लिए जिज्ञासु यदि फ्रेंच है तो हम "सेब" का अर्थ, उसकी भाषा में अनुवाद (translation) करके pomme [pɔm] बताएंगे। परिभाषा का यह उपाय द्विभाषी कोषों में मिलता है।

9.2 वे परिस्थितियां जो हमें एक भाषिकरूप उच्चारित करने के लिए प्रेरित करती हैं बड़ी भिन्न होती हैं। दार्शनिकों का कहना है कि कोई भी दो परिस्थितियां कभी एकसी नहीं होती हैं। हममें से प्रत्येक, मान लो कुछ महीनों के भीतर, "सेब" शब्द का अनेक बार प्रयोग करता है किन्तु वह वस्तु जिसके लिए हम "सेब" प्रयुक्त कर रहे थे बिल्कुल एक-सी नहीं है, प्रत्येक सेब दूसरे से आकार, विस्तार, रंग, गन्ध, स्वाद आदि में भिन्न है। अनुकूल परिस्थति में जैसे शब्द "सेब" के साथ भाषिक-समुदाय के सभी सदस्य बचपन से ही इस भाषिकरूप को तब-तब प्रयुक्त करने में दीक्षित किए गए हैं जब जब परिस्थिति (इस उदाहरण में, "वस्तु") कुछ सापेक्षिक परिभाषा-साध्य लक्षण प्रस्तुत करती है। ऐसी सरल स्थिति में भी हम लोगों का प्रयोग सदैव एक-सा नहीं है और अधिकांश भाषिकरूपों के कम सुस्पष्ट अर्थ होते हैं। फिर भी यह स्पष्ट है कि हमें परिस्थितियों के अपरिच्छेदक (non-distinctive) अभिलक्षणों को, जैसे एक विशिष्ट सेब के आकार, विस्तार, रंग आदि को, परिच्छेदक (distinctive) अथवा भाषिक अर्थ (linguistic-meaning) (आर्थी अभिलक्षणों semantic feature) से भिन्न मानना चाहिए। ये परिच्छेदक अभिलक्षण उन सभी परिस्थितियों में सर्वनिष्ठ होते हैं जिनसे प्रेरित होकर भाषिकरूप प्रयुक्त होता है, उदाहरणार्थ वे सब अभिलक्षण जो उन सभी वस्तुओं में सर्वनिष्ठ हैं जिनके लिए अंग्रेजी भाषी लोग शब्द apple प्रयुक्त करते हैं।

हमारे विवेचन का साधारणतया सम्बन्ध रूप और अर्थ के परिच्छेदक अभिलक्षणों से है, अतएव इस पुस्तक में अब से सामान्यतया विशेषण "भाषिक" अथवा "परिच्छेदक" नहीं प्रयुक्त किए जाएंगे और अपरिच्छेदक अभिलक्षणों की सत्ता की उपेक्षा करते हुए केवल "रूप" और "अर्थ" शब्द व्यवहृत होंगे। रूप अपना अर्थ अभिव्यक्त (express) करता है, ऐसा प्रयोग प्रायः मिलता है।

9.3 यदि हमें उस अर्थ की यथार्थ परिभाषा मिल भी जाती जो भाषा के प्रत्येक रूप के साथ संलग्न है, तो भी एक अन्य भाँति की कठिनाई हमारे सम्मुख आती। प्रत्येक परिस्थिति का एक बड़ा महत्त्वपूर्ण अंग वक्ता की शारीरिक स्थिति है। इसके अन्तर्गत, निस्सन्देह, तन्त्रिका-प्रणाली की पूर्व-प्रवृत्ति है जो, वंशक्रमागत और जन्मपूर्व घटकों का तो कहना ही क्या, उच्चारण करने के ठीक पूर्व तक के सभी भाषाई और अन्य अनुभवों से फलित होती है। यदि हम बाह्य परिस्थितियों को आदर्शरूपेण एकरूप रख सकें और विभिन्न-विभिन्न वक्ताओं को उन्हीं परिस्थितियों में रखें, फिर भी हम यह न नाप पाएँगे कि प्रत्येक वक्ता क्या योग्यता लेकर आया है और इसलिए हम पहले से नहीं कह पाएँगे कि कौन-से भाषिकरूप वह बोलेगा, अथवा वह बोलेगा भी या नहीं।

अगर पूर्ण परिभाषाएं होतीं तो भी हमें पता लगता कि बहुत से उच्चार वक्ता ने तब बोले हैं जबकि वह उस परिस्थिति में था ही नहीं जिसे हमने परिभाषित किया है। लोग प्रायः "सेब" बोलते हैं जबकि सेब कहीं सामने होता ही नहीं है। हम इसे "विस्थापित" (displaced) भाषण कह सकते हैं। विस्थापित भाषण की बारंबारता (आवृत्ति) और महत्त्व सुस्पष्ट हैं। § 2.5 में दिए बच्चे का बबुआ "मांगना" इसका उदाहरण है। पुनः प्रेषित भाषण, भाषा का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। वक्ता "क" कुछ सेब देखता है और वक्ता "ख" से कहता है जिसने उन्हें देखा नहीं है। वक्ता "ख" इस सूचना को 'ग' को, 'ग' 'घ' को, और 'घ' 'च' को और इस प्रकार आगे लोगों को देता है और यह सम्भावना हो सकती है कि इनमें से किसी ने भी सेबों को देखा न हो, और अन्त में वक्ता "क्ष" के पास सूचना पहुँचती है और वह कुछ सेब खाता है। दूसरे शब्दों में हम प्रतिरूपात्मक उद्दीपन के अभाव में भी भाषिकरूप प्रयुक्त करते हैं। एक भूखा भिखारी दरवाजे पर पुकारता है "मैं भूखा हूँ", और घर से उसे कुछ भोजन मिलता है। यह घटना, हम कह सकते हैं, "मैं भूखा हूँ" का मुख्य अथवा शब्दकोषीय अर्थ है। एक चिड़चिड़ा बच्चा सोते समय रोता है कि "मैं भूखा हूँ", किन्तु उसकी मां उसकी शरारतें जानती है, वह जानती है कि इसका पेट भरा हुआ है और झूठमूठ में बहाने कर रहा है, और वह उसे बलात् सुला देती है। यह एक विस्थापित भाषण का उदाहरण है। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि यदि कोई विदेशी "मैं भूखा हूँ" का अर्थ पूछे तो, दोनों मां और बेटे, अधिकांश उदाहरणों में उसे शब्दकोषीय अर्थ बताएंगे। असत्यभाषण,

व्यंग्य, उपहास, कविता, वर्णनात्मक कथासाहित्य आदि की परम्परा कदाचित् उतनी ही पुरानी है और उतनी ही व्यापक है जितनी कि भाषा। एक रूप के शब्दकोषीय अर्थ को जानते ही हम उसे विस्थापित भाषण में प्रयुक्त करने के लिए पूर्णतया योग्य हो जाते हैं। शब्दकोषों में और विदेशी भाषाओं की शिक्षण-पुस्तिकाओं में केवल शब्दकोषीय अर्थ देने की आवश्यकता होती है। भाषण के विस्थापित प्रयोग अपने मुख्य मानों (मूल्यों) से पर्याप्त एकरूप रीतियों से व्युत्पन्न होते हैं और उन पर कोई विशेष विवेचन नहीं करना है। फिर भी, उनके कारण यह अनिश्चिति और बढ़ गई कि वक्ता परिस्थितिविशेष में, (यदि वह बोलता है तो), क्या रूप बोलेगा।

9.4 मनोवादी मनोविज्ञान के अनुयायी इस पर विश्वास करते हैं कि वे अर्थ की परिभाषा करनेवाली कठिनाई को बचा सकते हैं, चूंकि उनके मत से, एक भाषिकरूप के उच्चार के पूर्व वक्ता के भीतर एक भौतिकेतर प्रक्रिया, जैसे, विचार, धारणा, प्रतिबिम्ब भावना, इच्छा आदि, चलती हैं और इसी प्रकार श्रोता की ध्वनि-तरंगों को पाकर समतुल्य अथवा सहसम्बद्ध मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं। अतएव मनोवादी भाषिकरूप के अर्थ की परिभाषा उन लक्षण-भूत मानसिक घटनाओं से देते हैं जोकि उस भाषिकरूप को बोलने अथवा सुनने में प्रत्येक वक्ता अथवा श्रोता में उत्पन्न होती है। "सेब" शब्द का उच्चारण करनेवाले वक्ता के सम्मुख सेब का एक मानसिक प्रतिबिम्ब रहता है और यह शब्द श्रोता के मस्तिष्क में एक तत्समान प्रतिबिम्ब उभारता है। मनोवादी के लिए भाषा विचारों, भावनाओं और एषणाओं की अभिव्यक्ति है।

यन्त्रवादी इस समाधान को स्वीकार नहीं करता है। उसका मत है कि मानसिक प्रतिबिम्ब, भावनाएं आदि विभिन्न शारीरिक संचलनों के केवल जनप्रचलित नाम हैं जोकि, जहां तक भाषा का सम्बन्ध है, स्थूलरूप से तीन प्रतिरूपों में विभाजित हो सकते हैं:

(1) व्यापक प्रक्रियाएँ जो विभिन्न व्यक्तियों में भी प्रायः समान हैं और जिनकी कुछ सामाजिक महत्ता है। ये परम्परागत भाषिकरूपों से, जैसे "मैं भूखा हूं" (कुछ, भयभीत, खेद, प्रसन्न, मेरे सिर में दर्द है आदि) से, निरूपित होता है।

(2) अस्पष्ट और अत्यधिक परिवर्तनशील, अल्पमात्रिक मांसपेशीय संकुचन और ग्रन्थि-स्राव जो व्यक्ति से व्यक्ति में भिन्न-भिन्न हैं और जिनकी तात्कालिक

सामाजिक महत्ता भी नहीं है। ये परम्परागत भाषिकरूपों से निरूपित नहीं होते हैं।

(3) वाग्-अवयवों के निःशब्द संचलन का स्थान तो लेते हैं किन्तु अन्य व्यक्तियों द्वारा जाने नहीं जाते हैं (§ 2.4 में वर्णित "शब्दों में सोचना")।

यन्त्रवादी संख्या (1) की प्रक्रियाओं को केवल ऐसी घटनाएँ मानता है जिन्हें वक्ता अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा सबसे अधिक जान सकता है। अर्थ की विभिन्न समस्याएँ, जैसी कि विस्थापित भाषण (नटखट लड़के का "मैं भूखा हूँ" यह कहना) की समस्या, यहाँ भी वैसी उपस्थित रहती हैं जैसी अन्यत्र। यन्त्रवादी के मत से संख्या (2) की प्रक्रियाएँ व्यक्ति की वैयक्तिक प्रवृत्ति हैं और शिक्षा और अन्य अनुभवों के हेरफेरों से बचे चिन्ह के समान है। वक्ता इन्हें प्रतिबिम्ब, भावना आदि पुकारता है और ये न केवल व्यक्ति से व्यक्ति में भिन्न है अपितु एक ही व्यक्ति में एक अवसर से दूसरे अवसर में भिन्न है। वक्ता जब यह कहता है "मुझे सेब का मानसिक प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ा" तब उसका वस्तुतः तात्पर्य यह है, 'मैं ऐसे प्रतिरूप के कुछ अस्पष्ट आन्तरिक उद्दीपनों पर अनुक्रिया कर रहा था जोकि कभी अतीत में सेब के उद्दीपनों से सम्बद्ध था'। संख्या (3) की अन्तर्वाणी यन्त्रवादी के लिए केवल वास्तविक भाषणउच्चार की प्रवृत्ति से व्युत्पन्न है। जब हम निश्चित हो जाते हैं कि वक्ता बिना शब्द किये एक उच्चार विशेष के भाषणसंचरणों को काम में लाया है ("शब्दों में सोचना") तब हमारे सामने ठीक वही समस्या आती है जोकि तब आती जबकि वह प्रकटरूप में बोलता। संक्षेप में यन्त्रवादी के लिए "मानसिक प्रक्रियाएँ" उन शारीरिक क्रियाओं के परम्परागत नाममात्र हैं जोकि (1) अर्थ वक्ता की परिस्थितियां हैं इस परिभाषा की परिधि में आती हैं, अथवा (2) भाषणरूपों से इतनी विविधता से सह-सम्बद्ध है कि वक्ता की परिस्थिति के निर्धारण में व्यर्थ हैं, अथवा (3) भाषण उच्चार की पूर्व-आवृत्तिमात्र है।

यद्यपि अन्य मानवीय कार्यकलापों के समान भाषा के मौलिक-सिद्धान्तों के विषय में यह मतभेद हमारे दृष्टिकोणों को पर्याप्त निर्धारित करता है और यद्यपि मनोवादी अर्थ के सभी विवेचनों में अपनी प्रयुक्त शब्दावली पर प्रमुखतया निर्भर रहते हैं, तथापि इस मतभेद का भाषिक-अर्थ की समस्याओं से वस्तुतः बहुत ही कम सम्बन्ध है। घटनाएं, जिन्हें मनोवादी मानसिक प्रक्रियाएं कहते हैं और यन्त्रवादी अन्यथा मानते हैं, प्रत्येक स्थिति में केवल एक व्यक्ति

को प्रभावित करती हैं, और प्रत्येक व्यक्ति उन पर अनुक्रिया करता है जब वे उसके भीतर होती हैं; किन्तु जब वे अन्य व्यक्ति के भीतर हो रही हों तब उन पर कैसे अनुक्रिया की जाए, यह किसी को नहीं आता है। दूसरों की मानसिक प्रक्रियाएं अथवा आन्तरिक शारीरिक प्रक्रियाएं हममें से प्रत्येक को केवल भाषण-उच्चारों और अन्य लक्ष्य चेष्टाओं द्वारा विदित होती हैं। चूँकि यही पूरी विवेच्य सामग्री है, व्यवहार में मनोवादी अर्थ की परिभाषा ठीक वैसी ही करता है जैसी कि यन्त्रवादी वास्तविक परिस्थितियों के शब्दों में करता है। मनोवादी सेब को "एक प्रसिद्ध, पक्के गूदे वाला – – – – फल के प्रतिबिम्ब" के रूप में परिभाषित नहीं करता है किन्तु यन्त्रवादी के समान, इसके अन्तिम दो शब्दों ("के प्रतिबिम्ब") को छोड़ देता है और अपने को छोड़कर अन्य सभी वक्ताओं के लिए वस्तुतः वह केवल अनुमान लगाता है कि प्रतिबिम्ब उपस्थित था चूंकि वक्ता ने "सेब" शब्द प्रयुक्त किया था अथवा चूंकि वक्ता ने "मेरे सम्मुख सेब का मानसिक प्रतिबिम्ब था" ऐसा निश्चित उच्चार सुना था। अतएव व्यवहार में भाषाशास्त्रज्ञ, मनोवादी और यन्त्रवादी––दोनों, अर्थ की परिभाषा वक्ता की परिस्थितियों से, और यदि इससे कुछ विस्तार होता है तो श्रोता की अनुक्रियाओं से करते हैं।

9.5 भाषिक अर्थ भाषिकेतर क्रियाओं के अर्थों की अपेक्षा अधिक विशिष्ट हैं। मानवीय सहयोग का पर्याप्त भाग भाषा के माध्यम के बिना होता है, जैसे कि अंगविक्षेपों से (उदाहरणार्थ, किसी वस्तु की ओर इशारा करना), वस्तुओं को व्यवहार में लाने से (किसी वस्तु को किसी के हाथ में देने अथवा जमीन पर खींचकर फेंकने से), स्पर्श से (कुहनी मारने से अथवा चिपकाने से), और भाषिकेतर ध्वनियों से––अमौखिक (चुटकी बजाने अथवा ताली बजाने), और मौखिक (हंसने, चिल्लाने) से, इत्यादि। इस सम्बन्ध में भाषण-ध्वनियों के भाषिकेतर (अपरिच्छेदक) अभिलक्षणों का उल्लेख आवश्यक है। इसके अन्तर्गत विलापकारी, क्रोधपूर्ण, आज्ञात्मक, मन्द-मन्द आदि "नादों के तान" आते हैं और इस प्रकार भाषण के अनन्तर भाषण-रीति ही सर्वाधिक प्रभावशाली संकेतन-विधि है। किन्तु भाषिकरूप, भाषिकेतर माध्यमों की अपेक्षा, कहीं अधिक यथार्थ, विशिष्ट और सूक्ष्म समन्वय को लाते हैं। इसके लिए केवल कुछ आकस्मिक भाषणों के उदाहरण सुनना पर्याप्त है, जैसे "चार फिट और साढ़े तीन इंच"––यदि मैं आठ बजे तक कुछ सूचना न दूँ तो मेरे बिना चले जाना।––"अमोनिया की छोटी बोतल कहां है?"। अंगविक्षेपों की प्रयत्नसिद्ध

व्यवस्था, गूंगे-बहरों की भाषा, संकेतन-पद्धति, लेखनप्रयोग, तारप्रेषण, आदि जो इसके अपवाद लगते हैं निरीक्षण पर भाषा के व्युत्पन्नमात्र निकलते हैं।

चूंकि हमारे पास अधिकांश अर्थों को पारिभाषित करने की और उनकी स्थिरता को प्रदर्शित करने की कोई विधि नहीं है, अतएव हम भाषा की विशिष्टता और स्थिरता के गुणों को उसी प्रकार भाषाई अध्ययन की पूर्वधारणा के रूप में लेते हैं जिस प्रकार लोगों के साथ प्रतिदिन के आचरणों में इन गुणों को लेते हैं। हम इस पूर्वधारणा को भाषाशास्त्र की आधारभूत उपकल्पना (§ 5.3) के रूप में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं :

कुछ समुदायों (भाषिकसमुदायों) में, कुछ भाषण-उच्चाररूप और अर्थ की दृष्टि से एकसम होते हैं।

भाषिकरूपों का यह गुण तर्क की अवहेलना करके स्थापित किया गया है। संचार की भाषिकेतर विधियां प्रत्यक्षरूप से हमारी शारीरिक संरचना पर निर्भर हैं, अथवा साधारण सामाजिक परिस्थितियों से प्रत्यक्षरूपेण उद्भूत हैं, किन्तु भाषिकरूपों का उनके अर्थों के साथ सम्बन्ध पूर्णतया यादृच्छिक है। जिसे हिन्दी में "घोड़ा" कहते हैं, वही जर्मन में Fferd [Pfe:rt], फ्रेंच में cheval] [ʃəval], क्री में [misation] आदि है। ध्वनियों का एक समुच्चय (जैसे "घोड़ा") उतना ही तर्कहीन है जितना कि दूसरा (जैसे pfe:rt)।

हमारी आधारभूत उपकल्पना का यह तात्पर्य है कि प्रत्येक भाषिकरूप का एक स्थिर और विशिष्ट अर्थ है। यदि रूप स्वनिमीय दृष्टि से भिन्न हैं, हम यह सोचते हैं कि उनके अर्थ भी भिन्न होंगे। उदाहरण के लिए quick, fast, swift, rapid, speedy जैसे रूपों के समुच्चय में से प्रत्येक अन्य सभी से अर्थ के कुछ स्थिर और परम्परागत अभिलक्षणों द्वारा भिन्न है। संक्षेप में हम यह मान लेते हैं कि वास्तविक पर्याय (synonym) सम्भव ही नहीं हैं। इसके विपरीत, हमारी उपकल्पना का यह भी तात्पर्य है कि यदि रूप आर्थीदृष्टि से भिन्न हैं (अर्थात् उनके पृथक्-पृथक् अर्थ हैं), तो वे "एक (वही)" नहीं हैं चाहे ध्वन्यात्मरूप में एक समान हों। इस प्रकार अंग्रेजी में ध्वन्यात्मरूप [bɛɔ] तीन विभिन्न अर्थों के साथ आता है। bear ("ले जाना", उत्पन्न करना"), bear ("भालू"), और bare ("अनावृत")। इसी प्रकार [hɛɔ] दो संज्ञाओं (pear और pair) के लिए और एक क्रिया (pare) के लिए आता है और पाठकों के सम्मुख अनेक उदाहरणों में आता है। विभिन्न भाषिकरूप जिनका एक ही ध्वन्यात्मरूप है (और फलस्वरूप केवल अर्थ से भिन्न है) समरूप

(homonym) कहे जाते हैं। चूंकि हम निश्चिति के साथ अर्थों को परिभाषित नहीं कर सकते हैं, अतएव हम सदैव यह निश्चय नहीं कर पाते हैं कि विवेच्य ध्वन्यात्मरूपों ने अपने विभिन्न प्रयोगों में सदैव वही अर्थ बनाए रखा है अथवा वे समरूपों के समुच्चय हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी क्रिया bear के अनेक प्रयोग हैं-- bear a burden "बोझा सहन करना", bear troubles कष्ट सहन करना, bear fruit "परिणाम का फलित होना", bear off-spring, बच्चा उत्पन्न करना"। इनमें bear क्रिया को एक रूप अथवा दो या दो से अधिक समरूपों का समुच्चय माना जा सकता है। इसी प्रकार charge the cannon with grapeshot, charge the man with larceny, charge the gloves to me, charge him a stiff price. में charge क्रिया अनेक प्रकार से विवेचित की जा सकती है। The infantry will charge the fort में पृथक् रूप प्रतीत होता है। इसी प्रकार, गुण sloth "आलस्य" और पशु sloth "दक्षिणी अमेरिका का एक स्तनपायी शाखालम्बी आलसी पशु" कुछ वक्ताओं की दृष्टि में एक अर्थ वाले हैं और कुछ की दृष्टि में समरूप युग्म। निस्सन्देह इस सबसे पता चलता है कि हमारी आधारभूत उपकल्पना कुछ सीमाओं में ही सत्य है, यद्यपि इसकी सामान्य सत्यता न केवल भाषाई अध्ययन में अपितु सभी भाषा के वास्तविक प्रयोक्ताओं द्वारा पूर्वधारणा के रूप में स्वीकृत की गई है।

9.6 यद्यपि भाषाशास्त्री अर्थों की परिभाषा नहीं कर सकता है तो भी उसे अन्यविज्ञानों के अध्येताओं से अथवा स्वयं सामान्यज्ञान से परिभाषा स्थिर करने में सहायता लेनी चाहिये; फिर भी अधिकांश स्थलों पर कुछ रूपों के लिए परिभाषाएं प्राप्त करके आगे अन्यरूपों के अर्थों की परिभाषा, इन पूर्वप्राप्त परिभाषाओं के आधार पर कर सकता है। उदाहरणार्थ गणितज्ञ, जोकि भाषाशास्त्री के समान इसी कठिनाई में पड़ा है, "एक" और "जोड़ना" जैसे बहुप्रचलित पदों की परिभाषा नहीं दे पाता है, किन्तु यदि उसे इन दोनों की परिभाषा दे दी जाती है तो वह "दो" (एक में एक जोड़कर) अथवा "तीन" ("दो" में 'एक' जोड़कर) आदि अनन्त सीमा तक परिभाषाएं दे सकता है। इस प्रकार जो स्थिति हम स्पष्टतया गणितीय भाषा में पाते हैं जहाँ अभिधान बहुत ही सूक्ष्मतया यथार्थ होते हैं, वही अनेक साधारण भाषिकरूपों में मिलती है। यदि अंग्रेजी के अतीतकाल और शब्द go के अर्थ परिभाषित कर दिये जाएँ तो भाषाशास्त्री went की परिभाषा go का अतीत-काल रूप दे सकता है। यदि भाषाशास्त्री को पुंलिंगत्व : स्त्रीलिंगत्व (male:

female) के अन्तर की परिभाषा बनाकर दे दी जाती है तो वह हमें स्पष्टतया बता देगा कि यह अन्तर he: she; lion : lioness; gander : goose; ram: ewe में है। भाषाशास्त्री को यह संशयहीनता अनेक स्थलों पर मिलती है जहाँ भाषा एक बड़ी संख्या में अपने रूपों को कुछ अभिज्ञेय ध्वन्यात्म अथवा व्याकरणिक अभिलक्षणों के आधार पर वर्गीकृत करती है। ये वर्ग रूपवर्ग (form-class) कहे जाते हैं और प्रत्येक रूपवर्ग के प्रत्येकरूप में एक ऐसा तत्व है जो उस रूपवर्ग के सभी रूपों में एकसम है, और यह तत्व वर्ग-अर्थ (class meaning) कहलाता है। इस प्रकार सभी अंग्रेजी पदार्थवाची एक रूपवर्ग बनाते हैं और प्रत्येक अंग्रेजी पदार्थवाची का तदनुसार एक अर्थ है जो यदि एक बार हमारे लिए परिभाषित हो जाए (जैसे कि "पदार्थ") तो उस अर्थ (पदार्थत्व) को हम प्रत्येक पदार्थवाची पर लगा सकते हैं। अंग्रेजी पदार्थवाची आगे चलकर दो उपवर्ग बनाते हैं— एकवचन उपवर्ग और बहुवचन उपवर्ग। यदि इन दो उपवर्गों का अर्थ परिभाषित कर दिया जाए तो हम प्रत्येक पदार्थवाची का इनमें से एक अर्थ दे सकते हैं।

प्रत्येक भाषा में हमें कुछ रूप मिलते हैं, जिन्हें 'स्थानापन्न' (Substitute) कहते हैं। इनके अर्थ मुख्यतया अथवा पूर्णतया वर्ग-अर्थों से बने होते हैं। अंग्रेजी में सर्वनाम स्थानापन्नों का सबसे बड़ा समूह है। सर्वनाम हमारे सम्मुख अत्यन्त आश्चर्यजनक अर्थों के संयोजन को उपस्थित करता है। प्रमुख अभिलक्षण वर्ग-अर्थ हैं, इस प्रकार somebody, someone के पदार्थवाची, एकवचन, पुरुष-वाचक के वर्ग-अर्थ हैं। he के पदार्थवाची, एकवचन, पुरुषवाचक, पुंलिंगों के वर्ग-अर्थ हैं। it के पदार्थवाची, एकवचन, पुरुषनिरपेक्षों के वर्ग-अर्थ हैं, they के पदार्थवाची और बहुवचनों के वर्ग-अर्थ हैं। दूसरे, सर्वनाम में अर्थ का वह तत्त्व भी हो सकता है जो सर्वनाम से भाषा का विशिष्ट पदार्थवाची रूप प्रदर्शित करवाता है। इस प्रकार सर्वनाम some और none यह बताते हैं कि विशिष्ट पदार्थवाची का उल्लेख अभी हाल में हुआ (Here are apples : take some)। इसके व्यतिरेक में something, somebody, someone, nothing, nobody, none जाति के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताते हैं। तीसरे, कुछ सर्वनामों में अर्थ का ऐसा तत्त्व होता है जो हमें बताता है कि जाति में कौन-सी विशिष्ट वस्तु का उल्लेख हो रहा है। इस प्रकार he, she, it, they में यह निहित है कि न केवल जाति (जैसे, policeman) का उल्लेख हो चुका है अपितु इस जाति की विशिष्ट वस्तु (जैसे, officer

smith अथवा the one at the corner) का भी अभिज्ञान हो चुका है। एक बार परिभाषित होने पर अर्थ के अभिलक्षण हमारी भाषा के विभिन्न अन्य रूपों में मिलते हैं। यह स्पष्टतः बिना सम्मिश्रण के मिलते हैं। छोटे-से अव्यय the का अर्थ यह है कि परवर्ती पदार्थवाची जाति का एक अनभिज्ञात व्यक्ति है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि एक बार परिभाषित होने पर कुछ अर्थ रूपों की पूरी श्रेणियों में आवर्ती के रूप में अभिज्ञात होते हैं। विशेषतया सबसे बाद में उल्लिखित प्रतिरूप को, जो चयन, अन्तर्विधायन, बहिर्विधायन अथवा संख्यान द्वारा एक जाति के एकाकी पदार्थों को अभिज्ञान करता है, विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अत्यधिक एकरूप अनुक्रिया मिलती है और उसकी आवृत्ति विभिन्न भाषाओं में अपेक्षाकृत एकरूप से है। तदनुसार ये अर्थ के प्रतिरूप एक विशिष्टतया यथार्थ भाषिक रूप को उत्पन्न करते हैं जिसे हम गणित कहते हैं।

9.7 संचार के एक हीन-प्रतिरूप के समान प्रयुक्त होकर मौखिक अंग-विक्षेप न केवल भाषा के बाहर आते हैं, जैसे, अस्फुट उद्‌गार-ध्वनि में, अपितु भाषिक रूपों के संयोजनों में भी आते हैं जहाँ ये भाषणध्वनियों के अपरिच्छेदक अभिलक्षणों का व्यवस्थापन करती हैं, जैसे "घोष का सुरत्व"। वस्तुतः कुछ परम्परागत भाषिक रूप सीमावर्ती है। इस प्रकार हम देख आए हैं कि अंग्रेजी में उद्‌गारात्मक *pst* [pst] और sh [ʃ] जो लोगों को चुप कराने में प्रयुक्त होता है, प्रसामान्य स्वनात्म-व्यवस्था को भंग करता है क्योंकि इसमें अपेक्षाकृत अ-श्रव्य स्वनिमों [s, ʃ] का आक्षरिक के रूप में प्रयोग हुआ है। कभी-कभी कुछ अन्य शब्दों में इससे कुछ कम मात्रा में स्वनात्म-व्यवस्था का भंग मिलता है, ये शब्द निर्देश करने में प्रयुक्त होते हैं और इनका अर्थ मानों निर्देश करना है। अंग्रेजी में आद्य-स्वनिम ð केवल निर्देशक अथवा उसके समान अर्थ वाले शब्दों में प्रयुक्त होता है, जैसे, this, that, the, there, though में। रूसी में स्वनिम [e] आदि-स्थिति में केवल ['eto] "यह" जैसे निर्देशक शब्दों में आता है।

अस्वानिमीय अंगविक्षेप सम अभिलक्षण पर्याप्त स्थिर हो जाते हैं। प्लेन्स क्री में शब्द [e:] "हाँ" साधारणतया स्वर में सन्ध्यक्षरी विसर्पण और अन्तिम श्वासद्वारीय स्पर्श के साथ बोला जाता है, जैसे [ᵋe:?] यद्यपि ये दोनों अभिलक्षण उस भाषा में स्वनिमीय नहीं है। अंग्रेजी की अप-भाषाओं (slangs) में कुछ विचित्र सुरयोजनाएं कभी-कभी विशेषमानों के लिए स्थिर हो जाती हैं,

पिछले वर्षों में yeah ? और Is that so ? प्रश्नसुर के विचित्र आपरिवर्तन के साथ आने पर हासोत्पादक ग्राम्यत्व के रूप में प्रयुक्त होते थे और ये अविश्वाससूचक थे।

Is that so का एक रूप Is zat so ? भी है। असामान्य भाषिक अभिलक्षणों के एक अन्य प्रावस्था हासोत्पादक अशुद्धोच्चारण (facetious mispronunciation) का यह उदाहरण है। Please excuse me यह पुराने मज़ाक का एक उदाहरण है। इन विकृतियों के मूल्य के आधार में सादृश्य है। यह सादृश्य किसी अन्य भाषिक रूप (जैसे हमारे उदाहरण में शब्द ox) से, अथवा विदेशियों, अमानक वक्ताओं तथा बच्चों के भाषण रूपों से है, जैसे (न्यू यार्क सिटी की अमानक बोली के अनुकरण पर) bird जैसे शब्दों में (r) के स्थान पर [ɔj] का हासोत्पादक प्रयोग, अथवा शिशुवार्तालाप (Atta boy ! Atta dirl !) का प्रयोग।

कुछ व्यंजकों के अस्पष्टोच्चारित और ह्रस्वीकृत उपरूप होते हैं जिनमें स्वनिमीय-व्यवस्था नहीं मिलती है। ये सामाजिक व्यवहार की सामान्य उक्तियाँ हैं, जैसे अभिनन्दन अथवा सम्बोधन के शब्द। इस प्रकार How do you do सभी रीतियों से ऐसे-ऐसे रूपों में ह्रस्वीकृत हो गया है कि उन्हें अंग्रेजी स्वनिमों से अंकित करना भी कठिन हो गया है। ये कुछ-कुछ [dʒ'duw] अथवा d'duw इस प्रकार प्रतिलेखित किया जा सकता है। How are you ? कुछ-कुछ hwaj, haj बन गया है और yes'm में madam केवल [m] रह गया है। ये उपरूप केवल इन विशिष्ट उक्तियों में ही मिलते हैं, How do you do it ? ['haw dʒu 'duw it में कभी भी ह्रस्वीकृत रूप प्रयुक्त नहीं हो सकता है। ये ह्रस्वीकृत रूप अनेक भाषाओं में मिलते हैं। इनका प्रसामान्य भाषण से सम्बन्ध अस्पष्ट है किन्तु स्पष्टतया ये एक उप-भाषिक (अधोभाषिक) (sub-linguistic) संचार के एक भेद हैं जिसमें रूपों का साधारण अर्थ काम नहीं आता है।

हम किसी भी ध्वनि का उल्लेख भाषिक ध्वनि के शब्दों में एक मामूली अनुरणन से दे सकते हैं, जैसाकि हम पशुओं की आवाजों के लिए अथवा इंजिन के शोर के लिए करते हैं। इसी प्रकार हम भाषणध्वनियों का भी अनुरणनात्मक उल्लेख कर सकते हैं, जैसे किसी तुतलाने वाले की नकल उतारने में कह सकते हैं "I am tired of his eternal yeth yeth" सर्वसामान्य स्थिति अध्युल्लेख (hypostasis) है जिसमें स्वनात्म प्रसामान्य भाषिक रूप का

उल्लेख होता है, जैसे That is only am if अथवा "There is always a *but* अथवा "शब्द *normalcy*" अथवा "नाम *Smith*"। शब्दांशों का भी पृथक् उल्लेख हो सकता है, जैसा कि इस पुस्तक में हुआ है, प्रत्यय ish अंग्रेजी boyish में मिलता है। अभ्युल्लेख का उद्धरण (quotation) से घनिष्ठ सम्बन्ध है जहाँ भाषण की आवृत्ति होती है।

9.8 पिछले अनुच्छेद में विवेचित रूपों का वैचित्र्य इसमें है कि कोश में दिए अर्थ से ध्वन्यात्मक के साधारण बन्धन का यहाँ विच्छेद है। जहाँ ऐसा विच्छेद नहीं है और प्रसामान्य रूप का कोष में दिए अर्थ के सन्दर्भ में ही विचार करना है, वहाँ बड़ी जटिलता मिलती है। हम पहले ही देख चुके हैं कि अधुनातम ज्ञान अर्थ की सभी उलझनों को सुलझा नहीं सकता है किन्तु भाषिक रूपों के कोषगत अर्थों के दो मुख्य अभिलक्षण हैं जिनपर ऐसी व्याख्या की आवश्यकता है जो हम कर सकें।

बहुत अधिक भाषिक रूप एक से अधिक परिस्थितियों में प्रयुक्त होते हैं। अंग्रेजी में army ("सेना") का भी head होता है, procession "जलूस" house-hold 'गृह", और river "नदी" का भी head होता है, और cabbage "गोभी" का भी head होता है। bottle "बोतल", cannon "तोप" और river "नदी" का भी mouth "मुंह" होता है, needle "सूई" और hook "हुक" की भी eye "आँख" होती है, saw "आरे" के teeth "दाँत" होते हैं, shoe "जूते" अथवा wagon "गाड़ी" की भी tongue "जीभ" होती है, bottle "बोतल" की भी 'गरदन" होती है और woods "जंगल" की भी neck होती है। chair "कुर्सी" की arms "भुजाएं", legs "टाँगें" और back "पीठ" होती है, mountain "पर्वत" के भी foot "पाद" होते हैं और celery "खुरासानी अजवाइन" के भी heart "दिल" होते हैं। एक आदमी fox "लोमड़ी", ass "गदहा" अथवा dirty dog "गन्दा कुत्ता" हो सकता है। एक औरत peach "आड़ू" lemon "नीबू" cat "बिल्ली" अथवा goose "हंसिनी" बन सकती है। लोग बुद्धि की दृष्टि से sharp "तेज" keen "आतुर" अथवा dull "मन्द" अथवा bright "चमकीला" अथवा foggy "कोहरे से आवृत" हो सकते हैं, स्वभाव की दृष्टि से warm "गर्म" और cold "ठण्डे" हो सकते हैं, आचरण की दृष्टि से crooked "टेढ़े" अथवा straight "सीधे" हो सकते हैं। एक व्यक्ति को हम up in the air "हवा में ऊपर" at sea "समुद्र में", off the handle "हैंडिल से हटा हुआ", off his base

"आधारच्युत" और यहां तक कि beside himself "अपने पास" कहते हैं यद्यपि वह अपने स्थान से हिला तक नहीं है। पाठक असीम संख्या में इसी प्रकार के उदाहरण ढूंढ सकते हैं और रूपकों के परिगणन और वर्गीकरण के समान कोई अधिक उबाने वाला कार्य नहीं है।

इन परिवर्त अर्थों के सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात यह है कि हम आश्वस्त रूप से सहमत हैं कि अर्थों में एक अर्थ प्रसामान्य (normal अथवा केन्द्रिक central) है और अन्य अर्थ सीमावर्ती (marginal) रूपकीय (metaphoric) अथवा स्थानान्तरित (transferr.d) हैं। केन्द्रिक अर्थ इस अर्थ में सबसे अधिक अंगीकृत होता है कि हम एक रूप का यही केन्द्रिक अर्थ लेते हैं यदि कुछ व्यावहारिक परिस्थितियाँ हमें बलात् स्थानान्तरित अर्थ की ओर नहीं ले जाती हैं। यदि अंग्रेजी में कोई कहे There goes a fox हम वास्तविक लोमड़ी को देखने की आशा करेंगे और यदि वहाँ किसी लोमड़ी के होने का प्रश्न ही नहीं है तो हम उच्चार को विस्थापित भाषण मान लेते हैं (जैसे, बहाने में अथवा परियों की कथा में)। केवल कुछ परिस्थितियों के अभिलक्षण बलपूर्वक, जैसे वक्ता किसी व्यक्तिविशेष को इंगित करके कह रहा है कि there goes a fox हमें बाध्य करते हैं तब हम रूप के स्थानान्तरित अर्थ को लेते हैं। यदि हम किसी को यह भी कहते सुनते the fox promised to help her तब भी हम प्रायः इसे परियों की कथा में कहा कथन समझते हैं न कि fox का 'एक अत्यधिक चतुर व्यक्ति' यह अर्थ लेते हैं। कभी-कभी वे व्यावहारिक अभिलक्षण जो हमें स्थानान्तरित अर्थ लेने को बाध्य करते हैं, स्वयं भाषण उच्चार में मिल जाते हैं, जैसे, Old Mr. Smith is a fox इस उच्चार में हम स्थानान्तरित अर्थ लेने को बाध्य हैं क्योंकि वास्तविक लोमड़ियों के पूर्व न तो Mr लगाया जाता है और न उनके पारवारिक नाम (जैसे Smith) होते हैं। इसी प्रकार He married a lemon में केवल स्थानान्तरित अर्थ हो सकता है चूँकि हम जानते हैं कि पुरुषों का विवाह फल से नहीं होता है। इसके विपरीत विशेष व्यावहारिक परिस्थितियाँ इसमें परिवर्तन ला सकती हैं। लोग जो अमेरिका की फाक्स जाति के लोगों के पास रहते हैं, बिना किसी बाध्यता के ऊपर दिए उद्धरणों में fox का स्थानान्तरित अर्थ "फाक्स जाति के सदस्य" ले लेते है।

कुछ स्थलों पर स्थानान्तरित अर्थ सहवर्ती रूप द्वारा निर्धारित होता है, यह भी भाषाई निर्धारण है। cat शब्द का सदैव स्थानान्तरित अर्थ

होता है यदि उसके बाद पर-प्रत्यय kin [catkin] (एक प्रकार बिल्ली के आकार की ······) आता है। इसी प्रकार eye के बाद पर-प्रत्यय let लगने पर सदैव स्थानान्तरित अर्थ होता है (eye-let छोटा छेद)। dog, monkey आदि शब्द जब क्रिया व्युत्पादन के चिन्हों के साथ अपने पूर्व to लगाकर आते हैं तो उनका सदैव स्थानान्तरित अर्थ होता है (to dog some one's foot-step; do'nt monkey with that, to beard a lion in his den) ये भाषिक अभिलक्षण शुद्ध नकारात्मक भी हो सकते हैं। बिना कर्म के give out का सदैव स्थानान्तरित अर्थ (अत्यन्त थका हुआ, समाप्त प्राय) होता है (जैसे, him money gave out; our horses gave out)। इन स्थलों पर भाषा की संघटना स्थानान्तरित अर्थ को मान्यता देती है। एक भाषाशास्त्री को भी, जिसने अर्थों को परिभाषित करने का कोई प्रयास नहीं किया है, यह विशिष्टतया बताना होगा कि अकर्मक giveout सकर्मक give out (जैसे, he gave out tickets) से कुछ भिन्न अवश्य है अर्थात् भिन्न रूप हैं।

बहुत-से स्थलों पर हम द्विविधा में होते हैं कि रूप को अनेक विभिन्न अर्थोंवाला एक रूप मानें अथवा समरूपों का एक समुच्चय। उदाहरण के लिए, air के अर्थ हैं, वातावरण, मधुर सुर, व्यवहार (अन्तिम सन्दर्भ में airs का अर्थ होता है "घमण्डी व्यवहार"), key के अर्थ हैं ताली, संगीत में सुरों का समुच्चय, charge के अर्थ हैं---आक्रमण, भार, आरोप, भाड़ा, sloth के अर्थ हैं---एक पशु, आलस्य।

हमारे विचारों में यह भ्रान्ति हो सकती है कि अंग्रेजी में स्थानान्तरित अर्थ स्वाभाविक है और मानव-भाषा में अनिवार्य है। यह भ्रान्ति इससे भी बढ़ती है कि अन्य यूरोपीय भाषाओं में भी ऐसा ही है। यूरोपीय भाषाओं में भी अंग्रेजी के समान ऐसा मिलना केवल सामान्य सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण है। स्थानान्तरित अर्थ सभी भाषाओं में मिलते हैं किन्तु एक भाषा में विद्यमान विशिष्ट स्थानान्तरित अर्थ दूसरे में भी वैसे ही मिलें, इसका कोई आधार नहीं है। अंग्रेजी के समान न तो फ्रेंच में और न जर्मन में सूई की eye अथवा अनाज के ear होते हैं। यूरोपीय भाषाओं में तो पर्वतों के feet "पाद" स्वाभाविक लगते किन्तु हैं मिनॉमनी में और निश्चयत: अन्य अनेक भाषाओं में यह अनर्गल लगेंगे। इसके विपरीत मिनॉमनी में [una: ? nɛw] "वह उसे उस स्थिति में रखता है" का स्थानान्तरित अर्थ है "वह

उससे जुंए निकालता है" । रूसी में]no'ga] "टांग शब्द कुर्सी अथवा मेज की टाँग के लिए व्यवहृत नहीं होता है, यह स्थानान्तरित अर्थ केवल अल्पक-प्रत्यय के साथ ['noʃka] में मिलता है, जिसका अर्थ होता है "छोटी टांग, कुर्सी या मेज की टांग" । तदनुसार जब भाषाशास्त्री अर्थों का विवरण देता है तो विस्थापित भाषण की तो सरलता से उपेक्षा कर सकता है किन्तु स्थानान्तरित अर्थों के सभी स्थलों को पूर्णतया अंकित करने का प्रयास करता है ।

ये सब बातें विच्युत अर्थ के अन्य प्रतिरूप, संकुचित (narrowed) अर्थ पर भी लागू होती हैं । अन्तर केवल इतना है कि हम लोग संकुचित अर्थ को कहीं अधिक सरलता से स्वीकार कर लेते हैं । व्यावहारिक परिस्थिति तुरन्त हमें car को विभिन्न संकुचित अर्थों में लेने का दिशानिर्देश करती है । The dinner is the second car forward ("रेल का डिब्बा"); Does the car stop at this corner ("ट्राम का डिब्बा"); Bring the car close to the church ("मोटरकार") । जब हमें यह आदेश मिलता है कि call a doctor ("डाक्टर को बुलाओ") तो हम दवाईवाले डाक्टर को बुलाते हैं । burner व्युत्पत्ति से वस्तुओं को जलानेवाला व्यक्ति अथवा साधन (यंत्र) है किन्तु प्रायः यह संकुचित अर्थ, "गैस-बर्नर" के अर्थ में प्रयुक्त होता है । bulb का अर्थ माली के लिए दूसरा ("कन्द") और बिजलीवाले के लिए दूसरा ('बल्ब") है । glass का सामान्य अर्थ गिलास या शीशा है, किन्तु glasses का सामान्य अर्थ "ऐनक का शीशा" है । संकुचित अर्थों की परिभाषा कठिन है क्योंकि रूप का प्रत्येक प्रयोग किसी विशिष्ट व्यावहारिक परिस्थिति से प्रेरित होता है और उसमें अर्थ की सभी सम्भावनाएं होना आवश्यक नहीं हैं, इस प्रकार apple कभी हरे सेब के लिए, कभी लाल सेब के लिए, आदि प्रयोगों में आता है ।

स्वयं भाषा, अपने रूपीय लक्षणों द्वारा, कुछ संयोजनों में संकुचित अर्थों को मान्यता देती है । उदाहरणार्थ, *black bird* कोई black bird ("काली चिड़िया") नहीं हैं : इस संयोजन में black का अर्थ बहुत अधिक संकुचित है । इसी प्रकार blueberry, whitefish आदि हैं ।

विस्तृत (widened) अर्थ प्रायः कम मिलते हैं । सामान्यतया cat एक पालतू पशु है किन्तु यदा-कदा इस शब्द को ऐसा प्रयुक्त करते हैं कि इसके अन्तर्गत शेर, चीते भी आ जाते है । किन्तु शब्द dog इस प्रकार अपने अन्तर्गत भेड़ियों और लोमड़ियों को नहीं लाता है । इसके विपरीत hound

शब्द काव्यात्मकरूप में और मज़ाक में किसी भी कुत्ते के लिए प्रयुक्त होता है। प्रायः विस्तृत अर्थ भाषा की संघटना में स्वीकार किया जाता है और तभी प्रयुक्त होता है जब कुछ निश्चितरूप साथ में आते हैं। इस प्रकार meat खाने योग्य माँस (गोश्त) के लिए है किन्तु meat and drink और sweetmeats में यह सामान्य भोज्य पदार्थ के लिए आया है। fowl शब्द खानेयोग्य चिड़िया के लिए है किन्तु fish, flesh or fowl अथवा fowl of the air में यह किसी भी चिड़िया के लिए आता है।

प्रायः अधिकतर भाषाविशेष के वक्ता कुछ ऐसे स्थलों पर केन्द्रिक और सीमावर्ती अर्थों में भेद नहीं करते, जहाँ एक बाहरी वक्ता दो परिस्थिति-जन्य विभिन्न मूल्यों को देख लेता है, इस प्रकार अंग्रेजी में day 24 घण्टों की अवधि के लिए (स्वेडी dygn [dyŋn]) और इसी अवधि के प्रकाशमान भाग के लिए (night के व्यतिरेक में, स्वेडी dag [da:g]) है।

9.9 दूसरी पद्धति जिसमें अर्थ अस्थिरता प्रदर्शित करते हैं परिपूरक मूल्यों की उपस्थिति है। इसे हम लाक्षणिक-अर्थ (लक्षणार्थ) (con-notations) कहते हैं। किसी भी वक्ता के लिए एक रूप का अर्थ उन परिस्थितियों के फल के अतिरिक्त नहीं है जिनमें उसने इस रूप को सुना है। यदि उसने इसको बहुत काफी बार नहीं सुना है अथवा उसने इसे बहुत असामान्य परिस्थितियों में सुना है तो इस रूप का प्रयोग परम्परा से हटा हुआ मिलेगा। ऐसे वैयक्तिक विचलनों को हम अर्थ की विशद परिभाषा से दूर करते हैं, यही कोशों का मुख्य प्रयोग है। वैज्ञानिक पदों में हम अर्थ की लक्षणार्थों से प्रायः बचाए रखते हैं, यद्यपि इसमें पूरी सफलता नहीं मिल पाती है। उदाहरण के लिए संख्या 13 के साथ बहुत लोगों के प्रबल लक्षणार्थ हैं।

सबसे महत्वपूर्ण लक्षणार्थ रूप प्रयोग करनेवाले वक्ता की सामाजिक प्रतिष्ठा से उत्पन्न होते है। कम सम्मान्य (प्रतिष्ठित) वर्ग के वक्ताओं द्वारा प्रयुक्त रूप प्रायः हमें ग्राम्य, रूक्ष और असुन्दर लगता है। I ain't got none, I seen it, I done it–ये सब मानक अंग्रेजी के वक्ताओं को अश्लील (गर्हित) लगते हैं। किन्तु कुछ विशेष गुणक इस हानि की पूर्ति कर देते हैं—अपराधियों और बदमाशों के भाषणरूपों के प्रयोग से मस्त-जीवन की व्यंजना निकलती है और ग्रामीण प्रतिरूप के प्रयोग में हमें घरेलू किन्तु काव्यात्मक दिखाई पड़ते हैं। एक अधिक प्रतिष्ठित वर्ग के वक्ताओं द्वारा

प्रयुक्त रूप हमें अति औपचारिक अथवा अलंकृत अथवा कृत्रिम-सा लगता है। मध्य-पश्चिमी अमेरिकन अंग्रेजी के अधिकतर वक्ता laugh, bath, can't जैसे रूपों में [ɛ] के स्थान पर [a:] के प्रयोग में अथवा tune, sue, stupid जैसे रूपों में [uw] के स्थान पर [juw] के प्रयोग में इस लक्षणार्थ को पाते हैं।

स्थानिक मूल (स्रोत) के लक्षणार्थ इन्हीं के समान हैं। स्काटलैण्ड के अथवा आइरलैण्ड के निवासी के उच्चारण में अपना स्थानिक तत्व है। इसी प्रकार अमेरिका में कुछ वास्तविक और कुछ काल्पनिक अंग्रेजियत (Anglicism) मिलती है, जैसे (baggage के लिए) luggage अथवा सम्बोधन में old chap, old dear का प्रयोग।

उन समुदायों में भी जहां लेखन का प्रयोग नहीं है कुछ रूप (सही अथवा गलत रीति से) आर्ष (archaism) माने गए हैं। जिन समुदायों में लिखित आलेख हैं, ये आलेख आर्ष प्रयोगों के अतिरिक्त स्रोत बन जाते हैं। अंग्रेजी में उदाहरण हैं—प्राचीन मध्यमपुरुष एकवचन रूप (thou hast), —th में अन्य पुरुष रूप (he hath) प्राचीन वर्तमान सम्भावनावाची रूप (if this be treason), सर्वनाम ye और eve, e'en, e'er, morn, anent आदि अनेक शब्द। कभी-कभी पूर्ण प्रचलित मुहावरों में कुछ विशेष सूत्र रूप (aphoristic form) मिलते हैं। इस प्रकार एक पुरानी वाक्य संरचना कुछ लोकोक्तियों में अभी तक चली आ रही है, जैसे First come, first served अथवा old saint, young sinner.

तकनीकी रूपों के लक्षणार्थों का वैशिष्ट्य उन व्यवसायों अथवा उद्योगों की प्रतिष्ठा पर निर्भर है जिनसे वे लिए गए हैं। समुद्री-शब्दों में तत्कालता ईमानदारी और मस्ती की झलक आती है, जैसे abaft, aloft, the cut of his jib, stand by न्यायालय के शब्दों में यथार्थता और किंचित् चालबाजी की झलक मिलती है, जैसे, without let or hindrance in the premises, heirs and assigns अपराधियों के शब्दों में भद्दापन अथवा भोंडापन झलकता है, जैसे a stickup, a shot [of whiskey], get pinched.

पाण्डित्यपूर्ण (learned) रूपों के लक्षणार्थ अस्पष्ट किन्तु बहुलता से प्रयुक्त हैं। प्रायः प्रत्येक बोलचाल के रूप का एक पाण्डित्यपूर्ण लक्षणार्थ से युक्त समानान्तर रूप है:—

प्रसामान्य	पाण्डित्यपूर्ण
He came too soon	He arrived prematurely
It's too bad	It is regrettable
Where're you going ?	What is your des ination ?
now	at present
if he comes	in case (in case that, in the event that, in the contingency that) he comes; should he come,...
So (that) you don't lose it.	in order that you may not lose it; lest you lose it.

जैसा कि इन उदाहरणों से स्पष्ट है लक्षणार्थों के पाण्डित्यपूर्ण प्रगल्भ और आर्ष प्रतिरूप कई रूपों में सम्मिश्रित हो जाते हैं। औपचारिक भाषण में और लेखन में हम परस्परा में कुछ सीमा तक पाण्डित्यपूर्ण रूपों को प्राथमिकता देते हैं किन्तु अत्यधिक पाण्डित्यपूर्ण रूपों का प्रयोक्ता एक आडम्बरपूर्ण वक्ता अथवा थका देने वाला लेखक माना जाता है।

विदेशी (foreign) भाषिक रूप अपनी भाषा के लक्षणार्थ बनाए रखते हैं जोकि हमारे उन विदेशी लोगों के प्रति भावना को प्रदर्शित करते हैं। रूप के विदेशी अभिलक्षण स्वन की अथवा स्वनात्म व्यवस्था की विचित्रता में वर्तमान रहते हैं, जैसे garage, mirage, rouge, a je ne sais quoi; olla podrida, chile con carne; dolce far niente, fortissimo, zeitgeist wanderlust, intelligentsia अन्य उदाहरणों में विदेशी अभिलक्षण संरचना में मिलता है जैसे फ्रेंच प्रतिरूपों में marriage of convenience अथवा that goes without saying यह वैशिष्ट्य विदेशी आभासी (mock-foreign) रूपों में हासोत्पादक रीति से मिलता है जैसे nix come erouse (जर्मनाभासी) ish gabibble ('its none of my concern जूडो-जर्मन समझी जाती है)। स्कूल के लड़के लैटिनाभासी का प्रयोग करते हैं, जैसे अर्थहीन रूप quid sidi quidit अथवा खिचड़ी पद्य (macaronic verse) :

Boyibus Kissibus priti girlorum, girlibus likibus wanti somorum.

कुछ भाषाओं में, और कदाचित् सर्वाधिक उल्लेखनीय रूप में अंग्रेजी में, अर्ध-विदेशी (semi-foreign) अथवा विदेशी-पाण्डित्यपूर्ण (foreign-learned) रूपों का विशाल समूह है। इन रूपों का यह वर्ग प्रतिमान-शैली और व्युत्पादन की दृष्टि से पृथक् है। अंग्रेजी अलंकार-शास्त्र की पुस्तकों में इनमें अन्तर किया गया है––शब्दावली का लैटिन फ्रेंच भाग एंग्लोसैक्सन अथवा देशी (native) रूपों से भिन्न है। किन्तु लक्षणार्थ रूपों के वास्तविक स्रोत पर प्रत्यक्षतः निर्भर नहीं रहता है। उदाहरण के लिए शब्द chair उत्पत्ति में लैटिन-फ्रेंच है किन्तु अंग्रेजी शब्दावली के विदेशी पाण्डित्यपूर्ण अंश का शब्द नहीं है। अंग्रेजी विदेशी-पाण्डित्यपूर्ण रूपों का प्रमुखरूपीय लक्षण कदाचित् कुछ बलाघातयुक्त पर-प्रत्ययों का और पर-प्रत्ययों के संयोजनों का प्रयोग है, जैसे [-iti] (ability); ['ejʃn] (education) दूसरा अभिलक्षण कुछ स्वनात्म विकल्पनों का प्रयोग है, जैसे, receive में [sijv] किन्तु reception में [Sep] और receipt में [sij] अथवा provide में [vajd] किन्तु provident में [vid], visible [viz], किन्तु provision में [viʒ] ये विचित्रताएँ कुछ शब्दों को अथवा शब्दांशों को विदेशी-पाण्डित्यपूर्ण चिन्हित करने में पर्याप्त हैं, विशेषतया कुछ पूर्व प्रत्यय (ab-, ad-, con-, de-, dis-, ex-, in-, per-, pre, pro, re-, trans-); ये पूर्वप्रत्यय स्वयं अंशतः विचित्र स्वनात्म-विकल्पन प्रदर्शित करते हैं जैसे con-tain किन्तु collect, correct, ab-jure किन्तु abstain अर्थ की दृष्टि से अंग्रेजी के वदेशी-पाण्डित्य पूर्ण संयोजनों के मनमौजी और अत्यधिक विशिष्टीकृत अर्थों द्वारा विचित्र है। उदाहरण के लिए यह असंभव-सा लगता है कि conceive, deceive, perceive, receive में [sijv] अथवा attend, contend, distend, pretend में [tend] अथवा adduce, conduce, deduce, induce, produce, reduce में [d(j)uws] जैसे तत्वों का कुछ संगत अर्थ निकल सके। इन रूपों का लक्षणार्थ-वैशिष्ट्य विद्वानों के निर्देशन से उत्पन्न होता है और इन रूपों के प्रयोग करने की क्षमता से वक्ता की शिक्षा का पता लगता है। इनके प्रयोग की भूलें (malapropism असंगत प्रयोग) वक्ता को अर्ध-शिक्षित सिद्ध करती हैं। कम अशिक्षित वक्ता इनमें से अनेक रूपों को समझने में असफल होता है और इस सीमा तक कुछ संचार से बाहर रहता है। वह इसका

बदला अनेक पाण्डित्याभासी (mock-learned) रूपों के प्रयोग से करता है जैसे absquatulate, discombobulate, rambunctious, scrumptious बहुत-सी भाषाओं में इस प्रकार की विदेशी पाण्डित्यपूर्ण परत है: रोमानी भाषाओं में अंग्रेजी जैसे ही लैटिन प्रतिरूप मिलते हैं, रूसी में लैटिन प्रतिरूप के अतिरिक्त प्राचीन बलोरी के प्रतिरूप मिलते हैं, तुर्की में फारसी-अरबी शब्दों और फारसी में अरबी शब्दों का स्तरण मिलता है, और भारतीय भाषाओं में इसी प्रकार संस्कृत रूप प्रयुक्त होते हैं।

विदेशी पाण्डित्यपूर्ण लक्षणार्थ के विरोध में विचित्रोक्तिमूलक लक्षणार्थ हैं जो हासोत्पादक एवं अनियन्त्रित हैं। विचित्रोक्तियों (slangs) के प्रयोक्ता युवक खिलाड़ी, जुआड़ी, आवारा, अपराधी और विनोद एवं अकपट (सरलता) के क्षणों में अन्य व्यक्ति होते हैं। अंग्रेजी में उदाहरण हैं—'आदमी' के लिए guy, gink, gazebo, gazook, bloke, bird, पिस्तौल के लिए rod अथवा gat आदि। कभी-कभी विचित्रोक्ति रूप विदेशी भी हो सकता है जैसे loco "झक्की", sabby "समझना" vamoose "चले जाना" स्पेनी भाषा से आए हैं। इनका मूल्य मुख्यतया हासोत्पादन है, जब कभी विचित्रोक्ति बहुत कालतक प्रचलित बनी रहती है तो वह कुछ नई उक्तियों से विस्थापित होती है।

9.10 लक्षणार्थ के असंख्य और अपरिभाषेय भेद-प्रभेद हैं और समग्ररूप से ये अभिधार्थ से स्पष्टतया प्रभिन्न नहीं किए जा सकते हैं। अन्तिम विश्लेषण में प्रत्येक भाषिक रूप का एक अपना लक्षणार्थ-वैशिष्ट्य है जो पूरे भाषण-समुदाय के लिए है। किन्तु यह स्वयं वक्ता के लिए उस लक्षणार्थ द्वारा किंचित् परिवर्तित अथवा पूर्णतः आपरिवर्तित हो जाता है जोकि वक्ता की दृष्टि में उसके अपने विशिष्ट अनुभवों द्वारा उस रूप से जुड़ गए हैं। फिर भी संक्षेप में लक्षणार्थ के दो और प्रतिरूपों पर विचार कर लेना उचित है जोकि अपेक्षाकृत अधिक स्पष्टता से उभड़े हैं।

बहुत-से भाषण-समुदायों में कुछ अशिष्ट (improper) भाषणरूप केवल नियत परिस्थितियों में ही बोले जाते हैं, इन परिस्थितियों के बाहर जो वक्ता बोलता है तो उसे लज्जित होना पड़ता है अथवा दण्ड मिलता है। निषेध की कठोरता औचित्य (propriety) के हलके नियम से लेकर कठोर प्रतिबन्ध (tabu) तक है। अशिष्ट रूप अधिकांश अर्थ के कुछ निश्चित क्षेत्रों में मिलते हैं, किन्तु अधिकतर साथ-साथ ऐसे रूप होते हैं जिनके वही अभिधार्थ

हैं यद्यपि उनमें अशिष्ट लक्षणार्थ नहीं है, जैसे अशिष्ट रूप whore के साथ prostitute.

कुछ अशिष्ट रूप ऐसे पदार्थ अथवा व्यक्तियों को द्योतित करते हैं जिनका सामान्यतया नामकरण नहीं होता है या पूर्णतया नामकरण नहीं होता है। अंग्रेजी में God, devil, heaven, hell, Christ, Jesus, damn जैसे धर्म के अनेक शब्द हैं जो गम्भीर भाषण में शिष्ट हैं। नियम के उल्लंघन पर प्रयोक्ता भर्त्सना अथवा परिहार का पात्र बनता है। इसके विपरीत कुछ वर्गों में अथवा कुछ अवस्थाओं में उल्लंघन बल अथवा स्वातन्त्र्य का सूचक है। अनेक समुदायों में व्यक्तियों के नाम कुछ परिस्थितियों में अथवा कुछ लोगों के लिए प्रतिबन्धित हैं। उदाहरण के लिए पुरुष क्री वक्ता अपनी बहिनों के अथवा कुछ स्त्री सम्बन्धियों के नाम नहीं लेता है, वह इस परिहार की व्याख्या इस प्रकार करता है कि वह उनका अत्यन्त आदर करता है अतएव नाम नहीं लेता है।

अशिष्टता की एक अन्य रीति तथाकथित अश्लील (obscene) रूपों का प्रतिबन्ध है। अंग्रेजी में कुछ ऐसे भाषणरूपों का कठोर प्रतिबन्ध है जिनका मलमूत्र, उत्सर्ग-संस्थान अथवा जनन-संस्थान से सम्बन्ध है।

तीसरी भाँति का अशिष्ट लक्षणार्थ अंग्रेजी में कम प्रचलित है। इसमें अमंगलसूचक (ominous) भाषणरूप आते हैं जो कुछ कष्टदायक अथवा भयावह वस्तु का संकेत करते हैं। लोग die अथवा death का परिहार करते हैं (और कहते हैं if anything should happen to me "यदि मुझे कुछ हो जाए)। इसी प्रकार कुछ बीमारियों के नाम नहीं लिए जाते हैं। कुछ लोग बाएँ हाथ का अथवा गर्जन-झंझावात का उल्लेख नहीं करते हैं।

कुछ समुदायों में शिकार किए जाने वाले पशुओं का नाम शिकार करते समय अथवा अधिक सामान्यतया नहीं लेते हैं। विशेष अवस्थाओं में (जैसे युद्ध मार्ग पर) अनेक भाषण रूपों का परिहार किया जाता है अथवा विपरीत (inverted) भाषण होता है, अर्थात् तात्पर्य का उल्टा कहा जाता है।

9.11 लक्षणार्थ का दूसरा अधिक विशिष्टीकृत प्रतिरूप, जिसका यहां उल्लेख आवश्यक है, भावमयता (intensity) है। सर्वाधिक प्रचलित भावमय रूप हैं उद्गारात्मक रूप (exclamation) इनके लिए अंग्रेजी में न केवल विशिष्ट गौण स्वनिम [!] है, अपितु कुछ विशिष्ट भाषण रूप विस्मयादिबोधक (interjection) जैसे, oh ! ah ! ouch ! प्रयुक्त होते हैं। ये

सब रूप प्रखर उद्दीपन के व्यंजक हैं किन्तु उस साधारण कथन से लक्षणार्थ में भिन्न हैं जिसमें वक्ता केवल यह प्रकट करता है कि उसे प्रखर उद्दीपन हो रहा है ।

कुछ भावगरूपों में सजीवता (animated) की झलक आती है। यह उद्गारात्मक रूपों से मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए कुछ अव्ययों के स्थापन को लें Away ran John : Away he ran. सम्बद्ध वर्णना में इसी प्रकार की पद्धति इससे कम प्रखर स्थानविनिमय की है : He came yesterday की अपेक्षा yesterday he came (and said...) अधिक सजीव है। अंग्रेजी में अतीत घटनाओं के वर्णन में ऐतिहासिक वर्तमान (historical present) का प्रयोग या तो प्रगल्भ है, जैसे नाटक अथवा कहानी की संक्षिप्ति में, या किंचित् ग्राम्य है, जैसे साधारण भाषण में : Then he comes back and says to me....

भावमयरूपों में एक अन्य प्रतिरूप में अंग्रेजी विशेषरूप से समृद्ध है। ये हैं प्रतीकात्मक (symbolic) रूप । प्रतीकात्मकरूपों में साधारण भाषणरूपों की तुलना में कहीं अधिक शीघ्रता से अर्थबोधन की क्षमता होती है । इसकी व्याख्या करना व्याकरणिक संघटना का काम है और इस पर बाद में विचार करेंगे । वक्ता को ऐसा अवश्य लगता है कि मानों ध्वनियाँ अर्थों के विशेषतया अनुकूल रखी गई हैं । उदाहरण हैं—flip, flap, flop, flitter, flimmer, flicker, flutter, flash, flush, flare, glare, glitter, glow, gloat, glimmer, bang, bump, lump, thump, thwack, whack, sniff, sniffle, snuff, sizzle, where उन भाषाओं में जिनमें प्रतीकात्मक रूप हैं ध्वनिप्रतिरूपों और तत्सम्बद्ध अर्थों के बीच कुछ मेल मिलता है, किन्तु उससे अधिक विरोध मिलता है। प्रतीकात्मक रूप का एक विशिष्ट प्रतिरूप, जोकि पर्याप्त विस्तार से मिलता है, रूप की कुछ ध्वन्यात्म परिवर्तनों के साथ आवृत्ति है, जैसे Snip-snap, zig-zag riff.raff, jim-jams, fiddle-faddle, teeny-tiny ship-shape, hodge-podge, hugger-mugger, honky-tonk में ।

इन्हें से मिलते-जुलते अनुकरणात्मक (imitative) अथवा अनुरणनात्मक (onomatopoetic) भावमय रूप हैं जो ध्वनि का अथवा ध्वनिकारी वस्तु के द्योतक हैं । अनुकारी भाषणरूप इस ध्वनि से मिलते-जुलते हैं : cock-a-doodle-doo, meeow, moo, baa बहुत से पक्षियों का नाम इसी प्रकार का है : cuckoo, bob-white, whip-poor-will द्वित्व रूप भी प्रचलित हैं :

bow-wow, ding-dong, pee wee, choo-choo, chug-chug ये रूप भिन्न-भिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न होते हैं। फ्रेंच में कुत्ता gnaf-gnaf [ŋaf-ŋaf] करता है, जर्मन में घंटियां bim-bam करती हैं।

अभी उद्धृतरूपों में कुछ में बालकीय लक्षणार्थ हैं, ये नर्सरीरूप nursery-form) है। सर्वाधिक परिचित रूप है papa, mame। अंग्रेजी में प्रायः कोई भी द्वित्व अक्षर प्रायः किसी-न-किसी अर्थ में नर्सरीशब्द के रूप में आता है। प्रत्येक परिवार में इस प्रतिरूप के शब्द बन जाते जो उसी परिवार में चलते हैं। जैसे ['dijdi 'dajdaj 'dajdi mijmi 'wa : wa]। इस प्रथा से ऐसे भाषण रूप सम्मुख आते हैं जिन्हें बच्चा अपेक्षाकृत सरलता से फिर बोल सकता है, और इससे बच्चों के उच्चारों को परम्परागत संकेतों में बदलने में बड़ों को सहायता मिलती है।

पालतूनाम (pet-name) वाले लक्षणार्थ अधिकतर नर्सरी लक्षणार्थी से सम्मिश्रित हो जाते हैं। अंग्रेजी में Lulu जैसे अपेक्षाकृत कम पालतू नाम द्वित्व नर्सरी रूपों से बने हैं, किन्तु फ्रेंच में यह प्रतिरूप सामान्य है, जैसे Mimi, Nana। अंग्रेजी पालतू नाम कम एकरूप है, Tom, Will, Ed, Pat, Dan, Mike संघटना की दृष्टि से पूरे नामों के संक्षेपमात्र हैं। किन्तु (Robert के लिए) Bob, (Edward के लिए) Ned, (विलियम के लिए) (बिल), Richard के लिए) Dick, (John के लिए) Jack, के साथ ऐसा नहीं है। कुछ के साथ अल्पार्थी परप्रत्यय [i] लगा है, जैसे Peggy, Margaret के लिए Maggie, Frances के लिए Fanny, और Johnny, Willie, Billy.

अनर्गलरूपों (nonsense form) के लक्षणार्थ में भी कुछ भावमयता मिलती है। इनमें से कुछके, परम्परागत होते हुए भी, कोई भी अभिधार्थ नहीं है, जैसे tra-la-la, hey-diddle-diddle, tarara-boom-de-ay; अन्य रूपों में स्फुटतया धूमिल अभिधार्थ मिलता है, जैसे fol-de-rol, gadget conniption fits कोई भी वक्ता नए अनर्गलरूपों को गढ़ने में स्वतन्त्र है। वस्तुतः कोई भी नवीन रूप जो वह गढ़ता है तब तक एक अनगल रूप है जब तक कि वह अपने सह-वक्ताओं से उसे किसी अर्थ के लिए संकेत में स्वीकृत कराने में सफल नहीं हो जाता, यद्यपि ऐसा करना प्रायः निराशाजनक कार्य होता है।

अध्याय 10

व्याकरणिक रूप

10.1. अब तक के विवेचन से यह स्पष्ट हुआ है कि प्रत्येक भाषा में अनेक संकेत (signal) होते हैं जिन्हें भाषिकरूप (linguistic form) कहते हैं। प्रत्येक भाषिकरूप सांकेतिक-इकाई स्वनिम (फोनीम) का एक स्थिर (अचर) संयोजन है। प्रत्येक भाषा में स्वनिमों की संख्या और स्वनिमों के वस्तुतः प्रयुक्त संयोजन पूर्णतया सीमित हैं। एक भाषिकरूप उच्चारित करके एक वक्ता अपने श्रोताओं को किसी परिस्थिति विशेष के प्रति अनुक्रिया प्रकट करके के लिए प्रेरित करता है। यह परिस्थिति और उसके प्रति श्रोता की अनुक्रिया उस भाषिकरूप का भाषिक अर्थ (linguistic meaning) है। यह हमारी पूर्वकल्पना है कि प्रत्येक भाषिकरूप का एक अचर और सुनिश्चित अर्थ है जो किसी भाषा के अन्य भाषिकरूपों के अर्थों से भिन्न है। इस प्रकार किसी एक भाषिकरूप के जैसे "मैं भूखा हूँ" अनेक उच्चारों को सुनकर हम यह पूर्वकल्पना करते हैं कि (1) (उच्चारों में आजानेवाले) ध्वनियों के अन्तर व्यर्थ (irrelevant) (अध्वन्यात्म) (ध्वन्यात्मेतर unphonetic) हैं, (2) अनेक वक्ताओं की परिस्थितियों में कुछ समान अभिलक्षण हैं, और इन परिस्थितियों की विभिन्नता भी व्यर्थ (अर्थात्मेतर (unsemantic) है, और (3) यह भाषिक-अर्थ उसी भाषा में प्राप्त अन्य सभी भाषिकरूपों के अर्थ से भिन्न है। हम यह देख चुके हैं कि यह पूर्वकल्पना सत्यापित नहीं हो सकती है क्योंकि वक्ता की परिस्थिति और श्रोताओं की अनुक्रिया के अन्तर्गत संसार की सभी वस्तुएँ आ सकती हैं और, विशेषतः, उनके तन्त्रिका-तन्त्र (nervous system) की तत्कालीन दशाओं पर अधिकांश निर्भर है। इसके अतिरिक्त, भाषा के ऐतिहासिक विकास के अध्ययन में हमें उन तथ्यों से सामना करना पड़ता है जिन पर हमारी पूर्वकल्पना ठीक नहीं बैठती है। फिर भी, स्थूलरूप में, हमारी पूर्वकल्पना इस कारण और औचित्यपूर्ण है कि वक्ता लोग भाषिक-संकेतों (linguistic signal) के सहारे बड़े सूक्ष्म तरीके से परस्पर सहयोग करते हैं। भाषा का विवरण करते समय हमारा मुख्य सम्बन्ध किसी समुदाय के किसी एक समय में स्थित इस सहयोग की कार्यविधि से है, न कि कार्यविधि के कभी-कभी विफल हो जाने से

अथवा समय प्रवाह से उत्पन्न उनके अन्तरों से। तदनुसार भाषाशास्त्र की विवरणात्मक प्रावस्था में, इस पूर्वकल्पना पर कि इन उच्चाररूपों (speech-form) का अचर और सुनिश्चित अर्थ है, उच्चाररूपों का कुछ-कुछ सुदृढ़ विश्लेषण करना भाषा-शास्त्र की विवरणात्मक प्रावस्था के अन्तर्गत आता है (§ 9.5)।

फिर भी हमारी आधारभूत पूर्वकल्पना को, बिल्कुल प्रारम्भ में ही, एक अन्य प्रकार से आपरिवर्तित करना पड़ेगा। जब हम किसी भाषा के पर्याप्त संख्या में उच्चाररूप अंकित कर लेते हैं, तो हमें एक ऐसा अभिलक्षण मिलता है जिस पर हमने अभी तक विवेचन नहीं किया था—वह है भाषिकरूपों का आंशिक सादृश्य (partial resemblance)। मान लीजिए कि हम एक वक्ता को यह बोलते सुनते हैं

"राम दौड़ा",

और कुछ देर बाद उसे या अन्य व्यक्ति को यह कहते सुनते हैं

"राम गिरा"।

हमें तुरन्त इस बात का अभिज्ञान हो जाता है कि ये दो रूप "राम दौड़ा" और "राम गिरा" ध्वन्यात्म दृष्टि से आंशिक समान हैं क्योंकि दोनों में एक तत्त्व राम [राम्] वर्तमान है और हमें अपने व्यावहारिक ज्ञान से पता है कि अर्थों के अनुसार ध्वन्यात्म-सादृश्य मिलता है, अर्थात् जब-जब किसी रूप में ध्वन्यात्म तत्त्व [राम्] मिलता है, तब-तब अर्थ में उस समुदाय का कोई आदमी या लड़का अवश्य वर्तमान होता है। वास्तव में, सौभाग्य से, हम किसी को एकाकीरूप में प्रयुक्त

"राम"।

यह रूप पुकारते भी पा सकते हैं।

ऐसे अनेक स्थलों को देखने के बाद हमें अपनी भाषाशास्त्रविषयक आधारभूत पूर्वकल्पना को इस प्रकार आपरिवर्तित करना होगा। एक भाषिक समुदाय में ध्वनि और अर्थ की दृष्टि से कुछ उच्चारों में पूर्ण सादृश्य अथवा आंशिक सादृश्य मिलता है।

आंशिक सादृश्य वाले उच्चारों के समान अंश (अपने उदाहरण में "राम्") का एक ध्वन्यात्मरूप होता है जिसका एक अचर अर्थ होता है। अतएव परिभाषा के अनुसार यह एक भाषिकरूप है। आंशिक सादृश्य वाले उच्चारों के वे अंश जो समान नहीं हैं (हमारे उदाहरण में "दौड़ा" "गिरा") स्वयं इसी प्रकार भाषिकरूप निकल सकते हैं। "राम दौड़ा" यह सुनकर हम बाद में "श्याम

दौड़ा" यह सुन सकते हैं और कदाचित् (उदाहरणार्थ, किसी प्रश्न के उत्तर के रूप में) एकाकी "दौड़ा" भी हमारे सुनने में आ सकता है। ऐसी ही दशा "गिरा" की भी हो सकती है, हमें "मोहन गिरा" या केवल "गिरा" सुनने में मिल सकता है। (इस प्रकार "दौड़ा" और "गिरा" भी भाषिकरूप है।

कभी-कभी एकाकी रूप ढूँढने में प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। "राम" "श्याम" "मोहन", ये रूप मिलने के बाद हमें रामू, श्यामू, मोहनू सुनने को मिलता है। हम यह आशा लगाते हैं कि कभी हमें अकेला "ऊ" (उ) सुनने को मिल जाएगा जिसका कदाचित् "छोटा" "दुलारा" यह अर्थ होगा, किन्तु हमें निराश होना पड़ता है। इसी प्रकार "खेल", "नाच" से परिचित होने के बाद हम "खेलना" "नाचना" रूप सुनते हैं और यदि हम यह आशा लगाते हैं कि हमें इकाई "ना" (ना) सुनने को मिलेगा जिससे हमें इस अक्षर का कुछ अस्पष्ट ही सही, अर्थ तो मिलेगा, तो हमें निराश होना पड़ता है। इस तथ्य के होते हुए भी कि कुछ उच्चार एकाकी नहीं मिलते हैं, केवल अपने से बृहत्तर रूपों के अंश रूप में ही मिलते हैं, हम इन्हें भाषिकरूप मान लेते हैं क्योंकि इनका एक ध्वन्यात्मरूप है जैसे [ऊ] [ना] और उनका एक अचर अर्थ है। कभी एकाकी न बोले जानेवाला भाषिकरूप आबद्धरूप (bound form) कहलाता है। अन्य रूप (जैसे हमारे उदाहरणों में 'राम दौड़ा'' "दौड़ा", 'दौड़ना") स्वतन्त्र रूप (Free form) कहलाते हैं।

कुछ स्थलों पर किसी अंश को अन्यत्र किसी रूप के अंशरूप में भी ढूँढ नहीं पाते हैं। उदाहरण के लिए cranberry हिन्दी में जैसे चौदह को सुनने के बाद हम तुरन्त अंश berry (चौ) को अन्य रूपों में आया हुआ पहिचान लेते हैं। जैसे black-berry (चौतीस, चौबीस) और उसे एकाकी सुन भी सकते हैं, किन्तु दूसरे अंश cran (-दह) के लिए ऐसी प्रतीक्षा करना व्यर्थ होगी क्योंकि चाहे जितना हम सुनें हमें यह अंश कभी cranberry (चौदह) के अलावा नहीं मिलेगा और न हम वक्ताओं से ऐसा रूप निकाल पाएंगे जहाँ अन्यत्र यह अंश cran (-दह) मिला हो। व्यावहारिक रूप में, क्षेत्रों में, भाषाओं के पर्यवेक्षण से हम तुरन्त सीख जाते है कि ऐसे अंशों का निष्कर्षण कोई बुद्धिमानी का कार्य नहीं है। ऐसे प्रश्न सूचक को भ्रान्ति में डाल देते हैं और वे कुछ उलटा-पुलटा अर्थ बता बैठते हैं। अगर हम इस दुविधापूर्ण स्थित से बचना चाहते हैं तो हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि तत्त्व cran केवल इसी संयोजन cranberry में आता है। फिर भी, चूंकि इसका एक अचर ध्वन्यात्म-

रूप है और (इस अर्थ में कि cranberry एक विशेष प्रकार की berry है) एक अचर अर्थ है, हम cran को एक भाषिकरूप मानते हैं अनुभव प्रकट करता है कि इस उदाहरण को सामान्यीकृत करना उचित ही है, और अनन्य तत्व (unique element) जो केवल एक ही संयोजन में मिलते हैं, भाषिक-रूप होते हैं ।

कभी-कभी हम यह निश्चित नहीं कर पाते हैं कि ध्वन्यात्मरूप में सदृश रूप अर्थ की दृष्टि से भी सदृश हैं या नहीं। strawberry में विद्यमान straw, strawflower में विद्यमान straw से और एकाकी straw से ध्वन्यात्मरूपेण सदृश है, किन्तु हम यह नहीं कह सकते कि तीनों जगह एक ही अर्थ है। यदि हम वक्ताओं से भी पूछें तो वे भी कभी सदृश, कभी असदृश कहते हैं, कोई निश्चित बात नहीं कह पाते हैं। यह कठिनाई अर्थविज्ञान की सार्वभौमिक कठिनाई है, व्यावहारिक लोक में सुस्पष्ट प्रभेद मिलना कठिन होता है।

10.2 तो हम यह देखते हैं कि कुछ भाषिकरूपों में अन्य रूपों से अंशतः ध्वन्यात्म—अर्थात्मसादृश्य है। उदाहरणार्थ : राम दौड़ा, राम गिरा, श्याम दौड़ा, श्याम गिरा; रामू, श्यामू; दौड़ना, नाचना; blackberry, cranberry; strawberry straw-flower। एक भाषिकरूप जिसमें अन्य भाषिकरूपों से अंशतः ध्वन्यात्म-अर्थात्म सादृश्य है एक मिश्ररूप (complex form) कहलाता है।

दो या अधिक मिश्ररूपों का सर्वनिष्ठ अंश एक भाषिकरूप है। यह इन मिश्ररूपों का संरचक (constituent or component) है। संरचक को मिश्ररूप में **संरचित** कहा जाता है। यदि मिश्ररूप में सर्वनिष्ठ रूपों से ऐसा अवशेष बचता है (जैसे cranberry में cran-) जो अन्य मिश्ररूपों में नहीं मिलता है तो वह मिश्ररूप का अनन्य संरचक (unique constituent) कहलाता है। उपरिदत्त उदाहरणों में राम दौड़ा, श्याम गिरा, खेल, नाच, black, berry, straw, flower, cran cranberry का विचित्र संरचक),— ऊ (राम् श्याम् में आबद्ध संरचक),—ना (नाचना खेलना में आबद्ध संरचक), संरचक रूप (constituent form) है। जटिल रूप में प्रत्येक संरचक दूसरे संरचक का सहचारी माना जाता है।

एक भाषिकरूप जिसमें किसी अन्य रूप से ध्वन्यात्म-अर्थात्म सादृश्य नहीं है एक सरल रूप (simple) अथवा रूपिम (morpheme) कहलाता है। इस प्रकार, चिड़िया खेत नाच—ऊ— — ना आदि रूपिम हैं। रूपिमों में आंशिक-

ध्वन्यात्म सादृश्य मिल सकता है जैसे "चिड़िया" और "चिड़चिड़ाना" में अथवा रूपता (homonymy) मिल सकती है जैसे "काम, कान, बस, बस" किन्तु यह सादृश्य शुद्धतः ध्वन्यात्म है और अर्थात्मक दृष्टि से भिन्न है।

इन सबसे यह प्रतीत होता है कि जहाँ तक ध्वन्यात्म-परिभाषित संरचकों का सम्बन्ध है प्रत्येक जटिलरूप सम्पूर्णतया रूपिमों से बने होते हैं। परम-संरचकों (ultimate constituent) की संख्या बहुत अधिक हो सकती है। सुन्दर "रामू दौड़ पड़ा" इस रूप में चार सरल रूपिम हैं––राम्, -ऊ, दौड़ पड़् आ। फिर भी मिश्ररूपों की संरचना इतनी सरल नहीं होती है जैसी इसमें है। मिश्ररूपों को उनके परम-संरचकों को तोड़ देने से ही किसी भाषा के रूपों को नहीं समझ सकते हैं। कोई भी हिन्दी वक्ता जो इस विषय पर विचार कर रहा है निश्चयतः बता देगा कि "सुन्दर रामू दौड़ पड़ा" के संलग्न संरचक (immediate constituent) दो रूप "सुन्दर रामू" और "दौड़ पड़ा" है। इनमें से प्रत्येक मिश्ररूप है। "सुन्दर रामू" के संलग्न संरचक "सुन्दर" और "रामू" हैं। "रामू" स्वयं मिश्ररूप है जिसके संलग्न संरचक "राम्" "ऊ" है। "दौड़ पड़ा" के भी इसी प्रकार संलग्न संरचक 'दौड़' 'पड़ा' है और 'पड़ा' स्वयं मिश्ररूप है जिसका संलग्न संरचक 'पड्'+'आ' है। केवल इसी भांति की उचित विश्लेषण से (अर्थात् जिस अर्थ पर भी विचार करनेवाला वर्णन है) परम-संरचक रूपिमों तक पहुँचा जा सकता है। ऐसा क्यों है इस पर बाद में विचार करेंगे।

10.3 एक रूपिम को ध्वन्यात्म दृष्टि से वर्णित कर सकते हैं क्योंकि उसके एक या एकाधिक स्वनिम होते हैं किन्तु इसके अर्थ का विश्लेषण हमारे शास्त्र के बाहर है। उदाहरणार्थ–– हम यह देख सकते हैं कि रूपिम "राम" का अन्य पदिकों "रतन", "राधा", "आम", "आराम", "राम" आदि से ध्वन्यात्म सादृश्य है और इन सादृश्यों के आधार पर उसे विश्लेपित किया जा सकता है और उसे तीन स्वनिम "र आ म्" का माना जा सकता है (§ 5.4) किन्तु इन सादृश्यों का अर्थ-सादृश्यों से सम्बन्ध नहीं है। हम किसी भी स्वनिम को किसी अर्थविशेष के साथ सम्बद्ध नहीं कर सकते हैं और अपने शास्त्र के विषय-क्षेत्र के अन्तर्गत रूपिमों के अर्थों का विश्लेषण नहीं कर सकते हैं। रूपिमों के अर्थ अर्थिम (sememe) हैं। भाषाशास्त्र की यह पूर्वकल्पना है कि प्रत्येक अर्थिम अचर है, अर्थ की सुनिश्चित इकाई है, और भाषा में मिलने वाले अन्य अर्थिमों से (अन्य अर्थों से) भिन्न है। किन्तु इसके आगे वह नहीं जा सकता है।

"भेड़िया", "लोमड़ी", "कुत्ता" इन रूपिमों की संरचना में कोई ऐसा नहीं है जो हमें उनके अर्थ के बीच एकरूपता बता सके, यह समस्या जन्तुशास्त्री की है। जन्तुशास्त्रियों की इन अर्थों की परिभाषा हमें व्यावहारिक सहायता के रूप में स्वागतयोग्य है किन्तु हम अपने शास्त्र के आधार पर इनकी न तो पुष्टि कर सकते हैं और न खण्डन।

संकेकों की एक काम आने वाली पद्धति में, जैसी कि भाषा में केवल एक छोटी संख्या के संकेतकारी इकाइयाँ मिल सकती है। किन्तु संकेतित वस्तुएँ—हमारे लिए व्यावहारिक संसार की सभी वस्तुएँ—असंख्य हैं। तदनुसार, संकेत (भाषिक रूप जिनके लघुतम संकेत रूपिम हैं) संकेतकारी इकाइयों (स्वनिम) के विभिन्न संयोजनों से बने होते है। प्रत्येक संयोजन को याहृच्छिक रूपेण ध्यावहाहिक संसार के किसी विशिष्ट अभिलक्षण (अर्थिम) के साथ जोड़ दिया गया है। संकेतों का विश्लेषण किया जा सकता है किन्तु संकेतित वस्तुओं का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

यह इस सिद्धान्त को बल देता है कि भाषार्थ अध्ययन का प्रारम्भ सदैव ध्वनि से होना चाहिए न कि अर्थ से ध्वन्यात्मरूप—उदाहरणार्थ भाषा का रूपियों का समूह—स्वनियों और स्वनिम पूर्वानुपरकमों से वर्णित किया जा सकता है और इस आधार पर किसी सुविधाकारी क्रम को वर्गीकृत अथवा सूचीबद्ध किया जा सकता है, उदाहरणार्थ—अकारादिक्रम से। अर्थ—हमारे उदाहरण के भाषा के अर्थिम—केवल सर्वज्ञवत् पर्यवेक्षक द्वारा ही विश्लेषित अथवा विशिष्ट पद्धति से सूचीबद्ध किए जा सकते हैं।

10.4 चूंकि प्रत्येक मिश्र रूप सम्पूर्णतया रूपिमों से बना होता है, रूपिमों की सम्पूर्ण सूची के अन्तर्गत भाषा के सभी ध्वन्यात्मरूप आ जाएंगें। भाषा के रूपिमों का सम्पूर्ण समूह शब्द भण्डार (lexicon) कहलाता है। फिर भी, यदि हम भाषा के शब्द भण्डार को जानते भी हों और प्रत्येक अर्थिम का पर्याप्त सच्चा ज्ञान हो, तो भी हम इस भाषा के रूपों को समझने में असफल हो सकते हैं। प्रत्येक उच्चार के कुछ महत्वपूर्ण ऐसे अभिलक्षण होते हैं जिनका उल्लेख शब्द भण्डार में नहीं होता है। उदाहरण के लिए हम देख चुके हैं कि सुन्दर 'रामू दौड़ पड़ा' के छहों रूपिम 'सुन्दर' 'राम्' ऊ 'दौड़' 'पड्' 'आ' उच्चार के पूरे-पूरे अर्थ को प्रकट नहीं कर सकते हैं। इस अर्थ का कुछ अंश विन्यास (arranjement) पर उदाहरणार्थ—पूर्वानुपरक्रम पर) निर्भर है जिससे मिश्ररूप में ये रूपिम आए हैं। प्रत्येक भाषा अपने अर्थों के एक अंश

को रूपों के विन्यास से प्रदर्शित करती है। इस प्रकार हिन्दी के 'राम से मोहन पिटा' और 'मोहन से राम पिटा' में दो विभिन्न क्रम हैं जिनके रूपिमों का उच्चार हुआ है।

भाषा के रूपों का अर्थपूर्ण-विन्यास व्याकरण (grammar) बनता है। सामान्यतः भषिक रूपों को चार प्रकार से विन्यास में रखा जा सकता है।

(1) क्रम (order) क्रम वह पूर्वानुपरक्रम है जिसमें मिश्ररूप के संरचकों का उच्चार होता है। अंग्रेजी में क्रम का महत्व सुस्पष्ट रूप में John hit Bill और Bill hit John के व्यतिरेक से प्रकट हो जाता है। इसके विपरीत Bill John hit एक शुद्ध अंग्रेजी रूप नहीं है क्योंकि उसमें इस पूर्वानुपरक्रम से संरचकों का कोई विन्यास नहीं होता है। इसी प्रकार अंग्रेजी play-ing (हिन्दी, खेलना) एक रूप है किन्तु ing-play (ना-खेल) नहीं है। कभी-कभी क्रम के अन्तर का व्यंजनापरक मूल्य होता है Away ran John John ran away की अपेक्षा अधिक सजीव है।

(2) मूर्च्छन (Modulation) मूर्च्छन के गौण स्वनिमों का उपयोग होता है। गौण स्वनिम (§5.11) वे स्वनिम हैं जो किसी रूपिम में नहीं मिलते है किन्तु रूपिमों के व्याकरणिक विन्यासमात्र में मिलते हैं अंग्रेजी के John [dʒɔn] अथवा run [rʌn] वास्तव में भावात्मक सत्ता है क्योंकि वास्तविक उच्चार में किसी गौण स्वनिमों के साथ आता है जोकि व्याकरिणक अर्थ प्रकट करता है। अंग्रेजी में, यदि रूपिम का एकाकी प्रयोग किया जाए, तो अनुतान के किसी गौण स्वनिम के साथ (§7.6) उसका उच्चार होता है, वह John! अथवा John ? अथवा किसी प्रश्न के उत्तर रूप में अवरोही अन्तिम अनुतान John [.] होगा। अंग्रेजी के मिश्र रूपों में कुछ संरचकों के साथ बलाघात का गौण स्वनिम अवश्य आता है (§7.3)। इस प्रकारबलाघात के स्थान का अन्तर संज्ञा convict को क्रिया convict से पृथक् करता है।

(3) ध्वन्यात्म आपरिवर्तन (Phonetc modification)––ध्वन्यात्म आपरिवर्तनों के मुख्य स्वानिमों में परिवर्तन आता है। उदाहरण के लिए do [duw] और not [nɔt] एक मिश्ररूप बनते हैं तो do का [uw] सामान्यतया [ow] के रूप में आपरिर्वातित हो जाता है और जब कभी ऐसा होता है, not के स्वर का लोप हो जाता है और संयोजित रूप don't [downt] होता है। इस उदाहरण में आपरिवर्तित रूप ऐच्छिक है और हमें अनापरिवर्तितरूप do not भी मिलता है। यद्यपि दोनों में व्यन्जनापरक अन्तर

है। औ उदाहरणों में हमें ऐसा विकल्प नहीं मिलता है। इस प्रकार पर-प्रत्यय स्त्री अर्थ में -ess (जैसे count-ess का ess) duke [d(j)uwk] के बाद भी लगता है किन्तु इस संयोजन में duke सदैव duch-[dvtʃ-] रूप में आपरिवर्तित मिलता है और मिश्र रूप duchess ['dʌtfis] है।

सही अर्थों में हमें यह कहना चाहिए कि ऐसे उदाहरणों में रूपिम के दो (अथवा कभी-कभी अधिक) विभिन्न ध्वन्यात्मरूप हैं, जैसे not के [nɔt] [nt] और do के [duw] और [dow] duke के [d(ʃ)uwk] और [dʌtʃ] और इनमें से प्रत्येक के वैकल्प रूप (alternant) कतिपय प्रतिबन्धों के साथ आते हैं। हमारे उदाहरणों में दोनों वैकल्परूपों में से एक का प्रयोग दूसरे की अपेक्षा अधिक व्यापक है और तदनुसार उसे मूल वैकल्प रूप कहते हैं। कुछ अन्य उदाहरणों में दोनों या सभी वैकल्प रूप प्रायः बराबर-बराबर व्याप्ति वाले हो सकते हैं। उदाहरणार्थ run और ran में कोई भी किसी अन्य सहचारी रूप के साथ सम्बन्द्ध नहीं है और इन दोनों में किसे मूलकल्परूप चुना जाए इसमें हिचक बनी रहती है। फिर भी हम देखते हैं कि keep : kep-t जैसे उदाहरणों में अतीतकाल के रूप में एक वैकल्परूप (kep-) मिलता है जोकि विशिष्ट सहचारीरूप (-t) के साथ ही आता है। अतएव अपने वक्तव्यों में एकरूपता रखने के लिए हम क्रिया के कालनिरपेक्ष (keep, run) को मूल वैकल्परूप मानते हैं और अतीतकाल में मिलने वाले रूपों को (kep-ran-) ध्वन्यात्म आपरिवर्तित रूप मानते हैं। हमें अन्य उदाहरण मिलेंगे जहाँ निर्णय और अधिक कठिन है। निस्सन्देह हम ऐसा प्रयत्न करते हैं कि मूल वैकल्परूप ऐसा चुना जाए कि तथ्यों का सरलतम वर्णन बन सके।

(4) चयन (Selection) रूपों के चयन के अर्थ के ऊपर भी विचार होता है क्योंकि अन्यथा एक से व्याकरिणिक विन्यास के विभिन्न रूपों का पृथक्-पृथक् अर्थ होता है। उदाहरणार्थ, उद्गारात्मक (exclamatory) अन्तिमसुरक्रम से उच्चरित कुछ रूपिम व्यक्ति की उपस्थिति तथा ध्यानाकर्षण के लिए प्रयुक्त होते हैं (जैसे Boy! John) जबकि उसी प्रकार से उच्चारित करने पर कुछ अन्य रूपिम आज्ञा के द्योतक हैं (जैसे Run! Jump!) और यह अन्तर कुछ मिश्र रूपों तक भी विस्तृत होता है (जैसे Mr Smith; Teacher!) के व्यतिरेक में Runaway! Dismount)। वे रूप, जिनका उद्गारात्मक अन्तिम सुरक्रम से उच्चार होने पर आह्वान (call) का अर्थ होता है, इसी वैशिष्ट्य के आधार पर, अंग्रेजीभाषा के एक रूपवर्ग (form-class) बनाते हैं जिसे हम

पुरुषपरक पदार्थ-सूचक व्यंजक (personal substantive expression) कह सकते हैं। इसी प्रकार, उद्गारात्मक अन्तिम सुरक्रम से उच्चार होने पर जिन रूपों का आज्ञात्मक अर्थ होता है वे इसी वैशिष्ट्य के आधार पर, अंग्रेजी-भाषा के एक अन्य रूपवर्ग (form-class) का निर्माण करते हैं जिसे काल-निरपेक्ष व्यंजक (infinitive expression) कह सकते हैं। एक उद्गार आह्वान है या आज्ञा है, यह इन दोनों रूपवर्गों के जिससे रूप का चयन हुआ है इस पर निर्भर होता है।

मिश्ररूप का अर्थ आंशिकरूप से संरचकरूपों के चयन पर निर्भर होता है। इस प्रकार drink milk और watch John क्रिया के द्योतक हैं, और जैसा हम देख आए हैं कालनिरपेक्ष (infinitive) व्यंजक हैं किन्तु fresh milk और poor John वस्तु के द्योतक हैं और पदार्थसूचक व्यंजन (substantive expression) हैं। दोनों के द्वितीय संरचक milk और John एक ही हैं, मिश्ररूपों में अन्तर प्रथम संरचक के चयन पर निर्भर है। इसी अन्तर के आधार पर, रूप drink और watch अंग्रेजी की एक रूपवर्ग ("सकर्मक क्रिया") के अन्तर्गत हैं, और fresh और poor दूसरे रूपवर्ग ("विशेषण") के अन्तर्गत हैं।

रूपवर्ग को उपवर्ग में विभाजित करनेवाले चयन के अभिलक्षण प्रायः पर्याप्त दुरूह और जटिल होते हैं। अंग्रेजी में, यदि हम John अथवा the boys जैसे रूपों ("कर्ता पदार्थसूचक व्यंजक" रूपवर्ग के रूपों) का ran अथवा went home (क्रियाव्यंजक समापिका रूपवर्ग के रूप) के साथ संयोजन करते हैं तो ब ा हुआ मिश्ररूप (John ran, the boys ran, John went home, the boys went home) इस अर्थ का सूचक होता है कि पदार्थ क्रिया को कर रहा है। फिर भी चयन का अभिलक्षण एक और प्रवृत्ति से परिपूरित होता है। हम कहते हैं John runs fast किन्तु the boys run fast, और कभी भी विपरीत संयोजन जैसे John run fast अथवा the boys runs fast नहीं कहते हैं। कर्ता व्यंजकों के रूपवर्ग दो उपवर्गों ("एकवचन" और "बहुवचन") में बाँटे गए हैं और समापिका क्रियाव्यंजक भी ("एकवचन" और "बहुवचन") में बँटे हुए हैं और ऐसा होता है कि जटिलरूपों में जहाँ कोई वस्तु कोई क्रिया करती है, दोनों संरचक या तो एकवचन उपवर्ग के अथवा बहुवचन उपवर्ग के होते हैं। लैटिन-भाषा में, रूप pater filium amat (अथवा filium pater amat) का अर्थ होता है "पिता पुत्र पर स्नेह करता है" और

रूप patrem filius amat (अथवा filius patrəm amat) का अर्थ है "पुत्र पिता पर स्नेह करता है"। यहाँ रूप pater (पिता) और filius (पुत्र) एक रूपवर्ग (कर्ताकारक) के अन्तर्गत आते हैं और इनके रूप, amat (वह स्नेह करता है) जैसी क्रिया के साथ संयोजित होकर क्रिया का कर्तृत्व प्रदर्शित करते हैं। रूप patrem (पिता) और filium (पुत्र) विभिन्न रूपवर्ग (कर्मकारक) के अन्तर्गत आते हैं और इनके रूप amat (वह स्नेह करता है) जैसी क्रिया के साथ संयोजित होकर क्रिया का कर्मत्व प्रदर्शित करते हैं।

चयन में अभिलक्षण प्रायः अत्यन्त यादृच्छिक और विचित्र होते हैं। अंग्रेजी में prince, author, sculptor के साथ -ess जोड़कर princess, authoress, sculptress (इस उदाहरण में [ə] का [r] में ध्वन्यात्म आपरिवर्तन भी हुआ है) बनाते हैं किन्तु यह -ess प्रत्यय king, singer, painter के साथ नहीं लगता। अभ्यास के बल से prince आदि शब्द एक ऐसे उपवर्ग के सदस्य हैं जिससे king आदि शब्द बाहर रखे गए हैं।

10.5 व्याकरणिक विन्यास (grammatical arrangement) के अभिलक्षण विभिन्न संयोजनों में मिलते हैं किन्तु हम उन्हें पृथक्-पृथक् कर सकते हैं और उनका एक-एक करके वर्णन कर सकते हैं। व्याकरणिक विन्यास का एक सरल अभिलक्षण व्याकरणिक अभिलक्षण (grammatical feature) अथवा विन्यासिम (taxeme) (टैक्सीम) कहलाता है। व्याकरण में विन्यासिम (टैक्सीम) का वही स्थान है जो शब्दसमूह में स्वनिम का—अर्थात् दोनों रूप की लघुतम इकाइयाँ हैं। स्वनिम के समान विन्यासिम भी, अमूर्तरूप में, अर्थहीन हैं। जिस प्रकार स्वनिमों के संयोजन, अथवा कभी-कभी एकाकी स्वनिम वास्तविक शब्दीय (texical) संकेत (ध्वन्यातम रूप) के रूप में आते हैं, उसी प्रकार विन्यासिमों के संयोजन अथवा प्रायः अकेला विन्यासिम परम्परागत व्याकरणिक विन्यास के रूप में विन्यस्तरूपों में (tactic form) आते हैं। एक ध्वन्यात्म रूप अपने अर्थ सहित भाषिकरूप है, उसी प्रकार विन्यस्तरूप अपने अर्थ के साथ एक व्याकरणिक है। जब हम किसी भाषिकरूप के विशुद्ध शब्दीय (स्वरूप) को उस पर आरोपित विन्यास की प्रवृत्ति के व्यतिरेक में स्पष्ट करना चाहते हैं तो हम उसे शब्दीयरूप (texical form) कहते हैं। जिस प्रकार शब्दीयरूपों के सम्बन्ध में लघुतम सार्थक इकाई को रूपिम (morpheme) परिभाषित किया है और उनके अर्थों को अर्थिम

(sememes), उसी प्रकार व्याकरणिक रूप की लघुतम सार्थक इकाई को व्याकरणिम (tagmeme) और उसके अर्थों को व्याकरणिमार्थ (epi-sememe) कहते हैं।

उदाहरणार्थ उच्चार Run ! में दो व्याकरणिक अभिलक्षण (विन्यासिम taxeme) हैं,—उद्गारात्मक अन्तिम सुरक्रम का मूर्छन (modulation), और वह चयन का अभिलक्षण जिससे कालनिरपेक्ष क्रिया को काम में लाया गया है (न कि संज्ञा को जैसे कि John!)। अंग्रेजी में ये दोनों विन्यासिम विन्यस्तरूप (tactic form) हैं, चूँकि प्रत्येक संकेत की इकाई के रूप में व्यवहृत होता है। प्रत्येक को यदि उसके अर्थ के साथ लें तो वे व्याकरणिकरूप की इकाई व्याकरणिम (tagmeme) कहलाएंगे। उद्गारात्मक अन्तिम (अनुताप) का व्याकरणिम किसी भी शब्दीय रूप के साथ आ सकता है और उसे एक व्याकरणिक अर्थ (व्याकरणिमार्थ) देता है जिसे हम स्थूलरूप से कदाचित् "प्रबल उद्दीपन" कह सकते हैं। चयन के व्याकरणिम का भी जिसके कारण कालनिरपेक्ष क्रियारूप एक रूपवर्ग कहलाते हैं, एक व्याकरणिक अर्थ व्याकरणिमार्थ है जिसे हम वर्ग-अर्थ (class-meaning) कह सकते हैं और स्थूलरूप से "क्रिया" के रूप में परिभाषित करते हैं।

एक व्याकरणिम (tagmeme) के अन्तर्गत एक से अधिक विन्यासिम (taxeme) हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, John ran! poor John ran away; the boys are here; I know आदि रूपों में अनेक विन्यासिम हैं। एक संरचक कर्ताव्यंजकों के रूपवर्ग का सदस्य है (John, poor John, the boys, I) और दूसरा संरचक समापिका क्रिया व्यंजकों के रूपवर्ग का सदस्य है (ran, ran away, are here, know) चयन का एक दूसरा विन्यासिम विशिष्ट समापिका क्रिया व्यंजकों को विशेष कर्ताव्यंजकों के साथ सम्बद्ध करते हैं। इस प्रकार संरचक I am, John is, you are—तीनों उदाहरणों में परस्पर विनिमेय नहीं है। क्रम का विन्यासिम कर्ताव्यंजक को ससमापिका क्रिया व्यंजक के पूर्व रखता है, इस कारण ran John इस प्रकार नहीं बोला जाता है। एक दूसरा क्रम का विन्यासिम अंशतः पहले वालों को उलटता हुआ, विशेष अवसरों पर जैसे did John run? away ran John, will John? है। मूर्छन का विन्यासिम केवल विशेष अवसरों पर मिलता है, जबकि कर्ता-व्यंजक बलाघातहीन होता है, जैसे I know में। विशेष स्थलों पर ध्वन्यात्म आपरिवर्तनों का विन्यासिम भी आता है, जैसे John's here में

is का [Z] अथवा I'd go में would का [d] इनमें से कोई भी विन्यासिम स्वयं से अर्थवान् नहीं है किन्तु सामूहिकरूप में उनसे व्याकरणिकरूप (व्याकरणिम tagmeme) बनता है जिसका अर्थ है कि एक संरचक (कर्ता-व्यंजक) दूसरे संरचक (समापिका-क्रिया व्यंजक) को करता है।

अगर हम John ran को उद्‌गारात्मक सुरक्रम (अनुतान) से बोलते हैं तो एक जटिल व्याकरणिक रूप बनता है जिसमें तीन व्याकरणिम हैं। इनमें से पहले का "प्रबल उद्दीपन" है, दूसरे का "(कर्ता) (क्रिया) करता है" और तीसरे का व्याकरणिमार्थ "पूर्ण और बिल्कुल नया" है और इनमें रूपदृष्टि से चयन का वह अभिलक्षण है जो वाक्य में कर्ता-क्रिया वाक्यांश को काम में लाता है।

10.6 प्रत्येक उच्चार शब्दीय और व्याकरणिक रूपों के पदों में पूरा वर्णित हो सकता है। केवल यह हमें याद रखना चाहिए कि हमारे शास्त्र की शब्दावली में अर्थ की निश्चिति नहीं हो सकती है।

प्रत्येक रूपिम एक विशिष्ट विन्यास में स्थापित एक या एकाधिक स्वनिमों के समुच्चय के रूप में पूर्णतया (अर्थ छोड़कर) वर्णित किया जा सकता है। इस प्रकार रूपिम duke में सरल और संयुक्त स्वनिम, [d] [juw] [k] इस क्रम में हैं, और रूपिम–ess में स्वनिम [i] [s] इसी क्रम में हैं। कोई भी मिश्र रूप संरचक रूपों और उन व्याकरणिक अभिलक्षणों (विन्यासिमों) के शब्दों में पूर्णतया (अर्थ को छोड़कर) वर्णित किया जा सकता है जिनसे ये संरचक रूप विन्यासबद्ध हुए हैं। इस प्रकार मिश्र रूप duchess ['dʌtʃis] के दो संलग्न संरचक duke [djuwk] और–ess [is] निम्नभांति विन्यासबद्ध हुए हैं :

चयन : संरचक duke अंग्रेजी रूपों के उस विशिष्ट वर्ग का सदस्य है जो रूप–ess के साथ संयोजित होता है। उदाहरण के लिए इस रूप वर्ग में count, prince, lion, tiger, author, waiter आदि रूप तो आते हैं किन्तु men, boy, dog, singer आदि रूप नहीं आते हैं। यह पुँल्लिंग, पुरुषपरक संज्ञाओं के एक बृहत्तर रूपवर्ग का उपवर्ग है। रूप-ess स्वयं का छोटा रूपवर्ग बनाता है क्योंकि यही (और केवल यही) अभी उल्लिखित वर्ग के रूपों के साथ ठीक-ठीक संयोजित होता है। इन सब तथ्यों को देखते हुए यहाँ केवल एक चयन का विन्यासिम है।

क्रम : रूप–ess अपने सहचारी रूप के पश्चात् बोला जाता है।

मूर्छन : रूप–ess बलाघातहीन बोला जाता है। सहचारी रूप पर उच्च बलाघात है।

ध्वन्यात्म आपरिवर्तन : duke का [juw] [ʌ] द्वारा और [k] [t] द्वारा विस्थापित होता है।

यदि रूप duke और–ess दिए हों तो इन चार व्याकरणिक अभिलक्षणों के कथन मिश्र रूप duchess का पूर्ण वर्णन कर देंगे।

प्रत्येक वास्तविक उच्चार शब्दीयरूप और सहचारी व्याकरणिक अभिलक्षणों के शब्दों में पूर्णतया वर्णित किया जा सकता है। इस प्रकार उच्चार duchess! में शब्दीयरूप duchess और ये दो विन्यासिम हैं : उद्गारात्मक अन्तिम सुरक्रम और पदार्थवाचक व्यंजक का चयन।

यदि किसी अन्यशास्त्र से हमें यहाँ सम्बद्ध इकाइयों के अर्थों की परिभाषाएँ मिल जाएँ अर्थात् दो रूपिमों (duke और–ess) के अर्थिमों की और तीन व्याकरणिमों (duke और–ess का विन्यास, उद्गारात्मक अन्तिम सुरक्रम का प्रयोग, पदार्थवाचक व्यंजक का चयन) के व्याकरिणमार्थों की परिभाषाएँ मिल जाएँ तो Duchess ! इस उच्चार का अर्थ पूर्णतया विश्लेषित और परिभाषित हो जाएगा।

10.7 व्याकरणिक रूप इस आवश्यक सिद्धान्त, वस्तुत: पूर्वकल्पना, का अपवाद नहीं है; भाषा केवल उन्हीं अर्थों को अभिव्यक्त करती है जो किसी रूपीय अभिलक्षणों से सम्बद्ध हैं, क्योंकि वक्ता केवल संकेतों द्वारा संकेतन दे सकता है। इस सम्बन्ध में अनेक भाषा के अध्येता इस तथ्य से भटक जाते हैं कि व्याकरण के रूपीय अभिलक्षण स्वनिम अथवा स्वनिम संयोजन नहीं हैं जिन्हें हम बोल सकें या प्रतिलेखित कर सकें, वे केवल ध्वन्यात्मरूपों के विन्यास हैं। इस भटकाने में शैक्षिक परम्पराओं का बड़ा हाथ है। यदि ये न होतीं तो इस प्रकार के तथ्यों के सम्बन्ध में अंग्रेजी में कोई कठिनाई न होती कि John hit Bill ओर Bill hit John दो विभिन्न परिस्थितियों को संकेतित करते हैं, अथवा प्रथम अक्षर पर बलाघातवाला convict द्वितीय अक्षर पर बलाघात वाले convict से भिन्न है, अथवा John ! John ? और John में अर्थभेद है।

John अथवा run जैसा रूप, अमूर्त उल्लेख में, अर्थात् उदाहरणार्थ बिना अन्तिम सुरक्रम (अनुतान) के विशेषीकरण के सही अर्थों में वास्तविक भाषिक रूप है ही नहीं, वह शब्दीय रूप मात्र है। एक भाषिक रूप जोकि वस्तुत: उच्चारित हुआ है सदैव एक व्याकरणिक रूप रखता है। चाहे हम कितना

ही सरल रूप लें या कैसे ही हम बोलें, हमने चयन अवश्य किया है जिसके कारण उच्चार शब्दीय अर्थ के साथ-साथ एक व्याकरणिक अर्थ वहन करता है, और कुछ-न-कुछ सुर परियोजना प्रयुक्त की होगी जोकि कम-से-कम अंग्रेजी में व्याकरणिक अर्थ दे देती है जैसे 'सामान्य कथन', 'हाँ अथवा न प्रश्न' 'परिपूरक प्रश्न' अथवा 'उद्गार'।

भाषा के व्याकरणिक रूपों को तीन बड़े वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

(१) जब रूप एकाकीरूप से (अर्थात्, वह अपने से बृहत्तर रूप का संरचक नहीं है) बोला जाता है तो वह किसी-न-किसी वाक्य प्रतिरूप (Sentence-type) में आता है। इस प्रकार अंग्रेजी में गौण स्वनिम (!) का प्रयोग हमें उद्गार का वाक्य-प्रतिरूप देता है और पदार्थ-सूचक व्यंजक का प्रयोग हमें आह्वान प्रतिरूप (John !) देता है।

(२) जब कभी दो (अथवा, विरलतया, अधिक) रूप एक साथ मिश्ररूप में संरचकों के रूप में बोले जाते हैं तो वे व्याकरणिक अभिलक्षण जिनसे वे संयोजित हैं संरचना (construction) बनाते हैं। इस प्रकार वे व्याकरणिक अभिलक्षण जिनसे duke और–ess संयोजित होकर duchess के रूप में आते हैं अथवा जिससे poor John और ran away संयोजित होकर poor John ran away बनते हैं, संरचना करते हैं।

(३) कदाचित् एक तीसरा व्याकरणिक रूपों का बड़ा वर्ग स्थापित करना पड़ेगा जिसमें एक रूप अन्यरूपों के एक पूरे वर्ग के स्थान पर परम्परागतरूप से स्थानापन्न होता है। इस प्रकार वह चयनकारी अभिलक्षण जिससे अंग्रेजी में रूप he अन्य रूपों के, जैसे John, poor John, a police man, the man I saw yesterday जैसे रूपों के एक पूरे वर्ग का परम्परागत स्थानापन्न है (ये रूप इस प्रवृत्ति के कारण 'एकवचन पुंल्लिंग पदार्थ-सूचक व्यंजकों का रूपवर्ग बनाते हैं), निस्सन्देह व्याकरणिक रूपों के एक तीसरे वर्ग का उदाहरण है, जिसे हम 'स्थानापत्ति' (substitution) का नाम दे सकते हैं।

अध्याय 11

वाक्य-प्रतिरूप

11.1. किसी भी उच्चार में एक भाषिकरूप या तो किसी अपने से महत्तर (larger) किसी रचना के संरचक के रूप में (जैसे John ran away में John) आता है या, स्वतन्त्ररूप में बिना किसी महत्तर (मिश्र) भाषिक रूप में अन्तर्विष्ट (included) हुए (जैसे, उद्‌गारात्मक John ! में John) आता है। जब एक भाषिकरूप अपने से महत्तररूप का अवयव (रचक) बनकर आता है तो उसे अन्तर्विष्ट (included) स्थान में मानते हैं, अन्यथा वह निरपेक्ष स्थान (absolute position) में कहलाता है। निरपेक्ष स्थान में आए हुए भाषिकरूप द्वारा वाक्य (sentence) बनता है।

किसी एक उच्चार में वाक्यरूप में आने वाला रूप किसी दूसरे उच्चार में अन्तर्विष्ट स्थिति में हो सकता है। अभी उदाहरण में उद्‌गारात्मक John! में John वाक्य है, किन्तु उद्‌गार Poor John ! में John एक अन्तर्विष्ट स्थिति में है। इस दूसरे उदाहरण में poor John वाक्य-स्थिति में है किन्तु उच्चार poor John ran away में वह अन्तर्विष्ट स्थिति (included position) में है अथवा, अन्तिम उदाहरण में poor John ran away वाक्य-स्थिति में है किन्तु उच्चार when the dog barked, poor John ran away में वह अन्तर्विष्ट स्थिति में है।

एक उच्चार में एक से अधिक वाक्य भी हो सकते हैं। ऐसा तब होता है जब उच्चार में अनेक ऐसे भाषिकरूप होते हैं जो किसी अर्थपूर्ण परम्परागत व्याकरणिक-विन्यास (अर्थात् किसी रचना) द्वारा एक महत्तररूप में संयोजित नहीं हुए हैं जैसे, How are you ? It is a fine day. Are you going to play tennis ? इन तीनों वाक्यों में कोई व्यावहारिक परस्पर संबंध भले ही हो, इन तीनों को एक महत्तररूप में संयोजित करने वाला कोई व्याकरणिक विन्यास नहीं है। अतः उच्चार में तीन वाक्य हैं।

यह स्पष्ट है कि किसी भी उच्चार में वाक्यों का केवल इस आधार पर पृथक् करना हो सकता है कि प्रत्येक वाक्य एक स्वतन्त्र भाषिकरूप है और वह किसी व्याकरणिक रचना द्वारा अपने से महत्तररूप में अन्तर्विष्ट नहीं है।

अधिकांश, सम्भवतः सभी, भाषाओं में अनेक विन्यासिम (taxeme) होते हैं जो वाक्य को पृथक् पृथक् करते हैं और फिर जिनके आधार पर वाक्य के विभिन्न प्रतिरूपों (types) की पहिचान बनाते हैं।

अंग्रेजी और अनेक अन्य भाषाओं में वाक्य मूर्च्छन (modulation) द्वारा, गौण स्वनिमों के प्रयोग द्वारा, पृथक् किये जाते हैं। अंग्रेजी में सुरक्रम (अनुतान) के गौण स्वनिमों द्वारा वाक्य का अन्त प्रदर्शित होता है, और उसके आधार पर मुख्य (प्रधान) वाक्य-प्रतिरूपों की पहचान होती है, जैसे, John ran away [.], John ran away [¿] Who ran away [?] फिर इनमें से प्रत्येक के साथ उद्गारात्मक वाक्य सुरक्रम की विकृति (distortion) आ सकती है और इस प्रकार कुल मिलाकर छः प्रतिरूप मिलते हैं जिनका वर्णन § 7.6 में हुआ है।

गौण स्वनिमों के वाक्यान्त-निर्धारण के लिए किए इस प्रयोग द्वारा एक अन्य संरचना की संभावना निकली है और वह है असम्बद्ध-वाक्यविन्यास (parataxis)। इसमें किसी अन्य रचना से असंयोजित दो रूप एक वाक्य सुरक्रम के प्रयोगमात्र से संयोजित होते हैं। इस प्रकार यदि हम कहते हैं It's ten o'clock [.], I have to go home [.] और सामान्य वक्तव्य वाला अन्तिम अवरोही सुर o'clock पर है, तो हमने दो वाक्य बोले हैं। किन्तु यदि यह अन्तिम सुर o'clock पर नहीं है और वहां विराम-सुर है, तो दोनों रूप असम्बद्ध वाक्यविन्यास (parataxis) की संरचना द्वारा एक वाक्य में लाए गए हैं, जैसे It's ten o'clock [,] I have to go home [.]

अंग्रेजी और अनेक अन्य भाषाओं में वाक्य-मूर्छन (sentence-modulation) का दूसरा अभिलक्षण वाक्य के अवधारणायुक्त (emphatic) अंशों को गौण स्वनिमों के प्रयोग द्वारा प्रकट करना है। अंग्रेजी में इस कार्य के लिए उच्चतम स्वराघात (highest stress) का प्रयोग किया जाता है, जैसे "Now it's my turn" (देखिए § 7.3)। अंग्रेजी में अवधारणातत्व को विशेष संरचनाओं (It was John who did that) और शब्दक्रम (word-order) द्वारा भी प्रकट करते हैं। जिन भाषाओं में स्वराघात परिच्छेदक नहीं हैं, ऐसे ही उपाय काम में आते हैं, जैसे, फ्रेंच में, C'est Jean quil'a facit [sɛʒã kilafɛ] (अंग्रेजी अनुवाद It is John who did it)। कुछ भाषाओं में अवधारणातत्व के पूर्व अथवा पश्चात् विशेष शब्द लगाए जाते हैं, जैसे तगलॉग

(Tagalog) में [ikaw 'ŋa?aŋ nag'sa : bi nijan] you (emphatic particle) the one-who-said that अर्थात् 'तुमने स्वयं ऐसा कहा था'। जैसे मिनामनी में, [jo:hpeh 'niw kan 'wenah 'wa:pah] "आज (अवधारणापद) "नहीं" (अवधारणपद) "कल" ("आज, न कि कल")। अंग्रेजी का उच्च स्वराघात प्रसामान्यतया स्वराघातहीन रूपों पर भी अवधारणा में आ जाता है : of, far and by the people; *im*migration.

11.2 मूर्छना (modulation) के अभिलक्षण के अतिरिक्त, चयन के अभिलक्षण भी विभिन्न वाक्य-प्रतिरूपों को चिन्हित करते हैं। इसके उदाहरण अभी हम अवधारणातत्व के संबन्ध में दे आए हैं, जहाँ विशेष संरचना या विशेषपद (particle) इस हेतु आए हैं। अंग्रेजी में पूरक प्रश्नों की पहिचान न केवल विशेष सुरक्रम-स्वनिम [¿] से होती है अपितु चयनकारी विन्यासिम taxeme से भी होती है। पूरक प्रश्न के रूप में विशेष प्रतिरूप के शब्द अथवा शब्दसमूह अवश्य होते हैं, जिन्हें हम प्रश्नात्मक स्थानापन्न (interrogative substitute) कहते हैं या पूरक प्रश्न में ये शब्द अथवा शब्दसमूह अन्तर्विष्ट अवश्य होते हैं जैसे, who ? with whom ? who ran away ? with whom was he talking.

कदाचित् सभी भाषाएँ दो प्रकार के वाक्य-प्रतिरूपों में भेद अवश्य रखती हैं जिन्हें पूर्णवाक्य (full-sentence) और अपूर्ण-वाक्य (minor-sentence) कहते हैं। इनमें भेद चयन के द्वारा होता है—कुछ रूप सर्वाधिक प्रचलित वाक्यरूप (favourite sentence-form) हैं। जब सर्वाधिक प्रचलित वाक्यरूप वाक्य के समान प्रयुक्त होता हैं, तो वह पूर्णवाक्य है, जब अन्य रूप वाक्य के समान प्रयुक्त होता है तो वह अपूर्ण-वाक्य होता है। अंग्रेजी में दो प्रकार के सर्वाधिक प्रचलित वाक्यरूप हैं। पहले में कर्ता-क्रिया (actor—action) पदसंहिति (phrase) आते हैं। इन पदसंहितियों की संघटना (structure) कर्ता-क्रिया संरचना की है—John ran away, who ran away ? Did John run away ? दूसरे में आज्ञा पदसंहितियां आती हैं—आपरिवर्तकों के साथ या आपरिवर्तकों के बिना असमापिका क्रिया (infinitive verb) आती है जैसे, come ! Be good ! यह दूसरा प्रतिरूप सदैव उद्‌गारात्मक वाक्य सुरक्रम से बोला जाता है। असमापिका के साथ you शब्द कर्ता के रूप में आ सकता है, जैसे you be good जैसा कि इन उदाहरणों से प्रदर्शित होता है, पूर्णवाक्य

प्रतिरूप का अर्थ कुछ 'सम्पूर्ण और अभूतपूर्व उच्चार (complete and novel utterance)' के समान होता है, अर्थात् वक्ता का प्रयोजन यह है कि जो वह कह रहा है वह पूर्ण आकार की घटना या आदेश है और वह श्रोता की स्थिति में कुछ-न-कुछ परिवर्तन करता है। भाषण जितना ही सविमर्श (अवधानसहित) होता है उतनी ही सम्भावना इस बात की होती है कि वाक्य पूर्णप्रतिरूप के हैं। पूर्णवाक्यों के व्याकरणिमार्थ (episememe) की प्रकृति पर बहुत दार्शनिक वादविवाद खड़ा हो चुका है, किन्तु इस (अथवा अन्य) अर्थ को यथार्थ परिभाषित करना भाषाशास्त्र के क्षेत्र के बाहर है। यह एक गम्भीर प्रमाद होगा यदि हम भाषा-शास्त्रीय विवेचन का प्रारम्भ रूपीय-अभिलक्षणों के स्थान पर इस अथवा अन्य अर्थों के प्रयोग से करें।

आधुनिक इण्डोयूरोपियन (भारत-यूरोपीय) भाषाओं में पर्याप्त भाषाएं कर्ता-क्रिया रूप को सर्वाधिकप्रचलित वाक्य-प्रतिरूप में प्रयुक्त करने में, अंग्रेजी से मिलती हैं। कुछ, जैसे फ्रेंच और अन्य (अंग्रेजीतर) जर्मन भाषाएं, इस बात में भी मिलती हैं कि कर्ता-क्रिया रूप सदैव पदसंहिति होता है और उसमें कर्ता और क्रिया पृथक् शब्दों अथवा पदसंहिति द्वारा अभिव्यक्त होता है। इनमें से कुछ भाषाओं में, जैसे, इतालवी, स्पेनी और स्लावी भाषाओं में, कर्ता और क्रिया आबद्धरूप होते हैं और दोनों मिलकर एक शब्द बनाते हैं, जैसे, इतालवी canto ['kanto] (मैं गाता हूँ) canti ['kant-i] (तू गाता है), cant-a ['kant-a] (वह गाता/गाती है) आदि। वह शब्द जिसके अन्दर उस भाषा का सर्वाधिक-प्रचलित वाक्यरूप अन्तर्भूत हो जाता है, वाक्य-शब्द (वाक्यीय शब्द) (sentence-word) कहलाता है।

कुछ भाषाओं में विभिन्न सर्वाधिक-प्रचलित वाक्य-प्रतिरूप होते हैं। रूसी में इतालवी के समान कर्ताक्रिया प्रतिरूप की वाक्यीय-शब्द समापिका क्रियाएं हैं, जैसे, [po'ju] (मैं गाता हूँ), [po'joʃ] (तू गाता है), [po'jot] (वह गाता है) आदि। इसके अतिरिक्त इसमें एक अन्य प्रतिरूप का पूर्णवाक्य होता है : [i'van du'rak] "ईवान मूर्ख (है)," [Sol'dat 'xrabr] "सैनिक वीर (है)," [o'lets'doma] "पिता घर पर (है)"। इस द्वितीय प्रतिरूप में, एक सदस्य जोकि पहले बोला जाता है पदार्थवाचक (substantive) है, दूसरा रूप पदार्थवाचक होता है जिसके साथ पहला समस्थापित (equated) किया जाता है, अथवा विशेषण (विशेषणों का इस प्रयोग में विशिष्ट रूप होता है) होता है, अथवा क्रियाविशेषणीय रूप होता है।

जब किसी भाषा में एक से अधिक पूर्णवाक्य के प्रतिरूप होते हैं, ये प्रतिरूप दो अंशवाली संरचनाओं को प्रदर्शित करने में सदृश होते हैं। ऐसे द्वि-अंशीय सर्वाधिकप्रचलित वाक्यरूपों के लिए सामान्य नाम विधेयन (predicative) है। विधेयन में अधिक वस्तुवत् अंश उद्देश्य (subject) कहलाता है और शेष अंश विधेय (predicate) कहलाता है। रूसी में मिलने वाले दो प्रतिरूपों में प्रथम को कथनात्मक विधेयन (narrative predication) कहते हैं और द्वितीय को समस्थापित विधेयन (equatinal predication) कहते हैं। अंग्रेजी और इतालवी जैसी भाषाओं में जहां एक प्रतिरूप का द्वि-अंशीय वाक्य मिलता है, ये नाम निरर्थक हैं, किन्तु प्रायः प्रयुक्त होते हैं। जैसे, John ran को विधेयन कहा जाता है और इसमें कर्त्ता (John) उद्देश्य है और क्रिया (run) विधेय है।

लैटिन में भी रूसी की भांति इन्हीं प्रतिरूपों के पूर्णवाक्य थे किन्तु कथनात्मक प्रतिरूप के दो उपभेद थे--एक में कर्ता-क्रिया संरचना थी, जैसे cantat "वह गाता है" amat "वह स्नेह करता है", और दूसरे में लक्ष्य-क्रिया (goal-action) संरचना थी, जैसे, cantatur "वह गाया जा रहा है" amatur "वह प्यार किया जा रहा है"। समस्थापित प्रतिरूप रूसी की अपेक्षा कम सामान्य था : beatus ille "प्रसन्न (है) वह"।

तगलाग में पांच प्रकार का विधेयन है। उनमें सर्वनिष्ठ अभिलक्षण यह है कि या तो उद्देश्य पहले आता है और बीच में अव्यय [aj] (स्वरों के बाद [j]) आता है, या बिना अव्यय के विपरीत क्रम होता है।

सबसे पहले, एक समस्थापित प्रतिरूप है, [aŋ' ba:ta j maba'it] "बच्चा अच्छा है," अथवा, विपरीत क्रम में [maba'it aŋ'ba:ta?] "अच्छा (है) बच्चा"। इसके बाद, चार कथनात्मक प्रतिरूप हैं जिनमें विधेय अस्थायी (क्षणिक) (transient) शब्द होते हैं और ये क्रिया के चार विभिन्न सम्बन्धों में वस्तुओं को अभिव्यक्त करते हैं : क्षणिक शब्दों के चार प्रतिरूप निम्नलिखित हैं :—

कर्ता : [pu'mu:tul] "काटने वाला"
(actor)
लक्ष्य : [pi'nu:tul] "कोई कटी हुई वस्तु"
(goal)

साधन (instrument) : [ipi'nu:tul] "कोई वस्तु जिससे काटा जाए"

स्थान (place) : [pinu'tu:lan] 'कोई जिस पर अथवा जिस में से काटा जाए"

ये अस्थाई (क्षणिक) शब्द, हम लोगों की क्रियाओं के समान, केवल विधेय-स्थिति में ही सीमित नहीं रहते हैं। उदाहरणार्थ, वे समस्थापित वाक्यों में भी भलीभांति आ सकते हैं, जैसे, [aŋ pu'mu:tul aj si'hwan] "वह जिसने काटा था ज़ान", किन्तु विधेय स्थिति में वे चार प्रकार के कथनात्मक विधेय का सर्जन करते हैं :

कर्ता-क्रिया : [sja j pu'mu:tul-naŋ ka:huj] "उसने काटी कुछ लकड़ी"

लक्ष्य-क्रिया : [pinu:tul nja aŋ' ka:huj] "काटी गई उससे कुछ लकड़ी"

साधन-क्रिया : [ipi'nu:tul nj aŋ'gu:luk] "काटी-गई-द्वारा उससे बोलो-चाकू" अर्थात् "उसने बोलो-चाकू द्वारा काटा"

स्थान-क्रिया : [pinu'tu:lan nja aŋ'ka:huj] "काटी-गई-से उससे वह लकड़ी" अर्थात् "उसने लकड़ी से (छोटा टुकड़ा काटा"

जार्जी (Georgian) भाषा में क्रिया-प्रतिरूप, जैसे, ['v-ts?er] "मैं लिखता हूँ" और संवेदना-प्रतिरूप (sensation-type), जैसे, ['m-e-smi-s] "मुझे-ध्वनि-है" अर्थात् "मैं सुनता हूँ" में अन्तर है। किन्तु ऐसे भेद पूरी वैज्ञानिक संगति के साथ सर्वत्र लागू नहीं होते हैं, जैसे जार्जी में "देखने" के लिए संवेदना-प्रतिरूप न आकर क्रिया-प्रतिरूप आता है, जैसे, ['v-naxav] "मैं देखता हूँ"।

सभी सर्वाधिक प्रचलित-रूपों की द्विअंशीय-संघटना हो, ऐसा नहीं है। अंग्रेजी में आज्ञा (command) में केवल असमापिका रूप आता है (come: be good) और कभी-कभी ही कर्ता आता है (you be good)। जर्मन भाषा में, एक अंग्रेजी से मिलता-जुलता कर्ता-क्रिया वाला सर्वाधिक-

प्रचलित रूप है, किन्तु एक अकर्तृक (impersonal) प्रकार, जो पहले प्रतिरूप से इस बात में भिन्न है कि इसमें कर्ता नहीं होता है, mir ist kalt [mi : r ist kalt] "मुझे है सर्दी" अर्थात् "मैं सर्दी का अनुभव करता हूं" hier wird getanzt ['hi:r virt ge'tantst] "यहां पाता है नाचना" अर्थात् "यहां नाचना है"। रूसी में भी एक अकर्तृक प्रतिरूप है जो समस्थापित-विधेयन से उद्देश्य की अनुपस्थिति के कारण भिन्न है, जैसे, ['nuzno] "आवश्यक है"।

11.3. अंग्रेजी में पूर्ण वाक्यों का एक उप-प्रतिरूप है जिसे हम (व्यक्त क्रिया) (स्पष्ट-क्रिया) (explicit action) प्रतिरूप कहते हैं। इस प्रतिरूप में क्रिया-व्यापार क्रियारूप do, does, did के चारों ओर होता है। चयन का यह विन्यासिम इन व्यतिरेकों से प्रकट होता है जैसे I heard him और I did hear him. इस स्पष्ट क्रिया प्रतिरूप के अनेक प्रयोग हैं। प्रथमतः व्यक्त क्रिया प्रतिरूप घटित होने की प्रक्रिया (घटित होने के विरोध में) अथवा क्रिया व्यापार के काल (वर्तमान अथवा अतीत) पर अवधारणा देता है, जैसे "I did hear him" अथवा "Do run home" जबकि क्रिया पर अवधारणातत्त्व (उच्चतम स्वराघात) होने पर सामान्य प्रतिरूप क्रिया के शब्दीय अन्तस्तत्त्व (अर्थिम) पर अवधारणा डालता है, जैसे "I heard him" (मैंने उसे सुना, न कि देखा), अथवा "Run home" (घर दौड़कर जाओ, न कि धीमे-धीमे)। द्वितीयतः, जब कभी क्रिया not से आपरिवर्तित होती है तब स्पष्ट-क्रिया प्रतिरूप को प्रयुक्त करते हैं—जैसे I did n't hear him अथवा Don't run away इस प्रकार अंग्रेजी में चयन का विन्यासिम पूर्णवाक्य के नकारात्मक (negative) प्रतिरूप को प्रकट करता है।

इसके अतिरिक्त अंग्रेजी का स्पष्ट-क्रिया प्रतिरूप के अन्तर्गत एक उप-प्रतिरूप आता है जिसमें क्रियाएँ do, does, did कर्ता के पूर्व आती हैं। यह व्युत्क्रमित (inverted) प्रतिरूप औपचारिक हां-या-नहीं प्रश्नों में प्रश्न-सुर (question-pitch) के साथ आता है, "Did John run away?" Did n't John run away ?" और यह सीधे (uninverted) अनौपचारिक (informal) प्रतिरूप के व्यतिरेक में है "John ran away ? "John didn't run away ?"

जिन अभिलक्षणों की अभी ऊपर विवेचना की गई है, वे सभी भाषाओं में नहीं मिलते, जबकि अंग्रेजी के पूर्ण वाक्य का अभिलक्षण प्रायः सामान्य

अभिलक्षण है। उदाहरणार्थ, जर्मन भाषा में नकारात्मक क्रियाविशेषण किसी विशेष वाक्य-प्रतिरूप के साथ सम्बद्ध नहीं है : Er kommt nicht [e:r' komt 'nixt] "वह नहीं आता है", और Er kommt bolt [e:r'komt 'balt] "वह शीघ्र आता है"—दोनों एक से हैं। अन्य भाषाओं में निस्सन्देह अंग्रेजी से इस बात में समानता है कि नकारात्मक में कुछ विशेष वाक्य-प्रतिरूप प्रयुक्त होते हैं। फिन्नी भाषा में नकारात्मक वाक्यों की विशेष संरचना है : क्रिया (जिसमें इतालवी की भांति एक वाक्यीय-शब्द में कर्ता और क्रिया-व्यापार अन्तर्विष्ट रहता है) एक विशेष नकारात्मक-धातु है जोकि अन्य धातु के असमापिकावत् रूप से आपरिवर्तित हो सकती है :

luen	मैं पढ़ता हूं।	en lue	मैं नहीं पढ़ता हूं।
luet	तू पढ़ता है।	ct lue	तू नहीं पढ़ता है।
lukee	वह पढ़ता है।	ei lue	वह नहीं पढ़ता है।

मिनामनी में तीन प्रतिरूपों के पूर्णवाक्य मिलते हैं—समस्थापित, कथनात्मक और नकारात्मक—

कथनात्मक	: [pi : w]	"वह आता है"
समस्थापित	: [enu ? pajiat]	"वह—आनेवाला" अर्थात् "वह आ रहा है"
नकारात्मक	: [Kan upianan]	"न वह आ रहा है" (नकारात्मक) अर्थात् "वह नहीं आ रहा है।"

नकारात्मक प्रतिरूप के दो अंश होते हैं—पहला, अपने विभिन्न प्रयत्नों के साथ शब्द [kan] और दूसरा, वाक्य का शेषांश जो विशेष क्रियारूपों द्वारा चिन्हित होता है।

औपचारिक प्रश्नों के लिए पूर्ण वाक्यों के विशेष प्रतिरूप बहुत प्रचलित हैं। जर्मन-भाषा में ऐसा कर्ता-क्रिया रूप प्रयुक्त होता है जिसमें क्रिया कर्ता के पहले आती है, kommt er ? ['komt e:r?] "वह आता है ?" जबकि कथनात्मक Er kommt [e:r 'komt] "वह आता है"। फ्रेंच में भी विशेष प्रश्नात्मक संरचनाएं है : Is John coming के लिए या तो Jean vient-il ? [za vjɛ̃ti ?] "ज़ान आता है वह ?" अथवा Est-ce que

Jean vient? [ɛ s kə za͂ vjɛ] "वह है ज़ान (जो) आता है"। मिनामनी में तीनों पूर्णवाक्य के प्रतिरूपों के अपने-अपने उप-प्रतिरूप हैं :

कथनात्मक	: [pi :?]	"क्या वह आ रहा है ?"
समस्थापित	: [enut pajiat ?]	"वह (प्रश्नात्मक) है वह जो आता है" अर्थात् "क्या वह है जो आ रहा है ?"
नकारात्मक	: [kanɛ : ? upianan ?]	"न (नकारात्मक) वह आता है (नकारात्मक) ?" अर्थात् "क्या वह नहीं आ रहा है ?"

अन्य भाषाओं में औपचारिक हां-या-नहीं प्रश्नों के लिए विशेष वाक्य प्रतिरूप नहीं मिलते किन्तु कुछ में विशिष्ट प्रश्नात्मक शब्दों का प्रयोग होता है, जैसे, लैटिन में venitne ? [we'nit ne ?] "क्या वह आ रहा है ?" और num venit ? "तुम्हारा यह तात्पर्य तो नहीं है कि वह आ रहा है?" (नकारात्मक उत्तर की प्रतीक्षा में)", और इनके विरोध में venit ? "वह आ रहा है ?" यह छोटे शब्दों (अव्ययों) से औपचारिक हां-या-नहीं प्रश्नों को चिन्हित करना अनेक भाषाओं में मिलता है, जैसे, रूसी, चीनी, तगलाग और क्री में।

अधिकांश भाषाएं अंग्रेजी से इस विषय में मिलती हैं कि पूरक प्रश्नों में विशिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है, किन्तु प्रयोग में भिन्नता मिलती है। उदाहरण के लिए, तगलाग और मिनामनी में पूरकप्रश्न सदैव समस्थापित वाक्य है, जैसे, मिनामनी [awɛ:? paj i at ¿] "कौन आनेवाला है" अर्थात् "कौन आ रहा है"।

अंग्रेजी "आज्ञा" प्रतिरूप उद्गारों में प्रयुक्त विशेष वाक्य-प्रतिरूप का एक उदाहरण है। कुछ अन्य भाषाओं में भी कुछ उद्गारों के (भेदों) (प्रकारों) में पूर्णवाक्य के विशेष प्रतिरूप मिलते हैं। मिनामनी में ऐसे दो प्रतिरूप हैं-- एक आश्चर्य (surprise) के लिए जिसका प्रयोग तब होता है जब कोई नयी या अभूतपूर्व घटना हो, और दूसरा निराशा (disappointment) के लिए जिसका प्रयोग तब होता है जब कि आशानुकूल घटित न हो :

आश्चर्य

कथनात्मक : [piasah !] "अच्छा, वह आ रहा है !"

समस्थापित : [enusa ? pajiat !] "अच्छा, यह वह है जो आ रहा है !"

नकारात्मक : [kasa ? upianan !] 'अच्छा, वह नहीं आ रहा है !"

निराशा

कथनात्मक : [piapah !] "किन्तु वह आ रहा है !"
समस्थापित : [enupa ? pajiat !] "किन्तु वह था जो आ रहा था !"
नकारात्मक : [kapa? upianan !] "किन्तु वह नहीं आ रहा है!"

11.4 ऐसा वाक्य जिसमें सर्वाधिक प्रचलित वाक्य रूप न हों अपूर्ण-वाक्य (minor sentence) होता है । कुछ रूप प्रधानतः अपूर्ण-वाक्यों की भांति आते हैं जो असम्बद्ध वाक्य विन्यास (parataxis) के अतिरिक्त कुछ ही अथवा किसी भी रचना में योग नहीं देते, विस्मयादि बोधक अव्यय अथवा (interjections) कहे जाते हैं । ये अव्यय या तो ouch, oh, sh, gosh, hello, sir, Ma'm, yes की तरह के विशेष शब्द होते है अथवा पदसंहिति (गौण विस्मयादि अव्यय- secondary interjections) होते हैं । अधिकतर इनकी रचना विचित्र होती है यथा dear me, goodness me, goodness, gracious, goodness sakes, alive, oh dear, by jolly, you angel, please, thank you, goodbye.

सामान्य रूप से अपूर्ण वाक्य या तो पूरक (completive) लगते हैं अथवा उद्‌गारात्मक (Exclamatory) । पूरक प्रतिरूप में एक ऐसा रूप होता है जो केवल एक स्थिति की संपूर्ति करता है-यथा, पूर्वकथित भाषण, संकेत, अथवा किसी वस्तु की उपस्थितिमात्र की संपूर्ति: This one (यह एक), Tomorrow morning (कल सबेरे), gladly if I can (प्रसन्नतापूर्व यदि मैं कर सकता हूं), whenever you are ready (जब कभी तुम तैयार हो), here (यहाँ), when (कब ?), with whom (किस के साथ ?), Mr. Brown, Mr. Smith, (मिस्टर ब्राउन, मिस्टर स्मिथ) (परिचय देते समय, Drugs (दवाइयां), State street (राजमार्ग) । ये विशेषरूप से किसी प्रश्न के उत्तर स्वरूप उपस्थित होते हैं । इस प्रयोग के लिए हमारे पास विशिष्टपूरक अव्यय है—yes (हाँ) no (नहीं) । यहाँ तक कि इस दृष्टि से भी भाषाओं में वैभिन्य है । फ्रेंच-लोग जैसे नकारात्मक प्रश्न के उत्तर में si (हाँ) कहते हैं यथा "क्या वह नहीं आ रहा है ?"; किन्तु दूसरे प्रकार के प्रश्न यथा "क्या वह आरहा है ?" के उत्तर में oui [wi] हाँ कहते हैं । कुछ भाषाओं में इस प्रकार के अव्यय हैं ही नहीं । पोली सामान्य क्रिया-विशेषणों से—स्वीकारात्मक उत्तर tak इस प्रकार हाँ और नकारात्मक उत्तर

nie[nə] "नहीं" से देता है। फ़ीनी स्वीकारात्मक उत्तर एक साधारण रूप से यथा Tulette-ko kaupungista? Tulemme से देता है। क्या तुम कस्बे से आ रहे हो ?—"हम आ रहे हैं।" और नकारात्मक इसकी नकारात्मक क्रिया से Tunnetteko herra Lehdon?-En (अथवा En tunne) क्या तुम श्री लेहतो (Lehto) को जानते हो ? मैं नहीं (अथवा मैं नहीं जानता हूँ) ।

उद्‌गारात्मक अपूर्ण-वाक्य एक प्रखर उत्तेजना की स्थिति में उच्चारित होते हैं । इनमें अव्यय अथवा वे सामान्यरूप होते हैं जो सर्वाधिक-प्रचलित वाक्य-प्रतिरूपों में नहीं होते और अधिकतर असम्बद्ध-वाक्यविन्यास प्रकट करते हैं: ouch, damn it ! This way please ! एक पदार्थ सूचक रूप जिससे श्रोता का अभिधान होता है अंग्रेजी में श्रोता की उपस्थिति अथवा उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिये प्रयुक्त होता है : John ! little boy ! you with glasses! परसंयोजन के साथ Hello, John! Come here, little boy !

संबोधनात्मक Sir (महाशय) तथा ma'am का इस रूप में विशेष प्रयोग होता है । इसी प्रकार रूसी बिना लिंग भेद के संबोधनात्मक अव्यय [s] का प्रयोग करता है, यथा [da-s] "हाँ महाशय" "हाँ मां" । बहुत-सी भाषाओं में इस प्रयोग के लिए विशिष्ट सम्बोधन रूप हैं, यथा लैटिन Balbus (आदमी का नाम) सम्बोधन Balbe अथवा फाक्स [iʃkwɛ.tike] "स्त्री" सम्बोधन [iʃkwe] तथा [iʃkwɛ:wak] "स्त्रियाँ", सम्बोधन [iʃkwɛ:tike] मिनामनी में सम्बन्धसूचक पदों का विशिष्ट और बहुत-ही नियमित सम्बोधन रूप [n ɛ? n-ɛ h] "मेरी अपेक्षा बूढ़ा भाई" सम्बोधन [nanɛ:?] अथवा [neki:jah] 'मेरी माँ" सम्बोधन [ne ? ɛ : h] । अन्य शब्दों का सम्बोधन रूप में भाषण दीर्घ स्वर के स्थान पर ह्रस्वस्वर के साथ होता है, [mɛtɛ:muh] "स्त्री" सम्बोधन [mɛtɛmuh] । संस्कृत में सम्बोधन बलाघातहीन हैं ।

कभी-कभी हमें सूत्र -प्रतिरूप (§9.9) के अपूर्ण-वाक्य भी मिल जाते हैं जिनका प्रयोग का महत्व लगभग पूर्णवाक्य के ही अनुकूल होता है। अंग्रेजी के उदाहरण हैं: The more you have, the more you want. The more the merrier. First come, first served. Old saint, young sinner.

11.5 अधिकांश भाषाओं में वाक्य चयन-अभिलक्षण से भी लक्षित होता है जो उन सभी अभिलक्षणों से अधिक सामान्य है जिनका हम अबतक विवेचन करते रहे हैं । कुछ भाषाई रूप जिन्हें हम आबद्धरूप (§10.1) कहते

हैं वाक्यस्तर पर कभी नहीं प्रयुक्त होते हैं। अंग्रेजी उदाहरण हैं countess lioness, duchess इत्यादि में-ess [-is] अथवा boyish, childish, greenish इत्यादि में-ish [iʃ] अथवा hats, books, cups इत्यादि में -s [-s]। ये तर्कसंगत भाषाई रूप हैं और इनका एक अर्थ भी होता है किन्तु ये केवल एक बड़े रूप का अंश बनकर ही रचना में उपस्थित होते हैं। वे रूप जो वाक्य स्तर पर आ सकते हैं स्वतन्त्र रूप (free-form) कहे जाते हैं। प्रत्येक भाषा में आबद्धरूप का प्रयोग नहीं होता। उदाहरण के लिए आधुनिक चीनी में इसका नितांत अभाव है।

एक स्वतन्त्र रूप जो पूर्णतया दो अथवा दो से अधिक अपेक्षाकृत कम स्वतन्त्र रूपों से बनता है, उदाहरण के लिए poor John, John ran away वह पदसंहिति ((phrase) होती है। एक स्वतन्त्र रूप जो पदसंहिति नहीं है "शब्द" (word) है। तो 'शब्द' एक ऐसा स्वतन्त्र रूप है जो पूर्णतया (दो या दो से अधिक अपेक्षाकृत कम स्वतंत्ररूपों से नहीं बनता है। संक्षेप में शब्द एक लघुतम स्वतंत्ररूप (minimum free form) है।

क्योंकि वास्तविक भाषण में केवल स्वतंत्र रूप ही पृथक् किये जा सकते हैं भाषा की ओर हमारी भावना में शब्द का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। सामान्य जीवन के लिए शब्द भाषण का अल्पतम खण्ड है। हमारे शब्दकोष एक भाषा के शब्दों की सूची प्रस्तुत करते हैं। भाषा के क्रमबद्ध अध्ययन के अतिरिक्त अन्य सभी उद्देश्यों के लिए यह पद्धति निस्संदेह रूपिमों की सूची प्रस्तुत करने की अपेक्षा अधिक उपयोगी है। भाषाई रूपों के 'शब्दों' में विश्लेषण से हम परिचित भी हैं, क्योंकि प्रथानुसार लिखित अथवा मुद्रित रूप में शब्दों के बीच स्थान छोड़ा जाता है। जिन लोगों ने पढ़ना लिखना नहीं सीखा है, यदि अवसरवश शब्द-विभाजन करना पड़ता है तो वे कठिनाई में पड़ जाते हैं। फ्रेंच की अपेक्षा अंग्रेजी में यह कठिनाई कुछ कम है। यह तथ्य कि शब्दों के बीच में जगह छोड़ना लेखन-परम्परा का अंग बन चुका है, इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है कि वक्ता के लिए भाषण खण्ड के रूप में शब्दों की पहचान अस्वाभाविक नहीं है। वास्तव में कुछ संदेहात्मक स्थिति को छोड़कर, लोग बहुत आसानी से यह विश्लेषण सीख जाते हैं।

अंग्रेज-लोग स्कूली परम्परा में कभी-कभी book, books अथवा do does, did done आदि रूप "एक ही शब्द के विभिन्नरूप" की हैसियत से बोलते हैं। सचमुच ही यह सही नहीं है क्योंकि इन समुच्चयों के सदस्यों के

बीच रूप और अर्थ का अन्तर है। अभी उद्धृत रूप विभिन्न भाषाई रूप हैं और तदनुसार विभिन्न शब्द हैं।

दूसरी स्थितियों में हमारी लेखन-प्रवृत्ति की असगति हमें संशय में डाल सकती है। John's ready में हम John's लिखते हैं जबकि यहाँ ये दो शब्द हैं (John तथा [z] is का वैकल्प), तथा John's hat जहाँ यह एक शब्द है (John और आबद्धरूप [-z] अधिकारसूचक से बना हुआ)। हम the boys लिखते हैं जैसे कि ये दो या तीन शब्द हों, किन्तु यथार्थतः यह केवल एक ही शब्द है क्योंकि इसके संलग्न संरचक हैं the boy तथा अधिकारसूचक [-z], और [-z] आबद्धरूप है। स्पष्टरूप से यह स्थिति the king of England's अथवा the man I saw yesterday's से प्रकट होती है जहां अर्थ से यह प्रकट होता है कि [–z] पूरे पूर्वस्थित पदसंहिति के साथ संरचना बनाता है जिससे कि दोनों एक अकेले बड़े शब्द में मिल जाते हैं।

11.6. फिर भी बहुत-सी भाषाओं में एक ओर शब्द और पदसंहिति में तथा दूसरी ओर शब्द और आबद्धरूप में संगतिपूर्वक प्रभेद कर पाना असंभव है। भाषावैज्ञानिक अनिश्चितकाल तक एक विवेच्य रूप सुनने की प्रतीक्षा नहीं कर सकता जिसका प्रयोग वाक्य की तरह किया गया हो अर्थात् एकाकी रूप में बोला गया हो। कुछ रूपों का प्रयोग कदाचित् ही कभी इस प्रकार होता है। पूछताछ अथवा प्रयोग द्वारा, श्रोताओं से विभिन्न प्रतिक्रियाएं प्राप्त होने की सम्भावना है। क्या the, a, is, and की तरह के अंग्रेजी रूप अकेले बोले जाते है? कोई भी एक वार्तालाप Is ?–No; was की कल्पना कर सकता है। Because (क्योंकि) शब्द महिलाओं का प्रत्युत्तर माना जाता है। एक आकुल श्रोता And ? कहता है। एक हिचकिचाकर बोलनेवाले की हम कल्पना कर सकते हैं जो कहता है The.... और अपने श्रोताओं द्वारा समझ लिया जाता है। इस प्रकार केवल यत्नसाध्य उदाहरणों को छोड़कर, एक भाषा की सामान्य संरचना से वर्गीकरण उपस्थित कर सकता है जो हमारे प्रयोजन के लिये अपेक्षतया अधिक उपादेय हो। the रूप जो शायद ही कभी अकेले बोला जाता है, अंग्रेजी भाषा में लगभग वही काम करता है जो स्वतन्त्र रूप से वाक्यस्तर पर आनेवाले this, that करते हैं। इस समानान्तरता के आधार पर हम the को शब्द के अन्तर्गत रखते हैं :

this thing	:	that thing	:	the thing
this	:	that	:	(the)

दूसरी स्थितियों में कठिनाई ध्वन्यात्मक आपरिवर्तन के कारण है। John's ready में [z], I'm hungry में [m], अथवा Don't का [nt] अंग्रेजी में उच्चारित नहीं हो सकते किन्तु हमें उन्हें शब्द में वर्गीकृत करना होगा क्योंकि वे मात्र उच्चारणीय रूप is, am, not के वैकल्प हैं। फ्रेंच में हमें अकेले स्वनिम का उदाहरण भी मिलता है जो दो शब्दों का प्रतिनिधि है। उदाहरण के लिए पदसंहिति au roi [o rwa] (राजा को) जो दो शब्दों के à [a] को तथा le [lə] "the" के ध्वन्यात्मक आपरिवर्तन से उपस्थित होता है। [o], eau (पानी) तथा haut (ऊँचा) से समध्वनि है।

दूसरी स्थितियों में संदिग्ध रूप आपरिवर्तन के खण्ड न होकर व्याकरणिक चयन के खण्ड हैं और फिर भी उनकी भाषाओं की सम्पूर्ण संरचना को दृष्टि में रखते हुए, उन्हें शब्द रूप में बहुत अच्छी तरह वर्गीकृत किया जा सकता है। फिर फ्रेंच में इस प्रकार के बहुत-से रूप हैं। moi [mwa] 'मैं, मुझे" तथा lui [lyi] "वह, उसे" कुछ संरचनाओं में ह्रस्वतररूपों से विस्थापित होते हैं जो सामान्यतया निरपेक्ष प्रयोग में नहीं मिलते हैं, जैसे je [ʒə] "मैं" me [mə] 'मुझे' *il* [il] वह le [lə] उसे, उदाहरण के लिए je le connais [ʒə l kɔnɛ] 'मैं' उसे जानता हूँ, il me connaît [i m kɔnɛ] "वह मुझे जानता है"। इन संयोजकों (conjuncts) द्वारा निरपेक्षरूपों के विस्थापन का वर्णन आपरिवर्तन-अभिलक्षण की अपेक्षा चयन-अभिलक्षण द्वारा अधिक उचित है। फिर भी संयोजक रूपों को अधिकतर निरपेक्षरूपों के साथ उनकी समानान्तरता के कारण, शब्दों की प्रतीक्षा मिलती है।

इसमें कुछ कम महत्वपूर्ण सीमावर्ती स्थल अध्युल्लेख (hypostasis) (9.7) बदलें में मिलता है जैसे कि जब लड़कियों को उनके teens में कहा जाता है या isms और ologies का प्रयोग किया जाता है।

दूसरी सीमा में हमें वे रूप मिलते हैं जो शब्दों और पदसंहितियों की सीमा पर हैं black bird जैसे रूप द्विशब्दी पदसंहिति (black bird) से मिलता है किन्तु हमें पता चलता है कि अंग्रेजी के संगत वर्णन से इस रूप को एक एकाकी (समास) शब्द मानना पड़ता है। इस उदाहरण में सुस्पष्ट अन्तर है चूंकि black bird में द्वितीय शब्द (bird) में दुर्बल बलाघात है, न कि प्रसामान्य उच्च बलाघात, और यह बलाघात का प्रभेद अंग्रेजी में स्वनिमीय है, और यह बाह्य अन्तर blackbird और black bird के आर्थी अन्तर से सहसम्बद्ध है। अन्तर सदैव ऐसा स्पष्ट नहीं होता है: ice-cream

[ajs, krijm] जो केवल एक उच्च बलाघात से बोला जाता है समासशब्द माना जाता है किन्तु परिवर्त उच्चारण ice cream ['ajs'krijm] जिसमें दो उच्च बलाघात हैं द्विशब्दी पदसंहिति कहलाता है। इसी प्रकार के परिवर्त messenger, boy, lady friend जैसे प्रतिरूपों में मिलते हैं।

बलाघात की यह कसौटी devil-may-care (जैसे a devil-may-care manner में) अथवा Jack-in-the-pulpit (पौधे का नाम) जैसे रूपों में असफल हो जाती है। यदि पहला devil-may-care-ish होता तो हम बिना दुविधा के उसे शब्द मान लेते चूँकि इसका एक संलग्न संरचक आबद्धरूप-ish है। devil-may-care के प्रतिरूप के रूप शब्द (पदसंहितीय पद) माने जाते हैं क्योंकि कुछ अन्य अभिलक्षण ऐसे हैं जो अंग्रेजी भाषा की व्यवस्था में इसे अन्य शब्दों के साथ शब्द स्तर पर रखते हैं। इनमें से एक इनका विचित्र प्रकार्य है। devil-may-care पदसंहिति रूप में कर्त्ता-क्रिया रूप होता है किंतु पदसंहितीय शब्द के रूप में यह विशेषण की स्थिति भरता है। दूसरा अभिलक्षण अविभाज्यता है : पौधानाम jack-in-the-pulpit में यह आपरिवर्तन नहीं हो सकता है कि pulpit के पूर्व शब्द little लगा दें, किन्तु तदनुरूप पदसंहिति में ऐसे तथा अन्य विस्तार सम्भव हैं।

यह वाद का सिद्धान्त कि शब्द के बीच में अन्य रूप नहीं आ सकते हैं प्रायः सार्वभौमिक रूप से ठीक बैठता है। इस प्रकार एक आदमी black—I should say, bluish black-birds आदि कह सकता है किन्तु इसी भांति समास-शब्द black birds के मध्य में अन्य रूप नहीं आ सकते हैं। इस सिद्धान्त के अपवाद इतने विरल हैं कि उन्हें भाषिक व्याधि के समान देखा जाएगा। गॉथी में आबद्ध रूप [ga-] है जो विशेषरूप से क्रियाओं के पूर्व लगता है, जैसे ['se:hwi] 'वह अवश्य देखे', [ga'se: hwi] "वह अवश्य देख सके"। फिर भी कभी-कभी हमें [ga-] और क्रिया के मुख्य अंग के मध्य शब्द प्रविष्ट दिखाई पड़ते हैं, जैसे मार्क 8.23 के अनुवाद में ['frah ina ga-u hwa se: hwi] "उसने उससे पूछा कि [u] क्या उसने कुछ वस्तु [hwa] देखी"

इनमें से कोई भी कसौटी दृढ़ता से प्रयुक्त नहीं होती है। अनेकरूप आबद्धरूप और शब्दों की सीमा पर रहते हैं और कुछ शब्दों और पद-संहितियों की सीमा पर उन रूपों में जो निरपेक्ष स्थितियों में बोले जा सकते हैं और उन रूपों में जो ऐसा नहीं कर पाते हैं, सुदृढ़ अन्तर स्थापित करना असम्भव है।

11.7. शब्द मूलतः एक ध्वन्यात्म इकाई नहीं है। हम विरामों अथवा

अन्य ध्वन्यात्म अभिलक्षणों से अपने उच्चार के उन खण्डों को पृथक्-पृथक् नहीं कर सकते हैं जोकि एकाकीरूप से बोले जा सकते हैं। फिर भी अनेक भांति से विभिन्न भाषाएँ शब्द-इकाई को ध्वन्यात्म मान्यता देती हैं, कुछ फ्रेंच के समान बहुत-ही कम और कुछ अंग्रेजी के समान बहुत अधिक ध्वन्यात्म मान्यता देती हैं।

स्वतन्त्र रूप में शब्द निरपेक्ष स्थिति में बोला जा सकता है, तदनुसार इस पर भी उस भाषा के ध्वन्यात्म प्रतिमान लागू होते हैं। यह निश्चित है कि इसमें कम-से-कम एक ऐसा स्वनिम अवश्य होगा जो प्रसामान्यतया आक्षरिक है, विस्मयादिबोधक, जैसे अंग्रेजी के sh [ʃ], *pst* [pst] कभी-कभी इसका उल्लंघन करते हैं। शब्द के आदिम और अन्तिम व्यंजन और गुच्छ अनिवार्यतः वे ही हो सकते हैं जोकि उच्चार के आदि अथवा अन्त में आ सकते हैं। इस प्रकार कोई भी अंग्रेजी शब्द [ŋ[अथवा [mb] से प्रारंभ नहीं हो सकता है और न [h] अथवा [mb] में समाप्त हो सकता है।

इसके अतिरिक्त अनेक भाषाएं शब्द की ध्वन्यात्म संघटना पर कुछ और नियंत्रण भी स्थापित करती हैं। हमें ऐसा पता लग सकता है कि कुछ मान्य मध्य गुच्छ एकाकी स्वर में कदापि नहीं आ सकते हैं। अंग्रेजी में rash child, give ten, it's very cold, least strong आदि में मिलने वाले मान्य गुच्छ [ʃtʃ, vt, tsv, ststr] आदि और ten night, that time, nab Bill में मिलनेवाले मान्य द्वित्व [nn, tt, bb,] सरल शब्दों के भीतर नहीं मिलते हैं। इसके विपरीत फ्रेंच, [ə] को मध्य में डालकर और फाक्स अथवा समोई जैसी भाषाएं, जिनमें अन्तिम व्यंजन नहीं होता है, पदसंहितियों में उन गुच्छों को मान्यता नहीं देती हैं जो शब्दों में मान्य नहीं हैं।

कुछ भाषाओं में विचित्र नियन्त्रण है, जिसे स्वरसंगति (vowel-harmony) कहते हैं। इसमें स्वरों के कुछ संयोजन मात्र शब्द के पूर्वापर अक्षरों में मान्य हैं। इस प्रकार तुर्की में शब्द के स्वर या तो सबके सब अग्र [i. y, e. ϕ] हैं, जैसे [sevildirememek] "न प्रेम करवा सकना" अथवा सबके साथ पश्च [ï. u. a. o] होते हैं, जैसे [jazïldïramamak] "लिखवा सकने में असमर्थ होना" में।

चीनी में हमें संघटनात्मक शब्द-चिन्हों की चरम सीमा मिलती है। प्रत्येक शब्द में एक अक्षर और दो अथवा तीन मुख्य स्वनिम होते हैं। आदि में एक अनाक्षरिक सरल अथवा संयुक्त स्वनिम आता है, अन्त में एक आक्षरिक सरल अथवा संयुक्त स्वनिम आता है। सुर योजनाओं में से (§7.7) एक सुर योजना

होती है, आदि में अनाक्षरिक नहीं मिलते हैं, और, भाषा में कोई भी आबद्ध-रूप नहीं है । अंग्रेजी और अन्य अनेक भाषाओं में प्रत्येक शब्द एक और केवल एक उच्च बलाघात रखने से चिन्हित होता है (forgiving, convict क्रिया, convict संज्ञा) । इन भाषाओं में से कुछ में शब्द-इकाई इससे भी अधिक स्पष्टतया चिन्हित होती है, उसमें शब्द-बलाघात के स्थान का शब्दादि अथवा शब्दान्त से निश्चित सम्बन्ध होता है । उदाहरण के लिए बोहेमी और आइसलैण्डी में प्रथम अक्षर बलाघातयुक्त होता है, क्री में अन्त से तीसरा (पूर्वोपधा वाला) और पोली में अन्तर से दूसरा (उपधावाला) अक्षर बलाघातयुक्त होता है लैटिन में उपधा पर बलाघात होता है, जैसे amamus [a'ma:mus] "हम प्यार करते हैं", किन्तु यदि इस अक्षर में ह्रस्व स्वर है और उसके बाद एक से अधिक व्यंजन नहीं है, पूर्वोपधा पर बलाघात होता है, जैसे, capimus ['kapimus] "हम लेते हैं" । ऐसी भाषाओं में बलाघात शब्द-लक्षक (word–marker) है और शब्दारम्भ अथवा शब्दान्त सूचित करता है, किन्तु, चूँकि इसकी स्थिति स्थिर है, यह विभिन्न शब्दों को प्रभेदक का कार्य नहीं कर सकता है । इतालवी, स्पेनी और आधुनिक ग्रीक में बलाघात सदैव अन्तिम तीन अक्षरों में से ही किसी पर होता है । प्राचीन ग्रीक में शब्द के अन्तिम तीन अक्षरों में से किसी एक पर सरल बलाघात होता है अथवा अन्तिम दोनों में से किसी एक पर संयुक्त बलाघात होता था और साथ ही साथ इन अक्षरों के मुख्य स्वनिमों की प्रकृति पर आधारित कुछ अन्य प्रतिबन्ध भी होते थे ।

बलाघातप्रयोगी भाषाओं में कुछ, जैसे अंग्रेजी में, शब्द के प्रारम्भ से ही बलाघात होने लगता है यदि शब्द के आदि अक्षर पर बलाघात पड़ता है । तुलना कीजिये, a name और an aim अथवा that scold और that's cold (§7.5) । कुछ अन्य में, जैसे डच, इतालवी, स्पेनी और स्लावी भाषाओं में बलाघात का प्रारम्भ शुद्ध ध्वन्यात्म प्रवृत्तियों से होता है और बलाघातयुक्त स्वर के पूर्ववर्ती व्यंजन से बलाघात प्रारम्भ हो जाता है चाहे वह व्यंजन दूसरे पूर्ववर्ती शब्द का ही अन्तिमांश क्यों न हो, जैसे, इतालवी *un altro* [u'n altro] "दूसरा" । फ्रेंच जैसी भाषा, जहां बलाघात स्वनिम नहीं है, इस भाँति शब्द-इकाई को लक्षित नहीं करती ।

ध्वनि-इकाई का ध्वन्यात्म-अभिज्ञान, जैसा कि ऊपर बताया है मुख्यतया दो घटकों द्वारा उलट-पुलट जाता है । उन शब्दों की सामान्यतया पदसंहितीय

ध्वन्यात्म प्रकृति होती है जिनके चरम-संरचकों में दो अथवा दो से अधिक स्वतन्त्र रूप मिलते हैं। अंग्रेजी में समासशब्दों में वैसे ही मध्यगुच्छ मिलते हैं जैसे पदसंहिति में Stove-tap [vt], Chest-strap [ststr], pen-knife [nn] grab-bag [bb], पदसंहिति-व्युत्पाद्यों में एकाधिक उच्च बलाघात भी मिल सकता है, जैसे, old-maidish ['owld 'mejdiʃ], jack-in-the-pulpit ['dʒɛk in ðɔ 'pulpit]

इनके विपरीत, अन्तर्विष्ट स्थिति में शब्द पर मूर्छन और ध्वन्यात्म आपरिवर्तन की प्रक्रियाएँ भी लागू होती हैं जिसके कारण शब्द-निर्माण के ध्वन्यात्म लक्षण मिट जाते हैं। इस प्रकार पदसंहिति do'nt ['dow nt] में not ने न केवल उच्च बलाघात अपितु आक्षरिकता भी खो दी। इसी प्रकार तुलना कीजिए lock it की locket से, feed her ['fijdɔ] की feeder से, आदि। अंग्रेजी के बलाघातहीन शब्द प्रत्ययी अक्षरों के समान ध्वन्यात्म दृष्टि से हो जाते हैं। at all [ɔ't ɔ:l] के प्रसामान्य उच्चारण में बलाघात at के [t] पर प्रारम्भ होता है। इन अन्तर्विष्ट परिवर्तों पर जिनमें एक शब्द उन ध्वन्यात्म अभिलक्षणों को खो बैठता है जो शब्दों को निरपेक्ष स्थिति में लक्षित करती है, अगले अध्याय में विचार किया जाएगा। फिर भी प्रस्तुत सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि कुछ मामूली ढंग से ये आपरिवर्तित पदसंहितियां शब्द-इकाई के ध्वन्यात्म अभिज्ञान में फिर भी भाग लेती हैं। चूंकि इनमें वे ध्वन्यात्म पूर्वानुपरक्रम मिलते हैं जो एकाकी शब्द के भीतर सम्भव नहीं हैं। इस प्रकार [ownt] का अन्तिम पूर्वानुपरक्रम अंग्रेजी में मान्य है किन्तु यह केवल पदसंहितियों do'nt, won't में ही मिलता है, न कि किसी भी अकेले शब्द में। दक्षिण जर्मन बोलियों में कुछ आद्य गुच्छ, जैसे [tn, tʃt] प्रथम शब्द में ध्वन्यात्म आपरिवर्तनों के कारण पदसंहितियों में मिलते हैं, जैसे, [t nαxt] "रात" [t ʃta:ʃt] "तू खड़ा है" किन्तु ये किसी एक शब्द में नहीं मिलते हैं। उत्तरी चीनी में एक पदसंहिति के अन्त में एक आक्षरिक धन (+) [r] आ सकता है, जैसे [cjaw³ 'mar³] "छोटा घोड़ा", किन्तु ऐसा दो शब्दों के ध्वन्यात्म आपरिवर्तन के फलस्वरूप हो सकता है—हमारे उदाहरण में, [ma³] "घोड़ा", और [r²] "पुत्र, बच्चा, छोटा :"

उन थोड़ी-सी भाषाओं में जहां आबद्ध रूप नहीं मिलते हैं, शब्द की दोहरी महत्ता होती है क्योंकि शब्द केवल स्वतन्त्ररूपों का लघुतम इकाई नहीं होता है अपितु सामान्यरूप से भाषिकरूपों की भी लघुतम इकाई होता है। जिन

भाषाओं में आबद्धरूप मिलते हैं, शब्द की अधिक संघटनात्मक महत्ता है क्योंकि वे संरचनाएं जिनमें स्वतन्त्र रूप पदसंहिति में मिलते हैं उन संरचनाओं से बहुत निश्चयतापूर्वक भिन्न हैं जिनमें शब्द में स्वतन्त्र अथवा आबद्धरूप मिलते हैं। तदनुसार इन भाषाओं के व्याकरण में दो अंश होते हैं—वाक्यप्रक्रिया (syntax) और रूपप्रक्रिया (morphology)। फिर भी, समासशब्दों की संरचनाएं और कुछ सीमा तक पदसंहितीय व्युत्पाद्य मध्यवर्ती स्थिति में हैं।

अध्याय 12

वाक्य-प्रक्रिया

12.1. परम्परा से अधिकांश भाषाओं के व्याकरण पर दो शीर्षकों—वाक्य-प्रक्रिया और रूप-प्रक्रिया के अन्तर्गत विचार किया जाता है। वाक्य-प्रतिरूप जिसका सर्वेक्षण हमने पिछले अध्याय में किया है वाक्यप्रक्रिया शीर्षक के अन्तर्गत आता है; इसी प्रकार स्थानापत्ति के प्रतिरूप (जिस पर आगे हम 15 वें अध्याय में विचार करेंगे) इसी शीर्षक के अन्तर्गत आता है। किन्तु व्याकरणिक संरचनाएं जिन पर हम यहाँ विचार करेंगे अंशतः रूपप्रक्रिया शीर्षक के अर्न्तगत विवेचित होती हैं। इस विभाजन की उपयोगिता, तथा दोनों शीर्षकों के क्षेत्र को लेकर पर्याप्त विवाद हो चुका है। आबद्धरूपों को प्रयोग में लानेवाली भाषाओं की वे संरचनाएं जिनमें आबद्धरूप का योग होता है, उन संरचनाओं से मूलतः भिन्न होती हैं जिनमें सभी संलग्न संरचक स्वतन्त्र रूप होते हैं। तदनुसार हम आबद्धरूप वाली संरचनाओं को रूपप्रक्रिया शीर्षक के अन्तर्गत पृथक् रखते हैं। कठिनाई यह होती है कि कुछ रूपीय संबंध यथा he और him का संबंध आबद्धरूपों के प्रयोग से संबंधित है, जबकि इन रूपों के बीच का अर्थभेद वाक्यीय संरचनाओं के आधार पर परिभाषित हो सकता है। उदाहरण के लिए he का प्रयोग कर्ता के रूप में (he ran) और him का प्रयोग भोक्ता के रूप में (hit him) होता है। फिर भी परम्परागत विभाजन तर्कसंगत है। इन स्थितियों में केवल यह होता है कि रूपीय संरचना से सम्बद्ध अर्थ केवल व्यावहारिक जीवन के अनुसार परिभाषा-साध्य न होकर वाक्यीय संरचना के अनुसार परिभाषासाध्य होते हैं। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि वाक्यीय संरचनाएं वे संरचनाएँ हैं जिनका कोई भी संलग्न संरचक आबद्धरूप न हो। रूपप्रक्रिया और वाक्यप्रक्रिया के बीच की उभयनिष्ठ स्थितियां मुख्यतः समासों और पदसंहिति-शब्दों के क्षेत्र में उपस्थित होती हैं।

12.2 एक भाषा के स्वतन्त्ररूप (शब्द और पदसंहिति) वृहत्तर स्वतन्त्र रूपों (पद-संहितियों) में अभिव्यक्त होते हैं और ये रूप मूर्छन, ध्वन्यात्म आपरिवर्तन, चयन, तथा क्रम के विन्यासिमों से व्यवस्थित होते हैं। ऐसे विन्यासिमों का

अर्थवान् पुनरावर्ती समुच्चय वाक्यीय-संरचना (syntactic construction) है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी कर्ता-क्रिया संरचना निम्न पदसंहितियों में मिलता है :

John ran
John fell
Bill ran
Bill fell
Our horses ran away

इन उदाहरणों में हमें चयन का विन्यासिम दिखाई पड़ता है। इनमें एक संरचक (John, Bill, our horses) एक बड़े वर्ग का रूप है जिसे हम कर्ता-व्यंजक (nominative expression) कह सकते हैं। ran अथवा very good जैसे रूप इस प्रकार प्रयुक्त नहीं हो सकते। दूसरा संरचक (ran, fell, ran away) एक अन्य महत्तर वर्ग का रूप है जिसे हम समापिका-क्रिया व्यंजक कहते हैं; John अथवा very good जैसे रूप इस प्रकार प्रयुक्त नहीं हो सकते। दूसरे, हम यहां क्रम के विन्यासिम को देखते हैं : कर्ताव्यंजक, समापिका क्रिया व्यंजक के पहले आता है। हमें यहाँ इससे रचना के बहुत-से अन्य प्रतिरूपों तथा उपप्रतिरूपों की जांच के लिए रुकने की आवश्यकता नहीं है जो भिन्न अथवा अतिरिक्त विन्यासिम प्रदर्शित करते हैं। स्थूलरूप से संरचना का अर्थ यह है कि पदार्थ सूचक व्यंजक के नाम से जो कुछ भी पुकारा जाता है वह एक कर्ता होता है जो समापिका क्रिया व्यंजक से पुकारी जानेवाली क्रिया को करता है। अंग्रेजी कर्तृ-क्रिया संरचना के दो संलग्न संरचक एक दूसरे से विस्थापित नहीं किए जा सकते। हम कहते हैं कि संरचना में दो स्थान हैं जिन्हें हम कर्ता-स्थान तथा क्रिया-स्थान कह सकते हैं। कुछ अंग्रेजी शब्द और पदसंहितियां कर्ता-स्थान में आ सकते हैं और कुछ अन्य, क्रिया-स्थान में। वे स्थान जहां एक रूप आ सकते हैं उस रूप के प्रकार्य (functions) कहलाते हैं अथवा समूहतः उसका प्रकार्य होता है। वे सारे रूप जो इस रीति से एक निश्चित स्थान को भर सकते हैं एक रूपवर्ग बनाते हैं। इस प्रकार वे सारे अंग्रेजी शब्द और पदसंहितियां जो कर्ता-क्रिया संरचना में कर्त्ता के स्थान पर आते हैं एक बड़ा रूपवर्ग बनाते हैं और हम उन्हें कर्ता-व्यंजक कहते हैं। इसी प्रकार वे सारे अंग्रेजी शब्द और पदसंहितियां जो कर्ता—क्रिया संरचना में क्रिया-स्थान में आते हैं एक दूसरा बड़ा रूपवर्ग बनाते हैं जिन्हें हम समापिका क्रिया-व्यंजक कहते हैं।

12.3 चूंकि पदसंहितियों के संरचक स्वतन्त्र रूप होते हैं, एक वक्ता उन्हें

विरामों (pauses) द्वारा पृथक् कर सकता है। विराम अधिकतर अपरिच्छेदक होते हैं। वे मुख्यरूप से उसी स्थिति में आते हैं जब संरचक लम्बी पदसंहितियां हों अंग्रेजी में सामान्यत: उनके पहले विराम सुरक्रम आता है। हमने §11.1 में देखा है कि स्वतन्त्ररूप जो अन्य किसी संरचना द्वारा संगुम्फित नहीं होते हैं वे असम्बद्ध वाक्यविन्यास, केवल ध्वन्यात्म वाक्यान्त के अभाव, द्वारा संगुम्फित होते हैं, जैसे, It's ten o'clock [,] I have to go home [.] सामान्य अंग्रेजी असम्बद्ध वाक्यविन्यास में, संरचकों के बीच विराम सुर दिखाई पड़ता है किन्तु एक प्रकार का संवृत-विराम बिना विराम सुरक्रम (अनुतान) के भी मिलता है जैसे please come अथवा yes sir.

एक विशेष प्रकार का असम्बद्ध वाक्यविन्यास, अर्ध-निरपेक्ष (semi-absolute) रूपों का प्रयोग है जो व्याकरण तथा अर्थ की दृष्टि से उस रूप के कुछ भाग की आवृत्ति करता है जिसके साथ वे असम्बद्ध वाक्यविन्यास में जुड़ते हैं, यथा John, he ran away। फ्रेंच में यह प्रतिरूप नियमत: कुछ विशेष प्रकार के प्रश्नों में प्रयुक्त होता है यथा Jean quand est-il venu ? [ẑ ã kãt ɛt i vny ?] (जान, वह कब आया ?)।

अन्त:निक्षेप (parenthesis) एक प्रकार का असम्बद्ध वाक्यविन्यास है, जिसमें एक रूप दूसरे रूप के भीतर निक्षिप्त रहता है। साधारणत: अंग्रेजी में अन्त:निक्षिप्तरूप के पश्चात् और पूर्व विराम-सुरक्रम आता है: I saw the boy [,] I mean Smith's boy [,] running across the street [.] Won't you please come के तरह के रूप में, बिना विराम सुरक्रम के please संवृत (close) अन्त:निक्षेप है।

समानाधिकरण (apposition) का प्रयोग तब होता है जब असम्बद्ध वाक्यविन्यास का बद्ध रूप अर्थ की दृष्टि से तो नहीं किन्तु व्याकरण की दृष्टि से समान हो। उदाहरणार्थ John [,] the poor boy जब समानाधिकरणी वर्ग अन्तर्विष्ट स्थानों में प्रकट होते हैं तब इनमें से एक सदस्य अन्त:निक्षेप के समान होता है जैसे John [,] the poor boy [,] ran away [.] अंग्रेजी में हमें दृढ (close) समानाधिकरण भी मिलता है जिसमें विराम सुरक्रम नहीं होता यथा King John, John Brown, John the Baptist, Mr. Brown, Mount Everest.

बहुधा भाषिकेतर तत्वसंरचना में बाधा डालते हैं। जो कुछ एक वक्ता ने कहा है वह हर दशा में अर्थपूर्ण है, केवल प्रतिबंध यह है कि उसने पहले एक

मुक्तरूप उच्चरित कर दिया हो । वागवरोध (aposiopesis) की स्थिति में वक्ता या तो अपनी बात समाप्त कर देता है अथवा टोका जाता है : I thought he--(मैं सोचता था वह-) । क्रमदोष (ana-colouthon) में वह दुबारा आरंभ करता है : It's high time we--oh, well, I guess it won't matter (बहुत बुरा समय है, हम-ओह, अच्छा, मेरा अनुमान है कि इससे कोई बात नहीं) । जब एक वक्ता दुविधा में पड़ जाता है, अंग्रेजी तथा कुछ अन्य भाषाएं एक विशेष अन्तःनिक्षेप रूप प्रस्तुत करती हैं। द्विविधात्मकरूप (hesitation-forms) यथा–Mr.–ah– Sniffen अथवा Mr..... what you may call him–Sniffen अथवा that thing--*a*majig–transmitter.

12.4. मूर्छन तथा ध्वन्यात्म परिवर्तन के अभिलक्षण का बहुत-सी वाक्य-संरचनाओं में पर्याप्त योग होता है, इन्हें हम संधि (sandhi) के नाम से जानते हैं । एक शब्द अथवा पदसंहिति का एकाकी रूप में बोला जानेवाला रूप निरपेक्ष रूप (absolute-form) होता है । वे रूप जो अन्तर्विष्ट स्थान में आते हैं इसके संधिरूप (sandhi-form) होते हैं । इस प्रकार अंग्रेजी में अनिश्चयवाचक आर्टिकल का निरपेक्ष रूप ['ej] है । यह रूप अन्तर्विष्ट अवस्था में तभी प्रकट होता है जबकि आर्टिकल बलात्मक तत्व के रूप में हो और परवर्ती शब्द व्यंजन से आरम्भ होता हो : यथा "not *a* house, but *the* house" । यदि परवर्ती शब्द के आदि में स्वर हो तो हमें a की जगह एक संधिरूप an ['ɛn] मिलता है : यथा "not *an* uncle, but *her* uncle."

मूर्छन का अभिलक्षण इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि जब a और an एक बलात्मक तत्व के रूप में नहीं होते तो ये बलाघातहीन अक्षर के रूप में बोले जाते हैं : यथा a house [ə'haws] an arm [ən 'a:m] । अंग्रेजी में निरपेक्षरूप में उच्च बलाघात होता है अतएव हम कह सकते हैं कि बिना उच्च बलाघात के संधिरूप में एक शब्द इस प्रकार बोला जाता है जैसे कि यह दूसरे शब्द का अंश हो । बहुत-सी भाषाएं इस प्रकार के संधियों का प्रयोग करती हैं । उन रूपों को हम स्वराघातहीन रूप (atonic) के नाम से जानते हैं । यह पद पूर्णरूप से इसलिए उपयुक्त नहीं है कि इसका वैशिष्ट्य सदा केवल बलघातहीनता नहीं है । फ्रेंच पदसंहिति l'homme [l ɔm] (आदमी) में अव्यय (आर्टिकल) le [lə] स्वराघातहीन है क्योंकि इसका संधिरूप [l] ध्वन्यात्म

प्रतिमान (स्वर के अभाव) के कारण अकेले नहीं बोला जा सकता था। पोली पदसंहिति ['do nuk] ('पैरों पर') में पूर्वसर्ग do स्वराघातहीन है। संक्षेप में ऐसा इसलिए है कि इस पर बलाघात है और इस भाषा में बलाघात हर शब्द के उपान्त्य अक्षर पर होता है और do पर अवरोह केवल इसलिए होता है कि यह शब्द अनुगामी शब्द का अंश समझा जाता है।

एक स्वराघातहीन रूप जो अनुगामी शब्द का अंश समझा जाता है—अब तक के हमारे उदाहरणों में यही स्थिति है—पर-युक्त (proclitic) होता है। एक स्वराघातहीन रूप जो पूर्वगामी शब्द के अंश जैसे रूप में आता है पूर्व युक्त (enclitic) कहा जाता है। इस प्रकार I saw him [aj 'sɔ: im] में [aj] परयुक्त और [im] पूर्वयुक्त है।

संधि, जिसके अनुसार a, an द्वारा विस्थापित होता है और संधि जिसके अनुसार यह तथा दूसरे शब्द पदसंहिति में बलाघातहीन रहते हैं, नित्य (अविकल्पी) संधि (compulsory sandhi) के उदाहरण हैं। अन्य अंग्रेजी संधिवृत्तियों में विकल्प है क्योंकि वे उन अपरिवर्ती परिवर्तों के समानान्तर होती हैं जो बाह्य (formal) या उच्छ्रित (elevated) अभिधान के अनुसार होती हैं। उदाहरण के लिए him में [h] का लोप कुछ अधिक उच्छ्रित परिवर्त I saw him [aj 'sɔ: him] में नहीं दिखाई पड़ता। did you ? ['didzuw ?], won't you ['wowntʃuw], at all [ə't ɔ:l] (अमेरिकन अंग्रेजी में [t] के जिह्वा के सघोष परिवर्त के साथ) के संधिरूपों के अतिरिक्त हमें और भी अधिक परिष्कृत परिवर्त्य ['did juw ? 'wownt juw ? ət 'ɔ:l] में प्राप्त होते हैं।

ऐसा भी हो सकता है कि संधिरूपों को उनके मूलरूपों में लेने पर इनका उच्चारण नहीं किया जा सके। अंग्रेजी के बहुत-से उदाहरणों में यही स्थिति है :

निरपेक्षरूप		संधिरूप	
is	['iz]	[z]	John's ready
		[s]	Dick's ready
has	['hɛz]	[z]	John's got it
am	['ᵋm]	[m]	I'm ready
are	['a:]	[ə]	we're waiting

have	['hɛv]	[v]	I've got it
had	['hɛd]	[d]	He'd seen it
would	['wud]	[d]	He'd see it
will	['wil]	[l]	I'll go
		[l̩]	That'll do
them	['ðem]	[əm]	Watch 'em
not	['nɔt]	[n̩t]	It isn't
		[nt]	I won't
		[t]	I can't
and	['ɛnd]	[n̩]	bread and butter

फ्रेंच-भाषा में संधि की बहुलता है। इसी प्रकार अव्यय (आर्टिकल) *la* [la] (स्त्री०) का [a] स्वर अथवा संध्यक्षर के पूर्व लुप्त हो जाता है, जैसे la femme [la fam] (स्त्री) किन्तु l'encre [l'ãkr] "रोशनाई", l'oie [l wa] "हंस", । विशेषण ce [sɔ] 'यह' (पुं०) के पश्चात् इन्हीं ध्वनियों अर्थात् स्वर और संध्यक्षर के पूर्व, [t] ध्वनि आती है ce couteau [sə kuto] "यह चाकू", किन्तु cet homme [sət ɔm] "यह आदमी"। बहुवचन सर्वनाम में क्रिया के आदिस्वर के पूर्व [z] जुड़ता हैः vous faites [vu fɛt] "तुम बनाते हो", किन्तु vous êtes [vuz ɛ:t] "तुम हो (आप हैं)।" बहुवचन संज्ञा के आपरिर्वतित रूपों में भी इसी प्रकार जुड़ता है : les femmes [le fam] स्त्री, किन्तु les hommes [lez ɔm] "आदमी (बहु०)"। उत्तम पुरुष या मध्यम पुरुष क्रिया में [z] जुड़ता है, अन्य पुरुष में कुछ विशेष स्वरों के पूर्व [t] जुड़ता है; *va* [va] "तुम जाओ", vas-y [vaz i] 'तुम वहां जाओ'; elle est [ɛl ɛ] "वह (स्त्री०) है", किन्तु est elle ? [ɛt ɛl ?] "क्या वह (स्त्री०) है ?"। कुछ थोड़े से पुंल्लिंग विशेषणों में स्वर के पूर्व संधि-व्यंजन जुड़ते है : un grand garçon [œ̃ grã garsõ] "एक बड़ा लड़का", किन्तु un grand homme [œ̃ grãt ɔm] "एक बड़ा आदमी"।

उन भाषाओं में जिनमें सुर का भेद होता है। सुर का आपरिवर्तन संधि में योग दे सकता है। इस प्रकार चीनी में निरपेक्ष रूप ['i¹] एक के अतिरिक्त [ˌi⁴phi²ma³] "एक घोड़ा", और [i²ko 'ʒən²] "एक आदमी" में भी संधिरूप है।

शब्द के आदि स्वनिम अन्त्य स्वनिम की अपेक्षा संधि-आपरिवर्तन कम होता है। ऐसा केल्टी भाषाओं में होता है, : यथा आधुनिक आयरी में :—

निरपेक्षरूप	संधिरूप	
['bo:] गाय	[an 'vo:]	गाय
	[ar 'mo:[	हमारी गाय
['uv] अण्डा	[an 'tuv]	अण्डा
	[na 'nuv]	अण्डों का
	[a 'huv]	उसके (स्त्री०) अण्डे
['ba:n] सफेद	['bo: 'va:n]	सफेद गाय
['bog] नरम	['ro: 'vog]	बहुत नरम
['briʃ] तोड़ना	[do 'vriʃ]	तोड़ा था

12.5 अबतक के हमारे उदाहरण, कुछ निश्चित रूपों और संरचनाओं के विचित्र, विशेष (special) अथवा अनियमित (irregular) स्थितियों को ही स्पष्ट करते हैं। सामान्य (General) अथवा नियमित (regular) संधि, किसी लघु पदसंहिति के किसी एक तथा सभी शब्दों पर लागू होती है। अंग्रेज़ी के कुछ रूपों में यथा न्यू इंग्लैण्ड और दक्षिणी ब्रिटिश के उन शब्दों में जिनमें निरपेक्ष स्थिति में अन्त्यस्वर होता है, आदिस्वर के पूर्व [r] जुड़ जाता है : water ['wɔ:tə] किन्तु the water is (ðə'wɔ:tər iz), idea [aj 'diə] किन्तु the idea is[ðij aj'diər iz]. जब फ्रेंच में तीन व्यंजन साथ आते हैं, शब्दान्त में [ə] जुड़ जाता है। porte bien [pɔrtebjɛ] "अच्छी तरह ढोता है" पदसंहिति में porte [pɔrt] "ढोता है" तथा bien [bjɛ] "अच्छा" है। अब हम एक शब्द लें जिसके आदिअक्षर में निरपेक्ष-स्थिति पर एक [ə] आता है। यह [ə] इस कारण आया था कि शब्द में कोई अन्य आक्षरिक नहीं था, अथवा [ə] के बिना वहाँ एक अमान्य गुच्छ (8.6) बन जाता। अब यही शब्द जब पदसंहिति में आता है और वहां कोई अमान्य गुच्छ नहीं बनता है, तो इसका [ə] लुप्त हो जाता है। जैसे, le [lə] किन्तु l' homme [l ɔm] "आदमी", cheval [ʃəval] घोड़ा, किन्तु un cheval [œʃval] "एक घोड़ा" je [ʒə] "मैं", ne [nə] "नहीं", le [lə] "यह" demande [dəmad] "पूछना", किन्तु je ne le demande pas [ʒe n lə dmad pa] "मैं यह नहीं पूछता हूँ" तथा si je ne le demande pas [si ʒnə l dɔmad pa] "यदि मैं यह नहीं पूछूँ"।

संस्कृत में सामान्य संधि की बहुलता है । उदाहरण के लिए निरपेक्ष रूप का अन्त्य [ah] निम्नलिखित संधि-विकल्पों में प्रकट होता है : निरपेक्ष 'देव' (एक देवता), संधिरूप 'देवस्तत्र' ("देवता वहाँ"); देवश्चरति "देवता घूमता है" "देव एति" "देव जाता है" 'देवो ददाति' "देव देता है" साथ ही 'अत्र' के पूर्व, परवर्ती आदि-वर्ण में भी परिवर्तन होता है : 'देवोऽत्र' (देव यहां)। फिर भी कुछ शब्द भिन्न ढंग से आचरण करते हैं जैसे 'पुनः' से "पुनर्ददाति" "वह फिर देता है", 'पुनरत्र' "फिर यहां"। अपवादी शब्द कुछ संरचनात्मक अभिलक्षण से पहचाने जा सकते हैं। इसी प्रकार कुछ डच उच्चारणों में निरपेक्ष रूप heb ['hep] "रखना" तथा *stop* [stop] "रुकना" किन्तु सन्धिरूप hebik ['hebek] stopik ['stopek] "क्या मैं रुकता हूँ"। वे रूप जो संधि में घोष व्यंजन-वाले होते हैं शब्दान्त न आनेपर घोषत्व बनाए रखते हैं, यथा hebben ['hebe] "रखना", stoppen ['stope] "रुकना" के व्यतिरेक में। इस प्रकार के रूपीय अभिलक्षणों पर आधारित संधिप्रभेद अवशिष्ट-संधि (reminiscent sandhi) कहे जा सकते हैं।

किसी भाषा की पदसंहिति में मध्यसीमाँकन के अतिरिक्त शब्दान्त को भी संधि सीमित कर सकती है । इस प्रकार पूर्वानुपरक्रम 'त' संस्कृत में म य में मान्य है यथा 'पतति' "वह गिरता है", किन्तु 'त' शब्दान्त में संगुम्फित पदसंहिति में स्वर के पूर्व 'द्' से विस्थापित हो जाता है : निरपेक्ष 'तत्' "वह" किन्तु 'तदस्ति' "वह है" ।

12.6. अधिकांश भाषाओं की वाक्य-प्रक्रिया में चयन विन्यासिम का बहुत महत्त्व होता है। वाक्यप्रक्रिया में अधिकतर उन्हें परिभाषित किया जाता है। उदाहरणार्थ वाक्य-प्रक्रिया विवरण प्रस्तुत करती है कि किन परिस्थितियों में (किन सहवर्ती रूपों अथवा यदि सहवर्तीरूप भी वही हो, किस अर्थभेदक के साथ) भिन्न रूपवर्ग (यथा सामान्य तथा सम्भावनार्थ क्रियाएं अथवा सम्प्रदान तथा कर्मबोधक संज्ञाएं इत्यादि) में प्रकट होते हैं। हमने देखा है कि चयन विन्यासिम रूपवर्ग को सीमित करता है । ये वर्ग उन भाषाओं में जो चयन-विन्यासिम का व्यवहार करती हैं, बहुलता से मिलते हैं । किसी भाषा की वाक्यीय संरचना स्वतंत्र रूपों के एक बड़े रूपवर्ग को पृथक् करती है जैसे कि अंग्रेजी में कर्ताव्यंजक अथवा समापिका क्रिया-व्यंजक । क्योंकि विभिन्न भाषाओं की कर्तृसंरचनाएं भिन्न हैं उनके रूपवर्ग भी भिन्न हैं। हम देखेंगे कि

एक भाषा के बड़े रूप वर्ग, बहुत आसानी से शब्दवर्गों (यथा परम्परानुगामी शब्दभेद parts of speech) के संदर्भ में वर्णित हो सकते हैं क्योंकि एक पद-संहिति का रूपवर्ग सामान्यतः एक या एकाधिक उन शब्दों से निर्धारित होता है जो उसमें प्रकट होते हैं।

उन भाषाओं में जो चयन विन्यासिम का व्यापक व्यवहार करती है बड़े रूपवर्ग छोटे उपवर्गों में विभाजित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी कर्ता-क्रिया संरचना सामान्य चयन के संयोजन के साथ ही उसी प्रकार के कुछ विशिष्ट विन्यासिम को प्रदर्शित करती है। कर्ता व्यंजक John अथवा that horse हम समापिका क्रिया व्यंजक runs fast से जोड़ सकते हैं किन्तु समापिका क्रिया व्यंजक run fast से नहीं जोड़ सकते। कर्ता व्यंजक John and Bill अथवा horses के साथ विपरीत चयन (reverse selection) जुड़ता है। तदनुसार इन दोनों रूपवर्गों में से प्रत्येक का दो रूप वर्गों में विभाजन हमें दिखाई पड़ता है जिसे हम एकवचन और बहुवचन कहते हैं। एकवचन कर्ता व्यंजक एकवचन समापिका क्रिया व्यंजक से संबद्ध होता है और बहुवचन कर्ता व्यंजक केवल बहुवचन क्रिया व्यंजक के साथ संबद्ध होता है। इन उपवर्गों का अर्थ के आधार पर व्याख्या से काम नहीं चलेगा—wheat grows किन्तु oats grow को साक्ष्य के लिए लिया जा सकता है। कुछ और आगे के परीक्षण से हमें चयन से और भी बहुत-से प्रकार देखने को मिल जाते है: (१) बहुत-से समापिका क्रियाव्यंजक यथा can, had, went किसी भी कर्ता के साथ आते हैं, (२) run : runs जैसे बहुत-से अभी वर्णित दोहरे चयन की स्थिति प्रकट करते हैं। was : were दोहरे चयन की स्थिति को प्रकट करते हैं जिनका पहले वाले से मेल नहीं खाता (४) अन्त में एक am : is : are, तिहरे चयन की स्थिति प्रकट करते हैं। एक विशिष्ट रूप जो कर्ता I का सहवर्ती है, संक्षेपतः कर्तारूप जिससे कि (२) और (३) मेल नहीं खाते।

	(1)	(2)	(3)	(4)
A.	I can	I run	I was	I am
B.	the boy can	the boy runs	the boy was	the boy is
C.	the boys can	the boys run	the boys were	the boys are
	A=B=C	A=C	A=B	

इस प्रकार कर्ता व्यंजकों के बीच तथा समापिका क्रिया व्यंजकों के बीच एक त्रिविध उपविभाजन पाते हैं जो चयन विन्यासिम के कारण हैं। कर्ता व्यंजकों के बीच उपवर्ग A में केवल I रूप आता है, उपवर्ग B में वे रूप आते हैं जो समापिका क्रिया से जुड़े हुए हैं यथा runs, was, is और उपवर्ग C में वे रूप आते हैं जो समापिका क्रिया run, were, are से जुड़े हुए हैं। वास्तव में हम अपने तीन उपवर्गों की परिभाषा तीन समापिका क्रिया रूपों am : is : are के चयन के आधार पर कर सकते हैं। दूसरी ओर हम समापिकाक्रिया व्यंजकों के उपवर्गों की परिभाषा के अन्तर्गत यह बताते हैं कि किस कर्ता व्यंजक के साथ (यथा I : the boy : the boys) वे आते हैं।

सिद्धान्ततः इस प्रकार की स्थितियों में सीमित प्रतिरूपों का चयन अन्तर्विष्टी प्रतिरूप से भिन्न नहीं है जिनके द्वारा अंग्रेजी भाषा कर्ता-व्यंजक तथा समापिकाक्रिया व्यंजक के समान बड़े रूपवर्गों को पृथक् करते हैं किन्तु विस्तार में कुछ भिन्नताएं हैं। चयन का अधिक सीमित प्रतिरूप जिसके द्वारा बड़े रूपवर्ग चयनात्मक प्रतिरूपों में उपविभाजित होते हैं, अन्विति (agreement) कहलाते हैं। स्थूलरूप में बिना वास्तविक सीमा के हमें तीन प्रकार की अन्विति मिलती है।

12.7 हमारे उदाहरण में अन्विति बहुत-ही सरल प्रकार की है, जिसे सामान्यतः समन्विति (concord) अथवा congruence कहा जाता है। यदि कर्ता उपवर्ग A का रूप है तो क्रिया भी अवश्य ही उपवर्ग A की होनी चाहिए और इसी प्रकार आगे भी। भाषा की संरचना में कभी-कभी उपविभाजनों में से एक, परिस्थिति के भिन्न होने पर भी अभिज्ञान कर लिया जाता है। इस प्रकार कर्ता व्यंजक के B और C वर्गों के साथ विशेषक this और that किन्तु C वर्ग के साथ these और those. इस प्रकार हम कह सकते हैं this boy, this wheat किन्तु these boys, these oats।

तदनुसार हम कर्ता व्यंजकों के एकवचन और बहुवचन में विभाजन को समापिकाक्रिया व्यंजक की अपेक्षा आधारभूत रूप में परखते हैं और कहते हैं कि समापिकाक्रिया व्यंजक कर्ता व्यंजक से समन्विति रखता है। इसी तर्क के आधार पर हम यह भी कहते हैं this, that, these, those रूप सहवर्ती पदार्थसूचक (substantive form) के साथ समन्विति रखता है। बहुल-सी भारतीय भाषाओं के बिशेषणों का रूप व्यंजक संज्ञा के विभिन्न

उपवर्गों (वचन, लिंग, कारक) के साथ समन्विति रखता है। जर्मन der knabe [der 'kna:be] "लड़का", ich sehe den knaben [ix'ze:-e den'kna:ben] "मैं लड़के को देखता हूँ", die knaben [di : 'kna : ben] "लड़के", जहाँ der, den, die का चयन संज्ञा के उपवर्गों (एक-वचन, बहुवचन और कर्तृ तथा कर्म) के साथ समन्विति रखता है। das Haus [das 'haws] "घर" में das के बदले der रूप तथा कथितलिंग वर्गों में विभाजित जर्मन संज्ञाओं की समन्विति में लिया गया है। ये लिंग ऐच्छिक वर्ग हैं जिनमें हर एक कुछ खास तरह के सहवर्ती शब्दों में समन्विति रूप की अपेक्षा रखता है। जर्मन में तीन लिंग-वर्ग हैं। इनमें से हर एक के लिए यहाँ पदसंहितियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं जिससे निश्चयबोधक अव्यय और विशेषण Kalt 'ठण्ड" की समन्विति अभिलक्षित होती है :

पुंल्लिंग : der hut [der'hu:t] टोपी (हैट), Kalter Wein [ˌKalterˈvajn] "ठण्डी शराब"

स्त्रीलिंग : die Uhr [di : 'U:r.] 'घड़ी' 'Kalte Milch [ˌKalte ˈmilx] "ठण्डा दूध"

नपुंसक लिंग : das Haus [das ˈhaws] "घर" Kalte Wasser [ˌKaltes ˈVaser] "ठण्डा जल"

फ्रेंच में दो लिंग होते हैं, पुंल्लिंग le couteau[lə kuto] "चाकू" तथा 'स्त्रीलिंग' la fourchette]la furʃɛt] "काँटा (फोर्क)" बान्टू परिवार की कुछ भाषाओं में संज्ञाओं के बीस लिंग वर्ग तक पाए जाते हैं।

12.8. अन्य स्थितियों में चयन विन्यासिम, रूप का वाक्यीय स्थान निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए हम I know किन्तु watch me, beside me कहते हैं। रूपों में I (he, she, they, we) और me (him, her, them, us) के बीच का विकल्प रूप स्थान पर निर्भर करता है। I-वर्ग कर्तृ-स्थान में आता है me-वर्ग क्रिया-लक्ष्य संरचनाओं में लक्ष्य के स्थान (watch me) में तथा सम्बन्ध-अक्ष (beside me) (relation-axis) में अक्ष-स्थान में आता है। इस प्रकार का चयन 'अभिशासन' (government) कहा जाता है। सहवर्तीरूप (know, watch, beside आदि) शासित करता है (अथवा अपेक्षा रखता है अथवा साथ लेता है) रूप (I अथवा me)। समन्विति की तरह का अभिशासन बहुत-सी भाषाओं में बड़ा महत्व रखता है। इस प्रकार लैटिन में विभिन्न क्रियाएं पदार्थसूचक

लक्ष्य में विभिन्न कारक रूपों को अभिशासित करती है। videt bovem "वह बैल देखता है" nocet bovi "वह बैल को क्षति पहुंचाता है" ūtitur bove "वह बैल को काम में लाता है", meminit bovis "वह बैल को याद करता है।" इसी प्रकार बहुत-से प्रधान उपवाक्य विभिन्न अप्रधान क्रियारूपों को शासित कर सकते हैं। यथा फ्रेंच में je pense qu'il vient [ze pas K i vjɛ] "मैं सोचता हूँ कि वह आ रहा है" किन्तु je ne pense pas qu-il vienne [ze n pas pa ki vjɛn] "मैं सोचता हूँ कि वह आ रहा है।"

अभिशासन से मिलते-जुलते चयन के कुछ अभिलक्षणों द्वारा बहुत-सी भाषाओं में वस्तुओं का अस्तित्व और अनस्तित्व का पता लगता है। अंग्रेजी में हम कहते हैं he washed him (उसने उसे धोया) जब कर्ता और लक्ष्य दोनों एक नहीं होते हैं, किन्तु जब वे दोनों एक ही व्यक्ति होते हैं तो हम कहते हैं he washed himself (उसने स्वयं को धोया) (एक आत्मवाचक रूप)। इसी प्रकार स्वीडी, कर्ता और धारक (possessor) एक हैं या पृथक्-पृथक् इसका भेद करती है। han tog sin hatt [han 'to:g si:n 'hat] उसने अपना हैट ले लिया" तथा han tog hans hatt [hans 'hat] "उसका (किसी दूसरे का) हैट"। अल्गोन्की भाषाएं संदर्भ में अन्य-पुरुष जीवधारी के विभिन्न रूपों का प्रयोग करती है। क्रीभाषा में यदि हम एक आदमी के संबंध में कहें और तब दूसरे आदमी के सम्बन्ध में तो हम पहले वाले रूप को ['na : pe : w] "आदमी" और दूसरे को तथाकथित अतिक्रमितरूप में ['na : pe : wa] कहते हैं। इस प्रकार एक भाषा निम्नलिखित कारकों में भेद करती है जहाँ हम प्रधान पुरुष को A और दूसरे को अप्रधान (अतिक्रमित) B से सम्बोधित करेंगे।

['utinem u'tastutin] उसने (A) लिया उसका (A का) हैट
['utinam utastu 'tinijiw] उसने (A) लिया उसकी (B का) हैट
[utina 'mijiwa u'tastutin] उसते (B) लिया उसका (A का) हैट
[utina 'mijiwa utastu'tinijiw] उसने (B) लिया उसका (B का) हैट

12.9 अन्विति के तीसरे प्रतिरूप प्रत्युल्लेख (cross-reference) में उपवर्गों के अन्तर्गत उन रूपों का वास्तविक विवरण रहता है जिसके साथ वे जोड़े जाते हैं। यह विवरण हमारे सर्वनाम से मिलते-जुलते स्थानापन्नता के आकार में होता है। अमानक अंग्रेजी में यह इन रूपों में आता है यथा

John his knife अथवा his knife यहाँ पर his knife रूप में वास्तव में एक पुंल्लिंग धारक का भाव व्यक्त होता है, जो अधिक स्पष्ट ढँग से सहवर्ती अर्ध-निरपेक्षरूप John से प्रकट होता है। इसी प्रकार he ran away में he से कर्ता John का बोध होता है--तुलना के लिए Mary her knife तथा Mary she ran away। फ्रेंच की मानक भाषा में कुछ विशेष प्रकार के प्रश्नों में 'प्रत्युल्लेख' (cross-reference) मिलता है। यथा Jean où est-il ? [ʒa u ɛt i ?] "जान वह कहाँ है ?" कहने का अर्थ यह है कि "जान कहाँ है ?" (13.3) एक लैटिन समापिका क्रिया यथा cantat 'वह (स्त्री०) 'यह (नपुं०) गाता है गाती है में एक कर्ता का स्थानापन्न उल्लेख निहित रहता है। प्रत्युल्लेख द्वारा यह पदार्थ सूचक व्यंजक से जुड़ा होता है, जिससे कर्ता का विशिष्ट उल्लेख मिलता है यथा puella cantat "वह लड़की गाती है।" बहुत-सी भाषाओं में क्रियारूपों में स्थानापन्न रूप (सार्वनामिक pronominal) निहित रहते हैं जिसमें कर्ता और भोक्ता दोनों का उल्लेख होता है यथा क्री में ['wa : pame : w] "उसने, उसे (अथवा उसे स्त्रीलिंग) देखा। "तदनुसार, प्रत्युल्लेख ['wa: -pame : w 'atimwa a'wa na:pe:w] (उसने - देखा - उसे एक - कुत्ता वह - आदमी) का अभिप्राय यह है कि "आदमी ने एक कुत्ता देखा में कर्ता और भोक्ता दोनों का विशिष्ट उल्लेख रहता है। इसी प्रकार बहुत-सी भाषाओं में एक संबंधित संज्ञा में धारक का सार्वनामिक उल्लेख निहित रहता है यथा क्री में ['aus-tutin] हैट किन्तु [ni'tastutin] "मेरा हैट" [Ki'tastutin] "तुम्हारा हैट" [u'tastutin] उसका (उसका स्त्री०) हैट। इस तरह जब धारक का उल्लेख किसी दूसरे शब्द अथवा पदसंहिति में होता है हमें प्रत्युल्लेख मिलता है। यथा ['tʃa:n u'tastutin] (जान--उसका--हैट) अर्थात् "जॉन का हैट"।

12.10 प्रत्येक वाक्यीय संरचना में, हमें एक पदसंहिति में दो (कभी-कभी दो से अधिक) मुक्तरूप जुड़े हुए मिलते हैं, जिन्हें हम फलित (resultant) पदसंहिति कह सकते हैं। फलित पदसंहिति अपने किसी भी संरचक से भिन्न रूपवर्ग की हो सकती है। उदाहरण के लिए, John ran न तो (John की तरह) कर्ता व्यंजक है और न तो (ran की तरह) समापिका क्रिया व्यंजक है। इसलिए हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी की कर्ता क्रिया संरचना बहिःकेन्द्रित (exocentric) है। फलित पदसंहिति अपने संलग्न संरचकों में

से किसी के भी रूपवर्ग के अन्तर्गत नहीं आती। दूसरी ओर फलित पदसंहिति अपने संरचकों के एक (अपना एकाधिक) के रूपवर्ग के अन्तर्गत आ सकती है। उदाहरण के लिए poor John एक व्यक्तिवाची संज्ञा व्यंजक है और इसी प्रकार के रूपवर्ग में इसका संरचक John भी आता है। पूरी तौर पर रूप, John तथा poor John का एक ही प्रकार्य है। तदनुसार हम कहते हैं कि अंग्रेजी लक्षक-पदार्थ संरचना (यथा, poor John, fresh milk) अन्तःकेन्द्रित (endocentric) संरचना है।

किसी भी भाषा में बहिः केन्द्रित संरचनाएं कम होती हैं। अंग्रेजी में कर्ता-क्रिया संरचना के अतिरिक्त संबन्ध-अक्षीय संरचनाएं भी हैं यथा, beside John, with me, in the house, by running away। इनके संरचक पूर्वसर्गीय व्यंजक तथा कर्मव्यंजक हैं किन्तु फलित पदसंहिति का प्रकार्य इनमें से किसी के प्रकार्य से भिन्न है। यह बिल्कुल ही भिन्न वाक्यीय स्थान पर दिखाई पड़ता है (यथा क्रिया के विशेषक रूप में : sit beside John अथवा संज्ञा के the boy beside John)। अंग्रेजी की एक दूसरी बहिः-केन्द्रित संरचना अनुपदीकरण (subordination) की है। एक प्रतिरूप (उपवाक्य-अनुपदीकरण) संरचक अनुपर व्यंजक है तथा कर्ता-क्रिया व्यंजक पदसंहिति तथा if John ran away में फलित पदसंहिति किसी भी संरचक के कार्यानुसारी नहीं है बल्कि वह एक विशेषक (अनुपद-उपवाक्य) के रूप में आता है। दूसरे प्रतिरूप में (पदसंहिति-अनुपदीकरण में) संरचक अनुपद व्यंजक है तथा कोई दूसरा रूप, विशेषरूप से सत्तासूचक है, यथा I, than John तथा फलित पदसंहिति एक विशेषक (as big as I, bigger than John) का कार्य करते हैं। यद्यपि फलित पदसंहिति एक बहिः केन्द्रित संरचना है, इसका प्रकार्य किसी भी संरचक से भिन्न है तथापि इनमें से एक संरचक रचना के लिए सामान्यतः विभिन्न है तथा फलित पदसंहिति को लक्षित करता है। इस प्रकार अंग्रेजी में समापिका क्रियाएं पूर्वसर्ग तथा अनुपद संयोजक अभी उदाहृत बहिःकेन्द्रित संरचना में नियमिततः प्रकट होती है और उन्हें लक्षित करने के लिए पर्याप्त होती है।

अन्तःकेन्द्रित संरचनाएं दो प्रकार की होती हैं, समपदी (co-ordinative (अथवा क्रमिक serial) तथा अनुपदी subordinative (अथवा गुणयुक्त-attributive)। प्रथम प्रतिरूप में फलित पदसंहिति उसी रूपवर्ग की होती है जिस रूपवर्ग के दो या दो से अधिक संरचक होते हैं। इस प्रकार, पदसंहिति

boys and girls संरचकों के रूपवर्ग की ही है, ये संरचक समपदीकरण के सदस्य हैं तथा दूसरा संरचक समपदकारी (co-ordinator) है : कभी-कभी कोई समपदकारी नहीं होता : books, papers, pens, pencils, blotters (were all lying......) कभी-कभी हर सदस्य के लिए एक समपदकारी होता है यथा, both Bill and John, either Bill or John फलित पदसंहिति तथा सदस्यों के बीच छोटे-मोटे अन्तर हो सकते हैं । इस प्रकार Bill and John बहुवचन हैं जबकि इसके सदस्य एकवचन के हैं ।

अनुपदी अन्तःकेन्द्रित रचनाओं में फलित पदसंहिति उसी रूपवर्ग की है जिस रूपवर्ग का संरचकों में से एक संरचक, जिसे हम गुणी (शीर्ष) (head) कहते हैं । इस प्रकार poor John उसी रूपवर्ग का है जिस रूपवर्ग का John है जिसे हम गुणी (head) कहते हैं । हमारे उदाहरण का दूसरा सदस्य poor है जो "गुण" है । गुण अपने में अनुपदी पदसंहिति हो सकता है । very fresh milk में गुणी संरचक milk है और गुण है very fresh और यह पदसंहिति स्वयं में गुणी fresh और गुण very से बना है । इस तरह अनुपदी स्थान के अनेक मापक्रम हो सकते हैं । very fresh milk में तीन मापक्रम हैं (1) milk (2) fresh (3) very । इसी प्रकार गुणी से भी गुण संरचना परिलक्षित हो सकती है । पदसंहिति this fresh milk, this गुण तथा गुणी fresh milk से बनी है और यह स्वयं में fresh गुण तथा milk गुणी से बनी है ।

12.11 यदि पदसंहिति बनानेवाली सभी वाक्यीय संरचनाएँ अन्तः-केन्द्रित हों तो पदसंहिति में चरम-संरचक के रूप में कुछ शब्द (अथवा बहुत से शब्द, समपदीकरण के सदस्य) होंगे जिनका रूपवर्ग वही होगा जो पदसंहिति का । इस प्रकार का शब्द पदसंहिति का केन्द्र (center) होगा । पदसंहिति all this fresh milk "यह सादा ताजा दूध" में milk शब्द केन्द्र है तथा पदसंहिति all this fresh bread and sweet butter (यह सारा ताजी रोटी और मीठा मक्खन) में bread तथा butter शब्द केन्द्र है । क्योंकि किसी भाषा की अधिकांश संरचनाएं अन्तःकेन्द्रित होती हैं, अधिकांश पदसंहितियों में एक केन्द्र होता है । अधिकतर पदसंहिति का वर्ग वही होता है जो पदसंहिति में निहित कुछ शब्दों का होता है ।

अपवादस्वरूप बहिःकेन्द्रित संरचनावाली पदसंहितियां हैं और इनकी भी जैसा कि हम देख चुके हैं शब्दवर्ग के अनुसार परिभाषा कर सकते हैं । अतः

एक पदसंहिति का वाक्यीय रूप वर्ग, एक शब्द के वाक्यीय रूप वर्ग से व्युत्पन्न हो सकता है। वाक्यरचना के रूपवर्गों का वर्णन अति सरलतापूर्वक शब्द-वर्गों (word-classes) के अनुसार किया जाता है। इस प्रकार अंग्रेजी में एक पदार्थ सूचक व्यंजक (substantive-expression) या तो एक शब्द है (जैसे कि John) जो इस substantive रूपवर्ग (पदार्थसूचक) का है नहीं तो एक पदसंहिति (यथा poor John) होता है जिसका केन्द्र एक पदार्थसूचक होता है। इसी प्रकार अंग्रेजी का एक समापिका क्रिया व्यंजक या तो एक शब्द (यथा ran समापिका क्रिया-वर्ग का होता है, नहीं तो एक समापिका क्रिया केन्द्रधारी पदसंहिति (यथा ran away) होता है। एक अंग्रेजी कर्ता-क्रिया पदसंहिति (यथा John ran अथवा poor John ran away) किसी शब्द के रूपवर्ग का भागी नहीं है क्योंकि इसकी संरचना बहिःकेन्द्रित है किन्तु कर्ता-क्रिया पदसंहितियों का रूपवर्ग उनकी संरचना से परिभाषित होता है। उनमें एक कर्ता व्यंजक तथा एक समापिका क्रिया व्यंजक (एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित) होते हैं। इस प्रकार अन्ततोगत्वा शब्दवर्गों पर ही आकर विश्लेषण टिकता है।

परम्परा से "शब्द-भेद" (parts of speech) का व्यवहार किसी भाषा के सर्वाधिक समाहारी तथा मौलिक शब्दवर्गों के लिए होता है और फिर अभी वर्णित सिद्धान्तों के अनुसार वाक्यीय रूपवर्ग का वर्णन उनमें निहित शब्द भेदों के अनुसार किया जाता है। फिर भी पूरी तरह शब्द भेदों की एक संगत योजना प्रस्तुत कर देना इसलिए असम्भव है कि शब्दवर्ग एक दूसरे की सीमा में अतिव्याप्त होते हैं तथा सीमोलंघन कर जाते हैं।

रूपवर्ग के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए जब हम 'व्यंजक' (expression) पद का प्रयोग करते हैं तब इसमें शब्द और पदसंहिति दोनों निहित होती हैं। इस प्रकार John पदार्थसूचक शब्द और poor John पदार्थसूचक पदसंहिति तथा दोनों रूप पदार्थसूचक व्यंजक हैं।

उन बड़े रूपवर्गों में जिनमें शब्द तथा (अन्तःकेन्द्रित रचना के कारण) एक बड़ी संख्या में पदसंहितीय संयोजन—दोनों ही आते हैं, पदसंहितीय संरचनाओं के वैभिन्य के कारण कई उपवर्ग भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए जब fresh, good अथवा sweet की तरह के गुण-गुणी milk के साथ जुड़ते हैं यथा fresh milk में, तो फलित पदसंहिति में अन्य गुणों का संयोग ग्रहण कर लेने की क्षमता विद्यमान रहती है यथा good, sweet, fresh milk में पदसंहिति का वही प्रकार्य है जो

इसके केन्द्र (तथा गुणी की) जैसे milk शब्द की। फिर भी यदि हम milk अथवा fresh milk की तरह के रूप, गुण this के साथ जोड़ें, तो फलित पदसंहिति this milk अथवा this fresh milk के प्रकार्य बिल्कुल वही नहीं रहती जैसी कि गुणी अथवा केन्द्र की, क्योंकि फलित पदसंहिति good और sweet जैसे गुणों से जोड़ी नहीं जा सकती है। this milk, this fresh milk की संरचना अंशत: संवृत (partially closed) है। वास्तव में इस दिशा में केवल गुण all को जोड़ने की सम्भावना है यथा all this milk अथवा all this fresh milk. जब गुण all जोड़ा जाता है, संरचना संवृत हो जाती है और इस प्रतिरूप के अन्य गुण (विशेषण) इसमें नहीं जुड़ सकते हैं।

12.12. विन्यासिम का उदाहरण ऐसा क्रम-विन्यास है जिसमें कर्तारूप क्रियारूप के पहले आता है। यथा अंग्रेजी के कर्त्ता-क्रिया संरचना के प्रसामान्य प्रतिरूप में John ran "जान दौड़ा"। उन भाषाओं में जो बहुत ही जटिल चयन-विन्यासिमों का प्रयोग करती हैं अधिकतर क्रम अपरिच्छेदक और व्यंजना-सूचक हैं। लैटिन के pateramat filium "पिता पुत्र को प्यार करता है" पदसंहिति में सभी वाक्यीय सम्बन्ध चयनात्मक (प्रत्युल्लेख तथा अभिशासन) है तथा शब्द सभी सम्भव क्रमों में (pater filium amat, filium pater amat इत्यादि), केवल बल तथा जीवन्तता के अन्तर के साथ, दिखाई पड़ते हैं। अंग्रेजी में क्रम-विन्यासिम के कारण कर्त्ता-क्रिया तथा क्रिया-लक्ष्य का अन्तर दिखाई पड़ता है यथा John ran तथा Catch John में। John hit Bill तथा Bill hit John का अन्तर केवल क्रम पर आधारित है। फिर भी सामान्यत: अंग्रेजी में क्रम-विन्यासिम, चयनविन्यासिम के साथ-साथ आता है। कुछ भाषाएं इस दृष्टि से तथा अपने वाक्यप्रक्रिया के सामान्य संयोजन की दृष्टि से अंग्रेजी से मिलती-जुलती हैं तथापि क्रम-विन्यासिमों के कारण अंग्रेजी से भिन्न हैं। इस प्रकार मानक जर्मन अंग्रेजी से भिन्न है क्योंकि जर्मन में समापिका क्रिया के पूर्व केवल एक ही गुण (शब्द अथवा पदसंहिति) सम्भव है। heute spielen wir Ball ['hojte'ʃpi:len vi:r 'bal] हम आज गेंद खेलते हैं।"। इसके अतिरिक्त इसमें अनेक तत्त्वों को वाक्य में अन्तिम-स्थान मिलता है : कुछ क्रिया-विशेषण, यथा, ich stehe, um sieben Uhr auf [ix 'ʃte:e um 'zi : ben 'u:r 'awf] "मैं सात बजे उठ जाता हूँ", कृदन्त, यथा, ich habe ihn heute gesehen [ix

ˌha:be i:n ˈhojte geˈze : n] "मैंने आज उन्हें देखा है"। क्रियार्थक संज्ञा, यथा, ich werde ihn heute sehen [ix, verde i:n ˈhojte ˈze:n] "मै आज उन्हें देखूंगा उनसे मिलूंगा"। आश्रित उपवाक्य की क्रिया, wenn ich ihn heute sehe [ven ix i:n ˈhojte ˈze:e] "यदि मैं आज उसे देखूं।"

फ्रेंच में अपनी क्रिया के सहवर्ती स्थानापन्नों (संयोजकों) को क्रमवद्ध करने की एक जटिल और दृढ़ व्यवस्था है। साधारण (अप्रश्नवाची) वाक्य प्रतिरूपों में समापिका क्रिया के पूर्व आनेवाले इन तत्वों के सात विभिन्न स्थानों में प्रभद है।

(1) कर्ता, यथा je [ʒə] "मैं," *il* [il] "वह," ils [il] "वे," on [o] "एक" ce [sə] "यह, वह।"

(2) नकारात्मक क्रिया-विशेषण, ne [nə] "नहीं"

(3) उत्तम तथा मध्यमपुरुष के कुछ अधिक दूरवर्ती लक्ष्य तथा me [mə] "मुझे," vous[vu] "तुम्हें", तथा निजवाचक का se[sə] "स्वयं "उसे" "स्वयं उसे (स्त्री०)" "स्वयं उन्हें"

(4) कुछ निकटवर्ती लक्ष्य, यथा me[mə] "मुझे," vous [vu] "तुम," se [sɔ] "स्वयं उसके लिए" स्वयं उसके (स्त्री०) लिए", "स्वयं उनके लिए," le[lɔ] "उसका," les[le] उनका।

(5) अन्य पुरुष के कुछ अधिक दूरवर्ती लक्ष्य : *lui* [lui] "उसके लिए" "उसके (स्त्री०) लिए," leur [[lœ:r] "उनके लिए"।

(6) क्रिया-विशेषण, y[i] "वहां, वहां का, इसके लिए, उनके लिए।"

(7) क्रिया-विशेषण, en [ã] "वहां से," "इसका", "उनका", उदाहरण के लिए (1-2-3-4) il ne me le denne pas [i n mə l dɛn pa] "वह इसे मुझे नहीं देता है।"

(1-3-6-7) il m'y en donne [i m j ã dɔn] "वह इसमें कुछ यहां देता है।"

(1-4-5) on le lui donne [õ lɔ lɥi dɔn] "कोई यह उसे देता है।"

(1-2-6-7) il n'y en a pas [i n j ãn a pa] "वहां कोई भी नहीं है।"

कभी-कभी क्रम से सूक्ष्मतर विभिन्नताएं प्रकट हो जाती हैं। फ्रेंच में अधिकांश विशेषण संज्ञा के बाद आते हैं une maison blanche [yn mezõ

blaʃ] "एक सफेद घर," कुछ विशिष्ट विशेषण पहले भी आते हैं : une belle maison [yn belmezõ] "एक सुन्दर घर," अन्य विशेषण विस्थापित अर्थ अथवा बल अथवा तीव्र लक्षणार्थ के साथ संज्ञा के पूर्व आते हैं : une barbe noire[yn barbə nwa:r] "एक काली दाढ़ी" :une noire trahison [yn nwa: r traizõ] 'एक काला धोका," un livre excellent [œ̃ li: vr eksɛlã] "एक अच्छी पुस्तक" :un encellent livre "एक कीमती पुस्तक" un cher ami [œ̃ʃɛ:r ami] "एक प्रिय मित्र," sa propre main [sa prɔ prə mɛ̃]"उसका अपना हाथ," une main propre [yn mɛ̃ propr] "साफ हाथ ।"

संक्षिप्तता की दृष्टिकोण से देखने पर क्रम का विन्यास एक उपलब्धि है, क्योंकि रूपों का उच्चारण किसी पूर्वानुपरक्रम में ही होता है । फिर भी कुछ भाषाओं में केवल क्रम के ही अभिलक्षण काम करते हैं । वे सदा लगभग चयन विन्यासिमों के परिपूरकमात्र होते हैं ।

12.13. भारत-यूरोपीय परिवार की भाषाएं शब्द-भेद (parts of speech) की बहुलता की दृष्टि से विचित्र हैं । चाहे किसी भी संरचना पर हम अपनी योजना आधारित करें, अंग्रेजी जैसी भाषा में कम-से-कम एक दर्जन शब्द-भेद तो दिखाई ही पड़ेंगे, यथा पदार्थसूचक, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण, पूर्वसर्ग, विस्मयादिबोधक, समपद संयोजक तथा अनुपद संयोजक । अधिकांश भाषाओं में "वचन" संख्या में कम मिलते हैं। सबसे अधिक तीन प्रतिरूपों में विभाजन दिखाई पड़ता है । (सामी, अलगोन्की) इनमें एक अंग्रेजी के पदार्थ-सूचक और दूसरा क्रिया से मिलता-जुलता है । यह मान लेना एक भूल है कि अंग्रेजी शब्द-भेद की व्यवस्था मानव-अभिव्यक्ति की सर्वदेशीय अभिलक्षणों की प्रतिनिधि है । यदि इस प्रकार के वर्ग जैसे द्रव्य, क्रिया, गुण, भाषा से पृथक् अस्तित्व रखते हैं जैसा कि भौतिकशास्त्र अथवा मानव-मनोविज्ञान के तथ्य, तो वे सचमुच ही समूचे विश्वभर में हैं, किन्तु यह भी एक सच्चाई होगी कि बहुत-सी भाषाओं में तदनुरूप शब्द-भेद का अभाव है ।

उन भाषाओं में जहां शब्द-भेद कम है, वाक्यीय रूपवर्ग पदसंहितियों में दिखाई पड़ते हैं। अधिकतर एक पदसंहिति के वर्ग कुछ विशेष शब्दों से व्यंजित होते हैं , ये लक्षक (marker) कहलाते हैं । यथार्थ में लक्षक और उसका सहवर्तीरूप उस बहिःकेन्द्रित संरचना में जुड़ते हैं जो पदसंहिति का वर्ग

निर्धारित करते हैं । इस चयन-अभिलक्षण के अतिरिक्त, संरचनाओं में शब्द-क्रम (word-order) से प्रभिन्न होने की सम्भावना रहती है ।

चीनी भाषा एक बहुचर्चित उदाहरण है । यहां शब्द-भेद के अन्तर्गत पूर्णशब्द (full words) तथा अव्यय (particles) आते हैं । प्रधान संरचनाएं तीन हैं—

(1) बहुप्रचलित वाक्य-संरचना उद्देश्य और विधेय की है जो अंग्रेजी के कर्ता-क्रिया संरचना के बहुत समान है । उद्देश्य, विधेय के पूर्व आता है: [tha² ′xaw³] "वह अच्छा है", [tha¹ ′laj²] "वह आया, आता था" । कुछ विशेष स्थितियों में, जो रूपवर्ग के अन्तर पर निर्भर करती हैं, विधेय आरम्भ में अव्यय (particle) [ʃə⁴] द्वारा लक्षित होता है :[tha²ʃə⁴′xaw³ ˌʒən²] "वह (अव्यय) अच्छा आदमी," तात्पर्य यह कि "वह अच्छा आदमी है ।"

(2) एक अन्तःकेन्द्रित संरचना भी है जिसमें गुण (attribute) गुणी (head) के पूर्व आता है । अर्थ के अनुसार यह उसी प्रकार की अंग्रेजी संरचना से मिलता हैं :[′xaw³ˌʒən²] "अच्छा आदमी", [′man⁴ˌtʃhy⁴] "धीमे जाओ" । गुण किन्हीं स्थितियों मे अपने अन्त में स्थित अव्यय [ti¹] से लक्षित होता है: [′tiŋ³,xaw³ ti² ′ʒən²] "बहुत अच्छा आदमी, [ˌwo³ ti² ′fu⁴ tʃhin¹] मैं (अव्यय) पिता" अर्थात् "मेरे पिता", [′tso⁴ tʃo² ti²,ʒən²] "बैठना (अव्यय) आदमी" अर्थात् 'बैठा आदमी", [′wo³′sje,tsə′³ ⁴ti,pi³] "मैं लिखता हूँ ब्रुश (कूची)" अर्थात् "कूची जिससे मैं लिखता हूँ" इस उदाहरण में गुण उद्देश्य-विधेय संरचना की एक पदसंहिति है [ˈmaj³ ti ′ʃu¹] खरीदना (अव्यय) किताब अर्थात् खरीदी किताब ।"

(3) एक दूसरे प्रकार की अन्तःकेन्द्रित संरचना जिसमें गुण गुणी के बाद आता है, अंग्रेजी के क्रिया-लक्ष्य संरचना तथा संबन्ध-अक्ष रचना से मिलती जुलती है :[ˌkwan¹ man²] "दरवाजा बन्द करो" [,tsaj ′tʃun¹kwo] "चीन में" । इसे नम्बर (2) से पृथक् करने के लिए कुछ अशुद्ध रूप से क्रिया-लक्ष्य संरचना कह सकते हैं ।

चयन-विन्यासिम का संबन्ध अधिकतर एक रूपवर्ग को सीमाबद्ध करने से होता है जो (1) में कर्ता का कार्य करता है (2) में गुणी का कार्य करता है और (3) में लक्ष्य का काम करता है । यह अंग्रेजी के पदार्थसूचक व्यंजक से मिलता-जुलता है । इस रूपवर्ग के लिए (इसे हम कर्मव्यंजक कह सकते हैं)

केवल कुछ ही शब्दों के लिए कहा जा सकता है कि वे अपने उपयुक्त स्थान पर हैं। इस प्रकार के शब्द [tha^1] "वह", "वह (स्त्री०)" अथवा [wo^3] "मैं" प्रतिरूप के स्थानापत्ति शब्द हैं। अन्य कर्म व्यंजक विभिन्न लक्षकों के साथ आनेवाली पदसंहितियां हैं। इन लक्षकों में सामान्यतम लक्षक कुछ अव्यय (particles) होते हैं जो एक गुण के रूप में प्रतिरूप (2) के पहले आते हैं, यथा [tʃɔ^4] "यह", [na^4] "वह",[na^3] "कौन-सा" इस प्रकार ['tʃɔ^4 ko^4 "यह टुकड़ा" अर्थात् 'यह(वस्तु)"। अधिकांश उदाहरणों में ये लक्षक एक पूर्ण शब्द में तुरन्त संलग्न नहीं होते, बल्कि केवल कुछ के ही साथ संलग्न होते हैं, जैसे अन्तिम उदाहरण का [ko^4] "टुकड़ा" जो यहाँ संख्यावाची रूपवर्ग बनाता है, (2) की संरचना में यथा [tʃɔ ko'ʒən^2] "यह (व्यक्ति) आदमी", "पाँच गाड़ियों में ['wu^{3}ˌljoŋ^4 'tʃhɔ^1]" पांच(भिन्न) गाड़ियों अर्थात् लक्षक और संख्यावाची की पदसंहिति इस तरह साधारण पूर्णशब्द के साथ जुड़ते हैं। एक अन्य प्रकार का कर्मव्यंजक अन्त्य [ti^1] अव्यय से लक्षित है, [ˌmaj^4 'ʃu^{1}ti] "बेचना (अव्यय) किताबें" अर्थात् "पुस्तक विक्रेता"।

इस प्रकार मिश्र पदसंहितियों की रचना होती है: [tha^1'taw^4 'thjen^2 li^3'tʃhy^4] "वह घुसा खेत में भीतर जाता" अर्थात् "वह खेत में भीतर जाता है।" यहां प्रथम शब्द उद्देश्य है, बाकी पदसंहिति विधेय है। इस विधेय में अन्तिम शब्द गुणी है तथा अन्य तीन शब्द उसके गुण हैं। यह गुण क्रिया [taw^4] "घुसना" तथा लक्ष्य ['thjen^2 li^3] "खेत के भीतर" से बना है जिसमें का प्रथम शब्द दूसरे का गुण है। [ni3 mej^2 pa^3 maj^3 mej ti ˌtʃhje^{3}kej^{3}wo^3] "तुम नहीं लेना खरीदना कोयला (अव्यय) धन देना मैं" —प्रथम शब्द उद्देश्य है तथा अवशेष विधेय है। यह विधेय एक गुण [mej^2] "नहीं" तथा एक गुणी से बना है। फिर इस गुणी में प्रथम पाँच शब्द गुण हैं और अन्त्य दो ['kej^3 wo^3] गुणी है जिसकी रचना क्रिया और लक्ष्य है। पचशब्दी गुणों में [pa^3'maj^3'mej^2 ti ˌtʃhjen^3] "लेना खरीदना, कोयला, (अव्यय) धन," प्रथम शब्द क्रिया है तथा अवशेष एक लक्ष्य है। यह लक्ष्य गुणी [tʃhjən^3] और गुण [ˌmaj^3 'mej^{2}ti] से बना है जोकि पदसंहिति [ˌmaj^3 'mej^2] में संलग्न अव्यय [ti^1] से लक्षित है और जिसकी सरचना क्रिया-लक्ष्य है। इस प्रकार वाक्य का अर्थ है "तुम नहीं ले रहे हो खरीदना कोयला धन देना मुझे" अर्थात् 'तुमने मुझे कोयला खरीदने को धन नहीं दिया।'

तगलॉग में भी दो शब्दभेद-पूर्णशब्द अथवा अव्यय हैं। किन्तु यहां पूर्णशब्द दो वर्गों में उपविभाजित है जिसे स्थायी (static) तथा अस्थायी क्षणिक [transient] कह सकते हैं। इनमें से दूसरा हमारी क्रियाओं के समान एक विशेष प्रकार के विधेय (निर्देशात्मक प्रतिरूप जिनके चार उपप्रतिरूप (11.2 हैं) की रचना करता है तथा काल, दशा का रूपीय विभेद प्रदर्शित करता है, फिर भी हमारी क्रियाओं से असमानता इसलिए है कि एक ओर वे विधेय के प्रकार्य तक ही सीमित नहीं हैं तथा दूसरी ओर अ-वर्णनकारी विधेय का भी अस्तित्व बना रहता है। मुख्य संरचनाएं उद्देश्य तथा विधेय हैं जो गौणरूप से क्रम द्वारा (विधेय उद्देश्य के पूर्व आता है) लक्षित होती हैं, अथवा अव्यय [aj]द्वारा यथा [aj] 11.2 में, उल्लिखित हैं। उद्देश्य तथा समस्थापित (equational) विधेय चयन की दृष्टि से लक्षित होता है। रूपों के वर्ग जो इन स्थानों में आते हैं अंग्रेजी पदार्थ सूची व्यंजकों से मिलते-जुलते हैं तथा और भी अधिक वे चीनी व्यंजकों से मिलते-जुलते हैं। कुछ पदार्थ शब्दों जैसे [a'ku] "मैं" तथा [si'ja] "वह" (पु०) "वह" (स्त्री०) अपने प्रकार्य के आधार पर इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। अन्य सभी कर्मव्यंजक पदसंहितियां हैं जो कुछ गुणों की उपस्थिति से विशिष्टीकृत होती हैं यथा [isa ŋ 'bo: ta?] "एक बच्चा" अथवा कुछ अव्यय, नाम के पूर्व मुख्यतया [si] से, यथा [si'hwan] "जॉन" तथा अन्य रूपों के पूर्व [aŋ] यथा [aŋ'ba:ta?] "बच्चा" "एक बच्चा", [aŋ pu'la] 'लाल' अर्थात् "लाली", [aŋ'pu:tul] "कटाव" अथवा अस्थायी क्षणिकरूपों को [aŋ pu'mu:tul] "वह जो काटता है" को परिलक्षित करने के लिए [aŋ pi'mu:tul] "वह जिसमें से काटा गया था"। यहाँ चार गुण संरचनाएं हैं। एक में अव्यय [na], स्वरों के बाद [ŋ] किसी भी क्रम में गुणी और गुण के मध्य अन्तर्विष्ट होता है, यथा[aŋ'ba; taŋsumu; 'su:lat] अथवा [aŋsumu:'su:lat na'ba:ta?] "लिखता हुआ बच्चा", [aŋpu'laŋ pan 'ju] "लाल रूमाल", [aŋ pan'ju ŋ i'tu] "यह रूमाल"। एक दूसरे कुछ अधिक सीमित गुण-गुणी संरचना में अव्यय नहीं होते यथा [hin'di: a'ku] "नहीं मैं," [hin'di: maba'it] "अच्छा नहीं"। तीसरे गुण-गुणी संरचना में गुण एक विशिष्ट रूप में कर्म व्यंजक है : इस प्रकार [a'ku] "मैं" [ku] से विस्थापित हो जाता है तथा [si'ja] "वह (पु०) वह (स्त्री०)" [ni'ja] द्वारा तथा अ यय [si]; [ni] द्वारा, अव्यय [aŋ], [maŋ] द्वारा: [aŋpu'la naŋ pan'juajmatiŋ'kad] "रूमाल की लाली चमकदार

है", [aη'ba:ta, ku'ma:in naη'ka: nin] "बच्चे ने (कुछ) चावल खाया" (कर्ता-क्रिया), [ki'na:n naη 'ba:ta? aη'ka:nin] "बच्चे के द्वारा चावल खाया गया" (लक्ष्य क्रिया) 21.2 में दिए गये उदाहरणों को भी देखें। चौथे गुण-गुणी संरचना में भी गुण एक कर्म व्यंजक है [si], [kaj] तथा [aη[[sa] से विस्थापित होता है, गुण एक स्थान बनाता है : [aη' ba:tajna'na:ugsa'ba:haj] "बच्चा घर से बाहर निकला, एक घर से बाहर"।

12.14. अधिकतर वाक्य-प्रक्रिया संबन्धी तथ्य उलझे हुए हैं तथा उनका वर्णन दुःसाध्य है। ऐसी स्थिति में अंग्रेजी, जर्मन, लैटिन अथवा फ्रेंच जैसी भाषाओं का कुछ सीमा तक पूर्ण व्याकरण एक अमूर्त विवरण की अपेक्षा हमारा अधिक मार्ग प्रदर्शक होगा। वाक्य- क्रिया विवेचन लगभग अस्पष्ट है। अधिकांश कृतियों में संरचनाओं तथा रूपवर्गों की रूपीय परिभाषा के स्थान पर दार्शनिक मान्यताओं के कारण कुछ अधिक जटिल वाक्यीय प्रवृत्ति के उदाहरण स्वरूप हम आधुनिक अंग्रेजी (बोलचाल की मानक) की एक संरचना का सर्वेक्षण करेंगे जिसे हम लक्षण-पदार्थ संरचना (character-substance) कह सकते हैं, fresh milk जैसे "ताजा दूध"।

यह संरचना गुण-गुणी संरचना है तथा गुणी सदा संज्ञाव्यंजक है अर्थात् एक संज्ञा अथवा एक अन्तःकेन्द्रित पदसंहिति जिसका केन्द्र संज्ञा है, संज्ञा एक शब्द-वर्ग है। सभी रूपवर्गों की तरह इसकी परिभाषा भी उन व्याकरणिक अभिलक्षणों के अनुसार होनी चाहिए जिनमें से कुछ वास्तव में दिखाए जा रहे हैं। इसकी परिभाषा हो लेने पर, इससे एक वर्ग-अर्थ स्पष्ट होता है जिसे मोटे तौर पर अमुक जाति की वस्तु कहकर वर्णित करते हैं। उदाहरण हैं : boy, stone, water, kindness। हमारी संरचना का गुण सदा विशेषण-व्यंजक है—अर्थात् एक विशेषण अथवा विशेषण केन्द्र वाली एक पदसंहिति है। अंग्रेजी में विशेषण एक शब्दवर्ग (शब्दभेद) है जिसकी व्याख्या संक्षेप में लक्षण-पदार्थ संरचना में उसके प्रकार्य से किया जा सकता है जिस पर हम विचार करेंगे। हमारे विचार-विमर्श से इसका वर्ग-अर्थ कुछ इस प्रकार निकलेगा जैसे वस्तुओं की जातियों के नमूनों का भाव, उदाहरण : big, red, this, some, चयन के इन अभिलक्षणों के अतिरिक्त लक्षण-पदार्थ संरचना में क्रम अभिलक्षण भी निहित रहता है विशेषण-व्यंजक संज्ञा-व्यंजक, के पूर्व आता है।

विशेषण दो वर्गों में बंटे हुए हैं, वर्णनात्मक (descriptive) तथा

सीमाकारक (limiting)। परिस्थिति के अनुसार जब दोनों वर्गों के विशेषण एक पदसंहिति में आते हैं, सीमाकारक विशेषण पहले आता है, तथा वर्णनात्मक और विशेषण संज्ञा से बने समूह की विशेषता बताता है। इस प्रकार this fresh milk "यह ताजा दूध" की तरह के रूप में संलग्न संरचक सीमाकारक विशेषण this "यह", तथा संज्ञा पदसंहिति fresh milk "ताजा दूध" है जो स्वयं में वर्णनात्मक विशेषण (fresh) "ताजा" तथा संज्ञा (milk) "दूध" से बना है। यह अन्तर हमारे लक्षण-पदार्थ संरचना को दो उपप्रतिरूपों में उपविभाजित करता है। 1—गुणता-पदार्थ संरचना (quality-substance) जहां गुण वर्णनात्मक विशेषण व्यंजक है तथा 2—सीमा-पदार्थ संरचना (limitation-substance) जहाँ गुण सीमासूचक विशेषण है।

गुणतापदार्थ संरचना तथा वर्णनात्मक विशेषणों के रूपवर्ग दोनों ही क्रम अभिलक्षण के अनेक प्रतिरूपों में विभाजित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए हम big black sheep कहते हैं न कि black big sheep, kind old man "दयालु बूढ़ा (बूढ़ा आदमी)" कहते हैं न कि old kind man कहते हैं। हम इन प्रतिरूपों पर विचार करना बन्द नहीं करेंगे। मोटे तौर पर वर्णनात्मक विशेषण के रूपवर्ग का अर्थ नमूनों का गुणात्मक भाव है।

सीमाकारक विशेषणों का रूपवर्ग वर्णनात्मक विशेषणों की अपेक्षा बहुत छोटा है और वास्तव में एक अनियमित रूपवर्ग बनाता है जिसकी परिभाषा हम बाद में करेंगे। अनियमित रूपवर्ग एक ऐसा रूपवर्ग है जिसका वर्णन रूपों की एक तालिका देकर होना चाहिए। जो हो, सीमाकारक और वर्णनात्मक विशेषण के क्षेत्र का पूर्णरूप से निर्धारण नहीं किया जा सकता। सीमाकारक विशेषणों का वर्ग-अर्थ निम्न विचार-विमर्श से कुछ इस प्रकार स्पष्ट होगा जैसे नमूनों का परिवर्तनीय भाव।

हमारे सीमाकारक विशेषण दो उपवर्गों—निर्धारक (determiners) तथा संख्यासूचक (numeratives) के अन्तर्गत आते हैं। इन दोनों वर्गों के अनेक उपभेद हैं तथा वर्गीकरण के अन्य अनेक आधारों से भी यहां ताल-मेल हो जाता है।

निर्धारकों की परिभाषा इस तथ्य से की जाती है कि कुछ विशेष प्रकार के संज्ञाव्यंजक (यथा house और big house) सदा निर्धारक के सहवर्ती होते हैं (यथा, this house, a big house)। मोटे तौर पर वर्ग-अर्थ नमूनों का अभिज्ञापक भाव है। कुछ संज्ञा-व्यंजकों को सदा निर्धारकों के साथ

प्रयोग करने की यह प्रवृत्ति आधुनिक जर्मन तथा रोमानी जैसी कुछ भाषाओं की विलक्षणता है। बहुत-सी भाषाओं में यह प्रवृत्ति नहीं है। उदाहरण के लिए लैटिन में domus "घर" के साथ किसी गुण की अपेक्षा नहीं तथा अंग्रेजी the house अथवा a house ही समान प्रयोग में लाया जाता है।

बहुत से अभिलक्षण, निर्धारकों को दो वर्गों—निश्चयवाचक (definite) तथा अनिश्चयवाचक (Indefinite) में विभाजित करते हैं। इन अभिलक्षणों में से हम केवल एक का उल्लेख करेंगे। एक निश्चयवाचक निर्धारक के पूर्व संख्यावाचक all आ सकता है (यथा all the water) किन्तु अनिश्चयवाचक निर्धारक (यथा, some water में some) के पूर्व नहीं आ सकता।

निश्चयवाचक निर्धारक ये हैं : कोई भी धारक विशेषण (John's book, my house) तथा this (these), that (those), the धारक विशेषण रूप-रचना के आधार पर परिभाष साध्य है। यह विचारणीय है कि इतालवी भाषा जिसमें लक्षण-पदार्थ संरचना प्राप्त है, अंग्रेजी के ही समान धारक विशेषणों का प्रयोग निर्धारक के रूप में नहीं करती : [il mio amico] [il mio a'miko] अर्थात् (my friend) "मेरा मित्र") का *un* [un] mio amico (अर्थात् "मेरे एक मित्र") से प्रभेद है। निश्चयवाचक निर्धारकों का वर्ग अर्थ है "अभिज्ञात नमूने"। एक संक्षिप्त विवरण कि किस प्रकार नमूने पहचाने जाते हैं, एक व्यावहारिक बात है जो भाषाशास्त्री के नियंत्रण के बाहर है। पहचानेजाने का सम्बन्ध किसी व्यक्ति द्वारा अधिकार में लाए जाने से है (John's book) वक्ता से स्थानीय सम्बन्ध (this house) सहवर्ती भाषाई रूपों द्वारा वर्णन (the house I saw) अथवा शुद्धरूप से परिस्थिति संबंधी अभिलक्षण (the sky, the chairman) जिनमें भाषण द्वारा पूर्व उल्लेख को पुनः दुहराना पड़ता है (I saw a man, but the man did not see me), "मैंने एक आदमी देखा किन्तु आदमी ने मुझे नहीं देखा।") निश्चय-वाचक निर्धारकों में this : these, that : those विचित्र हैं कि इनके द्वारा संज्ञा के वचन वर्ग (this house, these houses) की अन्विति प्रकट होती है।

अनिश्चयवाचक निर्धारक हैं : a, (an), any, each, either, every, neither, no, one, some, what, whatever, which, whichever तथा पदसंहिति संयोजन many a, such a, what a. इनका अर्थ है अनभिज्ञात नमूने (unidentified specimens)।

शब्द a का विचित्र संधिरूप an है जिसका प्रयोग स्वर के पूर्व होता है। शब्द one अनिश्चयवाचक निर्धारक (indefinite determiner) के रूप में

नहीं प्रयुक्त होता बल्कि कभी-कभी बिल्कुल ही भिन्न प्रकार्यों (यथा, a big one, if one only knew) में प्रयुक्त होता है। इस लक्षण को हम वर्ग-विदलन (class-cleavage) नाम दे सकते हैं। विभिन्न अनिश्चयवाचक निर्धारकों के अर्थ वर्तमान विषय से अधिक विस्तृत क्षेत्र के व्याकरणिक अभिलक्षणों के अनुसार अंशतः परिभाषायोग्य उदाहरण के लिए what तथा which प्रश्नसूचक हैं, जिनसे पूरक प्रश्नों का आरम्भ होता है और जो श्रोता को एक भाषणरूप (what man ?, which man) प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करती है, whatever, whichever संबंधवाचक है जो अपनी संज्ञाओं को अनुपद उप-वाक्य (subordinate clause) के भाग रूप में अभिलक्षित करती है। No और neither नकारात्मक है जो सभी नमूनों को असम्मिलित करती है। Each, which, whichever चयन के एक सीमित क्षेत्र में लागू होते हैं अर्थात् संबंधित नमूने which book ? which parent ? अभिज्ञात अंश (अथवा अभिज्ञातपूर्ण) के अन्तर्गत होते हैं। either या तो तथा neither न तो दो प्रतिमानों के क्षेत्र सीमित करने में कुछ और आगे बढ़ जाते हैं।

निर्धारकों में से कुछ बलसूचक स्थितियों को छोड़कर बलाघातहीन हैं जैसे my, our, your, his, her, its, their, the, a. अन्य कभी-कभी बलाघातहीन होते हैं अथवा गौण बलाघात के साथ बोले जाते हैं।

सदा निर्धारकों के साथ आनेवाले संज्ञा व्यंजकों के प्रतिरूपों के पूर्व यदि कोई अधिक निश्चित निर्धारक नहीं होता है तो निश्चयवाचक the और अनिश्चयवाचक a आते हैं, इनका अर्थ अपने-अपने रूपवर्गों का अर्थमात्र है। एक व्याकरणिक वर्गीकरण जैसे कि निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक जो सदा कुछ व्याकरणिक अभिलक्षणों का (यहां संज्ञा-व्यंजक के प्रतिरूप जो निर्धारक की अपेक्षा रखते हैं) सहवर्ती होता है उसे संवर्गीय (categoric) कहते हैं। निश्चय-वाचक और अनिश्चयवाचक संवर्गों के संबंध में कहा जा सकता है कि ये वास्तव में अंग्रेजी संज्ञाव्यंजक के समूचे वर्ग को अपने में समेट लेती है क्योंकि संज्ञाव्यंजकों के वे प्रतिरूप भी जिनके साथ सदा निर्धारक नहीं आते निश्चयवाचक अथवा अनिश्चयवाचक में वर्गीकृत किए जा सकते हैं: उदाहरण के लिए John निश्चयवाचक, kindness अनिश्चयवाचक।

निर्धारकों के प्रयोग तथा अप्रयोग के अनुसार अंग्रेजी संज्ञाव्यंजक कई उल्लेखनीय वर्गों के अन्तर्गत आते हैं:—

1. नाम (व्यक्तिवाचक संज्ञा) (Proper Nouns) केवल एकवचन में

आते हैं। उनके साथ कोई निर्धारक नहीं आता और सदा निश्चयवाचक होते हैं, John, chicago। वर्ग-अर्थ है वस्तु की जाति जिसमें केवल एक नमूना है। यहां तथा आगे स्थानाभाव के कारण हम विस्तार में नहीं जाएंगे। यथा वर्ग-विदलन जिसके द्वारा समरूपता की स्थिति में व्यक्तिवाचक नाम जातिवाचक संज्ञा के रूप में भी आते हैं जैसे two Johns, this John और न तो हम उपवर्गों को ले सकते हैं जैसे नदियों के नाम जिनके पूर्व सदा the आता है—(the Mississippi)।

2. जातिवाचक संज्ञाएं (common nouns) निश्चयवाचक तथा अनिश्चय-वाचक दोनों कोटियों में आती हैं। वर्ग-अर्थ है—वस्तु की जाति जिसके एक से अधिक नमूने हैं। बहुवचन में उन्हें निश्चित संवर्ग (the houses) के लिए एक निर्धारक की अपेक्षा होती है किन्तु अनिश्चयवाचक के साथ निर्धारक की आवश्यकता नहीं होती—houses जो एकवचन रूप a house की तदनुसारी है।

A. आवद्धसंज्ञाएं (Bounded nouns) एकवचन में निर्धारक की अपेक्षा रखती हैं (the house, a house)। वर्ग-अर्थ है—वस्तु की जाति जो एक से अधिक नमूनों में इस प्रकार है कि नमूनों का उपविभाजन या सम्मिश्रण नहीं हो सकता।

B. अनाबद्ध संज्ञाएं (unbounded nouns) केवल एक निश्चित संवर्ग के लिए एक निर्धारक की अपेक्षा रखती हैं, (the milk : milk) वर्ग-अर्थ है—वस्तु की जाति जो एक से अधिक नमूनों में इस प्रकार है कि नमूनों का उपविभाजन या सम्मिश्रण हो सकता है।

(1) समूहवाचक संज्ञाएं (Mass nouns) के साथ कभी a नहीं आता और उसका बहुवचन भी नहीं होता (the milk : milk)। इसका वर्ग-अर्थ B का ही वर्ग अर्थ है, उसमें केवल इतना और जोड़ देना होगा कि नमूने स्वतन्त्ररूप से भी रहते हैं।

(2) भाववाचक संज्ञाएं (Abstract nouns) अनिश्चयवाचक एकवचन में बिना निर्धारक के सभी नमूनों को अन्तर्विष्ट कर लेती हैं (life is short) जीवन थोड़ा है) निर्धारक के साथ बहुवचन में नमूने पृथक् होते हैं (a useful life; nine lives)। B के वर्ग-अर्थ में इतना और जोड़ देने पर कि नमूनों का अस्तित्व केवल दूसरी वस्तु के गुण, क्रिया, सम्बन्ध आदि के रूप में ही रहता है, इसका वर्ग अर्थ हो जाता है।

II के उपविभाजन में वर्ग विदलन अधिक तथा उल्लेखनीय है यथा an

egg, eggs (A) किन्तु "he got egg on his necktie (B 1); coffee (B 1), किन्तु an expensive coffee (A)

दूसरे वर्ग के सीमाकारक विशेषण अर्थात् संख्यावाचक बहुत-से उपवर्गों के अन्तर्गत आते हैं जिनमें से केवल कुछ का ही हम उल्लेख करेंगे। उनमें से दो all तथा both निर्धारक के पूर्व आते हैं (all the apples). अन्य शेष निर्धारक के बाद आते हैं। फिर भी दो विशेषण निर्धारक पदसंहितियों में पूर्व आते हैं many a, such a. संख्यावाचक few, hundred, thousand, और वे जो परसर्ग--ion जोड़कर बनते हैं (million आदि) पदसंहितियों में a के बाद आते हैं जो बहुवचन संज्ञाओं के साथ संख्यावाचक का कार्य करते हैं (a hundred years—एक सौ वर्ष)। संख्यावाचक same, very, one अन्तवाला one--वर्गविदलन के निर्धारक one--से भिन्न है--निश्चित संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होता है: (this same book, the very day, my one hope)। संख्यावाचक much, more, less का प्रयोग केवल अनिश्चय-वाचक संज्ञाओं के साथ होता है (much water)· संख्यावाचक all का प्रयोग दोनों प्रकार की संज्ञाओं के साथ होता है, किन्तु निश्चित निर्धारकों के ही साथ (all the milk; all milk)। कुछ, जैसे कि both, few, many और इससे भी बड़ी संख्याएं केवल बहुवचन संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होती हैं। दूसरे जैसे कि one, much, little केवल एकवचन संज्ञाओं के साथ आते हैं। कुछ संख्यावाचक अन्य वाक्यीय स्थानों में भी प्रयुक्त होते हैं यथा many, few विधेय विशेषण के रूप में (they were many) तथा all, both दोनों अर्धविधेय गुणों में (the boys were both there) अंग्रेजी संख्यावाचकों में वर्गीकरण के कुछ अन्य रोचक आधार भी दिखाई पड़ेंगे जब हम 15वें अध्याय में संज्ञा-व्यंजकों के विस्थापन पर विचार करेंगे।

अध्याय 13

पद-विज्ञान

13.1 किसी भाषा की रूप-प्रक्रिया (morphology) के अन्तर्गत हम उन संरचनाओं पर विचार करते हैं जहाँ आबद्धरूप संरचक बनकर आते हैं। परिभाषा के अनुसार फलित रूप (resultant forms) या तो आबद्ध रूप होंगे या शब्द, किन्तु पदसंहति कभी नहीं होंगे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रूप-प्रक्रिया के अन्तर्गत शब्द तथा शब्दांश की संरचनाओं पर विचार किया जाता है और वाक्य-प्रक्रिया के अन्तर्गत वाक्यांशों की संरचना पर विचार किया जाता है। सीमा पर पदसंहितीय-शब्द (jack-in-the-pulpit) और कुछ समास (blackbird) आते हैं जिनके अन्तर्गत यद्यपि संलग्न संरचना की अपेक्षा रूपीय-संरचना मानना अधिक उचित है।

सामान्यतः रूपीय संरचनाएँ वाक्य-संरचनाओं की अपेक्षा अधिक बहुमुखी होती हैं। आपरिवर्तन और मूर्छन के अभिलक्षण उनमें अपेक्षाकृत अधिक संख्या में मिलते हैं और वे प्रायः अनियमित भी होते हैं। 'अनियमित' से यहाँ अभिप्राय यह है कि वे विशिष्ट संरचकों अथवा संयोजनों में सीमित हैं। संरचकों का क्रम नियम-निष्ठा से लगभग स्थिर रहता है और उसमें इस प्रकार के व्यंजनासूचक परिवर्त नहीं होते यथा John ran away : Away ran John. चयन का अभिलक्षण सूक्ष्म तथा प्रायः स्वच्छन्द ढँग से मिश्ररूपों में उन संरचकों को सीमित कर देता है जिनसे ये मिश्ररूप बनते हैं।

इसी प्रकार भाषाओं में पारस्परिक अन्तर, वाक्यप्रक्रिया की अपेक्षा रूप-प्रक्रिया की दृष्टि से अधिक होता है। यह विविधता इतनी अधिक है कि रूपप्रक्रिया की किसी सरल परियोजना के आधार पर भाषाओं का वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। ऐसी ही एक परियोजना के आधार पर विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक भाषा को एक-दूसरे से अलग किया जाता है। विश्लेषणात्मक भाषा में आबद्धरूपों का उपयोग नहीं होता है। संश्लेषणात्मक भाषा में आबद्धरूपों का प्रयोग बहुत अधिक होता है। इस प्रकार एक छोर पर आधुनिक चीनी भाषा जैसी पूर्णतया विश्लेषणात्मक भाषा है जिसमें

प्रत्येक शब्द एकाक्षरी रूपिम अथवा समास शब्द है अथवा पदसंहितीय शब्द है। दूसरे छोर पर एस्किमो जैसी अति संश्लेषणात्मक भाषाएँ हैं जहाँ आबद्धरूपों की एक लम्बी शृंखला शब्दरूप में संयोजित है यथा [a : wlisa-ut-iss? ar-si-niarpu-ŋa] 'मैं कटिया के उपयुक्त वस्तु की खोज में हूँ।' उपर्युक्त चरम स्थितियों के अतिरिक्त यह प्रभिन्नता सापेक्ष्य है। कोई भी एक भाषा किसी दूसरी भाषा की अपेक्षा किन्हीं स्थितियों में अधिक विश्लेषणात्मक और किन्हीं दूसरी स्थितियों में अधिक संश्लेषणात्मक हो सकती है। इसी प्रकार एक परियोजना के आधार पर भाषाओं को चार रूपीय प्रतिरूपों में विभाजित किया गया—वियोगात्मक, संसर्गात्मक, प्रश्लेषात्मक तथा संयोगात्मक। वियोगात्मक भाषाएँ वे मानी गईं जो चीनी भाषा की तरह आबद्धरूपों का प्रयोग नहीं करतीं। संसर्गात्मक भाषाएँ—एस्किमों के समान अपने आबद्धरूपों द्वारा क्रियोद्देश्य जैसी अर्थसम्बन्धी महत्वपूर्ण तत्त्वों को अभिव्यक्त करती हैं। संयोगात्मक भाषाओं में आर्थी परिच्छेदक अभिलक्षणों को एक अकेले आबद्धरूपों में अथवा घनिष्ठतया संयोजित आबद्धरूपों में सन्निविष्ट पाते हैं। यथा लैटिन amō (मैं प्यार करता हूँ) का ō परसर्ग वक्ता का कर्तृत्व, कर्त्ता का एकवचनत्व, वर्तमान कालत्व, यथार्थत्व (सम्भावना अथवा परिकल्पना मात्र नहीं) प्रदर्शित करता है। ये विभिन्नताएँ समपदस्थ नहीं हैं[1] जैसे कि संस्कृत में 'पठामि' (मैं पढ़ता हूँ) का -'मि' पर-प्रत्यय वक्ता का कर्तृत्व, कर्ता का एकवचनत्व, वर्तमानकालत्व, यथार्थत्व (नाकि संभावना अथवा परिकल्पना) आदि आर्थी परिच्छेदक अभिलक्षणों को व्यक्त करता है। ये विभिन्नताएँ पारस्परिक नहीं हैं। अन्तिम तीन वर्ग अभी भी स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं हुए।

13.2. चूँकि वक्ता एकाकी रूप में बोलकर आबद्धरूपों को पृथक् नहीं कर सकता है अतएव शब्द की संघटना का वर्णन नहीं कर पाता। रूपप्रक्रिया के विवरण के लिए क्रमबद्ध अध्ययन की आवश्यकता है। प्राचीन ग्रीकों ने इस दिशा में कुछ प्रगति की थी किन्तु मुख्य रूप से पाश्चात्य वर्तमान तकनीक हिन्दू वैयाकरणों की ऋणी है। हम लोगों की प्रणाली चाहे जितनी भी परिष्कृत हो जाए, अर्थ के मायावी स्वभाव के कारण कठिनाई अवश्य उपस्थित होगी, और विशेषरूप से उस स्थिति में जब अर्थ के संदिग्ध सम्बन्धों के

1. मूल में amō का उदाहरण दिया गया है।

साथ ही रूपात्मक अनियमितताएँ भी जुड़ी हुई हों। सम्भवतः goose, gosling, gooseberry, gander की सरणि में हम लोग प्रथम दो 'रूपों' को इस भाव से रूपात्मक दृष्टि से एक दूसरे से सम्बद्ध मान लेंगे कि gosling में का [goz] goose का ध्वन्यात्मक आपरिवर्तन है, किन्तु gooseberry का [guz-] अर्थ की दृष्टि से अनुकूल नहीं है तथा दूसरी ओर goose और gander के [g-] का रूपात्मक सादृश्य इतना कम है कि कोई भी प्रश्न कर सकता है कि क्या सचमुच इस रूपात्मक सादृश्य से भाषिक रूप में अर्थ का व्यावहारिक सम्बन्ध है। अन्तिम कठिनाई duck और drake में भी दिखाई है। इन दोनों में [d....k] उभयनिष्ठ है। किसी को भी शीघ्र ही पता चल जाएगा कि वक्ताओं से इसके उत्तर की अपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि वे रूपीय विश्लेषण नहीं करते। यदि उन्हें इस प्रकार के प्रश्नों से उलझाया भी जाय तो वे असम्बद्ध और निरर्थक उत्तर देते हैं। यदि भाषा के इतिहास का ज्ञान हो तो प्रायः यह पता चल जाता है कि भाषा की किसी प्राचीनतर अवस्था में अस्पष्टता नहीं थी। उदाहरण के लिए यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ शताब्दियों पूर्व gooseberry का रूप *groseberry था और goose से इसका कोई सम्बन्ध न था किन्तु इस प्रकार के तथ्य प्रकट रूप से यह नहीं बता पाते कि भाषा की वर्तमान स्थिति में कैसे क्या हो रहा है।

वाक्यविचार के अन्तर्गत आनेवाले मूर्छन और आपरिवर्तन पर विचार करते हुए हम स्वभावतः शब्द और पद-सहिति के निरपेक्ष रूप को अपना प्रारम्भिक बिन्दु मानते हैं। किन्तु एक आबद्ध रूप से जोकि अनेक आकारों में घटित होता है, मूल वैकल्परूप (basic alternant) क्या चुना जाए इस आधार पर, अनेक पूर्णतया भिन्न वर्णन बन जाते हैं। उदाहरण के लिए अँग्रेजी संज्ञाओं के बहुवचन सूचक पर-प्रत्यय साधारणतया तीन प्रकार के दिखाई पड़ते हैं—[-iz] glasses, [–z] cards, [–s] books यदि हम तीनों में से एक-एक को बारी-बारी से प्रारम्भिक बिन्दु मानकर चलें तो हम तीन भिन्न तथ्य-वर्णनों पर पहुँचते हैं।

अधिकतर और भी कठिनाइयाँ आती हैं। कभी-कभी सामान्यतः भाषिक-रूपों से अभिव्यक्त होने वाले अर्थ की अभिव्यक्ति ध्वन्यात्मक आपरिवर्तन जैसे व्याकरणिक अभिलक्षण से होती है, यथा man : men। यहाँ स्वर का आपरिवर्तन सामान्यतया प्रयुक्त बहुवचन पर-प्रत्यय के स्थान पर है। कुछ

स्थितियों में कोई भी व्याकरणिक अभिलक्षण नहीं मिलता है, वहाँ एकमात्र ध्वन्यात्मकरूप समरूपता के ढँग से दो अर्थों को व्यक्त करता है जो भाषिक-रूपों से प्रभिन्न की जाती है, यथा एकवचन और बहुवचन संज्ञा the sheep (grazes) : the sheep (graze) । यहाँ पर हिन्दू वैयाकरणों ने देखने में कृत्रिम किन्तु व्यवहारतः बहुत-ही उपयोगी युक्तिशून्य तत्व ढूँढ निकाला । sheep : sheep में बहुवचन सूचक परप्रत्यय शून्य है अर्थात् कोई भी दृष्टिगोचर परप्रत्यय नहीं लगा है ।

13.3 ऐसी तथा ऐसी-ही अन्य कठिनाइयों की तो बात ही अलग है, प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की असंगति से पदविज्ञान के वर्णनात्मक विवरण में परिभ्रान्ति उत्पन्न हो जाने की सम्भावना है । संलग्न संरचकों (§10.2) के सिद्धान्त को ध्यान में रखना सर्वोपरि आवश्यक है । प्रारम्भ में ही इस सिद्धान्त के आधार पर संलग्न संरचकों के अनुसार कुछ शब्दों के वर्गों में पारस्परिक विभिन्नता प्रकट होती है ।

अ. गौणशब्द, जिनमें मुक्तरूप संलग्न संरचक के रूप में रहते हैं :

1. समासयुक्त शब्द : जिनमें एकाधिक स्वतन्त्र रूप हैं : door-knob, wild-animal-tamer । अन्तर्विष्ट स्वतन्त्ररूप, समास शब्द के संरचक सदस्य हैं । प्रस्तुत उदाहरण में door, knob, tamer शब्द हैं तथा wild animal पदसंहिति है ।

2. साधित गौण शब्द : जिनमें एक ही स्वतन्त्र रूप है : boyish, old-maidish अन्तर्विष्ट स्वतन्त्र रूप 'आधारवर्ती रूप' कहा जाता है । प्रस्तुत उदाहरण में आधारवर्ती रूप शब्द boy और पदसंहिति old maid है ।

आ: मूल शब्द : जिनमें एक भी स्वतन्त्र रूप नहीं होता :

1. साधित मूल शब्द : जिनमें एकाधिक आबद्धरूप हैं । re-ceive, de-ceive, con-ceive, re-tain, de-tain, con-tain ।

2. रूपिम 'शब्द' जिनमें केवल एक (स्वतन्त्र) रूपिम होता है : man, boy, cut, run, red, big ।

संलग्न संरचकों के सिद्धान्त के आधार पर gentlemanly रूप को हम समासयुक्त शब्द वर्ग के अन्तर्गत नहीं रखेंगे, बल्कि गौण शब्द जैसे वर्ग में रखेंगे, क्योंकि इसके संलग्न संरचक आबद्धरूप -ly और आधारवर्ती रूप gentleman है । gentlemanly शब्द, गौण साधित रूप (तथाकथित समासजात) है जिसका आधारवर्ती एक समासयुक्त शब्द है । इसी प्रकार

door-knobs एक समासयुक्त शब्द न होकर समासजात शब्द है जिसमें [–z] आबद्धरूप और आधारवर्ती शब्द door-knob है ।

संलग्न संरचकों का सिद्धान्त संरचकों के संघटनात्मकक्रम (structural order) को स्पष्ट करता है जो अपने वास्तविक पूर्वानुपरक्रम से भिन्न हो सकता है। इस प्रकार ungentlemanly में un-और gentlemanly हैं। आबद्धरूप आदि में लगा है किन्तु gentlemanly दो रूप gentleman और –ly से बना है और आबद्धरूप अन्त में जुड़ा है ।

13.4 अपेक्षाकृत सरल रूपीय विन्यास के उदाहरणस्वरूप हम गौण-साधन की संरचनाओं को ले सकते हैं जो अंग्रेजी की बहुवचन संज्ञाओं (glass-es) तथा क्रिया के भूतकाल (land-ed) में प्रकट होती है ।

जहाँ तक चयन का प्रश्न है दोनों स्थितियों में आबद्धरूप अनन्य है, आधारवर्ती रूप दो बड़े रूपवर्गों में आते हैं। बहुवचन संज्ञाएँ एकवचन संज्ञाओं से (यथा glass से glasses) सिद्ध होती हैं तथा भूतकाल क्रिया के असमापिका रूप धातुओं से (यथा land से landed)। सहायक चयन के विन्यासिमों के सम्बन्ध में बाद में विचार करेंगे ।

जहाँ तक क्रम का प्रश्न है दोनों स्थितियों में आबद्धरूप आधारवर्ती रूप के बाद बोला जाता है ।

अंग्रेजी रूपप्रक्रिया की लगभग समस्त संरचनाओं में विद्यमान मूर्छन के अभिलक्षण के कारण आधारवर्ती रूप में बलाघात बना रहता है और आबद्धरूप बलाघातहीन होता है ।

ध्वन्यात्मक परिवर्तन का विन्यासिम अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है और उससे कुछ ऐसी विचित्रताओं का दिग्दर्शन भी होता है जो अनेक भाषाओं की रूप प्रक्रिया में मिलती हैं ।

विवेचन प्रारम्भ करने के लिए यह तथ्य ले सकते हैं कि आबद्धरूप कई वैकल्परूपों में प्रकट होता है । ये विभिन्न आकृतियाँ निम्नलिखित उदाहरणों में ध्वन्यातम आपरिवर्तन के अभिलक्षणों के कारण हैं :

glass : glasses [–iz]
pen : pens [–z]
book : books [–s]

यदि हम अनेक उदारहरण लें तो हमें शीघ्र ही पता चलेगा कि आबद्धरूप की आकृति सहगामी रूप के अन्तिम स्वनिम से निर्धारित होती है । [–iz]

स्पर्श-संघर्षी तथा सिस्-ध्वनियों के पूर्व आता है (glasses, roses, dishes, garages, churches, bridges), [-z] अन्य घोष स्वनिमों के बाद आता है (saws, boys, ribs, sleeves, pens, hills, cars) और [-s] अन्य सभी अघोष ध्वनियों के पश्चात् (books, cliffs) । चूँकि इन तीन वैकल्परूपों [iz,–z,–s] का अन्तर ध्वन्यात्म आपरिवर्तन के आधार पर वर्णित हो सकता है हम इन्हें 'ध्वन्यात्म वैकल्परूप' कहते हैं । चूँकि इन तीन वैकल्परूपों का वितरण सहगामी रूपों के भाषा वैज्ञानिक आधार पर अभिज्ञात लक्षणों द्वारा नियमित होता है अतः हम इस वैकल्पिकरूप को नियमित (regular) कहते हैं । अन्त में, चूँकि सहगामी रूपों के निर्धारक लक्षण स्वनिमीय (अन्तिम स्वनिम का अस्तित्व) है, हम विकल्पन को स्वचेष्ट (automatic) कहते हैं ।

अधिकाँश भाषाओं की रूपप्रक्रिया में नियमित विकल्पन का महत्वपूर्ण कार्य होता है । सारे नियमित विकल्पन ध्वन्यात्मक अथवा स्वचेष्ट नहीं होते । उदाहरण के लिए, जर्मन भाषा में कुछ वाक्यीय अभिलक्षणों द्वारा एकवचन संज्ञाओं का तीन रूपवर्गों में विभाजन किया जाता है जिन्हें लिंगविधान कहते हैं (§12.7) अब जर्मन बहुवचन संज्ञाएँ एकवचन संज्ञाओं में आबद्धरूप जोड़कर सिद्ध होती हैं । ये आबद्धरूप आधारवर्ती एकवचन रूपों के लिंग के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं ।

पुंल्लिंग संज्ञाओं में निश्चित स्वर परिवर्तन के साथ [–e] जोड़ा जाता है । der Hut [hu:t] "हैट", Hute ['hy:te] "हैटो" der Sohn [zo:n] "बेटा" : Söhne [zθ:ne] "बेटे" der Baum [bawm] "पेड़" : Bäume ['bojme] "पेड़ों" । अजीवी संज्ञाओं में बिना स्वर परिवर्तन के [–e] जोड़ा जाता है das Jahr [ja:r] "वर्ष" : jahre ['ja:re] "वर्षों" das Boot [bo:t] "नाव" : Boote ['bo:te] "नावों" das Tier [ti:r] "पशु", Tiere ['ti:re] "पशुओं" ।

स्त्रीलिंग संज्ञाओं में [–en] जोड़ा जाता है । die Uhr [u : r] "घड़ी" Uhren ['u: ren] "घड़ियाँ" die Last [last] "बोझा :" *Lasten* ['lasten] "बोझों", die Frau [fraw] "स्त्री", Frauen ['frawen] "स्त्रियाँ" ।

यह विकल्पन (उन विशिष्ट उपलक्षणों के अतिरिक्त जिनपर हमें विचार नहीं करना है) नियमित है, किन्तु चूंकि तीन वैकल्परूपों में स्वर

परिवर्तन के साथ [-e], [e] और [-en] में अन्तिम [-en] इस भाषा की व्यवस्था के अनुसार ध्वन्यात्मक रूप से पहले दोनों से नहीं मिलता-जुलता है। यह विकल्पन स्वचेष्ट भी नहीं है, बल्कि व्याकरणिक है क्योंकि यह ध्वनियों पर निर्भर न होकर आधारवर्ती रूप की व्याकरणिक (प्रस्तुत उदाहरण में वाक्यीय) विशिष्टताओं पर निर्भर होता है।

13.5 ध्वन्यात्मक आपरिवर्तन की दृष्टि से, अंग्रेजी बहुवचन संज्ञाओं में आनेवाले आबद्धरूप के तीन वैकल्परूपों को [-iz, -z, -s] की सजातीयता के सम्बन्ध में हमने अभी तक निरूपण नहीं किया है। तीनों रूपों में से अपनी इच्छानुसार किसी रूप को केन्द्र मानकर आरम्भ करने पर तीन नितान्त भिन्न विवरण सम्भव हैं। किन्तु हमारा लक्ष्य विवरण के ऐसे यथासम्भव सरलतम कथनों का समुच्चय प्राप्त कर लेना है जिससे हम अंग्रेजी भाषा के तथ्यों का विवरण प्रस्तुत कर सकें। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर विभिन्न संभव सूत्रों को प्रयुक्त करने में प्रायः अधिक श्रम करना पड़ता है। वर्तमान उदाहरण में हम लोगों को थोड़ी-सी ही कठिनाई पड़ेगी क्योंकि हम लोगों का विकल्पन, पूर्णरूप से समानान्तर अंग्रेजी वाक्य रचना में प्राप्य विकल्पन सा है। आश्रयी शब्द जिनका निरपेक्ष रूप is ['iz] है ठीक बहुवचन प्रत्यय की भांति विकल्पित होता है :—

Bess's ready [iz, əz]

John's ready [z]

Dick's ready [s]

चूंकि इस स्थिति में निरपेक्ष रूप is आवश्यकरूप से विवरण का आरम्भ बिन्दु है अतः हम सरलतम सूत्र पर पहुंचते हैं। यदि आबद्धरूप का भी मूल वैकल्परूप (basic alternant) [–iz] मान लें हम तब कह सकते हैं कि अंग्रेजी में कोई रूपिम जिसका रूप [iz, ez] है बलाघातहीन होकर सिस् और स्पर्श संघर्षी स्वनिमों के अतिरिक्त अन्य सभी स्वनिमों के बाद स्वर खो देता है, और तब [s] अघोष ध्वनियों के बाद [z] से विस्थापित होता है। इसी के अन्तर्गत अन्य पुरुष, वर्तमान काल की क्रियाओं के परप्रत्ययों का विस्थापन आ जाता है—misses : runs : breaks और सम्बन्धसूचक विशेषणों का परप्रत्यय Bess's, John's, Dick's. इसके अतिरिक्त, यह क्रिया के भूतकालिक परप्रत्ययों के साथ हमें समानान्तर सूत्र प्रयोग में लाने की ओर प्रवृत्त करता

है। यह परप्रत्यय इन तीन समानान्तर वैकल्परूपों में प्रकट होता है :—

land : landed [–id]
live : lived [–d[
dance : danced [–t]

और हमें अपने विवरण से [–id] को मूलरूप मानने में हिचक नहीं होनी चाहिए और न यह कहने में कि यह रूप अपना स्वर दन्त्य स्पर्श को छोड़कर सभी स्वनिमों के बाद खो बैठता है, और तब सारे अघोष स्वनिमों के बाद [d] [t] से विस्थापित हो जाता है।

13.6 अंग्रेजी बहुवचन संज्ञाओं के सर्वेक्षण से शीघ्र ही स्पष्ट हो जाएगा कि जो विवरण हमने प्रस्तुत किया है वह असंख्यरूपों के साथ ठीक बैठता है किन्तु कुछ निश्चित संख्या के अपवादों के साथ उसकी संगति नहीं है। कुछ उदाहरणों में बहुवचन के संरचकरूप ध्वन्यात्मक दृष्टि से आधारवर्ती रूप से भिन्न मिले हैं :

Knife [najf] : Knives [najv-z]
mouth [maw θ] : mouths [mawð–z]
house [haws] : houses ['hawz–iz]

इन बहुवचनों की विलक्षणता हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं कि आबद्धरूप जोड़ने के पूर्व एकवचन आधारवर्ती रूप का अन्तिम [f, θ, s] [v, ð, z] से विस्थापित किया जाता है। इस कथन के 'पूर्व' शब्द से अभिप्राय यह है कि आबद्धरूप का वैकल्परूप विस्थापित ध्वनि के अनुकूल होता है। इस प्रकार knife के बहुवचन में [–s] नहीं, बल्कि [–z] जोड़ा जाता है। प्रथमतः [–f], [–v] ध्वनि से विस्थापित होती है और 'तब' उसमें [–z] जोड़ा जाता है। इस कथन में प्रयुक्त 'पूर्व', 'बाद', 'प्रथम' और 'तब' आदि अन्य शब्द वर्णनात्मक क्रम (descriptive order) बताते हैं। संरचकों का वास्तविक पूर्वानुपरक्रम और उनका संरचनात्मक क्रम (13.3) भाषा के एक अंग हैं किन्तु व्याकरणिक अभिलक्षणों का वर्णनात्मक क्रम एक कल्पित वस्तु है और रूपों को वर्णित करने की हमारी प्रणालीमात्र पर निर्भर है। उदाहरण के लिए यह कहने की आवश्यकता नहीं कि एक वक्ता knives बोलते समय न तो 'पहले' [f] को [v] से विस्थापित करता है और न उसके बाद [–z] जोड़ता है, वह तो केवल एक रूप (knives) बोल देता है जो एक निश्चित-

रूप (knife) से किन्हीं बातों में मिलता है और किन्हीं बातों में नहीं मिलता है।

यदि उन अंग्रेजी बहुवचन संज्ञाओं से जो आधारवर्तीरूप के अन्तिम संघर्षी-ध्वनि को घोष में परिवर्तित कर देती हैं, कोई ऐसी सर्वनिष्ठ अथवा व्याकरणिक विशेषता प्रकट हो जिससे उसे अन्य दूसरी संज्ञाओं से पहचाना जा सके तो हम इस विलक्षणता को नियमित विकल्पन कहेंगे। किन्तु यह स्थिति ऐसी नहीं क्योंकि कुछ अन्य बहुवचन रूप ऐसे हैं यथा cliffs, myths, creases जहाँ आधारवर्ती [f, θ, s] ध्वनियाँ अपरिवर्तित रहती हैं। हम लोग अपने कथन को एक वर्ग के अनुकूल बना सकते हैं, किन्तु ऐसी स्थिति में हमें उन स्थितियों की सूची देनी पड़ेगी जो सामान्य कथन के अन्तर्गत नहीं आते। ऐसे रूपों के समुच्चय को अनियमित (irregular) कहते हैं जो सामान्य कथन में नहीं आ पाते, बल्कि उन्हें एक सूचीरूप में प्रस्तुत करना पड़ता है। हम वास्तव में प्रयत्न करते हैं कि अपने वर्णन को इस तरह व्यवस्थित करें कि यथासम्भव अधिक से अधिक रूप सामान्य कथन के अन्तर्गत आ जाएं। हम कौन-सा विकल्प स्वीकार करें इसका निर्णय प्रायः इससे हो जाता है कि रूपों का एक वर्ग अनिश्चित सीमा का है और उसका वर्णन एक सामान्य कथन द्वारा हो सकता है, न कि एक सूची द्वारा।

स्पष्टतया हमें ऐसी स्थिति, [–s] में अन्त होनेवाली अंग्रेजी संज्ञाओं में मिलती है। house के लिए houses अकेला उदाहरण है जहाँ बहुवचन में [–s] [z] से विस्थापित होता है जबकि अगणित बहुवचन संज्ञाएं आधारवर्ती [–s] को बनाए रखती हैं (glasses, creases, curses dances आदि)। इस स्थिति में हम लोगों की सूची में केवल एक रूप है, houses एक अनन्य (unique) अनियमितता है। बहुवचनों की सूची जिनमें आधारवर्ती रूप का [s], [ð] से विस्थापित होता है, बड़ी नहीं है। कुछ ही रूप इसके अन्तर्गत आते हैं जैसे baths, paths, cloths, mouths (और कुछ वक्ताओं के लिए laths, oaths, truths, youths आदि)। दूसरी ओर हमें बहुत से ऐसे बहुप्रयुक्त रूप मिलते हैं जैसे months, widths, drouths, myths, hearths, और इससे भी अधिक निर्धारक तथ्य यह है कि अनेक शब्दों में जिनका बहुवचनान्त रूप परम्परा से प्रचलित नहीं है अर्थात् वक्ता जिनके बहुवचनान्त रूप को बिना पहले कभी सुने बनाता है, [–θ] बहुवचन प्रत्यय के पूर्व अपरिवर्तित बना रहता है जैसे : the McGraths, napropaths,

monoliths. [–f] वाली स्थिति में सूची लम्बी है : knives, wives, lives calves, halves, thieves, leaves, sheaves, beeves, loaves, elves, shelves (और कुछ वक्ताओं के लिए hooves, rooves, scarves, dwarves, wharves भी) हम इन्हें अनियमित कहते हैं इसलिए नहीं कि इनके प्रति-उदाहरण मिल जाते हैं यथा cliffs, toughs, reefs, oafs बल्कि इसलिए भी कि प्रचलित और कभी-कभी प्रयुक्त रूप जैसे (some good), laughs, (general) staffs, monographs भी मिलते हैं।

जहाँ दो समानान्तर प्रतिपादन साथ-साथ चलते हैं, यथा laths [la : θs] अथवा [la:ðz], roofs अथवा rooves में, वहाँ परिवर्तों के लक्षणार्थ (connotation) में सामान्यतः बहुत-ही थोड़ा अन्तर रहता है। अंग्रेजी समूहवाचक संज्ञा (12.14) beef का कोई साधारण बहुवचन रूप नहीं है, इसका बहुवचन रूप beeves एक विशिष्टीकृत (specialized) साध्य रूप है क्योंकि यह आर्ष-काव्यात्मक व्यंग्यार्थ चौपाए (cattle), बैलों (oxen) द्वारा अर्थ में भिन्न है।

आगे बढ़ते हुए हमें ध्यान रखना चाहिए कि जिन व्याकरणिक अभि-लक्षणों के सम्बन्ध में हमने विचार किया है सिस्-स्पर्श संघर्षी, दन्त्य स्पर्श, सघोष, अघोष, के समान वर्गों को परिभाषित करते हुए तथा [f, θ, s] बनाम [v, ð, z] तथा [t] बनाम [d] का सम्बन्ध स्थापित करते हुए ध्वन्यात्मक ढाँचे (§ 8·5) का अभिलक्षण निर्धारित करते हैं।

हम विवरण दे सकते हैं कि 'अन्त्य-संघर्षी का घोषीकरण [-s] धन (+) पर-प्रत्यय [-iz, -z, s] नियमित बहुवचन पर-प्रत्यय [-iz, -z, -s] का अनियमित वैकल्प (irregular alternant) है। यहाँ अनियमितता आधारवर्तीरूप के ध्वन्यात्म आपरिवर्तन से संबंध रखती है। वही आपरिवर्तन अनन्यरूप से अनियमित staff : staves के आक्षरिक आपरिवर्तन का सहवर्ती होता है। cloths [klɔ:ðz] के सामान्य अर्थ 'कपड़े' में एक अनियमित बहुवचनरूप cloth [klɔ:θ] clothes [klowz] मिलता है, इसके अतिरिक्त विशिष्टीकृत अर्थ "पहनाना, पोशाक" के अर्थ में एक अनन्य अनियमित बहुवचन रूप clothes [klowz] मिलता है।

समरूपी अन्य पुरुष वर्तमानकाल क्रिया का पर-प्रत्यय do [duw] : does [dʌz], say [sej] : says [sez], have [hɛv] : has [hɛz] में आधार-वर्ती रूप के ध्वन्यात्म-आपरिवर्तन का सहवर्ती है।

भूतकाल पर-प्रत्यय [-id, -d, -t] इन अनियमित रूपों say : said, flee : fled, hear [hiə] : heard [hə:d] keep : kept (और इसी प्रकार crept, slept, swept, wept, leaped तथा leapt वैकल्पिक है) do : did, sell : sold (और इसी प्रकार told) make: made, have : had के ध्वन्यात्मक आपरिवर्तन का सहवर्ती है।

13.7 कुछ स्थितियों में आबद्धरूप असामान्य आकृति में मिलता है। die : dice में वैकल्प [-s] सामान्य प्रवृति के विरुद्ध दिखाई पड़ता है। penny : pence में वही अभिलक्षण आधारवर्ती रूप में आपरिवर्तन ([-i] के लोप) के साथ मिलता है। साथ ही सामान्य वैकल्प pennies की तुलना में अर्थ में भी विशिष्टता आ गई है। भूतकाल में आर्ष वैकल्प burnt, learnt में हमें [-d] के स्थान पर [-t] मिलता है। यदि हम कहें कि अंग्रेजी में वर्जित अन्त्य गुच्छ [-dt] [-t] से विस्थापित हो जाता है तो हम bent, lent, sent, spent और built रूपों को [-id] की जगह [-t] के अन्तर्गत वर्गीकृत कर सकते हैं।

feel : felt दोनों संरचकों में तथा उसी प्रकार dealt, knelt, dreamt, meant में ध्वन्यात्म आपरिवर्तन होता है। यदि हम कहें कि वर्जित अन्त्य गुच्छ [-vt, -zt] क्रमशः [-ft, -st] से स्थानान्तरित किए जाते हैं तो हम यहाँ leave : left तथा lose : lost को भी इसी वर्ग में रख सकते हैं। आबद्धरूप [-d] के स्थान पर [-t] वैकल्प में मिलता है और आधारवर्तीरूप आक्षरिक तथा [ɔ:] की अनुगामी सभी ध्वनियों को विस्थापित करता है—seek [sijk] : sought [sɔ : t] और इसी प्रकार bought, brought, caught taught, thought.

चरम स्थिति में एक वैकल्प दूसरे वैकल्प से कोई सादृश्य नहीं रखता ox : oxen में बहुवचन रूप में जोड़ा गया आबद्धरूप [-iz, -z, -s] के स्थान पर [–n] है। यदि भाषा में इसी प्रकार की समानान्तर स्थितियाँ नहीं मिलती हैं जो इस विच्युतरूप को ध्वन्यात्म आपरिवर्तन मानने में सपुष्टि दें तो इस भाँति के वैकल्प रूप को पूर्णादिष्ट वैकल्प रूप (suppletive) पूर्णादेश कहते हैं। इस प्रकार oxen का [n], [-iz], -z, -s] का पूर्णादिष्ट वैकल्परूप है क्योंकि अंग्रेजी व्याकरण में कोई भी उदाहरण [-iz] का [-n] जैसा पूर्णादिष्ट ध्वन्यात्म आपरिवर्तन नहीं बताता। दूसरे उदाहरणों में आधारवर्ती रूप ही को पूरक बनना पड़ता है। साधारण व्युत्पन्न रूप kind : kinder, warm : warmer

और good : better, good एक बिल्कुल ही भिन्न रूप bet-, से विस्थापित होता है जिसे हम तदनुसार good का पूर्णादिष्ट वैकल्परूप कहते हैं। इसी प्रकार क्रियार्थक संज्ञा be अन्य पुरुष वर्तमानकाल [iz] is में [i-] के द्वारा पूरक बनना पड़ता है। child : children में आबद्धरूप का एक पूरक वैकल्परूप [-rən] आधारवर्ती शब्द के ध्वन्यात्म आपरिवर्तन के साथ-साथ मिलता है।

दूसरी चरम स्थिति शून्य वकलपरूप की है जिसमें एक संरचक बिल्कुल लुप्त रहता है जैसा कि बहुवचन रूप sheep, deer, moose, fish आदि में। ये बहुवचन अनियमित हैं क्योंकि यद्यपि इनमें से कुछ (उदाह ण के लिए मछली की जातियां--पर्च, बास, पिकरल, इतनी बड़ी हैं कि अलग नमूनों में रखने योग्य हैं और दूसरी वस्तुओं के अनुसार इनका नामकरण नहीं हुआ है) अर्थ के व्यावहारिक लक्षण से वर्गीकृत किए जा सकते हैं। उनका कोई रूपात्मक वैशिष्ट्य नहीं है जिसके आधार पर हम उनकी परिभाषा कर सकें। क्रियाओं का अतीतकाल सूचक प्रत्यय bet, let, set, wet, hit, slit, split, cut, shut, put, beat, cast, cost, burst, shed, spread और wed में शून्य वैकल्प सूचित करता है। अन्य पुरुष वर्तमान काल पर-प्रत्यय का can, shall, will, must, may में एक शून्य वैकल्प है और कुछ संरचनाओं में (उदाहरण के लिए विशेषक not के साथ) need और dare में। यह शून्य यहां नियमित व्याकरणिक परिवर्तन के रूप में मिलता है क्योंकि ये क्रियाएँ अपने वाक्यीय संरचना के आधार पर परिभाषित हो सकती हैं कि ये बिना पूर्वप्रत्यय to के काल-निरपेक्ष विशेषक के प्रयोग में आती हैं। अंग्रेजी का धारक विशेषण पर प्रत्यय [-iz, -z, -s] एक स्थिति में शून्य वैकल्प रखता है, यह स्थिति आधारवर्ती रूप का बहुवचन पर-प्रत्यय [-iz, -z, -s] से अन्त होना, उदाहरण के लिए 'the boys'।

शून्य वैकल्प सहवर्ती रूप के आपरिवर्तन के साथ भी लग सकता है। इस प्रकार बहुवचन संज्ञाएँ geese, teeth, feet mice, lice, men, women ['wimən] एकवचन में कुछ आबद्धरूप लगकर नहीं बनतीं बल्कि उनमें एक भिन्न अक्षरीय रूप है। इन बहुवचनों में एक व्याकरणिक अभिलक्षण, ध्वन्यात्म आपरिवर्तन, अर्थ (अर्थात् अर्थिम एकाधिकत्व) को व्यक्त करता है जो सामान्यत: भाषिकरूप (अर्थात् रूपिम [-iz,-z,-s]) द्वारा व्यक्त होता है। हम कह सकते हैं कि [ij] की स्थानापत्ति (आधारवर्ती रूप के बलाघातयुक्त आक्षरिक के

लिए) geese, teeth, feet में, [aj] की स्थानापत्ति mice, lice में, [e] की स्थानापत्ति men में, [i] की स्थानापत्ति women में ये प्रसामान्य बहुवचन परप्रत्यय के वैकल्परूप हैं––अर्थात् ये स्थानापत्ति वैकल्परूप अथवा स्थानापत्तिरूप हैं। अंग्रेजी की भूतकालिक क्रियाओं में विभिन्न आक्षरिकों की स्थानापत्ति पाई जाती है जो [-id,-d,-t] का स्थान लेते हैं, यथा :––

[ɔ] got, shot, trod

[ɛ] drank, sank, shrank, rang, sang, sprang, began, ran, swam, sat, spat.

[e] bled, fed, led, read, met, held, fell

[i] bit, lit, hid, slid

[c] saw, fought

[ʌ] clung, flung, hung, slung, swung, spun, won, dug, stuck, struck.

[u] shook, took

[ej] ate, gave, came, lay

[aw] bound, found, ground, wound

[ow] clove, drove, wove, bore, swore, tore, wore, broke, spoke, woke, chose, froze, rose, smote, wrote, rode, stole, shone साथ ही dove जिसका नियमितरूप dived है किन्तु एक परिवर्त के रूप में।

[(j) uw] knew, blew, flew, slew, drew, grew, threw.

stand और stood में, जहाँ वैकल्परूप में [u] की स्थानापत्ति और [n] का लोप हो गया है, हमें और भी अधिक उलझन में डालनेवाला रूप मिलता है।

be:was, go:went, I:my, we:our, she:her, bad:worse में शून्य वैकल्परूप आबद्धरूप को तथा पूर्णादिष्ट वैकल्परूप आधारवर्ती रूप को विस्थापित करता है।

have [hɛv]: had [hɛ-d] या make [mejk] : made [mej-d] में एक स्वनिम के लोप से संरचक का आपरिवर्तन हो गया है। इस लोप को "ऋण-अभिलक्षण" कह सकते हैं। शून्य अभिलक्षण अथवा स्थानापत्ति अभिलक्षण की भाँति ऋण-अभिलक्षण भी स्वतंत्रतापूर्वक आ सकता है। उदाहरण के लिए फ्रेंच विशेषणों में "नियमित वर्ग" का एक-ही रूप होता है चाहे उसका सहवर्ती पुंल्लिंग हो, यथा rouge [ru:ʒ] "लाल", un livre rouge[œ li:vrə ru:z] "एक लाल किताब," पुंल्लिंग और une plume

rouge [yn plym ru:ʒ] "एक लाल पंख या कलम" स्त्रीलिंग। फिर भी पर्याप्त विशाल वर्ग में पुंल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप भिन्न-भिन्न होते हैं। un livre vert [vɛ:r] "एक हरी किताब," किन्तु une plume verte [vɛrt] "एक हरा पंख या कलम"। इस प्रकार :

पुंल्लिंग			स्त्रीलिंग	
plat	[pla]	चिपटा	platte	[plat]
laid	[lɛ]	कुरूप	laide	[lɛd]
distinct	[distɛ̃]	भिन्न	distincte	[distɛkt]
long	[lõ]	लम्बा	longue	[lõg]
bas	[ba]	नीचा	basse	[ba:s]
gris	[gri]	भूरा	grise	[gri:z]
frais	[frɛ]	ताजा	fraîche	[frɛ:ʃ]
gentil	[ʒãti]	सज्जन	gentille	[ʒãti:j]
léger	[leʒe]	हल्का	légère	[leʒɛ:r]
soul	[su]	पिया हुआ	soule	[sul]
plein	[plɛ̃]	पूरा	pleine	[plɛ:n]

यह स्पष्ट है कि यहाँ वर्णन की दो स्थितियाँ सम्भव हैं। हम पुंल्लिंग रूपों का आधार मानकर चल सकते हैं और बता सकते हैं कि उनमें प्रत्येक दशा में स्त्रीलिंग रूप में कौन-सा व्यंजन संयोजित हुआ है। किन्तु यह सचमुच बहुत-ही उलझनपूर्ण कथन होगा। दूसरी ओर यदि हम स्त्रीलिंगरूपों को आधार मानें तो हम इस अनियमित ढांचे को साधारण कथन से वर्णित कर सकते हैं कि पुंल्लिंग रूप, स्त्रीलिंग रूप से ऋण-अभिलक्षण द्वारा सिद्ध हुआ है अर्थात् अन्तिम व्यंजन और व्यंजन गुच्छ [-kt] का लोप होता है। यदि हम दूसरा मार्ग अपनाएँ तो हम पाते हैं कि दो रूपों के बीच के अन्य सभी अन्तर स्वरमात्रा और अनुनासिकता (जैसा कि अन्तिम उदाहरण में है) फ्रेंच रूपरचना के अन्य स्थलों पर पुनः प्रकट होते हैं और बहुत सीमा तक ध्वन्यात्मक ढांचे पर आरोपित हो सकते हैं।

पूर्व विवरण के अन्तिम भाग से स्पष्ट हो जाता है कि शब्द गौण-साधन का अभिलक्षण रख सकता है और फिर भी शून्य अभिलक्षण के साथ केवल एक रूपिम से बना हो सकता है। (sheep बहुवचन रूप में, cut भूतकाल के रूप में)

स्थानापत्ति अभिलक्षण द्वारा (men, sang) पूर्णादेश द्वारा (went, worse) अथवा ऋण-अभिलक्षण द्वारा (फ्रेंच vert, पुंलिंग)। हम इन शब्दों को गौण सिद्ध शब्दों के अन्तर्गत वर्गीकृत करते हैं और उनकी विशिष्टता उन्हें गौणरूपिम शब्द कहकर प्रकट करते हैं।

13.8 आबद्धरूप जो गौण सिद्धि में आधारवर्ती रूप के साथ जोड़े जाते हैं प्रत्यय कहे जाते हैं। आधारवर्ती रूप के पूर्व आने वाले प्रत्यय पूर्व-प्रत्यय (prefixes) कहे जाते हैं यथा be-head में be। बाद में आने वाले प्रत्यय पर-प्रत्यय (suffix) कहे जाते हैं, जैसे glasses में [-iz] अथवा boyist में -ish। जो आधारवर्ती के भीतर जोड़े जाते हैं वे अन्तःप्रत्यय (infixes) कहे जाते हैं। इस प्रकार तगलाग में आधारवर्ती रूप के प्रथमस्वर के पूर्व बहुत-से अन्तःप्रत्यय जोड़े जोते हैं ['su:lat] "एक आलेख" में (-un)- अन्तःप्रत्यय जोड़कर [su'mu:lat] "वह जिसने लिखा" तथा [-in-] जोड़कर [si'nu:lat] "वह जो कुछ लिखा गया" रूप सिद्ध होते हैं। द्वित्व (Reduplication) एक प्रत्यय है जो आधारवर्ती रूप की आवृत्ति से बनता है यथा तगलाग [su:-'su:lat] "वह जो लिखेगा," ['ga:mit] "उपयोग की वस्तु": [ga:-'ga:mit] "वह जो उपयोग करेगा"। द्वित्व की अनेक सीमाएँ हो सकती हैं: फाक्स भाषा में [wa:pamɛ:wa] "वह उसकी ओर देखता है": [wa:-wa:pamɛ:wa] "वह उसकी परीक्षा करता है"। [wa:pa-wa: pamɛ:wa] "वह उसकी ओर देखता रहता है। "ध्वनि की दृष्टि से परम्परागत रूप में यह आधारवर्ती शब्द से भिन्न हो सकता है। प्राचीन ग्रीक ['phajnej] "यह चमकता है,"यह दिखता है" [pam-'phajnej "यह तेज चमकता है," संस्कृत "भर्ति" "वह वहन करता है," "बिभर्ति" "वह अच्छी भांति वहन करता है" "भरिभर्ति" "वह बहुत तीव्रगति से वहन करता है"।

13·9 हम देख चुके हैं कि जब रूपों में आंशिक समानता होती है तब एक प्रश्न यह उठ सकता है कि किस एक को आधारवर्ती रूप मानना अधिक उचित रहेगा। इस प्रश्न का हल हमें उस भाषा की संरचना से मिलता है। यदि एक को आधारवर्ती मानने से अनावश्यक रूप से बहुत उलझा हुआ वर्णन मिलता है, और दूसरे को आधारवर्ती मानने से सरल वर्णन मिलता है तो दूसरे को आधारवर्ती मानना समुचित होता है। उदाहरण के लिए जर्मन में घोष स्पर्श [b, d, g, v, z] अन्त में नहीं आते और तत्स्थानीय घोष स्वनिमों से विस्थापित

हो जाते हैं। इस प्रकार हमें निम्न वर्ग मिलते हैं :—

आधारवर्ती शब्द			सिद्ध शब्द		
Gras	[gra:s]	घास	grasen	['gra:z-en]	चरना
Haus	[haws]	घर	hausen	'hawz-en]	घर चलना
Spasz	[ʃpa:s]	मजाक	spaszen	['ʃpa:s-en]	मजाक करना
dus	[aws]	बाहर	auszen	['aws-en]	बाहर की ओर

स्पष्ट है यदि हमने आधारवर्तीरूप को उनकी वास्तविक आकृति में आधाररूप लिया होता तो हमें यह स्पष्ट करने के लिए एक लम्बी सूची देनी पड़ी होती कि उनमें से कौन [s] की जगह पर [z] से सिद्ध में मिलते हैं। यही सरल वर्णन पाने के लिए हम प्रायः एक कृत्रिम आधारवर्ती रूप बना लेते हैं। दूसरी ओर यदि हम [spa:s, aws] की तुलना में [-z] वाले कृत्रिम आधारवर्ती रूप से आरम्भ करें यथा [gra:z,-hawz-] तो हमें सूची देने की आवश्यकता नहीं पड़ती और एक रूप अन्त्य [-s] का, जो वास्तव में मान्य अन्त्य के नियमानुसार निरपेक्ष रूपों में मिलता है, विवरण प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रकार अन्य घोष स्पर्शों में भी, यथा :—

rund	[runt]	गोल	runde	['rund-e]	गोल से
bunt	[bunt]	खिचड़ी	bunte	['bunt-e]	खिचड़ी से

जहाँ हम [bunt] की तुलना में [rund-] को एक सैद्धान्तिक आधाररूप मानकर चलते हैं। हमने देख लिया है कि कुछ भाषाओं में ये सैद्धान्तिक रूप पदसंहितियों के रूप में भी संधि-अवशेष द्वारा प्रकट होते हैं (§ 12.5)

इसी प्रकार कुछ भाषाओं में अन्त्य व्यंजन गुच्छ का विधान होने पर भी गुच्छ के साथ निरपेक्ष आधारवर्ती रूप व्यक्त होते हैं। मिनामनी के निम्न संज्ञारूपों की तुलना करें :—

एकवचन (शून्य पर-प्रत्यय)		बहुवचन (पर-प्रत्यय [-an])
[nenɛ:h]	मेरा हाथ	[nenɛ:hkan]
[metɛ:h]	एक हृदय	[metɛ:hjan]
[wi:ki:h]	एक वर्च का छाल	[wi:ki:hsan]
[nekɛ:? tʃenɛh]	मेरा अंगूठा	[nekɛ:? tʃenɛ:htʃjan]
[pe:htʃekuna:h]	दवा का गट्ठर	[pe:htʃekuna:htjan]

स्पष्ट है कि यदि एकवचन रूपों को आधाररूप में लिया जाएगा तो

निरूपणार्थ एक विस्तृत सूची देनी पड़ेगी जिसके द्वारा यह बताना होगा कि कौन-से व्यंजन यथा [k, j, s, tʃj, tj] पर-प्रत्यय के पूर्व जोड़े जाते हैं। सामान्य और स्वाभाविक निरूपण यह होगा कि स्वतन्त्र रूपों को हम निरपेक्ष आकृति में न लेकर उस रूप में लें जो पर-प्रत्यय के पूर्व आता है, यथा [wi:ki:hs] इत्यादि।

एक अन्य उदाहरण समोअई भाषा में प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें अन्त्य व्यंजन बिल्कुल ही नहीं आते और इसलिए निम्न प्रकार का ढाँचा मिलता है :—

बिना पर-प्रत्यय के		पर-प्रत्यय [-ia] के साथ	
[tani]	रोना	[tanisia]	रोया
[inu]	पीना	[inumia]	पिया
[ulu]	घुसना	[ulufia]	घुसा

यह स्पष्ट है कि यहाँ उपयोगी निरूपण के लिए मूलरूपों को सैद्धान्तिक आकृति में रखा जाएगा यथा [tanis-, inum-, uluf-]।

13.10 बहुधा गौण ध्वनियों का मूर्छन रूपीय संरचना में योग देता है। अंग्रेजी में सामान्यतः प्रत्यय बलहीन होते हैं यथा -be-wail-ing, friend-li-ness इत्यादि। सीखी हुई विदेशी शब्दावली में किसी एक प्रत्यय के बलाघात का अन्तरण बहुत-सी गौण-सिद्धियों में एक विन्यासिम है। इस प्रकार कुछ पर-प्रत्ययों पर, पर-प्रत्यय पूर्व बलाघात (pre-suffixal stress) होता है। स्वराघात पर-प्रत्यय के पूर्व अक्षर पर होता है, चाहे अक्षर कैसा भी हो। इस प्रकार able में -ity: ability, formal : formality, major : majority; music में [-jn] : musician, audit : audition, educate : education; demon में [-ik] : demonic, anarchist : anarchistic, angel : angelic. सीखी हुई विदेशी क्रिया से व्युत्पन्न संज्ञाओं और विशेषणों में बलाघात पूर्व-प्रत्यय पर होता है। insert [in'sɔ:t] क्रिया से हम insert ['insɔ:t] संज्ञा व्युत्पादित करते हैं। इसी प्रकार contract, convict, convert, converse, discourse, protest, project, rebel, transfer. दूसरी स्थितियों में यह मूर्छन पर-प्रत्यय के साथ प्रकट होता है : conceive : concept, perceive : percept, portend : portent. कुछ में आधारवर्ती क्रिया सैद्धांतिकरूप से गढ़ी जाती है जैसा कि precept में।

कुछ भाषाओं में मूर्छन का क्षेत्र अपेक्षाकृत विस्तृत होता है । संस्कृत में कुछ पर-प्रत्ययों के साथ सिद्ध रूप आधारवर्ती रूप के स्वराघात को बनाए रखते हैं :

केश : केशवन्त
पुत्र : पुत्रवन्त

अन्य में प्रथम अक्षर में स्वराघात पहुँच जाता है :—

पुरुष : पौरुषेय
वस्ति : वास्तेय

अन्य में पर-प्रत्यय के पूर्व स्वराघात होता है :—

पुरुष : पुरुषता
देव : देवता

कुछ में पर-प्रत्ययों पर ही स्वराघात होता है :—

ऋषि : आर्षेय
सरमा : सारमेय

अन्य में आधारवर्ती शब्द के विपरीत स्थान पर स्वराघात होता है :—

अतिथि : आतिथ्य
पलित : पालित्य

तगलाग में बलाघात तथा स्वरदीर्घता दोनों का उपयोग सहायक स्वनिम के रूप में होता है । [-an] रूप के तीन पर-प्रत्यय इन मूर्छनों के विभिन्न व्यवहार से भिन्न है :—

पर-प्रत्यय [-an]$_1$ में पूर्वप्रत्ययी बलाघात और आधारवर्ती रूप के प्रथम अक्षर में दीर्घस्वर होता है :

['i:big] प्रेम करना : [i:'bi : gan] प्रेम व्यापार
[i'num] पीना : [i: nu : man] पीनेवाले लोग

अर्थ, एक कर्ता से अधिक क्रिया (पारस्परिक अथवा समूहसूचक) का होता है ।

पर-प्रत्यय [-an]^2 पर बलाघात होता है जब आधारवर्ती शब्द के प्रथम अक्षर पर बलाघात है, अन्यथा [-an]^1 की भाँति रहता है ।

[ˈtu:lug] सोना :[tulu'gan] सोने का स्थान
[ku'lu] संलग्न करना :[ku.ˈlu:ŋan] जेल का स्थान

अर्थ है सामान्यतः एक से अधिक कर्ताओं द्वारा, अथवा आवृत्त क्रिया का स्थान।

जब आधारवर्ती शब्द के प्रथम अक्षर पर बलाघात होता है, पर-प्रत्यय [-an][3] पूर्व-प्रत्ययी बलाघात रखता है। जब आधारवर्ती शब्द पर बलाघात होता है इसके अन्तिम अक्षर पर बलाघात होता है। ध्वन्यात्मक ढाँचे से अपेक्षित स्वर-दीर्घता से अतिरिक्त दीर्घता नहीं होती है।

(अ)	['sa:giŋ]	केला	: [sa'ji:ŋan]	केले का कुंज
	[ku'luŋ]	संलग्न करना	: [kulu'ŋan]	पिंजड़ा
(ब)	['pu:tul]	काटना	: [pu'tu:lan]	जो काटा जा सके
	[la'kas]	ताकत	: [laka'san]	जिसपर ताकत लगायी जा सके

अर्थ है (अ) एक वस्तु जो आधारवर्ती वस्तुक्रिया आदि के स्थान का काम करती हो (ब) वह जिसपर क्रिया की जा सके।

इन भाषाओं में जिनमें सुर के गौण स्वनिम होते हैं रूपप्रक्रिया में इनका बड़ा योग होता है। इस प्रकार स्वेडी में कर्तृवाचक संज्ञा का -er पर-प्रत्यय अपने प्रतिफलित रूपों में बहु-अक्षरी रूपों में प्राण प्रसामान्य संयुक्त शब्द सुर को प्रकट करता है, जैसा क्रिया प्रातिपदिक [le:s-] "पढ़ना" से läser ['le: ser] "पाठक", किन्तु वर्तमानकाल का -er प्रतिफलित रूप में साधारण शब्द-सुर की अपेक्षा रखता है: (han) läser ['le: ser] "(वह) पढ़ता है"।

13.11 शब्द संघटना के सभी प्रकार के प्रेक्षण में यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि संलग्न सरचकों के सिद्धान्त का निर्वाह किया जाय। तगलॉग का आधारवर्ती रूप ['ta: wa] "एक हँसी" व्युत्पन्न रूप [ta: 'ta: wa] "वह जो हँसेगा" में द्वित्वरूप में आता है। यही रूप बदले में अन्तःप्रत्यय [-um-] के साथ एक सिद्ध रूप [tuma: 'ta: wa] "वह जो हंस रहा है" का आधारवर्ती रूप है। दूसरी ओर ['pi:lit] "प्रयत्न" रूप पहले अन्तः प्रत्यय [-um-] से आबद्ध होकर [pu'mi:lit] "जिसने बाध्य किया" रूप बनाता है और तब द्वित्व होकर [nag-pu:pu'mi:lit] "वह जो चरम प्रयत्न करता है" रूप बनता है। इस सिद्धान्त का गहरा प्रेक्षण बहुत आवश्यक है क्योंकि यदाकदा हमें ऐसे रूप मिलते हैं जो संलग्न संरचकों की दृष्टि से मिश्रित हैं। तगलाग

में एक पूर्व-प्रत्यय [paη-] है यथा--[a'tip] "छाजन" में [paη-a'tip] "जो छाजन के लिए प्रयुक्त होता है", "छाजन के लिए प्रयुक्त काठ की पटिया"। इस पूर्व-प्रत्यय का [η] और सहवर्ती रूप के आदि व्यंजनों में ध्वनि आपरिवर्तन--जिसे हम रूपीय संधि (morphologic sandhi) कहते हैं--होता है। उदाहरण के लिए हमारा पूर्व-प्रत्यय ['pu:tul] "काट" के साथ सिद्ध रूप [pa-'mu:tul] "जिसके काटने के लिए प्रयोग किया जाय" जुड़ता है। इसमें [-η] और [p-] के संयोजन के स्थान पर [m] विस्थापित हो जाता है। फिर भी कुछ रूपों में, संरचना क्रम में हम असंगति पाते हैं। इस प्रकार [pa-mu-'mu:tul] "विशिष्ट मात्रा में काटना" रूप अवयवों के वास्तविक पूर्वानुपरक्रम द्वारा सूचित करता है कि पूर्व-प्रत्यय के जुड़ने के पूर्व ही द्वित्व हो चुका है किन्तु वहीं दोनों द्वित्व रूपों और मुख्यरूपों में [p-] के स्थान पर [m-] की उपस्थिति से यह भी सूचित करता है कि द्वित्व होने के 'पूर्व' ही पूर्व-प्रत्यय जुड़ गया है। असावधानी से किया हुआ व्यवस्था का निरूपण इस प्रकार के रूपों की विचित्रता को स्पष्ट करने में असफल सिद्ध होगा।

13.12 इस प्रकार जटिल रूप प्रक्रिया वाली भाषाओं में संरचनाओं के मापक्रम (ranking) मिलते हैं। इनमें एक मिश्र शब्द का निरूपण केवल इस प्रकार हो सकता है कि मूलरूप में विभिन्न समासीकरण प्रत्यय और आपरिवर्तन एक निश्चित क्रम में लगते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी का actresses शब्द प्रथमतः actress और [-iz] से निर्मित हुआ है, ठीक उसी प्रकार जैसे lasses शब्द lass और [-iz] से। actress शब्द स्वयं में actor और -ess से बना है जैसे countess शब्द count और -ess से। अन्त में actor शब्द act और [-ə] से बना है। actresses का actor और -esses जैसा विभाजन का समानान्तरी उदाहरण हमें अन्यत्र नहीं मिलेगा। तो इस प्रकार की भाषा में रूपीय संरचना के बहुत-से मापक्रमों का हम भेद कर सकते हैं।

बहुत-सी भाषाओं में ये मापक्रम वर्गों में बँट जाते हैं। एक मिश्र शब्द की संरचना में पहले रूप साधन (inflectional) की बाहरी परत (outer-layer) मिलती है और तब शब्द-साधन (word-formation) की भीतरी परत। हमारे अन्तिम उदाहरण में रूपसाधन की बाहरी परत actress की [-iz] के साथ संरचना से प्रस्तुत हुई है तथा आन्तरिक शब्द साधन वाली परत अवशिष्ट संरचनाओं द्वारा actor का -ess में तथा act का [-ə] से प्रस्तुत हुई है।

किन्तु यह अन्तर सदैव नहीं किया जा सकता है । यह कई अभिलक्षणों पर आधारित है। रूपसिद्धि सामान्यतः पूर्ण अथवा आंशिक विराम ला देती है (§12.11) अतएव एक रूपसिद्ध शब्द (inflected word) संरचक रूप में या तो किसी भी आगे की रूपीय संरचना में नहीं आता है अथवा केवल सीमित एवं निश्चित रूप साधक संरचनाओं में आता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी रूप actresses केवल एक ही रूपीय संरचना में आ सकता है–अर्थात् धारक विशेषण actresses की व्युत्पत्ति में (शून्य वैकल्प [-iz,-z,-s] के साथ §13.7) । किन्तु अब यह आगे किसी भी रूपीय संरचना में नहीं आ सकता । यह पूर्णरूप से संरचना की समाप्ति कर देता है ।

शब्द-सिद्धि के व्यतिरेक में रूपसिद्धि की एक दूसरी विचित्रता यह है कि उसमें आधारवर्ती और प्रतिफलित रूपों में दृढ़ समानान्तरता है । इस प्रकार लगभग सभी अंग्रेजी एकवचन संज्ञाएं सिद्ध बहुवचन संज्ञाओं के आधार में रहती हैं और उसके विपरीत लगभग सभी बहुवचन संज्ञाएँ एकवचन संज्ञाओं से प्रतिफलित होती हैं । तदनुसार अंग्रेजी संज्ञाएँ अधिकतर दो समानान्तरी समुच्चयों में आती हैं एकवचन संज्ञा (hat टोपी) और बहुवचन संज्ञा जो इस एकवचन से प्रतिफलित हुई है : (hats टोपियाँ) । यदि इनमें से एक समुच्चय दिया जाए तो सामान्यतः वक्ता दूसरे समुच्चय को प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रकार के प्रत्येक रूप समुच्चय को रूपसारणिक समुच्चय (paradigmatic set) अथवा रूपसारिणी (paradigm) कहा जाता है । और समुच्चय का प्रत्येक रूप रूपसिद्ध रूप (inflected form) अथवा रूपसिद्धि (inflection) कहा जाता है। कुछ भाषाओं में लम्बी रूप-सारिणी मिलती है जिसमें कई प्रकार की विभक्तियाँ रहती हैं । उदाहरण के लिए लैटिन में क्रिया लगभग 125 रूपों में मिलती है यथा amāre "प्यार करना", amo "मैं प्यार करता हूँ", amās "तुम प्यार करते हो" amat "वह प्यार करता है", amāmus "हम प्यार करते हैं," amem "मैं प्यार कर सकता हूँ amor "मुझे प्यार किया जाता है" इत्यादि । सामान्यतः एक रूप का आना दूसरे अन्य रूपों का आना निश्चित कर देता है । रूपसिद्धि की इसी समानान्तरता के कारण हमें sheep जैसे एक ही ध्वन्यात्मक रूप को एक समरूपी समुच्चय के अन्तर्गत रखना पड़ता है। एकवचन संज्ञा sheep (lamb से सम्बन्धित) तथा बहुवचन संज्ञा sheep (lambs से संबंधित) । वह यही समानान्तरता है जिसके कारण ध्वन्यात्म दृष्टि से बिल्कुल ही भिन्न

रूपों को जैसे go : went को रूप-प्रक्रिया की दृष्टि से एक सम्बद्ध (पूर्णादेश रूप में) मानना पड़ा है। यथा go सामान्य (असमापिका) क्रियारूप (show के सादृश्य पर) और went उसका भूतकालिक रूप (showed-, के सादृश्य पर)

यह निश्चित है कि समानान्तरता कभी-कभी अपूर्ण होती है। सदोष (Defective) रूप सारणियों में कुछ रूप नहीं होते हैं। इस प्रकार can, may, shall, will, must का कोई असमापिका क्रियारूप नहीं है। must का कोई भूतकाल का रूप नहीं है, scissors का एकवचन रूप नहीं है। यदि, जैसा कि इन स्थितियों में है, अप्राप्य रूप वास्तविक रूपों के आधार में रहते हों तो हम सैद्धान्तिक दृष्टि से आधारवर्ती रूप को यथासम्भव निश्चित करने का प्रयत्न करते हैं, जैसे कि अप्राप्य असमापिका क्रियारूप *can अथवा एकवचन* scissor-। दूसरी ओर कुछ अनियमित रूपसारणियाँ अतिभिन्नीकृत (over-differentiated) होती हैं। इस प्रकार साधारण रूपसारिणी यथा play (to play, I play, we play) के अनुसरण पर be की रूपसारिणी के तीन रूप हैं (to be, I am, we are) और अकेले रूप played के अनुसरण पर इसके रूप हैं (I)was, (we) were, been। एक भी अति-विभिन्नीकृत रूपसारिणी का होना नियमित रूपसारिणी में समरूपता होना सूचित करता है।

रूपसिद्ध-रूपों की समानान्तरता के साथ-साथ अन्य लक्षण भी चलते हैं। विभिन्न रूपसाधक प्रत्यय वाक्यरचना में पृथक्-पृथक् कार्य करते हैं। यदि अंग्रेजी में कोई कहता है the boys chauffe तो वाक्यरचना की प्रकृति (§12.7) हमसे अपेक्षा रखती है जब the boy कर्ता है तो chauffes रूप उसके साथ लाया जाए। अंग्रेजी क्रियाओं के वर्तमानकाल और भूतकाल के रूपों में यह सत्य नही हैं। plays: played की समानान्तरता किसी भी वाक्यरचना प्रवृत्ति से अपेक्षित नहीं है किन्तु फिर भी दृढ़तापूर्वक लाई जाती है।

यदि रूपसिद्धि के अनेक मापक्रम हों तो हम यौगिक (compound) रूपसारिणी पाते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी संज्ञा की रूपसिद्धि एक बाहरी संरचना, सम्बन्धवाचक (धारक) विशेषणों की व्युत्पत्ति तक एक भीतरी संरचना---बहुवचन रूपों की सिद्धि से मिलती हुई है।

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता-कर्म	man	men
संबंधवाचक विशेषण	man's	men's

लैटिन क्रियायों में हमें बहुत ही उलझी यौगिक रूपसारिणी मिलती है। भिन्न-भिन्न कर्ताओं अथवा भोक्ताओं के लिए एक बाहरी परत है, उसमें पुरुष (उत्तम, मध्यम, अन्य), वचन (एकवचन, बहुवचन), वाच्य (कर्तृ, कर्म) हैं। भीतरी परत में काल की भिन्नता (वर्तमान, भूत, भविष्य) और वृति (वास्तविक, कल्पित, अवास्तविक) और सबसे भीतरी परत में क्रिया की (पूर्णता, अपूर्णता) पर प्रकाश पड़ता है।

13.13 अन्ततः, हम रूप-सिद्धि के एक महत्वपूर्ण लक्षण पर पहुँचते हैं जो अभी उल्लिखित लक्षण के समान है--वह है रूपसारिणी की शब्दसाधक एकता (derivational unity). प्रत्येक शब्द, रूपसारिणी के समास और शब्दसिद्धि में अकेले भाग नहीं लेता, बल्कि सम्पूर्णरूप में रूपसारिणी, किसी एक रूप से प्रस्तुत की जाती है। अंग्रेजी में संज्ञा-रूपसारिणी के रूप एकवचन से प्रस्तुत किए जाते हैं, यथा-man-slaughter, mannish तथा क्रियारूपसारिणी के रूप कालनिरपेक्ष क्रियारूप द्वारा, यथा playground, player। अंग्रेजी रूपसारिणी में एक आधारवर्ती शब्द (जो स्वयं रूपसारिणी का सदस्य होता है) तथा इस आधारवर्ती रूप वाले पर बने कुछ गौण शब्दसाधक होते हैं। आगे होनेवाली शब्दसिद्धि तथा रचना में रूपसारिणी समूचे रूप में आधारवर्ती रूप द्वारा प्रस्तुत की जाती है। तदनुसार अंग्रेजी भाषा के लिए कहा जा सकता है कि इसमें शब्द-रूपसिद्धि (word-inflection), शब्द, शब्दसिद्धि (word-derivation) तथा शब्द-समास (word-composition) मिलते हैं।

बहुत-सी भाषाओं में और विशेषरूप से उन भाषाओं में जिनकी रूपरचना अधिक जटिल है रूपसारिणी का कोई भी रूप सरलता से दूसरे का आधारवर्ती रूप नहीं बन पाता है। इस प्रकार जर्मन क्रियायों की नियमित रूपसारिणी में एक ऐसा सर्वनिष्ठ तत्व होता है जो किसी भी एक रूपसिद्ध रूप के समान नहीं है। उदाहरण के लिए रूपसारिणी जो lachen ['lax-en] "हँसना (क्रि०)", (ich) lache ['lax-e] "(मैं) हँसता हूँ", (er) lacht [lax-t] "(वह) हँसता है", (er) lachte ['lax-te] "(वह) हँसा" gelacht [ge-'lax-t] "हँसा हुआ" इत्यादि से एक सर्वनिष्ठतत्व lach-[lax-] प्रत्येक रूप में मिलता है, किन्तु इनमें से कोई भी रूप बिना प्रत्यय के केवल

lach—तत्व से युक्त होकर नहीं आता है। गौण शब्दसिद्धि और समास में रूपसारिणी उसी रूप से प्रस्तुत की जाती है जैसी कि Lacher ['lax-er] "हँसने वाला" में तथा Lachkrampf ['lax-ˌkrampf] "हँसता हुआ अंग संकोच"। यह lach—वास्तव में एक आबद्धरूप है। इसे रूपसारिणी का प्रातिपदिक (stem) अथवा न्यष्ठि (Kernel) कहते हैं। जर्मन क्रिया प्रातिपदिक रूपसिद्धि (stem-inflection), प्रातिपदिक शब्दसिद्धि (stem-derivation) तथा प्रातिपदिक समास (stem-composition) के उदाहरण हैं। अपने निरूपण में हम सामान्यतः प्रातिपदिक को एक मुक्तरूप में ही निरूपित करते हैं।

इस प्रकार की कुछ भाषाओं में रूप-सारिणी का सर्वनिष्ठतत्व उस प्रातिपदिक से भिन्न होता है जो सिद्ध रूपों तथा समास रूपों की रूपसारिणी द्वारा मिलता है। इस प्रकार प्राचीन ग्रीक संज्ञा रूपसारिणी में प्रातिपदिक रूपसिद्धि है। इसमें एक सर्वनिष्ठ तत्व है, एक न्यष्ठि है जो बहुत कुछ जर्मन क्रिया प्रातिपदिक से मिलती-जुलती है, यथा [hipp -] 'घोड़ा'।

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	['hipp-os]	['hipp-oj]
सम्बोधन	['hipp-e]	['hipp-oj]
कर्म	['hipp-on]	['hipp-ows]
सम्प्रदान	['hipp-o : j]	['hipp-ojs]
सम्बन्ध	['hipp-ow]	['hipp-o : n]

फिर भी गौण शब्दसिद्धि में यह सर्वनिष्ठ [hipp-] नहीं मिलता बल्कि एक विशिष्ट शब्दसाधक रूप [hipp-o-] सर्वनिष्ठ रूप में आता है, जैसा कि [hip'po-te:s] "घुड़सवार" अथवा [o] के लोप द्वारा ध्वन्यात्म आपरिवर्तन से [hipp-i'kos] "घोड़ों से सम्बन्धित"। इस प्रकार समास के सदस्य के रूप में एक विशिष्ट समासन-रूप (compounding-form) मिलता है जो पिछले का समरूपी है, जैसे [hippo-'kantharos] "घोड़े की कलगी,"। इस प्रकार न्यष्ठि [hipp-] वास्तव में (सिद्धान्ततः ध्वन्यात्मक आपरिवर्तनों के साथ) सारे रूपों में दिखाई पड़ता है और प्रातिपदिक [hipp-o-] अन्य शब्दसिद्धियों के आधार में मिलता है।

रूपसारिणी सम्बन्धी एकता के सिद्धान्त के कुछ अपवाद केवल ऊपरी हैं। अंग्रेजी समासों में सम्बन्धवाचक विशेषण यथा bull's-eye अथवा longlegs

बहुवचन रूप जैसा कि हम देखेंगे समासों के पदसंहतिस्तरीय संरचना के कारण हैं । वास्तविक अपवाद भी मिलते हैं । जर्मन में पर-प्रत्यय है —chen [-xen] "छोटा" जो संज्ञाओं से गौण शब्दसिद्ध रूप बनाता है' यथा Tisch [tiʃ] "मेज": Tischchen ['tiʃ-xen] "छोटी मेज" । जर्मन रूपप्रक्रिया की व्यवस्था में यह शब्द सिद्धि की संरचना है, किन्तु कुछ विशेष उदाहरणों में पर-प्रत्यय [–xen] उन संज्ञाओं में भी जुड़ता है जो पहले से ही बहुवचन-सूचक रूपसाधक प्रत्यय रखते हैं। Kind [kint] "बच्चा" के अतिरिक्त kindchen : ['kint-xen]" "छोटा बच्चा", किन्तु वहुवचन में kinder ['kinder] "बच्चे", kinderchen ['kinder-xen] "छोटे बच्चे" का आधारवर्ती रूप है। यदि एक भाषा में इस प्रकार की बहुत-सी स्थितियाँ मिलें तो हम केवल यही कह सकते हैं कि वह भाषा 'रूपसिद्धि' और 'शब्द सिद्धि' शब्दावली से द्योतित रूपीय परतों में भेद नहीं करती ।

अध्याय 14

रूपीय-प्रतिरूप

14.1 रूपीय संरचनाओं के तीन प्रतिरूपों में जिनमें संरचक की प्रकृति के अनुसार अन्तर किया जा सकता है—अर्थात् समासन, गौण शब्दसाधन और मुख्य शब्द-साधन (§13.3 में—समास शब्दों की संरचनाएँ वाक्य संरचनाओं से सर्वाधिक समान हैं।

समास शब्दों के संलग्न संरचक में दो (या अधिक) स्वतन्त्र रूप होते हैं। संलग्न संरचक सिद्धान्त के अन्तर्गत भाषाओं के प्रायः पदसंहिति-जात (जैसे, old maidish, जो कि आधारवर्ती पदसंहिति old maid से गौणतः साधित है) और समास-जात (जैसे, gentlemanly जो कि आधारवर्ती समास शब्द gentleman से साधित है) समासों में भेद किया जाता है। समास-शब्दों के क्षेत्र में यही सिद्धान्त प्रायः एक निश्चित संघटनात्मक क्रम प्रस्तुत करता है; इस प्रकार, समास wild-animal-house के न तो wild, animal और house तीन सदस्य हैं, न wild और animal house सदस्य हैं, बल्कि wild animal (पदसंहिति) और house सदस्य हैं। इसी प्रकार door knob-wiper में निस्संदेह door-knob और wiper सदस्य हैं, न कि उदाहरणार्थ door और knob-wiper।

व्याकरणिक लक्षण जिनसे हम समास-शब्दों को पहचानते हैं विभिन्न भाषाओं में विभिन्न हैं, और कुछ भाषाओं में निस्सन्देह रूपों के ऐसे वर्ग नहीं हैं। शब्द और पदसंहिति के बीच अनेक क्रमकोटियाँ मिलती हैं प्रायः कोई दृढ़ अन्तर नहीं मिल पाता है। वे रूप जिन्हें हम समास के अन्तर्गत रखते हैं कुछ ऐसे लक्षण प्रदर्शित करते हैं जो कि उनकी भाषा में एकाकी शब्दों को पदसंहतियों से भिन्न अभिलक्षित करते हैं।

अर्थ में समास-शब्द पद-संहतियों की अपेक्षा प्रायः अधिक विशिष्टीकृत होते हैं; उदाहरणार्थ blackbird एक जाति विशेष की चिड़िया का द्योतक है और पदसंहिति black bird की अपेक्षा, जो किसी भी काली चिड़िया के लिए प्रयुक्त हो सकता है, अधिक विशिष्टीकृत है। इस अन्तर

को भेदक के रूप में प्रयुक्त करने का प्रयास एक अत्यन्त सामान्य भूल है। हम लोग अर्थ को पर्याप्त यथार्थता से नहीं नाप सकते हैं; इसके अतिरिक्त अनेक पदसंहतियां उसी प्रकार अर्थ में विशिष्टीकृत होती हैं जिस प्रकार कोई समास : पदसंहिति a queer bird और meat and drink में शब्द bird, meat उतनी ही पूर्णता से विशिष्टीकृत है जितनी पूर्णता से समास jailbird और sweetmeats में।

14.2 उन भाषाओं में जो प्रत्येक शब्द पर एकाकी उच्च बलाघात प्रयुक्त करती हैं, यह लक्षण समास-शब्दों को पदसंहितियों से विभिन्न करता है। अंग्रेजी में उच्च बलाघात प्रायः प्रथम सदस्य पर होता है; दूसरे सदस्य पर कुछ कम बलाघात होता है, जैसे door-knob ['dɔə- ,ncb], upkeep ['ʌp-,kijp] में। कुछ समासों में दूसरे सदस्य को बलाघातरहित बनाए रखने की अनियमितता होती है, जैसे gentleman ['dzentlmen], Frenchman ['frentʃmən] तुलना कीजिये milkman ['milk-,mɛn]। समास के कुछ प्रतिरूप, मुख्यतया वे जिनके सदस्य अव्यय और परसर्ग हैं, दूसरे सदस्य पर बलाघात डालते हैं, जैसे without, upon। तदनुसार जहां कहीं भी अंग्रेजी शब्द में कुछ कम या सबसे कम बलाघात सुना जाता है जबकि पदसंहिति में वहाँ सदैव उच्च बलाघात मिलता है तो हम उसे समास का सदस्य वर्णित कर सकते हैं; जैसे ice-cream ['ajs-,krijm] एक समास है किन्तु ice cream ['ajs krijm] एक पदसंहिति है, यद्यपि अर्थ में कोई द्योतक अन्तर नहीं है। किन्तु, समास के प्रथमसदस्य के रूप में प्रयुक्त पदसंहिति में उसके सभी उच्च बलाघात यथापूर्व बने रहते है : wild animal -house ['wajld-'ɛniml -,haws] में बलाघात हमें यह विश्वास दिलाता है कि house एक समास-सदस्य है; संघटन का शेषांश अन्य भेदकों द्वारा प्रदर्शित होता है।

ध्वन्यात्म व्यवस्था की दृष्टि से समास-शब्द सामान्यतया पदसंहितियों के समान होते हैं : अंग्रेजी में [vt] जैसे stove-tide अथवा [nn] जैसे pen-knife व्यंजनगुच्छ सरल शब्दों के भीतर नहीं मिलते हैं। सन्धिवत् ध्वन्यात्म आपरिवर्तन समास को एक सरल शब्द के समान तभी अंकित करते हैं जब वे उसी भाषा में वाक्यीय संधि से भिन्न होते हैं। इस प्रकार gooeberry [guzbri] समास के रूप में इस कारण अंकित है कि [s] के लिए [z] की स्थानापत्ति अंग्रेजी वाक्यप्रक्रिया में उपलब्ध नहीं है, किन्तु रूपप्रक्रिया

में, जैसे gosling ['gɔzliŋ] में है । इसी प्रकार, फ्रेंच में pied-à-terre [pjet-a-tɛ:r] "अस्थायी निवास स्थान" ('पैर+ऊपर+भूमि') किन्तु pied [pje] 'पैर' ; अथवा pot-au-feu [pɔt-o-fϕ] "उबाल" ('पत्र+ऊपर+अग्नि') किन्तु pot [po] "पात्र" ; अथवा vinaigre [vin-ɛgr] "सिरका" (खट्टी-शराब) किन्तु vin [vɛ̃] "शराब"—ये समास के रूप में अंकित हैं क्योंकि फ्रेंच संज्ञाएं इस प्रतिरूप की संधि को पदसंहिति में नहीं दिखलाती हैं, केवल-शब्द संरचना में दिखलाती हैं, जैसे, pieter [pjete] "पदचिह्नों पर चलना" potage [pɔta:ʒ] "गाढा सूप" vinaire [vinɛ:r] "शराब विषयक", किन्तु पदसंहिति vinaiare [vɛ̃ ɛgr] "खट्टी शराब" ।

अधिक स्पष्ट ध्वन्यात्म आपरिवर्तन भी समास को अंकित कर सकते हैं ; इस प्रकार, निम्नलिखित उदाहरणों में समास के प्रथम सदस्य (पूर्व-पद) में, उसी भाषा में किसी भी पदसंहिति में उपलब्ध आपरिवर्तनों की तुलना में, पर्याप्त अधिक आपरिवर्तन होते हैं, जैसे holy ['howli], holiday ['holidej], moon : Monday, two [tuw] : twopence ['tʌpns], प्राचीन अंग्रेजी ['fe:ower] "चार" : ['fiðer-ˌfe:te] "चौपाया" । ऐसे ही पदसंहिति में अनुलब्ध स्पष्ट आपरिवर्तन द्वितीय सदस्यों (उत्तरपदों) में मिलते हैं ; संस्कृत (नावः) "जहाज" ; (अति-नुः) "जहाज से गया हुआ", प्राचीन ग्रीक [pa'te:r] "पिता" [ew-'pato:r] "भलीभांति पाला हुआ" ; गॉथी dags "दिन":fidur-dōgs "चार दिनों का" । ऐसी ही स्थिति दोनों सदस्यों (पदों) की हो सकती है, जैसे अंग्रेजी breakfast ['brekfəst] blackguard ['blɛgɔ:d] boatswain ['bowsn], forecastle ['fowksl] । कुछ स्थितियों में एक रूपान्तर बिना आपरिवर्तन का भी है, जैसे forehead ['fɔrid], waistcoat ['wes-kət] में । निस्सन्देह, कुछ चरम स्थितियों में रूप स्वतन्त्र-शब्द से इतना अधिक आपरिवर्तित हो जाता है कि हम उसे समास-सदस्य कहें, अथवा प्रत्यय कहें—इसमें दुविधा हो जाती है : fortnight ['fɔ:t-ˌnajt] जैसा रूप समास और सरल शब्द की सीमा पर स्थित है ।

समास शब्द में सदस्यों का क्रम स्थिर हो सकता है, जबकि पदसंहिति में वह मुक्त है, जैसे, bread-and-butter ['bred-n-ˌbʌtə] "मक्खन लगे डबल रोटी के टुकड़े" ; तुलना कीजिए पदसंहितियाँ she bought bread and butter, she bought butter and bread । किन्तु यह

भेदक-लक्षण असफल भी हो सकता है, क्योंकि पदसंहिति में भी स्थिर क्रम हो सकता है, ; अंग्रेजी में विशिष्टीकृत पदसंहिति ['bred-nˌbʌə] विद्यमान है जिसमें समासवत् क्रम अथवा अर्थ है। व्यतिरेकी क्रम अवश्य एक निश्चित भेदक है ; फ्रेंच blanc-bec [blã-bεk] "बालरहित व्यक्ति" ('श्वेत चोंच') समास है क्योंकि पदसंहिति में blanc के समान विशेषण सदैव संज्ञा के बाद आते हैं : bec blanc "श्वेत चोंच" । अंग्रेजी के उदाहरण हैं—to housekeep, to backslide, to undergo, चूंकि पदसंहिति में लक्ष्य संज्ञा, जैसे house तथा back, under जैसे अव्यय क्रिया के बाद [keep house, slide back] आते हैं।

14.3 सबसे सामान्य, किन्तु सर्वाधिक वैविध्य वाले और सबसे अधिक पकड़ में न आने वाले लक्षण, जो कि पदसंहितियों को समास शब्दों से भिन्न करते हैं, चयन के व्याकरणिक लक्षण हैं।

सरलतम व्यतिरेक हमें उन भाषाओं में मिलता है जहां प्रातिपदिक—समासन (§13.13) है। जर्मन lach- जैसा प्रातिपदिक, जो जर्मन समास Lachkrampf ['lax-ˌkrampf] "अट्टहास" में सम्पूर्ण क्रिया रूपसरणि का प्रतिनिधित्व करता है, किन्तु स्वयं एक स्वतन्त्र शब्दों के रूप में प्रयुक्त नहीं होता है, समास को निश्चित रीति से पदसंहिति से भिन्न करता है। इससे अधिक स्पष्ट रूप में, एक समासन-प्रातिपदिक जैसे प्राचीन ग्रीक में [hippo-] "घोड़ा", रूप की दृष्टि से अपनी रूपसरणि के स भीअन्य रूप-साधितों से भिन्न हो सकता है और कम से कम अपनी अपरिवर्तनशीलता द्वारा समास को अंकित करता है; इस प्रकार [hippo-] कुछ अन्य प्राति-पदिक जैसे ['kantharo-] "टिड्डी" के साथ जुड़कर एक समासप्रातिपदिक [hippo-'kantharo] बनाता है, किन्तु इस समास के सभी रूप साधितों में परिवर्तित रहते हैं : कर्ता [hippo'kantharo-s] कर्म [hippo 'kanth-aro-n] आदि।

यहाँ तक कि जब समास-सदस्य रूपदृष्टि से किसी अन्य शब्द के समान है, तब वह समास को अंकित करता है। प्राचीन ग्रीक में संज्ञा प्रातिपदिक के रूप परप्रत्यय जुड़ कर चलते हैं। तदनुसार, समास का प्रथम संज्ञाप्रातिपदिक सदस्य अपने सभी रूपसरिणियों के विविध रूपसाधितों को प्रदर्शित करेगा :

कर्ता [ne'a : 'polis]
कर्म [ne'a :n 'polin]
सम्बन्ध [nĕa : s 'poleo:s] आदि

किन्तु समास प्रातिपदिक [ne'a :-poli-] "नैपिल्स नगर", जिसका प्रथम सदस्य (पूर्वपद) कर्ता एकवचन में है, अपने सभी रूपसाधितों में प्रथम सदस्य को अपरिवर्तित दिखाएगा :

कर्ता [ne'a :polis]
कर्म [ne'a :polin]
सम्बन्ध [nea:'poleo:s]

जर्मन में विशेषण में शब्द-रूपसिद्धि होती है ; आधारवर्ती रूप क्रिया के पूरक के रूप में प्रयुक्त होता है : Das ist rot [das ist 'ro:t] "वह लाल है", और व्युत्पन्न-रूप साधित संज्ञा के विशेषणों के रूप में मिलते हैं? roter wein ['ro:ter 'vajn] "लाल शराब"। अतएव रूपसाधक परप्रत्ययों की अनुपस्थिति Rotwein ['ro:t-,vajn] "लाल शराब" जैसे रूप में समास-सदस्य को अभिलक्षित करती है।

पूर्वप्रत्ययों अथवा परप्रत्ययों का प्रयोग भी शब्द अथवा प्रातिपदिक के प्रारम्भ अथवा अन्त को निश्चित कर सकता है। जर्मन में क्रिया के भूतकालिक कृदन्त प्रातिपदिक (धातु) में पूर्वप्रत्यय [ge-] और परप्रत्यय [-t] लगता है, जैसे gelacht [ge-'lax-t] "हँसा"। तदनुसार, इन प्रत्ययों की स्थिति यह प्रदर्शित करती है कि geliebkost [ge-'li:pˌko:s-t] "दुलराया हुआ" एक शब्द है और इसका आधारवर्ती एक समास है, किन्तु liebgehabt ['li:p ge-ˌhap-t] "पसन्द किया हुआ" एक द्वि-शब्दीय पदसंहिति है। यह हमें एक मापदण्ड देता है जिससे अन्य रूपसाधितों का वर्गीकरण कर सकते हैं, जैसे सामान्य liebkosen ['li:p-ˌkozen] "दुलारना", और liebhaben ['li:pˌha:ben] "पसन्द करना"।

कभी-कभी समास-सदस्य एक ऐसे रूपसाधित से मिलता जुलता है जो पदसंहिति में कभी नहीं मिल सकती है। bondsman, kinsman, landsman, marksman के पूर्व पदों में [-z,-s] स्वामित्वसूचक-विशेषणवाची पर-प्रत्यय से मिलता है किन्तु स्वामित्वसूचक-विशेषण bond's, land's आदि इस प्रकार पदसंहिति में प्रयुक्त नहीं होंगे। फ्रेंच में विशेषण grande [grãd] "बड़ा" जैसे une grande maison [yn grãd mezõ] "एक बड़ा मकान" में अन्तिम व्यंजक का लोप करता है (§ 13.7) और तब सिद्धरूप को पुंलिंग संज्ञा के साथ जोड़ता है, जैसे un grand garçon

[œ̃ grã garsõ] "एक बड़ा लड़का"; किन्तु, समास के सदस्य के रूप में भी यह कुछ स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ मिलता है : grand'mére [grã-mɛ:r] "दादी" grand' porte [grã-pɔrt] "मुख्य प्रवेश द्वार"। इस प्रतिरूप के समास-सदस्य विशेषत: जर्मन में बहुत मिलते हैं : Sonnenschein ['zonen-ˌʃajn] "धूप" में प्रथम पद sonne ऐसे रूप में है जो पद-संहिति में यदि पृथक् प्रयुक्त हुआ होता है तो बहुवचन होता; Geburtstag [ge'burts-ˌta:k] "जन्मदिनों में" [-s] एक सम्बन्धकारकीय प्रत्यय है। एक स्वतन्त्र शब्द में एक स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ जैसे die Geburt "जन्म" वह कभी भी प्रयुक्त नहीं होता है।

समास सदस्य में कुछ ऐसे शब्द-संरचना के लक्षण हो सकते हैं जो स्वतन्त्र शब्दों में नहीं मिलते हैं। प्राचीन ग्रीक में बड़ी अनियमित क्रिया-सरिणी थी; उसमें [da 'm ao:] "मैं वशीभूत करता हूँ", [e 'dme:the:] "वह वशीभूत किया गया" आदि रूप हैं जिन्हें वैयाकरण सुविधा से प्रातिपदिक रूप [da'mao:] के आधार पर वर्णित कर सकते हैं। इस रूपसरणि से एक ओर एक स्वतन्त्र कर्तृ-संज्ञा [dme:'te:r] "वश में करने वाला" सिद्ध होता है तो दूसरी ओर, एक अन्य परप्रत्यय से एक कर्तृ रूप [-damo-] सिद्ध होता है जो कि समास के उत्तरपद में ही मिलता है, जैसे [hip'po-damo-s] "अश्व साधने वाला"। शब्द-संरचना के विशिष्ट लक्षणों से युक्त समास को **संश्लिष्ट समास** [synthetic compounds] कहते हैं। संश्लिष्ट समास भारतयूरोपीय भाषाओं की प्राचीन अवस्थाओं में विशेषत: मिलते हैं किन्तु यह प्रवृत्ति अभी नष्ट नहीं हुई। अंग्रेजी में क्रिया to black स्वतन्त्र कर्तृ संज्ञा blacker (जैसे, a blacker of boots में) के आधार में है किन्तु इसीके द्वारा शून्य-तत्त्व के साथ एक कर्तृ-संज्ञा-black बनता है जो कि समास boot-black में मिलता है। इसी प्रकार, to sweep से sweeper बनता है और chimney-sweep का उत्तरपद बनता है। यहाँ तक कि long-tailed अथवा red-bearded रूप का उपयुक्त वर्णन नहीं होता है, यदि हम कहें कि इनमें शब्द tailed, bearded (जैसे tailed-monkeys, bearded lady में) है; स्वाभाविक प्रारम्भबिन्दु long tail अथवा red beard जैसी पदसंहितियाँ हैं जिनसे ये रूप केवल पर-प्रत्यय -ed की उपस्थिति से भिन्न हैं। यह वही बात हुई कि हम कहें कि हम long-tailed, red-bearded प्रतिरूप के समासों को, बिना tailed, bearded

जैसे शब्दों के अस्तित्व पर ध्यान दिए, प्रयुक्त करते हैं। साक्षी रूप में देखिए blue-eyed, four-footed snub-nosed। दूसरा आधुनिक अंग्रेजी का संश्लिष्ट समासों का प्रतिरूप three-master, thousand-legger है।

अंग्रेजी में हम सरलता से meat-eater और meat-eating जैसे रूप बना लेते हैं ; किन्तु क्रिया-समास *to meat-eat नहीं बना सकते; ऐसी स्थिति केवल कुछ अनियमित उदाहरणों में ही मान्य है जैसे to house-keep, to bootlick। अब, निश्चित होने के लिए, eater अथवा eating जैसे शब्द समास के साथ-साथ रहते हैं ; संश्लिष्टत्व केवल इसमें है कि यह प्रतिबन्ध है कि eat meat जैसे पदसंहिति के समानान्तर समासरूप तभी मिलते हैं जब उनके साथ-साथ -er अथवा -ing भी जोड़ा जाए। हम meat-eating अथवा meat-eater को अर्ध-संश्लिष्ट (semi-synthetic) समास कह सकते हैं।

14.4 समास शब्दों का एक और शब्दवत् लक्षण होता है, वह है अविभाज्यता (§ 11.6)। यह बहुलता से मिलता है। हम कह सकते हैं black- I should say, bluish-black-birds, किन्तु समास शब्द black-bird को इस प्रकार के विच्छेद से विभाजित नहीं कर सकते। कुछ स्थितियों में अवश्य कुछ अन्य लक्षण हमें एक रूप को समास मानने के लिए बाध्य करते हैं यद्यपि उसमें ऐसा विच्छेद है। फाक्स भाषा में [ne-pjɛ-:tʃi-wa:pam-a:-pena] "हम लोग उसे देखने आए हैं" को इसलिए समास मानना होता है क्योंकि रूपसाधक पूर्वप्रत्यय [ne] "मैं" और रूपसाधक परप्रत्यय [-a:-] "उसे" और [-pena] 'उत्तमपुरुष बहुवचन' निभ्रान्तितया शब्द के प्रारम्भ व अन्त के (§ 14.3) द्योतक हैं। समास के सदस्य हैं अव्यय [pjɛ:tʃi] 'यहाँ से' और क्रिया-प्रातिपदिक [wa:pam] "देखना"। फिर भी, फॉक्स भाषा में ऐसे समासों के भीतर शब्द तथा छोटी पदसंहिति भी अन्तःप्रविष्ट हो सकते हैं; जैसे, [ne-pjɛ:tʃi-keta: nesa-wa:pam-a:-pena] "हम लोग तुम्हारी पुत्री को देखने आए हैं" जर्मन में, समाससदस्य क्रमशः संयोजित किये जा सकते हैं; singvögel ['zin-,fφ:gel] "गाने वाली चिड़िया" Roubvögel ['rawp-,fφ:gel] "शिकार की चिड़ियां" sing-oder Raubvögel ['zin-o:der-'rawp-,fφ:gel] "गाने वाली चिड़िया या शिकार की चिड़िया"।

सामान्यतया समास-सदस्य पदसंहिति के शब्द के समान वाक्यीय संरचना

में संरचक के रूप में प्रयुक्त नहीं होता है। पदसंहिति black bird में black शब्द very (very black bird) का विशेषक है, किन्तु समास blackbirds में सदस्य black के पूर्व ऐसा नहीं हो सकता है। यह लक्षण कुछ फ्रेंच रूपों को समासशब्द में वर्गीकृत करता है इस प्रकार sage-femme [sa:z-fam] "दाई" समास है, जबकि समरूपी पदसंहिति का अर्थ "बुद्धिमती स्त्री" है। यह केवल इस कारण है कि पदसंहिति में ही संरचक sage "बुद्धिमती" विशेषक के रूप में आ सकता है : trés sage femme [trɛ sa:z fam] "अत्यधिक बुद्धिमती स्त्री"। पूर्ववर्ती उदाहरण के समान यह प्रतिबन्ध कभी-कभी उन रूपों में अनुपस्थित भी रहता है जो कि अन्यथा समासत्व अंकित कर देते हैं। संस्कृत में, जहां प्रातिपदिक-समासन स्पष्टतया समास शब्दों में पूर्व पदों को अंकित करता है, पूर्वपद कभी-कभी एक विशेषक शब्द के साथ आ जाता है, जैसे (चित्तप्रमाथिनी देवानामपि) "देवताओं के भी चित्त को संक्षुब्ध करने वाली"। यहां षष्ठी बहुवचन 'देवानाम्' समास सदस्य (चित्त) का वाक्यीय विशेषक है।

14.5. रूपों का वह वर्णन और वर्गीकरण जिससे भाषा की संघटना द्वारा हम उन्हें समासशब्द मानते हैं, भाषाविशेष के विशिष्ट लक्षणों पर निर्भर है। भाषाविज्ञानी प्रायः यह भूल कर बैठते हैं कि वे अपनी भाषा में प्रचलित समास-प्रतिरूपों को सार्वभाषिक मानने लगते हैं। यह सच है कि विभिन्न भाषा में समासों के मुख्य प्रतिरूप कुछ-कुछ समान हैं और यह समानता उल्लेखनीय है, फिर भी, विस्तार और विशेषतः प्रतिबन्ध विभिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न हैं। अन्तर इतने पर्याप्त हैं कि कोई ऐसी वर्गीकरण-योजना हम नहीं स्थापित कर पाते हैं जो सभी भाषाओं में पूर्णतः लागू हो जाए, किन्तु निम्नलिखित वर्गीकरण की दो दिशाएँ प्रायः उपयोगी होती हैं।

वर्गीकरण की इन दो दिशाओं में से एक का सम्बन्ध **सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्ध से** है। एक ओर, वाक्यानुवर्ती समास (syntactic compounds) है जिसके सदस्य परस्पर उसी व्याकरणिक सम्बन्ध में होते हैं जिसमें पदसंहितियों के अन्तर्गत शब्द ; इस प्रकार, अंग्रेजी में, blackbird और whitecap समासों के सदस्य (इन दो उदाहरणों के पारस्परिक अन्तर पर बाद में विचार करेंगे) विशेषण संज्ञा की वही संरचना प्रदर्शित करते हैं जो पदसंहिति black bird और white cap में शब्द। इसके

विपरीत, अ-वाक्यानुवर्ती (asyntactic) समास मिलते हैं, जैसे door-knob जिसके सदस्य संरचना में ऐसे सम्बन्ध में आते हैं जो भाषा की वाक्य-प्रक्रिया में पदसंहितीय प्रतिरूप नहीं है।

वाक्यानुवर्ती समास पदसंहिति से केवल मूल लक्षणों में भिन्न होते हैं जो (अपनी भाषा से) समासों को पदसंहितियों से विभिन्न करते हैं—अंग्रेजी में केवल एक उच्च बलाघात के प्रयोग से मुख्यतया यह भेद प्रकट होता है। वह कोषीय रीति से भी तदनुरूप पदसंहिति से भिन्न हो सकता है ; जैसे dreadnaught तदनुरूप पदसंहिति dread naught का एक बहुत पुराना लक्षणार्थ है और सामान्य पदसंहिति fear nothing होगी। हम वाक्यानुवर्त्ती समासों के उप-वर्ग स्थापित कर सकते हैं ; उनके आधार वे वाक्यीय संरचनाएँ होती हैं जो हमें सदस्यों द्वारा समानान्तर रूप में मिलती हैं। जैसे अंग्रेजी में, संज्ञा के साथ विशेषण (blackbird, white-cap, bull's-eye) लक्ष्यसज्ञा के साथ क्रिया (lickspittle, dreadnaught) क्रिया-विशेषण के साथ क्रिया (gadabout) क्रियाविशेषण के साथ भूतकालिक कृदन्त (cast-away) आदि।

बहुत से समास वाक्यानुवर्त्ती और अ-वाक्यानुवर्त्ती इन दो चरम काष्ठाओं के बीच के हैं। सदस्यों का सम्बन्ध कहीं तो किसी वाक्यीय संरचना से मेल खाता है। किन्तु समास पदसंहिति से अल्पतम विचलन से अधिक भेद प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, समासक्रिया to housekeep पदसंहिति keep house से शब्दक्रम के सरल लक्षण द्वारा भिन्न है। ऐसे स्थलों पर हम नाना प्रकार के अर्ध-वाक्यानुवर्ती (semi-syntactic) समासों की चर्चा करते हैं। यही शब्द-क्रम अन्तर upkeep और keep up तथा फ्रेंच blanc-bec और bec-blanc (§ 14.2) से मिलता है। turnkey के विरोध में turn the key अथवा turn keys है। यहाँ अन्तर आर्टिकल के प्रयोग अथवा वचन-संवर्ग के प्रयोग के कारण है। यहाँ तक कि blue-eyed, three-master, meat-eater जैसे प्रतिरूपों को भी, जो संश्लिष्ट समास माने गए हैं, blue eyes, three masts, eat meat के समनुरूप समझा जा सकता है ; ये समास इन पदसंहितियों से सरल रूपीय लक्षणों के कारण, जैसे बद्धरूप -ed, er के उत्तरपद से संयोजित होने के कारण, भिन्न हैं। फ्रेंच में boîte-à-lettres [bwa:t-a-lɛtr] शब्दशः "बक्स के लिए पत्र" और boîte-aux-lettres [bwa:t-o-lɛtr] शब्दशः "बक्स-

के लिए-पत्र"–दोनों का अर्थ "पोस्ट बाक्स" है और दोनों सामान्य पदसंहितीय रूप – boîte pour des lettres [bwa:t pu:rde lεtr] "पत्रों के लिए बक्स"—में परसर्गों के चयन और आर्टिकल के प्रयोग से भिन्न हैं। वे और कुछ अन्य परसर्गों का अधिक विशिष्ट परसर्गों के स्थान पर प्रयोग और आर्टिकल का अन्तर (रूप des द्वारा प्रदर्शित पदसंहितीय आर्टिकल के स्थान पर विशेषत: शून्य का प्रयोग) ये फ्रेंच में से स्पष्ट लक्षण हैं जो अर्धवाक्यानुवर्त्ती समासों के वर्ग को स्थापित करने में हमें सफल बनाते हैं।

जहाँ अर्ध-वाक्यानुवर्ती परिभाषा-साध्य है, वहाँ वे वाक्यानुवर्ती समासों के समान और आगे भी वर्गीकृत हो सकते हैं। इस प्रकार अर्ध-वाक्यानुवर्ती blue-eyed में सदस्यों की वही संरचना है जो वाक्यानुवर्ती black-bird में है, three-master में वही है जो three-day में, housekeep, turn-key में वही है जो lickspittle में है, upkeep में वही है जो gad-about में।

अ-वाक्यानुवर्ती समासों में ऐसे सदस्य होते हैं जो उस भाषा की वाक्यीय संरचनाओं में संयोजित नहीं होते। इस प्रकार, door-knob, horsefly, bedroom, salt-cellar, tomcat में हमें दो संज्ञाएं ऐसी संरचनाओं में मिलती हैं जो अंग्रेजी वाक्यप्रक्रिया में नहीं मिलती हैं। अंग्रेजी समासों के अन्य अ-वाक्यानुवर्त्ती प्रतिरूपों के उदाहरण हैं fly-blown, frost, bitten, crestfallen, footsore, fireproof, foolhardy-by-law, by-path, ever-glade-dining-room, swimming-hole-bindweed, cry-baby, drive-way, playground, blowpipe, broadcast, dry-clean, foretell-somewhere, everywhere, nowhere. अस्पष्ट सदस्यों वाले समास, जैसे, smokestack, mushroom अथवा विचित्र सदस्य वाले समास, जैसे cranberry, huckleberry, zigzag, choo-choo निश्चयत: अ-वाक्यानुवर्त्ती हैं।

यद्यपि अ-वाक्यानुवर्त्ती समासों के सदस्यों का पारस्परिक सम्बन्ध अवश्यमेव अस्पष्ट है, तथापि कभी-कभी हम वाक्यानुवर्त्ती और अर्ध-वाक्यानुवर्त्ती समासों के मुख्य प्रकारों को अ-वाक्यानुवर्ती समासों पर भी घटित कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी में bittersweet (तुलना कीजिए पदसंहिति bitter and sweet) जैसे अर्ध-वाक्यानुवर्त्ती समास में दृश्य सहयोजी अथवा संयोजी सम्बन्ध Zigzag, choo-choo, fuzzy-wuzzy

जैसे अ-वाक्यानुवर्ती समासों में भी दृष्टिगोचर होता है । अधिकांश अ-वाक्यानुवर्ती समासों में गुण–गुणी जैसी संरचना मिलती है : door-knob, bull-dog, cranberry । जिस सीमा तक यह तुलना की जा सकती है, संयोजी (copulative) समास (संस्कृत द्वन्द्व समास) और निर्धारक (गौणी अथवा अनुयोजी) समास (=संस्कृत तत्पुरुष) के बीच भेद किया जा सकता है, ये भेद वाक्यानुवर्त्ती, अर्ध-वाक्यानुवर्त्ती और अन्वाक्यानुवर्त्ती तीनों समासों में मिल सकते हैं । इनके भी छोटे उपभेद किए जा सकते हैं । हिन्दू वैयाकरणों ने द्वन्द्व समास का एक विशिष्ट उपवर्ग, पुनरुक्त (repetitive) (=आम्रेडित) समास माना है जिसमें दोनों सदस्य एकरूप होते हैं, जैसे choo-choo- bye-bye, goody-goody में । अंग्रेजी में, हम एक ऐसा वर्ग भी बना सकते हैं जिसमें सदस्य केवल कुछ मामूली ध्वन्यात्म अन्तर ही दिखाते हैं, जैसे zigzag, flimflam, pell-mell, fuzzy-wuzzy । हिन्दू वैयाकरणों ने तत्पुरुष में भी एक विशिष्ट वर्ग गुण गुणी (विशेषण-विशेष्य) समास (=कर्मधारय) सुविधापूर्वक स्थापित किया है, जैसे blackbird.

14.6 दूसरी बहुधा प्रयोग में आनेवाली वर्गीकरण की दिशा पूरे समास के अपने सदस्यों के साथ विद्यमान सम्बन्ध से सम्बद्ध है । वाक्यप्रक्रिया में उपलब्ध (§12.10) अन्तःकेन्द्रित और बहिःकेन्द्रित संरचनाओं के अन्तर को प्रायः समासों पर प्रयुक्त किया जा सकता है । चूंकि blackbird एक प्रकार का bird है, और door-knob एक प्रकार का knob है । हम कह सकते हैं कि समासों का वही प्रकार्य है जो उनके प्रधान सदस्य का है, और ये अन्तःकेन्द्रित हैं । इसके विपरीत gadabout और turnkey में प्रधान सदस्य सामान्य-क्रिया है किन्तु समास संज्ञा है, ये बहिःकेन्द्रित (=संस्कृत बहुव्रीहि) हैं । संयोजी प्रतिरूप के उदाहरण में विशेषण bittersweet (जो bitter भी है, और sweet भी है) अन्तःकेन्द्रित हैं, क्योंकि समास का अपने सदस्य bitter और sweet के समान विशेषण का प्रकार्य है, किन्तु पौधा नाम bittersweet, बहि-केन्द्रित है, चूंकि संज्ञा के रूप में यह अपने दोनों विशेषण सदस्यों से व्याकरणिक प्रकार्य में भिन्न है । अंग्रेजी बहि-केन्द्रित समासों का दूसरा प्रतिरूप विशेषण+प्रधानसंज्ञा है : two-pound five-cent, half-mile (in) apple-pie (order).

रूपवर्गों का भेद चाहे कुछ कम मौलिक हो, किन्तु भाषा की व्यवस्था में अभिज्ञेय होता है । अंग्रेजी में, संज्ञा longlegs, bright-eyes, butter-

fingers बहि-केन्द्रित हैं क्योंकि ये एकवचन में भी और शून्य-प्रत्यय के साथ बहुवचन में भी (that long legs, those long legs) मिलते हैं। फ्रेंच में संज्ञा rouge-gorge [ru:z-gɔrz] "राबिन पक्षी" (शब्दशः लाल–कण्ठ) बहि-केन्द्रित है क्योंकि यह पुंल्लिंग वर्ग (le rouge-gorge) है जबकि इसका प्रधान सदस्य स्त्रीलिंगवर्ग का (la gorge) है। अंग्रेजी में sure-footed, blue-eyed, straight-backed प्रतिरूप संश्लिष्ट परप्रत्यय [id,-d,-t] बहि-केन्द्रित मूल्य (विशेषण+प्रधान संज्ञा) के अनुकूल है, किन्तु वर्गीकरण में कदाचित् दुविधा हो सकती है क्योंकि -footed,-eyed, backed विशेषण माने जा सकते हैं (तुलना कीजिए, horned, bearded)। clambake upkeep जैसे प्रतिरूपों को अंग्रेजी व्याकरण में अन्तः केन्द्रित मानना अधिक समुचित है, क्योंकि प्रधानसदस्य -bake और -keep को क्रिया से शून्य अभिलक्षण लगाकर सिद्ध सक्रियसंज्ञा माना जा सकता है, यदि अंग्रेजी में शब्दसिद्धि में शून्य अभिलक्षण का प्रयोग न होता, या सक्रिय-संज्ञाओं के रूप इस प्रकार साधित न होते तो हमें इन समासों को बहि-केन्द्रिक समास मानना पड़ता। इसी प्रकार, हमारा वर्णन कदाचित् सर्वाधिक उपयुक्त होता यदि हम bootblack chimney-sweep को अन्तःकेन्द्रित मानते और -black और -sweep को कर्तृ-संज्ञा मानते।

इसके विपरीत, whitecap, longnose, swallow-ta, ilblue-coat, blue-stocking, red-head, short-horn से उदाहृत अंग्रेजी समासों के एक विशाल वर्ग का संज्ञा का प्रकार्य है और संज्ञा ही प्रधानसदस्य है और फिर भी उसे बहिःकेन्द्रित मानना पड़ा है चूंकि संरचना से यथार्थतः यह ध्वनित होता है कि वस्तु उसी जाति की नहीं है जिसकी प्रधान सदस्य से द्योतित वस्तु इन समासों का अर्थ है "अमुक गुण (पूर्वपद) वाली अमुक वस्तु (उत्तर पद) का स्वामी"। यह इस तथ्य से प्रकट होता है कि वचन के संवर्गों (longlegs) में और व्यक्तिवाचक-व्यक्तिनिरपेक्ष कोटियों (nose... it ; longnose....he, she) में सदैव अन्विति नहीं होती है। three-master thousand-legger में संश्लिष्ट पर-प्रत्यय बहि-केन्द्री सम्बन्ध के साथ-साथ चलता है। फिर भी कुछ सीमावर्ती उदाहरण हैं जिनके कारण सुस्पष्ट अन्तर नहीं रह पाता है। समास blue-bottle अन्तः-केन्द्रित है यदि हम कीड़े को "बोतल के समान" मानें, किन्तु बहिःकेन्द्रित है यदि हम यह मानें कि 'बोतल" केवल कीड़े का भाग है।

हिन्दुओं ने बहिःकेन्द्रित समासों के दो विशिष्ट उपवर्गों में भेद माना है संख्यात्म (=द्विगु), जिनमें पूर्वपर संख्या है, जैसे अंग्रेजी sixpence, twelvemonth, fortnight और अव्ययात्मक (=अव्ययीभाव), जिसमें अव्यय या तो प्रधान संज्ञा के साथ, जैसे bareback, barefoot, hot-foot या गौण संज्ञा के साथ, जैसे uphill, downstream, indoors, overseas.

14.7 गौण शब्द साधन से साधित शब्दों में एक स्वतन्त्ररूप, पदसंहिति (जैसे old-maidish में) अथवा एक शब्द (जैसे, mannish में) संलग्न संरचक के रूप में आते हैं। जब शब्द संलग्न संरचक होता है तो वह आधारवर्ती शब्द या तो समास (जैसे gentlemanly में) या शब्दसाधित शब्द होता है जैसे, actresses जहां actress स्वयं एक आधारवर्ती शब्द actor से गौणसाधित शब्द है। किन्तु हम यह देख आए हैं कि कुछ भाषाओं के वर्णन में यह अच्छा होता है कि सैद्धान्तिक आधारवर्ती रूपों जैसे प्रातिपदिकों को मानकर चलें। इनसे हमें कुछ रूपों को गौणसाधित में वर्गीकृत करने में सहायता मिलती है यद्यपि यथार्थतः ये स्वतन्त्ररूप (§13.13) नहीं हैं। इसी प्रकार की विधि अंग्रेजी scissors, oats जैसे रूपों के वर्णन में प्रयुक्त करनी पड़ती है जहां अनुमानप्राप्त scissor-,oat- को हम उसी प्रकार आधारवर्ती रूप मानते हैं जिस प्रकार cranberry, oatmeal और scissor-bill को समास मानते हैं। आधारवर्ती स्वतन्त्ररूप चाहे वास्तविक, चाहे अनुमानप्राप्त प्रत्यय अथवा जैसा हम अध्याय 13 में देख आए हैं व्याकरणिक लक्षणों के साथ मिलता है।

बहुत-सी भाषाओं में गौणसाधितों को सर्वप्रथम दो प्रकारों में रूपसिद्ध और शब्दसिद्ध (§13.12) में बांटा जाता है, किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस प्रकार की भाषाओं में कभी-कभी फिर भी सीमान्तवर्ती स्थल मिल जाते हैं, जैसे अंग्रेजी में beeves अथवा clothes जो कि प्रमुखतया रूपसाधित प्रतिरूप से मिलते हैं किन्तु जिसमें रूप-अर्थ-मूलक विचलन विद्यमान है। इसी प्रकार learned [lɔ:nid] drunken, laden, sodden, molten और अपभाषा broke "दीवालिया" शुद्ध रूपसाधित भूतकालिक कृदन्त lear-ned [le:nd] drunk, loaded, seethed, melted, broken से भिन्न हैं।

रूपसाधितों का वर्णन अपेक्षाकृत सरल है, क्योंकि वे समानान्तर रूप-सरणि-समुच्चयों में मिलते हैं, और परिचित-भाषाओं के परम्परागत

व्याकरण उनकी रूपसिद्धि-व्यवस्था का विशद चित्रण उपस्थित करते हैं। किन्तु उल्लेखनीय है कि परम्परागत व्याकरण वैज्ञानिक संक्षिप्ति की दृष्टि से हीन होते हैं क्योंकि वे तद्रूप लक्षणों को जैसे-जैसे वे विभिन्न रूपसरणि-प्रतिरूपों में आते जाते हैं वैसे-वैसे देते जाते हैं। इस प्रकार, लैटिन व्याकरण में, प्रतिरूप amicus "मित्र", lapis "पत्थर", dux "नेता, tussis "कफ", manus "हाथ", facies "चेहरा" में प्रत्येक के लिए पृथक्-पृथक् कर्ता एक-वचन के चिन्ह—s का उल्लेख हुआ है, जबकि इसका उल्लेख केवल एक स्थल पर होना चाहिए था और वहां इसका पूर्ण वर्णन होता कि यह कहां प्रयुक्त होता है और कहां नहीं।

शब्दसिद्धि में इससे कहीं अधिक कठिनाई मिलती है और पाश्चात्य परम्परागत व्याकरणों में मुख्यतया उपेक्षित है। सबसे प्रमुख कठिनाई यह निर्धारित करने में है कि कौन-कौन से संयोजन बनते हैं। अधिकतर स्थलों पर हमें संरचना को अनियमित कहना पड़ता है और संयोजित रूपों की सूची देनी पड़ती है। उदाहरण के लिए, केवल एक सूची ही हमें बता सकती है कि कौन-कौन सी पुंल्लिंग संज्ञाएं –ess परप्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग संज्ञाएं बनाती हैं। तदनुसार, हम रूपसिद्धि की भाँति यह निश्चय कर सकते हैं कि दिए हुए रूपों के युग्म, जैसे man : woman वही सम्बन्ध प्रदर्शित करते हैं या नहीं। इससे हम रूपसरणि के वर्णन के सादृश्य में उन पूरक कथनों को भी स्थिर करने में सफल होते हैं जो किसी व्याकरणिक निर्धारित आर्थी इकाई के विभिन्नरूपीय पक्षों को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार अर्थिम "इस भांति के पुंजीवों का स्त्रीत्व" न केवल परप्रत्यय –ess से प्रदर्शित होता है अपितु समासन से, जैसे elephant-cow, she-elephant, nanny-goat और पूरण (suppletion) से भी जैसे ram : ewe, boar : sow से भी हो सकता है। इन युग्मों में विपरीत रूपसिद्धि है, अर्थात् स्त्रीरूप से पुंल्लिंग रूप बनता है, जैसे goose : gander, duck : drake.

इसी प्रकार कदाचित् हमें एक पूरी सूची की आवश्यकता होगी यदि हम बताना चाहें कि किन अंग्रेजी विशेषणों के बाद तुलनात्मक परप्रत्यय -er लगता है जैसे kinder, shorter, longer और इस सूची के बाद हम अर्थ-दृष्टि से समान युग्मों को पहिचान सकते हैं, जैसे good : better, much : more, little : less, bad : worse.

अन्य वर्गों में आर्थी-सम्बन्ध व्याकरणिक दृष्टि से परिभाषा-साध्य नहीं

है। इस प्रकार अंग्रेजी में संज्ञाओं में विभिन्न परिवर्तन करके शून्यतत्व के साथ भी अनेकानेक क्रियाएं बनती हैं किन्तु आधारवर्ती संज्ञा की तुलना में साधित क्रियाओं के अर्थ विविध हैं : to man, to dog, to beard, to nose, to milk, to tree, to table, to skin, to bottte, to father, to fish, to clown आदि । अथवा हम विभिन्न रूपीय विधियों द्वारा "ऐसा होना" "ऐसा करना" अर्थ के विविध प्रकारों में विशेषणों से साधित क्रियाएँ बनाते हैं :

शून्य : to smoothe
शून्य, तुलनार्थक रूप : to lower
शून्य, गुणवाची संज्ञा : old : to age
स्वर-आपरिवर्तन : full : to fill
पूर्णादेश (?) : dead : to kill
पूर्वप्रत्यय : enable, embitter, refresh, assure, insure, belittle.
परप्रत्यय-en : brighten
परप्रत्यय-en : गुणवाची संज्ञा से long : lengthen.

इस सूची में बड़ी संख्या में विदेशियों से सीखे प्रतिरूप भी जोड़ते हैं : equal : equalize; archaic : archaize, English: anglicize, simple : simplify; vile: vilify ; liquid : liquefy; valid : validate; long : elongate, different : differentiate, debile : debilitate, public : publish.

जब शब्दसिद्धि व्याकरणिक लक्षणों द्वारा होती है, जैसे ध्वन्यात्म आपरिवर्तन (man : men; mouth : to mouthe) अथवा मूर्छन (convict क्रिया : convict संज्ञा), अथवा पूर्णादेश (go : went) अथवा शून्य तत्व (cut सामान्यक्रिया : cut भूतकाल; sheep एकवचन sheep बहुवचन; man संज्ञाः man क्रिया) होता है ऐसी स्थितियों में यह बड़ा कठिन हो जाता है कि समुच्चय के किस रूप को आधारवर्ती रूप में वर्णित किया जाए। अंग्रेजी में यदि हम अनियमित रूपसरणि (man : men अथवा run : ran) को साधित मान लें तो एक सरलतर वर्णन मिलता है। किन्तु यह भेदक लक्षण अधिकांश स्थलों पर अप्राप्त है। इस प्रकार play, push, jump, dance जैसे स्थलों पर हमें यह निश्चित करना कठिन है कि संज्ञा या

क्रिया, कौन आधारवर्ती रूप है। जो कुछ भी निश्चय हो साधित शब्द में (यथा to man < संज्ञा man, अथवा a run< क्रिया to run) प्रायः कोई प्रत्यय नहीं होता है और प्रायः अभी आगे वर्णित कारणों से, गौण धातु-शब्द वर्णित किए गए हैं।

इसी प्रकार, पदसंहिति-साधित, जैसे old maidish पद-संहिति old maid से साधित है और इसमें तब तक कोई कठिनाई नहीं है जबतक इनमें कोई शब्दसाधक प्रत्यय, जैसे -ish लगा है। किन्तु जब पदसंहिति में शून्य लक्षण लगा होता है, जैसे jack-in-the-pulpit अथवा devil-may-care, तो हमारा सामना पदसंहितीय शब्दों के कठिन प्रतिरूपों से होता है, ये पदसंहितियों से इस अर्थ में भिन्न हैं कि इनके भीतर कोई अन्य शब्द नहीं आ सकता है, ये वाक्यीय दृष्टि से बढ़ नहीं सकते और प्रायः बहिः केन्द्रित होते हैं।

14.8 मूल शब्दों (primary words) में समीपी संरचक के रूप में कोई स्वतन्त्र रूप नहीं होता है। ये मिश्र (complex) हो सकते हैं अर्थात् इनके दो या अधिक आबद्ध अंश हो सकते हैं, जैसे, per-ceive, de-ceive, de-tain अथवा सरल हो सकते हैं, जैसे, boy, run, red, and, in, ouch.

आबद्धरूप जिनसे मिश्र मूलशब्द बनते, हैं, निस्सन्देह उन आंशिक सादृश्यों के लक्षणों द्वारा निर्धारित होते हैं, जैसे कि ऊपर उदाहरण में बताए हैं। बहुत-सी भाषाओं में मूलशब्द गौणशब्द से संघटना की दृष्टि से सदृश होते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी में, मूल-शब्द hammer, rudder, spider गौणशब्द dance-r, lead-er, ride-r से मिलते-जुलते हैं। मूलशब्द का वह भाग, जो गौणशब्द के शब्दसाधक प्रत्यय (जैसे ऊपर उदाहरणों में -er) से मिलते-जुलते हैं, मूल-परप्रत्यय (primary suffix) कहा जा सकता है। इस प्रकार hammer, rudder, spider में मूलप्रत्यय -er कहा जा सकता है। मूलशब्द का शेष-अंश—spider हमारे उदाहरणों में hammer में [hɛm-] अक्षर rudder में [rʌd-] और spider में [spajd–] धातु कहलाता है। धातु का मूलशब्दों में वही योगदान है जो गौणशब्दों (जैसे, dancer, leader, rider) में आधारवर्ती रूप (जैसे, dance, lead, ride) का।

मूलप्रत्यय और धातुओं का अन्तर इस कारण उचित है कि मूल-प्रत्यय

अपेक्षाकृत कम संख्या में और अर्थ में अस्पष्ट होते हैं जबकि धातुएं संख्या में अधिक होती हैं अतएव अभिधान में अपेक्षाकृत सुस्पष्ट होती हैं ।[1]

इस पदावली के अनुसार मूलशब्द जिनके कोई भी अव्ययवत् संरचक नहीं हैं (जैसे boy, run, red) मूल धातु शब्द (primary-root words) हैं। मूल धातु शब्दों में जो धातुएं हैं वे स्वतन्त्र धातुएँ हैं। ये उन आबद्ध धातुओं के व्यतिरेक में हैं जो कि केवल मूल प्रत्यय के साथ ही मिलते हैं, जैसे spider में उपलब्ध धातु [spajd-] ।

मूल प्रत्यय अर्थ में नितान्त धूमिल होते हैं, केवल धातु के आवश्यक सहचर (निर्धारक determinative) के रूप में मिलते हैं। अंग्रेजी में सामान्य से, सामान्य मूल प्रत्यय भी शब्दभेद के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं देते। इस प्रकार –er प्रत्यय के साथ spider, bitter, linger, ever, under -le के साथ bottle, little, hustle; –ow के साथ furrow, yellow, borrow मिलते हैं। अन्य स्थलों पर कुछ-कुछ माना जा सकता है। इस प्रकार hummock, mattock, hassock आदि में –ock मिलता है और एक मामूली आकार प्रकार की वस्तु का द्योतक संज्ञा बनता है और यह hillock, bullock जैसे शब्दों में गौण-प्रत्यय (वर्ग-विदलन) के रूप में प्रयुक्त होने से इस अर्थ की पुष्टि कर देता है। अंग्रेजी के विदेशी पूर्व प्रत्ययों का एक धूमिल किन्तु व्यतिरेक से अधिक ज्ञात अर्थ मिलता है, जैसे con-tain, de-tain, per-tain, re-tain किन्तु कुछ भाषाओं में मूलप्रत्ययों में अपेक्षाकृत मूर्त अर्थ मिलता है। अलगोन्की भाषाओं में मूल-प्रत्यय वस्तु की स्थिति (लकड़ी की तरह ठोस, पत्थर की तरह ठोस, लच्छेवाली, गोल वस्तु) औजार, शरीर के अवयव, पशुपक्षी, स्त्री, बच्चा (किन्तु वयस्क नहीं) इस प्रकार के

---

1. भाषा के प्रारम्भिक अध्येताओं की, जिन्हें वर्णन और ऐतिहासिक उत्पत्ति के निर्धारण की पूर्णतया विभिन्न (कहीं अधिक कठिन) समस्या में भ्रांति थी, किसी प्रकार यह धारणा थी कि धातुओं का कोई रहस्यात्मक गुण है। यदाकदा अब भी यह दावा सुनाई पड़ता है कि धातुएँ जो कि इस समय मिलती हैं किसी समय स्वतन्त्र शब्द रहे होंगे। पाठकों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि इसमें थोड़ा-सा भी औचित्य नहीं है, सभी आबद्धरूपों के समान धातुएं भी शब्दों के आंशिक सादृश्य की ईकाई मात्र हैं। हम अपने विश्लेषण भाषा की प्राचीनता स्वरूप के ऊपर कुछ भी नहीं कह सकते हैं।

भाव प्रकट करते हैं। इसी प्रकार मिनामनी में क्रियारूप [kepa:hkwaham] "वह एक ढक्कन रखता है" का प्रातिपदिक [kepa:hkwah-] है जिसमें [kep-] "किसी खुली हुई वस्तु का अवरोध", एक धातु है और मूल प्रत्यय [–a :hkw-] "लकड़ी व उसी प्रकार का कोई ठोस" और [–ah-] "औजार के द्वारा एक अचेतन वस्तु के ऊपर क्रिया" में दो प्रत्यय हैं। इसीप्रकार मिनामनी में [akuapi:nam] "कुछ पानी से इसे लेता है" में क्रिया प्रातिपदिक के अन्तर्गत एक धातु [akua-] "किसी माध्यम से किसी चीज को हटाना" और दो प्रत्यय [–epi:-] "तरल वस्तु" [–en] "हाथ से किसी वस्तु के ऊपर क्रिया" है। इसी प्रकार [ni :sunak] "दो नौकाएँ" में एक धातु (ni : sw-) "दो" और मूल प्रत्यय [–unak] "नाव" है। ये प्रत्यय गौण शब्द से धीमे भी प्रकट होते हैं। इनमें से कुछ स्वतंत्र शब्द और कुछ प्रातिपदिक शब्द से व्युत्पन्न हैं। इस प्रकार फाक्स में [pjɛ : tehkwɛ : wɛ : wa] "वह एक या अनेक औरतें लाता है" यह अकर्मक-क्रिया (अर्थात् वह क्रिया जोकि लक्ष्य —कर्म के साथ प्रयुक्त नहीं होती—ऐसा मानों हम कह रहे हैं he woman-brings) है और इसमें एक मूलप्रत्यय [ehkwɛ:we :-] "स्त्री" हैं जोकि संज्ञा [ihkwɛ:wa] "स्त्री" से व्युत्पन्न है। मिनामनी में सजातीय [–ehkiwɛ :–] जैसे [pi:tehki wɛ:w] में इस संबंध में किसी भी अन्य संज्ञा के साथ नहीं आता क्योंकि "स्त्री" के लिए प्राचीन संज्ञा अप्रचलित हो चुकी थी और उसके लिए वास्तविक शब्द [metɛ : muh] "स्त्री" है। कुछ भाषाओं में संज्ञा से साधित मूल-प्रत्ययों के प्रयोग का वैसा ही अर्थ होता है जैसा कि अंग्रेजी वाक्यीय संरचना में लक्ष्य कर्म के साथ क्रिया का होता है। यह प्रवृत्ति संश्लेषण (incorporation) कहलाती है और इसका प्रसिद्ध उदाहरण [Aztecs] एजटेक लोगों की भाषा नावात्लन [Nahuatl] है जहाँ संज्ञा के समान [naka–tl] "मांस" एक क्रिया के समान [ni–naka–kwa] "मैं-मांस-खाता हूँ," "मैं मांस खाता हूँ" में पूर्व-प्रत्यय लगाकर बना है।

कोई धातु केवल एक मूल प्रत्यय के साथ ही आ सकती है जैसा कि अधिकांश सामान्य अंग्रेजी धातुओं के साथ है। man, boy, cut, red, (nasty में) nast, (hammer में) ham–। धातु मूल शब्दों के पूरे समुच्चय में भी मिल सकती है जैसा कि अंग्रेजी के बहुत से विदेशियों से सीखी धातुओं से जैसे conceive, deceive, perceive, receive में [sijv].

प्रत्येक स्थिति में मूल शब्द गौण शब्द साधकों की सम्पूर्ण श्रेणियों के आधार में हो सकता है, जैसे, men, man's, men's, mannish, manly, के आधार में man; man, (mans, manned, manning) के आधार में (to) man; deceit, deceiver, deception, deceptive के आधार में deceive; conceivable, conceit, concept, conceptual, conception के आधार में conceive; perceiver, percept, perceptive, perception, perceptible, perceptual के आधार में perceive; receiver, receipt, reception, receptive, receptacle के आधार में receive। इस प्रकार के गौण साधित वहां भी मिलते हैं जहाँ मूल शब्द नहीं मिलता। इस प्रकार *preceive जैसा कोई भी मूल शब्द नहीं है किन्तु precept, preceptor जैसे शब्द हैं जिनका वर्णन एक अनुमान प्राप्त आधारवर्ती रूप *pre-ceive को मानकर ही हो सकता है।

भाषा की धातुएँ रूपीय-रूपों (morphological forms) के बहुत सारे वर्ग बनाती हैं और इनके अत्यधिक, विशिष्ट और विविध अर्थ होते हैं और ये चीजें उन भाषाओं में सबसे अधिक होती हैं जिनमें धातु स्वतन्त्ररूप हैं– जैसे अंग्रेजी में boy, man, cut, run, red, blue, brown, green, white, black. आबद्ध धातुओं में भी सुस्पष्ट अर्थ मिलते हैं, जैसे yellow में yell–, purple में purp-, nasty में nast– आदि। किन्तु अधिकांश भाषाओं में बहुत धूमिल अर्थवाली धातुएँ मिलती हैं, जैसे अंग्रेजी में विदेशी सीखी धातुएँ, जैसे––conceive, contain, confer आदि में –ceive, tain, –fer। ये विशेष तौर से उन भाषाओं में जिनके मूल प्रकार अपेक्षाकृत विविध और अर्थ में विशिष्ट होते हैं।

अगर एक बार हम धातु स्थापित कर लेते हैं तो हमें आपरिवर्तन की सम्भावना दिखाई पड़ती है। यह सम्भावना तब स्पष्ट है जबकि धातु गौण-शब्द साधन में परम-संरचक के रूप में आती है। इस प्रकार गौण शब्द स्थापित duchess में आधारवर्ती शब्द duke का आपरिवर्तन साथ ही साथ धातु duke का आपरिवर्तन है और गौण साधित sang, sung song में आधारवर्ती sing के आपरिवर्तन-अपने आप धातु sing के आपरिवर्तन हैं। कुछ भाषाओं में धातु के उपरूप इतने विविध हैं कि वर्णन कर्ता के सामने यह कठिनाई होती है कि वह किसको आधाररूप माने। प्राचीन ग्रीक में रूपान्तर [dame :–, dme :–, dmo :–, dama,– dam–] इन रूपों में मिलते थे [e–'dame :] "उसने पाला", [e–'dme :–the :] "वह पाला गया",

['dmo :–s] "दास", [da 'ma–o :] "मैं पालता हूँ", [hip 'podam-o-s] 'घोड़े को सिखाने वाला''। ग्रीक रूपप्रक्रिया का पूरा वर्णन जिसके अन्तर्गत शब्द साधितों का मुख्य और गौण विभाजन भी आता है इस प्रकार धातुओं के आधाररूपों के प्राथमिक चयन पर निर्भर होता है। जर्मनी-भाषाओं में प्रत्ययवत् निर्धारकों के साथ अथवा अनेक बिना धातु का आपरिवर्तन प्रतीकात्मक अभिधान वाले शब्दों में मिलता है, जैसे—flap, flip, flop। यदि हम flap को इस धातु का आधाररूप मान लें तो हम flip और flop को साधित मानेंगे। flip में [i] "अधिक छोटा" "अधिक स्वच्छ" की स्थानापत्ति है, flop में [ɔ] "अधिक बड़ा" "अधिक शिथिल" की स्थाना त्ति है। इस प्रकार के अन्य उदाहरण ये हैं : जिनमें [i] की स्थानापत्ति है : snap : snip, snatch : snitch, snuff: sniff, bang : bing, yap : yip; जिनमें [ij] की स्थानापत्ति है squall : squeal, squawk : squeak, crack : creak, gloom : gleam, tiny : teeny; जिनमें [ʌ] की स्थानापत्ति है : mash : mush, flash : flush, crash : crush. पहली दृष्टि में ऐसा लगेगा कि हम इन रूपों को गौण साधित मानकर वर्णन करें चूँकि शब्द flap flip, और flop का आधारवर्ती है। किन्तु यह भी संभव है कि अंग्रेजी रूपप्रक्रिया का कहीं अच्छा वर्णन हमें मिले। यदि हम flip, flop जैसे शब्दों को "धातु flap-" का मूल आपरिवर्तन माने न कि वास्तविक शब्द flap से सिद्ध करें।

भाषा की धातुएँ संघटना में प्रायः एकरूप-सी होती हैं। अंग्रेजी में एकाक्षरी तत्व हैं, जैसे man, cut, red। इनमें से अनेक स्वतन्त्र रूप हैं और धातु–शब्द के रूप में आती हैं, किन्तु बहुत सारी, जैसे [spajd-] spider में और hammer में [hᵋm-], विशेषतया विदेशी सीखी हुई धातुओं में जैसे [-sijv] conceive, perceive में आबद्धरूप हैं। इनमें से कुछ आबद्ध धातुएँ ऐसे गुच्छों में भी अन्त होती हैं जोकि शब्दान्त में नहीं मिलते, जैसे [lʌmb-]lumber में अथवा [liᵑg] linger में। रूसी में धातुएँ एकाक्षरी हैं अपवाद में केवल कुछ धातुएँ हैं जिनमें [l] या [r] के स्वरों के बीच [e, o] आता है, जैसे ['golod] "भूख", ['gorod-] "नगर"। हम लोग प्राचीन ग्रीक में धातु की परिवर्तनशीलता के उदाहरण देख चुके हैं। इस भाषा में और प्रत्यक्षतः आदिम भारतयूरोपीय में हमें विभिन्न आकार की एकाक्षरी धातुएँ, जैसे [do :-] "देना" और द्वि-आक्षरिक धातुएँ, जैसे [dameː -]

"पालना" जैसी धातुएँ स्थापित करनी पड़ती हैं। उत्तरी चीनी में सभी धातुएँ एकाक्षरी स्वतन्त्र रूप हैं और इनमें ध्वन्यात्म दृष्टि से एक आद्य व्यंजन अथवा व्यंजन गुच्छ (यह नहीं भी हो सकता है), एक अन्त्य आक्षरिक (इसके अन्तर्गत अनाक्षरिक [j, w, n, ŋ] के साथ सन्ध्यक्षर प्रतिरूप) और एक सुर-योजना आती है। मलाया की भाषाओं में दो अक्षरों की धातुएँ होती हैं और उनमें से किसी एक के ऊपर बलाघात होता है, जैसे तगलाग धातु शब्द ['ba : haj] "घर," और [ka'maj] "हाथ"। सभी भाषाओं में धातुओं में तीन व्यंजनों का ढाँचा होता है जिन्हें बोला तक नहीं जा सकता, तदनुसार प्रत्येक मूल शब्द-धातु में सुर-योजना के अनुसार एकरूपीय तत्व जोड़ता है। इस प्रकार आधुनिक मिश्र की अरबी में [k-t-b] "लिखना", जैसी धातु [katab] "उसने लिखा," [ka:tib] "लेखक", [kita:b] "किताब" और पूर्वप्रत्ययों के साथ [ma-ka:tib] "लिखने के स्थान", [ma-ktab] "वह लिख रहा है" अथवा धातु [g-l-s] "बैठना" शब्दों [galas] "वह बैठा", [ga:lis] "बैठने वाला व्यक्ति", [ma-ga:lis] "सभाएँ", [ma-glas] "सभा" जैसे रूप बनते हैं।

कुछ भाषाओं में, जैसे चीनी में धातुओं की संघटना पूर्ण तथा एकरूप होती है, अन्य भाषाओं में हमें कुछ धातु प्रसामान्य प्रतिरूप से छोटी मिलती है। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि ये छोटी धातुएँ प्रायः सदैव उस व्याकरणिक और आर्थीक्षेत्र की होती हैं जिसे अंग्रेजी व्याकरण की शब्दावली के अनुसार, सर्वनाम, समुच्चयबोधक, और पूर्वसर्ग कहते हैं। जर्मन में जिसकी अंग्रेजी के समान धातु संघटना है der, dem, den जैसे रूपों में एक धातु [d-] है और शब्द का शेष अंश (-er, -em, -en आदि) प्रत्येक अवस्था में एक प्रसामान्य रूप विभक्ति है जोकि विशेषणों की रूपसिद्धि में प्रयुक्त होती है, जैसे rot-er, rot-em, rot-en. यही तथ्य प्रश्नवाचक सर्वनाम में आकर के wer, wem, wen शब्द बनते हैं। मलाया की भाषा और सामी भाषा में इस आर्थिक-क्षेत्र में प्रयुक्त बहुत-से शब्द एकाक्षरी होते हैं, जैसे तगलाग में, [at] "और" अथवा वाक्यरचना में प्रयुक्त अव्यय [aŋ], [aj], [na] मिलते हैं। इसी आर्थिक-क्षेत्र के अन्दर मोटे तौर पर वे शब्द आते हैं जिनमें अंग्रेजी-भाषा बलाघातहीन शब्द प्रयुक्त करती है।

14.9 कदाचित् अधिकतर भाषाओं में अधिकांश धातुएँ रूपिम हैं। अंग्रेजी sing : sang : sung : song अथवा flap : flip : flop जैसे उदाहरणों में

भी एक समुपयुक्त वर्णन इनमें से किसी एक रूप को आधाररूप और अन्य को उस धातु का ध्वन्यात्म आपरिवर्तन के साथ गौण-साधित अथवा मूल-साधित रूप मानेगा। किन्तु और स्थलों में हमें तत्वों के बीच में जिन्हें हम विभिन्न धातु मानते हैं स्पष्टतया अंकित ध्वनि, अर्थ, सादृश्य मिलता है। अंग्रेजी के सर्वनामों का कदाचित् सबसे अच्छा वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है कि इसमें एकाक्षरी धातु हैं विशेषतया प्रारम्भिक व्यंजन में—

[ð] : the, this, that, then, there, thith-er, thus.

[hw-] : what, when, which, where, whith-er, why; who और how में [h] के रूप में मिलता है।

[s-] : so, such.

[n-] : no, not, none, nor, nev-er, neith-er.

अंग्रेजी प्रतीकात्मक शब्दों में धातु की जटिल रूपीय संघटना अधिक स्पष्ट है, इन स्थलों में हम स्पष्टता की विभिन्न मात्राओं के साथ भेद कर सकते हैं और संदिग्ध स्थलों में प्रारम्भिक और अन्तिम धातु बनानेवाले रूपिमों की व्यवस्था पाते हैं यद्यपि उनका अर्थ अ-स्पष्ट है। यह स्पष्ट है कि इस संघटना के साथ प्रतीकात्मक लक्ष्यार्थ जुड़ा रहता है। इस प्रकार हम निम्न-लिखित आवर्त्ती प्रारम्भिक ध्वनियाँ पाते हैं—

[fl-] "चलता हुआ प्रकाश" : flash, flare, flame, flick-er, flimmer.

[fl-] "वायु आन्दोलन" : fly, ap, flit (flutt-er).

[gl-] "स्थिर प्रकाश" : glow glare, gloat, gloom (gleam, gloam-ing, glimm-er), glint.

[sl-] "चिकना गीला" : slime, slush, slop, slobb-er, slip, slide.

[kr-] "शोर करते हुए टकराना" : crash, crack, (creak) crunch.

[skr-] "खुरचने की आवाज" : scratch, scrape, scream.

[sn-] "साँस की आवाज" : sniff (snuff), snore, snort, snot.

[sn-] "झटक करके हटना" : snap, (snip), snatch, (snitch).

[sn-] "सरकना" : snake, snail, sneak, snoop.

[dz-] "ऊपर नीचे का संचलन" : jump, jounce, jig, (jog, juggle) jangle, (jingle).

[b-] "धम्म से धक्का" : bang, bash, bounce, biff, bump, bat.

इसी प्रकार की अस्पष्ट रीति से हम अन्तिम व्यंजनों में भेद कर सकते हैं:—

[-ɛʃ] "झटके की गति" : bash, clash, crash, dash, flash, gash, mash, gnash, slash, splash.

[-ɛə] "तेज प्रकाश या ध्वनि" : blare, flare, glare, stare.

[-awns] "तेज गति" : bounce, jounce, pounce, trounce.

[-im] मुख्यतया निर्धारक [-ə] के साथ, "धीमा प्रकाश या ध्वनि", dim, flimmer, glimmer, simmer, shimmer.

[-ʌmp] "भद्दा" : bump, clump, chump, dump, frump, hump, lump, rump, stump, slump, thump.

[-ɛt] निर्धारक [-ə] के साथ "टुकड़े करनेवाली गति"; batter, clatter, chatter, spatter, shatter, scatter, rattle, prattle.

अन्तिम उदाहरण में हम वह रूपीय विचित्रता देखते हैं जोकि हमारे वर्गीकरण को पुष्टि देती है। अंग्रेजी रूपप्रक्रिया में [-ə] अथवा [-l̥] का प्रत्यय के रूप में आने में कोई सामान्य प्रतिबन्ध नहीं है, वे शब्द के भीतर [r,l] की उपस्थिति मात्र से बहिष्कृत नहीं होते हैं 'brother, rather, river, reader, reaper या little, ladle, label रूप पर्याप्त प्रचलित हैं। किन्तु प्रतीकात्मक धातुएं, जिनमें [r] आता है, कभी निर्धारक परप्रत्यय [-ə] से अनुगमित नहीं होती हैं बल्कि [l̥] लेती हैं, और इसके विपरीत [l] रखनेवाली प्रतीकात्मक धातु कभी [-l̥] से अनुगमित नहीं होती है बल्कि [-ə] लेती है : brabble और blabber अंग्रेजी प्रतीकात्मक रूपों में सम्भव हैं किन्तु *brabber अथवा *blabble नहीं।

सूक्ष्म लक्षणों का, जैसे धातु बनानेवाले रूपिमों का, विश्लेषण अनिश्चित और अपूर्ण रहता ही है, क्योंकि ध्वन्यात्मक समानता, जैसे, box, beat, bang में [b-] एक भाषिकरूप को तभी प्रदर्शित करती है जब कि उसके साथ-साथ आर्थी समानता हो और इसके लिए जो कि व्यावहारिक जगत् की वस्तु है, हमारे पास कोई मापदण्ड नहीं है।

अध्याय 15

स्थानापत्ति

15.1 वाक्य-प्रतिरूपों (अध्याय 11) तथा संरचनाओं (अध्याय 12, 13,14) पर विचार करने के बाद अब हम अर्थवान् व्याकरणिक विन्यास के तीसरे प्रतिरूप स्थानापत्ति (§ 10.7) पर विचार करेंगे।

स्थानापन्न (substitute), एक भाषाई रूप अथवा व्याकरणिक अभिलक्षण होता है जो कुछ विशेष परम्परानुमोदित परिस्थितियों में भाषाई रूप-वर्गों के किसी एक भाषाई रूप के स्थान पर आता है। इस प्रकार अंग्रेजी में स्थानापन्न I किसी भी एकवचन पदार्थ सूचक व्यंजक के स्थान पर आ सकता है, बशर्ते कि पदार्थसूचक व्यंजक से उस उच्चार के वक्ता का बोध होता हो जिसके स्थान पर स्थानापन्न आया है।

स्थानापत्ति का व्याकरणिक वैचित्र्य चयन-अभिलक्षणों में निहित है। स्थानापन्न एक विशेष वर्ग के रूपों के स्थान पर ही आ सकता है जिसे हम स्थानापन्न का क्षेत्र (domain) कह सकते हैं। इस प्रकार स्थानापन्न I का क्षेत्र अंग्रेजी का पदार्थसूचक व्यंजक रूप-वर्ग है। स्थानापन्न एक साधारण भाषाई रूप यथा thing, person, object से इस कारण भिन्न होता है कि इसका क्षेत्र व्याकरण से परिभाषासाध्य है। कोई साधारण रूप, यहाँ तक कि अत्यन्त अन्तर्ग्राही अर्थवाला रूप जैसा वस्तु, इस अथवा उस व्यावहारिक स्थिति में प्रयुक्त हो सकता है, यह अर्थ का व्यावहारिक प्रश्न है। दूसरी ओर स्थानापन्न का समकक्षी व्याकरण द्वारा निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, चाहे हम किसी भी वस्तु अथवा व्यक्ति को सम्बोधित कर रहे हों, हम इस वास्तविक अथवा काल्पनिक श्रोता का उल्लेख स्थानापन्न you द्वारा पदार्थवाचक व्यंजक रूप में प्रकट कर सकते हैं और इसके लिए हमें उसे व्यक्ति, जीव, वस्तु, अथवा भाव-सम्बन्ध में (जिसे हम श्रोता रूप में ले रहे हैं) व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं है।

बहुत सारी स्थितियों में स्थानापन्न अन्य विचित्रताओं से भी चिह्नित होते हैं। अधिकतर वे छोटे शब्द होते हैं तथा बहुत सी भाषाओं में

स्वराघातहीन होते हैं। अधिकतर उनकी रूपसिद्धि अथवा शब्दसिद्धि अनियमित (I: me: my) होती है तथा वाक्य- संरचना विशिष्ट होती है। बहुत-सी भाषाओं में वे आबद्ध रूप में आते हैं और ऐसी स्थिति में रूपीय अभिलक्षणों से विशेषित होते हैं यथा संरचनात्मक क्रम में उनकी स्थिति।

15.2 प्रत्येक स्थानापन्न के अर्थ में एक तत्व रूपवर्ग का वर्ग-अर्थ है जो स्थानापन्न के क्षेत्र का कार्य करता है। उदाहरण के लिए स्थानापन्न you का वर्ग-अर्थ अंग्रेजी पदार्थसूचक व्यंजक का वर्ग-अर्थ है। I का वर्ग-अर्थ, एकवचन पदार्थ-वाचक-व्यंजक का वर्ग-अर्थ है और स्थानापन्न they तथा we का वर्ग-अर्थ बहुवचन पदार्थसूचक का वर्ग-अर्थ है।

कुछ स्थानापन्न अधिक विशिष्ट अर्थ देते हैं जो रूप-वर्ग में नहीं दिखाई पड़ता, किन्तु इन स्थितियों में भी बहुत से स्थानापन्नों का समुच्चय व्यवस्था-पूर्वक पूरे क्षेत्र को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार he, she, तथा it सम्मिलित रूप से अंग्रेजी पदार्थवाचक व्यंजकों के वर्ग-अर्थ को अन्तभू त कर लेते हैं। he और she की श्रेणी में who का उपक्षेत्र आ जाता है तथा it में what का। किन्तु he और she के अन्तर में एक अतिरिक्त तथा स्वतन्त्र उपविभाजन सन्निहित है। ऐसी दशा में हमारा स्थानापन्नों का चयन अंग्रेजी पदार्थ-वाचक-व्यंजकों को दो उपवर्गों में, पुरुषवाचक (जिस स्थान पर who और he–she आते हैं) तथा पुरुषनिरपेक्ष वाचक (जहाँ what और it आते हैं) में, विभाजन करता है। पुरुषवाचक एकवचन का पुनः उपविभाजन पु ंलिंग उपवर्ग (जहाँ he आता है) तथा स्त्रीलिंग उपवर्ग (जहाँ she आता है) में होता है।

वर्ग-अर्थ के साथ ही प्रत्येक स्थानापन्न के साथ एक दूसरा अर्थ-तत्व भी होता है, वह है स्थानापत्ति–प्रतिरूप (Substitution-type)। इसमें वे परम्परानुमोदित परिस्थितियाँ आती हैं जिसके अन्तर्गत स्थानापत्ति होती है। इस प्रकार किसी भी एकवचन पदार्थ-वाचक-व्यंजक (इस क्षेत्र से हमें I का वर्ग-अर्थ मिलता है) के स्थान पर I आता है यदि इस पदार्थ-वाचक-व्यंजक से उस उच्चार के वक्ता का बोध हो जिसमें I का प्रयोग हुआ है। यह I का स्थानापत्ति-प्रतिरूप है। वे परिस्थितियाँ, जिनमें स्थानापत्ति होती है व्यावहारिक परिस्थितियाँ होती हैं, जिनकी परिभाषा भाषाशास्त्री स्वयं ठीक-ठीक नहीं दे सकता। विस्तार में, ये विभिन्न भाषाओं में भिन्नभिन्न

होती हैं। विदेशी भाषा बोलते समय उपयुक्त स्थानापत्ति-रूपों के प्रयोग में हमें बहुत कठिनाई होती है।

15.3 फिर भी, एक क्षण के लिए यह उचित होगा, यदि भाषाविज्ञान का आधार छोड़कर हम यहाँ उन समस्याओं पर विचार करें जो समाजशास्त्र अथवा मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के सामने आती हैं। हमें तुरन्त यह पता चल जाता है कि विभिन्न प्रकार की स्थानापत्ति भाषण-प्रक्रिया की प्राथमिक परिस्थितियों को व्यंजित करती है। I, we तथा you में स्थानापत्ति-प्रतिरूप वक्ता और श्रोता के सम्बन्ध पर निर्भर करते हैं। this, here, now तथा that, there, then प्रतिरूप वक्ता से अथवा वक्ता और श्रोता के बीच की दूरी व्यंजित करते हैं। प्रश्नवाचक who, what, where, when, श्रोता को भाषिक रूप व्यक्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। निषेधसूचक nobody, nothing, nowhere, never भाषिकरूप की सम्भावना ही समाप्त कर देते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि इन प्रतिरूपों का क्षेत्र विस्तृत है तथा इनमें एकरूपता है। इनमें हमें पारस्परिक व्यावहारिक सम्बन्ध मिलता है जिनके प्रति मनुष्य अन्य की अपेक्षा अधिक एकरूपता के साथ व्यवहार करता है। गणनावाचक, तथा अभिज्ञापक (identificational) सम्बन्ध, जैसे, स्वीकृति-निषेध, all, some, any, same, other तथा सबसे बढ़कर one, two, three इत्यादि संख्याएं। ये ही वे सम्बन्ध हैं जिनपर विज्ञान की भाषा आधारित है। भाषण रूप जो इसे व्यंजित करते हैं उन्हीं से गणित की शब्दावली बनती है। इन स्थानापत्ति-प्रतिरूपों में से अधिकांश का सम्बन्ध जाति तथा व्यक्ति से है। उनके द्वारा एक जाति में से व्यक्तियों का वरण अथवा अभिज्ञापन होता है (all, some, any, each, every, none इत्यादि)। सम्भवतः प्रत्येक भाषा में एक विशेष आदर्श में आने वाली जाति के वर्ग-अर्थ प्रतिरूप के साथ पदार्थ-व्यंजक रूप-वर्ग होता है तदनुसार सामान्यतः पदार्थ व्यंजक के स्थानापन्न सार्वनामिक (pronominal) से अतिभिन्न स्थानापत्ति-प्रतिरूपों की व्यंजना होती है। अंग्रेजी में जहां वस्तु-व्यंजक एक विशेष शब्द-भेद संज्ञा में आते हैं, संज्ञा के स्थानापन्न सर्वनाम शब्द-भेद बनाते हैं। दोनों साथ-साथ एक महत्तर शब्द-भेद "नाम" (Substantive) बनाते हैं। संज्ञा से सर्वनाम एक कारण से अलग है, कि सर्वनामों के साथ विशेषण विस्तारक (§ 12.14) नहीं आता है।

बहुत सीमा तक, कुछ स्थानापत्ति-प्रतिरूपों की यह विशेषता भी होती

है कि वह रूप जिसके लिए स्थानापत्ति होती है हाल के ही भाषण में घटित हुआ है। इस प्रकार जब हम कहते हैं Ask that policeman, और he will tell you, तो स्थानापन्न he का अर्थ दूसरी चीजों के बीच यह भी होता है कि वह एकवचन पुल्लिंग नाम व्यंजक, जिसके स्थान पर he आया है, अभी हाल ही में बोला गया है। एक स्थानापन्न जिसमें यह निहित रहता है वह अन्वादिष्ट (anaphoric) अथवा आश्रित (dependent) स्थानापन्न है तथा हाल ही में उच्चारित वह विस्थापित रूप पूर्ववृत्त (antecedent) है। फिर भी यह अन्तर कहीं भी पूरी तरह लागू होता हुआ नहीं लगता। हमें सामान्यतः स्थानापन्नों के कुछ स्वतन्त्र प्रयोग दिखाई पड़ते हैं जो साधारणतः आश्रित हैं। उदाहरण के लिए it's raining में it का प्रयोग। स्वतन्त्र स्थानापन्नों के पूर्ववृत्त (antecedent) नहीं होते। उनसे रूप-वर्ग का पता चलता है तथा उनके विस्तृत अभिज्ञापक अथवा गणनात्मक स्थानापत्ति प्रतिरूप भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए somebody, nobody। किन्तु उनसे यह नहीं प्रकट होता कि वर्ग के कौन से रूप (उदाहरण के लिए कौन सी संज्ञा-विशेष) का विस्थापन हुआ है।

तो, समष्टितः स्थानापत्ति-रूपों के अन्तर्गत स्थिति के वे प्राथमिक अर्थलक्षण आते हैं जिनमें भाषण दिया गया है। ये अभिलक्षण इतने सहज होते हैं कि अधिकांशतः वे संकेतों द्वारा निर्दिष्ट किए जा सकते हैं। I, you, this, that, none, one, two, all इत्यादि। विशेषरूप से this और that प्रतिरूप के स्थानापन्न, प्रत्युत्तर के भाषिकेतर रूपों से अर्थ-सामीप्य के विषय में, विस्मयादि-बोधक से मिलते जुलते हैं। विस्मयादि-बोधकों की तरह, वे कभी-कभी भाषा के ध्वन्यात्म ढाँचे से विचलित हो जाते हैं (§ 9.7)। क्योंकि वर्ग-अर्थ के अतिरिक्त स्थानापत्ति-प्रतिरूप स्थानापन्न के पूरे अर्थ को व्यंजित करते हैं, हम निःसंकोच कह सकते हैं कि स्थानापन्नों के अर्थ एक ओर अधिक अन्तर्भूती तथा अमूर्त हैं और दूसरी ओर साधारण भाषाई रूप के अर्थ की अपेक्षा अधिक सहज और स्थायी हैं। वर्ग-अर्थ की दृष्टि से, साधारण रूपों की अपेक्षा स्थानापन्न व्यावहारिक वास्तविकता से और आगे बढ़कर हैं क्योंकि उनसे वास्तविक वस्तु का बोध नहीं होता अपितु व्याकरणिक रूप-वर्ग का बोध होता है। कहने के लिए स्थानापन्न द्वितीय श्रेणी के भाषाई रूप हैं। दूसरी ओर उनके स्थानापत्ति-

प्रतिरूपों में, साधारण भाषाई रूप की अपेक्षा वे अधिक आदिम हैं क्योंकि उनसे उस समीपी स्थिति का बोध होता है जिसमें भाषण दिया गया है।

स्थानापत्ति की व्यावहारिक उपयोगिता जान लेना सरल है। अपने क्षेत्र के किसी भी रूप की अपेक्षा स्थानापत्ति का अधिक प्रयोग होता है। फलतः इसे बोलपाना तथा पहचान लेना सरल है। इसके अतिरिक्त अधिकतर स्थानापन्न लघुरूप होते हैं और अधिकतर जैसाकि अंग्रेजी में स्वराघातहीन होते हैं अथवा जैसा कि फ्रेंच में अन्य कारणों से शीघ्रता तथा सरलता से बोले जा सकते हैं। इस संक्षिप्तता के बावजूद विशिष्ट रूपकों की अपेक्षा स्थानापन्न अधिक स्पष्टता तथा सही ढँग से प्रयुक्त किए जा सकते हैं। Would you like some fine, fresh cantaloupes ? प्रश्न के उत्तर में How much are they ? की अपेक्षा How much are cantaloupes? उत्तर में अविलम्ब की अथवा प्रत्युत्तर अवरोध की (गलत समझने की) सम्भावना है। यह विशेष रूप से कुछ स्थानापन्नों में, यथा I जिसका अर्थ निर्भ्रान्त है, सही है, जबकि बहुत से श्रोताओं के लिए वक्ता के नाम का वास्तविक अर्थ व्यर्थ है।

15.4 भाषाविज्ञान के क्षेत्र में पुनः लौटने पर, जो कुछ हमने व्यावहारिक रूप से देखा है उसे ध्यान में रखते हुए, हम स्थानापन्नों के अर्थ का विवरण देने में अधिक स्पष्ट हो सकते हैं। हम यह भी देखते हैं कि बहुत-सी भाषाओं में स्थानापन्नों के अर्थ की अन्य रूपों में आवृत्ति होती है। यथा अंग्रेजी में सीमाकारक विशेषण (limiting adjective) की (§ 12.14)।

You स्थानापन्न का अर्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

A. वर्ग-अर्थ : वही जो कि पदार्थवाचक रूपवर्ग के होते हैं अर्थात् "वस्तु अथवा वस्तुएँ" (object or objects)

B. स्थानापत्ति-प्रतिरूप : श्रोता

स्थानापन्न he का अर्थ इस प्रकार दिया जा सकता है :—

A. वर्ग-अर्थ

1. रूपवर्गों के संदर्भ में परिभाषा-साध्य

(a) वही जो एकवचन पदार्थवाचक व्यंजक रूपवर्ग का है अर्थात् एक वस्तु (one object)

(b) वही जो स्थानापन्न who, someone से परिभाषित रूप-वर्ग का है, अर्थात् व्यक्तिवाचक।

2. अन्यथा अस्थापित एक रूप-वर्ग का सृजन : he का प्रयोग केवल कुछ विशेष एकवचन व्यक्तिवाचक वस्तुओं के लिए होता है। (अवशिष्ट रूपों के स्थान पर she आता है) जो तदनुसार एक उपवर्ग पुं० वर्ग–अर्थ के साथ बनता है।

B: स्थानापत्ति प्रतिरूप :

1. अन्वादेशन (Anaphora) he लगभग अपने सभी प्रयोगों से यह व्यक्त करता है कि पदार्थवाचक पुं० व्यक्तिवाचक जाति की वस्तु हाल ही में उच्चारित की गई है तथा he का अर्थ इस जाति के एक व्यक्ति से होता है अर्थात् हाल ही में उक्त।

2. परिसीमन (Limitation): he से व्यंजित होता है कि व्यक्ति उल्लिखित जाति के अन्य सभी व्यक्तियों में अभिज्ञाप्य है; अर्थ का यह तत्व वही है जोकि निश्चित-संज्ञाओं के वाक्यीय संवर्ग का होता है (§ 12.14) तथा इसका विवरण दिया जा सकता है, अर्थात् जैसे 'अभिज्ञापित'।

15.5 स्थानापन्न जिनके स्थानापत्ति-प्रतिरूप के अन्तर्गत केवल अन्वादेशन आते हैं सरल अन्वादेश (simple anaphoric) होते हैं। वर्ग-अर्थों के अतिरिक्त (जो वास्तव में भिन्न भाषाओं के व्याकरणिक रूप-वर्गों के अनुसार भिन्न होते हैं) उनसे केवल यह प्रकट होता है कि एक रूपविशेष जिसकी स्थानपूर्ति की जा रही है पूर्ववर्ती अन्वादेशक द्वारा अभी-अभी उल्लिखित हुआ है। अंग्रेजी में समापिका क्रिया-व्यंजक अन्वादेश द्वारा do, does, did के रूप द्वारा स्थानच्युत किए जाते हैं, तथा Bill will misbehave as John did में। यहाँ पूर्ववर्ती-अन्वादेशक misbehave है। तदनुसार स्थानच्युत रूप misbehaved है। कुछ अंग्रेजी क्रिया रूप-सारिणियाँ, यथा be, have, will, shall, can, may, must इस स्थानापत्ति-क्षेत्र के बाहर आती हैं। Bill will be bad just as John was में यहाँ did नहीं आएगा। अंग्रेजी की संज्ञाएँ अन्वादेश रीति से one द्वारा बहुवचन में ones द्वारा स्थानच्युत होती हैं बशर्ते कि उनके साथ विस्तारक विशेषण हो। I prefer a hard pencil to a soft one, hard pencils to soft ones. One का अन्वादिष्ट सर्वनाम के रूप में यह प्रयोग वर्ग-विदलन द्वारा one (§12.14) के अनेक विस्तारक प्रयोगों से भिन्न है और विशेष रूप से ones बहुवचन बनाने में। इन अन्वादेश-स्थानापत्ति का विस्तार से विवेचन हम आगे करेंगे (§ 15.8-10)

आश्रित उपवाक्यों में जिनका आरम्भ as अथवा than से होता है, हमें अंग्रेजी में एक समापिका-क्रिया-व्यंजक के लिए एक दूसरे प्रकार का अन्वादेशन मिलता है। हम केवल यही नहीं कहते हैं कि Mary dances better than Jane does बल्कि यह कहते हैं कि Mary dances better than Jane। हम इस बाद वाले प्रतिरूप का वर्णन करने के लिए कह सकते हैं कि (as और than के बाद) एक कर्ता (Jane) कर्ता क्रिया-व्यंजक (Jane dances) एक अन्वादिष्ट-स्थानापत्ति का काम करता है अथवा हम कह सकते हैं कि एक (as तथा than के बाद) एक शून्य अभिलक्षण कर्ता-व्यंजक के सहवर्ती समापिका क्रिया-व्यंजक के लिए अन्वादिष्ट स्थानापन्न का काम करता है। अंग्रेजी में अन्वादिष्ट शून्य-अभिलक्षण की एक दूसरी स्थिति सम्बन्ध सूचक के पश्चात् to : यथा, I have not seen it, but hope to में : असमापिका क्रिया का विस्थापन है तथा समापिका क्रियाओं के बाद जिनके साथ बिना to के विस्तारक आता है : यथा I will come if I can में : इसी प्रकार be तथा have के रूपों के बाद कृदन्तों के लिए शून्य-अभिलक्षण आता है, यथा, You were running faster than, I was : I haven't seen it but Bill has. संज्ञाओं के लिए शून्य-अन्वादेशन, सहवर्ती विशेषण के साथ अंग्रेजी में केवल समूहवाचक संज्ञाओं के लिए स्वतन्त्रतापूर्वक आता है, यथा, I like sour milk better than fresh. अन्य संज्ञाओं के बाद, कुछ सीमाकारक विशेषणों को छोड़कर हम one, ones का प्रयोग करते हैं।

जहाँ साधारण अन्वादेश के कुछ रूप प्रत्येक भाषा में प्रयुक्त होते हुए लगते हैं उनके विस्तार में पर्याप्त अन्तर है। one और ones का प्रयोग अंग्रेजी में विचित्र है। समान संरचना वाली सम्बन्धित भाषाओं में संज्ञा के लिए विशेषण के बाद शून्य-अन्वादेशन का स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयोग होता है, यथा जर्मन grosze Hunde und kleine ('gro:se 'hunde unt 'Klajne) "बड़े कुत्ते और छोटे"। फ्रेंच des grandes prommes et des petites (de grã d pɔm e de ptit) "बड़े और छोटे सेब"। कुछ भाषाओं में पूर्ण वाक्य प्रतिरूप में कर्ता शून्य-अन्वादेशन से स्थानच्युत किए जा सकते हैं। इस प्रकार चीनी भाषा में इस प्रकार की उक्ति (wo³, 'juŋ⁴ ¹²khwaj 'pu⁴) "मुझे कपड़े के एक टुकड़े की आवश्यकता है।" प्रत्युत्तर हो सकता है ('juŋ⁴ i⁴'phi¹ mo? "एक रोल की आवश्यकता : प्रश्न-

सूचक अव्यय ।" । तगलाग में यह आश्रित-वाक्यांशों में होता है यथा वाक्य (aŋ 'pu:nu ? aj tu'mu:bu ? haŋ'gaŋ sa mag'bu:ŋa) "पेड़" (विधेयात्मक अव्यय) तब तक उगता रहा (विस्तारक अव्यय) जब तक फलने नहीं लगा ।"

15.6 सम्भवतः सभी भाषाओं में सार्वनामिक स्थानापत्ति का प्रयोग होता है जो कुछ निश्चित लक्षण के साथ अन्वादेश के साथ संयोजित होते हैं। विस्थापित-रूप पूर्ववृत्त नाम से अभिहित जाति का एक परिचित नमूना है। हमने देख लिया है कि अंग्रेजी में he सर्वनाम का यही मूल्य है, यथा, Ask a policeman, and he will tell you में। इस प्रकार की स्थानापत्ति अधिकतर, किन्तु भ्रान्तिपूर्ण ढंग से अन्वादेश कहे जाते हैं। इसे निश्चयसूचक कहना और अच्छा रहेगा। अंग्रेजी के साथ ही अधिकांश भाषाओं में, निश्चित स्थानापत्तियों का प्रयोग उस स्थिति में नहीं होता जब पूर्ववृत्त वक्ता अथवा श्रोता हो अथवा दोनों एक ही व्यक्ति हों। इस कारण से निश्चयवाचक स्थानापत्ति अधिकतर अन्यपुरुष स्थानापत्ति कहे जाते हैं। सामान्यतः उनमें स्थानापत्ति के साथ बहुत-सी विचित्रताएँ होती हैं जो श्रोता तथा वक्ता से संबंधित होती हैं।

अंग्रेजी के निश्चयवाचक अथवा अन्यपुरुष सर्वनाम he, she, it, they के एकवचन तथा बहुवचन के विस्थापित रूपों में अन्तर होता है तथा एकवचन में भी पुरुष-वाचक तथा पुरुष-निरपेक्षवाचक पूर्ववृत्तों का अंतर होता है। पुरुषवाचक he, she बनाम पुरुष-निरपेक्षवाचक it। हमने यह भी देख लिया है कि एकवचन तथा बहुवचन का भेद भाषा में अन्य स्थितियों में भी पहचान लिया जाता है (उदाहरण के लिए संज्ञा की रूप-विभक्ति में boy, boys) तथा हम देखेंगे कि यही स्थिति पुरुषवाचक तथा पुरुष-निरपेक्षवाचक में भी है। फिर भी पुरुषवाचक वर्ग के अन्तर्गत he का पुं० पूर्ववृत्त के साथ प्रयोग तथा she स्त्री० पूर्ववृत्त के साथ प्रयोग अंग्रेजी में अन्य स्थितियों में अपूर्ण ढंग से अभिज्ञापित होते हैं (यथा परप्रत्यय -ess, § 14.7 के प्रयोग में)। इस प्रकार सार्वनामिक रूप he तथा she के प्रभेद के आधार पर अंग्रेजी पुरुषवाचक में दो वर्ग पुं० (वे रूप जिनकी स्थानापत्ति he से होती है) तथा स्त्री० (उसी प्रकार वे रूप जिनकी स्थानापत्ति she से होती है) बन जाते हैं। अर्थ की दृष्टि से यह वर्गीकरण लिंग के आधार पर शरीर-रचना संबंधी अंतर के पूर्णतया अनुकूल बैठता है।

संज्ञाओं में लिंग-विधान वाली भाषाओं में (§ 12.7) अन्यपुरुष सर्वनामों में सामान्यतः पूर्ववृत्त के लिंग के अनुसार अन्तर होता है। इस प्रकार जर्मन पुं० संज्ञा यथा der Mann [der'man] "आदमी" der Hutt [hu:t], ।

"हैट" के स्थानापन्न er [e : r] यथा er ist grosz [e : r ist 'gro: s] "वह, यह एक बड़ा है" का प्रयोग आदमी अथवा 'हैट' दोनों के लिए होता है अथवा किसी भी पूर्व वृत्त के किसी भी रूप के लिए होता है जो पुं०समन्विति वर्ग (congruence-class) का हो।

स्त्री०, संज्ञाएँ, यथा die frau [di:'fraw] स्त्री, die uhr [u:r] "घड़ी", इनका स्थानापन्न sie [zi:] है, यथा sie ist grosz "वह, यह बड़ी है।"

अजीवी संज्ञाएँ यथा das Haus [das 'haws] "घर" अथवा das weib [vajp] "स्त्री" का अन्यपुरुष स्थानापन्न *es* [es] है यथा es ist grosz में।

यह प्रभेद, अंग्रेजी के he और she की तरह का नहीं है, प्रत्युत यह संज्ञाविस्तारकों के प्रभेदानुसार होता है (यथा der : die : das 'the')

निश्चित-अभिज्ञापन का अर्थ अर्थात् पूर्ववृत्त नाम से अभिहित जातियों में से जिस प्रकार एक विशेष नमूना अभिज्ञापित किया जाता है,—भिन्न-भाषाओं में भिन्न होता है और सम्भवतः उनकी कोई परिभाषा स्थिर करना बहुत कठिन है। किन्तु यह जान लेना महत्वपूर्ण है कि उन भाषाओं में जिनमें "निश्चित" (definite) संज्ञा-विस्तारकों का एक संवर्ग है (यथा अंग्रेजी में the, this, that my, John's इत्यादि § 12.14), "निश्चित" सर्वनाम एक विशेषरूप को उसी तरह अभिज्ञापित करते हैं जिस प्रकार एक निश्चित विस्तारक अपने प्रधान संज्ञा रूप को करता है। इस प्रकार पूर्ववृत्त, policeman के बाद he का समान अभिधान है, केवल अन्तर उस विचित्र मूल्य में है जो पदसंहिति the policeman के स्थानापत्ति में ही निहित है। इसके अतिरिक्त हमें केवल कुछ ही व्यापक विचित्रताओं के उल्लेख की आवश्यकता है, यथा, अंग्रेजी की एक स्थिति, जो बहुत सामान्य नहीं है अर्थात् निश्चय-बोधक सर्वनाम अपने के पूर्व बोला जाता है He is foolish who says so. यदि क्रिया to be के रूप के बाद पूर्ववृत्त विधेय पूरक है, निश्चयबोधक सर्वनामवचन, पुरुष, लिंग के होते हुए भी सामान्यतः it होता है : it was a two-storey house; it's he; it's me (I), it's the boys.

कर्ता के रूप में एक असमापिका पदसंहिति के स्थान पर (to scold the boys was foolish) हम अधिकतर it का प्रयोग करते हैं जिसमें असमापिका पदसंहिति दृढ़ असम्बद्ध वाक्य-विन्यास (parataxes) (§ 12.2) का अनुगमन करती है। यथा it was foolish to scold the boys. एक कर्ता-क्रिया पदसंहिति, जैसे you can't come एक कर्ता का उद्देश्य नहीं पूरा करती, किन्तु it के साथ दृढ़ असम्बद्ध वाक्यविन्यास में कर्ता रूप में दिखाई पड़ती है, it's too bad you can't come। निश्चयवाचक सर्वनाम का यह प्रत्याशित (anticipatory) प्रयोग इस प्रतिबन्ध के साथ कि सर्वनाम पहले आता है जर्मन में किसी भी कर्ता के लिए होता है। इस प्रकार ein Mann Kam in den Garten [ajnˈmanˈka:m in den ˈgarten] "एक आदमी बाग में आया।" का एक रूप है es kam ein Mann in den Garten जहाँ es का प्रयोग अंग्रेजी क्रियाविशेषण there से मिलता-जुलता है। यदि असम्बद्ध वाक्यविन्यास में संज्ञा बहुवचन है, तो, जर्मन es बहुवचन क्रिया के साथ आता है। zwei Männer Kamen in den Garten [tsvaj 'mener ˈka men] "दो आदमी बाग में आए।" के साथ-साथ एक रूप है es kamen zwei Männer in den Garten।

फ्रेंच में निश्चयवाचक सर्वनाम, विशेषण के स्थान पर आता है : êtes-vous heureux ?–je le suis [ɛ :t vu œrɸ?–ʒə l sųi] "क्या तुम प्रसन्न हो ? मैं हूँ।" इससे एक पग और आगे हमें बिना पूर्ववर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम सीमान्तक प्रयोगों में मिलता है, यथा अंग्रेजी अपभाषा beat it 'run away'; cheese it 'look out', he hot-footed it home, 'he ran home', let 'er go में हम सामान्य रूप से they का कर्ता-रूप में प्रयोग लोगों के लिए करते हैं they say Smith is doing well। इस प्रकार का सामान्यतम प्रयोग एक निश्चयवाचक सर्वनाम का औपचारिक कर्ता के रूप में उन भाषाओं में कृत्रिम पुरुषनिरपेक्ष प्रयोग है जिनमें कर्ता-क्रिया-संरचना ही प्रमुख है : it's raining; it's a shame। यह तर्कसंगत पुरुषनिरपेक्ष संरचना (§ 11.2) के साथ-साथ आ सकता है। इस प्रकार जर्मन में तर्कसंगत पुरुषनिरपेक्ष mir war kalt [mi: r va:r ˈkalt] "मुझे ठण्ड लगी"; (I felt cold), hier wird getanzt [ˈhi:r virt ge ˈtantst] "यह नाच होता है" (here gets danced) "यहाँ नाच हो रहा है" (there is dancing here), निश्चयवाचक सर्वनाम उस स्थिति में कर्तारूप में आ सकता है जबकि वह पदसंहिति

में पहले आता है : es war mir kalt; es wird hier getanzt । फीनी में पुरुषनिरपेक्ष तथा कृत्रिम पुरुषनिरपेक्ष भिन्न अर्थों से प्रयुक्त होते हैं : puhutaan वहाँ बात चल रही है, एक तर्कसंगत पुरुषनिरपेक्ष रूप है किन्तु sadaa "बारिस हो रही है" में निश्चित स्थानापन्न-कर्ता "he, she, it "वह" निहित है ठीक वैसे ही, जैसे puhuu "वह बात कर रहा है" में ।

15.7 अधिकांश भाषाओं में निश्चयवाचक स्थानापन्नों का प्रयोग उस समय नहीं होता जबकि विस्थापित रूप से वक्ता अथवा श्रोता अथवा उस समूह का बोध होता है जिसमें ये लोग आते हैं । इस स्थिति में एक भिन्न प्रतिरूप पुरुषवाचक स्थानापन्न का प्रयोग होता है । प्रथमपुरुष स्थानापन्न I "मैं" वक्ता के उल्लेख के स्थान पर आता है तथा मध्यमपुरुष स्थानापन्न thou "तू, तुम" श्रोता के स्थान पर । ये स्वतन्त्र स्थानापन्न हैं जिनके लिए विस्थापित रूप के अन्वादिष्ट उच्चार (antecedent utterance) की अपेक्षा नहीं होती ।

I और thou स्थानापन्नों के साथ अधिकांश भाषाओं में लोगों के उस समूह के लिए जिसमें वक्ता और श्रोता दोनों ही आते हैं, के लिए कुछ रूप प्रयुक्त होते हैं । इस प्रकार अंग्रेजी में लोगों के एक समूह के लिए जिसके अन्तर्गत वक्ता भी आता है, स्थानापन्न we होता है । यदि वक्ता इसमें निहित नहीं है, किन्तु श्रोता है तो स्थानापन्न ye होता है । बहुत सी भाषाओं में सम्भावनाओं के इन सभी प्रकारों में प्रभेद किया जाता है, यथा तगलाग में जिसमें [a'ku] "मैं" तथा [i'kaw] "तुम" के अतिरिक्त बहुवचन रूप मिलते हैं :

जिसमें केवल वक्ता (प्रथमपुरुष बहुवचन के अतिरिक्त) आता है :—

[Ka'mi] ("हम लोग")

जिसमें वक्ता और श्रोता (प्रथम पुरुष बहुवचन के साथ ही) आते हैं :—

['ta:ju] "हम लोग"

जिसमें केवल श्रोता आता है (मध्यमपुरुष बहुवचन) : Ka'ju] "तुम"।

इसी प्रकार कुछ भाषाओं में, जिनमें द्विवचन भी होता है, पाँच तरह के संयोजन आते हैं, यथा सामोआन (Samoan) में :'I-and-he' "मैं-और-वह", 'I-and–thou' "मैं-और-तुम", 'ye-two', "तुम दोनों", I-and-they मैं-और-वे, "I-and-thou-and-he-(or-they") मैं-और-तुम-और-वह" (अथवा

वे), "तुम-और-वे" thou-and-they । कुछ भाषाओं में पुरुषवाचक सर्वनामों में त्रिवचन (तीन व्यक्ति) मिलता है।

अंग्रेजी रूप thou, ye निश्चित रूप से प्राचीन रूप हैं। विचित्र बात है कि आधुनिक अंग्रेजी में वही रूप you, श्रोता तथा लोगों के समूह के लिए जिसमें श्रोता भी आता है, प्रयुक्त होता है।

बहुत-सी भाषाओं में श्रोता और वक्ता के विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों के अनुसार भिन्न प्रकार के मध्यम पुरुष स्थानापन्न प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार फ्रेंच में vous [vu] "तुम" बहुत कुछ अंग्रेजी की तरह एकवचन तथा बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होता है। किन्तु यदि श्रोता निकट का सम्बन्धी, गहरा मित्र, एक छोटा बच्चा अथवा अमानव (यथा कुत्ता) है, तो एक विशेष प्रकार का घनिष्ठताबोधक एकवचन रूप toi [twa] प्रयुक्त होता है। जर्मन में अन्यपुरुष बहुवचन सर्वनाम 'they' "वे" मध्यमपुरुष में एकवचन तथा बहुवचन दोनों के लिए "प्रयुक्त होता है। Sie spaszen[zi : 'ʃpa:sen] का अर्थ दोनों होता है "वे मजाक उड़ा रहे हैं", (they are jesting) तथा "तुम (एकवचन तथा बहुवचन) दोनों मजाक उड़ा रहे हो" (you are jesting)। किन्तु घनिष्ठ (intimate) रूपों का प्रयोग बहुत कुछ फ्रेंच की तरह एकवचन और बहुवचन का भेद करता है: du spaszest [du: ʃpa:sest] "तुम मजाक उड़ा रहे हो", ihr spaszt [i:rʃpa:st] "तुम लोग मजाक उड़ा रहे हो"।

मध्यमपुरुष स्थानापन्नों का अर्थ कुछ भाषाओं में इन परिस्थितियों द्वारा सीमित होता है कि वे विभेदक भाषण में नहीं प्रयुक्त होते। इसके स्थान पर श्रोता का बोध किसी सम्मानसूचक शब्द your Honor, your Excellency, Your Majesty) द्वारा कराया जाता है। उदाहरण के लिए स्वीडी अथवा पोली में कहा जाता है 'How is Mother feeling' अथवा 'Will the gentleman come to-morrow। यहां रेखांकित शब्द से श्रोता का समुचित बोध होता है। कुछ भाषाएँ--यथा जापानी तथा मलाई में उत्तमपुरुष तथा मध्यमपुरुष के लिए वक्ता तथा श्रोता के विभेदक सम्बन्धों के अनुसार स्थानापन्नों में कई भेद किए जाते हैं।

बहुत-सी भाषाओं में पुरुषवाचक तथा निश्चयबोधक (अन्य पुरुष) स्थानापन्न उभयनिष्ठ लक्षणों के कारण एक प्रकार का पुरुष-निश्चयबोधक की सीमित सदस्यों वाला वर्ग बनाते हैं। अंग्रेजी में दोनों श्रेणियाँ he, she,

it, they तथा I, we, you (thou, ye) पदसंहिति से बलाघातहीन होती हैं। इनमें से अधिकांश का एक विशेष कर्मकारक रूप है (me, us, him her, them, thee); उनमें से अधिकांश का अधिकारसूचक विशेषण रूप अनियमित ढंग से व्युत्पन्न होता है (my, our, your, his, her, their, thy), और इनमें से कुछ विशेषणों का शून्य अन्वादेश के लिए एक विशेष रूप है (mine इत्यादि § 15.5). फ्रेंच में पुरुष-निश्चयबोधक सर्वनामों के विशिष्ट (संयोजक) रूप हैं, जब वे कर्ता अथवा क्रिया से लक्ष्य का काम करते हैं। भिन्न कुछ स्थानों में इनकी कारक रूप-विभिक्त है जो अन्यथा फ्रेंच स्थानापन्नों के लिए विदेशी है फिर भी वे अधिकारसूचक विशेषणों के आधारवर्ती हैं, यथा, moi [mwa] "मैं", mon chapeau [mõ'ʃapo] 'मेरा हैट' जबकि दूसरे स्थानापन्न आधारवर्ती नहीं होते, le chapeau de Jean[lɔ ʃapo d zã] "जान का हैट", (the hat of John, John's hat)। अधिकतर पुरुष-निश्चयबोधक स्थानापन्नों की विशिष्ट वाक्यात्मक संरचनाएँ हैं। इस प्रकार अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच में समापिका क्रिया का कर्ता रूप में भिन्न पुरुषों के लिए विभिन्न संगतरूप हैं। I am: thou art: he is; फ्रेंच nous savons [nu savõ], "हम जानते हैं", vous savez [vusave] "तुम जानते हो", elles savent [ɛl sa:v] "वे (स्त्री०) जानती हैं", ils savent [i sa:v] "वे जानते हैं।"

पुरुष-निश्चयबोधक सर्वनामों की समुचित व्यवस्थित संरचना भी हो सकती है। इस प्रकार अल्गोन्की भाषाओं में आदि तत्व [ke-] उन रूपों में दिखाई पड़ता है जिसमें श्रोता भी आते हैं। यदि इनमें श्रोता नहीं समाहित हैं, [ne-] से वक्ता का अर्थ सूचित होता है। यदि इनमें से कोई भी सम्मिलित नहीं है तो आदि में [we–] होता, यथा मेनोमिनी में :—

[Kenah] 'तुम', [Kena ?] 'हम लोग' (सम्मिलित), [Kenua ?] 'तुम लोग', [nenah] 'मैं', [nena ?] 'हम लोग' (असम्मिलित), [wenah] 'वह', [wenua ?] 'वे'।

सामोआन में द्विवचन तथा बहुवचन के प्रभेद के साथ है—

[a?u] "मैं", [ima:ua], 'हम दो', (असम्मिलित), [ima:tou] 'हम लोग' (असम्मिलित)

[ita:ua] 'हम दो' (सम्मिलित), [ita:tou] 'हम लोग' (सम्मि०),

[?œ] 'तुम', [?oulua] 'तुम दो', [?outou] 'तुम लोग', [ia] 'वह', [ila :ua], 'वे दो' [ila:tou] 'वे लोग'

द्विवचन-त्रिवचन का भेद अमातोम द्वीप की भाषाओं—मेलेनेशियन—में दिखाई पड़ता है :

[ainjak] 'मैं', [aijumrau] 'हम दोनों' (असम्मिलित), [aijumtai] 'हम तीनों' (असम्मिलित), [aijama] 'हम लोग' (असम्मिलित), [akaijau] 'हम दोनों' (सम्मिलित), [akataij] 'हम तीनों' (सम्मिलित), [akaija] 'हम लोग' (सम्मिलित) [aiek] 'तुम', [aijaurau] 'तुम दोनों,' [aijautai] 'तुम तीनों', [aijaua] 'तुम लोग'।

[aien] 'वह', [arau] 'वे दोनों', [ahtaij] 'वे तीनों', [ara] 'वे'। बहुत-सी भाषाओं में पुरुष निश्चयबोधक स्थानापन्न आबद्धरूप में दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार लैटिन में समापिका क्रियारूपों में निश्चय-पुरुषवाचक कर्ता अथवा लक्ष्य हैं :

amō "मैं प्यार करता हूँ", amās "तुम प्यार करते हो", amat "वह (वह स्त्री०, यह) प्यार करता है," amāmus "हम प्यार करते हैं", amatis "तुम लोग प्यार करते हो," amant "वे प्यार करते हैं", amor "मैं प्यार किया जाता हूँ", amāris "तुम प्यार किये जाते हो", amatur "वह, (वह स्त्री, यह) प्यार किया जाता है", amāmur "हम लोग प्यार किये जाते हैं", amāmini "तुम लोग प्यार किए जाते हो", amantur "वे लोग प्यार किए जाते हैं"।

इस प्रकार कुछ भाषाओं में कर्ता तथा लक्ष्य दोनों आते हैं, यथा क्री में [nisa:kiha:w] "मैं उसे प्यार करता हूँ", [kisa : kiha : wak] "मैं उन्हें प्यार करता हूँ", [kisa:kiha:w] 'तुम उसे प्यार करते हो," [nisa : kihik] "वह मुझे प्यार करता है", [nisa:kihi-kuna:n] "वह हमें (असम्मिलित) प्यार करता है," [Kisa : mihitina : "हम लोग तुम्हें प्यार करते हैं", [kisa : kihitin] "मैं तुम्हें प्यार करता हूँ" इत्यादि एक लम्बी रूपसारिणी द्वारा।

इसी प्रकार क्री में, एक वस्तु का अधिकार आबद्धरूप में दिखाई पड़ता है : [nitastutin] "मेरा हैट", [kitastutin] "तुम्हारा हैट", [utastutin] "उसका हैट" इत्यादि। इन सारी स्थितियों में अन्यपुरुष आबद्धरूपों में

संज्ञा अन्यादेश के साथ प्रत्युल्लेख (cross-reference) हो सकता है। लैटिन pater amat "पिता वह प्यार करता है," "पिता प्यार करता है" (§12·9)

पुरुष-निश्चयबोधक व्यवस्था तादात्म्य और अतादात्म्य के प्रभेद में आधार पर विस्तार किया जा सकता है, यथा me तथा myself का अन्तर, जहाँ पर कि बाद वाले रूप में कर्ता के साथ तादात्म्य है (I washed myself §12·8) अथवा स्कैण्डनेवी hans "उसका" और sin "उसका (अपना)"। ये अन्तर आबद्धरूपों में भी दिखाई पड़ते हैं, यथा अलगोन्की के अतिक्रमितरूप में (§12·8)। इसी प्रकार प्राचीन ग्रीक में साधारण आबद्धरूप कर्त्ता के अतिरिक्त, यथा ['elowse] "उसने धुला", में मध्य सघोष रूप मिलता है जहाँ कर्ता भी क्रिया [e'lowsato] "उसने स्वयं को धोया" (he washed himself) अथवा "उसने स्वयं के लिए धोया" (he washed for himself)। अन्य विशेषीकरण अपेक्षाकृत कम प्रचलित हैं। इस प्रकार क्री में कर्ता और लक्ष्य के साथ क्रिया के अतिरिक्त यथा [ninituma:w] "मैं उन्हें पूछता हूँ, उन्हें बुलाओ" तथा एक रूप जिसमें कर्त्ता और दो लक्ष्य हैं, [ninitute:n] "मैं इसी के लिए पूछता हू" और एक रूप, कर्त्ता और दो लक्ष्य हैं, [ninitamawa:w] 'मैंने उनसे इसके लिए पूछा' में भी एक रूप है जिसके साथ कर्त्ता, लक्ष्य तथा वहां रुचि रखनेवाले व्यक्ति [ninitutamwa:n] 'मैं उनके संदर्भ के साथ इसे पूछता हूँ" अर्थात् उनके प्रयोग के लिए अथवा उनके स्थान पर।

15.8 संकेतबोधक (Demonstrative) अथवा दिग्बोधक (Deictic) स्थानापन्न-प्रतिरूप वक्ता अथवा श्रोता से आपेक्षिक समीपता पर आधारित हैं। अंग्रेजी में हमें इस प्रकार के दो प्रतिरूप मिलते हैं एक अपेक्षाकृत अधिक निकट के लिए और दूसरा बहुत दूर के लिए। वे सीमाकारक विशेषण this और that के प्रतिमानों से मिलते हैं (§12.14)। संकेतबोधक स्थानापन्न आश्रित हो सकते हैं (अर्थात् अन्वादेशी रीति से वे एक पूर्ववर्ती भाषणरूप से संबद्ध हो सकते हैं जिससे जातियों का नामकरण होता है) अथवा अनाश्रित। फिर भी किसी भी दशा में वे एक वस्तुविशेष को (संज्ञित अथवा असंज्ञित) एक जाति के अन्तर्गत समीकृत करते हैं। संकेतबोधक सर्वनाम स्थानापन्न, अंग्रेजी में उन सर्वनामों this (these), that (those) से बनता है जो वर्ग-विभेद के द्वारा सीमाकारक विशेषणों से अथवा पदसंहितियों से जो इन सीमा-कारक विशेषणों तथा अन्वादेश one(§15.5) से मिलकर बने होते हैं, भिन्न होते हैं। साधारणतया इन रूपों का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के विस्थापन के

लिए नहीं होता है—This is my brother के सम्भावित प्रयोग में These are my brothers को व्यक्तिवाचक नहीं माना जा सकता। एकवचन में आश्रित स्थानापन्न this one, that one है और अनाश्रित है this, that। इस प्रकार of these books तथा I like this one better than that one में अन्तर है। किन्तु असंज्ञत वस्तुओं में I like this better than that। फिर भी बहुवचन में these तथा those किसी भी स्थिति की बिना अन्वादेश ones के प्रयुक्त होते हैं।

फ्रेंच में हम एक अधिक विषम व्यवस्था पाते हैं। वहाँ तीन प्रकार की संकेतबोधक सीमाएँ तथा स्थानापत्ति हैं। एक सामान्य प्रतिरूप जिससे दो विशेष प्रतिरूपों का क्रियाविशेषण ci[si] अधिक निकट स्थिति तथा là[la] दूरी के लिए जोड़कर भेद किया जाता है। सीमाकारक विशेषण के रूप, आश्रित सर्वनाम तथा अनाश्रित सर्वनाम भिन्न-भिन्न हैं।

	विशेषण	आश्रित सर्वनाम	अनाश्रित सर्वनाम
एकवचन			ce [sɔ]
पुं०	ce [sɔ]	celui [sɔlɥi]	
स्त्री०	cette [sɛt]	celle [sɛl]	
बहुवचन			
पुं०	ces [se]	ceux [sϕ]	
स्त्री०	ces]se]	celles [sɛl]	

इस प्रकार : cette plume-ci [sɛt plym si] 'यह कलम', de ces deux plumes, je prêfére celle-ci à celle-là [dɔ se dϕ plym, zɔ prefɛ:r sɛl si a sɛl la] 'दोनों कलमों में से मैं इस कलम को उसकी अपेक्षा अधिक पसन्द करता हूँ।' किन्तु असंज्ञित वस्तुओं में से je préfére ceci à cela [sɔ si a sɔ la] "मैं उसकी अपेक्षा इसे पसन्द करता हूँ।" कुछ ही संरचनाओं में ci और la के बिना सर्वनामों का प्रयोग होता है : de ces deux plumes, je préfére celle que vous avez [sɛl kɔ vuz ave] "इन दो कलमों में से जो आपके पास है मुझे अधिक पसन्द है", अनाश्रित : c'est assez [s ɛt ase] 'उतना पर्याप्त है'।

संकेतबोधक स्थानापन्न प्रतिरूप, निश्चयबोधक से सदा पूरी तरह भिन्न

नहीं है तथा उसी प्रकार संकेतबोधक सीमाकारक विस्तारक केवल निश्चयबोधक 'the' की तरह के लक्षकों में समाहित हो सकते हैं। जर्मन-भाषा में, एक बोली से अधिक बोली की एक ही रूपसारिणी है जिसके रूपों का प्रयोग पूर्वाश्रयी ढंग से निश्चयबोधक अव्यय (definite article) रूप में होता है, der Mann [der 'man] "आदमी" तथा सुर के साथ संकेतबोधक सीमाकारक विशेषण के रूप में der Mann ['de:r 'man] "वह आदमी" तथा सर्वनाम के रूप में 'der ['de:r] "वह एक" (that one)। जर्मन में यह अन्तिम प्रयोग, निश्चयबोधक सर्वनाम er [e:r] "वह" से कुछ ही अन्तर रखता है। यहाँ मुख्य अन्तर दो पूर्ण परासंयोगी वाक्यों के दूसरे वाले वाक्य में der (er नहीं) प्रयोग में है : es war einmal ein Mann, der hatte drei sōhne [es 'va:r ajn,ma:l ajn'man, de:r, ,hate ,draj 'zϕ:ne] "एक समय वहाँ एक आदमी था" शब्दशः "वह एक (that one) जिसके तीन लड़के थे।"

बहुत-सी भाषाओं में स्थानापत्ति के अनेक प्रतिरूपों में प्रभेद किया जाता है। इस प्रकार अंग्रेजी की कुछ बोलियों में दूर की वस्तुओं के लिए this और that में भेद दिखाने के लिए you जोड़ा जाता है। लैटिन में वक्ता के निकटवाली वस्तुओं के लिए hic का प्रयोग होता है, iste का प्रयोग श्रोता के निकटवाली वस्तुओं के लिए तथा ille बहुत दूर की वस्तुओं के लिए होता है। क्वाकीतल भाषा में भी इसी प्रकार का प्रभेद किया जाता है किन्तु "दृष्टि में" (in sight) तथा "दृष्टि से बाहर" (out of sight) से भेद किए जाने से संख्या दुगुनी हो जाती है। क्री में [awa] "यह", [ana] "वह", तथा [o:ja] "वह जो अभी हाल ही में उपस्थित था किन्तु अब दृष्टि से बाहर है।" एस्किमो में एक पूरी श्रेणी है : [manna] "यह एक" [anna] "वह जो उत्तर में है," [quanna] "वह जो दक्षिण में है", [panna] "वह जो पूर्व में है," [kanna] "वह जो नीचे है", [sanna] "वह जो समुद्र में है", [iŋŋa] "वह एक" इत्यादि।

सर्वनामों की सीमा से बाहर, हमें क्रियाविशेषणीय रूप मिलते हैं here : there, hither : thither, hence : thence, now: then; फिर भी th- रूप साधारण अन्वादेशी प्रयोग में अन्तर्युक्त हो जाते हैं, यथा Going to the Circus ? I'm going there too। इसी प्रकार so (प्राचीन रूप में thus भी) दोनों संकेतबोधक हैं तथा और भी अधिक प्रचलित

रूप में अन्वादेशी (I hope to do so) हैं। (do it) this way, this sort (of thing), this kind (of thing) की तरह के रूप साधारण भाषाई रूप तथा स्थानापन्नरूप की सीमारेख में आते हैं।

15.9 प्रश्नसूचक स्थानापन्न श्रोता को प्रेरित करते हैं कि वह जाति अथवा किसी व्यक्ति की पहचान प्रस्तुत करे। तदनुसार अंग्रेजी में प्रश्नसूचक स्थानापन्न केवल पूरक प्रश्नों के स्थान पर आते हैं। सर्वनामों में पुरुषसूचक के लिए हमें अनाश्रित who रूप (कर्मकारक में whom) तथा पुरुषनिरपेक्ष के लिए what रूप मिलता है। इनसे जाति तथा व्यक्ति दोनों के लिए प्रश्न सूचित होता है। केवल पुरुषनिरपेक्ष सूचकों के लिए अंग्रेजी में अनाश्रित which रूप भी है, जिससे एक सीमित क्षेत्र के एक वस्तुविशेष के पहचान के लिए तो प्रश्न बनता है किन्तु जातियों के लिए नहीं। आश्रित स्थानापन्न जिनसे एक सीमित क्षेत्र के भीतर से एक विशेष (individual) के लिए प्रश्न बनता है, हैं which one ? which ones ?

सर्वनामों में अलग, अंग्रेजी में प्रश्नसूचक स्थानापन्न where ? whither ? whence ? when ? how ? why ? हैं। प्रश्नसूचक क्रिया-स्थानापन्न कुछ भाषाओं में, यथा मिनोमनी में आते हैं [wɛ?se :kew¿] "वह किस प्रकार का है ?"

प्रश्नसूचक रूपों की सीमा कुछ विशेष वाक्यरचनात्मक स्थानों में अति-सामान्य है। द्वि-अंगी वाक्य-प्रतिरूप के विधेय के स्थान पर हम उन्हें बहुलता से सीमित पाते हैं। शब्दक्रम तथा बहुवचन क्रिया रूप who are they ? what are those things में इस प्रकार के लक्षण हैं। आजकल की फ्रेंच में पुरुष-निरपेक्षसूचक quoi ? [kwa¿] "क्या ?" का प्रयोग शायद ही कभी कर्ता अथवा लक्ष्य के रूप में होता है। परन्तु इसके स्थान पर विधेय पूरक जो संयोजक के स्थान पर आते हैं que [kə] यथा, qu'est-ce que c'est? [k ɛ s k ɔ s ɛ¿] वह क्या है, कि यह है ? "यह क्या है ?" तथा qu'est-ce qu'il a vu ? [k ɛ s k il a vy¿] "यह क्या है जिसे उसने देखा है?" "वह क्या देखता था ?" कुछ भाषाओं में प्रश्नसूचक स्थानापन्न समानुपाती वाक्यों के सदा विधेय होते हैं यथा तगलॉग में ['si:nu aŋ nagbi'gaj sa i'ju¿] "वह कौन है जिसने तुम्हें दिया" (who the one-who-gave to you who gave it to you?) "किसने तुम्हें दिया ?" अथवा मिनोमनी में [awɛ : ? pɛ : nuhnet ¿] "कौन साथ चल रहा है ?" "कौन वहाँ चल रहा है ?"

15.10 एक जाति से किसी वस्तुविशेष के चुनने की विभिन्न सम्भावनाएँ स्थानापन्न रूपों की सभी रीतियों, विशेषकर सर्वनामों से, द्योतित की जाती हैं। अंग्रेजी में इस प्रकार के लगभग सभी रूपों के अन्तर्गत अन्वादेशी one, ones (§15.5) के साथ सीमाकारक (limiting) विशेषण आते हैं अथवा वर्गविभेद से उसी शब्द के नामक प्रयोगोंवाले रूप आते हैं। बहुत-से प्रभेद हैं जो स्थायीरूप से अनाश्रित और आश्रित स्थानापत्ति के बीच तथा बाद वाले रूप में पुरुषवाचक और पुरुषनिरपेक्षवाचक के बीच सदा लागू नहीं होते। विभिन्न सीमाकारक विशेषणों का प्रतिपादन विभिन्न रूप से होता है। इन अन्तरों के आधार पर एक और प्रकार से वर्गीकरण होता है (§12.14)।

(1) कुछ सीमाकारक विशेषण साधारण विशेषण की तरह one ones के द्वारा अनुगमित होकर अन्वादेशी स्थानापन्न बनाते हैं। हमने देखा है कि यह स्थिति एकवचन this, that तथा कुछ विशेष स्थिति में which ? what ? के साथ है। यहाँ each, every, whatever, whichever के तथा पदसंहितीय संयोजनों many a, such a, what a के लिए भी सच है। इस प्रकार हम कहते हैं he was pleased with the children and gave each one a penny. एक अनाश्रित स्थानापत्ति के रूप में हम this, that, which, what, whichever, whatever का प्रयोग केवल अव्यक्तिबोधक रूप में ही करते हैं और every के सादृश्य पर व्यक्तिसूचक everybody, everyone तथा अव्यक्तिबोधक everything का; each के कोई अनाश्रित-रूप नहीं हैं।

(2) अंग्रेजी में साधारण सर्वनाम अथवा अन्वादेशी ones, one के साथ either, former, latter, last, neither, other, such तथा क्रमवाचक first, second आदि का प्रयोग होता है। वैकल्प मुख्य रूप से अभिधान की दृष्टि से भिन्न होते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी में Here are the books ; take either (one) का प्रयोग होता है। शब्द other के द्वारा एक विशिष्ट उपवर्ग बनता है, इस दृष्टि से कि इसका बहुवचन रूप others बनता है। you keep this book and I'll take the others (the other ones). अनाश्रित प्रयोग में ये शब्द मुख्य रूप से पुरुष-निरपेक्षता का कार्य करते हैं।

(3) अवशिष्ट सीमाकारक विशेषणों की विचित्रता यह है कि उनके साथ अन्वादेशी one, ones नहीं आते। इस प्रकार अंग्रेजी में Here are

the books ; take one (two, three, any, both all, a few, some इत्यादि) । अनाश्रित स्थानापन्नों में बहुत विभिन्नता दिखाई पड़ती है । इस प्रकार all का प्रयोग अव्यवित के लिए होता है : All is not lost ; That's all । दूसरी ओर बलाघातहीन रूप में one पुरुषसूचक है : One hardly knows what to say । बहुत से अनाश्रित प्रयोग के लिए मिश्रित रूप बनाते हैं, यथा पुरुषवाचक somebody, someone, anybody, anyone तथा पुरुषनिरपेक्षतासूचक something, anything ।

(4) बहुत-से सीमाकारक विशेषणों का प्रतिपादन विचित्र दिखाई पड़ता है । आर्टिकल (article) the अन्वादेशी one, ones के साथ आश्रित स्थानापन्न की रचना करता है । यदि कुछ अन्य विशेषक अनुगमन करें : the one (s) on the table ; अन्यथा यह सार्वनामिक प्रयोग में नहीं दिखाई पड़ता, उसके स्थान पर निश्चयबोधक सर्वनाम आता है । आर्टिकल (article) a किसी अन्य विशेषणों से संयोजित होकर, बाद वाले one को प्रभावित नहीं करता : many a one ; another (one) । अन्यथा आर्टिकल (article) a केवल अन्वादेशी one का बलसूचक रूप not a, one में सहवर्ती होता है । अन्य सभी सार्वनामिक प्रयोगों में a, one से विस्थापित होता है : 'to take an apple', take one सर्वनामिक के समानुकूल है । निर्धारक no आश्रित स्थानापन्न none से समानान्तरित होता है, किन्तु साधारणतया हम उनके स्थान पर any के साथ not के संयोजन का प्रयोग करते हैं (I didn't see any) । अनाश्रित स्थानापन्न हैं समास nobody, none, nothing (पुराना रूप naught) ।

वास्तव में इन स्थानापन्न प्रतिरूपों में से नकारात्मक रूप सभी भाषाओं में मिलता है तथा इसकी अधिकतर विशिष्ट विचित्रता प्रकट होती है । इसी के अन्तर्गत असर्वनामिक nowhere, never तथा उपमानक nowhow भी आते हैं । बहुत-सी भाषाओं में, यथा उपमानक अंग्रेजी के बहुत से रूपों में, ये स्थानापन्न सामान्य नकारात्मक क्रियाविशेषण के सहवर्ती होते हैं : I can't see nothing । गणनाबोधक प्रतिरूप (all, one, two, three इत्यादि) भी सर्वदेशीय लगते हैं । जहाँ तक चयन प्रतिरूपों का प्रश्न है, वैभिन्य का पर्याप्त अवसर है । अन्य भाषाओं में प्राप्त स्थानापन्न रूप बिल्कुल वही नहीं है जो अंग्रेजी में । इस प्रकार रूसी ['ne-xto] "कोई एक" से प्रकट होता है कि वक्ता, व्यक्तिविशेष को (कुछ आदमियों ने

मुझ से दूसरे दिन कहा कि—) पहचान सकता है (लेकिन पहचानता नहीं है), जबकि [xto-ni-'but] में यह क्षमता नहीं (कोई दरवाजे पर है) । फिर भी एक अन्य प्रतिरूप ['koj-xto] से बोध होता है कि भिन्न अवसर पर भिन्न व्यक्ति का चयन हुआ है (कभी-कभी कोई प्रयत्न करता है)।

15.11 अधिकतर स्थानापन्न विशेष वाक्य रचनात्मक कार्यकारिता से सम्बद्ध होते हैं । इस प्रकार हमने देखा है कि अंग्रेजी में तथा बहुत-सी अन्य भाषाओं में प्रश्नसूचक स्थानापन्न वाक्य में किसी स्थान विशेष में ही आ सकते हैं । कुछ भाषाओं में विधेयात्मक प्रयोग के लिए कुछ विशेष सर्वनाम हैं । इस प्रकार मिनोमिनी में इन रूपों के अतिरिक्त यथा [nenah] "मैं", [enuh] "वह एक", जीवधारी, [eneh] वह (निर्जीव) । इसके समानान्तर रूप हैं जो केवल विधेय रूप में ही आते हैं । सामान्य स्थानापन्न [kɛhke:nam eneh] 'he-knows-it that (thing) ; "वह उसे जानता है ।" किन्तु विधेयात्मक रूप [ene? kɛ:hkenah] "वह (वस्तु) वह–जिसे–वह जानता है", अर्थात् "वह जिसे जानता है" अथवा [enu ? kɛ:hkenah] "वह (व्यक्ति) कोई–जो–यह जानता है ।" "एक वह आदमी जो इसे जानता है ।" ये विधेयात्मक रूप रूपसिद्धि की दृष्टि से उन्ही कोटियों के लिए यथा एक क्रिया के लिए भिन्न-भिन्न हैं, यथा [enet kɛ:hkenah ?] "क्या वह वही है जिसे वह जानता है ?" "क्या वह वस्तु है जिसे वह जानता है ?" अथवा आश्चर्यबोधक वर्तमान [enesa? kɛ:hkenah] और "इसलिए यह वही है जो वह जानता है ।" इत्यादि ।

अंग्रेजी के सम्बन्ध-सूचक स्थानापन्नों का क्षेत्र विस्तृत है किन्तु सर्वदेशीय प्रतिरूप नहीं है । इन स्थानापन्नों से प्रकट होता है कि वह पदसंहित, जिसमें यह रूप आता है, सम्मिलित (अथवा पूरक) रूप है । अंग्रेजी में पदसंहिति की बहु-प्रचलित पूर्णवाक्य के समान संरचना होती है (कर्ता-क्रिया संरचना) तथा सम्बन्धित स्थानापन्नों से लक्षित होता है कि ये पूर्णवाक्य नहीं बना सकते । अंग्रेजी के सम्बन्धसूचक who (whom), which, where, when, that वर्ग-विभेद द्वारा अन्य स्थानापन्नों से भिन्न होते हैं। वे अथवा उनके समीपी पदसंहिति उपवाक्य में प्रथम आते हैं । प्रथमतः अंग्रेजी में अन्वादेशी प्रतिरूप that तथा पुरुषवाचक who तथा पुरुष निरपेक्षतावाचक which है : the boy who (that) ran away, the

book which (that) he read ; the house in which we lived । यदि संबंधसूचक स्थानापन्न उपवाक्य में क्रियात्मक लक्ष्य संबंधवाचक अव्ययवाले अक्ष अथवा विधेयपूरक के स्थान पर आएँ तो हमें अंग्रेजी में शून्यस्थानापन्न दिखाई पड़ता है : the man I saw, the house we lived in, the hero he was । साधारण बोलचाल में, अंग्रेजी के सम्बंधसूचक उपवाक्य विशेष पूर्वावृत का अभिज्ञान करते हैं । और भी अधिक औपचारिक रीति से, अंग्रेजी में अतिविन्यासिम वाक्य-मूर्छन के साथ अनभिज्ञापन सम्बंधसूचक भी मिलते हैं : the man, who was carrying a big bag, came up to the gate. ।

उन भाषाओं में जिनमें कारक-रूप मिलते हैं, सम्बंधसूचक सवनाम की रूप-सिद्धि सामान्यतः उसके उपवाक्य के रूपों से निर्धारित होती है : I saw the boy who ran away ; the boy whom I saw ran away । लैटिन में एक सामान्य रूप in hāc vītā quam nunc ego dēgō "इस जिन्दगी में जो मैं इस समय जी रहा हूँ" होगा, जहाँ पूर्ववर्ती vītā अपादानकारक में है (संबंधबोधक अव्यय in के अक्षरूप में) तथा संबंधसूचक सर्वनाम quam 'जो' (which) क्रिया dēgō के लक्ष्य रूप में कर्मकारक में है । फिर भी वे भाषाएँ जिनकी रूप-सिद्धि उलझी है कभी-कभी उस रूप की सिद्धि में जो पूर्ववर्ती क्षेत्र के अन्तर्गत आता है सम्बंधसूचक सर्वनाम का आकर्षण व्यंजित करती हैं । लैटिन रूप vīta in hāc quā nunc ego dēgō उसी अभिधान के साथ, यथा उपरोक्त सामान्य रूप का अपादान कारक में सम्बंधसूचक सर्वनाम quā, उपवाक्य में इसके कर्मकारक स्थिति के स्थान पर पूर्ववर्ती के अनुकूल होता है ।

अनाश्रित सम्बंधसूचक स्थानापन्न जिनका कोई पूर्ववर्ती नहीं होता है जाति के निर्देश को विस्थापित करते हैं । take what (ever) you want ; ask whom (ever) you like; whoever says so is mistaken. अंग्रेजी में इस प्रकार के उपवाक्यों का प्रयोग अतिविन्यासिम विशेषक रूप में भी होता है : whatever he says, I don't believe him । आश्रित और अनाश्रित प्रयोग के बीच का वही अन्तर क्रियाविशेषण स्थानापन्नों में भी दिखाई पड़ता है । आश्रित--the time (when) he did it ; the house where we lived ; अनाश्रित--we'll see him when he gets here ; we visit them whenever we can ; we take them where (ever) we find them.

अध्याय 16

रूपवर्ग और शब्दसमूह

16.1 भाषाई संकेतन के अर्थवान् अभिलक्षण दो प्रकार के हैं : शब्दीय रूप (lexical form) जोकि स्वनिमों से बने हैं, और व्याकरणिक रूप (grammatical form) जो कि विन्यासिमों (taxemes) (विन्यास के अभिलक्षण § 10.5) से। यदि हम 'शब्दीय' शब्द के प्रयोग के अन्तर्गत उन सब रूपों को लाना चाहते हैं जो कि स्वनिमों द्वारा कथित हैं, यहाँ तक कि उन रूपों को भी जिनमें पहले से ही कुछ व्याकरणिक अभिलक्षण विद्यमान हैं (जैसे, poor John अथवा duchess अथवा ran), तो शब्दीय और व्याकरणिक अभिलक्षणों की समानान्तरता को निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के समुच्चय द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है :

(1) भाषिक संकेतन की लघुतम और अर्थहीन इकाई : फीमीम,

(क) शब्दीय : स्वनिम (फोनीम) (phoneme)

(ख) व्याकरणिक : विन्यासिम (टैक्सीम taxeme)

(2) भाषिक संकेतन की लघुतम अर्थवान् इकाई : ग्लासीम glosseme, ग्लासीम का अर्थ नोईम (noeme) कहलाता है,

(क) शब्दीय : रूपिम (morpheme), रूपिम का अर्थ अर्थिम (sememe) कहलाता है।

(ख) व्याकरणिक : व्याकरणिम (tagmeme), व्याकरणिम का अर्थ व्याकरणिमार्थ (episememe) कहलाता है।

(3) भाषिक संकेतन की अर्थवान् इकाई—सरलतम रूप में अथवा मिश्रित रूप में : भाषिक-रूप (linguistic form); भाषिक-रूप का अर्थ भाषिक-अर्थ कहलाता है,

(क) शब्दीय : शब्दीय रूप (lexical form), शब्दीयरूप का अर्थ शब्दीय-अर्थ कहलाता है।

(ख) व्याकरणिक : व्याकरणिक रूप, व्याकरणिक रूप का अर्थ व्याकरणिकार्थ कहलाता है।

प्रत्येक शब्दीय रूप व्याकरणिक रूपों द्वारा दो ओर से सम्बद्ध होता है। एक ओर शब्दीय रूप, यहाँ तक कि जब उसे अकेले ही लिया जाए, एक अर्थवान् व्याकरणिक संघटना को प्रदर्शित करता है। यदि वह मिश्र (complex) रूप है तो वह कुछ रूपीय अथवा वाक्यीय संरचना (duchess, poor John) को प्रदर्शित करता है, यदि वह रूपीय है तो भी कुछ रूपीय अभिलक्षण (अपरिवर्तित रूपीय, जैसे, men अथवा ran §13.7) प्रदर्शित करता है. यदि वह आपरिवर्तनहीन रूपीय (man, run) है तो भी हम व्याकरणिक संरचना के अभाव को एक सकारात्मक अभिलक्षण (man एकवचन, run विध्यर्थ) मान सकते हैं। दूसरी ओर शब्दीय रूप वास्तविक उच्चार में, मूर्त भाषिकरूप की दृष्टि से, सदैव किन्हीं न किन्हीं व्याकरणिक अभिलक्षणों के साथ आता है, वह किसी कार्यकारिता में आता है और ये प्रयोगसीमाएं सामूहिकरूप से उस शब्दीयरूप की व्याकरणिक कार्यवादिता को निर्धारित कर देती हैं। शब्दीय रूप विशिष्ट वाक्य प्रतिरूपों में मिलता है, अथवा, यदि वह आबद्धरूप है तो किसी भी वाक्य-प्रतिरूप में नहीं मिलता है। वह किन्हीं संरचनाओं की किन्हीं स्थितियों में मिलता है, अथवा यदि वह विस्मयादिबोधक हुआ तो बहुत थोड़ी संरचनाओं में, या किसी में भी नहीं मिलता है। वह कुछ स्थानापत्तियों में प्रतिस्थापित रूप में मिलता है, अथवा, यदि वह कोई स्थानापन्न हुआ तो किन्हीं स्थानापत्तियों में स्थानापन्न के रूप में मिलता है। शब्दीय रूप की कार्यकारिता चयन के विन्यासिमों द्वारा उत्पन्न होती है जोकि व्याकरणिक रूपों को बनाने में भी सहायता देते हैं। शब्दीय रूप जिनकी सामान्य कार्यकारिता है एक ही रूपवर्ग के अन्तर्गत माने जाते हैं।

शब्दीयरूपों की कार्यकारिताओं की व्यवस्था बहुत ही जटिल होती है। कुछ कार्यकारिताएं बहुत अधिक रूपों में सर्वनिष्ठ होती हैं और एक विशाल रूपवर्ग को परिभाषित करती हैं। उदाहरण के लिए वे कार्यकारिताएं, जो अंग्रेजी में नामिक व्यंजकों के रूपवर्ग को परिभाषित करती हैं, (जैसे आह्वान के वाक्य प्रतिरूप में आनेवाली क्रिया के साथ कर्ता की स्थिति को भरनेवाली, क्रिया के साथ लक्ष्य की स्थिति को भरनेवाली, पूर्वसर्गों के साथ अक्ष की स्थिति में आनेवाली, स्वामित्वसूचक विशेषणों के आधार में आनेवाली, आदि), व्यवहारतः असीमित संख्या में शब्दों और पदसंहितियों में सर्वनिष्ठ हैं। विभिन्नकार्यकारिताएं अतिव्यापी रूपवर्गों को भी बना देती हैं, इस प्रकार, क्रिया के कर्ता की स्थिति में आने की कार्यकारिता नामिक-व्यंजनों में भी है और चिन्हित तुमुन्नर्थक पदसंहितियों में भी (to scold the boys

would be foolish)। कुछ कार्यकारिताएं केवल बहुत थोड़े रूपों में, यहाँ तक कि एक रूप में, सीमित होती हैं। इस प्रकार, नामिक-व्यंजनों में केवल संज्ञा way को केन्द्र मानकर बनी पदसंहितियाँ रीतिवाचक क्रियाविशेषण की, प्रश्नार्थक स्थानापन्न how ? के साथ, कार्यकारिता करती हैं (this way, the way I do) आदि।

विशिष्ट शब्दीयरूप वर्गविभेद (class-cleavage § 12.14) के द्वारा कार्यकारिता के अपसामान्य संयोजनों में मिलते हैं। इस प्रकार, अंग्रेजी में एक आबद्ध संज्ञा (the egg, an egg) है किन्तु यह समूह-संज्ञा के समान भी आता है, (जैसे he spilled egg on his necktie)। Salt एक समूह-संज्ञा है और तदनुसार विशिष्टीकृत अर्थ ("इतने प्रकार का") में ही बहुवचन में आ सकता है, किन्तु वर्गविभेद से बहुवचन salts, (जैसे, epsom salts) का प्रयोग मिलता है जहाँ बहुवचन का अर्थ है "salt के कणों से युक्त", और वह oats, grits आदि के रूप वर्ग में आ जाता है। man एक आबद्ध व्यक्तिवाचक पुंलिंग संज्ञा (a man, the man,.... he) है, किन्तु वर्गविभेद से व्यक्तिवाचक संज्ञा के समान इसका प्रयोग God के समानान्तर हो जाता है, जैसे man wants but little, man is a mammal. शब्द one जटिल वर्गविभेद के कारण पाँच रूपवर्गों में आता है—निर्धारक (§12.14) के रूप में यह इस नियम का पालन करता है कि आबद्ध एकवचन संज्ञाएं इस वर्ग के आपरिवर्तक के पश्चात् आएँ (one house, one mile); एक सामान्य संख्यावाचक के रूप में यह निश्चयवाचक निर्धारकों के साथ आता है (the one man, this one book, my one friend), यह a को संज्ञा के अन्वादेशन के द्वारा विस्थापित करता है यदि और कोई विशेषक उपस्थित नहीं है (Here are some apples; take one); यह स्वतन्त्र सर्वनाम के रूप में 'कोई भी सामान्य व्यक्ति' के लिए प्रयुक्त होता है और इस प्रयोग में सदैव बलाघातहीन होता है और one's और oneself (one can't help oneself) और अन्त में, विशेषण के बाद संज्ञा के लिए अन्वादेशक स्थानापन्न है, और इस प्रयोग में बहुवचन में मिलता है, ones (the big box and the small one, these boxes and the ones in the kitchen, § 15.5)।

16.2 इस प्रकार भाषा के व्याकरण के अन्तर्गत अति जटिल आदतों (चयन के विन्यासिमों) का समुच्चय है जिसके द्वारा प्रत्येक शब्दीय रूप विशिष्ट परम्परागत कार्यकारिताओं में ही प्रयुक्त होता है, और प्रत्येक शब्दीय

रूप सदैव एक परम्परागत रूपवर्ग में रखा जाता है। भाषा के व्याकरण वर्णित करने में हमें प्रत्येक शब्दीय रूप का रूपवर्ग निर्दिष्ट करना चाहिए और उन लक्षणों को निर्धारित करना चाहिए जिनके द्वारा वक्ता उन्हें इन रूपवर्गों में रखता है।

इस प्रश्न का परम्परागत उत्तर स्कूली व्याकरणों में सिखाया जाता है जहां रूपवर्गों के वर्ग-अर्थों द्वारा परिभाषित करने का प्रयत्न किया जाता है—अर्थात् उन अर्थों द्वारा जो उस रूपवर्ग के सभी शब्दीयरूपों में सर्वनिष्ठ हैं। स्कूली व्याकरण हमें बताते हैं कि संज्ञा 'व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का नाम" है। यह परिभाषा जितना कि मानव जाति को ज्ञान है उससे अधिक दार्शनिक और वैज्ञानिक ज्ञान की अपेक्षा करती है और यह भी मानकर चलती है कि भाषा के रूपवर्ग उन वर्गीकरण से मिलते हैं जोकि दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक बनाते हैं। उदाहरणार्थ, क्या "अग्नि" वस्तु है? सैकड़ों वर्षों से भौतिक-शास्त्री इसे क्रिया अथवा प्रक्रिया मानते थे, न कि वस्तु, और इस दृष्टि से क्रिया burn संज्ञा fire की अपेक्षा अधिक उपयुक्त है। अंग्रेजी में विशेषण hot, संज्ञा heat और क्रिया to heat है जबकि भौतिकशास्त्री इन सबको एक शरीर में अणुओं का संचलन मानते हैं। इसी प्रकार स्कूली व्याकरण में बहुवचन संज्ञा को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है कि अर्थ की दृष्टि से वहां "एक से अधिक" (व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु) हैं किन्तु oats बहुवचन क्यों है और wheat एकवचन क्यों है? अन्य अर्थों के समान, वर्ग-अर्थ भी, भाषातत्वज्ञ की परिभाषा करने की शक्ति के परे है और सामान्यतया सूक्ष्मतः परिभाषित परिभाषिक शब्दावली के अर्थों से भिन्न होता है। इस प्रकार अर्थों की परिभाषाओं को, जो स्वयं कामचलाऊ हैं, स्वीकार करना और उनके स्थान पर रूपीय शब्दावली में अभिज्ञानों को छोड़ देना, वास्तव में वैज्ञानिक पद्धति को छोड़ना होगा।

वर्ग-अर्थ रूपों के साथ-साथ आने वाले व्याकरणिक अर्थों के (अंकगणित के महत्तम समापवर्त के समान) महत्तम सर्वनिष्ठ घटक हैं। वर्ग-अर्थ इस प्रकार एक यौगिक वस्तु है। अतएव वर्ग-अर्थ बताने में कोई ऐसा सूत्र ढूंढना होता है जिसके अन्तर्गत वे व्याकरणिक अर्थ आ जाएं जिनमें ये रूप मिलते हैं। अंग्रेजी का समापिका क्रिया-व्यंजक runs, ran away, is very kind, scolded the boys आदि एक ही संरचना की केवल एक ही स्थिति में आते हैं और वह है कर्तृ क्रिया संरचना (John ran away)। यहाँ तक कि

जब यह व्यंजक अकेले आता है तब भी यह पूर्तियोग्य वाक्य लगता है और तदनुसार एक कर्ता की पूर्वधारणा करता है। अब हम कर्तृ-क्रिया संरचना का अर्थ अत्यन्त स्थूलरूप से इस प्रकार कह सकते हैं कि "क, ख करता है") जहाँ क(John) कर्तृ व्यंजक है और ख समापिका क्रिया व्यंजक(ran away) है इस कथन से दो स्थितियों के अर्थ परिभाषित होते हैं, कर्तृ-स्थिति का अर्थ है "ख का करने वाला (कर्ता)" और क्रिया स्थिति का अर्थ है "क द्वारा की गई क्रिया"। चूँकि अंग्रेजी समापिका क्रिया व्यंजक सदैव और केवल क्रिया-स्थिति में ही आते हैं अतएव उनका वर्ग-अर्थ उनकी उस अकेली स्थिति का अर्थ है, अर्थात्, "किसी वस्तु द्वारा की गई क्रिया" है। यदि हम वृहत्तर क्रिया रूपवर्ग का वर्ग-अर्थ "क्रिया, किसी कार्य का होना" रखें तो अंग्रेजी समापिका-क्रिया व्यंजकों का वर्ग-अर्थ होगा "एक कर्ता द्वारा की गई क्रिया"।

जब एक रूपवर्ग की एक से अधिक कार्यकारिता होती है तो उसके वर्ग-अर्थ को वर्णित करना कठिन हो जाता है। किन्तु तब भी वह उन व्याकरणिक रूपों का उत्पाद्यमात्र होगा, जिनमें वे रूप आते हैं। उदाहरण के लिए नामिक-व्यंजक कर्ता-क्रिया संरचना (John ran) में कर्तास्थिति में आता है और स्थिति-अर्थ है "क्रिया का कर्ता"। वे क्रिया-लक्ष्य संरचना (hit John) में लक्ष्य की स्थिति में आते हैं और तब स्थिति-अर्थ कुछ इस प्रकार होता है कि "क्रिया जिस पर की गई है"। वे सम्बन्ध-अक्ष संरचना (beside John) में अक्ष-स्थिति में आते हैं और तब स्थिति-अर्थ होता है "केन्द्र जिससे सम्बन्ध सम्बद्ध है"। वे रूपीय संरचना में स्वामित्वसूचक पर-प्रत्यय के साथ (John's) आते हैं और स्थिति-अर्थ है 'स्वामित्व'। अंग्रेजी नामिक व्यंजकों के अन्य सभी कार्यकारिताओं को बिना सूचीबद्ध किये, हम कह सकते हैं कि इस रूपवर्ग के अन्तर्गत आनेवाले सभी शब्दीय रूपों में सर्वनिष्ठ वर्ग-अर्थ है जो क्रिया का कर्ता हो, जो क्रिया का कर्म हो, वह केन्द्र जिससे सम्बन्ध सम्बद्ध है, वस्तुओं का स्वामी आदि। हम इन सब को एक संक्षिप्त सूत्र में व्यक्त कर सकते हैं किन्तु यह परिभाषिक पदावली की उपलब्धि पर निर्भर है। अंग्रेजी में, उदाहरण के लिए, उपरिलिखित वर्ग-अर्थ को 'object' पद से द्योतित कर सकते हैं।

उपरिलिखित उदाहरण यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि वर्ग-अर्थ ऐसी स्पष्ट परिभाषित इकाइयाँ नहीं होते हैं जिनको हम अपने अध्ययन में आधार बना सकें, बल्कि ये अस्पष्ट परिस्थिति-जन्य अभिलक्षण होते हैं और इस शास्त्र

की पदावली द्वारा परिभाषासाध्य नहीं है। जो लोग अंग्रेजी बोलते हैं और अपने नामिक-व्यंजकों को स्वीकृत कार्यकारिताओं के अन्तर्गत रखते हैं, वे ऐसा प्रयोग कोई यह निश्चित करके नहीं करते हैं कि प्रयुक्त प्रत्येक शब्दावली रूप 'Object' है या नहीं। अन्य भाषिक-व्यापारों के समान रूपवर्गों की भी परिभाषा अर्थ के द्वारा न दी जाकर, केवल भाषिक (अर्थात् शब्दीय अथवा व्याकरणिक) अभिलक्षणों द्वारा दी जाती है।

16.3 एक शब्दीय रूप का रूपवर्ग वक्ताओं के लिए (और फलस्वरूप भाषा के आवश्यक वर्णन के लिए) रूप की संघटना और संघटकों द्वारा, विशिष्ट संघटक (चिन्हक) के प्रयोग द्वारा, अथवा रूप के स्वयं अभिज्ञान द्वारा निर्धारित होता है।

(1) एक मिश्ररूप सामान्यतया अपनी संरचना और संरचकों द्वारा निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए अन्तःकेन्द्रिक पदसंहिति जैसे fresh milk का वही रूपवर्ग है जो उसके प्रधान अथवा केन्द्र (§ 12.10) का रूपवर्ग है। एक बहिःकेन्द्रिक पदसंहिति में, जैसे, in the house में, कुछ अभिविशिष्ट संरचक (इस उदाहरण में पूर्वसर्ग in) होता है जो रूपवर्ग का निर्धारण करता है। इस प्रकार, सामान्यतया पदसंहिति का रूपवर्ग अन्ततोगत्वा उसके संरचक एक या अधिक शब्दों के रूपवर्गों द्वारा होता है। इसी कारण वक्ता (और वैयाकरण) प्रत्येक पदसंहिति का पृथक्-पृथक् विवेचन नहीं करते हैं; प्रायः प्रत्येक पदसंहिति का रूपवर्ग विदित हो जाता है यदि हमें वाक्यीय संरचनाओं और शब्दों के रूपवर्ग विदित हैं। अतएव वाक्यप्रक्रिया के विवेचन में शब्दों का रूपवर्ग आधारभूत तथ्य है। हम लोगों की स्कूली-व्याकरणों में इस तथ्य को स्वीकृत किया गया है। हां, उन्होंने एक ग़लत पद्धति से शब्दों के रूपवर्ग निर्धारित करने के प्रयास किए हैं, विशेषतः अधिक व्यापक रूपवर्गों (भाषण-विभेद parts of Speech) के सम्बन्ध में और फिर किस प्रकार पदसंहितियां बनती हैं, इस पर विचार किया जाता है।

(2) कभी-कभी पदसंहिति की कार्यकारिता किसी विशिष्ट संरचक चिन्हक (marker) द्वारा निर्धारित होती है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में पूर्वसर्ग to और सामान्यक्रिया व्यंजक से बनी पदसंहिति चिन्हित सामान्यक्रिया पदसंहिति के विशिष्ट रूप-वर्ग के अन्तर्गत है जिसकी कार्यकारिता अचिन्हित सामान्यक्रिया व्यंजकों से भिन्न है चूंकि वे कर्ता (to scold the boys was foolish), और संज्ञा, क्रिया और विशेषणों के गुण के रूप में a chance to go, he hopes to go, glad to go) आते हैं। निर्धारक विशेषणों से संज्ञा

पद-संहितियां बनती हैं जोकि आगे रचना में न आने के कारण प्रभिन्न हैं, this fresh milk के पूर्व विशेषण-विशेषक नहीं आता है, किन्तु this fresh milk विशेषण-विशेषक नहीं ले सकता है, जैसे कि fresh milk अथवा milk (§ 12.10) लेता। जब कभी अल्प सीमा रखनेवाला रूपवर्ग पदसंहितियों में एक विचित्र कार्यकारिता निर्धारित करता है तो उन रूपों को हम चिन्हक मान सकते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी के निर्धारक विशेषण, पूर्वसर्ग, सहपदी संयोजक, अनुपदी संयोजक चिन्हक माने जा सकते हैं। ये छोटे रूपवर्ग हैं और इनके रूपों की पदसंहिति में उपस्थिति पदसंहिति के रूपवर्ग के सम्बन्ध में कुछ निर्धारित करती है। चिन्हकों के उदाहरण चीनी अथवा तगलाग (§ 12.13) के निपात (पार्टिकल) हैं।

(3) अन्त में, शब्दीय रूप यदृच्छा के कारण अथवा अनियम से एक रूपवर्ग के सदस्य हो सकते हैं जोकि न तो उन रूपों की संघटना से और न चिन्हक से द्योतित होता है। उदाहरण के लिए पदसंहिति in case की संघटना पूर्वसर्ग नामिक है तथापि वह अनुपदी संयोजक का कार्य करती है। In case he is n't there, don't wait for him। पदसंहितियों this way, that way, other way, the same way में नामिक संघटना है। किन्तु ये विशिष्ट उपवर्ग (रीति) के क्रिया-विशेषकों के समान प्रयुक्त होती हैं जिसका स्थानापन्न प्रश्नवाचक how ? है। इसी प्रकार, कुछ अंग्रेजी संज्ञारूप अथवा संज्ञापद-संहितियां when ? वर्ग में, अकेले अथवा पदसंहितियों में, क्रिया-विशेषकों के समान आते हैं : Sunday, last winter, tomorrow morning. अंग्रेजी शब्दों के रूपवर्ग अधिकतर यादृच्छिक हैं : शब्दों से कुछ भी पता नहीं लगता है कि man, boy, lad, son, father पुंल्लिंग संज्ञाएं हैं, कि run, bother क्रिया हैं, कि sad, red, green विशेषण हैं, आदि। निस्सन्देह, विशेषतया प्रत्येक रूपिम का रूपवर्ग यादृच्छिक रूप से निर्धारित होता है, भाषा के पूर्ण वर्णन में उस प्रत्येक रूप की सूची होती है जिसकी कार्यकारिता संघटना अथवा चिन्हक से निर्धारित नहीं होती है। इसके अन्तर्गत शब्दसमूह अथवा रूपिमों की सूची आती है जो प्रत्येक रूपिम के रूपवर्ग को द्योतित करती है और उन मिश्ररूपों की सूचियाँ भी आती हैं जिनकी कार्यकारिता अनियमित है।

16.4 रूपवर्ग एक दूसरे से बिल्कुल पृथक्-पृथक् नहीं हैं किन्तु एक दूसरे को काटते हैं और अतिव्यापि करते हैं और एक के अन्तर्गत दूसरा आता है। इस प्रकार अंग्रेजी में कर्तृ-व्यंजक (जोकि कर्ता का कार्य करता

है) के अन्तर्गत नामिक और चिन्हित सामान्यक्रिया-रूप (to scold the boys would be foolish) आते हैं। इसके विपरीत, नामिकों में कुछ सर्वनाम रूप भी हैं जो अतिविभेदीकरण (over-differentiation) के कारण कर्ता में नहीं आते हैं : me, us, him, her, them, whom। नामिकों का एक वर्ग, जीरेन्ड (gerund) (scolding), सामान्य क्रियारूपों और अन्य क्रियारूपों के साथ एक ऐसे रूपवर्ग में विशेषकों के कुछ प्रतिरूपों में, जैसे लक्ष्य में (scolding the boys), प्रधान (head) के रूप में आता है। इस कारण से अंग्रेजी जैसी भाषा में भाषणविभेद पूर्णसन्तोष के साथ स्थापित नहीं किया जा सकता है और भाषणविभेदों की हमारी सूची इस पर निर्भर रहती है कि रूपों की किस कार्यकारिता को हम सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

फिर भी ऊपर वर्णित बड़े रूपवर्ग में और foot, goose, tooth, ox (जिसके अनियमित बहुवचन रूप हैं) जैसे छोटे रूपवर्गों में अन्तर प्रायः माना जाता है। बड़े रूपवर्ग जोकि पूरे शब्दसमूह को पूर्णतया खण्डों में बांटते हैं या कुछ महत्त्वपूर्ण रूप-वर्गों को प्रायः उसी आकार के रूपवर्ग में बांटते हैं, कोटियां (categories) कहलाते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी भाषणविभेद (नामिक, क्रिया, विशेषण आदि) अंग्रेजी की कोटियां हैं। एकवचन और बहुवचन नामिकों के रूपवर्ग ऐसे ही हैं क्योंकि ये दो रूपवर्ग प्रायः बराबर आकार के हैं और नामिकों के रूपवर्ग को पूर्णतया खण्डों में बाटते हैं। सामान्यतया, रूपसिद्धि पद प्रत्येक रूपावली में समानान्तर आते हैं और कोटियों को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, क्रिया-रूपावली के विभिन्न रूप समापिका क्रियाओं के समन्वितिवाले रूपों के साथ (am, is, are अथवा was, were) वृत्तियाँ हैं और साथ ही साथ इनको काटती हुई समापिका क्रियाओं की काल और वृत्तियों (he is: he was: he were) की कोटियाँ हैं।

सभी कोटियां रूपसिद्ध्यर्थ नहीं हैं। अंग्रेजी में सर्वनाम he अथवा she का चयन संज्ञा को दो कोटियों में, स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में, बाँट देता है, यद्यपि कोई रूपसिद्ध अथवा नियमित शब्दसिद्धि के नियमों द्वारा इसका भेद प्रकट नहीं होता है, केवल इक्के-दुक्के चिन्हक (count ; countess, Paul: Pauline, Albert: Alberta) अथवा पूर्णतया अनियमित शब्दसिद्धि (duck: drake, goose: gander) अथवा समास (he-goat, billy-goat, bull-buffalo) अथवा सम्पूरण (son: daughter, ram: ewe) अथवा वर्गविभेद

मात्र (a teacher....he, a teacher.... she, francis : Frances) इसका भेद प्रकट करते हैं ।

इसके अतिरिक्त कुछ कोटियाँ वाक्यप्रक्रियात्मक हैं और रूपसिद्धि में न आकर पदसंहितियों में आती हैं। इन कोटियों में अंग्रेजी के अनिश्चित और निश्चित नामिक (a book : the book) अथवा, क्रियाओं में पक्ष (wrote : was writing) पूर्णतावाचक (wrote : had written), अथवा वाच्य (wrote : was written) आते हैं ।

भाषा की कोटियाँ, विशेषत: वे जो रूपप्रक्रिया को (book : books he : she) प्रभावित करती हैं, इतनी व्यापक हैं कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपनी भाषा पर थोड़ा-सा भी ध्यान देता है उन्हें ढूंढ निकालेगा । साधारण दशा में यह व्यक्ति केवल अपनी भाषा या कदाचित् अपनी भाषा से मिलती-जुलती कई अन्य भाषाएं जानने के कारण ऐसा मानने लगता है कि ये कोटियां सार्वभौम हैं अर्थात् सभी भाषाओं में प्राप्य हैं अथवा "मानवीय चिन्तन" हैं अथवा विश्व में अवश्य उपलब्ध हैं। इसी कारण बहुत काफी विचार जो 'तर्क' अथवा 'दर्शन' (metaphysics) के नाम से चलते हैं वस्तुतः उस दार्शनिक व्यक्ति की प्रमुख कोटियों के असफल कथनमात्र हैं। भविष्य के भाषाशास्त्री के लिए एक कार्य यह होगा कि वह विभिन्न भाषाओं की कोटियों की तुलना करे और देखे कि कौन-कौन से अभिलक्षण सर्वत्र हैं अर्थात् अधिकाधिक हैं । इस प्रकार "Object" जैसी कुछ वस्तु को वर्ग-अर्थ में रखनेवाले अंग्रेजी नामिक व्यंजकों से तुलनीय रूपवर्ग सभी भाषाओं में मिलता है, यद्यपि बहुत सी भाषाओं में यह अंग्रेजी भाषण-अंग के समान यादृच्छिक वर्ग नहीं है बल्कि चिन्हकों की उपस्थिति पर अधिकांश निर्भर है, जैसे मलाया अथवा चीन की भाषा में (§ 12.13)।

16.5 व्यावहारिक संसार का हमारा ज्ञान यह दिखा सकता है कि कुछ भाषाई कोटियां वास्तविक वस्तुओं के वर्गों से मिलती हैं। उदाहरण के लिए हमारे भाषिकेतर संसार में वस्तुएँ, क्रियाएं, गुण, रीतियाँ और सम्बन्ध मिलते हैं जिनसे अंग्रेजी की नामिक क्रियाएं, विशेषण, क्रियाविशेषण और पूर्वसर्ग मिलते हैं। फिर भी, इस सम्बन्ध में यह सच है कि अनेक अन्य भाषाएं अपनी भाषण-अंग व्यवस्था में इन वर्गों को मान्यता नहीं देती हैं । ऐसा होने पर भी अंग्रेजी भाषण-अंगों का निर्धारण हम व्यावहारिक संसार के विभिन्न

पक्षों की तदनुरूपता से न करके अंग्रेजी वाक्यप्रक्रिया में उनकी कार्यकारिता मात्र से करेंगे।

इस परिस्थिति में यह स्पष्ट है कि प्रचुर भाषण-अंग व्यवस्था वाली भाषाओं में सदैव अमूर्तरूप (abstract forms) मिलते हैं। उनमें विभिन्न वाक्यीय स्थितियों में प्रयोग के लिए उसी शब्दीय-अर्थ में समानान्तर रूप मिलते हैं। इस प्रकार run जैसी क्रिया, smooth जैसे विशेषण कर्ता के रूप में भी आ सकते हैं। किन्तु इस कार्यकारिता के लिए हमारे पास भाववाचक संज्ञारूप run (जैसे, the run will warm you up में) और smoothness हैं। यह सोचना ग़लत है कि ऐसे अमूर्तरूप केवल शिक्षित लोगों की भाषाओं में ही होते हैं; ये उन सभी भाषाओं में होते हैं जो विभिन्न वाक्यीय स्थितियों के लिए विभिन्न रूपवर्गों को सीमित करती हैं।

अतएव भाषाई कोटियां दार्शनिक शब्दावली द्वारा परिभाषित नहीं हो सकती हैं। उनकी रूपीय दृष्टि से परिभाषा देने के बाद, हमें उनके अर्थ को वर्णित करने में बहुत कठिनाई होती है। इसे प्रदर्शित करने के लिए हमें केवल अधिक परिचित कोटियों में से कुछेक पर विचार करना पर्याप्त है।

वचन (Number), जैसा कि अंग्रेजी एकवचनों और बहुवचनों से लगता है, मानवीय प्रतिक्रिया के कुछ सार्वभौमिक अभिलक्षणों से मिलता-जुलता सा प्रतीत होता है। फिर भी oats किन्तु wheat, अथवा ɛpsoma Salts किन्तु table salt, जैसे स्थलों का कोई भाषिकेतर औचित्य दिखाई नहीं पड़ता है।

अंग्रेजी में लिंग की कोटियाँ व्यक्तित्व और स्त्री पुरुष भाव की भाषिकेतर मान्यता से मेल खाती हैं। किन्तु यहाँ भी कुछ पशुओं (the bull....he अथवा it) और अन्य वस्तुओं (the good ship....she अथवा it) का व्यवहार भिन्न-भिन्न है। अधिकांश भारत-यूरोपीय भाषाओं की लिंगकोटियाँ जैसे कि फ्रेंच की दो अथवा जर्मन की तीन (§12.7) वास्तविक जगत् की किसी वस्तु से संमत नहीं हैं और अधिकांश ऐसे वर्गों के साथ यही सच है। अल्गोन्की भाषाओं में सभी व्यक्ति और जीव एक कोटि में आते हैं, जिसे 'चेतन' लिंग कह सकते हैं किन्तु कुछ अन्य पदार्थ भी जैसे 'रसफली', 'केतली', 'टखना', 'चेतन' हैं और अन्य सभी पदार्थ (उदाहरण के लिए 'स्ट्राबेरी', 'कटोरा', 'कुहनी') दूसरे वर्ग में आते हैं जिसे 'अचेतन, (inanimate)

लिंग कहते हैं। बांटू भाषाओं में कुछ में 20 तक ऐसे वर्ग हैं और वचन का अन्तर लिंग वर्गीकरण में सम्मिश्रित हो जाता है।

कारक-कोटियां (case-categories) दो से लेकर (जैसे अंग्रेजी में he : him) बीस के आसपास तक (जैसे, फिनी में) मिलती हैं। ये व्यावहारिक जगत् की विभिन्न परिस्थितियों से मिलती हैं, किन्तु कभी भी इनमें संगति नहीं है। इस प्रकार, जर्मन में क्रिया का लक्ष्य कर्म कारक में होता है, जैसे, er bat mich [e:r ʹba:t mix] "उसने मुझसे (कुछ) माँगा" किन्तु कुछ क्रियाएँ क्रिया के लक्ष्य को सम्प्रदान कारक में रखती हैं जैसे er dankte mir [e:r ʹdaŋkte mi:r] "उसने मुझे धन्यवाद दिया" (§12.8 के लैटिन उदाहरणों से तुलना कीजिए)।

काल (tense) की कोटियाँ ऊपरी तौर से तर्कसंगत लगती हैं, विशेषतः लैटिन जैसी भाषा में जहाँ वर्तमान, (cantat "वह गाता है") अतीत (cantāvit "उसने गाया") और भविष्य (cantābit वह गाएगा") में रूपीय अन्तर है। किन्तु यहाँ भी तुरन्त मालूम होगा कि दो कोटियां हमारे भाषिकेतर विश्लेषण से मेल नहीं खाती हैं। अंग्रेजी के समान लैटिन में भी "ऐतिहासिक वर्तमान" अतीत घटनाओं के लिए आता है, और लैटिन काल-रूपों के अर्थ के मूल में काल-सापेक्षिता के अतिरिक्त अन्य कारण भी हैं।

पक्ष (aspect) की अंग्रेजी कोटियाँ कालबिन्दुनिष्ठ पूर्ण "punctual" 'perfective' जिसमें काल के एक बिन्दु पर क्रिया होती है (he wrote a letter) और कालावधिनिष्ठ 'durative', 'imperfective' जिनमें क्रिया एक कालावधि तक चलती रहती है जिसके दौरान में और घटनाएं भी हो सकती हैं, जैसे he was writing the letter में अन्तर करती हैं। व्यावहारिक जगत् में इस अन्तर को परिभाषित करना अत्यन्त कठिन है और इस विषय में अंग्रेजी में स्पष्ट अव्यवस्था है। उदाहरण के लिए कुछ क्रियाएं दृढ़ता के साथ कालबिन्दुनिष्ठ रूप में मिलती हैं (I think he is there, he is funny) और केवल विशेष संरचनाओं में अथवा अर्थों में कालावधिनिष्ठ हैं (I am thinking of him ; he is being funny)। रूसी में, जहां अंग्रेजी की भाँति पक्ष-व्यवस्था है, कुछ क्रियाएं, जैसे 'खाने' अथवा "पीने" के लिए क्रियाएं, दृढ़ता से कालावधिनिष्ठ रूप में मिलती हैं।

अंग्रेजी में न मिलनेवाली एक सामान्य कोटि पौनःपुन्य (iteration) है जिसमें इसका अन्तर किया जाता है कि घटना एक बार घटी है अथवा

बार-बार घटी है। जैसे, रूसी में [on be'zal do'moj] "वह घर चला रहा है" (किसी एक अवसर पर) और [on' bezal do'moj] "वह घर चलाता रहता है" (प्रतिदिन, बार-बार) में भेद है।[1]

पूर्णता (perfection) के आधार पर तात्कालिक "अपूर्ण" क्रिया का अन्तर 'पूर्ण' क्रिया से है जिसका प्रभाव तात्कालिक है : he writes किन्तु he has written ; he is writing किन्तु he has been writing ; he wrote किन्तु he had written; he was writing किन्तु he had been writing। यह अन्तर व्यावहारिक जगत् के आधार पर कठिनता से ही परिभाषा-साध्य है और विभिन्न भाषाएं विभिन्न प्रकार के विवरण दिखलाती हैं।

अंग्रेजी में अनेक (modes) (वृत्तियाँ) हैं। इनके द्वारा इस पर प्रकाश डाला जाता है कि वास्तविक घटना में क्रिया की कौन-सी वृत्ति (रीति पद्धति) अपनाई गई थी। रूपप्रक्रिया की दृष्टि से अंग्रेजी में वास्तविक (real) (he is here) और अवास्तविक (संभावना) (unreal) (if he were here) में भेद है। वाक्यप्रक्रिया की दृष्टि से कुछ अनियमित ("सहायक" auxiliary) क्रियाओं के वैचित्र्य द्वारा एक पूरी श्रेणी बन जाती है जोकि आगे बिना to के सामान्यक्रिया रूप आता है। हम यह पर्यवेक्षण कर सकते हैं कि इन संयोजनों में सामान्य क्रियारूप दृढ़ता से कालबिन्दुसूचक है और यदा-कदा ही कालावधिसूचक है (I shall be writing)। रूसी में भविष्यकाल जोकि अंग्रेजी shall और will पदसंहितियों

1—अंग्रेजी में क्रियारूप में पौनःपुन्य का कोई महत्व नहीं है : he played tennis everyday (कालबिन्दुनिष्ठ), और he was playing tennis everyday (कालावधिनिष्ठ), he played a set of tennis (कालबिन्दुनिष्ठ) और he was playing a set of tennis (कालावधिनिष्ठ) में कोई भेद नहीं है। लैटिन, फ्रेंच और आधुनिक ग्रीक में पौनःपुन्य क्रिया और कालावधिनिष्ठ क्रिया एक में मिल गए : il écrivait [il ekrivɛ] का अर्थ he was writing और he wrote (repeatedly) : दोनों हैं। रूसी में पौनःपुन्य क्रियाएं कालावधिनिष्ठ के अन्तर्गत हैं किन्तु इस कालावधिनिष्ठ वर्ग के अन्तर्गत कम से कम कुछ क्रियाओं के पौनःपुन्य रूप और एकल रूप में स्पष्ट अन्तर है।

से पर्याप्त मेल खाता है पक्ष का ऐसा अन्तर प्रदर्शित करता है जैसा कि वर्तमान और अतीतकाल से प्रदर्शित होता है। विभिन्न वृत्तियां अनेक भाषाओं में वाक्यीय स्थितियों और संगीत के भेदों से बंधी हुई हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में सम्भावना if अथवा though से प्रारम्भ किए उपवाक्यों में ही मिलती है अथवा पदसंहितीय वृत्तिरूपों के संयोजनों में (he will help us के संभावनारूप he would help us में) मिलती है। अन्य भाषाओं की विभिन्न वृत्तियों के प्रयोगों में भी इसी प्रकार की जटिलता मिलती है, जैसे, फ्रेंच je pense qu'il vient [zɔ pãs k i vjɛ̃ है] "मेरे विचार से वह आ रहा है" में उपवाक्य की क्रिया 'सामान्य' (वास्तविक) वृत्ति में है किन्तु je ne pense pas qu'il vienne [zɔ n pãs pa k i vjɛn] "मेरे विचार से कदाचित् ही वह आ रहा है" में उपवाक्य की क्रिया "सम्भावनार्थ" वृत्ति में है।

16.6 हमने देखा है कि कुछ रूपों की क्रियाकारिता उनके संरचकों अथवा उनकी संरचनाओं द्वारा निर्धारित होती है। इस प्रकार निर्धारित कार्यकारिता नियमित (regular) कहलाती है और इस प्रकार निर्धारित न होनेवाली कार्यकारिता अनियमित (irregular) कहलाती है। इस प्रकार यदि हमें मालूम है कि fox और ox एकवचन जातिवाचक संज्ञाएं हैं, जोकि कभी पुरुषनिरपेक्ष होती हैं और कभी पुंल्लिंग पुरुषसापेक्ष होती हैं, तो हम कह सकते हैं कि foxes में fox की बहुवचन पर-प्रत्यय [-iz] के संयोजक में नियमित कार्यकारिता है (चूंकि यह कार्यकारिता असीमित एकवचन संज्ञाओं की कार्यकारिता है.) किन्तु बहुवचन पर-प्रत्यय [-n̥] के संयोजन में ox की एक अनियमित कार्यकारिता है। भाषातत्वज्ञ 'नियमित' अथवा 'अनियमित' पदों का प्रयोग प्रायः स्वयं रूप के लिए करते हैं। उदाहरणार्थ, वे कहते हैं कि संज्ञा fox नियमित है और ox अनियमित है। किन्तु हमें निस्सन्देह वह कार्यकारिता स्पष्ट कर देनी चाहिए, जिसके सन्दर्भ में ये पद प्रयुक्त किये गए हैं क्योंकि संज्ञाएं fox और ox अन्य कार्यकरिताओं के सम्बन्ध में बिल्कुल एक सी हैं। अर्थ विस्तार से भाषा-तत्वज्ञ इन पदों को उन फलितरूपों के लिए भी प्रयुक्त करते हैं जिनमें ये कार्यकारिताएं मिलती हैं। उदाहरणार्थ, वे कहते हैं कि बहुवचन संज्ञा foxes नियमित है किन्तु बहुवचन संज्ञा oxen अनियमित है।

वक्ता नियमित कार्यकारिता में किसी ऐसे रूप का भी प्रयोग कर सकता

है जिसके फलितरूप को उसने कभी नहीं सुना है। उदाहरण के लिए, वह foxes जैसे रूप का प्रयोग कर सकता है चाहे उसने इस बहुवचन रूप को कभी पहले न सुना हो। किन्तु अनियमित कार्यकारिता में वह फलित रूप को तभी बोल पाएगा जबकि उसने उसे इस कार्यकारिता में सुना हो, उदाहरणार्थ, रूप oxen उसी व्यक्ति द्वारा बोला जा सकता है जिसने इस फलितरूप को औरों से सुन रखा है। अतएव भाषा के विवरण में नियमित कार्यकारिताएं पूरे रूपवर्गों के लिए समष्टितया कथित होती हैं अर्थात् हम अंग्रेजी संज्ञाओं के नियमित बहुवचन निर्मिति का कथन, भाषा की सभी संज्ञाओं को बिना सूची रूप में दिये, देते हैं। किन्तु इसके विपरीत, अनियमित कार्यकारिताओं में इस वर्ग के रूपों की सूची देनी पड़ती है, उदाहरणार्थ अंग्रेजी संज्ञाओं की बहुवचन-निर्मिति में यह बताना होगा कि ox के बाद [-en] लगता है, foot, tooth, goose में [ij] की स्थानापत्ति होती है इत्यादि।

यदि हम इस प्रभेद को बनाए रखना चाहते हैं तो हम कह सकते हैं कि प्रत्येक रूप जिसे एक वक्ता बिना पहले सुने बोल सकता है, अपनी समीपी संरचन में नियमित है और उसके संरचकों की नियमित कार्यकारिता है और प्रत्येक रूप जिसे वक्ता बिना पहले सुने नहीं बोल सकता है अनियमित है। इस प्रकार के तर्क से भाषा का प्रत्येक रूपिम अनियमित है क्योंकि वक्ता केवल रूप को सुनने के बाद ही प्रयुक्त करता है और भाषाई वर्णन का पाठक उसकी सत्ता को तभी जान सकता है जबकि वह रूप उसके सम्मुख सूची में आए। शब्दकोष तब वस्तुतः व्याकरण का परिशिष्ट बन जाता है जिसे आधारभूत अनियमितताओं की सूची कहा जा सकता है। यह तथ्य और भी स्पष्ट होता है यदि इन अर्थों पर भी विचार करें क्योंकि प्रत्येक रूपिम यादृच्छिक परम्परा से निर्धारित होता है। अंग्रेजी जैसी भाषा में जहां प्रत्येक रूपिम यदृच्छा से किसी न किसी व्याकरणिक वर्ग में निर्दिष्ट है, यह अभिलक्षण एक अनियमितता है। वक्ता को अपने अनुभवों में सीखना पड़ता है और वर्णन करनेवाले को सूची द्वारा यह तथ्य प्रकट करना होता है कि pin संज्ञा है, spin क्रिया है, thin विशेषण है, in पूर्वसर्ग है इत्यादि। प्रथानुसार यह कार्य शब्दकोश का होता है, व्याकरण तो केवल उन अनियमितताओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराता है जोकि भाषा के सभी रूपिमों में विद्यमान नहीं हैं और 'नियमित' 'अथवा' 'अनियमित' –ये पद व्याकरण में प्रस्तुत अभिलक्षणों के विषय में ही प्रयुक्त होते हैं।

यदि हम ऐसा प्रतिबन्ध लगा दें तो यह स्पष्ट है कि अधिकांश भाषणरूप 'नियमित' निकलेंगे अर्थात् संरचकों और व्याकरणिक ढाँचे का जाननेवाला वक्ता किसी भी रूप को बिना पहले सुने प्रयुक्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त, वर्णन देनेवाला उन्हें सूचीबद्ध नहीं कर सकता है, क्योंकि संयोजनों की सम्भावना व्यवहारतः असीमित है । उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में कर्ता-व्यंजकों और समापिका क्रिया-व्यंजकों के वर्ग इतने विशाल हैं कि अनेक संभव कर्ता-क्रिया रूप, जैसे, a red-headed plumber bought five oranges-इससे पूर्व कभी भी न सुना गया हो । इसी आधार पर हम यह भी निश्चय से नहीं कह सकते हैं कि सुनाई पड़नेवाला विशिष्ट संयोजन पहले कभी नहीं सुना गया है। एक व्याकरणिक प्रतिमान (वाक्य-प्रतिरूप, संरचना अथवा स्थानापत्ति) प्रायः सादृश्यमूलक कहा जाता है । नियमित सादृश्य के द्वारा वक्ता उन भाषणरूपों का भी उच्चारण कर सकता है जिन्हें उसने कभी पहले नहीं सुना है ; तब हम कहते हैं कि उसने पूर्व सुने रूपों के सादृश्य पर यह प्रयोग किया है।

इसके विपरीत अनियमित सादृश्य के अन्तर्गत अनेक रूप आते हैं, किन्तु वक्ता कदाचित् ही इन सुने हुए रूपों के सादृश्य पर नया रूप बोलता है । उदाहरणार्थ, at least, at most, at best, at worst, at first, at last आदि पदसंहितियां एक ही प्रतिमान (at+विशेषण–st) पर बनी हुई हैं, किन्तु सादृश्य केवल कुछ रूपों तक ही सीमित है। at all में (जहाँ विशेषण के अन्त में –st नहीं है और अनियमित सन्धि है) अथवा don't में अन्यत्र अप्राप्त सादृश्य है। जब आटोमोबाइल (मोटर) पहले पहल आई तो कोई भी वक्ता cab-driver, truck-driver आदि के सादृश्य पर समास automobile-driver का निर्माण कर सकता था । किन्तु cranberry जैसा समास जिसका एक सदस्य अनन्य है केवल उन्हीं वक्ताओं से बोला जाता है जोकि इसे सुन चुके हैं। यदि हम अर्थ पर भी विचार करें तो हम कह सकते हैं कि वक्ता यदि blackbird शब्द का व्यवहार एक पक्षिविशेष के लिए करता है तो उसने पहले से यह प्रयोग अवश्य सीखा होगा क्योंकि यह अर्थ यादृच्छिक परम्परा से ही दिया गया है । charlestoner (charleston नामक नृत्य को करनेवाला) जैसा रूप dancer, waltzer two-stepper जैसे रूपों के नियमित सादृश्य पर बनाया हुआ है, किन्तु duchess (§ 10.6) जैसा रूप अनन्य है । सीमान्त-प्रदेश पर वे उदाहरण हैं जहां

स्त्रीप्रत्यय–ess लगा है जो केवल परस्पर-स्वीकृत रूपों में ही लगता है : हम poetess, sculptress कहते हैं किन्तु *paintress नहीं कह सकते हैं। फिर भी, कभी-कभी कोई वक्ता इस सादृश्य का विस्तार करता है और profiteeress, swindleress जैसे रूपों का प्रयोग करता है। यहाँ तक कि अंग्रेजी के धातुसाधक रूपिम (§14.9) भी कुछ लचकीले हैं, squunch जैसे रूप को 'गीली भूमि पर छप-छप करते कदम रखना' अर्थ में देखकर हम यह नहीं कह पाते हैं कि वक्ता ने इसे पहले से सुनकर प्रयुक्त किया है अथवा squirt, squash के [skw-] और crunch के [–ʌntʃ] सादृश्य पर निर्मित किया है।

भाषा के नियमित सादृश्य स्थानापत्ति की प्रवृत्ति के अनुसार हैं। उदाहरण के लिए, मान लें कि वक्ता ने कभी भी give Annie the orange, यह रूप नहीं सुन रखा है किन्तु वह निम्नलिखित रूपों के समुच्चयों को सुन या बोल चुका है :

Baby is hungry.	poor Baby !	Baby's orange.	Give baby the orange!
Papa is hungry.	poor Papa !	Papa's orange.	Give Papa the orange.
Bill is hungry.	poor Bill !	Bill's orange.	Give Bill the orange!
Annie is hungry.	poor Annie !	Annie's orange....	

अब उसकी यह आदत हो गई है, कि वह Baby, Papa, Bill की स्थितियों में सादृश्य से Annie प्रयुक्त करता है और तदनुसार समुचित परिस्थितियों में एक नया रूप Give Annie the orange ! बोलेगा। जब कभी एक वक्ता एक मिश्ररूप प्रयुक्त करता है तो अधिकांश हम यह नहीं कह सकते हैं कि वक्ता ने उसे पहले से सुन रखा है अथवा अन्य रूपों के सादृश्य पर रचा है। अन्य रूपों के सादृश्य पर किसी रूप का उच्चारण एक प्रकार से एक अनुपाती समीकरण को हल करने के समान है जिसकी बाईं ओर अनुपातों का अनिश्चित विशाल समुच्चय है :

Baby is hungry : Annie is hungry
Poor Baby : Poor Annie
Baby's Orange, Annie's Orange
} = Give Baby the Orange : x

or

dog : dogs		
pickle : pickles	=radio : x	
potato : potatoes		
piano : pianos		

16.7 भाषा की शक्ति अथवा सम्पत्ति रूपिमों और व्याकरणिमों में (वाक्य-प्रतिरूपों, संरचनाओं और स्थानापत्तियों में) है। रूपिमों और व्याकरणिमों की संख्या भाषाविशेष में हजारों में पहुँचती है। प्रत्येक भाषा में विशिष्ट अर्थों में अनेक मिश्ररूप होते हैं जिनका शुद्ध भाषाई वर्णन में स्थान नहीं है किन्तु जो व्यवहार की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, भाषातत्वविद् यह निर्धारित कर सकता है कि blackbird, bluebird, whitefish, जैसे समासों के अथवा give out, fall out, throw up जैसी पदसंहितियों के विशिष्ट अर्थ होते हैं किन्तु वह इनके अर्थों का मूल्यांकन नहीं कर सकता है यद्यपि व्यावहारिक जीवन में ये किसी भी अन्य अर्थिम के समान उपयोगी हैं।

यह साधारणतया माना जाता है कि भाषासम्पत्ति विभिन्न प्रयुक्त शब्दों की सख्या पर निर्भर है किन्तु यह संख्या अनिश्चित है क्योंकि रूपीय संरचनाओं के सादृश्य पर शब्द मनचाहे ढंग से बनते रहते हैं। उदाहरण के लिए प्रश्न यह उठता है कि play, player और dance की गणना करने के बाद क्या dancer को एक चौथा शब्द मानें यद्यपि उसमें कोई अतिरिक्त शब्दिम नहीं आया है? यदि मानते हैं तो किसी भी भाषा में शब्दों की संख्या व्यवहारतः अनन्त है। जब हम कहते हैं कि शेक्सपियर ने अपनी कृतियों में 20,000 विभिन्न शब्द प्रयुक्त किए हैं और मिल्टन ने अपनी कविताओं में 8,000 शब्द प्रयुक्त किए हैं तो हम गलत ढंग से यह निष्कर्ष निकालने लगते हैं कि इनसे कम निपुण वक्ता इनसे कम शब्दों का प्रयोग करते होंगे। यह शेक्सपियर की प्रतिभा का द्योतन है कि उसने अपनी कृतियों में बद्ध छोटे से भाषण-विस्तार में इतने अधिक विभिन्न शब्द प्रयुक्त किए हैं, किन्तु उनका यह भाषण-विस्तार एक चुप्पी व्यक्ति द्वारा एक साल के बीच में बोले गए भाषणविस्तार की तुलना में पर्याप्त कम है। किसान, कारीगर अथवा असभ्य व्यक्ति केवल एकाध सौ शब्द प्रयुक्त करते होंगे—यह एक निराधार कथन है। जहां तक शब्दों की गणना का सम्बन्ध है (उदाहरणार्थ, अंग्रेजी जैसी भाषा के विभक्तिसिद्ध रूपों को न भी गिनें) प्रत्येक वयस्क वक्ता कम से कम प्रायः 20,000 से लेकर

30,000 शब्दों का प्रयोग करता है, यदि वह सुशिक्षित है, अर्थात् तकनीकी और विद्वत्-शब्दों को जानता है, तो इससे भी अधिक शब्दों का प्रयोग करता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक व्यक्ति कहीं अधिक ऐसे शब्दों को समझता है जिनका वह स्वयं प्रयोग नहीं करता है।

विभिन्न शब्दीय और व्याकरणिक इकाइयों (रूपिम और व्याकरणिम) की आपेक्षिक आवृत्ति किसी भी भाषा में मालूम की जा सकती है जहाँ सामान्य उच्चारों के प्रभूत आलेख विद्यमान हैं। अगले अध्यायों में हम देखेंगे कि आलेखों का अभाव भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन में एक बड़ी बाधा है क्योंकि शब्दिमों की आवृत्ति का हेरफेर उन परिवर्तनों के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण है जोकि प्रत्येक भाषा में होते रहते हैं।

निस्सन्देह अधिकांश शब्दीय रूपों की आवृत्ति, व्यावहारिक परिस्थितियों के अनुसार बहुत काफी ऊपरी तौर से घटती-बढ़ती रहती है। thimble अथवा stove जैसे शब्द भाषण के लम्बे विस्तारों तक में कदाचित् एक बार भी न आएं, फिर भी ये रूप अवसर आने पर सभी वक्ताओं से बोले जाते हैं। इसके विपरीत, शब्द से अधिक आवृत्ति वाले रूप-शब्दीय और विशेषतः व्याकरणिक-निरन्तर भाषा संघटना के कारण आते हैं। यह पता लगा है कि (the, to, is, etc.) आदि सर्वाधिक सामान्य शब्द बोले जानेवाले उच्चार-विस्तारों में प्रतिशत में सर्वाधिक हैं।

16.8 विभिन्न भाषाओं में क्या-क्या वस्तु कही जा सकती है, यह व्यावहारिक प्रश्न अधिकतर शब्दार्थ और कोटियों के प्रश्न से मिला दिया जाता है। कोई भाषा पद-संहिति का प्रयोग करती है, जबकि दूसरी उसी अथ में एक अकेला शब्द और तीसरी केवल एक आबद्ध रूपिम। किसी भाषा का अर्थ जो कोटीय है (जैसे, अंग्रेजी में पदार्थों का बहुवचनत्व) दूसरी भाषा में विशिष्ट व्यावहारिक उद्दीपन में ही प्रयुक्त हो सकता है। जहाँ तक अभिधार्थ का सम्बन्ध है, जो कुछ भी एक भाषा में कहा गया है, दूसरी भाषा में निस्सन्देह कहा जा सकता है, अन्तर केवल रूपों की संघटना में होगा और लक्षणार्थ (व्यंग्यार्थ) में होगा। जो भाव एक भाषा में एक अकेले रूपिम द्वारा अभिव्यक्त है वही दूसरी में कदाचित् पूरी पदसंहिति द्वारा अभिव्यक्त हो सके, और जो एक में शब्द द्वारा अभिव्यक्त हो सकता है वही दूसरी भाषा में एक वाक्यांश अथवा एक प्रत्यय द्वारा अभिव्यक्त हो सके। अर्थ के तत्त्व जो एक भाषा में इस कारण मिलते हैं कि वे किसी कोटि के अन्तर्गत आते हैं, यद्यपि वे व्यावहारिक परिस्थिति के लिए व्यर्थ हैं, किसी दूसरी भाषा में अनुपलब्ध हो सकते हैं।

अंग्रेजी में Pike's Peak is high में वर्तमानकाल से द्योतन है--चीनी में अथवा रूसी में इसी अर्थ के द्योतन में वर्तमान काल का तत्त्व नहीं होता है।

यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि विभिन्न भाषाओं में संकेतन की लघुतम इकाइयाँ, शब्दिम, व्यावहारिक मूल्य में अत्यन्त विभिन्न हैं। यह समीपतम सम्बद्ध भाषाओं में भी सही है। जहाँ अंग्रेजी में एक ride का प्रयोग है, वहां जर्मन में दो reiten ['rajten] और fahren ['fa:ren] हैं, पहला जानवरों पर चढने में और दूसरा सवारी (गाड़ी आदि) पर चढ़ने में प्रयुक्त होता है। जहाँ अंग्रेजी में on का प्रयोग है, वहां जर्मन में दो रूप ouf और an हैं—पहला वहाँ प्रयुक्त होता है जहां गुरुत्वाकर्षक संस्पर्श में सहायक है, जैसे "मेज पर", दूसरा अन्यत्र, जैसे "दीवाल पर"। अंग्रेजी morning फ्रेंच matin [matɛ̃] से मिलता है। अन्तर केवल इतना है कि अंग्रेजी में morning समय के खण्ड के रूप में देखा जाता है जिसमें कोई वस्तु हो सकती है, जैसे 'I slept all morning' अथवा 'during the morning'; किन्तु फ्रेंच में इसी अर्थ में 'matin' के एक व्युत्पाद्य matine'e [matine] का प्रयोग है। यहाँ तक कि उन वस्तुओं का जिनकी सरल परिभाषा है और स्पष्ट वर्गीकरण है, विभिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न प्रयोग है। व्यक्तियों के बीच सरल जीवनविज्ञानात्मक सम्बन्ध के समान कोई निश्चित वस्तु नहीं हो सकती है, फिर भी अंग्रेजी brother और Sister के समकक्ष शब्दों के अतिरिक्त जर्मन में बहुवचन Geschwister [ge'ʃvister] है जिसके अन्तर्गत पुरुष-स्त्री दोनों आते हैं, जैसे wieviele Geschivister haben Sie? [vi: fi:le ge'ʃvister 'ha:ben zi:?] "तुम्हारे कितने भाई-बहिन हैं?" कुछ भाषाओं में केवल एक शब्द है और पुंल्लिंग और स्त्रीलिंग का भेद नहीं है, जैसे तगलाक [kapa'tid]; अंग्रेजी के brother के समकक्ष तगलाग में पदसंहिति [Kap'tid na la'la:ki-] है जहां अन्तिम शब्द का अर्थ है "पुरुष", अंग्रेजी sister के समकक्ष में पदसंहिति [kapa'tid na ba'ba:ji] है जहाँ अन्तिम शब्द का अर्थ है "स्त्री"। इसके विपरीत कुछ भाषाएं आपेक्षिक आयु अवश्य प्रदर्शित करती हैं : चीनी ['ko^{1} ko^{1}] "बड़ा भाई", ['tʃuŋ^{1} ti^{4}] "छोटा भाई", ['tʃje^{3} tʃje^{3}] "बड़ी बहिन", ['mej^{4} mej^{4}] "छोटी बहिन"। मिनामनी में इससे भी जटिल पदावली है। इसके उदाहरण अधिक सरलता से स्पष्ट होंगे यदि हम भाई अथवा बहिन के लिए एक शब्द 'सहजात' (sibling) मान लें। मिनामनी में शब्द इस

प्रकार हैं–[nɛ?nɛh] "मेरा बड़ा भाई", [neme:h] "मेरी बड़ी बहिन", [nɛhse:h] "मेरा छोटा सहजात", [neko:?semaw] "मेरा विपरीत लिंगी सहजात" (यदि स्त्री कहती है तो 'मेरा भाई', यदि पुरुष कहता है तो "मेरी बहिन") [ne:hkah] "मेरा भाई (यदि पुरुष बोल रहा है) "[ne:-tɛkɛh] "मेरी बहिन (यदि स्त्री बोल रही है)" । सामान्य शब्द [ni:tɛsjanak] "मेरे सहजात" का बहुवचन में तब प्रयोग होता है जबकि सहजात दोनों लिंगों के हों और वक्ता से छोटे न हों ।

सम्बन्धवाची शब्द न केवल ऊपर दिए उदाहरणों के समान परिवर्तित होते हैं अपितु ऐसी परिस्थितियों में भी प्रयुक्त होते हैं जिनकी परिभाषा देना कठिन है । मिनामनी में भाई और बहिन के लिए प्रयुक्त शब्द cousins (चचेरे, ममेरे भाई बहिन आदि) के लिए भी प्रयुक्त होते हैं यदि सम्बद्ध माता-पिता एक ही लिंग के हों, उदाहरण के लिए वक्ता [ne:hkah] शब्द का प्रयोग चाचा के लड़के के लिए भी करेगा (बुआ के लड़के के लिए नहीं) । इसके अतिरिक्त ये और कुछ अन्य शब्द वंशपरम्परा के हैं : मेरे चाचा के लड़के का लड़का भी [ne:hkah] है । फलस्वरूप, अर्थ के मूल में सम्बन्ध का याद में और पहिचान में रखना है ।

इसी प्रकार, उदाहरण के लिए, पौधों के नामों में भी एकरूपता नहीं है और वे वनस्पति शास्त्रीय वर्गीकरण से संगत नहीं बैठते हैं यहाँ तक कि अस्पष्ट पदों वृक्ष, झाड़ी, बूटी, घास में भी ऐसा है ।

यहाँ तक कि संख्या के क्षेत्र में भी भाषाओं में विच्युतियाँ मिलती हैं । अंग्रेजी की पद्धति दाशमिक (twenty-two, thirty-five, आदि) है किन्तु इसमें द्वादशीय पद्धति के अवशेष मिलते हैं (eleven, twelve न कि *one-teen, two-teen) । अन्य अनियमितताएं रूपविषयक हैं, जैसे, two: twenty : second : half अथवा three : thirteen, thirty : third. इसके अतिरिक्त, 3, 7, 13 जैसी संख्याओं का अंग्रेजी में विचित्र व्यंग्यार्थ है और dozen, score, gross जैसी कुछ संख्याओं को गणितीयरूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता है । डेनी भाषा में विंशतीय ("बीसा") पद्धति का मिश्रण है । फ्रेंच में 60 से 79 तक की गणना बिना किसी दश के आधार के होती है : 70 soixante-dix [swasãt-dis] "60+10" है, 71 soixante et onze [swasãt e õz] "60+11 है, आदि । 80 quatre-

vingt [katrə vɛ] (चार बीसा) है और तब 100 तक कोई बीच में दश का आधार नहीं है। इस प्रकार 92 quatre-vingt douze[katrə vɛ du-: z] "80+12" है। इसी प्रकार उन लोगों में जिनमें ऊँची संख्याओं का प्रयोग विरल है, जैसे, खम बुश्मन तीन की संख्या से गिनती गिनते हैं, और "चार" के लिए "2+2" का प्रयोग करते हैं, इत्यादि।

दूसरे क्षेत्रों में जहाँ पर्याप्त वैज्ञानिक विश्लेषण भी हो चुका है, भाषाई वर्गीकरण में कोई एकरूपता नहीं आ पाई है। उदाहरण के लिए रंग (वर्ण) आवर्तित अथवा परावर्तित प्रकाश तरंगों की आवृत्तियों पर निर्भर है। दृश्यमान वर्ण-पट आवृत्तियों का एक अखण्डनीय मापक्रम है। विभिन्न भाषाएँ मापक्रम के विभिन्न भागों को विभिन्न वर्णनामों से (जैसे, लाल, नारंगी, पीला, हरा, आस्मानी, नीला, बेंजनी §9.1) पुकारती हैं। यह निश्चित करना एक कठिन कार्य होगा कि प्रत्येक वर्णनाम कहाँ से प्रारंभ होता है और कहाँ अन्त। यदि हम लोगों को विभिन्न भेदों के सूक्ष्म कोटिक्रमों में दिखाएँ तो हमें पता लगेगा कि स्पष्टतया अभिज्ञात पीले और हरे के बीच में एक प्रदेश होगा जहाँ लोग गड़बड़ा जाएंगे। यूरोपियनों के क्षेत्र के बाहर तो पूर्णतया विभिन्न वर्ण-विभाजन मिलने लगते हैं।

अपने अधिकांश अर्थों के सम्बन्ध में हमें बाह्य मानक की यह सुविधा भी नहीं है। सामाजिक आचरण सम्बन्धी शब्दों की, जैसे, प्रेम, मित्र, दया, घृणा की परिभाषा नृवंश-विज्ञान, लोक-साहित्य, और समाज-विज्ञान की पदावली में दी जा सकती है, यदि वे अध्ययन उस यथार्थता और पूर्णता को पहुँच जाएँ जिसका अभी स्वप्न भी नहीं देखा जाता है। वक्ता के शरीर में होने वाली उन दशाओं के सम्बन्ध के शब्द, जिनका आभास केवल उसी व्यक्ति को होता है, जैसे queasy, qualmish, उदास, प्रसन्न, सुखी आदि, की परिभाषा तभी दी जा सकती है जबकि हमें जीवित व्यक्ति के शरीर के भीतर होनेवाली प्रक्रियाओं का सूक्ष्म ज्ञान हो। फिर भी ये सब उन भाषाई अर्थों के संबंध में कुछ भी सहायता न कर पाएँगी जिनकी व्यावहारिक उपयोगिता कम है, जैसे संज्ञा-लिंग अथवा क्रिया-वृत्ति की कोटियाँ। जर्मन, फ्रेंच और लैटिन में संज्ञा के लिंग-निर्धारण की कोई भी व्यावहारिक लक्षण-विधि नहीं प्रतीत होती है। ऐसी भाषाओं में व्याकरणार्थिम 'पुंल्लिंग' का अर्थ करना केवल उन सब चिन्हकों की सूची देना होगा जो कि इस वर्ग में आते हैं,

और यह कहना होगा कि व्यावहारिक जगत् में इन सब पदार्थों में जो कुछ भी सर्वनिष्ठ है वह पुंलिंग-कोटि का अर्थ है। यही बात अंग्रेजी प्रक्रिया पक्षों के लिए है। wrote और was writing का भेद इतना है और विभिन्न क्रियाओं और विभिन्न पदसंहितियों में इतना विभिन्न है कि परिभाषा देनेवाला, मुख्य सिद्धान्तों के निरूपण के बाद, उदाहरणों द्वारा प्रदर्शन के अतिरिक्त और किसी उपाय का सहारा नहीं ले सकता है।

अध्याय 17

लिखित आलेख

17.1 किसी भी भाषण-समुदाय की भाषा एक पर्यवेक्षक के लिए एक उलझी संकेत व्यवस्था प्रतीत होती है जिसका इस पुस्तक के पूर्व अध्यायों में हम वर्णन करते रहे हैं। एक भाषा किसी भी क्षण हमारे सामने कोषीय और व्याकरणिक प्रवृत्तियों की स्थिर संरचना के रूप में उपस्थित होती है।

किन्तु यह एक भ्रम है। प्रत्येक भाषा में धीरे-धीरे किन्तु अनवरत रूप से भाषाई परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है। इस परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण हमें उन समुदायों से मिलता है जिनके पास उनके पूर्व भाषण रूपों के लिखित आलेख हैं। राजा जेम्स की बाइबिल अथवा शेक्सपियर की अंग्रेजी, आज की अंग्रेजी से भिन्न है: 14वीं शताब्दी के चौसर की अंग्रेजी हम शब्दकोष की सहायता से ही समझ पाते हैं। 9वीं शताब्दी के राजा आल्फ्रेड महान् की अंग्रेजी, जिसका तत्कालीन हस्तलिखित आलेख उपलब्ध है, हमें एक विदेशी भाषा जैसी लगती है। यदि आज के अंग्रेजी भाषी कहीं उस समय के अंग्रेजी वक्ता से मिल सकते, तो न आजकल वाले उनकी भाषा समझ पाते और न वे आजकल वालों की।

भाषाई परिवर्तन की गति का निरपेक्षरूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। एक वक्ता को अपने दादा-दादी से बात करते हुए अथवा दादा-दादी रूप में अपने पोतों से बात करते हुए किसी तरह की कठिनाई नहीं होती, फिर भी एक हजार वर्ष, दूसरे शब्दों में तीस-चालीस पीढ़ियों के बाद भाषा में इतना अधिक परिवर्तन हो जाएगा कि उसका समझना कठिन होगा। इन पीढ़ियों में, लंदन की हर अंग्रेज माँ को यही लगेगा कि उसके बच्चे अंग्रेजी को उसी रूप में सीख रहे हैं जिसे उसने अपने शैशवकाल में सीखा था। भाषाई परिवर्तन शारीरिक परिवर्तन की अपेक्षा बहुत अधिक द्रुतगति से होता है, किन्तु अन्य मानव-संस्थाओं में होने वाले परिवर्तन की अपेक्षा उसकी गति धीमी होती है।

भाषाई परिवर्तन में हमारी रुचि विशेषरूप से इसलिए होती है कि मात्र इससे ही भाषा की प्रकृति के व्याख्यान की संभावना होती है। एक वक्ता, पूर्व वक्ता से बोलना सीखता है। उदाहरण के लिए यदि हम पूछें कि आज का अंग्रेजी वक्ता कुत्ते के लिए dog शब्द का प्रयोग क्यों करता है अथवा अंग्रेजी में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए क्यों (-iz, -z, -s) परसर्ग जोड़े जाते हैं, तो स्पष्ट उत्तर यह होगा कि उन्होंने अपने पूर्व वक्ताओं से शैशवकाल में ये प्रवृत्तियाँ अर्जित कीं, यदि हम यही प्रश्न पूर्व-वक्ताओं की प्रवृत्ति के संबन्ध में पूछें, तो हमें उनके भी पूर्व हुए वक्ताओं का हवाला मिलेगा और इसी तरह बिना किसी अन्त के अतीत की ओर बढ़ना पड़ेगा। यदि हमें संचार-घनत्व की रेखाकृति (§ 3.4) उपलब्ध हो सकती, जिसमें प्रत्येक वक्ता के लिए एक बिन्दु और प्रत्येक उक्ति को वक्ता का बोध कराने वाले बिन्दु से अथवा श्रोता या श्रोताओं को सूचित करने वाले बिन्दु से एक तीर द्वारा सूचित किया जाता तो हम देखते कि अनिश्चित रूप से अतीतकाल में बहुत पीछे तक जाला बुनता गया है।

सामान्य स्थिति में भाषण-प्रवृत्ति की व्याख्या इतनी ही है कि उसी प्रकार की भाषण-प्रवृत्ति पहले भी थी। जहां भाषाई परिवर्तन हो रहा होता है, वहां पर व्याख्या इस प्रकार होगी कि पहले दूसरे प्रकार की प्रवृत्ति थी और साथ ही इस प्रकार का परिवर्तन भी उपस्थित था। उदाहरण के लिए meat शब्द का कोषीय प्रवृत्ति के अनुसार 'मांस':भोज्य: के अर्थ में प्रयोग बहुत पुराना नहीं है। कुछ ही शताब्दी पूर्व इसके पर्याय रूप में flesh शब्द प्रयुक्त होता था और meat का अर्थ 'भोजन' था। इस स्थिति में आज की प्रवृत्ति की व्याख्या में इतनी बातें निहित हैं—1. पहले की प्रवृत्ति, 2. अन्तरागत परिवर्तन; क्योंकि भाषाई परिवर्तन कभी रुकता नहीं, देर-सबेर भाषा की हर प्रवृत्ति को प्रभावित करता है। यदि हमें अतीत काल के भाषण का पर्याप्त ज्ञान हो, तो दूसरी वाली व्याख्या आज के प्रत्येक भाषण रूप के लिए लागू होगी।

चूँकि लिखित आलेखों द्वारा हमें अतीत की भाषण-प्रवृत्ति के संबन्ध में प्रत्यक्ष सूचना मिलती है, भाषाई परिवर्तन के अध्ययन का प्रथम चरण यह होगा कि हम लिखित अनुलेखों का अध्ययन करें।

आज हम लिखने-पढ़ने के इतने आदी हो गए हैं कि हम इसको स्वयं भाषा के साथ सम्भ्रमित कर देते हैं (§ 2·1)। लिखना अभी हाल का आवि-

ष्कार है। कुछ ही भाषण समुदायों में यह अधिक प्राचीन काल से प्रयुक्त होता आया है तथा इनमें भी इसके प्रयोग अभी बिल्कुल हाल तक कुछ ही लोगों में सीमित रहे हैं। एक भाषण-उच्चार (speech utterance) चाहे इसका लिखित आलेख हो अथवा न हो, एक ही रहता है। सिद्धान्ततः एक भाषा चाहे उसका जितना भी अंश लिखित आलेखों में हो, अथवा न भी हो, एक ही रहता है। भाषावैज्ञानिक के लिए, कुछ विशेष विस्तार की बातों को छोड़कर, लेखन, फोनोग्राफ के प्रयोग की तरह एक बाह्य प्रक्रिया है जो हमारे पर्यवेक्षण के लिए अतीतकाल के भाषण के कुछ अभिलक्षणों को सुरक्षित रखता है।

17.2 लेखन, रेखन से विकसित हुआ है। सम्भवतः सभी लोग रंगों से, रेखाओं से, खरोचने अथवा खोदने से चित्र बनाते हैं। ये चित्र अन्य प्रयोगों के अतिरिक्त, कभी-कभी संदेश और स्मारक का भी काम करते हैं, अर्थात् दर्शक के व्यवहार को वे विशेषित करते हैं तथा इसके लिए निरन्तर उनका प्रयोग हो सकता है। उत्तरी अमेरिका के भारतीय कुशल चित्रलेखक हैं और पुराने समय में चित्रों का व्यापक प्रयोग किया करते थे। इस प्रकार हमें एक ओजिब्वे (Ojibwa) इंडियन के संबन्ध में बताया जाता है कि उसके पास चित्रावली वाली वर्च की छाल की एक लम्बी पट्टी थी जिसका प्रयोग वह धार्मिक गीत के पदों को याद करने के लिए किया करता था। उदाहरण के लिए तीसरा चित्र एक लोमड़ी का था, क्योंकि गीत के छठे पद में कहा गया था 'यह एक अपशकुन है।' एक मैन्दैन (Mandan) इंडियन ने निम्न चित्र एक फर के व्यापारी के पास भेजा। केन्द्र में दो एक दूसरे को काटती हुई रेखाएं हैं। इन रेखाओं के एक ओर एक बन्दूक तथा टोप की तस्वीर है, तथा टोप के ऊपर उन्नीस समानान्तर निशान बने हैं। क्रास रेखा के दूसरी ओर एक मछुए, उदबिलाव तथा भैंस का चित्र है। इसका अर्थ यह है कि "मैं मछली का चमड़ा, भैंस की खाल का व्यापार एक बन्दूक तथा तीस टोपों के बदले करने को तैयार हूं।"

सामान्यतः इस प्रकार के आलेखों तथा संदेशों को चित्र-लेखन (picture-writing) कहा जाता है। किन्तु यह शब्द भ्रामक है। लेखन की तरह ही आलेखों तथा संदेशों को स्थायी बनाया जा सकता है तथा दूसरे को भेजा जा सकता है। किन्तु इसमें एक कमी है कि इन्हें बिल्कुल ठीक-ठीक नहीं

लिखा जा सकता क्योंकि उनका भाषाई रूपों से स्थिर सम्बन्ध नहीं है तथा तदनुसार लेखन का सूक्ष्म समंजन उसमें नहीं मिलता।

वास्तविक लेखन में कुछ सीमित संख्या में परम्परागत प्रतीकों का प्रयोग होता है। इसलिए हमें यह मान लेना होगा कि संक्रमण में चित्र रूढ़ हो गए। उदाहरण के लिए प्रत्येक पशु का आरेखन इतना स्थिर हो गया कि निर्भ्रान्त रूप से बहुत ही अपूर्ण रेखाचित्र से भी पशुओं की जाति का पता चल जाता है। कुछ सीमा तक अमरीकी इंडियनों के चित्रों के लिए सच है। लेखन की वास्तविक व्यवस्था के अन्तर्गत हमें प्रायः ऐसे प्रतीक मिलते हैं जिनकी उत्पत्ति फिर भी संदेहास्पद रह जाती है। प्राचीन मिश्र के तथाकथित गूढ़ाक्षरिक (hieroglyphic) लेखन में अधिकांश प्रतीक रूढ़ हैं फिर भी यथार्थ चित्र हैं तथा उनमें से बहुत से वास्तव में उस वस्तु का नाम अभिज्ञापित करते हैं, जिसके लिए वे प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार हंस का चित्र (जो सदा एक ही प्रकार का बनता है) शब्दचित्र (S?) ऐसा शब्द सूचित करता है जिसका अर्थ होता है हंस। चीनी लेखन में कुछ प्रतीक, उदाहरण के लिए (ma) 'घोड़ा' शब्द के लिए प्रतीक, अब भी इस शब्दार्थ के चित्र से मिलते हैं तथा कभी-कभी यह लिपिचिन्ह (Character) के पुराने रूप से भी मिलता है जिसके आधुनिक रूप से इस प्रकार की कोई संभावना नहीं प्रकट होती।

चित्र के सुदृढ़ रूढ़ हो जाने पर हम उसे लिपि-चिन्ह (character) कहते हैं। एक लिपिचिन्ह (character) एकाकार अंकन (mark) अथवा अंकन समुच्चय (set of marks) है जिसे लोग कुछ विशिष्ट स्थितियों में बोलते हैं तथा तदनुसार एक विशेष प्रकार से अनुक्रिया करते हैं। एक बार इस प्रवृत्ति के बन जाने पर, किसी वस्तु विशेष से लिपिचिन्ह (character) की समरूपता, गौण महत्त्व रखने लगती है, तथा लिपिचिह्न की परम्परा में परिवर्तन द्वारा इसे मिटाया जा सकता है। ये परिवर्तन प्रायः लेखन सामग्री के अनुसार होते हैं। प्राचीन मेसोपोटेमिया के कुछ कीलकाक्षरों से पता लगता है कि वे चित्रों से उत्पन्न हैं, किन्तु अधिकांश की स्थिति ऐसी नहीं है। लिपिचिन्ह के अन्तर्गत लम्बी तथा छोटी कीलाकृति रेखाएँ अनेक व्यवस्थाओं में होती हैं तथा प्रत्यक्ष रूप से उनकी यह आवृत्ति इसलिए है कि वे सख्त मिट्टी पर खरोंचे गए थे। प्राचीन ग्रीक के गूढ़ाक्षरिक लेखन में लिपिचिन्हों (characters) की रंगाई बहुत सावधानी से हुई थी, किन्तु भोजपत्र पर बेंत की तूलिका से द्रुत-लेखन के लिए यूनानियों ने एक सरलीकृत तथा वृत्ताकार संस्करण विकसित किया (जो पुरोहित-लेखन के नाम से जाना जाता

है) जिसके लिपिचिह्नों में चित्रों से सभी प्रकार की समरूपता लुप्त हो चुकी है। अंग्रेजी लेखन पद्धति भी अन्ततः प्राचीन मिस्री-चित्रों से उत्पन्न हुई है किन्तु कोई भी अंग्रेजी अक्षरों में चित्रों को पहचान नहीं सकता है। तथ्यतः अंग्रेजी अक्षर F में अब भी उस घोंघे के दो सींग हैं जो इस अक्षर के आदिम गूढ़ाक्षर लेखन में चित्रित हुआ था।

चित्र के प्रयोग से वास्तविक लेखन तक के संक्रमण में दूसरा महत्त्वपूर्ण चरण (phase) है भाषाई रूपों से लिपिचिन्हों का साहचर्य। अधिकांश परिस्थितियों में ऐसे लक्षण होते हैं जिन्हें चित्रित नहीं किया जा सकता। चित्र-प्रयोक्ता हर प्रकार की वे पद्धतियां अपनाता है जिससे उपयुक्त प्रतिचेष्टा मिल सके। इस प्रकार हमने देखा कि इण्डियन ने टोप के ऊपर उन्तीस निशान इसलिए बनाए कि टोपों की संख्या का अभिज्ञापन हो सके। चित्रावली द्वारा अदल-बदल की प्रक्रिया व्यक्त करने के स्थान पर, उसने इसे दो एड़ी-बेड़ी रेखाओं द्वारा एक और व्यापार की वस्तुओं के साथ व्यक्त किया। ओजीब्वे अपशकुन का बोध उल्लू द्वारा कराता था, इसमें संदेह नहीं कि ऐसा वह आदिवासियों के कुछ विश्वासों के अनुसार करता है।

जब चित्र-प्रयोक्ता को इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ा उस स्थिति के लिए हम मान सकते हैं कि वह वास्तव में स्वयं से बोलने लगा होगा तथा उस दुखदाई संदेश के विभिन्न शब्दों का उसने प्रयोग किया होगा। तो भी भाषा ऐसी वस्तुओं के संचार का एक साधन है, जिनका संचार हम रेखन (drawing) द्वारा नहीं कर सकते। यदि हम इस मान्यता को स्वीकार कर लें तो हम समझ सकते हैं कि समय पाकर चित्र-प्रयोक्ताओं ने अपनी भाषा के उच्चरित शब्दों के अनुसार लिपिचिन्हों की व्यवस्था की होगी तथा हर अंश अर्थात् भाषण के हर शब्द के लिए एक परम्परा विकसित की होगी। हम इस संक्रमण के चरणों का केवल अनुमान लगा सकते हैं। वास्तविक लेखन इनकी पूर्व-उपस्थिति स्वीकार करता है।

वास्तविक लेखन में कुछ लिपिचिन्हों के दुहरे मूल्य हैं क्योंकि उनसे चित्रणीय वस्तु तथा ध्वन्यात्म अथवा भाषाई रूप, दोनों का बोध होता है। अन्य लिपिचिन्ह चित्रणीय क्षमता खो बैठने पर केवल ध्वन्यात्म अथवा भाषाई रूप का ही बोध कराते हैं। शुद्ध चित्रसंबंधी लिपिचिन्हों जो का भाषणरूप से सम्बद्ध नहीं होते, प्रयोग गौण हो जाता है। भाषाई-मूल्य अधिक से अधिक प्रधान होता है, विशेष रूप से उस स्थिति में जब लिपिचिह्न आकृति

से रूढ़ हो जाते हैं तथा चित्रित वस्तु से नहीं मिलते । ये लिपिचिह्न प्रतीक (symbol) बन जाते हैं अर्थात् भाषाई रूप बोध कराने वाले परम्परानुमोदित अंकन (mark) अथवा अंकनसमूह बन जाते हैं । एक प्रतीक इस अर्थ में भाषाई बोध कराता है कि लोग, जहाँ भाषाई रूप उच्चारित होता है वहाँ इसे लिखते हैं तथा प्रतीक की प्रतिचेष्टा (respond) भी वैसे ही करते हैं जैसे किसी भाषाई रूप के सुनने की । वास्तव में लेखक, लेखन के पूर्व अथवा उसी समय भाषण रूप को बोलता है तथा श्रोता पढ़ते समय बोलता है । केवल पर्याप्त अभ्यास कर चुकने पर ही हम भाषण गतियों को अश्रव्य तथा गुप्त बनाने में सफल होते हैं ।

17.3 बाहरी तौर पर, शब्द वे भाषाई इकाई हैं जो लेखन में सर्वप्रथम प्रतीकबद्ध होते हैं । लेखन की वे व्यवस्थाएं जिनमें उच्चार के प्रत्येक शब्द के लिए एक प्रतीक का प्रयोग होता है एक भ्रामक नाम भावचित्रीय लेखन (ideographic writing) द्वारा जानी जाती हैं । संक्षेप में लेखन के सम्बन्ध में तथ्य यह है कि लिपिचिह्न व्यावहारिक जगत् (विचारों) के लक्षणों का बोध नहीं कराता बल्कि लेखक की भाषा का बोध कराता है । तदनुसार इसके लिए शब्दलेखन (word-writing अथवा logographic) संज्ञा अधिक उपयुक्त होगी ।

शब्द-लेखन के संबंध में मुख्य कठिनाई उन शब्दों का प्रतीक देने में होती है जो चित्रात्मक रूप से व्यक्त नहीं हो पाते । इस प्रकार मिस्री लोग एक ऐसे लिपिचिह्न का प्रयोग करते थे जिससे शिशु-मेंढक का बोध होता था और उसका अर्थ होता था एक लाख, इसके मूल में यह धारणा होगी कि शिशु-मेंढक संख्या में अधिक होते थे । 'अच्छा' शब्द चीनी प्रतीक 'स्त्री' तथा 'बच्चा' प्रतीक का संयोजन है ।

इस प्रकार की सबसे महत्त्वपूर्ण पद्धति है कुछ ऐसे ध्वन्यात्म मिलते-जुलते शब्दों का प्रयोग जिनका अर्थ चित्रित किया जा सकता है । इस प्रकार प्राचीन मिस्री में ऐसे लिपिचिह्न का प्रयोग होता था जिससे हंस का बोध केवल शब्द (s ?) 'हंस' के लिए ही नहीं होता था बल्कि (s?) 'बेटा' शब्द के लिए भी होता था । इस प्रकार एक लिपिचिह्न (m) शतरंज के पट्टे (checkerboard) के लिए रूढ़ था, उसका प्रयोग वे केवल (mn) शतरंज के लिए ही नहीं बल्कि (mn) 'अवशेष' के लिए भी करते थे । चीनी लेखन में गेहूं के लिए रूढ़ लिपिचिह्न का प्रयोग केवल 'गेहूं' के लिए

नहीं करते थे, अपितु उस समध्वनिक शब्दों के लिए भी करते थे जिसका अर्थ आजकल उत्तरी चीनी (laj²) में 'आना' है। इस प्रकार जो भ्रान्ति दिखाइ पड़ती है, उससे आगे के विकास के लिए मार्ग मिलता है। कुछ ऐसे लिपि-चिह्न इसलिए जोड़ दिए जाते हैं जिससे प्रकट हो कि समान-शब्दों में से कौन-सा शब्द पढ़ा जाए। ये अतिरिक्त लिपिचिह्न निर्धारक (classifiers or determinants) कहे जाते हैं। चीनी लेखन पद्धति में, जहाँ शब्द-लेखन-पद्धति अपनी पूर्णता को प्राप्त है ध्वन्यात्म चिह्न (जैसा मूल-प्रतीक के लिए कहा जाता है) तथा निर्धारक एक संयुक्त लिपिचिह्न में संयोजित हैं। इस प्रकार (ma³), 'घोड़ा' के लिए प्रतीक तथा (ny), स्त्री के लिए प्रतीक एक संयुक्त लिपिचिह्न में संयोजित हैं जो (ma') 'माँ' शब्द के लिए प्रतीक का काम करता है। (faŋ¹) 'वर्ग' के लिए प्रतीक तथा (thu²) 'पृथ्वी' के लिए प्रतीक संयोजित होकर एक संयुक्त प्रतीक (faŋ) बनाते हैं तथा प्रतीक (sr¹) 'रेशम' के साथ जुड़कर (faŋ') 'कातना' शब्द बनाते हैं। समास-प्रतीकों का ध्वन्यात्म भाग, जैसा इन उदाहरणों में दिखाई पड़ता है सदा ठीक-ठीक शब्दों की ध्वनि का ही बोध नहीं कराता, फिर भी हमें मानना पड़ेगा कि बोलियों में उस समय जहाँ इस प्रकार विकास हुआ होता है संयुक्त प्रतीक (अर्थात् जैसे प्रतीक तब थे और बनाए गए थे) ध्वन्यात्म दृष्टि से यथार्थ थे।

शब्द लेखन व्यवस्था की, जैसाकि हम चीनी लेखन में देखते हैं, कमी यह है कि भाषा के प्रत्येक शब्द के लिए हर प्रतीक को सीखना पड़ता है। चीनी लेखन के संयुक्त प्रतीक 214 संरचकों (मूलांशों radicals) में विश्लेषित किए जा सकते हैं किन्तु फिर भी इसे लिखने-पढ़ने में अत्यधिक श्रम करना पड़ता है। दूसरी ओर इस व्यवस्था में एक बड़ा गुण यह है कि इन शब्दों का ध्वन्यात्म रूप से कोई संबंध नहीं है। चीनी लोग बहुत-सी ऐसी बोलियाँ बोलते हैं जो एक दूसरे को समझ में नहीं आतीं किन्तु लेखन तथा छपाई की दृष्टि से, वे कुछ निश्चित कोषीय परम्पराओं तथा शब्द-क्रम का पालन करते हैं तथा इस प्रकार एक दूसरे का लेखन पढ़ लेते हैं तथा कुछ शिक्षण के बाद प्राचीन साहित्य भी समझ लेते हैं।

अंग्रेजी के संख्याचिन्ह (प्राचीन भारत से व्युत्पन्न) शब्दलेखन के उदाहरण हैं। 4 की तरह का प्रतीक बहुत से राष्ट्रों के लिए सम्बोध्य है यद्यपि अंग्रेजी में इसे (fɔɔ), जर्मन में (fi:r) फ्रेंच में (katr) और इसी प्रकार अन्य राष्ट्रों में भिन्न ढंग से इसका उच्चारण किया जाता है।

फिर भी क्योंकि हम इन संख्याचिन्हों को एक रूढ़ परम्परानुसार व्यवस्थित करते हैं, हम एक दूसरे की संख्यावाचक पदसंहितियों को पढ़ सकते हैं यद्यपि हमारी भाषा में इन पदसंहितियों की संरचना भिन्न है। उदाहरण के लिए हर जगह 91 सम्बोध्य है यद्यपि अंग्रेजी में ('najn 'wʌn) नहीं कहते बल्कि ('najnti 'wʌn) कहते हैं तथा जर्मन बिल्कुल उलटे क्रम में ('ajn unt 'nojntsix) 'एक और नब्बे'' कहते हैं तथा फ्रेंच में (katrə vẽ õz) ''चार बीस ग्यारह'' तथा डेन में ('e?n ɔ hal 'fem?s) ''एक और आधा और पंचगुना''।

17.4 अचित्रणीय शब्दों का ध्वन्यात्म रूप से उनके समान ही चित्रणीय शब्दों द्वारा बोध कराने की पद्धति में हम लेखन में ध्वन्यात्म तत्व का प्रादुर्भाव देखते हैं। एक बार यदि एक प्रतीक शब्द विशेष से सम्बद्ध हो गया, तो इस शब्द का ध्वन्यात्म लक्षण इस प्रतीक के लेखन के लिए पर्याप्त हो सकता है। चीनी में, जहाँ शब्दों की संरचना में एकरूपता है यह अन्तरण शब्द से शब्द का हुआ है तथा संयुक्त लिपिचिन्ह इस संरचना के अनुसार इकाई रूप में लिखित हैं तथा उनके आकार में भी एकरूपता का निर्वाह होता है। अन्य भाषाओं के लेखन में जहाँ शब्दों की लम्बाई कई प्रकार की है, हमें शब्द प्रतीक मिलते हैं जिनका प्रयोग लम्बे शब्दों के ध्वन्यात्म रूप से समान अंशों के लिए किया जाता है। इस प्रकार मिस्री लोग प्रतीक (mn) 'शतरंज का पट्टा' को द्वित्व करके (mnmn) 'गतिशील होना' का बोध कराते थे। (mc̦) 'झाड़न' के तथा (Dr) 'टोकरी' के संयोजन द्वारा वे (mcdr) 'कान' शब्द लिखते थे। संरचनात्मक वैभिन्न्य के अनुसार, वे शब्दों का बोध सदा एक प्रतीक द्वारा नहीं कराते थे बल्कि शब्दलेखों ध्वन्यात्मचिन्हों तथा निर्धारकों की अन्य व्यवस्थाओं द्वारा कराते थे। इसी प्रकार ऐज्टेक (Aztec) लेखन में स्थान-नाम Teocaltitlan का, जिसका शब्दार्थ 'अच्छे-घर के लोग' है बोध, प्रतीक tentli 'ओठ', otli 'रास्ता' calli 'घर' तथा tlantli 'दाँत' द्वारा कराया जाता था। इन शब्दों में -tli रूप साधक परप्रत्यय है जिसके कारण ये अधिक सम्बोध्य हैं।

इस प्रकार प्रतीकों का अधिक से अधिक स्थायी ध्वनिलेखीय मूल्य हो सकता है। वे ध्वनि लेख बन जाते हैं अर्थात् भाषाई रूप के लिए प्रतीक न रहकर ध्वन्यात्म-रूपों के लिए बन जाते हैं। सामान्यतया इसका परिणाम यह होता हुआ लगता है कि आक्षरिक प्रतीकों का एक समुच्चय

बन जाता है जिनमें से हर एक, एक आक्षरिक ध्वनि का (अथवा बिना आक्षरिक ध्वनि के) जिसके पहले अथवा बाद में अनाक्षरिक ध्वनि आ सकती है, बोध कराता है। प्राचीन मेसोपोटेमिया का कीलाक्षरी लेखन इस स्तर पर पहुंच गया था। इसमें ऐसे प्रतीकों के लिए लिपिचिन्ह थे यथा (ma, mi, mu, am, im, um, muk, mut, nam, tim)। इसके सारे प्रयोगों में, जैसे-जैसे लेखन एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में फैलता गया, शब्द लेखन के लक्षण इसके साथ-साथ फैलते गए। उदाहरण के लिए पुरानी सामी भाषा में ईश्वर के लिए (an) शब्द का प्रयोग होता था। जब बेबीलोनिया वालों में लेखन का प्रयोग सीख लिया, उन्होंने सुमेरी प्रतीक को शब्दलेख के रूप में बेबिलोनियन शब्द (ilu) 'ईश्वर' के लिए लिया तथा एक निर्धारक के रूप में भी लिया जिसे वे देवताओं के नामों के पहले लिखते थे। जब कभी एक प्रकार की लेखन-व्यवस्था किसी नई भाषा में अपनाई जाती है, इस प्रकार की व्यवस्था प्रायः बनी रहती है। इस प्रकार अंग्रेजी में लैटिन संक्षिप्तियाँ यथा 'तथा' 'and' के लिए & : et :, 'इत्यादि' के लिए etc. (लैटिन etcetera), 'अर्थात्' के लिए i.e. (लैटिन id est), 'उदाहरणार्थ' के लिए e.g. (लैटिन exempli gratia), 'पौण्ड' के लिए lb. (लैटिन libra) इत्यादि मिलती हैं।

बेबिलोनियन लेखन में आक्षरिक सिद्धान्त का कभी भी पूरी तरह निर्वाह नहीं होता रहा। इस प्रकार एक अकेले प्रतीक (उर्ध्वाधर कील जिसकी बाईं ओर दो तिरछे कील होते हैं) से इन अक्षरों (ud, ut, uT, tam, par, pir, lax, xiʃ) का बोध होता था तथा शब्द लेखन पद्धति के अनुसार शब्द (u:mu) 'दिन' (ʃamʃu) 'सूरज तथा (piçɪ) 'सफेद'। इसके प्राचीन फारसी रूप में कीलाक्षरी लेखन व्यवस्था अपेक्षतया थोड़े से प्रतीकों के साथ एक वस्तुतः अक्षरमाला में विकसित हुई थी तथा प्रत्येक लिपिचिन्ह एक अक्षर का बोधक हो गया था। सामान्यतः लेखन की आक्षरिक व्यवस्था का क्षेत्र विस्तृत है तथा इसकी पद्धति सरल लगती है। साइप्रस द्वीप के प्राचीन ग्रीक लोग लगभग 65 प्रतीकों की अक्षरमाला प्रयोग में लाते थे। जापानी लोग बड़े पैमाने पर चीनी शब्दाक्षरों का उपयोग करते थे किन्तु उसे दो अक्षरमालाओं से सम्पूर्ण करते थे जो दोनों ही चीनी लिपिचिन्हों से व्युत्पन्न थे। गिनी की वाई (vai) के लिए कहा जाता है कि उसमें 226 आक्षरिक चिन्हों की व्यवस्था है। आधुनिक लेखनपद्धति से परिचित व्यक्ति जब अपढ़ लोगों के लिए एक व्यवस्था प्रस्तुत करते हैं तो उन्हें आक्षरिक लेखन व्यवस्था

का शिक्षण सरलतम प्रतीत होना है । इस प्रकार सिक्वाय (sikwaya) एक चिरोकी ने अपनी भाषा के लिए 85 आक्षरिक प्रतीकों की व्यवस्था की । फॉक्स इण्डियनों की लेखन पद्धति में बहुत सी अक्षरमालाएं syllabaries हैं और सभी अंग्रेजी लिपि रूप पर आधारित हैं तथा क्री (Cree) की अक्षरमाला साधारण रेखागणितीय लिपिचिन्हों से बनी हुई है।

17.5 ऐसा लगता है कि लेखन के इतिहास में केवल एक बार, आक्षरिक सिद्धान्त से आगे कुछ विकास हुआ है । मिस्री गूढ़ाक्षरिक (hieroglyphic) तथा पुरोहिती (hieratic) प्रतीकों में से कुछ प्रतीकों का व्यवहार उन अक्षरों के लिए होता था जिनमें केवल एक व्यंजन होता था। इनके व्यवहार में सहवर्ती स्वरों का अन्तर अपेक्षित था तथा फलित भ्रान्तियों का निराकरण शब्दाक्षरों तथा निर्धारकों द्वारा किया जाता था । इन प्रतीकों में से एक-व्यंजनी अक्षरों के लिए कुल 24 प्रतीक थे । बहुत आरम्भ काल में ही निश्चित रूप से ई० पू० 1500 से पूर्व—सामी वक्ता लोग मिस्री लेखन से परिचित हो गए तथा उन्हें यह सूझ गया कि अपनी भाषा के शब्दों को 24 सरलतम मिस्री प्रतीकों से लिपिबद्ध करें। यह इसलिए सुकर था क्योंकि सामी की संरचना प्रत्येक धातु का अभिज्ञान अपनी व्यंजन प्रणाली (§14.8) से कराती है । एक पाठक को स्वरों के अनिर्देश से शब्द-साधन के कुछ लक्षणों में ही भ्रम हो सकता था किन्तु यहाँ भी अधिकांश स्थितियों में वह संदर्भ से अनुमानित कर सकता था ।

इस सामी लेखन के हमारे प्राचीनतम उदाहरण सिनाई अभिलेखों में मिलते हैं जिनका काल लगभग ई० पू० 1800 से 1500 के बीच का है । एक कुछ बाद की लिपिचिन्हों की लेखन पद्धति दक्षिणी सामी नाम से जानी जाती है । यह प्राचीन अभिलेखों से तथा आधुनिक काल में ईथियोपियाई वर्णमाला से अभिज्ञापित होती है । दूसरे, उत्तरी सामी प्रणाली फोनीशी हिब्रू तथा आर्मेनियन लोगों द्वारा व्यवहार में लाई जाती थी। ऐरमेई प्रणाली के अन्तर्गत, आधुनिक हिब्रू, सिरियाई तथा आधुनिक अरबी लेखन प्रणाली आ जाती है । इसके फोनीशी तथा ऐरमेई प्रकारों में से उत्तरी सामी लिपिचिन्हों का प्रसार अनेक परिवर्तनों के साथ एशिया तथा यूरोप में हुआ है ।

लगता है भारत में व्यवहार होने वाली अक्षरमाला अंशतः ऐरमेई तथा अधिकाँशतः फोनीशी लेखन से व्युत्पन्न हुई है । भारतवर्ष की भाषाओं में स्वर स्वनिम का निर्देश आवश्यक था । भारतीय व्यंजन धन (+) (a):

ह्रस्व 'अ' : के लिए प्रत्येक सामी लिपिचिन्ह का व्यवहार करते थे और फिर एक अतिरिक्त चिन्ह : उपचिन्ह : की व्यवस्था की, जिसे प्रतीक के साथ, व्यंजन के साथ किसी अन्य स्वर का संयोग सूचित करने के लिए जोड़ते थे। इस प्रकार एक साधारण चिन्ह का अर्थ है 'ब' तथा चिन्ह का अन्य उपचिन्हों के साथ 'बा' 'बि' 'बी' 'बु' 'बू' इत्यादि उच्चारण होता है। इससे भी आगे भारतीयों ने एक उपचिन्ह: हलन्त बनाया जिसका अर्थ होता है कि व्यंजन के साथ स्वर नहीं है तथा बिना व्यंजनों के स्वरों के लिए प्रतीकों की एक सारिणी बनाई। साथ ही जब तक कि हर व्यंजन के लिए एक प्रतीक नहीं हो गया, वे मूल-प्रतीकों की संख्या भी बढ़ाते गए। इस प्रकार वे एक ऐसी व्यवस्था तक पहुँचे जहाँ उनके भाषण रूपों को पूर्ण ध्वन्यात्म यथार्थता के साथ लेख बद्ध किया जा सके।

17.6 सामी लेखन के समीपी तथा दूरवर्ती—सभी शाखाओं में से, हमें केवल एक का पता चलता है जिसके अन्तर्गत अंग्रेजी (रोमन) लेखन व्यवस्था आती है। प्राचीन ग्रीक लोगों ने फोनीशी व्यवस्था को अपनाया तथा उसमें भारी परिवर्तन ला दिया। फोनीशी प्रतीकों में से कुछ के द्वारा ग्रीक के लिए अपरिचित व्यंजनों वाले अक्षरों का बोध होता था। इस प्रकार A से स्वर धन (+) श्वासद्वयीय स्पर्श का बोध होता था, O से काकलीय संघर्षी धन स्वर का, तथा I से व्यंजन (j) धन स्वर का। ग्रीकों द्वारा इन अतिरिक्त अनावश्यक प्रतीकों का प्रयोग स्वर मूल्यों का बोध कराने के लिए होता था। दो प्रतीकों का संयोग यथा TA, अथवा TO अथवा TI एक अकेले अक्षर का बोध कराने के लिए होता था। इस प्रकार के लेखन के स्वनिमात्मक अथवा वर्णिक (alphabetic) सिद्धान्त—एक ध्वनि के लिए एक प्रतीक व्यवहार के सिद्धान्त पर पहुंचे। उनमें पूर्ण यथार्थता की कमी केवल इसलिए रह गई कि वे स्वरों के लिए पर्याप्त प्रतीक नहीं बना पाए। उन्होंने कभी भी दीर्घ तथा ह्रस्व के बीच अन्तर नहीं किया जो उनकी भाषा के स्वरों में भेदक था (a, i, u)। उन्होंने बाद में उपचिन्हों की पद्धति का प्रयोग स्थान तथा शब्द-बलाघात के दो गुणों को दिखाने के लिए किया तथा वाक्य मूर्छन दिखाने के लिए कुछ विराम-चिन्हों (punctuations) का प्रयोग किया।

ग्रीक लोगों से वर्णमाला अन्य भूमध्यसागरीय लोगों तक प्रसारित हुई। रोमन लोगों ने प्रत्यक्षत: इत्रस्कल लोगों के माध्यम से इसे प्राप्त किया। मध्य काल में ग्रीक लोगों से यह बल्गेरियन, सर्बियन तथा रूसी लोगों तक पहुंची तथा रोमन लोगों से प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से यूरोप के अन्य राष्ट्रों तक पहुंची।

ऊपरी तौर से एक नई भाषा में इस प्रकार लेखन का विस्थापन होता है कि कुछ द्विभाषी लोग जो एक लिपि में लिखना जानते हैं, दूसरी भाषा को भी उसी जानी हुई लिपि में लिखते हैं। जो कुछ भी कमी पहली भाषा की वर्णमाला में रहती है, वह बनी रह जाती है तथा प्रथम भाषा के लिए आवश्यक किन्तु नई भाषा के लिए अनावश्यक अक्षर भी बने रह जाते हैं, तथा नई भाषा के अतिरिक्त स्वनिमों के लिए वर्णों के व्यवहार में असफल रह जाते हैं। दूसरी ओर, वह अथवा उसका उत्तराधिकारी इतना चतुर हो सकता है कि वह नए लिपिचिह्नों की खोज से अथवा अनावश्यक लिपिचिह्नों के उपयुक्त प्रयोग द्वारा, अथवा अर्धध्वन्यात्म विधि द्वारा, जैसे एक स्वनिम के लिए वर्णसंयोजन के संयोग द्वारा, वह इन कमियों को दूर कर सके।

लैटिन का ध्वन्यात्म ढाँचा ऐसा था कि ग्रीक वर्णमाला, जैसी कि रोमनों को मिली थी (सम्भवतः इत्रस्कनों से) लगभग पर्याप्त थी। एक कमी को, अर्थात् प्रतीक C का (k) और (g) दोनों ही के लिए प्रयोग को, उन्होंने (g) के लिए एक आपरिवर्तित प्रतीक (G) की खोज द्वारा पूरा किया। एक और अधिक गम्भीर समस्या दीर्घ और ह्रस्व स्वर के बीच अन्तर बोधक प्रतीक के अभाव की थी। एक वर्ण पर रेखा लगाने की प्रवृत्ति अथवा दीर्घता के लिए एक वर्ण का द्वित्व, कभी भी बहुप्रचलित नहीं रहा। शब्द-बलाघात के निर्देश की आवश्यकता ही नहीं थी क्योंकि लैटिन में यह मुख्य स्वनिमों के अनुसार स्वतः व्यवस्थित हो जाता था। पता नहीं कब और कहाँ साधारण ग्रीक अथवा लैटिन पद्धति से भिन्न आकृति में जर्मन भाषी लोगों ने ग्रीक-रोमन वर्णमाला अपनाई। वर्णमाला का यह रूप, जो रूनी (runes) नाम से जाना जाता था, छोटे अभिलेखों के लिए प्रयुक्त होता था, मुख्यतः जादुई या धार्मिक स्वभाव के यथा स्मृतिलेख (epitaph)। रूनी का उपयोग निपुणता से नहीं हो रहा था किन्तु उसके अन्तर्गत विशिष्टतः जर्मन स्वनिमों (θ, w, j) के लिए चिह्न ले लिए गए थे। वर्णमाला का परम्परानुमोदित क्रम भी ग्रीकरोमन प्रतिरूप (prototype) से भिन्न था, यथा (f u θ a r k g w h n i j p e z s t b e m l η o d)। इस कारण से रूनी वर्णमाला को futhark भी कहा जाता है। प्राचीनतम रूनी अभिलेख का काल 300 ई० माना जाता है। बाद में जब जर्मन भाषी लोग रोमनों तथा आयरिक मिशनरियों द्वारा ईसाई बना दिए गए, तो वे रूनी त्याग कर लैटिन वर्णमाला का प्रयोग करने लगे। फिर भी गाथिक पादरी युलफिला (Ulfila) जिन्होंने

चौथी शताब्दी में अपने बायबिल अनुवाद के लिए एक वर्णमाला चलाई, बहुत से रूनी वर्णों को बनाए रखा और आठवीं शती में जब प्राचीन अंग्रेज पुजारियों ने, अंग्रेजी लिखना आरंभ किया, उन्होंने (θ) तथा (w) के लिए रूनी लिपिचिह्न को बनाए रखा क्योंकि लैटिन से इस प्रकार का कोई भी लिपिचिह्न उन्हें नहीं मिला था। यह तो नार्मन विजय के बाद हुआ कि अंग्रेज लेखक इन वर्णों को छोड़कर th तथा vv युग्मों का प्रयोग करने लगे। इसी (vv) से w (ω) विकसित हुआ। लैटिन के पाँच स्वर वर्ण अंग्रेजी के लिए कभी भी पर्याप्त नहीं रहे हैं। दूसरी ओर अंग्रेजी में कुछ निष्प्रयोजन वर्ण c, q तथा x बने हुए हैं। आधुनिक अंग्रेजी लेखन में स्वनिम (a :, ε, ɔ, θ, ð, ʃ, ʒ, tʃ, ŋ) के लिए तथा बलाघात (stress accent) के लिए कोई प्रतीक नहीं है। यह अभाव अंशतः द्विलेखों (diagraphs) यथा th, sh, ch, ng से पूरा किया जाता है।

कभी-कभी हम अंग्रेजी वर्णमाला को किसी भाषा की ध्वन्यात्म-व्यवस्था के पूण अनुकूल पाते हैं। 9वीं शती में महात्मा सिरील (Cyril) तथा मेथोड (Method) ने बहुत से अतिरिक्त वर्णों को ग्रीक वर्णमाला में जोड़ दिया जिससे कि प्राचीन बलगेरियन भाषा के सारे मूल स्वनिम पूरी तौर पर इसके अन्तर्गत आ सकें। यह स्लावी वर्णमाला, अपने आधुनिक रूप में स्लावी भाषा के पूर्ण अनुकूल है। सर्बियाई के लिए कुछ अतिरिक्त लिपिचिह्न जोड़ दिए गए हैं। आधुनिक अनेक भाषाओं में लैटिन वर्णमाला के उपयुक्त रूप हैं। बोहेमियाई तथा फीनी भाषाओं में उपयुक्तता लाने के लिए उपचिन्हों (diacritical marks) का प्रयोग हुआ है तथा पोली में द्विलेखों (diagraphs) का यथा (tʃ) के लिए cz तथा (ʃ) के लिए sz।

17.7 आक्षरिक लेखन का सिद्धान्त—प्रत्येक स्वनिम के लिए एक प्रतीक—वास्तव में किसी भी भाषा के लिए लागू होता है। वास्तविक व्यवस्थाओं की न्यूनताएँ लिखने वालों की रुढ़वादिता के कारण हैं। लिखने वाला अपने भाषण की ध्वन्यात्म व्यवस्था का विश्लेषण नहीं करता, केवल अपने पूर्ववर्ती लोगों को जिस प्रकार लिखते हुए देखा है प्रत्येक शब्द लिखता जाता है। जब एक जाति की लिखने की कला, पूरी तरह स्थायी बन जाती है, तब न केवल शब्दों की वर्तनी, बल्कि कोषीय और व्याकरणिक रूप भी, लिखित आलेख के लिए परम्परानुमोदित बन जाते हैं। इस प्रकार एक साहित्यिक बोली

(literary dialect) लिखने वालों की वास्तविक बोली से निरपेक्ष होकर आलेख के लिए सुस्थापित तथा अपरिहार्य बन सकती है।

समय के साथ ही वह रुढ़वादिता अन्य दिशा में भी काम करती है। भाषण रूप में भाषाई परिवर्तन हो जाने पर भी लेखन-परम्परा अपरिवर्तित बनी रहती है। उदाहरण के लिए लैटिन लेखन में C वर्ण (k) स्वनिम का बोध कराता था। जब आयरिश और अंग्रेजी लिखने वालों ने लैटिन वर्णमाला अपनाई तो वे इस प्रतीक का प्रयोग अपने (k) "स्वनिमों" के लिए करने लगे। प्राचीन अंग्रेजी में cu (ku:) 'गाय' की "cinn (kinn) "ठुड्डी" की तथा scip (skip) "जहाज" की वर्तनी थी। बाद में लैटिन की अनेक बोलियों में स्वनिम K में विशेष परिवर्तन हुए। इटली में अग्रस्वरों के पूर्व (k), (tʃ) बन गया। उदाहरण के लिए लैटिन ('kentum) "सौ" इटैलियन में (tʃɛnto) बन गया। रोमन लोग इसे centum लिखते थे। इटैलियन अभी भी cento लिखते हैं। फ्राँस में अग्रस्वर के पूर्व लैटिन (k), (s), बन जाता था यथा (sã) "सौ" में, किन्तु फ्रेंच में आज भी cent लिखा जाता है। अंग्रेजी में (s) उच्चारण के साथ विदेशी शब्द फ्रेंच से लिए गए हैं किन्तु साथ ही परस्परागत वर्तनी में (c) के साथ यथा cent (sent) भी। लैटिन में वर्ण A, E, I, O, U का प्रयोग स्वनिमात्मक (a, e, i, o, u) प्रतिरूप के लिए हुआ था तथा वे अंग्रेजी में इसी प्रतिमान के साथ ले लिए गए थे। इस प्रकार मध्यकालीन अंग्रेजी लेखन में लेख name से ('na:me) "नाम" का बोध होता था। 15वीं शती में अंग्रेजी वर्तनी परम्परागत रूप में स्थिर हो गई। फिर भी, तभी से अंग्रेजी के स्वर स्वनिमों में बहुत परिवर्तन हुआ है। परिणाम यह हुआ है कि अंग्रेजी में लैटिन में स्वर वर्णों का प्रयोग बिल्कुल नए मूल्य के साथ नहीं करते हैं यद्यपि इससे कुछ क्षति नहीं होगी—बल्कि असम्बद्ध ढंग से करते हैं। अंग्रेजी में वर्ण A का प्रयोग name, hat, all, far लेखों में होता जा रहा है। यद्यपि अब इन शब्दों में बिल्कुल ही भिन्न आक्षरिक स्वनिम प्रयुक्त होते हैं। वे ध्वनियाँ जो अंग्रेजी वर्तनी में स्वाभाविक बनते समय तक उपस्थित थीं, किन्तु भाषाई परिवर्तन के कारण लुप्त हो गई हैं, अब भी अंग्रेजी में मूक वर्णों द्वारा लिखी जाती हैं यथा name, know, gnat bought, would में।

यदि एक बार वर्तनी व्यवस्था, उच्चारित ध्वनियों के संबन्ध में पुरानी

हो गई तो विद्वान लिपिकों द्वारा छद्म-आर्ष वर्तनी के आविष्कार होने की सम्भावना है। debt, doubt, subtle शब्दों में, पुरानी फ्रेंच में जहां से अंग्रेजी में अपनाई गई (b) -ध्वनि नहीं थी तथा अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों ही भाषाओं में dette, doute, sutil लिखा जाता था। b के साथ की वर्तमान वर्तनी उन लिपिकों द्वारा आविष्कृत हुई जो फ्रेंच शब्द debitum, dubito, subtilis के अति प्राचीन लैटिन रूपों को जानते थे। isle का स्वर्ण प्राचीन फ्रेंच वर्तनी isle को प्रतिभासित करता है (लैटिन insula से)। यद्यपि जब यह शब्द अंग्रेजी में लिया गया था इसमें (s) ध्वनि नहीं थी :(आधुनिक फ्रेंच ile(i:l) से तुलना करें :) तथा वर्तनी ile सर्वथा उपयुक्त थी। लिपिकों ने केवल (s) के साथ वर्तनी को केवल अपनाया ही नहीं बल्कि (s) वर्ण को तदनुरूप दो शब्दों में जहां पहले (s) ध्वनि कभी नहीं थी, यथा तद्देशी अंग्रेजी (native English) island (प्राचीन अंग्रेजी iglond से) तथा फ्रेंच से आगत शब्द aisle (लैटिन āla से फ्रेंच aile) में प्रयोग करने लगे। उन लोगों ने जिन्होंने रूनी वर्ण को प्राचीन अंग्रेजी लेखन में देखा था किन्तु इसका मूल्य (θ) नहीं जानते थे, इसे वर्ण y का रूप मान लिया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अव्यय (Article) the प्राचीन अंग्रेजी में ye था।

17.8 इन सारी बातों से यह स्पष्ट है कि लिखित आलेखों द्वारा अतीत के भाषण रूप का अधूरा तथा प्रायः विकृत रूप मिलता है जिसकी व्याख्या तथा संकेतवाचन के लिए अधिक श्रम करना पड़ता है। आरम्भ में लिखित चिन्हों के शब्दलेखीय (logographic) अथवा ध्वनिलेखीय मूल्य अनजाने रह सकते हैं। इस दशा में, संकेत वाचन की समस्या कभी-कभी निराशाजनक हो सकती है। सबसे अधिक सहायता द्विभाषी अभिलेखों से मिलती है जिनमें ऐसी लिपि के साथ जिसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है किसी परिचित भाषा में भी लिखित रूप मिलते हैं। भाषा का अथवा अभिलेख के विषय की वस्तु का थोड़ा बहुत ज्ञान होने से भी सहायता मिलती है। 1802 में जार्ज फ्रेडरिक ग्रोटफेन्ड (Georg Friedrich Grotefend) प्राचीन फारसी में लिखित एक कीलाक्षर अभिलेख के संकेत-वाचन में सफल हुए और 19वीं शताब्दी के मध्य में कृतिकारों का एक सिलसिला (:ई० हिन्कस, रोलिन्सन, ओपर्ट E. Hincks, Rawlinson, Oppert) ही दिखाई पड़ता है जिन्होंने बेबिलोनियाई-असीरियाई का संकेत-वाचन किया। इन दोनों ही उदाहरणों में संकेत वाचकों ने संबंधित भाषाओं के ज्ञान का कुशल उपयोग किया। अन्य भाषाओं के कीलाक्षर लिखित भाषण

रूपों : वान (van) की भाषा सुमेरी तथा हित्ताईः का संकेत-वाचन हुआ इसके लिए द्विभाषोक्ति भाषणरूप, यथा सुमेरी असीरियाई तथा हित्ताई में, शब्दकोष के तरह की शब्द-सूची के हम ऋणी हैं। 1821 में जीन फ्रांसिस (Jean François Champollion) ने प्राचीन मिस्री लेखन का संकेत-वाचन प्रसिद्ध रोसेटा पत्थर (Rosetta Stone), जो 1799 में फ्रेंच को मिला और अब ब्रिटिश म्युजियम में है, के प्रयोग द्वारा किया जिसके समानान्तर बाद के मिस्री तथा ग्रीक लिखित रूप में गूढ़ाक्षर अभिलेख मिलते हैं। 1893 में विल्हेम थोम्सन (Vilhelm Thomsen) ने प्राचीन तुर्की आर्खोन खुदाई का गूढ़ वाचन किया। थोम्सन ने देखा कि लेखन आक्षरिक था तथा भाषा तुर्की परिवार की थी। हित्ताई तथा प्राचीन क्रीट के गूढ़ाक्षर-समान अभिलेखों का भी संकेत-वाचन नहीं हुआ है। मध्य अमेरिका के मय (Maya) चित्र लेखन के केवल कुछ ही लिपिचिन्हों का संकेत-वाचन हुआ है।

यदि लेखन व्यवस्था परिचित है किन्तु भाषा अपरिचित है तो स्थिति कुछ अच्छी होती है। इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण प्राचीन इटली की इत्रस्कन भाषा है। हमें ग्रीक वर्णमाला में ढेर से लिखित भाषण रूप प्राप्त हैं, किन्तु हम उनकी व्याख्या व्यक्तिवाचक संज्ञाओं तथा थोड़े और शब्दों के आगे नहीं कर पाते। हमें ऐसे चक्रक (disc) मिलते हैं जिन पर प्रथम छह संख्याएं मुख पर ही लिखित हैं किन्तु उन संख्याओं का क्रम निश्चित नहीं किया जा सकता है। ऐशिया माइनर की लिडीयाई (Lydian) खुदाई ऐरमेई तथा लिडीयाई (Lydian) द्विभाषांकित (text) की सहायता से ही पठनीय है। उसकी वर्णमाला ग्रीक है तथा भाषा ऊपर से इत्रस्कन से संबंधित है।

17.9 जब लिपि तथा भाषा दोनों ही बोधगम्य हों, उस स्थिति में वास्तव में लिखित भाषण रूप से ही ध्वनि, व्याकरण तथा शब्द संग्रह को सीखना हमारा उद्देश्य होता है। प्राचीन लिपि के लिपिचिन्हों का ध्वन्यात्म मूल्य निश्चित रूप से कभी भी नहीं जाना जा सकता। इस प्रकार प्राचीन ग्रीक, लैटिन, गॉथिक तथा प्राचीन अंग्रेजी प्रतीकों की वास्तविक ध्वनि अंशतः अनिश्चित है। जब लिपि रुढ़ तथा अध्वन्यात्म हो जाती है, लिपिकों की त्रुटि अथवा असामान्य शब्दों के लिखने की विधि, वास्तविक ध्वन्यात्म मूल्य की सूचना दे सकती है। अंग्रेजी के पुराने हस्तलेखों में 9वीं शती से 11वीं शती तक रूप-साधक व्यवस्था बलाघातहीन अक्षर के स्वरों में विशिष्टता तथा

अन्त्य m और n की उपस्थिति के साथ दिखाई पड़ती है। किन्तु कभी-कभी लिपिकों की त्रुटि से इस तथ्य की, कि 10वीं शताब्दी में अधिकांश स्वर (e) में परिवर्तित हो गए थे तथा अन्त्य (m) और (n) लुप्त हो गए थे, सूचना मिल जाती है। उदाहरण के लिए इस प्रकार की त्रुटियां हैं—सामान्य worda के लिए worde वर्तनी "शब्दों का", सामान्य fremman के लिए fremme "बनाना", godum के लिए gode "अच्छे लोगों को"। जब एक अंग्रेजी लिखने वाला 15वीं शताब्दी में behalf की वर्तनी बिना l के लिखता है, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इस शब्द में l का उच्चारण नहीं होता है, यद्यपि प्रथा अभी तक l लिखने की है। तथाकथित उल टी वर्तनी की दशा भी यही है। प्राचीन अंग्रेजी के light, bought, शब्दों में (x) ध्वनि थी जिसका आभास आज भी gh वर्तनी से मिलता है। जब हम deleite शब्द को देखते हैं (प्राचीन फ्रेंच deleiter से आगत), जिसमें (x) ध्वनि कभी नहीं थी तथा वर्तनी थी delight, ऐसी स्थिति में हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि light जैसे शब्दों में (x) ध्वनि कभी नहीं उच्चारित होती थी। लिखने वालों के लिए gh स्वरगुरा निर्देशक केवल एक मूक अंकन था।

लिखित आलेखों के भाषाई विश्लेषण में एक गम्भीर तत्त्व है उनका संचारण। मुख्य रूप से पत्थरों अथवा धातुओं के ऊपर की गई खुदाइयाँ अथवा मिट्टी पर की गई खुदाइयां यथा कीलाक्षर लेख (text), सामान्यतः मौलिक संकेतन हैं। हमें केवल एक लिपिक की वर्तनी अथवा श्रुतलेखन की त्रुटियों की गणना करने की आवश्यकता है। फिर भी अधिकांश लेखन कार्य नश्वर वस्तुओं पर किया गया है और हमारे सामने प्रतिलिपि होते-होते पहुंचा है। ग्रीक और लैटिन के हस्तलेख मध्यकाल के हैं, प्रायः उत्तर मध्यकाल अथवा आदि आधुनिक काल के। केवल कुछ अंश ही मिस्र की रेत में भोजपत्रों पर बचे हैं। यह दुर्लभ सौभाग्य है जो हमें प्राचीन लिखित भाषा के आल्फ्रेड के हतेन (Hatton) हस्तलेख, पोपग्रेगोरी के 'पेस्टोरेल केयर' (Pastoral care) का ग्रेट के अनुवाद जैसे तत्कालीन हस्तलेख प्राप्त हैं। प्रतिलिपि करते हुए लिपिकों ने केवल भूल ही नहीं की, विशेष रूप से जहाँ जहाँ कुछ उनकी समझ में नहीं आया, उन्होंने उसे विकृत भी कर दिया, कहीं भाषा सुधार के लिए, तो कहीं विषय-वस्तु झुठलाने के लिए। प्राचीन लेखन पद्धति का अध्ययन, पुरातन लिपिशास्त्र तथा एक अथवा अनेक अधूरी प्रतिलिपियों से प्राचीन लिखित भाषा के पुनः संरचन की तकनीक, पाठालोचन विज्ञान की एक अलग

शाखा के रूप में विकसित हुई है। दुर्भाग्यवश कहीं-कहीं पाठालोचकों में भाषाशास्त्र ज्ञान का अभाव रहा है। प्राचीन ग्रंथों के मुद्रित संस्करण भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से मूल्यवान् हस्तलेखों में प्राप्त रूपों की सूचना के देने में असमर्थ रहे हैं।

कभी-कभी ग्रंथों की, जो हमारे लिखित अभिलेखों में देखने को मिलते हैं, वर्तनी नई वर्णमाला से अथवा नई लिपि व्यवस्था द्वारा पुनः बनाई गई है। हमारे प्राचीन ग्रीक होमरिक कविताओं तथा आवेस्ता के लिखित भाषा के साथ यही स्थिति है। ऐसी स्थिति में हम प्रयत्न करते हैं कि आदिम वर्तनी की पुनः संरचना करें तथा परम्परागत लिखित भाषा के भ्रामक तथा दोषपूर्ण लक्षणों को ढूँढ निकालें।

17.10 लिखित आलेखों के भाषाई विश्लेषण में कभी-कभी सहायक कुछ प्रासंगिक विषय हैं। रचना के रूपों में जिसे हम छन्द के अन्तर्गत वर्गीकृत करते हैं, लेखन कुछ विशेष ध्वन्यात्म ढांचों में अपने को सीमित रखता है। उदाहरण के लिए आधुनिक अंग्रेजी काव्य में लेखक (कवि) अपनी शब्दावली को ऐसा रूप देता है कि बलाघात स्वनिम कुछ निश्चित अन्तराल के साथ आता है तथा वे समानान्त शब्द बलाघातयुक्त आक्षरिक तक युग्मों के साथ अथवा कुछ और बड़ी श्रेणियों में पुनः कुछ विशेष अन्तराल के साथ उपस्थित होते हैं। इस प्रकार यदि हम जानते हैं कि एक कवि ने एक परम्परागत छन्द-योजना में रचना की है, तो हम उसके तुक वाले शब्दों से बहुत सी सूचना इकट्ठी कर सकते हैं जो वर्तनी में नहीं दिखाई पड़ सकती है। चौसर ने तुक बैठाया–आजकल की वर्तनी में यदि उसका उल्लेख करें –mean के साथ clean, किन्तु keen, queen, green नहीं, वह प्रत्यक्षरूप से इन दो श्रेणियों के शब्दों में भिन्न स्वरों का उच्चारण करता था। दूसरी ओर असम्बद्धताएं समानरूप से मिटती जा रही हैं। जब एलसेशियन कवि ब्रान्ट (Bront) 15वीं शताब्दी के अन्त में not शब्द के लिए तुक बैठाता है, एलसेशियन रूप [nit] का, उदाहरण के लिए, Bitt [bit] "प्रार्थना" से तुक बैठता है, तथा आधुनिक मानक जर्मन रूप nixt यथा उदाहरण के लिए Geschicht [ge'ʃixt] "कहानी" के साथ, तो हम जानते हैं कि उसके काल में आधुनिक रूप nicht [nixt], शब्द के प्रान्तीय रूप के साथ ही प्रचलित हो चुका था। यहां तक कि यदि छन्दों का प्रयोग

ध्वन्यात्म दृष्टि से उनके झूठे पड़ जाने पर भी होता है यथा आधुनिक अंग्रेजी कविता में move, love अथवा scant : want परम्परा का अध्ययन रुचिकर हो सकता है।

पद्य के अन्य प्रतिरूपों से हम इसी प्रकार की अनुमिति पर पहुँचते हैं। पुराने जर्मन काव्य में, उच्च बलाघातयुक्त शब्द अनुप्रासी शृंखलाओं में एक ही आदिव्यंजन के साथ आते थे यथा house and home, kith and kin में। तदनुसार जब प्राचीन आइसलैंडी काव्य की एडिक कविताओं में हमें योग्य ['wega, 'vega] "मारना" मिलता है जिसका [rejʒr] के साथ अनुप्रास है, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि वे आदमी जिन्होंने यह अनुप्रास चालू किया बाद वाले शब्द का उच्चारण आदि [wr-] के साथ करते थे यद्यपि हमारे हस्तलेखों की वर्तनी में बाद की भाषा के अनुसार [w] अब नहीं दिखाई पड़ता। ग्रीक तथा लैटिन काव्य में दीर्घ तथा ह्रस्व अक्षरों का आवर्तीक्रम व्यवस्थित कर दिया गया था। एक अक्षर जिसमें एक दीर्घस्वर अथवा एक संध्यक्षर अथवा कोई स्वर जिसके बाद एकाधिक व्यंजन आते हों दीर्घ कहा जाता था। इस प्रकार पद्य में शब्दों के स्थान से स्वरमात्रा का पता चलता है जो केवल आंशिक रूप से ग्रीक लिपि से प्रदर्शित होती है तथा लैटिन लिपि में जो बिलकुल ही नहीं दिखाई पड़ती।

लिखित अभिलेखों के विश्लेषण की दिशा में, कभी-कभी एक भाषणरूप की एक भाषा से दूसरी भाषा में अंकन से भी सहायता मिलती है। ईस्वी सन् के आरंभ में हमें ग्रीक लिखित भाषा में Caesar का नाम kaisar की तरह लिखा हुआ मिलता है। क्योंकि ग्रीक भाषा में [k] का [tʃ] में अथवा इस प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है तथा तदनुसार ग्रीक k से सदा स्वनिम [k] प्रतिरूप का बोध होता रहा। इस अंकन से यह सम्भावना होती है कि लैटिन में उस समय भी [k-] ध्वनि बनी हुई थी। बौद्ध वाङ्मय के भारतीय-आर्य नामों के प्राचीन चीनी प्रतिलेखन चीनी शब्दलेखीय प्रतीकों से सम्बद्ध ध्वनियों के विषय में सूचना देते हैं।

अन्त में, लिखित आलेखों में भाषाशास्त्रीय विवरण मिल सकते हैं यथा संस्कृत व्याकरण तथा कोष (§ 1.6) में। हिन्दू बड़े अच्छे ध्वनिशास्त्री थे तथा उन्होंने लिखित प्रतीकों का आंगिक विश्लेषण किया। फिर भी हमें बहुधा अपनी लिखित भाषा (साहित्य) के प्रति संदेह रखना पड़ता है। लैटिन

वैयाकरण भाषण-ध्वनियों के सम्बन्ध में बहुत कम सहायता दे पाते हैं। आरम्भिक आधुनिक काल के अंग्रेजी ध्वनिशास्त्रियों ने इसी प्रकार वर्तनी का ध्वनि से घपला करा दिया तथा अपने काल के वास्तविक उच्चारण का बहुत ही घटिया निर्देशन दिया है।

अध्याय 18

तुलनात्मक पद्धति

18.1 हम अध्याय 1 में देख चुके हैं कि कुछ भाषाएं परस्पर इतना अधिक मिलती-जुलती हैं कि ऐतिहासिक सम्बन्ध मानने से ही उनकी व्याख्या हो सकती है । हां, कुछ अनुरूपताएं सार्वत्रिक घटकों के कारण होती हैं । स्वनिम, रूपिम, शब्द, वाक्य, संरचनाएं, स्थानापत्ति-प्रतिरूप जैसे अभिलक्षण प्रत्येक भाषा में मिलते हैं क्योंकि ये मानव भाषण में स्वभावत: अन्तर्निहित हैं । कुछ अन्य अभिलक्षण, जैसे, संज्ञावत् अथवा क्रियावत् रूपवर्ग, वचन पुरुष, कारक और काल की कोटियां अथवा कर्ता, क्रिया-लक्ष्य, धारक की व्याकरणिक स्थितियाँ--ये सब सार्वत्रिक तो नहीं हैं किन्तु फिर भी इतने अधिक प्रचलित हैं कि इनका गहनतर ज्ञान किसी न किसी दिन इन्हें मानव-जाति की सार्वत्रिक विशिष्टताओं से सम्बद्ध कर देगा । अनेक अभिलक्षण जो कि बहुप्रचलित नहीं हैं, और जिनमें कुछ बहुत विशिष्ट और सूक्ष्म हैं, बहुत दूरवर्ती और पूर्णतया परस्पर असम्बद्ध भाषाओं में मिल जाते हैं, ये अभिलक्षण भी किसी न किसी दिन मानव-मनोविज्ञान पर प्रकाश डालेंगे यह आशा की जा सकती है ।

कुछ अन्य अनुरूपताएं जो भाषाओं के बीच वस्तुत: मिलती हैं बिल्कुल महत्त्वहीन हो सकती हैं । आधुनिक ग्रीक ['mati] "आँख" और मलय [mata] "आँख" ऐसी ही एक अनुरूपता है । यदि हम इन भाषाओं का इतिहास बिल्कुल न जानते होते तो हमें शब्द-कोशों और व्याकरणों के अन्य अनुरूपताओं की खोज करनी होती और फिर अनुरूपताओं की संख्या और उनकी संघटनात्मक स्थितियों को देखते हुए दोनों भाषाओं के ऐतिहासिक सम्बन्ध की संभावनाओं की तौल करनी पड़ती । वास्तव में, ग्रीक और मलय के प्राचीनतर रूपों का हमारा ज्ञान यह बताता है कि "आँख" के लिए प्रयुक्त इन दो शब्दों की अनुरूपता आकस्मिक है । वर्तमान ग्रीक ['mati] प्राचीन [om'mation] "छोटी आँख" का अपेक्षाकृत हाल का एक विकास है और यह शब्द, प्राचीन ग्रीक में एक गौण व्युत्पाद्य के रूप में एक आधारवर्ती शब्द ['omma] "आँख" से सम्बद्ध था । इसके

विपरीत मलय शब्द [mata] का प्राचीन काल में भी यही स्वनीय रूप था जो आज है। फिर भी यदि किसी दिन यह पता लगता है कि ये दोनों भाषाएं सम्बद्ध हैं, तो इतना अवश्य निश्चित है कि सम्बन्ध आदिम भारत-यूरोपीय और आदिम मलय-पॉलिनोशियाई के बीच होगा और "आँख" के लिए प्रयुक्त इन दो आधुनिक शब्दों का इस सम्बन्ध की पुष्टि में कोई हाथ न होगा।

कुछ अन्य अनुरूपताएं भाषणरूपों को दूसरी भाषाओं से उधार लेने (ग्रहण करने) की प्रवृत्ति के कारण हैं। आधुनिक फीनी में abstraktinen "अमूर्त्त" (abstract), almanakka "पंचांग" (almanac), arkkitehti "गृहशिल्पी" architect, ballaadi (ballad) आदि शब्द शब्दकोशों में मिलते हैं। ये सामान्य यूरोपीय वितरण के सांस्कृतिक शब्द हैं जो कि पिछली सदियों में किसी न किसी यूरोपीय भाषा से लिए गए हैं और जो पारस्परिक सम्बन्ध के साक्ष्य नहीं बन सकते हैं। यह सही है कि इस प्रकार परप्रेषण और एक भाषणसमुदाय में भाषाई आदतों की प्रसामान्य रीति में भेद करना सदैव संभव नहीं है तथापि मुख्यतया दोनों प्रक्रियाएं अत्यन्त भिन्न हैं। यदि फीनी-उग्री भाषाओं का सम्बन्ध भारतयूरोपीय भाषाओं से स्थापित भी हो जाए तो भी वह सम्बन्ध उस पुरातन समय से होगा जबकि abstract, almanac आदि शब्द प्रचलित भी न हुए थे।

18.2 इन स्थलों के व्यतिरेक में हम जब यह कहते हैं कि भाषाओं की अनुरूपता वंश-सम्बन्ध (relationship) के कारण है तब हमारा तात्पर्य यह होता है कि ये भाषाएं किसी एक पूर्वकालीन भाषाओं के परकालीन रूप हैं। रोमांस भाषाओं के सम्बन्ध में इस पूर्वजभाषा के अर्थात् लैटिन के लिखित आलेख विद्यमान हैं। जब लैटिन भाषा एक विशाल क्षेत्र पर फैली तो उस क्षेत्र के विभिन्न भागों में लैटिन भाषा में विभिन्न भाषाई परिवर्तन हुए। हम इन विभिन्न भाषणरूपों को "इतालवी" "फ्रेंच", "स्पेनी" आदि कहते हैं। यदि हम इटली की ही पिछले दो हजार वर्ष की भाषा का विकास देखते चलें, तो कोई भी निश्चित घंटा, वर्ष अथवा शताब्दी नहीं निकाल सकेंगे जब हम कह सकें कि "लैटिन" अब "इतालवी" में परिवर्तित हो गई है। इस प्रकार ये नाम पूर्णतया यादृच्छिक हैं। स्थूल रूप से प्रत्येक अभिलक्षण जो लैटिन के वर्तमान क्षेत्रीय रूपों में सर्वनिष्ठ है दो हजार वर्ष

पूर्व की लैटिन में विद्यमान था ; इसके विपरीत जहां लैटिन के वर्तमान रूप भिन्न-भिन्न हैं वहां, कुछ भाषाओं में अथवा सभी भाषाओं में, इस विशिष्ट अभिलक्षण के विषय में पिछले दो हजार वर्षों में कुछ परिवर्तन अवश्य हो चुके हैं। अनुरूपताएं विशेषतः उन अभिलक्षणों में मिलती हैं जो प्रतिदिन की भाषा में सामान्य हैं अर्थात् सर्वसामान्य संरचनाओं में अथवा घनिष्ठ आधारभूत शब्दावली में। इसके अतिरिक्त अन्तरों के अभिलक्षण सुव्यवस्थित वर्गों में और प्रत्येक प्रदेशगत रूप को निजी अभिविशिष्ट रीति से भिन्न करते हुए मिलते हैं।

अधिकांश स्थलों पर हम लोगों को इतनी अधिक सुविधा नहीं मिलती है और हम लोगों को एकरूप पूर्वजभाषा के लिखित आलेख नहीं मिल पाते हैं। उदाहरण के लिए, जर्मनी भाषाएं रोमांस भाषाओं के समान एक दूसरे से मिलती हैं, किन्तु हमारे पास उस समय से कोई भी आलेख नहीं है जब उनमें अन्तर नहीं उत्पन्न हुए थे। फिर भी, **तुलनात्मक-पद्धति** के द्वारा दोनों स्थितियों में वही अनुमान निकाले गए थे। केवल जर्मनी भाषाओं के सम्बन्ध में उन अनुमानों की पुष्टि लिखित आलेखों से नहीं होती है। हम अतीत के किसी काल में **आदिम जर्मनीय** पूर्वज भाषा की सत्ता को मानते हैं किन्तु इस भाषा के भाषारूप हमें केवल अनुमानों द्वारा विदित हुए हैं। हम जब इन रूपों को लिखते हैं तो उनके पूर्व एक तारा चिन्ह लगा देते हैं, जिनका तात्पर्य यह होता है कि परवर्ती रूप अनुमान द्वारा प्राप्त है और इसकी लिखित आलेखों से पुष्टि नहीं हो पाई है।

18.3 उदाहरण के लिए वर्तमान मानक अंग्रेजी, डच, जर्मन, डेनी और स्वेडी में निम्नलिखित शब्दों की तुलना कीजिए :—

	अंग्रेजी	डच	जर्मन	डेनी	स्वेडी
"मनुष्य"	mɛn	man	man	man?	man
"हाथ"	hɛnd	hant	hant	hɔn?	hand
"पैर"	fut	vu:t	fu:s	fo:?ð	fo:t
"अगुली"	fi'ŋgə	'viŋer	'fiŋer	'feŋ?ər	'fiŋer

	अंग्रेजी	डच	जर्मन	डेनी	स्वेडी
"मकान"	haws	hφɥs	haws	hu:?s	hu:s
"शीत ऋतु"	'wintə	'winter	'vinter	'ven?dər	'vinter
"ग्रीष्म ऋतु"	'sʌmə	'zo:mer	'zomer	'sɔmer	ˇsɔmar
"पीना"	driŋk	'driŋke	ˈtriŋken	ˈdregə	'drika
"लाना"	briŋ	'breŋe	ˈbriŋen	'breŋə	ˇbriŋa
'रहता था"	livd	'le:vde	'le:pte	'le:vəðə	ˇle:vde

यह सूची अनिश्चित मात्रा में बढ़ाई जा सकती है। अनुरूपताएँ इतनी अधिक हैं और आधारभूत शब्दावली एवं व्याकरण पर इतनी अधिक व्यापक हैं कि उनकी व्याख्या आकस्मिक अथवा परग्रहण से नहीं की जा सकती है। व्यतिरेक के लिए हमें जर्मनीय वर्ग की बाहर की भाषाओं को देखना होगा, जैसे, हाथ के लिए—फ्रेंच [mɛ] रूसी [ru'ka] फीनी käsi अथवा घर के लिए—फ्रेंच [mezõ], रूसी [dom], फीनी talo.

दूसरा उल्लेखनीय अभिलक्षण जर्मनीय परिवार के भीतर विद्यमान अन्तरों का सुव्यवस्थित वर्गनिबन्धन है। जहां स्वेडी में संयुक्त सुरक्रम है वहां डेनी में काकल्य स्पर्श है ; जहां अन्य भाषाओं में आदिस्थित [f] है, वहां डच में आदिस्थित [v] है; जहां अन्य भाषाओं में (d) है, वहां जर्मन में [t] है। वस्तुतः रूपों की पूरी श्रेणी एक जर्मनीय भाषा से दूसरी भाषा में एक ही वैभिन्न्य दिखलाती है। इस प्रकार शब्द house के विभिन्न आक्षरिक स्वनिम रूपों के पूरे समुच्चय में समानान्तरतः मिलते हैं।

	अंग्रेजी	डच	जर्मन	डेनी	स्वेडी
"मकान"	haws	hφɥs	haws	hu:?s	hu:s
"चूहा"	maws	mφɥs	maws	mu:?s	mu:s
"जू"	laws	lφɥs	laws	lu:?s	lu:s
"बाहर"	awt	φɥt	aws	u:?ð	u:t
"भूरा"	brawn	brφɥn	brawn	bru:?n	bru:n

ये अन्तर स्वयं एक व्यवस्था में हैं, उदाहरणतः अंग्रेजी और जर्मन [aw]

तथा डच [ϕy] का वैभिन्न्य पूरी-पूरी रूप श्रेणियों में मिलता है—हमारी इस धारणा को पुष्ट करता है कि ये रूप ऐतिहासिक रूप में परस्पर सम्बद्ध हैं। तब हम यह मानते हैं कि वैभिन्न्य उन अभिविशिष्ट परिवर्तनों के कारण है जोकि कुछ अथवा सभी सम्बद्ध भाषाओं में हुए थे। यदि हम प्रत्येक प्रदेश की और अधिक बोलियों को भी ध्यान से देखें तो हमें अनेक ऐसी विविधताएं मिलेंगी। अपने उदाहरणों में हमने विशेष रूप से पाया था कि [u:] स्वर वाले रूप, जैसे [hu:s. mu:s] आदि अंग्रेजी, डच, जर्मन प्रदेश की स्थानीय बोलियों में, जैसे स्काच अंग्रेजी में, भी मिलते हैं।

इसके अतिरिक्त इन भाषाओं में विद्यमान लिखित आलेखों से भी यदि हम लाभ उठाएं तो हमें पता चलेगा कि अंग्रेजी और डच-जर्मन के प्राचीनतम लिखित आलेख, जोकि आठवीं-नवीं ईसवीय सदी के हैं, हमारे उदाहरणों में आए रूपों को एकरूपता के साथ लिप्यक्षर u से लिखते थे, जैसे, hus, mus, lus, ut (दक्षिणी जर्मन uz) brun. चूंकि इनके लेखन का आधार लैटिन थी जहां लिप्यक्षर u [u] से प्रदर्शित स्वर को प्रदर्शित करता था, हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि हमारे रूपों के आक्षरिकों की विभिन्नता नवीं सदी में प्रारम्भ नहीं हुई थी और उन दिनों सभी जर्मनीय भाषाओं में आक्षरिक [u] था ; और अन्य प्रमाणों से पता चलता है कि वह स्वर दीर्घ था। तदनुसार हम इस निश्चय पर पहुंचते हैं कि आदिम जर्मनीय-पूर्वज भाषा में लोग इन रूपों को आक्षरिक [u:] के साथ बोलते थे। फिर भी यह ध्यान देने योग्य बात है कि स्वनिम का यह वर्णन केवल पूरक विवरण है ; आदिम जर्मनीय स्वनिम के स्वानिकी गुणों के सम्बन्ध में कुछ भी अनुमान न करने पर भी, समता और विषमता की दिशाओं में संगतियों की नियमितता केवल इस कल्पना द्वारा व्याख्यान हो सकती है कि पूर्वज भाषा का कोई एक स्वनिम house, mouse, आदि रूपों में आक्षरिक स्थिति में था।

18.4 उन अनुमानों से, जहां हमें अधिक सुविधा है अर्थात् पूर्वजभाषा के रूप लिखित आलेख द्वारा प्राप्त हैं, इन अनुमानों की तुलना करना एक रोचक वस्तु है। रोमांस भाषाओं के सादृश्य जर्मनीय भाषाओं के बीच के सादृश्यों से बहुत मिलते हैं।

	इतालवी	लैडी	फ्रेंच	स्पेनी	रूमानियाई
"नाक"	'naso	nas	ne	'naso	nas
"सिर"	'kapo	kaf	ʃɛf	'kabo	kap
"बकरा"	'kapra	'kavra	ʃɛ:vr	'kabra	'kaprə
"सेम"	'fava	'fave	fɛ:v	'aba	'fawə[1]

इन स्थितियों में हम वही प्रक्रिया अपनाते हैं जोकि हमने जर्मनीय संगतियों के समय अपनाई थी और प्रत्येक प्रदेश के स्थानीय प्रतिरूपों को ध्यान से देखते हैं और प्राचीनतर आलेखों में वर्तनी पर ध्यान देते हैं। केवल अन्तर यह है कि पूर्वज भाषा लैटिन के रूप के लिखित संकेत अधिकांश स्थलों पर उपलब्ध हैं। हमारे उदाहरण के रोमांस-शब्द हमारे आलेखों में लैटिन रूपों nasum, caput, capram, fabam के वर्तमान रूप हैं।

रोमांस रूपों से अनुमान निकालने के पश्चात्, हमें अपने अनुमानों से प्राप्त रूपों और लैटिन के लिखित आलेखों में उपलब्ध रूपों के बीच कहीं-कहीं अन्तर मिल सकता है। ये अन्तर विशेष रूप से इस कारण रोचक हैं कि वे हमारे अनुमानों के मूल्य पर वहां प्रकाश डालते हैं जहां पूर्वज भाषा के आलेख अनुपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित प्रतिरूपों के आक्षरिकों को लें :—

	इतालवी	लैडी	फ्रेंच	स्पेनी	रूमानियाई
"फूल"	'fjore	flur	flœ:r		'floarə
"गांठ"	'nodo	nuf	nϕ		nod
"प्रतिज्ञा"	'voto	vud	vϕ	bodas[2]	
"पूंछ"	'koda	'kua	kϕ	'kola[3]	'koade

इन शब्दों के प्रथम तीन शब्दों में, और इसी प्रकार के अन्य अनेक शब्दों में लैटिन आद्यप्रतिरूप आक्षरिक O के साथ मिलता है, जिसकी हम [o:] से व्याख्या देते है, जैसे, florem, nodum, uotum. तदनुसार चौथे शब्द में हम यह अनुमान करते हैं कि वही स्वर होगा और आद्य रूप

1. यह शब्द रूमानियाई भाषाका न होकर मेसिडोनियाई भाषा का है।
2. यह बहुवचनान्त रूप है; इसका अर्थ हैं 'विवाह'।
3. प्राचीन स्पेनी 'coa' अनुमानतः 'koa' का पुनर्निर्मित रूप है।

*['ko:dam] रहा होगा । इस प्रकार का अनुमान पुनर्निर्माण (reconstruction) कहलाता है और पुनर्निर्मित रूप *['ko:dam] अथवा *c^{o}dam को हम तारा चिन्ह के साथ लिखते हैं । किन्तु लैटिन के लिखित आलेखों में "पूँछ" के लिए जो शब्द मिलता है उसकी आकृति भिन्न है, वह है caudam (कर्म एकवचन ; प्रथमा में रूप cauda होगा) । यह हमारे पुनर्निर्मित रूप से मेल नहीं खाता है क्योंकि सामान्यतया लैटिन au (अनुमानतः [aw]) रोमांस भाषाओं में स्वर संगति के विभिन्न प्रतिरूप में मिलता है ।

लैटिन aurum "स्वर्ण" और causam "वस्तु-घटना" इस प्रकार मिलते हैं ?—

	इतालवी	लैडी	फ्रेंच	स्पेनी	रूमानियाई
"स्वर्ण"	'ɔro		ɔ:r	'oro	aur
"वस्तु"	'kɔsa	'koze	ʃo:z	'kosa	

यह सही है कि हमारी मध्ययुग में लिखी लैटिन हस्तलिखित प्रतियों में "पूँछ" के लिए प्रयुक्त शब्द प्रायः वर्तनी द्वारा coda के रूप में दिया गया है, किन्तु यह प्रतिलिपिकारों की भूल हो सकती है । मूल और प्राचीनतर प्रतियों में जिनसे प्रतिलिपियाँ की गई हैं सामान्य लैटिन रूप cauda रहा होगा । इन प्रतिलिपिकारों के लिए यह भूल सहज थी जिनके प्राचीन लैटिन के स्कूली उच्चारण में लैटिन o और au में भेद न था ; और उन प्रतिलिपिकारों के लिए तो अवश्य ही ऐसा रहा होगा जो कि लैटिन का वह रूप बोलते थे जिसमें वर्तमान भाषाओं के समान हमारे शब्द में florem, nodum, votum का स्वर आ चुका था और aurum, causam वाला स्वर जा चुका था । किन्तु कुछ लोगों ने, टीकाओं से विदित होता है, नवीं सदी की हस्तलिखित प्रतियों में यह पर-स्थिति बनाई रखी थी ; वहाँ शब्द cauda के अर्थ में coda दिया है । स्पष्टतया ऐसी स्थिति थी कि cauda प्राचीन और कठिन रूप माना जाता था और coda सहज सम्बोध्य । अपने पुनिर्निर्माण के लिए निर्णयात्मक सम्पुष्टि इससे मिलती है कि पुरानी तिथियों के अभिलेखों में au रखने वाले शब्दों में कभी-कभी वर्तनी में o मिलता है, जैसे paulla के लिए एक 184 ई० पू० के अभिलेख में POLA

मिला है। इसके अतिरिक्त हमें यह भी ज्ञान है कि au– रूपों का o उच्चारण ग्राम्यत्व दोष है। सुएटोनियस (Suetonius) (मृत्यु:160 ईसवीय) हमें बताता है कि काव्यशास्त्रज्ञ फ्लोरस (Florus) ने एक बार सम्राट वेस्पैसियन (Vespasian) (मृत्यु 79 ईसवीय) को टोका कि Plostra बोलने के स्थान पर वह परिनिष्ठित रूप plaustra "गाड़ी" बोलें, और दूसरे दिन सम्राट ने उलटकर Florus को Flaurus (फ्लौरस) पुकारा। जहाँ तक हमारे शब्द cauda का प्रश्न है चौथी सदी का एक वैयाकरण cauda और coda को वैकल्पिक उच्चारण मानता है। इसके अतिरिक्त अभिलेखों में Florus के लिए वेस्पैसियन द्वारा प्रयुक्त Flaurus के समान अति-परिनिष्ठित रूप मिलते हैं, ईसवीय सदी के प्रारंभिक काल के एक अभिलेख में Ostia "द्वार" के लिए वर्तनी AVSTIA का प्रयोग किया है। संक्षेप में, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हमारा पुनर्निर्मित रूप *coda *[ko:da] किसी भी दशा में काल्पनिक नहीं है, वह केवल एक कम परिनिष्ठित रूप में चलता था और वस्तुतः प्राचीन काल में विद्यमान था।

इस प्रकार के उदाहरण हमें पुनर्निर्मित रूपों पर आस्था जमाते हैं। लैटिन लेखन में स्वर मात्राओं को प्रदर्शित करने का साधन न था। एक लिप्यक्षर secale "राई" कई स्वनात्मक प्रतिरूपों को प्रदर्शित कर सकता है। यह शब्द छन्दोबद्ध काव्य में नहीं आया है जहाँ छन्द में उसकी स्थिति से उसकी स्वर मात्रा का पता चल जाता, अतएव इसकी स्वरमात्रा का निश्चय असम्भव था यदि हमारे पास तुलनात्मक पद्धति के साक्ष्य न होते। इतालवी segola ['segola] और फ्रेंच seigle [sɛ:gl] से यह सूचना मिलती है कि लैटिन segola का रूप [sé:kale] था। रोमांस भाषाओं के अध्येता एक आदिम-रोमांस ("ग्राम्य लैटिन") का पुनर्निर्माण करते हैं और फिर लैटिन के लिखित आलेखों की ओर झुकते हैं और इन आलेखों की ये पुनर्निर्मित रूपों के प्रकाश में व्याख्या करते हैं।

18.5 इस प्रकार, एक पुनर्निर्मित रूप एक सूत्र है जो हमें यह बताता है कि स्वनिमों के कौन-कौन से ऐकात्म्य अथवा कौन-कौन–सी सुव्यवस्थित संगतियाँ सम्बद्ध भाषाओं के समुच्चय में मिलती हैं। इसके अतिरिक्त चूंकि ये ऐकात्म्य और संगतियां उन अभिलक्षणों को प्रकट करती हैं जो कि पूर्वज भाषा में विद्यमान थीं, पुनर्निर्मित रूप पूर्वज-रूप का एक प्रकार का स्वनिमीय रेखाचित्र है।

जर्मनीय भाषाओं के प्राचीनतम आलेखों से हमें पिता (father) के लिए प्रयुक्त निम्नलिखित रूप मिलते हैं :

गॉथी : चौथी सदी का रचित और छठी सदी में लेखबद्ध : fadar, कदाचित् ['fadar], d से प्रदर्शित स्वनिम संघर्षी भी हो सकता है। प्राचीन नार्स : अंशतः कुछ पहले रचित किन्तु 13वीं सदी में लेखबद्ध faðer faðir, कदाचित् ['faðer]।

प्राचीन अंग्रेजी : नवीं सदी की हस्तलिखित प्रतियाँ fæder,] कदाचित् ['fæder]। प्राचीन फ्रीज़ी : कुछ पहले रचित, किन्तु 13वीं सदी में लेखबद्ध feder, कदाचित् ['feder]।

प्राचीन सैक्सन : (डच-जर्मन क्षेत्र के उत्तरी भाग) 9वीं सदी की हस्तलिखित प्रतियां fader, कदाचित् ['fader]।

प्राचीन हाई जर्मन (डच-जर्मन क्षेत्र का दक्षिणी भाग) 9वीं सदी की हस्तलिखित प्रतियां fater, कदाचित् ['fater]। इन सब तथ्यों को संक्षेप में हम आदिम जर्मनीय आद्य–प्रतिरूप *['fader] मान कर प्रदर्शित कर देते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी हमारा दावा है कि यह संक्षेप में देने वाला सूत्र साथ ही साथ पूर्व-ऐतिहासिक रूप की स्वनिमीय संघटना को भी प्रदर्शित करता है।

हमारे सूत्र में निम्नलिखित पर्यवेक्षण अन्तर्निहित हैं :—

(1) सभी जर्मनीय भाषाओं में इस शब्द और अधिकांश अन्य शब्दों के प्रथम अक्षर पर बलाघात था। हम अपने सूत्र में इसे बलाघातचिन्ह से सूचित करेंगे, अथवा, चूंकि जर्मनीय भाषाओं में प्रथम अक्षर पर प्रसामान्यतया बलाघात होता है तो बिना बलाघात चिन्ह के भी काम चल सकता है। इसका अतएव यह भी तात्पर्य है कि आदिम जर्मनीय पूर्वज भाषा में इस शब्द में, अधिकांश अन्य शब्दों के समान, एक स्वनिमीय अभिलक्षण (इसे "य" कह सकते हैं) है जोकि सभी वास्तविक जर्मनीय भाषाओं में शब्द के प्रथम अक्षर पर उच्च बलाघात के साथ मिलता है। निस्सन्देह, यह करीब-करीब निश्चित है कि यह अभिलक्षण "य" पूर्वज भाषा में वही था जो सभी वास्तविक जर्मनीय भाषाओं में मिलता है, अर्थात् प्रथम अक्षर पर उच्च बलाघात; किन्तु इस अतिरिक्त अनुमान से मुख्य निष्कर्ष की समुपयुक्तता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(2) सभी प्राचीन जर्मनीय भाषाओं में [f] शब्दादि में आता था। यदि प्राचीन आलेख न होते तो इस तथ्य पर विचार करना होता कि कुछ अंग्रेजी और डच-जर्मन प्रदेश की वर्तमान बोलियों में [v] प्रकार का सघोष-संघर्षी इस स्थान पर है ; किन्तु भौगोलिक वितरण फिर भी दिखला देता कि [f] प्राचीनतर प्रतिरूप है। प्रत्येक स्थिति में हमारे सूत्र में प्रतीक [f] का संघटनात्मक मूल्य केवल यह है कि शब्द father का प्रारम्भ जर्मनीय भाषाओं में और आदिम जर्मनीय में उसी स्वनिम से हुआ था जोकि foot, five, fee, free, fare आदि के प्रारंभ में है, और ये सब सूत्रों में आदिस्थित [f] से प्रतीकबद्ध हैं।

(3) हमारे सूत्र के [a] से यह विदित होता है कि यहाँ वही संगति मिलती है जो निम्न जैसे शब्दों में मिलती है :

Water "जल" : गॉथी ['wato:] प्राचीन नार्स [vatn], प्राचीन अंग्रेजी ['wɛter], प्राचीन फ्रीज़ी ['weter], प्राचीन सैक्सन ['water] प्राचीन हाई जर्मन ['wassar] आदिम जर्मनीय सूत्र *['water, 'wato :]।

Acre (एकड़) : गॉथी [ˈakrs], प्राचीन नार्स [akr], प्राचीन अंग्रेजी [ˈɛker], प्राचीन फ्रीजी [ˈekker], प्राचीन सैक्सन [ˈakkar], प्राचीन हाई जर्मन ['akxar], आदिम जर्मनीय सूत्र *['akraz]।

day (दिवस) : गॉथी [dags], प्राचीन नार्स [dagr], प्राचीन अंग्रेजी [dɛj], प्राचीन फ्रीजी [dej] प्राचीन सैक्सन [dag], प्राचीन हाई जर्मन [tag], आदिम जर्मनीय सूत्र *['dagaz]।

इस उदाहरण में विचलन, अर्थात् अन्य भाषाओं के [a] के स्थान पर प्राचीन अंग्रेजी [ɛ] और प्राचीन फ्रीजी [e], सभी रूपों में नहीं मिलते हैं, उदाहरणार्थ, निम्न जैसे उदाहरणों की सभी बोलियों में [a] मिलता है। fare गॉथी, प्राचीन अंग्रेजी, प्राचीन सैक्सन, प्राचीन हाई-जर्मन ['faran] प्राचीन नार्स, प्राचीन फ्रीजी ['fara], आदिम जर्मनीय सूत्र *['faranan]।

वास्तव में, अंग्रेजी [ɛ] और फ्रीजी [e] स्थिर स्वनात्म परिस्थितियों में मिलते हैं—अर्थात् day जैसे एकाक्षरी शब्दों में और अगले अक्षर में स्थित [e] के पूर्व, जैसे father, water, acre में। हम यह अनुमान करते हैं कि यह विचलन किसी बाद के परिवर्तन के कारण है और यह कदाचित् सामान्य मध्यवर्ती एंग्लो-फ्रीजी पूर्वज भाषा में था। हर स्थिति में हम निश्शंक

आदिम जर्मनीय पूर्वज भाषा में एक एकल संघटनात्मक स्वनिमीय इकाई [a] स्थापित कर सकते हैं।

(4) उस गॉथी वर्ण का, जिसे हमने d से प्रतिलेखित किया है, स्वानिकी मूल्य सन्देहास्पद है। वह [d] प्रतिरूप का एक स्पर्श हो सकता है अथवा [ð] प्रतिरूप का संघर्षी, अथवा वह इन दोनों के बीच में इधर-उधर होता रहता है और इस स्थिति में [d] और [ð] एक स्वनिम के ही परिवर्ती हैं। प्राचीन स्कैंडीनेवियाई लिपि इन स्थितियों में [ð] बताती है। पश्चिमी जर्मनीय भाषाओं में अभ्रान्ततया [d] है और वह इस स्थिति में तथा अन्य स्थितियों में दक्षिण जर्मन में [t] के रूप में मिलता है। हमारे आदिम जर्मनीय सूत्र में हम इन सबको प्रतीक [d] अथवा [ð] द्वारा प्रदर्शित करते हैं, मुद्रण की सुविधा के कारण [d] को उस स्वनिम से अभिन्न मानते हैं जोकि निम्नलिखित स्थितियों में मिलता है :—

mother (माता) : प्राचीन नार्स ['mo:ðer] प्राचीन अंग्रेजी ['mo:dor] प्राचीन फ्रीजी ['mo:der] प्राचीन सैक्सन ['mo:dar] प्राचीन हाई-जर्मन ['muotar], आदिम जर्मनीय सूत्र ; *['mo:der]

mead (मधु) : प्राचीन नार्स [mjɔðr], प्राचीन अंग्रेजी ['meodo], प्राचीन फ्रीजी ['mede] ; प्राचीन हाई जर्मन ['metu], आदिम जर्मनीय सूत्र *[meduz] ;

ride (चढ़ना) : प्राचीन नार्स ['ri:ða], प्राचीन अंग्रेजी ['ri:dan], प्राचीन फ्रीजी ['ri:da], प्राचीन हाई जर्मन ['ri:tan], आदिम जर्मनीय सूत्र *['ri:danan]।

(5) अगले स्वनिम का गॉथी एक भिन्न रूप मिलता है जोकि स्पष्टतया परवर्ती परिवर्तन के कारण है। गॉथी में जहाँ अन्य भाषाओं में बलाघातहीन er है, वहां सदैव ar मिलता है ; जैसे, गॉथी ['hwaθar], प्राचीन अंग्रेजी ['hwɛðer] "दोनों में से कौन"।

(6) अन्तिम स्वनिम [r] के सम्बन्ध में सभी बोलियों में एकता है।

18.6 यद्यपि हमारे पास कोई लिखित आलेख नहीं है जो हमारे आदिम जर्मनीय पुनर्निर्माणों को पुष्टि दे, फिर भी कभी-कभी बिल्कुल इन जैसे रूप

हमें अतिप्राचीन स्कैंडिनेवियाई रूनी अभिलेखों (§ 17.6) में मिलते हैं। उदाहरणार्थ, निम्नलिखित पुनर्निर्माणों को ले लें :—

guest (अतिथि) : गॉथी [gasts], प्राचीन नार्स [gestr] प्राचीन अंग्रेजी, प्राचीन फ्रीजी [jest], प्राचीन सैक्सन, उच्च हाई जर्मन [gast], आदिम जर्मनीय सूत्र *['gastiz];

horn (शृंग) : सभी प्राचीन बोलियों में [horn] आदिम जर्मनीय सूत्र *['hornan]।

यहां हमारे आदिम जर्मनीय पुनर्निर्मित रूप वास्तविक उपलब्ध रूपों से कुछ बड़े हैं। ग्रन्थविस्तार के भय से यहां उन कारणों पर विचार नहीं किया जा रहा है जिनके फलस्वरूप अतिरिक्त स्वनिमों को स्थापित करना पड़ा है। इतना ही कह देना पर्याप्त है कि अधिकतर, जैसे कि guest में, ये अतिरिक्त स्वनिम वास्तविक बोलियों के रूपों द्वारा पूर्णतया निश्चित हो चुके हैं; जबकि अन्य रूपों में, जैसे horn में, आदिम जर्मनीय में अतिरिक्त स्वनिमों की उपस्थिति जर्मनीय भाषाओं की तुलना से निश्चित ही है, यद्यपि इन स्वनिमों की प्रकृति केवल इन तथ्यों पर निर्धारित हुई है जिनका हम वर्णन करने जा रहे हैं। लेखक ने guest और horn शब्दों को इसी कारण चुना है क्योंकि ये एक सुनहरे सींग पर खुदे रूनी अभिलेख में आए हैं। यह अभिलेख कदाचित् 400 ईसवीय के आस-पास का है और डेन्मार्क में गल्लेहूस के पास मिला था। लिप्यन्तरण में यह अभिलेख इस प्रकार है :

ek hlewagastiz holtiŋaz horna tawido "होल्ट वंशीय अर्चि-अतिथि मैंने यह सींग बनवाया" ये ही शब्द हमारे आदिम जर्मनीय सूत्रों में इस प्रकार लिखे जाएंगे :—

*['ek 'hlewa- ˌgastiz 'holtingaz 'hornan 'tawido:n], और यह अभिलेख हमारे पुनर्निर्मित guest के अन्तिम अक्षर की ओर किसी न किसी सीमा तक हमारे पुनर्निर्मित horn के अन्तिम अक्षरवर्ती स्वर की सम्पुष्टि करता है।

फ़ीनी, इस्थोनी और लैपी में जोकि फीनी-उग्री परिवार है और फलस्वरूप हमारी भारत यूरोपीय भाषाओं से असम्बद्ध है, अनेक ऐसे शब्द हैं जिन्हें उन्होंने किसी प्राचीन काल में—साक्ष्यों के अनुसार ईसवीय की

प्रारंभिक सदियों में–जर्मनीय भाषाओं से गृहीत किया होगा। चूंकि इन भाषाओं में तब से जर्मनीय भाषाओं की तुलना में पूर्णतया भिन्न परिवर्तन हो चुके हैं अतएव ये गृहीत शब्द जर्मनीय शब्दों के प्राचीन रूपों के एक स्वतन्त्र साक्ष्य हैं। हमारे आदिम जर्मनीय रूपों के पुनर्निर्माण जैसे अंग्रेजी ring प्राचीन अंग्रेजी [hring], प्राचीन नार्स [hringr] आदिम पुनर्निर्मित रूप *['hringaz], अथवा, अंग्रेजी king, प्राचीन अंग्रेजी ['kyning], पुनर्निर्मित *['kuningaz], अथवा अंग्रेजी gold पुनर्निर्मित *['golθan], अथवा अंग्रेजी yoke, प्राचीन अंग्रेजी [jok] पुनर्निर्मित *['jokan] ये सब फीनी गृहीत-शब्दों, क्रमशः rengas, kuningas, kulta, jukko द्वारा, सम्पुष्ट होते हैं।

18.7 तुलनात्मक पद्धति से हमें आदिम जर्मनीय पुनर्निर्माणों पर एक कहीं अधिक सशक्त नियंत्रण मिलता है। क्योंकि जर्मनीय भाषाएं भारत-यूरोपीय परिवार की एक शाखा है अतएव हमारे आदिम जर्मनीय रूप अन्य भारतयूरोपीय भाषाओं के रूपों की तुलना में एक इकाई के रूप में आते हैं। आदिम भारतयूरोपीय के पुनर्निर्मित रूप एक और अधिक पूर्वतर संघटना की परियोजना उपस्थित करते हैं जिससे आदिम जर्मनीय संघटना आविर्भूत हुई है।

ऊपर दिए उदाहरणों में दो "अतिथि", "युग्म" इसके अच्छे उदाहरण हैं। हमारा आदिम जर्मनीय पुनर्निर्माण *[gastiz] लैटिन रूप hostis (अपरिचित) के साथ मेल खाता है। स्लावी रूपों की तुलना से, प्राचीन बल्गेशियाई [gostɪ], रूसी [gost] आदि से, एक आदिम स्लावी रूप *[˝gostɪ] पुनर्निर्मित हुआ। किन्तु इस पर यह अधिक मात्रा में सन्देह है कि यह स्लावी में किसी जर्मनीय बोली से गृहीत शब्द है और इसलिए अभी इसे पृथक् ही रखते हैं। किन्तु लैटिन रूप की तुलना से हमें आदिम भारत-यूरोपीय सूत्र *[ghostis] स्थापित करना पड़ता है जो कि संक्षेप में हमें यह बताता है कि लैटिन का दूसरा अक्षर हमारे आदिम जर्मनीय सूत्र के अन्तिम स्वनिमों से मेल खाता है।

इसी प्रकार, गॉथी [ga'juk] "युग्म" और अंग्रेजी yoke के अन्य प्राचीन जर्मनीय रूपों द्वारा, अर्थात् प्राचीन नार्स [ok], प्राचीन अंग्रेजी [jok], प्राचीन उच्च जर्मन [jox] के द्वारा, हम आदिम जर्मनीय सूत्र *['jokan] स्थापित करते हैं जिनकी संपुष्टि फीनी गृहीत रूप jukko से मिलती है।

इस पुनर्निर्मित रूप के दूसरे अक्षर के स्वनिम कुछ सीमा तक अभी अनिर्धारित रहते यदि यह सूत्र स्वयं भारतयूरोपीय परिवार की अन्य भाषाओं की तुलना में न आता। संस्कृत "युग्म" के कारण हमने आदिम हिन्द-ईरानी रूप *['ju'gam] माना। फिर, हमें ग्रीक में [zu'gon] और लैटिन में ['jugum] मिलता है। स्लावी रूपों द्वारा, जैसे कि प्राचीन बल्गेशियाई *['igo], रूसी ['igo] द्वारा, आदिम स्लावी सूत्र *['igo] बनता है। कार्नी iou और वेल्श iau से आदि केल्टी *['jugom] बनता है। यहां तक कि भाषाएं, जहां यह शब्द एक नई आकृति में आ चुका है, जैसे कि लिथुएनी ['jungas], आर्मेनियाई luc, आदिम भारतयूरोपीय शब्द की संघटना पर कुछ प्रकाश डालती हैं। इन सब साक्ष्यों के आधार पर आदिम भारतयूरोपीय सूत्र *[ʃu'gom] स्थापित होता है।

"पिता" शब्द की तुलनावली इससे भी जटिल अवस्था के अनुमानों को प्रस्तुत करती है। संस्कृत "पिता", ग्रीक [pa'te:r], लैटिन ['pater] प्राचीन आइरी ['aðir], आदिम जर्मनीय *['fader] के मुख्य रूप हैं जिनके आधार पर हम आदिम भारतयूरोपीय सूत्र *[pə'te:r] स्थापित करते हैं। प्रथम स्वनिम सरलतम स्थिति में है क्योंकि सभी अनुरूपताओं में यह अन्तर और प्रसामान्य है: भारतयूरोपीय आदि स्थित [p] सामान्यतया जर्मनीय में [f] और कैल्टी में (शून्य) से प्रदर्शित मिलता है; उदाहरणार्थ, लैटिन ['porkus] "सूअर", लिथुएनी ['parʃas], आदिम जर्मनीय *['farhaz] प्राचीन अंग्रेजी [fearh] (आधुनिक अंग्रेजी farrow), प्राचीन आइरी [ork], और आदिम भारतयूरोपीय सूत्र *['porkos]।

हमारे सूत्र का दूसरा स्वनिम अपेक्षाकृत जटिल स्थिति में है। हमारे आदिम भारतयूरोपीय सूत्र में हमने तीन ह्रस्वस्वर स्वनिमों [a, o, ə] में भेद माना है यद्यपि किसी भी एक भारतयूरोपीय भाषा में तीनों भेद एक साथ नहीं मिलते हैं। हमे ऐसा इस कारण मानना पड़ा है कि भाषाओं के बीच अनुरूपताएं तीन विचित्र सयोजक प्रदर्शित करती हैं। हम उन स्थलों पर प्रतीक [a] का प्रयोग करते हैं जहां हिन्द-ईरानी, ग्रीक, लैटिन, और जर्मनीय में [a] मिलता है, जैसे,

अंग्रेजी acre, संस्कृत अज्र, ग्रीक [a'gros], लैटिन ['ager], आदिम जर्मनीय *['akraz] : आदिम भारतयूरोपीय सूत्र *[agros]।

हम प्रतीक [o] का प्रयोग उन स्थलों पर करते हैं जहां हिन्द-ईरानी

में और जर्मनीय में [a] है, किन्तु, ग्रीक, लैटिन और कैल्टी मे [o] है, जैसे,

अंग्रेजी (eight) "आठ" : संस्कृत अष्टौ, ग्रीक [ok'to:] लैटिन ['okto :], आदिम जर्मनीय *['ahtaw], गॉथी ['ahtaw], प्राचीन जर्मन ['ahto] : आदिम भारतयूरोपीय सूत्र *[ok'to:w]।

हम प्रतीक [ə] का प्रयोग उन स्थलों पर करते हैं जहाँ हिन्द-ईरानी में [i] है, जबकि अन्य भाषाओं में वही स्वनिम है जोकि प्रथम समुच्चय में है, जैसे

अंग्रेजी (Stead) संस्कृत "स्थिति", ग्रीक ['stasis], आदिम जर्मनीय *['stadiz], गॉथी [staθs], उच्च हाई जर्मन [stat] : आदिम भारत-यूरोपीय सूत्र *[sthətis]।

स्पष्टतया "पिता" के शब्द तीसरे प्रतिरूप की अनुरूपता प्रदर्शित कर रहे हैं; अतएव अपने सूत्र में [ə] का प्रयोग किया गया है। आदिम भारत-यूरोपीय की रूपीय संघटना, जैसा कि हमारे सूत्रों से पता लगता है, हमारे त्रिविधात्मक अन्तर [a, o, ə] की सम्पुष्टि करती है, क्योंकि ये तीन इकाइयाँ तीन विभिन्न प्रतिरूपों के रूपीय विकल्पनों में मिलती हैं।

हमारे सूत्र का तीसरा प्रतीक एक अत्यन्त रोचक रीति के अनुमान प्रतिरूप को प्रदर्शित करता है। सामान्यतया जहाँ अन्य भारतयूरोपीय भाषाओं में [t] है, जर्मनीय भाषाओं में [θ] है। इस प्रकार,

"भाई" : अंग्रेजी [brother], संस्कृत "भ्राता", ग्रीक ['phra:te:r], लैटिन ['fra:ter] प्राचीन बल्गेरियाई [bratru], आदिम जर्मनीय *[bro:θer], गॉथी [bro:θar], प्राचीन नार्स ['bro:ðer], प्राचीन अंग्रेजी ['bro:ðor] प्राचीन हाई जर्मन ['bruoder] : आदिम भारत-यूरोपीय सूत्र *['bhra:te:r];

"तीन" : अंग्रेजी [three], संस्कृत "त्रय:", ग्रीक ['trejs] लैटिन [tre:s], प्राचीन बल्गेरियाई [trije], आदिम जर्मनीय *[θri:z], प्राचीन नार्स [θri: r], प्राचीन हाई जर्मन [dri:], आदिम भारतयूरोपीय सूत्र *['trejes]।

अंग्रेजी शब्द father अन्य शब्दों के साथ, इस बात में आदिम-जर्मनीय में भिन्न है कि उसमें [θ] के स्थान पर [d] मिलता है। फलस्वरूप यह

माना जा सकता है कि यहां दो भिन्न-भिन्न आदिम भारतयूरोपीय स्वनिम आते थे जो कि जर्मनीय भाषाओं को छोड़कर अन्य सभी भारतयूरोपीय भाषाओं में [t] के रूप में सम्मिलित हो गए और केवल जर्मनीय में [θ] बनाम [d] के रूप भिन्न-भिन्न बने रहे । सन् 1876 में डेनी भाषाशास्त्री कार्ल वर्नर (1846—1896) ने यह प्रदर्शित किया कि ऐसे अनेक स्थलों पर जहां जर्मनीय में यह विवादास्पद [d] है, यह व्यंजन ऐसे स्वर अथवा सन्ध्यक्षर का पूर्ववर्ती है जो कि संस्कृत और ग्रीक में बलाघातहीन है । यह सहसम्बन्ध पर्याप्त स्थलों में मिलता है कि आकस्मिकता की कोई सम्भावना नहीं है । brother और father इन दो शब्दों का व्यतिरेक इस सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है । क्योंकि शब्द-स्वराघात का स्थान इतालवी, कैल्टी और जर्मनीय में मुख्य स्वनिमों द्वारा निर्धारित होता है, हम आसानी से इस पर विश्वास कर सकते हैं कि उसका स्थान इन भाषाओं में से प्रत्येक में परवर्ती परिवर्तनों के कारण है । संस्कृत और ग्रीक इतना अधिक मिलती हैं, यद्यपि दोनों में स्वराघात का स्थान अत्यधिक अनियमित है कि हम निश्शंक इस अभिलक्षण को पूर्वज भाषा में मान सकते हैं। इस प्रकार आदिम भारतयूरोपीय और आदिम जर्मनीय के मध्य में घटनाओं का एक निश्चित पूर्वापर मिलता है । इस मध्यवर्ती समय को हम प्राक्-जर्मनीय काल कहते हैं :—

आदिम भारतयूरोपीय : [t] एक स्वनिम इकाई ; शब्द बलाघात विभिन्न शब्दों में विभिन्न अक्षरों पर पड़ता है :

*[ˈbhraːteːr] "भ्राता" *[pəˈteːr] "पिता"

प्राक्-जर्मनीय काल :

प्रथम परिवर्तन : [t] बदल कर [θ] बनता है :

*[ˈbraːθeːr] *[faˈθeːr]

द्वितीय परिवर्तन : बलाघातहीन आक्षरिक के बाद [θ] बदल कर [d] बनता है जोकि कदाचित् सघोष संघर्षी था ।

*[ˈbraːθeːr] *[faˈdeːr]

तृतीय परिवर्तन : बलाघात प्रत्येक शब्द के आदिस्थित अक्षर पर स्थानान्तरित होता है ; इस प्रकार आदिम जर्मनीय *[ˈbroːθer] *[ˈfader]

इसी प्रकार, अनुरूपताओं से भारतयूरोपीय परिवार की प्रत्येक शाखा का प्राग्-इतिहास प्रकट होता है। इस प्रकार, लैटिन cauda और cōda "पूँछ" और लिथुएनी शब्द [ˈkuodas] "गुच्छ" में कदाचित् पूर्वज भाषा

के एक ही रूप के विकसित रूप हैं ; और यदि ऐसा है तो अन्य अनुरूप-ताओं के प्रकार में, जिसमें [uo] और लैटिन [o :] साथ-साथ आते हैं, हम दोनों लैटिन रूपों के पूर्वतर रूप में cōda को ले सकते हैं और cauda को अतिनागरिक (अतिशिष्ट) रूप (§18.4) मान सकते हैं।

हमारे आदिम भारतयूरोपीय पुनर्निर्माण किसी पूर्वतर आलेखबद्ध अथवा पुनर्निर्मित रूपों से परीक्ष्य नहीं हैं। बीसवीं सदी की प्रारम्भिक शताब्दियों में इतना निश्चित हो चुका था कि 1400 ईसा पूर्व से उपलब्ध कीला-क्षरीय आलेखों द्वारा विदित हिट्टाई भाषा भारतयूरोपीय से दूरतः सम्बद्ध है। तदनुसार, आदिम भारत-हिट्टाई पूर्वज भाषा के कुछ अभिलक्षणों का आविष्कृत होना सम्भव है अर्थात्, आदिम भारतयूरोपीय अभिलक्षणों में से कुछ का पूर्वतर इतिहास ढूँढा जा सकता है।

18.8 तुलनात्मक पद्धति सिद्धान्तरूप से पुनर्रचित रूपों के स्वनिकी स्वरूप पर कुछ भी प्रकाश नहीं डालती है ; वह पुनर्रचित रूपों में स्वनिमों को केवल आवर्ती इकाइयों के रूप में पहचानती है। इन्डोनेशियाई भाषा इस भांति का एक अच्छा उदाहरण प्रकट करती है। प्रत्येक भाषा के [d, g, l, r] प्रतिरूप के कुछ स्वनिम हैं किन्तु अनुरूपताओं की विविधता यह प्रदर्शित करती है कि पूर्वज भाषा में इससे अधिक संख्या में स्वनिम थे। इन स्वनिमों के स्वानिकी-स्वरूपों का केवल अनुमान लगाया जा सकता है ; वे प्रतीक जिनमें हम उन्हें प्रदर्शित करते हैं अनुरूपताओं के लिए केवल नामांकन हैं। यह उल्लेखनीय है कि इन भाषाओं में से, जावानी को छोड़कर, किसी के भी प्राचीन लिखित आलेख नहीं हैं ; किन्तु इससे तुलनात्मक पद्धति के प्रयोग में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। यदि हम तीन भाषाओं पर तगलाग (फिलीपाईन में लुजों द्वीप पर), जावानी और बतक (सुमात्रा द्वीप पर) पर विचार करें तो अनुरूपताओं के आठ प्रसामान्य प्रतिरूप पर्याप्ततया मिलते हैं। निम्नलिखित उदाहरणों में विवेचनीय व्यंजन शब्द के मध्य में आता है—

		तगलाग	जावानी	बतक	आदिम इण्डोनेशियाई
(1)		l	l	l	l
	"पसन्द"	ˈpi:li?	pilik	pili	*pilik
(2)		l	r	r	l
	"कमी"	ˈku:laŋ	kuraŋ	huaŋ	*kulaŋ

	तगलाग	जावानी	बतक	आदिम इण्डोनेशियाई
(3)	l	r	g	g
"नाक"	i'luŋ	iruŋ	iguŋ	*iguŋ
(4)	l	D	d	D
"इच्छा"	'hi:lam	iDam	idam	*hiDam[1]
(5)	r	d	d	d
"इंगित करना"	'tu:ru?	tuduk	tudu	*tuduk
(6)	r	d	d	d
"प्रेरक"	'ta:ri?	tadi	tadi	*tadi
(7)	g	g	g	g
"सागू"	'sa:gu	sagu	sagu	*tagu[2]
(8)	g	zero	r	r
"सड़ा हुआ"	bu'guk	vu?	buruk	*buruk

18.9 तुलनात्मक पद्धति यह मानकर चलती है कि प्रत्येक शाखा अथवा भाषा पूर्वज भाषा के रूपों की स्वतन्त्र साक्षी है और सम्बद्ध भाषाओं में तादात्म्य अथवा अनुरूपताएं पूर्वज भाषा के लक्षणों को प्रकट करती हैं। यह वही बात है कि हम मान लें कि (1) पूर्वज समुदाय भाषा के विषय में पूर्णतया एकरूप था और (2) यह पूर्वज समुदाय अचानक और पूर्णतया दो अथवा अधिक परकालीन समुदायों में विदरित हुआ जो फिर एक दूसरे से नितान्त सम्पर्कहीन हो गए।

प्रायः अधिकतर तुलनात्मक पद्धति भाषा के इतिहास में इसी भांति के उत्तरोत्तर विदरणों को मानकर चलती है। वह यह मानती है कि जर्मनीय वर्ग आदिम भारत यूरोपीय से अचानक और पूर्णतया विदरित हो गया। इस विदरण के बाद, जर्मनीय का प्रत्येक परिवर्तन अपनी सह-भाषाओं के

पाद टिप्पणी 1—जावानी (D) मूर्धन्य स्पर्श है और [d] से भिन्न है। तगलाग शब्द के अर्थ "कष्ट, चुस्त" हैं। यहाँ दिया बतक रूप तोबा बोली में नहीं मिलता है जहां से हमने अन्य रूप लिए हैं, बल्कि दैरी (Dairi) बोली में मिलता है।

2—तगलाग रूप का अर्थ "निस्राव" है ; काव्य में इसका अर्थ "पौधों का सत्व" है। (Sap)

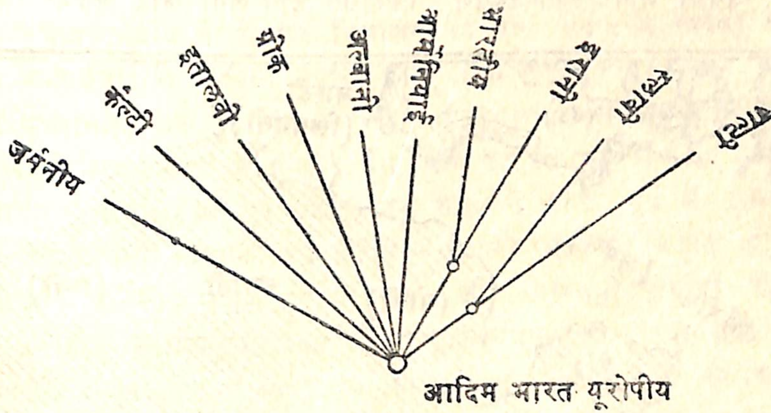
परिवर्तनों से स्वतन्त्र था और जर्मनीय तथा उसकी सह-भाषाओं में मिलने वाले सर्वनिष्ठ सादृश्य सामान्य वंशानुगति क्रम के द्योतक हैं; आदिम भारत-यूरोपीय और आदिम जर्मनी के बीच के अन्तर उन परिवर्तनों के कारण हैं जो प्राग् जर्मनीय काल में घटित हुए थे । बिल्कुल ठीक इसी भांति, तुलनात्मक पद्धति पश्चिमी जर्मनीय बोलियों में (स्कैंडिनेवी और गॉथी की तुलना में) विद्यमान विशिष्ट समानताओं की व्याख्या करती है । उसके अनुसार पश्चिम जर्मनीय समुदाय एकरूप आदिम जर्मनीय पूर्वज समुदाय से अचानक और स्फुटतया विदरित हुआ ।

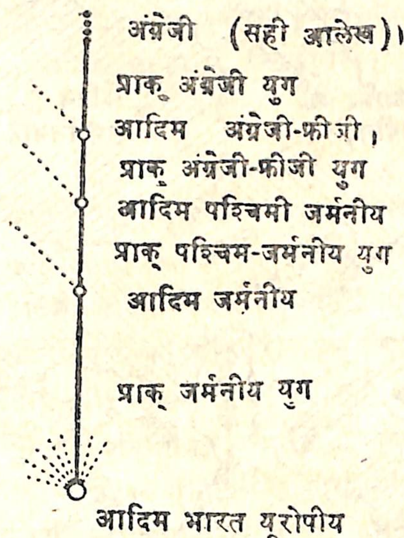
इस विदरण के बाद एक प्राक्-पश्चिम जर्मनीय युग आता है जिससे वे अन्तर उत्पन्न हुए जिन्हें आदिम पश्चिमी जर्मनीय से अभिलक्षित करते हैं। फिर, अंग्रेजी फ्रीजी (जैसे, विशेषतया, आदिम पश्चिम जर्मनीय [a] के लिए [ε,e] की) उभयनिष्ठ विशिष्टताओं के आधार पर हम एक प्राक्-अंग्रेजी फ्रीजी युग की चर्चा कर सकते हैं जिसमें वे परिवर्तन हुए जिनसे आदिम अंग्रेजी-फ्रीजी की उत्पत्ति हुई । इसके बाद एक प्राग् अंग्रेजी युग आता है जिसमें अंग्रेजी के प्राचीनतम आलेखों की प्राप्ति हुई । इस प्रकार, तुलनात्मक पद्धति एकरूप पूर्वज भाषाओं की पुनर्रचना करती है जो समय के एक बिन्दु पर विद्यमान है और उन परिवर्तनों की व्याख्या करती है जो प्रत्येक ऐसे पूर्वज भाषा के विदरण के बाद हुए और यह व्याख्या परवर्ती पूर्वज भाषा अथवा लिखित आलेखों तक होती है । इस प्रकार तुलनात्मक पद्धति भाषाओं के पूर्वजों की वंश वृक्ष के रूप को प्रदर्शित करती है और उसमें उत्तरोत्तर शाखा प्रशाखा निकलती रही है । वे सब बिन्दु जहां शाखाएं पृथक् निकलती हैं "आदिम" शब्द से नामोद्दिष्ट की जाती हैं ; बिन्दुओं के बीच की शाखाएं उपसर्ग-"प्राक्" से नामोद्दिष्ट की जाती हैं और भाषाई परिवर्तन के कालों को प्रदर्शित करती हैं ।

18.10 भारतयूरोपीय के पहले के अध्येताओं ने यह नहीं समझा था कि परिवार वृत्त का चित्र केवल उनकी पद्धति का वक्तव्य मात्र है । उन्होंने एक रूप पूर्वज भाषाओं को और अचानक तथा सुस्पष्ट विदरणों को ऐतिहासिक तथ्य मान लिया था ।

किन्तु वास्तविक पर्यवेक्षण में कोई भी भाषण समुदाय कभी भी पूर्ण रूपेण एकरूप नहीं रहा है (§3.3) । जब हम किसी भाषा का वर्णन करते हैं तो हम एकरूपता के अभाव की उपेक्षा इस प्रकार कर देते हैं कि हम

अपने को कुछ यादृच्छिक प्रतिरूप के भाषण खण्डों में सीमित कर देते हैं और अन्य विविध रूपों को बाद में विवेचन के लिए छोड़ देते हैं ; किन्तु भाषाई परिवर्तनों के अध्ययन में हम ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि वे सब परिवर्तन अवश्यमेव प्रारम्भ में अभिलक्षणों के विभिन्न रूपों के रूप में प्रकट हुए हैं ।





आकृति 1 (ऊपर) भारत-यूरोपीय भाषाओं के सम्बन्धों का परिवार वृक्ष आरेख। (नीचे) परिवार वृक्ष की एक शाखा जो कि अंग्रेजी इतिहास के विभिन्न युगों को बनाती है।

किन्तु कभी-कभी निश्चयतः इतिहास एक अचानक विदीरण प्रदर्शित करता है जैसा कि हम लोग तुलनात्मक पद्धति में मानकर चलते हैं। ऐसा विदीरण तब होता है जबकि समुदाय का कुछ अंश प्रवासी बनता है। जब आँग्ल-सैक्सन और जूट लोग ब्रिटेन में आकर बस गए तब वे महाद्वीप पर ठहरे हुए अपने बन्धुओं से पर्याप्त मात्रा में विच्छिन्न हो गए। तब से लेकर, अंग्रेजी भाषा स्वतन्त्ररूपेण विकसित होने लगी और अंग्रेजी तथा



आकृति 2. पूर्वी यूरोप। आक्रमण द्वारा भाषाई-क्षेत्रों का विभाजन। प्रारम्भिक मध्ययुग में स्लावों के और नवीं सदी में हंगेरियन लोगों के अन्तःप्रवेश से लैटिन क्षेत्र का विदरण।

पश्चिम जर्मनीय महाद्वीपीय बोलियों के बीच कोई सादृश्य साधारणतया अंग्रेजी के बहिर्गमन के पूर्व विद्यमान लक्षण का साक्ष्य है। जब मध्ययुग में जिप्सियों ने पश्चिमोत्तर भारतवर्ष से अपना अनन्त बहिर्गमन प्रारम्भ किया, तब से उनकी भाषा में होने वाले परिवर्तन उन परिवर्तनों से अवश्य स्वतन्त्र रहे होंगे जो उनके पूर्वनिवासस्थान की भाषा में हो रहे थे।

भाषासमुदाय के सुस्पष्ट विभाजन का एक उदाहरण विदेशी समुदाय के अन्तःप्रवेश से उत्पन्न विदरण द्वारा होता है। रोमन साम्राज्य में इटली से कालासागर तक पूरे क्षेत्र में लैटिन बोली जाती थी। पूर्व मध्ययुग में उत्तर से स्लाव लोग आए और ऐसे बस गए कि यह क्षेत्र पूर्णतया दो भागों में अलग-अलग हो गया। उस समय से लेकर, पूर्व में रोमानियाई में अन्य रोमानी भाषाओं की तुलना में स्वतन्त्र भाषाई विकास होने लगे और यदि कोई लक्षण रोमानियाई और पश्चिमी रोमानी दोनों में विद्यमान है तो निश्चयतः वह लैटिन में विद्यमान था। नवीं सदी में इस विशाल स्लावी क्षेत्र में स्वयं इस प्रकार का विदरण हुआ क्योंकि मग्यर (हंगेरियन) लोग पूर्व से आकर ऐसे बस गए कि स्लावी क्षेत्र उत्तर और दक्षिण, दो पृथक् भागों में बंट गया (देखिए चित्राकृति 2 पृ० 378)। तदनुसार, से दक्षिण स्लावी (स्लावी, सर्वियाई, बल्गेरियाई) में परिवर्तन स्लावी के उत्तरी क्षेत्र से निरपेक्ष हुए और कोई भी उभयनिष्ठ लक्षण विदरणपूर्व का माना जाएगा।

किन्तु इस प्रकार का सुस्पष्ट विदरण सामान्यतया होता नहीं है। रोमानी भाषाओं के पश्चिमी क्षेत्र में पारस्परिक अन्तर स्पष्टतया भौगोलिक वियोजन अथवा विदेशी भाषणसमुदाय के अन्त.प्रवेश के कारण नहीं है। अंग्रेजी और स्कैंडिनेवियाई को छोड़कर, जर्मनीय भाषाओं के लिए भी, जहाँ पश्चिमी जर्मनीय और स्कैंडिनेवियाई में जो जटलैंड प्रायद्वीप में एक दूसरे से जुड़े हैं सुस्पष्ट परिभाषित अन्तर है यही बात है। स्पष्टतया अचानक वियोजन के अतिरिक्त ऐतिहासिक कारण एक या एकाधिक है जिनसे एक भाषणसमुदाय कई भाषणसमुदायों में बंट जाता है और तब हम यह निश्चय से नहीं कह सकते हैं कि अमुक समय के बाद के सभी परिवर्तन स्वतन्त्र हैं और इस कारण यह भी निश्चय से नहीं कह सकते कि परकालीन भाषाओं के सर्वनिष्ठ लक्षण पूर्वज भाषा में विद्यमान थे। उदाहरण के लिए फ्रैंच और इटाली, अथवा डच-जर्मन और डच के उभयनिष्ठ लक्षण सामान्य

परिवर्तन के कारण हो सकते हैं जोकि तब हुए हैं जबकि इनमें से कुछ अन्तर पहले से विद्यमान थे।

18.11 चूंकि तुलनात्मक पद्धति पूर्वज भाषा में विविधताओं को अथवा सम्बद्ध भाषाओं में सामान्य (सर्वनिष्ठ) परिवर्तनों को स्वीकार नहीं करती अतएव यह हमें केवल थोड़ी दूरी पर ले जाकर छोड़ देती है। उदाहरणार्थ' मानलें कि पितृभाषा के भीतर कुछ बोलीगत अन्तर थे; यह बोलीभेद सम्बद्ध भाषाओं में असंधेय (असमाधेय) अन्तर के रूप में प्रतिबिम्बित होगा। इस प्रकार, संज्ञाओं के कुछ रूपसाधक परप्रत्ययों में जर्मनीय और बाल्टो-स्लावी में (m) है, जबकि अन्य भारतयूरोपीय भाषाओं में (bh) मिलता है और ऐसी ध्वन्यात्म अनुरूपता के लिए कोई समानान्तर नहीं है।

(a) आदिम भारतयूरोपीय *[-mis] तृतीया बहुवचन : गॉथी ['wulfam] "भेड़ियों द्वारा"।

आदिम भारतयूरोपीय *[- mi:s] तृतीया बहुवचन : लिथुएनी [naktiˈmis] "रातों द्वारा", प्राचीन बल्गेरियाई [noʃtɪmi]।

आदिम भारतयूरोपीय *[- mos] चतुर्थी-पंचमी बहुवचन :लिथुएनी [vilˈkams] "भेड़ियों के लिए", प्राचीन बल्गेरियाई [vl̥komu] :

(b) आदिमभारतयूरोपीय *[-bhis] तृतीया बहुवचन : संस्कृत (पद्भिः), "पैरों द्वारा", प्राचीन आईरी [ferav] "मनुष्यों द्वारा",

आदिम भारतयूरोपीय* [- bhjos] चतुर्थी-पंचमी बहुवचन : संस्कृत (पद्भ्यः) "पैरों से, पैरों के लिए",

आदिम भारतयूरोपीय *[- bhos] चतुर्थी-पंचमी बहुवचन : लैटिन [pedibus] "पैरों के लिए, पैरों से", प्राचीन केल्टी [ma:trebo] "माताओं के लिए।"

इन प्रकार के स्थलों पर, तुलनात्मक पद्धति पूर्वज भाषा (जोकि एक-रूप भाषा परिभाषित हुई है) के रूप नहीं प्रदर्शित करती है, किन्तु असंधेय (असमाधेय) विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करती है जिनका, विकल्प रूप अथवा बोली रूपान्तर यह प्रकट नहीं करती है। फिर भी ये स्थल अत्यधिक हैं।

इसके विपरीत, यदि प्राचीन विद्वानों के समान हम इस पर अड़े रहें कि यह विसंवाद (असंगति) जर्मनीय अथवा बाल्टोस्लावी के इतिहास में एक उभयनिष्ठ परिवर्तन के कारण है तो तुलनात्मक पद्धति के मूलधारणाओं के

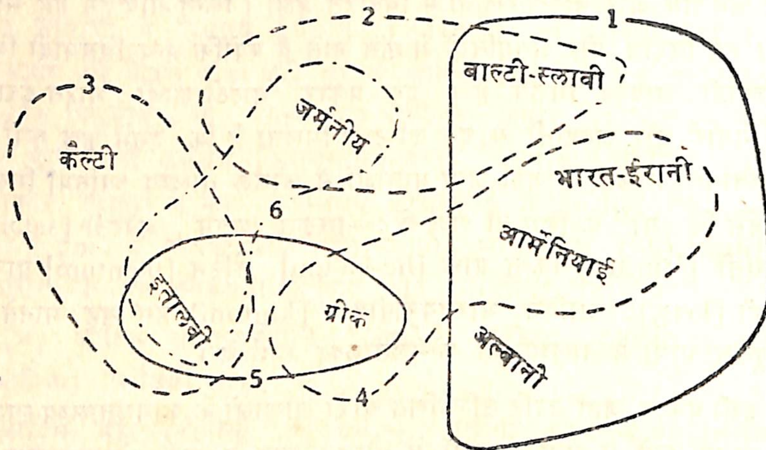
अन्तर्गत हमें यह कहना होगा कि ये दो शाखाओं का एक विकास का उभयनिष्ठ युग था और हमें यह भी मानना होगा कि एक आदिम बाल्टोस्लावी-जर्मनीय भाषणसमुदाय था जोकि आदिम भारतयूरोपीय से विदीर्ण हो चुका था और फिर स्वयं जर्मनीय और बाल्टो-स्लावी में विदरित हुआ। किन्तु यदि हम यह मानते हैं तो हम विरोध और असंगतियों में फंस जाते हैं क्योंकि अन्य विसंवादी किन्तु अतिव्यापी सादृश्य मिलते हैं। इस प्रकार, बाल्टोस्लावी भारत-ईरानी, आर्मेनियाई और अल्बानी से इस दृष्टि से मिलती है कि इनमें कुछ रूपों में ऊष्मध्वनियाँ मिलती हैं जहाँ अन्य भाषाओं में कोमल तालव्य ध्वनियाँ मिलती हैं, जैसे कि "सौ" के लिए ही शब्द लें :—संस्कृत 'शतम्', अवेस्ती [satəm], लिथुएनी [ˈʃimtas] किन्तु ग्रीक [he-ka'ton], लैटिन [ˈkentum] प्राचीन आईरी [keːχ], आदिम भारतयूरोपीय* [kmtom] हम यह मानते हैं कि पूर्वज भाषा में तालव्यीकृत कोमलतालव्य स्पर्श थे।

इसी प्रकार, जहां उपरि उल्लिखित चारों शाखाओं के कोमलतालव्य स्पर्श हैं वहाँ अनेक रूपों में अन्य भाषाओं में ओष्ठय तत्त्व के साथ कोमलतालव्य के संयोजन मिलते हैं अथवा इनके स्पष्ट आपरिवर्तन मिलते हैं यहाँ हम यह मानते हैं कि पूर्वज भाषा में ओष्ठ्यीकृत कोमलतालव्य स्पर्श है,। जैसेकि "प्रश्नात्मक स्थानापन्न प्रातिपदिक के लिए शब्द लें :—संस्कृत कः, "कौन", लिथुएनी [kas], प्राचीन बल्गेरियाई [ku-to] किन्तु ग्रीक [po-then] "कहाँ से" लैटिन [kwo:] "किसके द्वारा", गॉथी [hwas] "कौन", आदिम भारतयूरोपीय *[kwos] "कौन" और इससे व्युत्पन्न अन्य शब्द।

केवल सीमित स्थलों में भाषाओं के दोनों वर्ग साधारण कोमलतालव्य स्पर्श रखने में एकरूप हैं। तदनुसार, अनेक विद्वान यह मानते हैं कि आदिम भारतयूरोपीय एकता का पूर्वतम दृष्टिगोचर विभाजन तथाकथित "केन्टुम् भाषाओं" के पश्चिमी वर्ग और "शतम् भाषाओं" के पूर्वी वर्ग में हुआ है। यद्यपि केन्द्रीय एशिया में उपलब्ध तोखारी प्रथम वर्ग की भाषा है यह आगे देखा जायगा कि यह विभाजन यह मानकर चलता है कि बाल्टोस्लावी और जर्मनीय एक विशिष्ट विकास-युग से गुजरे थे।

इसके बाद, जर्मनीय और इटली में विशिष्ट सादृश्य मिलते हैं। उदाहरणार्थ, दोनों में अतीतकाल की क्रिया रचना एवं प्रयोग में एक सी है और कुछ शब्दकोष के लक्षण एक-से हैं (बकरा : लैटिन haedus; गॉथी gamains : लैटिन commūnis "सामान्य")। किन्तु ये भी जर्मनीय और बाल्टोस्लावी

में मिलने वाले विशिष्ट सादृश्यों से विरोध में है। इसी प्रकार, इटाली में एक ओर वे विशिष्टताएं हैं जो कैल्टी में भी मिलती हैं और दूसरी ओर वे विशिष्टताएं हैं जो ग्रीक से मिलती हैं (चित्र 3)



चित्र टिप्पणी : चित्र 3 : भारतयूरोपीय भाषाओं में विशिष्ट सादृश्य के कुछ अतिव्यापी लक्षण जोकि परिवार वृक्ष आरेख से असंगत हैं। (श्रेडर से लिया गया है)

1—कुछ रूपों में कोमलतालव्य के स्थान पर ऊष्मध्वनियां
2—[bh] के स्थान पर [m] विभक्तिचिन्ह
3—[r] में अन्त होने वाला कर्मवाच्यीय प्रत्यय
4—अतीत काल में उपसर्ग ['e-]
5—पुंलिंग परप्रत्ययों के साथ स्त्रीलिंग संज्ञाएं
6—सामान्य अतीत के समान पूर्णकाल का प्रयोग

18.12 जैसे-जैसे ये सादृश्य प्रकाश में आते गए, प्राचीन विद्वानों के सामने जोकि वंशवृक्ष आरेख का आग्रह करते थे एक समाधान-दु:साध्य समस्या आ गई। जिसे किसी विशिष्ट सादृश्य को ये घनिष्ठ सम्बन्ध के साक्ष्य के लिए स्वीकार करते थे, कुछ अन्य सादृश्य मिल जाते थे जोकि इसके साथ असंगत थे और जिसकी व्याख्या पूर्णतया विभिन्न आरेख द्वारा दी जा सकती थी और यह निर्णय इतना महत्वपूर्ण था कि इसकी अवहेलना न की जा सकती थी चूँकि प्रत्येक स्थल पर यह सादृश्य के मूल्यों को अत्यधिक मात्रा में परिवर्तित करती थी। उदाहरण के लिए, यदि जर्मनीय और बाल्टोस्लावी एक उभयनिष्ठ विकास युग से गुजरे थे तो इनके मध्य का कोई

मेल आदिम भारतयूरोपीय के सम्बन्ध में निश्चित गारन्टी नहीं देता है, किन्तु यदि वे उभयनिष्ठ विकास के युग से नहीं गुजरे हैं तो ऐसा मेल वंशवृक्ष सिद्धान्त के आधार पर व्यावहारिक रूप में आदिम भारतयूरोपीय के लक्षण का पक्का साक्ष्य है।

इन विसंवादों का कारण जान शिमट (Johannes Schmidt) (1843-1901) ने सन् 1872 में भारतयूरोपीय भाषाओं के पारस्परिक सम्बन्ध पर लिखे प्रसिद्ध निबन्ध में प्रदर्शित किया था। इन्होंने बताया था कि विशिष्ट सादृश्य भारतयूरोपीय की किसी भी दो शाखाओं में मिल सकते हैं और ये उन शाखाओं में सर्वाधिक हैं जो परस्पर भौगोलिक सामीप्य में हैं। उन्होंने इस तथ्य को तथाकथित तरंग-वाद (wave-hypothesis) द्वारा समझाया। तरंगों के समान एक भाषण प्रदेश पर विभिन्न भाषाई परिवर्तन फैल सकते हैं और प्रत्येक परवर्ती परिवर्तन क्षेत्र के उस भाग को प्रभावित कर सकता है जो परिवर्तन के क्षेत्र में न था। एक के बाद एक ऐसी तरंगों के परिणामवश समभाषांश रेखाओं का जाल बन जाता है (§ 3.6)। निकटवर्ती प्रान्त एक दूसरे से सर्वाधिक मिलेंगे; जिस किसी दिशा में चलें अधिक तथा अधिक समभाषांश रेखाएं कटती जाएंगी और दूरी के साथ-साथ अन्तर बढ़ते जाएंगे। निश्चयतः यह वह चित्र है जो पर्यवेक्षण में स्थानीय बोलियों में हम पाते हैं।अब यदि भाप लें कि पड़ोसी बोलियों, जो एक ही विभिक्ति में विचार की जा रही है, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए—ज्ञ नाम की हैं। इनमें एक बोली "क" राजनीतिक, वाणिज्य अथवा अन्य किसी कारण किसी भांति "ए" उत्कर्ष को प्राप्त करती है और उसकी दोनों ओर की पड़ोसी बोलियां, पहले "ऊ" और "ऐ" फिर "उ" और "औ" फिर "ई" और "क" "ख" "ग" अपनी विशिष्टताएं छोड़ देती हैं और कुछ समय बाद केन्द्रीय बोली "ए" ही बोली जाती है। जब ऐसा होता है, तो "ए" की सीमान्त बोलियाँ "आ" और "घ" हैं और इनसे यह इतनी पर्याप्त मात्रा में भिन्न हैं कि स्पष्ट भाषासीमाएं बन सकें। फिर भी "ए" और "आ" का सादृश्य "ए" और "अ" के सादृश्य से अधिक होगा, और इसी भाति बोलियों "च" "छ" "ज"—"ह" तक "ए" के समीपतर बोली दूरवर्ती बोली की अपेक्षा अधिक सादृश्य प्रदर्शित करेगी यद्यपि उनके बीच स्पष्ट सीमा रेखाएं हैं। इन तथ्यों की प्रस्तुति तरंग-सिद्धान्त (wave-theory) के नाम से प्रसिद्ध है जबकि प्राचीन भाषाई सम्बन्धों के विषय में प्रचलित सिद्धान्त वंशवृक्ष (family tree) सिद्धान्त है। आजकल तरंगप्रक्रिया और विदरणप्रक्रिया भाषाई भेदीकरण की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं की दो कदाचित् प्रमुख प्रतिरूप हैं।

18.13 तो तुलनात्मक पद्धति, प्राग्-ऐतिहासिक भाषाओं के पुनर्रचन की केवल एकमात्र पद्धति, पूर्णतया एकरूप भाषण समुदायों और अचानक सुस्पष्ट विदरणों के स्थलों पर यथार्थता से काम करती है। चूंकि ये पूर्वमान्यताएं कभी भी पूरी नहीं होती हैं, तुलनात्मक पद्धति कभी भी यह दावा नहीं कर सकती कि वह पूर्व ऐतिहासिक प्रक्रिया को चित्रित कर रही है । जहाँ पुनर्रचन कार्य सरलता से चल निकलता है जैसे "पिता" के लिए प्रयुक्त भारतयूरोपीय शब्द में अथवा कम विस्तृत पर्यवेक्षणों में (जैसे आदिम रोमांस अथवा आदिम जर्मनीय के पुनर्रचनों में), पूर्वज भाषा में विद्यमान भाषण रूपों के संघटनात्मक लक्षणों के सम्बन्ध में निश्चित रहते हैं । जहां कहीं, चाहे काल को लेकर, चाहे स्थान को लेकर, विस्तृत पैमाने पर तुलना होती है, यह ऐसे अनेकानेक रूप और आंशिक समानताओं को प्रकट करती है जो वंशवृक्ष आरेख से संगत नहीं हैं । तुलनात्मक पद्धति केवल इस पूर्वकल्पना पर काम कर सकती है कि पूर्वज भाषा एकरूप है । किन्तु अनेकानेक रूप (जैसे आदिम भारतयूरोपीय में तृतीया बहुवचन की *[-mis] और *[-bhis]) दिखलाते हैं कि इस पूर्वकल्पना का कोई औचित्य नहीं है । तुलनात्मक पद्धति यह पहले से मान कर चलती है कि उत्तरोत्तर शाखाओं में सुस्पष्ट विदरण हुआ है किन्तु असंगत आंशिक समानताएं यह दिखलाती हैं कि परवर्ती परिवर्तन पूर्ववर्ती परिवर्तनों द्वारा छोड़े समभाषांश रेखाओं के आगे भी फैले हैं, पड़ोसी भाषाओं में सादृश्य मध्यवर्ती बोलियों (तरंग सिद्धान्त) के विलोपन से उत्पन्न हुआ है, और किसी विशिष्ट दृष्टि से विभेदीकृत भाषाएं एक से परिवर्तन कर सकती हैं ।

कभी-कभी अतिरिक्त तथ्य निर्णय में सहायता देते हैं । इस प्रकार विशेषण संस्कृत (पीवा) "मोटा", ग्रीक [pi:o:n] केवल भारतईरानी और ग्रीक में मिलता है, किन्तु आदिम भारतयूरोपीय में इसकी उपस्थिति संस्कृत (पीवरी), ग्रीक [ˈpi:ejra] इन स्त्रीलिंग रूपों की अनियमित रचना के कारण निश्चित है, क्योंकि इन दोनों भाषाओं में नए स्त्रीलिंग बनाने के ऐसे नियम नहीं हैं । इसके विपरीत, जर्मनीय शब्द hemp प्राचीन अंग्रेजी [ˈhɛnep), मध्य डच [ˈhannep], आदि, ग्रीक [ˈKannabis] के अनुरूप है ; फिर भी हेरोडोटस् (पांचवी सदी ईसापूर्व) से जानते हैं कि सन ग्रीकों के लिए थ्रेस और शिथिया में केवल विदेशी पौधे के रूप में ज्ञात था : यह शब्द ग्रीक में (और वहाँ से लैटिन में), और जर्मनीय में (और वहाँ

से कदाचित् स्लावी में) किसी और भाषा से—कदाचित् किसी उग्री बोली से—उस समय आया था जबकि जर्मनीय-पूर्व [k] का [h] में तथा [b] का [p] में परिवर्तन नहीं हुआ था। यदि यह आकस्मिक सूचना न मिलती तो ग्रीक और जर्मनीय रूपों की यह अनुरूपता हमें इस शब्द को भारतयूरोपीय मानने के लिए बाध्य करती।

18.14 प्राचीन भाषण रूपों का पुनर्रचन पूर्वकालीन भाषिकेतर स्थितियों पर कुछ प्रकाश डालता है। उदाहरणार्थ, यदि हम प्राचीनतम भारतीय आलेखों की रचना को 1200 ईसापूर्व के पहले के अथवा होमर के काव्य 800 ईसापूर्व के पहले के मानें तो अपने आदिम भारतयूरोपीय रूपों के पुनर्रचित रूपों को इनसे कम से कम एक हजार वर्ष पूर्व मानना पड़ेगा। इस प्रकार भाषा के इतिहास को, प्रायः सूक्ष्म विवरणों में, किसी अन्य मानव संस्था की अपेक्षा कहीं अधिक पूर्व ले जा सकते हैं। दुर्भाग्यवश हम अपने ज्ञान को अन्य क्षेत्रों में नहीं ले जा सकते हैं, विशेषतः इस कारण कि भाषणरूपों के अर्थ अधिकतर अनिश्चित हैं। हम यह नहीं जानते कि आदिम भारतयूरोपीय कहां बोली जाती है अथवा किस भांति के लोगों से बोली जाती थी ; हम आदिम भारतयूरोपीय भाषण रूपों को प्रागैतिहासिक वस्तु के किसी विशिष्ट प्रतिरूप के साथ सम्बद्ध नहीं कर सकते।

Snow "हिम" के संज्ञा और क्रिया रूप में भारतयूरोपीय भाषाओं में इतना सामान्य है कि आदिम भारतयूरोपीय समुदाय के सम्भावित निवासस्थानों के क्षेत्र से भारत को बाहर निकाल सकते हैं। पौधों के नाम, जहां उनमें ध्वन्यात्म समानता भी है, अर्थ की दृष्टि से भिन्न हैं ; इस प्रकार, लैटिन ['fa:gus],प्राचीन अंग्रेजी [bo:k] "बीच वृक्ष" के लिए है, किन्तु ग्रीक [phe:'gos] ओक के प्रकार के लिए है, इस प्रकार के अर्थवैभिन्न्य अन्य पौधों के नामों में भी हैं। अंग्रेजी शब्द tree, birch, withe (जर्मन weide "विलो"), oak, corn और लैटिन salix "विलो" quercus "ओक" hordeum "जौ" (जर्मन Gerste का सजातीय), संस्कृत (यवः) "जौ" आदि भारतयूरोपीय पौधे हैं। लैटिन glans "अकार्न" का प्रतिरूप इसी अर्थ में ग्रीक, आर्मेनियाई और बाल्टोस्लावी में मिलता है।

जन्तु नामों में गाय, संस्कृत (गावः), अंग्रेजी cow, ग्रीक ['bows], लैटिन [bo:s], प्राचीन आइरी [bo:] रूपों की अनियमितताओं द्वारा

एकरूपता साक्षीबद्ध और निश्चित है। अन्य पशुनाम सीमित क्षेत्र में ही मिलते है ; इस प्रकार goat शब्द जर्मनीय और इटाली वर्ग में सीमित है ; लैटिन प्रतिरूप caper: प्राचीन नार्स hafr "बकरा" केल्टी में भी मिलता है, संस्कृत प्रतिरूप (अजः), लिथुएनी [oʒi:s] इन्हीं दो भाषाओं में सीमित है ; ग्रीक प्रतिरूप ['ajks] आर्मेनियाई और कदाचित् ईरानी में मिलते हैं। अन्य जन्तु, जिनके लिए एक या एक से अधिक समीकरण मिलते हैं और जो भारतयूरोपीय क्षेत्र के सीमित अंश पर प्रचलित है, हैं–घोड़ा, कुत्ता, भेड़ (शब्द wool "संस्कृत ऊर्णा" निश्चयतः आदिम भारतयूरोपीयकालीन है), सूअर भेड़िया, भालू, हरिण, ऊदबिलाव, बया, हंस, बतख, मैना, बगुला, चील, मक्खी, मधुमक्खी (mead के साथ जिसका प्रारम्भिक अर्थ "मधु" था), साँप, कीड़ा और मछली हैं। अंग्रेजी milk के प्रतिरूप और लैटिन lac "दूध" का प्रतिरूप पर्याप्त मात्रा में व्यापक हैं और इसी प्रकार yoke शब्द और अंग्रेजी wheel और जर्मन Rad "चक्र" के प्रतिरूप और axle के प्रतिरूप भी पर्याप्त मात्रा में व्यापक हैं। हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पशुओं में मवेशी पालतू थे और गाड़ी काम में आती थी, किन्तु अन्य पशुओं के सम्बन्ध में पालतू हैं या नहीं इसका निर्णय संभव नहीं है।

बुनने, मिलने और कार्य की अन्य प्रक्रियाओं के लिए क्रियाएं बहुत प्रचलित हैं किन्तु अर्थ में अस्पष्ट एवं परिवर्तनशील हैं। संख्या में स्पष्टतया "सौ" के लिए शब्द है किन्तु "हजार" के लिए कोई शब्द नहीं है। संबंधियों के लिए प्रयुक्त शब्दावली स्त्री के विवाहजन्य संबंधियों के नाम (पति के भाई, पति की बहिन, आदि के नाम) व्यापक रूप से मेल खाते हैं, किन्तु पुरुष के विवाहजन्य संबंधियों के नाम व्यापक नहीं है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि पत्नी पति के परिवार का अंग बन जाती थी और बड़े पितृवंशीय समूहों में लोग रहते थे। अनेक भाषाएं, औजारों के नाम और सोना, चांदी, कांसा (अथवा तांबा) के लिए कई समीकरण प्रस्तुत करती हैं। किन्तु इनमें से अनेक hemp के समान आगत-शब्द हैं। ग्रीक ['pelekus], "फरसा", संस्कृत (परशुः) निश्चयतः असीरा [pilakku] से सम्बद्ध है और अंग्रेजी के axe और silver शब्द प्राचीन आगत शब्द हैं। तदनुसार विद्वान लोग आदिम भारतयूरोपीय समुदाय को उत्तर पाषाणयुग में रखते हैं।

अध्याय 19

बोली भूगोल

19.1 एकरूप पूर्वत्र भाषाओं और अचानक एवं निश्चित विदरण की पूर्व-धारणाओं के साथ ऐतिहासिक पद्धति में यह गुण थे कि वह उन अवशेषरूपों को प्रदर्शित करती थी जोकि इस पूर्वधारणा से व्याख्यात नहीं हो पाते थे । उदाहरण के लिए भारतयूरोपीय-क्षेत्र में बड़े पैमाने पर विद्यमान परस्पर विरोधी समभाषिक रेखाएँ यह प्रदर्शित करती थीं कि भारतयूरोपीय परिवार की शाखाएँ एक पूर्णतया एकरूप पूर्वज समुदाय (§18.11, आकृति 3) के अचानक विदरण के उत्पन्न नहीं हुई हैं । हम यह कह सकते हैं कि पूर्वज समुदाय विदरण के पूर्व ही बोलियों की दृष्टि से विभिन्न था अथवा विदरण के बाद परकालीन समुदायों के अनेक समुच्चय एक दूसरे के सम्पर्क में बने रहे। इन दोनों कथनों का तात्पर्य यह है कि क्षेत्र या क्षेत्र के कुछ अंश जोकि किन्हीं दिशाओं में पहले से ही भिन्न हैं उभयनिष्ठ परिवर्तन कर सकते हैं । अतएव उत्तरोत्तर परिवर्तनों का परिणाम पूरे क्षेत्र पर बिछे हुए समभाषिक-रेखाओं का जाल है, तदनुसार किसी भाषण-प्रदेश में स्थानीय विभेदों का अध्ययन बोली भूगोल (Dialect Geography) कहलाता है और तुलनात्मक पद्धति के प्रयोग का पूरक बनता है ।

एक क्षेत्र के अन्तर्गत भाषा में विद्यमान स्थानीय अन्तर लोगों के ध्यान से कभी-भी नहीं छूटे थे । किन्तु उनकी महत्ता का मूल्यांकन अभी हाल में किया गया है । 18वीं शती के वैयाकरणों का विश्वास था कि साहित्यिक और उच्चवर्गीय मानक भाषा स्थानीय भाषण-रूपों से अधिक प्राचीन और तर्क दृष्टि से अधिक सच्ची है क्योंकि स्थानीय भाषण-रूप सामान्य जनता के अज्ञान और प्रमाद के फलस्वरूप, फिर भी ये ध्यान में आता है कि स्थानीय बोलियां एक या अनेक उन प्राचीन लक्षणों को बनाये रखती हैं जोकि मानक भाषा में अब विद्यमान नहीं हैं । 19वीं शती के अन्त में

बोली-कोष (dialect dictionaries) निकलने लगे जोकि अमानक भाषा की शब्दीय विचित्रताओं को प्रस्तुत करते थे।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की प्रगति ने दिखाया कि मानक-भाषा किसी भी दशा में प्राचीनतम प्रतिरूप नहीं है बल्कि विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों में स्थानीय बोलियों से निकली है, उदाहरण के लिए मानक अंग्रेजी, साहित्यिक प्राचीन अंग्रेजी का आधुनिक रूप नहीं बल्कि लन्दन की उस प्राचीन बोली का रूप है जो पहले प्रान्तीय और फिर राष्ट्रीय मानक-भाषा बनी और जिसने अन्य स्थानीय और प्रान्तीय बोलियों से इस बीच बहुत सारे रूप ग्रहण किये। अब लोगों का मत दूसरी चरम सीमा पर है। चूँकि स्थानीय बोली कुछ ऐसे रूपों को रखती है जोकि मानक भाषा में अब समाप्त हो चुके हैं लोगों ने यह सोचा कि वह किसी प्राचीन प्रतिरूप की अपरिवर्तित अवशिष्ट भाषा है। इस प्रकार यह भी सुना जाता है कि कुछ दूरवर्ती स्थानों की बोली "शुद्ध एलज़ाबेथीय अंग्रेजी" है। चूँकि दूसरी बोलियों से लिये हुए रूप केवल मानक-भाषा में दिखाई पड़ते हैं, लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि स्थानीय बोलियों में बिल्कुल सम्मिश्रण नहीं होता है और फलस्वरूप ऐतिहासिक दृष्टि से वे अधिक नियमित हैं। तदनुसार इस स्थिति पर हमें बोली-व्याकरण (dialect grammars) मिलते हैं जोकि भाषा के किसी प्राचीनतर स्थिति की तुलना में स्थानीय बोलियों के ध्वनियों और रूप-सिद्धि के सम्बन्ध को प्रदर्शित करते हैं।

खोज से यह पता लगा कि प्रत्येक बोली के अनेक रूपों में संघटना के विस्थापन (displacement of structure) मिलते हैं जोकि दूसरी बोलियों से स्वीकृति रूपों के सम्मिश्रण के कारण हैं। उदाहरण—प्राचीन अंग्रेजी [ʃ] सुसामान्यतया मानक अंग्रेजी में [ʃ] के रूप में मिलता है father, foot, fill, five आदि में। किन्तु vat और vixen जैसे शब्दों में जोकि प्राचीन अंग्रेजी [Fɛt] और ['ʃyksen] "लोमड़ी (स्त्री०)" से निकले हैं यह [v] के रूप में मिलता है। स्पष्टतया इसका कारण है, यह रूप ऐसी बोली का सम्मिश्रण है जिसमें प्रारम्भिक [ʃ] का [v] में परिवर्तन हो गया था। सम्भवतः यह प्रारम्भिक [v] कुछ दक्षिण अंग्रेजी बोलियों (बिल्टशायर, डोरसैट, सोमरसैट, देवन) (wiltshire, Dorset, Somerset, Devon) में ['voðə, vut, vit, vajv] जैसे रूपों में नियमतः मिलता है। अतएव कुछ अध्येताओं को यह आशा थी कि स्थानीय बोलियों में वे स्वनिमीय नियमितता (अर्थात् प्राचीनतर प्रतिमानों का सुरक्षण) पायेंगे जोकि मानक-भाषा में लुप्त हो चुके हैं। 1876 में जर्मन

विद्वान Georg Wenker ने इस उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए Düsseldorf के आसपास राइन नदी के प्रदेश की स्थानीय बोलियों का सर्वेक्षण प्रारम्भ किया, बाद में उसने एक बृहत्तर प्रदेश का सर्वेक्षण किया और 1861 में उत्तरी और केन्द्रीय जर्मनी के, बोली मानचित्रावली (Dialect atlas) की पहली किस्त के रूप में, 6 मानचित्र-पट प्रकाशित किये। उसने बाद में यह योजना छोड़ दी और पूरे जर्मन साम्राज्य के सर्वेक्षण की योजना बनायी। सरकारी सहायता से वेंकर ने चालीस वाक्यों को, मुख्यतया स्कूल-मास्टरों द्वारा चालीस हजार से अधिक जर्मन स्थानीय बोलियों में अनुवाद कराया। इस प्रकार किसी भी लक्षण की विभिन्न स्थानीय विविधताओं का एक मान-चित्र के ऊपर अंकन सम्भव था जोकि एक भौगोलिक वितरण को प्रदर्शित करता था। 1926 से ये मानचित्र एक कम पैमाने पर F. Wrede के सम्पादन में मुद्रित हो रहे हैं।

प्रारम्भ से ही स्पष्टतया वेंकर के अध्ययन के परिणाम आश्चर्यजनक थे स्थानीय बोलियाँ प्राचीनतम भाषणरूपों की तुलना में मानक-भाषा के समान ही असंगत थीं। बोली-भूगोल इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन के परिणाम को पुष्ट करता है अर्थात् वह यह निष्कर्ष निकालता है कि विभिन्न भाषाई परि-वर्तन एक प्रदेश के विभिन्न भागों पर फैले हुए हैं। किन्तु इस नई विधि ने समभाषिक रेखाओं के जाल का एक समीप से खींचा हुआ चित्र प्रस्तुत किया है।

19.2 इस समय बोली-अध्ययन के तीन मुख्य रूप हैं। सबसे प्राचीन कोषीय रूप है। प्रारम्भ में बोली-कोषों के अन्तर्गत वे ही रूप और अर्थ आते थे जोकि मानक प्रयोग से भिन्न थे। निश्चयतः यह भेदक लक्षण व्यर्थ था। आजकल हम स्थानीय बोली के कोश से यह आशा करते हैं कि उसमें वे सभी शब्द होंगे जोकि अमानक भाषा में प्रचलित हैं और उन शब्दों का यथार्थ ध्वन्यात्मरूप और पर्याप्त ध्यान से निश्चित किया गया अर्थ दिया गया है। एक पूरे प्रदेश या क्षेत्र का बोली-कोष एक कहीं अधिक बड़ी समायोजना है। शब्द कोष में बोली के प्रत्येक स्थानीय प्रतिरूप के लिए स्वनिमीय योजना होगी और फलस्वरूप वह ध्वनिप्रक्रियात्मक अंश कठिनाई से पृथक् किया जा सकता है। हम यह आशा करते हैं कि इसमें उस भौगोलिक-प्रदेश का संकेत होगा जिसमें प्रत्येक रूप प्रचलित है किन्तु कथन कहीं बहतर ढँग से एक मानचित्र के रूप में दिया जा सकता है।

स्थानीय बोली के व्याकरण अधिकतर स्वनिमों और रूपसाधिक-रूपों की अनुरूपताओं को कहने में, भाषा की प्राचीनतर स्थिति को सीमित रखते हैं। आजकल व्याकरण से उस भाषा के सर्वांगीय होने की आशा की जाती है अर्थात् उसमें ध्वनि-प्रक्रिया, वाक्य-प्रक्रिया और रूप-प्रक्रिया के ऊपर प्रचुर मात्रा में भाषा के उल्लेखों के साथ वर्णन होगा। रूपों के इतिहास प्रदेश को पूरा मान करके केवल सम्बन्धों द्वारा बतलाया जा सकता है, क्योंकि प्रत्येक लक्षण परिवर्तित होता है, अपरिवर्तित बना रहता है, जैसे-जैसे परिवर्तन की लहर स्थानीय बोली बोलने वाले के पास पहुँचती है अथवा नहीं पहुँचती है। किन्तु पूरे प्रदेश का व्याकरण बनाना भी एक विशाल समायोजना है। इस प्रकार की पहली कृति जॉन इण्ड्रिया सिमिलर (Johann Andreas Schmeller) (1785-1852) द्वारा सन् 1821 में प्रकाशित बवेरियायी व्याकरण है और यह एक व्यक्ति के द्वारा अकेली बनायी गयी कृति है। इससे बढ़कर कोई भी व्याकरण नहीं लिखा गया है। अंग्रेजी भाषा के सम्बन्ध में एलिस (Ellis) के Early English Pronunciation के पाँचवें खण्ड में अंग्रेजी बोलियों की ध्वनि-प्रक्रिया और इंग्लिश English Dialect Diclionary (अंग्रेजी बोली कोश) के सम्बन्ध में प्रकाशित Joseph wright का व्याकरण है। निस्सन्देह यहाँ भी हम यह अपेक्षा करते हैं कि प्रत्येक लक्षण के भौगोलिक विस्तार का कथन होना चाहिए और यह कहीं अधिक स्पष्टता से मानचित्र पर ही दिया जा सकता है।

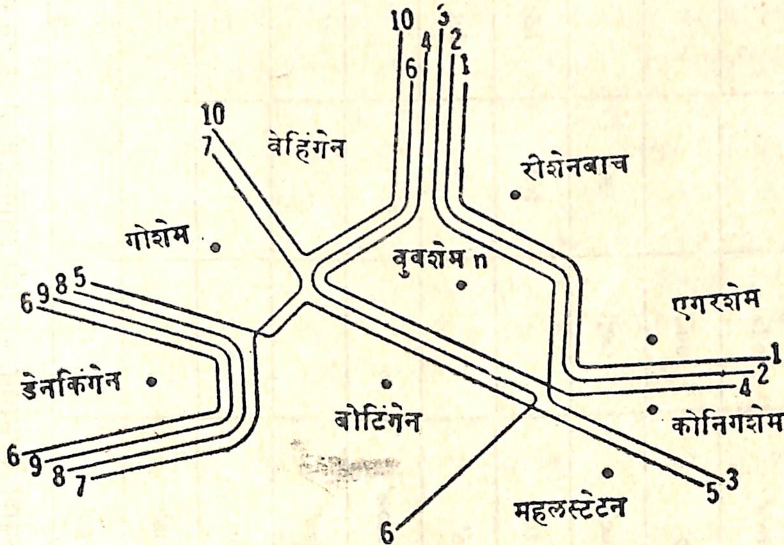
एक अकेली स्थानीय बोली के सम्पूर्ण और सुव्यवस्थित-वर्णन के अतिरिक्त, वितरण का मानचित्र ही कथन का सबसे अधिक स्पष्ट और सबसे अधिक सुसंबद्ध रूप है। बोली मानचित्रावली जोकि ऐसे मानचित्रों का समूहन है, हमें विभिन्न मानचित्रों की तुलना से विभिन्न लक्षणों के वितरण की तुलना सम्भव बनाता है। ऐसी तुलना की व्यावहारिक सहायता के लिए जर्मन एटलस में प्रत्येक मानचित्र के साथ एक छुट्टा पारदर्शी पत्र है जिसपर मुख्य संभाषिक रेखायें और अन्य चित्र अंकित हैं। यथार्थतः तथा संगति की सर्वस्वीकृति माँग के अतिरिक्त, एक मानचित्र का मूल्य इस पर कहीं अधिक निर्भर है कि स्थानीय बोली कितनी पूर्णता के साथ चित्रबद्ध की गई है। जाल जितना ही महीन होगा वर्णन उतना ही अधिक पूर्ण होगा। एक स्थानीय रूप को अंकित करने के लिए और उसका मूल्यांकन करने के लिए हमें स्थानीय बोली के स्वनिमीय व्यवस्था के शब्दों में पूर्णसंघटनात्मक

प्रतिमान का जानना आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त उच्चारण अथवा व्याकरणिक अथवा कोशीय प्रतिरूपों के अनेक रूपान्तर, द्योतन के अन्तरों के साथ अथवा बिना अंतरों के, किसी एक स्थानीय बोली में प्रचलित हो सकते हैं और रूपान्तर उन परिवर्तनों के इतिहास के लिये निश्चयतः महत्वपूर्ण हैं जिन्होंने उन्हें उत्पन्न किया। अन्त में, पूरे व्याकरण और कोष को प्रस्तुत करने में कितनी विशाल संख्या में मानचित्रों की आवश्यकता पड़ेगी कि एक बहुत बड़ी मानचित्रावली भी वितरण के कुछ ही नमूनों को दे पायेगी जबकि हम यथासम्भव अधिक से अधिक मानचित्रों की अपेक्षा रखते हैं। इन सबको दृष्टि में रखते हुए एक बोली-मानचित्रावली एक अत्यन्त विशाल समायोजना है और व्यवहार में किसी न किसी दृष्टि से कोई न कोई कभी मिल ही जावेगी। वे वाक्य जो जर्मन मानचित्रावली के आधार हैं स्कूल मास्टरों और अन्य भाषाविज्ञान में दीक्षा न पाये हुए व्यक्तियों द्वारा सामान्य जर्मन लिपि में लिखे गये थे। सामग्री नीदरलैण्ड, बेल्जियम, स्विटज़रलैण्ड, आस्ट्रिया, बाल्टिक, जर्मन, इडिश, ट्रान्सवेनिआई और अन्य भाषण-द्वीप जैसे डच जर्मन प्रदेश के अनेक भूभागों से भेजी गयी थी। सामग्री मुख्यतः ध्वनि प्रक्रियात्मक है, क्योंकि सूचक कुछ सहजग्राह्य कोषीय और व्याकरणिक अन्तरों को छोड़कर केवल रूपों को ऐसी वर्तनी में प्रतिलेखित करते थे जोकि स्थानीय उच्चारण को प्रदर्शित करते थे, यद्यपि ध्वनि प्रक्रियात्मक पक्ष ही ऐसा पक्ष था जो कि ऐसे प्रतिलेखन में कम-से-कम यथार्थस्वरूप प्रदर्शित कर सकता था। फ्रेंच–मानचित्रावली की सामग्री एक प्रदीक्षित ध्वनिविज्ञानी एडमण्ड एडमोन (ɛdmond ɛdmont) द्वारा संगृहीत की गयी थी, निस्संदेह एक आदमी सीमित संख्या में स्थानों पर जा सकता था और प्रत्येक स्थान पर एक-थोड़े समय के लिए रह सकता था। तदनुसार ये मानचित्र 600 केवल फ्रांसीसी प्रदेश (फ्रांस और समीपवर्ती बेल्जियम, स्विटजरलैंड और इटली के कुछ प्रदेश) के 600 स्थानों से थोड़े-ही अधिक स्थानों को अंकित करते हैं। प्रत्येक स्थल पर एक अकेले सूचक से कोई 2,000 शब्द तथा पदसंहितियाँ वाली पृच्छावली के द्वारा रूप इकट्ठे किये गये थे। एडमोन महाशय के कान चाहे कितने ही अच्छे क्यों न हों वे प्रत्येक स्थानीय बोली के ध्वनि प्रक्रियात्मक प्रतिमानों को जानने में असमर्थ थे। जर्मन-मानचित्रावली की अपेक्षा यहाँ ध्वनि सम्बन्धी और कोषसम्बन्धी परिणाम कहीं अधिक प्रचुरमात्रा में हैं। किन्तु स्थान जाल की शिथिलता और पूरे-पूरे वाक्यों का अभाव दो बड़ी भारी

कमियाँ हैं। ये मान-चित्रावली ज्यूल ग्लेरो (Jules Gilliéron) (1854-1926) के द्वारा आयोजित और सम्पन्न की गई थी और पूरा-पूरा कॉशिका के लिए पूरक के साथ1896 से 1908 के बीच में निकला। (K. Jaberg) के जैबर्ग और (J. Jud) जे० जूड़० के द्वारा सम्पादित एक इतालवी (Italian) की मानचित्रावली निकल रही है और इसमें कहीं अधिक यथार्थता का प्रयत्न किया गया है और अर्थ के ऊपर पूरा ध्यान दिया गया है। ऐसी छोटी मान-चित्रावलियां भी उपलब्ध हैं–स्वाविया के लिए (H. Fischer) द्वारा 1895 में एक ध्यानपूर्वक बनायी हुई कृति के संबंध में 28 मानचित्र प्रकाशित हुए थे, डेनमार्क के लिए वी० बिनके और एम० क्रिस्टेन्सन (M. Bennicke और M. kristensen) (1898–1912), रोमानिया के लिये जी० वेगन्द (G. weigand) (1909) द्वारा केटोलोनिया (catalon ia) के लिए एग्रिएरा (A. Griera, 1923) ब्रित्तनी के लिए, पी० ले० राऊ० (P. Le Roux,) 1924) द्वारा बनायी गयी और अन्य मानचित्रावली बन रही हैं। एच० कोरथ के निर्देशन में न्यू इंग्लैण्ड की बोली का सर्वेक्षण हुआ है। एक अकेला पर्यवेक्षक एक प्रदेश के थोड़े से ही क्षेत्र पर कार्य कर सकता है जैसा कि कार्ल हाग (Karl Haag) ने 1898 में दक्षिणी सोविया के जिलों के अपने अध्ययन में किया है अथवा केवल एक या दो लक्षणों को लेकर एक ही विस्तृत-क्षेत्र का अध्ययन कर सकता है जैसा कि जी० जी० क्लोइके (G. G. Kloeke) ने किया है जिन्होंने नीदरलैण्ड और बेल्जियम में माउस (mouse) और हाउस (house) के लिए प्रयुक्त शब्दों के स्वर स्वनिमों का 1927 में अध्ययन किया था। यह बात कहने की आवश्यकता नहीं है कि मानचित्र अथवा मानचित्रावली के साथ लिखित कृतियाँ भी हो सकती हैं जिनमें तथ्यों के ऊपर विवेचन अथवा जिनमें उनके स्रोत का विचार हो। ऐसा फिशर, हाग, क्लोइके (Fischer, Haag, Kloeke) के प्रकाशनों में है। बड़ी-बड़ी मानचित्रावली अनेक अध्ययनों का आधार हो सकती है। उदाहरण के लिए फ्रेंच-मानचित्रावली को आधार बनाकर गिलेरों (Gillieron) की अनेक पुस्तकें और निबन्ध हैं। जर्मन मानचित्रों को आधार मानकर एफ० रीड़ (F. wrede) के सम्पादकत्व में अनेक कार्यकर्ताओं ने अध्ययनों की पूरी ग्रंथमालायें निकाल दी हैं।

19.3 अबतक हमारा ज्ञान उन्हीं परिस्थितियों में सीमित था जोकि ऐसे क्षेत्रों में हुई हैं जहाँ बहुत पहले से लोग बसे हुए हैं। इनमें किसी एक पर्याप्त क्षेत्र वाले प्रदेश में एकरूपता का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रत्येक गाँव या अधिक

से दो या तीन गाँवों का प्रत्येक समूह अपनी भाषा-विषयक विचित्रता रखता है। सामान्यतया ये रूपों के विचित्र संयोजन को प्रस्तुत करता है जिसके प्रत्येक रूप पड़ोस के कुछ स्थानों में अन्य संयोजनों में मिलते हैं। तदनुसार मानचित्र के ऊपर प्रत्येक बस्ती अथवा बस्तियों का छोटा समूह अपने पड़ोस से एक या एकाधिक सम्भाषिक रेखाओं द्वारा विच्छिन्न मिलता है। उदाहरण के लिए आकृति चार में हॉग के मानचित्र से उद्धृत एक छोटा अंश बुबशेम (Bubsheim) रॉटवेल (Rottweil) के दक्षिण-पूर्व में प्रायः 10 मील पूर्व) का एक स्वाबी गाँव दिखाया गया है। पड़ोस के स्थान जो पाँच मील के भीतर हैं सभी बुवशेम से समभाष रेखाओं द्वारा पृथक् हैं। केवल इनमें से दो पड़ोस के स्थान आपस में उन सभी लक्षणों में समान हैं जिनका हॉग ने अध्ययन किया था। आकृति पाँच में दी हुई सारणी प्रत्येक स्थान के नाम के नीचे उन रूपों को दिखाती है जिनके विषय में उसकी बोली बुवशेम के रूपों से, जोकि प्रथम स्तम्भ में दिये गये हैं, भिन्न है। जहाँ कोई रूप नहीं दिया गया है वहाँ बोली बुवशेम से मिलती है। प्रत्येक रूप से पूर्व दी गई संख्या उन संख्या का द्योतन करती है जोकि तदनुरूप सम्भाष रेखा को आकृति 4 में प्रदर्शित करते हैं :



आकृति 4. हॉग के आधार पर स्वाबी प्रदेश के एक जर्मन गाँव बुवशेम के चारों ओर समभाषिक रेखाएँ। छठवीं पंक्ति की आवृत्ति दर्शाने के लिए कुछ समभाषिक रेखाओं के साथ-साथ डेनकिंगेन गाँव को जोड़ दिया गया है।

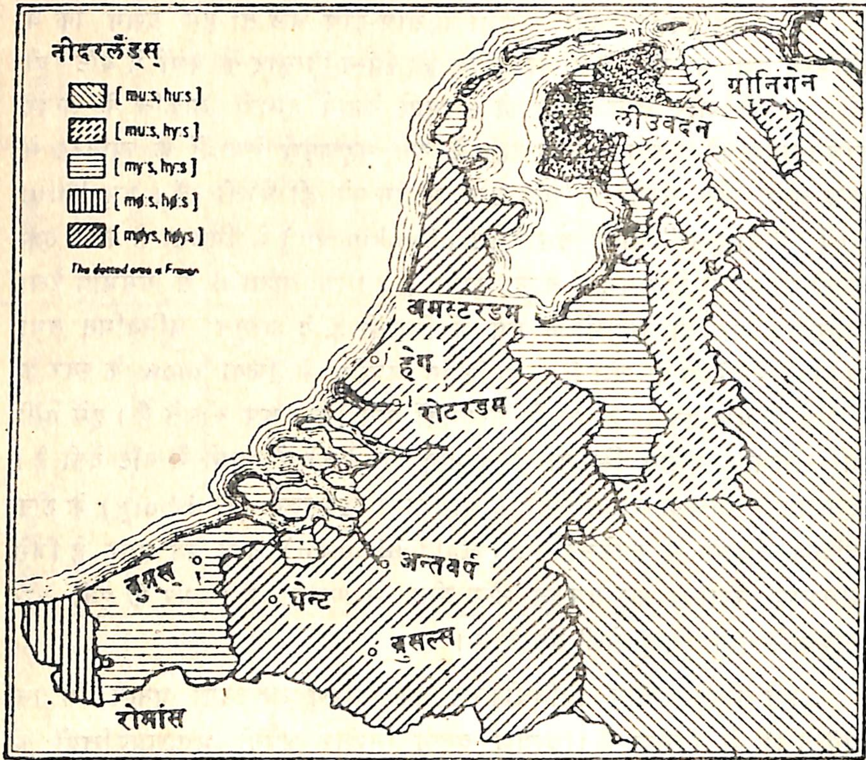
बुबशेम		रीशेनबाच—एगरशेम	कोनिगशेम	महलस्टेटन	बोटिंगेन	डेनकिंगेन	गोशेम	वेहिंगेन
1. ofə	'stove'	o:fə						
2. uffi	'up'	nuff						
3. tsi:t	'time'	tsejt	tsejt					
4. bə̃w	'bean'		bɔ̃:	bɔ̃:	bɔ̃.	bɔ̃:	bɔ̃:	bɔ̃:
5. ɛ̃:t	'end'			ɐ̃jt	ɐ̃jt	ajt		
6. mɛ:jə	'to mow'				majə		majə	majə
7. farb	'color'					fa:rb	fa:rb	
8. alt	'old'					a:lt		
9. truŋkə	'drunk'					trũ:kə		
10. gə̃w	'to go'							gɔ̃:

आकृति 5. स्वाबी के बुबशेम गाँव की स्थानीय बोली के दस भाषण रूप; साथ ही पड़ोसी गाँवों की बोलियों के विभिन्न रूप। ये बोलियाँ बुशेम बोली की समभाषिक हैं। इनकी संख्या चित्र चार में प्रदर्शित समभाषिक रेखाओं के सम है।—हॉग के आधार पर

अगर हम इन समभाष रेखाओं के साथ-साथ चलें तो हम देखेंगे कि वे विभिन्न दशा में जा रही हैं और प्रदेश को भिन्न विस्तार के अंशों में बाँट रही हैं। एक दो और तीन संख्या की समभाष रेखायें हमारी आकृति के अन्दर जर्मन प्रदेश को दृढ़ता से काट रही हैं, इन महत्वपूर्ण रेखाओं के व्यतिरेक में कुछ अन्य, जैसे संख्या 9, एक छोटे भूभाग को ही घेरती हैं। रूप [ˈtru:ke] "पिया हुआ" जोकि डेनकिंगेन (Denkingen) में मिलता है केवल एक छोटी-सी बस्ती के समूह में बोला जाता है। चित्र संख्या 6 से समभाष रेखा मानचित्र पर दो रेखाओं के रूप में मिलती है, ये वस्तुतः अनियमित तथा घुमावदार रेखा के अंश हैं। डेनकिंगेन बुवसेम से क्रिया mow के स्वर के विषय में मेल रखता है यद्यपि मध्यवर्ती गाँव भिन्न रूप बोलते हैं। हमें ऐसी भी समभाष रेखाएँ मिलती हैं जो एक नगर को दो भागों में बाँट देती हैं। इस प्रकार निचली राइन नदी के साथ-साथ ड्विइसबर्ग (Duisburg) के ठीक दक्षिण-पश्चिम में कालेनहौसन (Kaldenhausen) नाम का नगर है जिसे समभाष रेखाओं का समूहन ठीक बीच में काटता है। नगर के पूर्वी और पश्चिमी भाग पृथक् बोली बोलते हैं।

इस तीव्र स्थानीय विविधीकरण का कारण स्पष्टतया घनत्व सिद्धान्त (§ 3.4) में निहित है। प्रत्येक वक्ता निरंतर अपनी भाषणप्रवृत्तियों को उसका जिनसे वार्तालाप किया जा रहा है, उनसे अनुकूलित करता है। वह प्रयुक्त रूपों को छोड़ देता है। नये रूपों का प्रयोग करता है। कदाचित् सर्वाधिक रूप से, भाषण-रूपों की आवृत्ति को, बिना पुराने रूपों को पूर्णतया छोड़े अथवा बिना अपने से नये-रूपों को पूर्णतया स्वीकार किए हुए बदलता रहता है। इसके अतिरिक्त एक ही बस्ती, गाँव, नगर के निवासी एक दूसरे से अधिक बोलते हैं, अपेक्षाकृत एक दूसरे स्थान के निवासी के। जब कभी नवीन रूप बोलने में एक जिले के ऊपर फलता है इस विस्तार की सीमा मौखिक संचार के जाल-सूत्र में किसी दुर्बलता की रेखा होती है। ये दुर्बलता की रेखाएँ जहाँ तक कि ये स्थानवर्णी रेखाएँ हैं, नगर, गाँव, शहर और बस्तियों की सीमाएँ हैं।

19.4 विभिन्नरूपों की समभाष-रेखायें विरलतया ही अपने पूरे विस्तार में एक ही बोध होती हैं। अधिकांश प्रत्येक ध्वनि-विज्ञान कोष, अथवा व्याकरण का लक्षण अपने विस्तार का एक निजी क्षेत्र बनाता है, अपनी निजी समभाष-रेखा के द्वारा सीमाबद्ध रहता है। यह स्पष्ट निष्कर्ष इस उक्ति के रूप में



आकृति 6. नीदरलैण्ड के शब्दों माउस और हाउस में आक्षरिक ध्वनियों का वर्गीकरण।—क्लोइके के आधार पर।

बड़ी अच्छी तरह कहा गया है, प्रत्येक शब्द का अपना निजी इतिहास होता है: (Every word has its own history)।

माउस और हाउस (mouse and house) में पूर्वकालीन जर्मनी भाषा में एक ही स्वर स्वनिम दीर्घ [u:] था। कुछ वर्तमान बोलियाँ, उदाहरण के लिए अंग्रेजी की कुछ स्काटलैण्ड बोलियाँ प्रत्यक्षतः इस ध्वनि को आपरिवर्तित बनाये हुई हैं। अन्य बोलियों ने इनमें परिवर्तन किए, किन्तु इस अर्थ में, इन दोनों शब्दों में एक ही आक्षरिक स्वनिम मिलता है, दोनों प्राचीन संघटना के बनाये हुए हैं। ऐसा एक उदाहरण मानक अंग्रेजी और मानक जर्मन में है जहाँ दोनों शब्दों में [aw] है और मानक डच जहाँ [ϕy] है। अभी उल्लिखित अध्ययन में क्लोइके ने इन दो शब्दों के स्वरों का बेल्जियम और नीदरलैण्ड की वर्तमान स्थानीय बोलियों में इन दो शब्दों के आक्षरिकों का अंकन किया है। आकृति 6 में क्लोइके का एक मानचित्र छोटे पैमाने पर है।

जैसा मानचित्र में दीख पड़ता है एक पूर्वी प्रदेश में आदि जर्मन स्वर [u :] दोनों शब्दों में सुरक्षित है ; [mu:s, hu:s]

विभिन्न विस्तार के अनेक छोटे भूभाग हैं जहाँ दोनों शब्दों में [y :] : [my:s, hy:s] बोलते हैं।

सुदूर पश्चिम में एक क्षेत्र में दोनों शब्दों में [ϕ:] : [mϕ:s, hϕ:s]

मध्य-प्रदेश के एक बड़े क्षेत्र में दोनों में [ϕɥ] की तरह का सन्ध्यक्षर मिलता है : [mϕɥs, hϕɥs] चूँकि यह मानक डच फ्लेमी उच्चारण है ये अन्य जिलों में भी मानक वक्ताओं के प्रयोगों में मिलता है, किन्तु यह तथ्य मानचित्र में प्रदर्शित नहीं किया है।

इस प्रकार पिछले तीन या बाद के तीन क्षेत्रों में अब ध्वनि आदिम जर्मनी अथवा मध्यकालीन डच ध्वनि नहीं रही है। किन्तु हमारे इन दोनों शब्दों का ढाँचा इस दृष्टि से अपरिवर्तित रहा है कि वे अब भी एक ही आक्षरिक स्वनिम रखते हैं।

किन्तु हमारा मानचित्र तीन पर्याप्त विस्तार के क्षेत्रों को दिखाता है जोकि mouse शब्द में [u :], किन्तु house शब्द में [y:] बोलते हैं। इस कारण इनमें असंगति है, [mu:s, hy:s] इन क्षेत्रों में दोनों शब्दों का संघटनात्मक सम्बन्ध परिवर्तित हो चुका है और उनमें आक्षरिक स्वनिम की दृष्टि से मेल नहीं है।

हम इस प्रकार देखते हैं कि वह समभाष रेखा जोकि [mu:s] को [my:s] से पृथक् करती है उस समभाष रेखा जोकि [hu:s] को [hy:s] से पृथक् करती है, से एकीभूत नहीं है। इन दो शब्दों में mouse ने अपने प्राचीन स्वर को house की अपेक्षा अधिक विस्तृत क्षेत्र में बनाए रखा है। निस्संदेह उन अन्य शब्दों का अध्ययन जिनमें मध्यकाल में [u:] था, कुछ [u:] के अन्य वितरण ही और ध्वनियों के वितरण दिखायेगा जो कि mouse और house के वितरणों से अंशतः मेल खायेंगे।

मध्ययुग में कोई ऐसा समय आया था जबकि तबतक प्रचलित [y:] के स्थान पर [u:] बोलने की प्रवृत्ति किसी सांस्कृतिक केन्द्र में, कदाचित् फ्लेन्डर्स में, उत्पन्न हुई और वहां से हमारे मानचित्र के एक बड़े भूभाग पर फैली और उन केन्द्रीय क्षेत्रों पर फैली जहाँ आज संध्यक्षर बोला जाता है। फ्रीनी प्रदेश के उत्तर में समुद्र-तट पर एक डच भाषी-क्षेत्र है जो het Bilt के नाम से प्रसिद्ध है जोकि 16वीं शती के प्रारम्भ में हालैण्डवासियों के नेतृत्व में बाँध

बनाकर बसाया गया था और जैसा कि मानचित्र दिखाता है [y:] उच्चारण यहाँ चलता है। यही [y:] न कि प्राचीन [u:] आदान शब्दों में मिलता है जोकि पूर्वकालीन आधुनिक युग में डच से सुदूर पूर्वीय (निम्न-जर्मन) डच जर्मन क्षेत्र की बोलियों में आ पहुँची थी अथवा रूसी और जावानी जैसी विदेशी भाषाओं में पहुँची थी। वह डच जोकि उपनिवेशों में पहुँची, जैसे वर्जिन द्वीप क्रोले डच, [y:] बोलती थी। लिखित प्रालेखों की वर्तनी और कवियों के तुक का साक्ष्य या अन्त्यानुप्रास प्रत्यक्ष रहता है। [y:] उच्चारण 16 वीं और 17 वीं सदी में हालैण्ड के बड़े तटवर्ती नगरों की सांस्कृतिक-प्रतिष्ठा के साथ दूसरे देशों में फैला है।

सांस्कृतिक विस्तार की यह लहर हमारे क्षेत्र के पूर्वी भाग में आकर रुकी जहां एक अन्य और इसी प्रकार की लहर सांस्कृतिक क्षेत्र अर्थात् उत्तरी जर्मन हैन्सियाई नगरों के विस्तार से संघर्ष में आई। हमारे mouse और house की समभाष रेखाएँ और निस्संदेह अनेक समभाष रेखाएँ इन दो साँस्कृतिक शक्तियों के विभिन्न संतुलनों का परिणाम हैं जो कोई हालमुण्डी (Hollandish) पदाधिकारी अथवा व्यापारी से प्रभावित होता था [y:] बोलता था, जो कोई हैन्सियाई उच्चवर्ग में अपने से बड़ों को देखता था वह प्राचीन [u:] बनाता था। जनता का वह अंश जो विशेष प्रतिष्ठा का इच्छुक नहीं था अवश्य ही [u:] को बनाये रखता होगा। किन्तु समय के साथ [y:] इस वर्ग में भी उतर आया। ये प्रक्रिया अब भी चल रही है उस क्षेत्र के भूभागों में जहां अब भी [u:] चल रहा है, [mu:s, hu:s] के क्षेत्र और [mu:s, hy:s] के क्षेत्र, जहाँ किसान जब कभी शिष्ट आचरण करना चाहता है वह शब्दों में [y:] बोलता है अन्यथा प्रतिदिन के भाषण में [u:] बोलता है। [y:] रूपान्तर की अधिक प्रतिष्ठा इससे प्रकट होती कि वह अति नागरीय रूपों में मिलता है। मान्य [y:] के प्रयोग करते समय वक्ता ऐसे स्थानों पर भी इसे कभी-कभी स्थानापन्न करता है जहाँ इसका कोई तुक न था। उदाहरण के लिए [vu:t] "पैर" के लिए [vy:t]। इस शब्द में न तो [y:] प्राचीनकाल न तत्कालीन उच्चवर्गीय डच में कभी भी बोला गया है किन्तु इस नागरीय रूप में है।

house शब्द सरकारी भाषण और साँस्कृतिक केन्द्र का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों के संभाषण में mouse शब्द की अपेक्षा कहीं अधिक आता है; mouse शब्द घरेलू और परिचित परिस्थितियों में सीमित रहता है।

तदनुसार हम देखते हैं कि house शब्द उच्चवर्ग में और [y:] के केन्द्रीय रूप में उन क्षेत्रों में भी फैला है। यह [u:] शब्द mouse वाले पुराने फैशन के रूपों में अब भी चला आ रहा है। यह भी दिखाता है कि हालैण्ड का प्रभाव, न कि हैन्सियाई लोग इस रूप के प्रवर्त्तक और बलपूर्वक प्रचलित करने वाले थे, क्योंकि स्थिति विपरीत होती तो हमें ऐसे क्षेत्र मिलते जहाँ house में [u:] और mouse में [y:] बोले जाते।

16वीं और 17वीं शती में [y:]—उच्चारण अपनी विजय कर रहा था कदाचित् एण्टवर्प में एक नया उच्चारण चल पड़ा जो तबतक के शिष्ट [y:] के स्थान पर [ϕų] प्रयुक्त करने लगा। ये नया प्रचलन हालैण्ड के नगरों में फैला वहाँ से इसकी प्रधानता बढ़ी। यह [ϕų] उच्चारण जोकि मानक डच huis [ϕųs], muis [mϕhs] में है, आजकल अकेला सच्चा नागरीय रूप है। हमारे मानचित्र पर इस [ϕų] का विस्तार ऐसा लगता है कि पूर्ववर्ती [y:] के प्रदेश के ऊपर से डाल दिया गया हो। और किनारे-स्थलों का यह चित्र प्राचीन शैली का द्योतक होता है। भाषा में और अन्य क्रियाकलापों में, जोकि किसी नये केन्द्रीय फैशन से विस्थापित कर दिए गये हैं यह इसका भी लक्षण है कि सुदूरवर्ती स्थानीय बोलियाँ एक लक्षण [y:] का उच्चारण ले रही हैं, जोकि अधिक केन्द्रीय क्षेत्रों और अधिक प्रतिष्ठ वक्ताओं के वर्ग में एक कहीं अधिक नये फैशन से बहुत समय पहले ही स्थापित हो चुका था।

19.5 पिछले उदाहरण में दिया हुआ हमारा मानचित्र वर्तमान मानक [ϕų] उच्चारण वाले डच फ्लेमी वर्तमान मानक के प्रयोगों को उन जिलों में प्रदर्शित नहीं कर पाया है जहाँ उसने स्थानीय बोलियों को नहीं जीता है। इसमें [ϕų] प्रदर्शित करने से पूरा चित्र भर जाता है क्योंकि इस पूरे प्रदेश में शिक्षित अथवा सामाजिक दृष्टि से सुस्थापित व्यक्ति मानक डच फ्लेमी ही बोलते हैं।

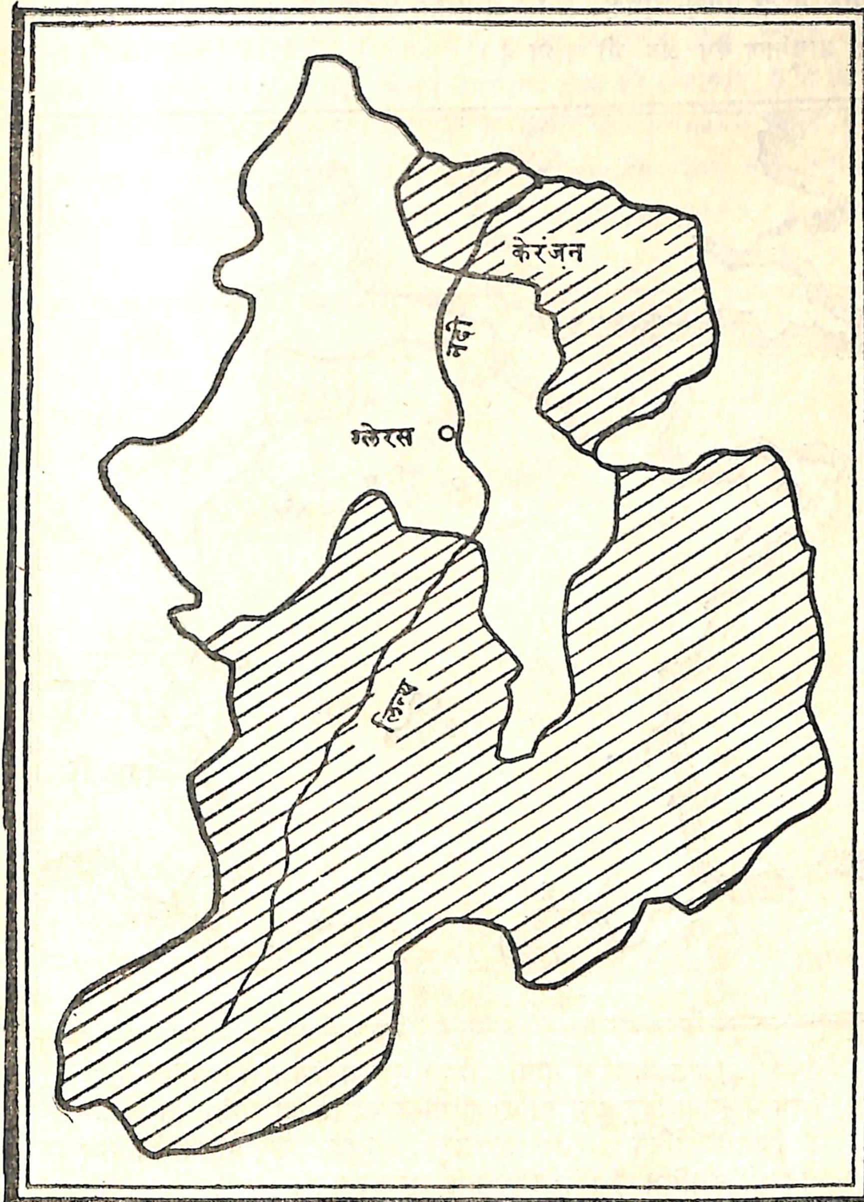
प्राचीन लक्षणों का अब तक बना रहना नये रूपों के प्रयोगों की अपेक्षा अधिक सरलता से अंकित होता है। बोली-भूगोल की सबसे अच्छी सामग्री अवशेषरूपों (relic forms) द्वारा दी जाती है जोकि भाषा के किसी प्राचीनतर लक्षणों के साक्षी हैं। सन् 1876 में जे० विन्टेलर (J. Winteler) ने अपनी मातृभाषा ग्लेरस में केरंजन (Kerenzen) वस्ती की स्विज जर्मन बोली पर एक बृहत् प्रबंध प्रकाशित किया जोकि एक अकेली स्थानीय बोली का कदाचित् सबसे पहिला सम्पन्न अध्ययन है। इस अध्ययन में विन्टेलर महोदय (Win-

teler) ने एक आद्य विध्यर्थ का रूप [lax] जोकि प्रातिपदिक [las-] से अनियमिततया व्युत्पन्न है, उल्लेख किया। उनका कथन है कि उन्हें यह निश्चय नहीं हैं कि प्रकाशन के कार्य में कोई भी उसका प्रयोग करता है। अधिकांश वक्ता अधिक विस्तृत और अधिक नियमित रूप [las] 'let' का प्रयोग करते हैं। एक बाद के पर्यवेक्षक सी० स्ट्रैफ (C. Streiff) 1915 में लिखते समय कहते हैं कि उन्होंने यह प्राचीन रूप सुना ही नहीं, वह प्राचीन-रूप [las] द्वारा पूर्णतया विस्थापित हो चुका है।

इसी प्रकार विन्टेलर महोदय ने एक पद्य का उदाहरण दिया है जिसमें ग्लेरस लोगों का इस बात पर मज़ाक उड़ाया गया है कि यह वर्तमान-काल बहुवचन क्रियारूप [hajd] (हम, तुम, वे) और [wajd] (हम लोग, तुम, वे) रूपों का प्रयोग करते हैं जोकि उनके पड़ोसियों के कान में गँवारू खटकता है जो स्वयं सामान्यतया अधिक प्रचलित स्विस प्रान्तीय रूपों [hand, wand] का प्रयोग करते थे। 40 वर्ष बाद स्ट्रेफ (Streiff) ने ऐसा ही पद्य उद्धृत किया है जिसमें केन्टन (Canton) के मध्यप्रदेश (सबसे बड़े समुदाय और शासन का स्थान ग्लेरस नगर के साथ) में लोग बाहर दूरवर्ती घाटियों के निवासियों का इस बात पर मज़ाक उड़ाते थे कि वे इन्हीं रूपों [hajd, wajd] का उच्चारण करते थे।

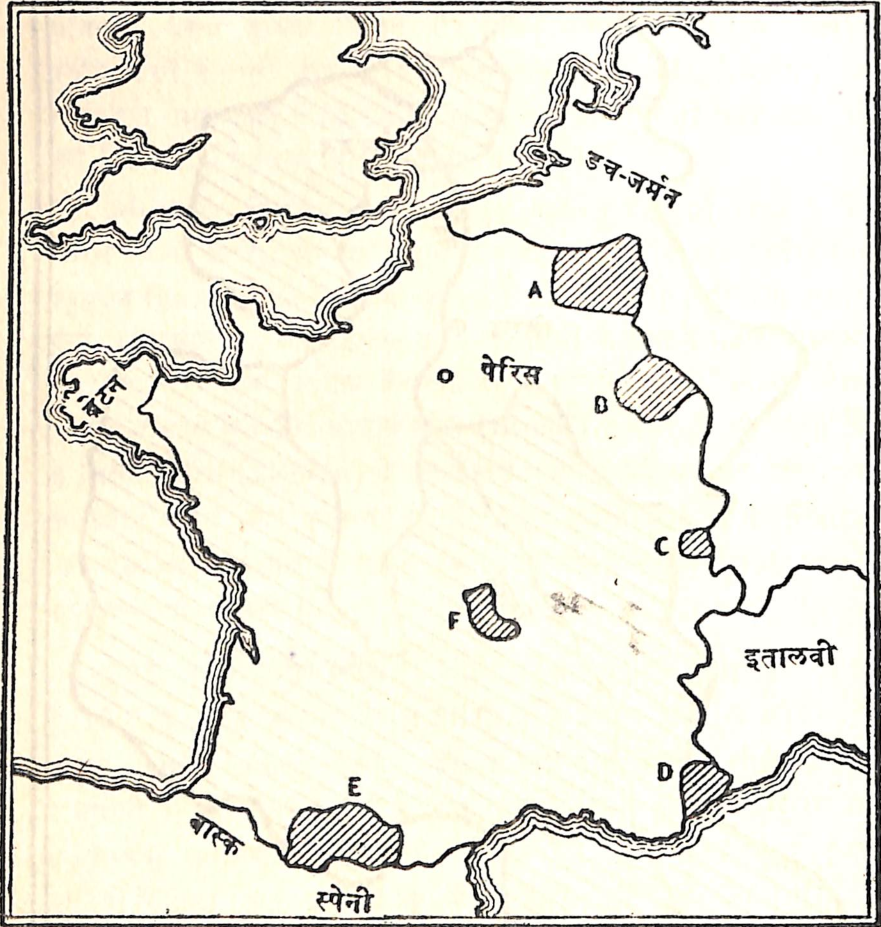
हमारा आकृति चित्र (संख्या7) जोकि स्ट्रैफ के कथनों के आधार पर बना है 1915 से प्राप्त वितरण पर आधारित है, । अधिक शहराऊ और अधिक व्याप्त [hand, wand] लिन्थ नदी के साथ-साथ केन्द्रीय क्षेत्रों में जिनमें राजधानी ग्लेरस आती है, फैले थे और उत्तर-पश्चिम की ओर ज्यूरिख नगर से स्वतंत्रता से समभाषण में, प्राचीन गँवारू रूप केवल तीन बहुत दूरवर्ती घाटियों में बोला जाता था। इसके भीतर केरंजन की बस्ती आती थी।

जैसा कि हमारे इस उदाहरण से प्रकट होता है इस चिन्ह रूप की एक अवशिष्ट रूप से दूरवर्ती स्थलों पर बने रहने की अधिक सम्भावना रहती है। इसलिए वह छोटी व असम्बद्ध क्षेत्रों में प्रायः मिलता है। उदाहरण के लिए लेटिन ग्रप, multum "बहुत", इतालवी में *molto* ['molto], स्पैनिश में mucho ['mutʃo], "बहुत" प्रायः सभी फ्रेंच प्रदेश में मानक फ्रेंच muy [muj] "बहुत" विस्थापित हो गया है। फ्रेंच très [trɛ] "बहुत" जोकि लैटिन trans का अधिक रूप है और beau-coup [boku] जोकि लैटिन *bonum colpum "एक अच्छा प्रहार" का अधिक रूप है, स्थापित हो गया है। आकृति



आकृति 7. स्विटज़रलैण्ड में ग्लेरस नगरी का शासन-क्षेत्र। 1915 में चित्र के छाया दिए हुए क्षेत्र में 'have' और "want to" के अर्थ में स्थानीय hajd, wajd का बहुवचन में प्रयोग करते थे। चित्र के बिना छाया दिए हुए क्षेत्र में सामान्य स्विस जर्मनीय रूपों "hand और wand" का प्रयोग होता था।—स्ट्रेफ़ के आधार पर।

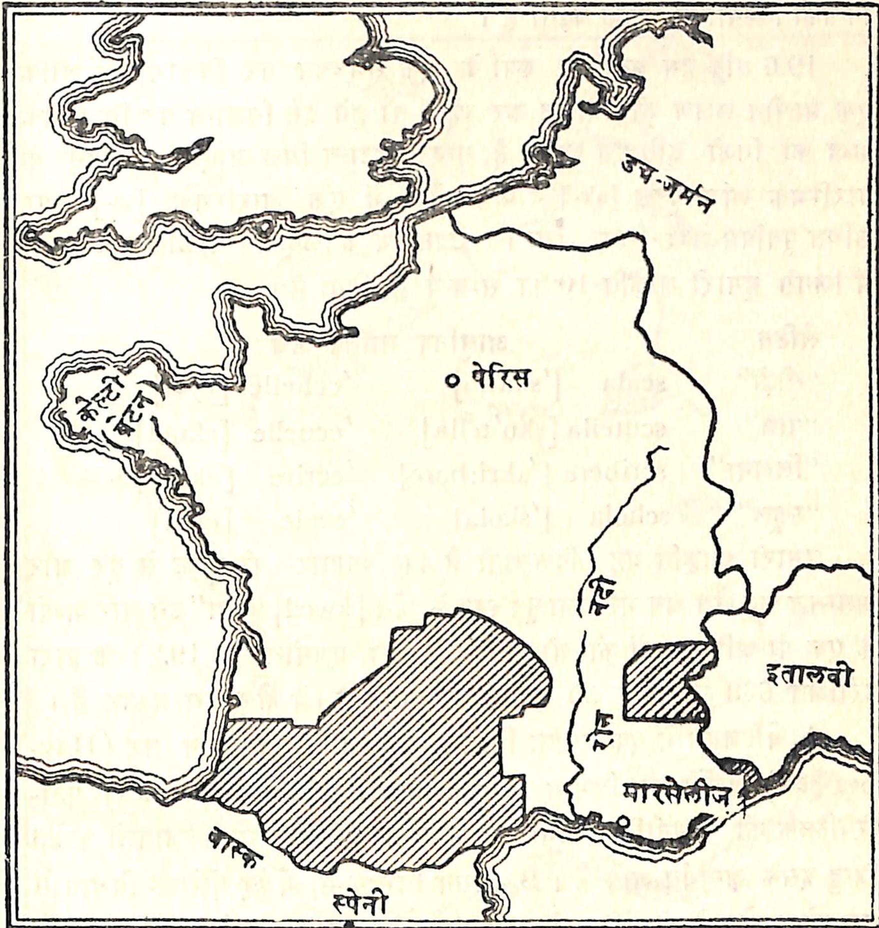
आठ में दो पृथक्- पृथक् स्थित सीमान्त प्रदेश हैं जहाँ लैटिन multum के आधुनिक रूप अब भी चलते हैं।



आकृति 8. फ्रेंच भाषाई क्षेत्र। एक असम्बद्ध समभाषिक रेखा चित्र में छाया दिए हुए उन दो सीमान्त प्रदेशों को आवेष्टित करती है जिसमें लैटिन multum "बहुत, अधिक" के प्रतिवर्तित रूप अब भी प्रचलित हैं। गेमिलशेग के आधार पर।

लैटिन में fallit का अर्थ होता है "वह धोखा देता है या देती है"। "वह फेल हो जाता है" इस अर्थ से मध्ययुगीन फ्रेंच में इस शब्द का यह अर्थ हुआ "इसमें वह चीज नहीं है" और इससे आधुनिक फ्रेंच प्रयोग il faut[ifo] "यह आवश्यक है" विकसित हुआ। ये अत्यधिक विशेषीकृत अर्थविकार एक

से अधिक स्थानों पर स्वतन्त्ररूप से घटित हैं। इसकी संभावना बहुत कम है। आधुनिक कथन प्रान्त के अधिक भूभाग पर प्रचलित होना किसी केन्द्र कदाचित् पेरिस से चारों ओर फैलने के कारण हुआ हो। आकृति 9 में बिना छाया दिए हुए क्षेत्र में स्थानीय बोलियों में मानक फ्रेंच il faut के ध्वन्यात्मक समरूपों का प्रचलन दिखाया गया है। छायावाले क्षेत्र अन्य रूप प्रयोगित करते हैं, मुख्यतया लैटिन calet "ये गर्म है" के प्रतिवर्तित रूपों को। यह स्पष्ट



आकृति 9. फ्रेंच भाषाई-क्षेत्र। चित्र में बिना छाया दिए हुए क्षेत्र में लैटिन 'fallit' के "यह आवश्यक है इस अर्थ में प्रतिवर्तित रूपों का प्रचलन है। छाया दिये हुए क्षेत्र में अन्य रूपों का प्रयोग। —जेबर्ग के आधार पर।

है कि आधुनिक रूप दक्षिण की ओर रोन नदी के साथ-साथ फैला जोकि व्यापार का बड़ा मार्ग है। हम यहां देखते हैं कि किस प्रकार एक समभाष रेखा, संचार के एक बड़े मार्ग से सम्पूर्ण पद चलती हुई भी बिना दिशा बदले कभी काटती नहीं किन्तु थोड़ा इधर हो जाती है। काफी दूरी तक इस मार्ग के समानान्तर चलती है और फिर उसे काटती है जैसाकि हमारे उदाहरण में है, दूसरी ओर फिर से दिखाई पड़ती है और फिर लौटकर दूसरी ओर आ जाती है। समभाष रेखा के मोड़ दिखाते हैं कि दो भाषण रूपों में कौन किसको विस्थापित करके बढ़ता है।

19.6 यदि हम अवशिष्ट रूपों के एक समुच्चय पर विचार करें जोकि एक प्राचीन लक्षण को प्रदर्शित कर रहे हैं तो हमें इस सिद्धान्त पर कि प्रत्येक शब्द का निजी इतिहास होता है, सुन्दर दृष्टान्त मिल जाएगा। लैटिन के प्रारम्भिक व्यंजनगुच्छ [sk-] ने फ्रेंच प्रदेश में एक आरम्भिक [e-] तथा कथित पूर्वाग्रम शब्द लिया जैसा कि उदाहरण के लिए निम्नलिखित 4 शब्दों में जिनसे हमारी आकृति 10 का सम्बन्ध है, दिया है।

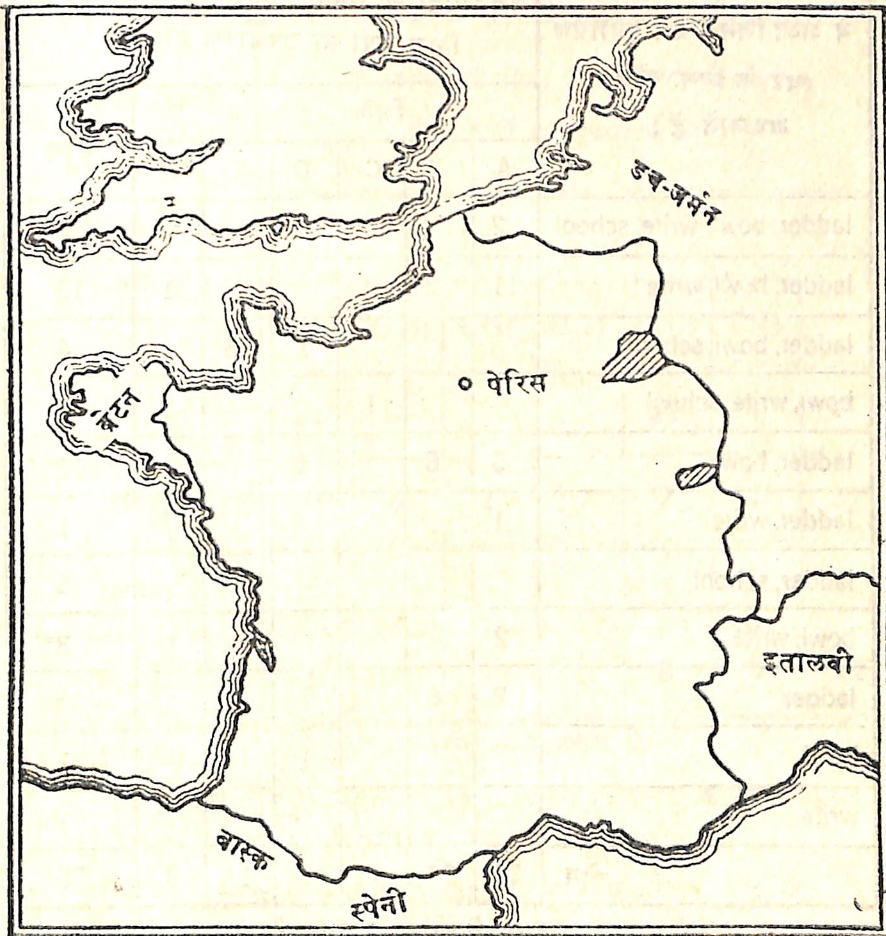
लैटिन			आधुनिक मानिक फ्रेंच	
"सीढ़ी"	scala	[ˈskaːla]	ˈechelle	[eʃɛl]
"पात्र"	scutella	[skuˈtella]	ˈecuelle	[ekɥɛl]
"लिखना"	scribere	[ˈskriːbere]	ˈecrire	[ekriːr]
"स्कूल"	schola	[ˈskola]	ˈecole	[ekɔl]

हमारी आकृति यह दिखलाती है कि व्यापार की दृष्टि से दूर और असम्बद्ध छह क्षेत्र अब भी बिना पूर्व स्वर के, जैसे [kweːl] "पात्र" इन चार शब्दों के एक या अधिक रूपों को बोलते हैं। ये क्षेत्र एडमोन्ट (§ 19.2) के द्वारा परीक्षित 638 स्थानों में 55 स्थानों पर व्याप्त हैं। वे क्षेत्र इस प्रकार हैं।

A. बेल्जियम में एक पर्याप्त विशाल क्षेत्र, जोकि एक स्थान पर (Haybes हैब्स) आर्डेने का विभाग (Department of the Ardennes) फ्रेंच-रिपब्लिक की राजनीतिक सीमा पर अतिव्याप्त है और मानचित्रावली के 23 बिन्दु इसके अन्तर्गत आते हैं। B. वोसगे विभाग में, मैर्थए मोसे के विभाग में एक छोटा क्षेत्र है जो लैटिन में अतिव्याप्त है। इसके अन्तर्गत 14 बिन्दु आते हैं। C. स्विटजरलैण्ड में बोवी का गाँव, एक बिन्दु। D. मन्तोने और इतालवी सीमान्त के एल्प्स-मेरीटाइम विभाग में दो अन्य गाँव तीन बिन्दु। E. होतपेरीनी (Hautes-Pyrénées) विभाग में स्पेनी सीमा के साथ-साथ पर्याप्त

विस्तार का क्षेत्र जोकि पड़ोसी भागों में अतिव्याप्त है, 11 बिन्दु । F. औवर्गने (Auvergne) का पहाड़ी प्रदेश, होतेलोएरे, पुईददोमे विभागों के अन्तःवर्ती छोटे क्षेत्र, 3 बिन्दु ।

विशेष रोचक तो यह तथ्य है कि अधिकांश बस्तियाँ जो इन पिछड़े हुए जिलों में हैं हमारे एक, दो या तीन शब्दों में पूर्व स्वर को अपना चुकी हैं। इस प्रकार जिला क्षेत्र B में क्षेत्र मार्गुरे (Marguerite) वोसगे (Vosges) में [tʃo:l] "सीढ़ी" ['kwe:l] "पात्र" मिलता है किन्तु आधुनिक शैली में



आकृति 10 फ्रेंचभाषाई क्षेत्र । चित्र में छाया दिए हुए प्रदेश बिना प्रारंभिक स्वर के लैटिन (sk) व्यंजन गुच्छों का प्रयोग करते हैं ।—जेबर्ग के आधार पर।

[ekrir] "लिखना" [eko:l] "स्कूल" बोला जाता है। इसके अतिरिक्त बोलियाँ उन शब्दों के सम्बन्ध में मेल नहीं खाती हैं जिनमें नवरचना हुई है। इस प्रकार पिछले उदाहरण के व्यतिरेक में होतेपेरीनी में जवर्नी गाँव में जो हमारे E क्षेत्र के अन्तर्गत आता है['ska lo] "सीढ़ी", ['ska:lo] "लिखना", "स्कूल" किन्तु [esku'de:lo] "पात्र",[eskri'be] "लिखना" केवल दो बिन्दुओं का जो दोनों A क्षेत्र के हैं, प्राचीन प्रारम्भिकरूप हमारे चारों शब्दों में सुरक्षित रखा गया है, अन्य पुराने और नये रूपों के विभिन्न संयोजन मिले हैं

वे शब्द जिनके रूप पूर्वाग्रिम स्वर के बिना बोले are जाते हैं।	उन स्थानों की संख्या जिनमें पूर्वाग्रिम स्वर के बिना रूपों का उच्चारण होता है।						
	जिले						योग
	A	B	C	D	E	F	
ladder, bowl, write, school	2						2
ladder, bowl, write	11					1	12
ladder, bowl, school				1	3		4
bowl, write, school			1				1
ladder, bowl	5	6		1			12
ladder, write	1						1
ladder, school					5		5
bowl, write	2*					1	3*
ladder	2	8			3		13
bowl				1			1
write						1	1
योग	23	14	1	3	11	3	55*

*एक बिन्दु सन्देहात्मक है।

आकृति 11. फ्रेंच में पूर्वाग्रिम स्वर। चित्र दस के छाया दिए हुए क्षेत्र में लोगों द्वारा उन शब्दों का उच्चारण जिनके रूप पूर्वाग्रिम स्वर के बिना बोले जाते हैं।

आकृति 11 में पहले स्तम्भ में शब्दों के वे संयोजन दिए गये हैं जिनमें प्राचीन रूप अब भी प्रयुक्त होते हैं, उसके आगे क्षेत्र के अनुसार बिन्दुओं की संख्या और फिर बिन्दुओं का योग दिया गया है जहाँ प्रत्येक संयोजन अभी तक मिलता है। इस सारणी में अत्यधिक विविधता के होते हुए भी एकाकी शब्दों के सर्वेक्षण से जोकि आकृति 12 में दिया गया है, यह दिखाई पड़ता है कि घरेलू शब्द "सीढ़ी" और "पात्र" प्रायः अधिक पुराने रूप में मिलते हैं जबकि "लिखना" और "स्कूल" जोकि सरकारी संस्थाओं से सम्बद्ध हैं अथवा बृहत्तर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सम्बद्ध हैं, नये रूप लेते हैं।

वे शब्द जिनके, रूप पूर्वाग्रिम स्वर के बिना बोले जाते हैं।	उन स्थानों की संख्या जिनमें पूर्वाग्रिम स्वर के बिना रूपों का उच्चारण होता है।						
	जिले						योग
	A(23)	B(14)	C(1)	D(3)	E(11)	F(3)	
'ladder'	21	14		2	11	1	49
'bowl'	20*	6	1	3	3	2	35*
'write'	16		1			3	20
'school'	2		1	1	8		12

*एक बिन्दु सन्देहात्मक है।

आकृति 12. फ्रेंच में पूर्वाग्रिम स्वर। चित्र 10 के छाया दिए हुए क्षेत्रों में शब्दों द्वारा रूपों का प्रचलन।

पुष्टि के लिए बोगी क्षेत्र C में "सीढ़ी" के लिए प्रयुक्त शब्द नया रूप लेता है। किन्तु जहाँ कहीं सर्वेक्षण-क्षेत्र बड़ा है, जैसे कि क्षेत्र, A, B, C में अथवा योग में "सीढ़ी" और "पात्र" के लिए प्रयुक्त शब्द पुराने रूप रखते हैं।

19.7 विस्तार की प्रक्रिया का अन्तिम परिणाम पुराने रूपों का सम्पूर्ण

विलयन है जहाँ हमें एक विशाल क्षेत्र मिलता है जिसमें कुछ भाषाई परिवर्तन एकरूपता से घटित हुए हैं, वहाँ हमें निश्चित हो जाना चाहिए कि एकरूपता का अधिकांश भौगोलिक समतुलन (geographic leveling) के कारण है। कभी-कभी स्थान नाम संघर्ष के कुछ चिन्ह प्रतिष्ठित करते हैं। जर्मन प्रदेश में सामान्यतया दो प्राचीन संध्यक्षर जिन्हें [ew], [iw] द्वारा प्रदर्शित करते हैं अब भी भिन्न-भिन्न हैं, जैसे मानक नवीन उच्च जर्मन में प्राचीन ew के स्थान पर [i:] Fliege "उड़ान" knie घुटना stiefvater "सौतेला पिता", tief "गहरा" किन्तु प्राचीन [iw] के स्थान पर [oj], scheu "लज्जा" teuer "प्रिय", "महंगा", neun "नौ" मिलते हैं। ग्लेरस की बोली प्रत्यक्षतया यह भेद खो चुकी है। यही स्थिति पड़ोस की बोलियों में है जहाँ कहीं एक ओष्ठ्य अथवा कोमल तालव्य व्यंजन के बाद सन्ध्यक्षर आता है।

प्राचीन [ew] कोमल तालव्य या ओष्ठ्य के पहले :

	अंग्रेजी	**आदिम जर्मन प्रतिरूप**	**ग्लेरस की बोली**
"उडान"	fly	*['flewgo:n]	['fly:gə]
"घुटना"	knee	*['knewan]	[xny:]
"सोतेला"	step	*['stewpa-]	['ʃty:f-fatər]
		प्राचीन [iw] :	
लज्जा	shy	*['skiwhjaz]	[ʃy:x]
प्रिया मंहगा	dear	*['diwrjaz]	[ty:r]
नौ	nine	*['niwni]	[ny:n]

इस प्रकार स्पष्टतया ये दो पुराने प्रतिनिधि दोनों के दोनों ग्लेरस की बोली में आधुनिक [y:] प्रदर्शित होते हैं और ये सामान्य दक्षिण पश्चिम विकास के अनुसार है। एक अकेला रूप यह इंगित करता है कि प्राचीन [ew] के लिए [y:] एक वस्तुतः आगत रूप है। जैसे कि अंग्रेजी का deep शब्द आदिम-जर्मन *['dewpaz], ग्लेरस बोली में [tœjf] के रूप में मिलता है। हमारी यह आशंका कि सन्ध्यक्षर [œj] इस क्षेत्र में ओष्ठ्य और कोमल तालव्य के पूर्ववर्ती [ew] का प्राचीनतर रूप है, एक स्थाननाम द्वारा पुष्ट होता है। वह स्थान नाम है ['xnœj-gra:t] शब्दशः knee-Ridge।

जर्मनभाषी स्विटजरलैण्ड के दक्षिण-पश्चिम कोने में प्राचीन-जर्मनी drink का [k] ऊष्म ध्वनि [x] में परिवर्तित हो गया है और पूर्ववर्ती अनुनासिक

लुप्त हो गया, जैसे—अंग्रेजी ['tri:xə] 'to drink । इस बोली में आजकल की एक भद्दी स्थानीयता है क्योंकि अधिकांश स्विटजरलैण्ड में शेष डच जर्मन प्रदेश के साथ-साथ [k] बोला जाता है । इस प्रकार, ग्लेरस में ['triŋkə] "पीना" आधुनिक जर्मन trinken के अनुसार बोला जाता है । किन्तु स्थाननाम दिखाते हैं कि ये अग्रग्राह्य उच्चारण किसी समय स्विटजरलैण्ड के कहीं अधिक प्रदेश में फैला था । ग्लेरस पूर्व में जातिवाचक संज्ञा ['wiŋkəl] 'angle, 'corner, "कोना" के साथ-साथ पहाड़ी चरागाह ['wixlə] 'corners' का स्थान-नाम मिलता है । [xraŋk] 'sick' "बीमारी" के साथ-साथ एक अन्य चरागाह ['xrawx-ta:l] 'Crank-Dale' अर्थात् 'crooked valley' मिलता है ।

19.8 इस प्रकार बोली-भूगोल उन भाषाई लक्षणों के पूर्वकालीन विस्तार के सम्बन्ध में साक्ष्य देता है जोकि इस समय केवल अवशेष रूपों में मिलते हैं । विशेषतौर से जब एक लक्षण असम्बद्ध क्षेत्रों में मिलता है जोकि एक ऐसे सुसम्बद्ध क्षेत्र से पृथक् हैं जिसमें एक प्रतिस्पर्द्धी लक्षण बोला जाता है तो मान-चित्र की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि वे असम्बद्ध क्षेत्र कभी उस सुसम्बद्ध प्रदेश के भाग थे । इस प्रकार बोली-भूगोल भाषाई लक्षणों के स्पष्टी-करण (stratification) को प्रदर्शित करता है, इस प्रकार हम आकृति क्षेत्र 6 के द्वारा बिना किसी अन्य प्रत्यक्ष ऐतिहासिक पूरक सूचना के कह सकते हैं कि [u:] प्राचीनतम थे, कि वे [y:] रूपों द्वारा स्थापित हुए थे और ये स्वयं संध्यक्षर रूपों द्वारा स्थापित हुए थे ।

चूँकि एक समभाष रेखा संचार घनत्व में दुर्बलता की रेखा को सूचित करती है हम यह आशा कर सकते हैं कि बोली-मानचित्र हमें उत्तरोत्तरकाल के समभाषी परिस्थितियों को प्रदर्शन करता है । इग्लैंड, जर्मनी और फ्रांस जैसे देश के निवासी स्थूल बोली विषयक विभाजनों को सदैव प्रान्तीय नाम देते हैं और कहते हैं कि 'यार्कशायर बोली', 'स्लावी बोली' अथवा 'नार्मन बोली' हैं । इससे पहले के विद्वानों ने इन वर्गीकरणों को, बिना यथार्थ परिभाषा देने के प्रयत्न किये, स्वीकार कर लिया । तब यह आशा की जाती थी कि बाद में बोली-भूगोल इनकी ठीक-ठीक परिभाषा दे देगा । इस प्रश्न पर लोगों की अधिक रुचि तरंग सिद्धान्त (wave-theory § 18.12) जागृत हुई । चूँकि प्रान्तीय प्रतिरूप एक भाषण-क्षेत्र के अचानक विदरण के बिना बने विभेदीकरण के उदाहरण थे । इसके अतिरिक्त इस प्रश्न में भावनात्मक रुचि भी थी क्योंकि यह प्रान्तीय विभाजन अधिकतर प्राचीन जाति विषयक वर्गों को प्रदर्शित

करता था, यदि बोली का विस्तार—उदाहरण के लिए जर्मनी में स्लावी बोली का विस्तार—प्राचीन जाति के निवास-स्थान से एकीभूत हो सकता है तो भाषा अतीतकाल की परिस्थितियों के ऊपर पर्याप्त प्रकाश डालने लगेगी।

किन्तु इस दिशा में बोली-भूगोल से लोगों को बड़ी निराशा हुई। बोली-भूगोल ने यह बताया कि प्रायः प्रत्येक गाँव के अपने निजी बोलीगत लक्षण होते हैं। इस प्रकार पूरा प्रदेश समभाषरेखाओं के जाल-सूत्र से बँधा मिलता है यदि कोई विशिष्ट प्रान्तीय विचित्रताओं की सूची बनाना प्रारम्भ करे तो उसे वह एक घने नाभिकेन्द्र में प्रचलित पायेगा किन्तु किनारे पर वे क्षीण होते गये हैं इस अर्थ में प्रत्येक विशेषण को सीमान्त पर विभिन्न शब्दों में उपस्थिति सूचक समभाष-रेखाओं का एक पूरा समुच्चय मिलेगा—जिस प्रकार house और mouse, [y:], [u:] की समभाषा-रेखायें पूर्वी नीदरलैण्ड में एकीभूत नहीं होतीं (देखिये आकृति 6)। यार्कशायर अथवा स्वाबिया अथवा नारमण्डी केन्द्रों से निकली स्थानीय बोली एक व्यवस्था से प्रान्त के आधार पर वर्गीकृत की जा सकती है।किन्तु ऐसे विभाजन के सीमान्त प्रदेश में बोलियों का पूरा-पूरा समूह पड़ा हुआ है जो प्रान्तीय विशेषताओं में से केवल एकाध को रखती हैं। इसके अतिरिक्त इस स्थिति में विशेषताओं की प्रारंभिक सूचि की भी कोई प्रमाणिकता नहीं। यदि इनका विभिन्न प्रकार से चयन किया जाय, जैसे जन प्रचलित प्रान्तीय वर्गीकरण पर ध्यान न देते हुए चयन किया जाय—तो हमें पूर्णतया विभिन्न नाभि-भाग मिलेंगे और पूरी तौर से विभिन्न संक्रमण की पट्टियां मिलेंगी।

इस प्रकार कुछ अध्येता सभी वर्गीकरण से निराश हो गये हैं और वे घोषणा कर बैठे हैं कि एक बोली प्रदेश में कोई भी वास्तविक सीमाएं नहीं हैं। पश्चिमी-रोमानी भाषाओं (इतालवी, लैटिन, फ्रेंच, स्पेनी, पुर्तगाली) के विस्तारक्षेत्र में भी कोई वास्तविक सीमाएँ नहीं हैं, केवल क्रमिक संक्रमण हैं ऐसा लोगों ने माना। उनके अनुसार किसी दो पड़ोस के बिन्दुओं का अन्तर किसी अन्य दो पड़ोस के बिन्दुओं की अपेक्षा न तो अधिक महत्वपूर्ण है और न कम महत्वपूर्ण। इस दृष्टिकोण के विरोध में कुछ विद्वान् राष्ट्रीय और प्रान्तीय वर्गीकरण पर डटे हुए हैं और कदाचित् कुछ रहस्यात्मक उत्साह के साथ वे नाभि-भाग और पट्टियों की शब्दावली पर आग्रह करते हैं।

यह सही है कि एक लम्बे समय से बसे हुए प्रदेश में समभाषरेखाएँ इतनी अधिक होती हैं कि प्रायः कोई भी अभीष्ट बोली का वर्गीकरण सम्भव नहीं हो

पाता है और पूर्वकाल के संचार घनत्व के सम्बन्ध में अधिकांश दावों (claims) को पुष्टि देना असम्भव हो जाता है। किन्तु यह देखना सरल है कि बिना किसी भाँति के पक्षपात के हम कुछ समभाष रेखाओं पर अन्य की अपेक्षा अधिक महत्ता आरोपित कर सकते हैं। एक समभाष रेखा जो पूरे प्रदेश को दृढ़ता से काटती है प्रायः दो बराबर भागों में बाँटती है अथवा एक समभाष रेखा जो सम्पूर्ण प्रदेश के एक भू-खण्ड को भिन्न करती है स्थानीयता को घेरनेवाली रेखा की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है। हमारी आकृति 4, 5 में समभाष रेखाएँ 1, 2, 3 जोकि दक्षिण-पश्चिम जर्मनी को शेष जर्मन-प्रदेश से भिन्न कर देती हैं समभाष रेखा 9 की अपेक्षा जो केवल एकाध गाँवों को बांटती है स्पष्टतया कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। बड़ी समभाष रेखाएँ ऐसे लक्षण को दिखाती हैं जोकि विशाल भूखण्ड पर व्याप्त है। यह व्याप्ति एक बड़ी घटना है—भाषा के इतिहास के एक तथ्य रूप में भी और इससे अधिक पर्याप्त शक्ति के कुछ भाषिकेतर सांस्कृतिक आन्दोलन के सूचक के रूप में भी। वर्णन के एक भेदक लक्षण के रूप में भी निस्सन्देह एक बड़ा विभाजन छोटे विभाजनों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, वस्तुतः बोलियों का जन-प्रचलित वर्गीकरण स्पष्टतया एक प्रदेश के बड़े भूभाग पर व्याप्त कुछ विभिन्नताओंके आधार पर ही होता है।

इसके अतिरिक्त समभाष-रेखाओं का–एक ही दिशा में समीप-समीप साथ-साथ चलनेवाली रेखाओं का–एक झुण्ड तथाकथित समभाष-रेखीय संमूहन–एक इससे बड़ी ऐतिहासिक प्रक्रिया का साक्षी है और इसके द्वारा वर्गीकरण का एक अधिक उपयुक्त आधार होता है अपेक्षाकृत एक अकेली समभाष-रेखा के द्वारा जोकि कदाचित् कुछ अमहत्वपूर्ण लक्षण को प्रदर्शित करती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये दो अभिलक्षण स्थानवर्णी महत्ता और समभाष-रेखीय समूहन प्रायः साथ-साथ चलते हैं। इस प्रकार फ्रांस एक समभाषरेखीय विशाल समूहन द्वारा विभाजित है जो पूरे प्रदेश में पूर्व से पश्चिम तक गया हुआ है। यह विभाजन फ्रांस के मध्ययुगीन विभाजन की ओर संकेत करता है जब वह फ्रेंच और प्रोवेन्सेल (French and Provençal) इन दो सांस्कृतिक और भाषाई खण्डों में बँटा हुआ था।

कदाचित् इस प्रकार का सर्वाधिक प्रसिद्ध समूहन पूर्व से पश्चिम तक जाने वाला समूहन है जोकि डच जर्मन-प्रदेश को विभाजित करता है जिसके एक ओर निम्न-जर्मन और दूसरी ओर उच्च-जर्मन बोली क्षेत्र बनते हैं। इनमें

अन्तर आदिम-जर्मनी अघोष स्पर्श [p,t,k] के व्यवहार का है जोकि दक्षिण में संघर्षी अथवा स्पर्श संघर्षी बन गये हैं। अगर हम दोनों प्रतिरूपों के प्रतिनिधि रूप मानक-डच और मानक-जर्मन को लें तो हमारी समभाषिक-रेखाएं इस प्रकार रूपों को विभाजित करेंगी।

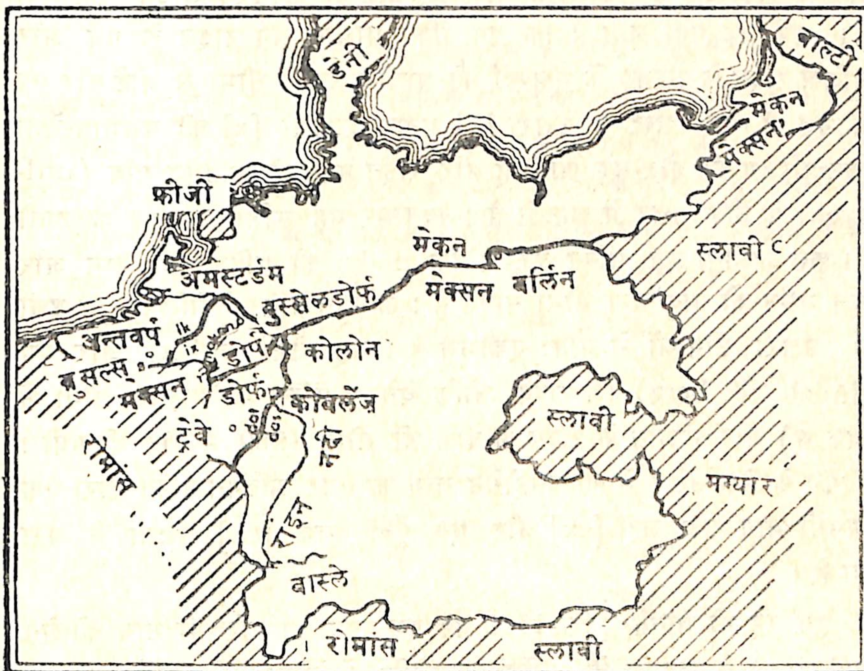
	अंग्रेजी	उत्तरी-जर्मन	दक्षिणी-जर्मन
"बनाना"	make	['ma:ke]	['maxen]
"मैं"	I	[ik]	[ix]
"सोना"	sleep	['sla:pe	['ʃla:fen]
"गाँव"	thorp 'village'	[dorp]	[dorf]
"पौण्ड"	pound	[punt]	[pfunt]
"काटना"	bite	['bejte]	['bajsen]
"वह"	that	[dat]	[das]
	to	[tu:]	[tsu:]

इनकी और अन्य उन रूपों की समभाषिक रेखाएं जिनमें आदिम-जर्मनी [p,t,k] हैं एक बड़े समूहन में चलती हैं। कभी-कभी एकीभूत होती हैं, कभी एक दूसरे से छूट जाती हैं और कभी एक दूसरे को काटती हैं। इस प्रकार बर्लिन के चारों ओर कुछ अनेक शब्दों के साथ make की समभाष रेखा उत्तर की ओर मुड़ती है और वहाँ लोग बिना परिवर्तित [k] [ik] "मैं" बोलते हैं। किन्तु [k] ये परिवर्तित [x] के साथ ['maxen] "बनाना" बोलते हैं। इसके विपरीत पश्चिम में [I] "मैं" की समभाष-रेखा उत्तर-पश्चिमी दिशा में मुड़ जाती है और डुस्सेल डोर्फ (Dissel dorf) के चारों ओर "मैं" को ध्वनि परिवर्तन सहित [ix] बोलते हैं जब कि ['ma:ken] प्राचीन सुरक्षित [k] के साथ बोलते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक बोली क्षेत्र के भीतर भाषाई लक्षणों का स्थानवर्णी वितरण कोई एकरूप नहीं होता और निश्चित विदरणों को प्रदर्शित करता है। हमें केवल दो बहुत स्पष्ट बातें ध्यान में रखनी चाहिएँ। प्रथमतः, हम जन-प्रचलित प्रान्तीय नामों को वैसा का वैसा रखने की गारंटी नहीं ले सकते। और यदि हम प्रान्तीय नहीं बनाना चाहते हैं तो फिर से परिभाषा देनी होगी। द्वितीयतः हम अपने विभाजनों को या तो अपूर्णता के साथ पट्टियों द्वारा अथवा

मनमाने ढँग से किसी एक समभाष रेखा के पूरे समूहन का प्रतिनिधि मानकर बांध सकते हैं ।

19.9 एक प्रदेश के भाषाई-विभाजनों को पार करके हम विदरण की अन्य रेखाओं के साथ उनकी तुलना कर सकते हैं। तुलना यह दिखाती है कि बोलीगत विभाजन की महत्वपूर्ण रेखाएँ राजनीतिक रेखाओं के साथ-साथ चलती हैं। प्रत्यक्षतः सामान्य शासन और धर्म और विशेषतया राजनीतिक इकाई के भीतर विवाह की प्रथा भाषा में आपेक्षिक एकरूपता ला देती है। इसका अनुमान लगाया गया है कि पुरानी स्थितियों के अन्दर एक नयी राजनीतिक सीमा 50 साल के भीतर कुछ भाषाई अन्तर उत्पन्न कर देती है। और दीर्घकालीन राजनीतिक सीमा के साथ चलने वाली समभाष-रेखाएं कुछ थोड़ी बहुत अदल-बदल के साथ सीमा के हट जाने के बाद भी कोई 200 साल तक जमी रहती हैं। यह एक मुख्य सहज सम्बन्ध दिखाई पड़ते हैं। यदि



आकृति 13. डच-जर्मन-भाषाई क्षेत्र जो कि make शब्द में k बनाम x की एक समभाष रेखा को और पश्चिमी भाग में तीन अन्य मुड़ी हुई समभाष-रेखाओं को प्रदर्शित करता है जोकि पूर्व में make की समभाषरेखा के आस-पास चलती हैं।

महत्वपूर्ण समभाष-रेखाएँ साँस्कृतिक विभाजन की अन्य रेखाओं से मेल खाती हैं—जैसे उत्तरी जर्मन में खेतों की रचना के अन्तर के साथ अथवा यदि वे नदी व पहाड़ जैसी भौगोलिक बाधाओं के साथ—–तो ये मेल इस तथ्य के कारण हैं कि ये लक्षण राजनीतिक-विभाजनों के साथ-साथ चलने वाले थे।

यह तथ्य राइन नदी के साथ चलने वाली महत्वपूर्ण जर्मन समभाष-रेखाओं के वितरण में सबसे अधिक सरलता से देखा जा सकता है। राइन के पूर्व में कोई 40 किलोमीटर की दूरी पर निम्न-जर्मन और उच्च-जर्मन में विभाजित करने वाला महान समभाष-रेखीय समूहन अलग-अलग होने लगा और उत्तर-पश्चिम की ओर तथा दक्षिण-पश्चिम की ओर फैलने लगा। उससे एक पंखे के आकार की आकृति बनी जिसे रेनिका फैन कहते हैं।

उत्तरी [k] बनाम दक्षिण [x] की make शब्द की समभाष-रेखा जोकि स्वेच्छानुसार विभाजन की महत्वपूर्ण रेखा मानी गयी है, राइन नदी के वेनेरथ नगर को ठीक उत्तर में काटती है और तदनुसार यह "वेनरेथ लाइन" कहलाती है। अब यह पता लगा है कि यह पंक्ति प्राचीन बर्ग राइन के पूर्व और ज्यूलिख राइन के पश्चिम के भूखण्डों की प्राचीन उत्तरी सीमा से मोटे तौर पर एकीभूत है। 'मैं' शब्द में उत्तरी [k] बनाम दक्षिणी [x] की समभाष-रेखा उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और राइन नदी को ऊर्डिंगेन गाँव (urd-ingen) के ठीक उत्तर में काटती है। तदनुसार यह ऊर्डिंगेन लाइन कहलाती है। कुछ अध्येता इस पंक्ति को, न कि make की पंक्ति को निम्न और उच्च जर्मन की यादृच्छिक सीमा मानते हैं। ऊर्डिंगेन पंक्ति नेपोलियन-पूर्व डची पूर्व, उत्तरी सीमाओं से प्रायः एकीभूत है। यह सीमा ज्यूलिख और बर्ग (Jūlich और Berg) (वे राज्य जोकि वेनेरथ पंक्ति की प्राचीन सीमा के सूचक थे) और कोलोन के राज्य के बीच की सीमा 1989 में तोड़ दी गयी। उर्डिंगेन के ठीक उत्तर में काल्डनहोसेन नाम का नगर ऊर्डिंगेन पंक्ति द्वारा एक पश्चिमी भाग तक जहाँ [ex] और एक पूर्वी भाग [ek] चलता है, बटा हुआ है।

हम यह भी जानते हैं कि 1789 तक इस नगर का पश्चिमी भाग कोलोन (cologne) के जनतंत्र के अधीन था जोकि कैथोलिक और पूर्वी भाग मूर्स (mörs) की काउन्टी के अन्तर्गत था जो कि प्रोटेस्टेन्ट थे। हमारा मानचित्र दो समभाष-रेखाओं को दक्षिण-पश्चिम की ओर बाँटता हुआ दिखाता है। एक रेखा शब्द [dorp-dorf] "गाँव" में उत्तरी [p] दक्षिणी [f] की रेखा थी। यह रेखा उस रेखा से प्रायः एकीभूत है जो 1789 में ज्यूलिख, कोलीन

और बर्ग की दक्षिणी सीमा थी और ट्रेवे (Treves) के गणतन्त्र को पृथक् करती थी। उससे भी और दक्षिण दिशा में शब्द [dat-das] "वह" में उत्तरी [t] दक्षिणी [s] के बीच की समभाष-रेखा थी। ये रेखा भी कुछ-कुछ उस रेखा से एकीभूत है जोकि ट्रेवे गणतन्त्र और आर्क विस्प्री (Archbishopric) की प्राचीन दक्षिणी सीमा है।

यह सब दिखाता है कि भाषाई लक्षणों का विस्तार सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर है। इस दिशा में निस्संदेह संचार घनत्व और विभिन्न सामाजिक वर्गों की अपेक्षित प्रतिष्ठा प्रमुख घटक है। महत्वपूर्ण सामाजिक सीमाएँ समय पाकर समभाष-रेखाओं को अकर्षित करती हैं।

फिर भी यह स्पष्ट है कि अनेक भाषाई रूपों की विचित्रताएँ स्वयं महत्वपूर्ण कार्य करती हैं क्योंकि प्रत्येक अपने निजी समभाष-रेखा को प्रदर्शित करता है। नीदरलैण्ड में हम house शब्द का एक नया रूप पाते हैं जोकि घरेलू शब्द mouse (§19.4) के नये रूप की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत था। हम किसी भी वैज्ञानिकतया प्रयोग-योग्य विश्लेषण की आशा नहीं कर सकते जोकि प्रत्येक समभाष-रेखा का विकास पहले से सूचित कर सके, वक्ताओं में प्रतिष्ठा का घटक और रूपों में अर्थ (अभिधार्थ) का घटक हम को इस ओर निराश कर देता है। फिर भी बोली-भूगोल न केवल उन भाषिकेतर घटकों के समझने में सहायता देता है जोकि भाषाई रूपों के प्रचलन को प्रभावित करते हैं अपितु अवशिष्ट रूपों और स्तरीकरणों के साक्ष्य के द्वारा एकाकी रूपों के इतिहास के विषय में कही अधिक विस्तार की सूचना देता है।

अध्याय 20

स्वनात्म परिवर्तन

20.1 पूर्वतर भाषा के लिखित आलेख, भाषण एवं भाषाओं के बीच समानता, तथा स्थानीय बोलियों की विविधता—इन सभी से प्रकट होता है कि समय के साथ भाषाओं में परिवर्तन होता है। प्राचीन अंग्रेजी आलेखों में हमें stan "पत्थर" मिलता है जिसकी व्याख्या हम स्वनात्म दृष्टि से [sta:n] करते हैं। यदि हम विश्वास करलें कि आधुनिक अंग्रेजी शब्द stone [stown] इस प्राचीन अंग्रेजी शब्द का अटूट परम्परा से आया आधुनिक रूप है, तो हमें यह भी अवश्य मानना पड़ेगा कि प्राचीन अंग्रेजी [a:]परिवर्तित होकर आधुनिक अंग्रेजी में [ow] हो गया। यदि हम विश्वास करें कि यह समरूपता आकस्मिक नहीं है, वरन् भाषण प्रवृत्ति की परम्परा से मिली है तो हम यह निष्कर्ष अवश्य निकालेंगे कि समान रूपों में वैभिन्न्य इस भाषण प्रवृत्ति में परिवर्तनस्वरूप हुआ है। पहले के अध्येताओं ने इसे पहचाना। उन्होंने समान रूपों-व्युत्पत्तियों-की एक सूची एकत्र की तथा निष्कर्ष निकाला कि एक सारिणी के रूपों की बीच के अन्तर, भाषाई परिवर्तन के कारण हुए थे। किन्तु 19वीं शती के आरंभ के पूर्व इन अन्तरों को वर्गीकृत करने में कोई भी सफल नहीं हुआ। समानता तथा विभिन्नता हर सारिणी में भिन्न प्रकार की थी। प्राचीन अंग्रेजी bat जिसकी व्याख्या हम ध्वन्यात्म दृष्टि से [ba:t] रूप में करते हैं एक अर्थ में आधुनिक अंग्रेजी boat [bowt] के समानान्तर है किन्तु अन्य अर्थ में आधुनिक अंग्रेजी bait [bejt] के समानान्तर है। लैटिन dies तथा अंग्रेजी day के आदि व्यंजन एक ही हैं किन्तु लैटिन duo तथा अंग्रेजी two के आदि व्यंजन भिन्न हैं। भाषाई परिवर्तन के परिणामों ने समानता तथा असमानता की एक भ्रान्ति उपस्थित की। किसी को भी ऐसा प्रतीत सा हो सकता है कि कुछ समानताएं आकस्मिक (मिथ्या व्युत्पत्ति) थीं किन्तु इसके परीक्षण का कोई आधार नहीं था। भाषाई संबन्धों की स्पष्ट व्यवस्था पर कोई नहीं पहुँच सकता था। इसकी सम्भावना और कम थी। क्योंकि मध्यकाल

से ही रोमान्स आलेखों के साथ-साथ लैटिन आलेखों का बना रहना, भाषाई कालक्रम के सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति के समूचे दृष्टिकोण को विकृत कर देता था।

उस काल पर विचार करना बेकार नहीं है। अब हमारे पास एक पद्धति है जो भाषाई समानता की अस्त-व्यस्तता के बीच एक व्यवस्था ला देती है तथा भाषाई सम्बन्धों पर प्रकाश डालती है। हमारे यह भूल जाने की सम्भावना है कि भाषाई परिवर्तन के परिणाम कितने अव्यवस्थित होते थे जबकि उनके वर्गीकरण का कोई सूत्र हमारे पास न था। 19वीं शती के आरम्भ से ही हमने संबन्धित रूपों के बीच के अन्तर को, उनके अनेक प्रकार के भाषाई परिवर्तनों को निर्धारित करते हुए, वर्गीकृत करना सीख लिया है। वह सामग्री जिसकी विभिन्नरूपता से पहले के अध्येता चकित रह जाते थे वर्गीकरण की सुविधा प्रदान करती है। समरूपताएँ जो हमारी परिवर्तन कोटि के अन्तर्गत उपयुक्त नहीं बैठतीं, अपेक्षाकृत कम हैं तथा यदि हम उन्हें आकस्मिक रूप में निकाल भी दें तो कोई अन्तर नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए यही स्थिति लैटिन dies : अंग्रेजी day के साथ है जिसे अब हम मिथ्या व्युत्पत्ति के रूप में जानते हैं।

भाषाई परिवर्तन-प्रक्रिया कभी भी प्रत्यक्ष रूप से देखी नहीं गई। हम देखेंगे कि हमारी वर्तमान सुविधाओं के साथ इस प्रकार का अवलोकन अकल्पनीय है। हम यह मानते रहे हैं कि हमारे वर्गीकरण का आधार, जो भलीभाँति काम करता है (यद्यपि किसी भी तरह पूर्णरूप से नहीं) उस वास्तविक परिवर्तनकारी उपादान को प्रतिभासित करता है जिससे हमारी सामग्री उपलब्ध होती है। यह धारणा कि पर्यवेक्षित तथ्यों का सहजतम वर्गीकरण एक सत्य है, सारे विज्ञानों में पायी जाती है। वर्तमान स्थिति में यह स्मरणीय है कि पर्यवेक्षित तथ्य (अर्थात् भाषाई परिवर्तन के परिणाम, जैसाकि उनकी व्युत्पत्ति से प्रकट होता है) जब तक कि हमारी पद्धति प्रकाश में नहीं आई, तब तक हम लोगों की समझ में बिल्कुल नहीं आए। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की पद्धति के विकास में प्रथम चरण एकरूप स्वनात्म अनुरूपताओं (phonetic correspondences) की खोज थी। हम इन अनुरूपताओं को उन परिवर्तन-उत्पादन के परिणाम स्वरूप लेते हैं जिसे हम स्वनात्म परिवर्तन (phonetic change) कहते हैं।

20.2. 19वीं शती के आरम्भ में हमें कुछ ही विद्वान् क्रमबद्ध ढंग से विशिष्ट

प्रकार की समरूपता, मुख्य रूप से स्वनात्म अन्विति अथवा अनुरूपता का चयन करते हुए मिलते हैं। प्रथम स्मरणीय कार्य रास्क (Rask) और ग्रिम (Grimm) का (§1.7) जर्मन तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं के बीच की अनुरूपता का पर्यवेक्षण था। अनुरूपी ढेर सारे रूपों में है। उन्होंने कुछ को चुना जिनसे एकरूप स्वनात्म सह-संबन्ध दिखाई पड़ता है। आधुनिक शब्दावली में यदि इन सह-संबन्धों को रखें तो निम्न स्थिति दिखाई पड़ेगी :—

(1) अन्य भाषाओं के अघोष स्पर्शों के समानान्तर जर्मन में अघोष संघर्षी मिलता है :

[p-f] लैटिन pēs : अंग्रेजी foot ; लैटिन piscis : अंग्रेजी fish, लैटिन pater : अंग्रेजी father;

[t-θ] लैटिन trēs : अंग्रेजी three ; लैटिन tenuis : अंग्रेजी thin ; लैटिन tacēre (चुप रहना) : गॉथिक [ˈθahan] ;

[k-h] लैटिन centum : अंग्रेजी hundred ; लैटिन caput : अंग्रेजी head ; लैटिन cornū : अंग्रेजी horn.

(2) अन्य भाषाओं के सघोष स्पर्शों के समानान्तर जर्मन में अघोष स्पर्श :

[b-p] ग्रीक [ˈkannabis] : अंग्रेजी hemp;

[d-t] लैटिन duo : अंग्रेजी two ; लैटिन dens : अंग्रेजी tooth ; लैटिन edere : अंग्रेजी eat ;

[g-k] लैटिन grānum : अंग्रेजी corn ; लैटिन genus : अंग्रेजी kin ; लैटिन ager : अंग्रेजी acre.

(3) अन्य भाषाओं के महाप्राण तथा संघर्ष ध्वनियों के (जिसे हम आज आदिम भारतयूरोपीय सघोष महाप्राण ध्वनियों के प्रतिवर्त रूप से ज्ञापित करते हैं) समानान्तर जर्मन भाषाओं में सघोष स्पर्श तथा संघर्षी ऊष्म ध्वनियां मिलती हैं :

संस्कृत (भ्) ग्रीक [ph], लैटिन [f], जर्मन [b, v] : संस्कृत (भरामि) "मैं ढोता हूं", ग्रीक [ˈphero:] ; लैटिन ferō: अंग्रेजी bear, संस्कृत (भ्राता) ग्रीक [ˈphra:te:r] लैटिन frāter अंग्रेजी brother ; लैटिन frangere : अंग्रेजी break ;

संस्कृत [ध्], ग्रीक [th], लैटिन [f], जर्मन [d, ǥ] : संस्कृत ('अधात्) ग्रीक ['the:so:] "मैं रखूंगा", लैटिन feci. "मैंने बनाया, किया" अंग्रेजी do ; संस्कृत (मधु) "शहद", ग्रीक ['methu] शराब, अंग्रेजी mead ; संस्कृत ('मध्य) लैटिन medius : अंग्रेजी mid ;

संस्कृत (ह्), ग्रीक [kh], लैटिन [h], जर्मन [g, v̤] : संस्कृत (हंस) अंग्रेजी goose ; संस्कृत (वहति) 'वह गाड़ी ले जा रहा है', लैटिन vehit : प्राचीन अंग्रेजी wegan "ले जाना, हिलना, एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजना, लैटिन hostis अजनबी, शत्रु: प्राचीन अंग्रेजी giest अतिथि।

स्थितियों का एकमात्र कारण यह विश्वास है कि इन सह-सम्बन्धों की बहुलता है अथवा वे अन्य दूसरी रीतियों से इतने विचित्र हैं कि इन्हें संयोगवश नहीं माना जा सकता ।

20.3 भाषा के अध्येताओं ने इन सह-सम्बन्धों को (जिन्हें एक भयावह रूपक में 'ग्रिम का नियम" कहते हैं) स्वीकार कर लिया है, क्योंकि इनसे प्रस्तुत वर्गीकरण की बाद के अध्ययन से पुष्टि होती है। नई सामग्री से उन्हीं अनुरूपताओं तथा स्थितियों की व्यंजना होती है और जिनसे इन अनुरूपताओं की व्यंजना नहीं होती उनका वर्गीकरण अन्य प्रकार से किया जाता है।

उदाहरण के लिए, उन स्थितियों में से जिनमें ग्रिम नियम की संगति नहीं मिलती, यह सम्भव है कि एक बड़े समूह को अलग कर लिया जाय जिसमें अन्य भाषाओं के अघोष स्पर्श [p, t, k] जर्मन में भी दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार अन्य भाषाओं का [t] निम्न प्रकार की स्थितियों में जर्मन में [t] है :

संस्कृत [अस्ति] 'वह है,' ग्रीक ['esti], लैटिन est : गॉथिक [ist] "है" लैटिन captus "लिया हुआ, पकड़ा हुआ", गॉथिक [hafts] "रोका गया"।

संस्कृत 'अष्टौ' "आठ", ग्रीक [ok'to:] लैटिन octō: गॉथिक ['ahtaw]।

अब इन सभी स्थितियों में [p,t,k] के पूर्व जर्मन में अघोष ऊष्म [s,f,h] ध्वनियाँ आती हैं तथा उन स्थितियों के सर्वेक्षण से जो ग्रिम की अनुरूपताओं की पुष्टि करते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें जर्मन व्यंजन के पूर्ववर्ती ये ध्वनियां नहीं होतीं। इस प्रकार ग्रिम के सह-संबन्धों ने एक अवशेष छोड़ते हुए एक अन्य सह-संबन्ध की प्राप्ति की ओर हमें मार्ग-निर्देश किया है। [s,f,h] के बाद जर्मन [p, t, k] अन्य भारत-यूरोपीय भाषाओं के [p, t, k] के समानान्तर हैं।

अवशिष्ट रूपों में, पुनः हमें एक संख्या मिलती है जिसमें आदि जर्मन सघोष स्पर्श [b, d, g] संस्कृत के भ्, ध्, घ् के समानान्तर नहीं हैं जैसाकि ग्रिम के नियमानुसार होना चाहिए था वरन् [b, d, g] के समानान्तर हैं तथा ग्रीक में सम्भावित [ph, th, kh] के समानान्तर नहीं होकर (p,t,k) के समानान्तर हैं। एक संस्कृत का उदाहरण है 'बोधामि' "मैं देखता हूँ"। ग्रीक [ˈpewthomaj] "मैं अनुभव करता हूँ", गाँथिक [ana-ˈbiwdan] "आज्ञा देना", प्राचीन अंग्रेजी [ˈbe:odan] आज्ञा देना, घोषित करना, अर्पित करना, अंग्रेजी bid. 1862 में हरमैन ग्रासमैन (1809-1877) ने यह दिखाया कि इस प्रकार का सह-संबन्ध, जहाँ कहीं का दूसरा व्यंजन (अन्तर्वर्ती स्वर अथवा संध्यक्षर के बाद का व्यंजन) ग्रिम के तीसरे प्रतिरूप के अनुसार होता है, दिखाई पड़ता है। अर्थात् संस्कृत तथा ग्रीक में दो एक दूसरे के अनुवर्ती आदि अक्षरों में महाप्राण स्पर्श नहीं है किन्तु जहाँ कहीं भी संबंधित भाषाओं में इस प्रकार का ढाँचा दिखाई पड़ता है, दो स्पर्शों में है प्रथम स्पर्श महाप्राण नहीं होता। जर्मन [*bewda-] के ही अनुरूप संस्कृत में हमें [*भोध] नहीं बल्कि बोध-तथा ग्रीक में [*phewtho-] नहीं बल्कि [pewtho-] मिलते हैं। तो यहाँ भी अवशिष्ट सामग्री जो ग्रिम की अनुरूपताओं से अभिलक्षित की जाती है, एक सह-संबन्ध प्रकट करती है।

फिर भी इस स्थिति में, भाषा की संरचना में एक संपुष्टि मिलती है। ग्रीक में कुछ रूपों की द्विरुक्ति (§13.8) होती है जिनमें कि आधारवर्ती प्रातिपदिक का प्रथम व्यंजन, जिसके बाद में एक स्वर आता है, पूर्वसर्ग जोड़ा जाता है : [ˈdo:so:] "मैं दूँगा", [ˈdi-do: mi] "मैं देता हूँ।" अब हमें पता चलता है कि प्रातिपदिक के लिए जिसका आदि व्यंजन महाप्राण स्पर्श होता है, द्विरुक्ति एक सरल स्पर्श (plain stop) के द्वारा की जाती है, [ˈthe: so:] 'मैं रखूँगा', [ˈti- the: mi] "मैं रखता हूँ।" यही प्रवृत्ति ग्रीक पद रचना में अन्य स्थानों पर दिखाई पड़ती है। इस प्रकार संज्ञा रूपसारिणी जिसमें एक वचन कर्ता [ˈth-riks] "बाल" किन्तु अन्य कारक रूपों में यथा कर्मकारक [ˈtrikha] रूप है। जब स्वर के बाद व्यंजन महाप्राण होता है, आदि व्यंजन [t] की जगह [th] होता है। इसी प्रकार, संस्कृत में, साधारण द्विरुक्ति में प्रथम व्यंजन की आवृत्ति होती है [ˈa-da:t] "उसने दिया", [ˈda-da:mi] "मैं देता हूँ।" किन्तु आदि महाप्राण के होने पर द्विरुक्ति में सरल व्यंजन होता है [ˈa-dha:t] "उसने रखा", [ˈda-dha: mi] "मैं रखता हूँ", तथा इसी प्रकार के परिवर्तन संस्कृत

पदरचना में अन्य स्थानों पर दिखाई पड़ते हैं। ये परिवर्तन प्रत्यक्ष रूप से ग्रासमैन के ध्वनिपरिवर्तनसंबन्धी खोज के परिणाम हैं।

20.4 यदि हमारी अनुरूपताएँ संयोगवश नहीं हैं, तो वे अवश्य ही किसी ऐतिहासिक संबन्ध से प्रतिफलित हुई होती हैं। और इस संबन्ध की तुलनात्मक पद्धति द्वारा जैसाकि हमने देखा है एक मूल भाषा के उभयनिष्ठ संतान की धारणा के अनुसार पुनः संरचना होती है। जहाँ दो संबन्धित भाषाओं में सम्बन्ध होता है, वहां वे मूल भाषा के अभिलक्षण को बनाए रखती हैं यथा brother में [r], mead तथा mid का [m] (§20·2) अथवा क्रिया रूप he is में [s] जहाँ पर अनुरूपताओं द्वारा बिल्कुल भिन्न स्वनिम जुड़ते है, तो हम मान लेते हैं कि एक या एकाधिक भाषाओं में परिवर्तन हुआ है। इस प्रकार हम ग्रिम की अनुरूपताओं को प्रस्तुत करते है :—

(1) आदिम भारत-यूरोपीय-अघोष स्पर्श [p, t, k] पूर्व-जर्मन भाषा में अघोष महाप्राण [f, θ, h] में परिवर्तित हो जाता है।

(2) आदिम भारत-यूरोपीय घोष स्पर्श [b, d, g] पूर्व-जर्मन अघोष स्पर्श [p, t, k] में परिवर्तित हो जाता है।

(3) आदिम भारत-यूरोपीय सघोष महाप्राण स्पर्श [bh, dh, gh] पूर्व-जर्मन भाषा में घोष स्पर्श अथवा ऊष्म [b, d, g] में, पूर्व ग्रीक भाषा में अघोष महाप्राण स्पर्श [ph, th, kh] में, पूर्व इतालवी तथा पूर्व-लैटिन में [f, θ, h] में परिवर्तित हो जाता है। इस स्थिति में आदिम भारत-यूरोपीय स्वनिमों की ध्वानिक आकृति (acoustic shape) किसी भी प्रकार निश्चित नहीं है तथा कुछ विद्वान अघोष ऊष्म [f, θ, x] कहना पसन्द करते हैं। इसी प्रकार हम यह नहीं जानते हैं कि आदिम जर्मन प्रतिवर्त स्पर्श अथवा ऊष्म थे किन्तु इन संदेहों से हमारे ध्वन्यात्म ढांचे सम्बन्धी परिणामों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

अनुरूपताएं जहाँ [p, t, k] जर्मन भाषा में दिखाई पड़ते हैं एक सीमा की अपेक्षा रखते हैं (1) : व्यंजन के तुरन्त बाद (वे जो सचमुच ही उपस्थित होते हैं [s ,p ,k] हैं) आदिम भारत-यूरोपीय अघोष स्पर्श [p, t, k] पूर्व-जर्मन में परिवर्तित नहीं हुए।

ग्रासमैन की अनुरूपताओं का वर्णन ऐतिहासिक ढंग से हम यह कहकर वर्णन करते हैं कि पूर्व ग्रीक के इतिहास में एक विशेष विकास-बिन्दु पर, वे रूप जिनमें एक दूसरे के बाद आवर्ती महाप्राण के साथ दो अक्षर होते थे,

प्रथम व्यंजन का महाप्राणत्व लुप्त हो गया । इस प्रकार हम पुनः संरचना करते हैं :

आदिम भारत-यूरोपीय >	पूर्व ग्रीक >	ग्रीक
*['bhewdhomaj]	*['phewthomaj]	['pewthomaj]
*['dhidhe mi]	*['thithe:mi]	['tithe:mi]
*['dbrighm̥]	*['thrikha]	['trikha]

दूसरी ओर hair के लिए शब्द के एक वचन कर्ता कारक में, हम यह मानते हैं कि वहाँ स्वर के बाद कभी महाप्राण नहीं था । आदिम भारत-यूरोपीय *[dhriks] ग्रीक में [thirks] रूप में दिखाई पड़ता है। पूर्व भारत-यूरोपीय के लिए हम इस प्रकार के परिवर्तन का अनुमान करते हैं। एक आदिम भारत-यूरोपीय *[bhewdho] संस्कृत में [बोध] रूप में, एक आदिम भारत-यूरोपीय *[dhedhe:-] संस्कृत में [dadha:-] रूप में इत्यादि ।

ऐतिहासिक घटनाओं की पुनः संरचना में अगला कदम इस तथ्य के साथ आगे बढ़ता है कि संस्कृत में [b, d, g] में महाप्राणत्व का लोप हो जाता है किन्तु ग्रीक में [p, t, k] रहता है । इसमें यह निहित है कि आदिम भारत–यूरोपीय [bh, dh, gh] पहले ही प्राक्-ग्रीक में अघोष [ph, th, kh] हो चुके थे जबकि महाप्राणत्व का लोप हुआ । क्योंकि यह अघोषीकरण इण्डो-ईरानी में नहीं मिलता, हम यह परिणाम निकालते हैं कि प्राक्-ग्रीक तथा पूर्व इण्डो-ईरानी में यह अ-महाप्राणीकरण स्वतन्त्र रूप में हुआ ।

तो, अध्वन्यात्म अनुरूपताओं की व्याख्या जो हमारे एक तरह के रूपों में दिखाई पड़ती है, यह मानकर चलती है कि एक भाषा के स्वनिमों में ऐतिहासिक परिवर्तन की सम्भावना रहती है । यह परिवर्तन कुछ ध्वन्यात्म दशाओं तक सीमित रह सकता है । इस प्रकार प्राक्-जर्मनीय [p, t, k] जब एक अन्य अघोष व्यंजक उसके पूर्व आता था तो [f, θ, h] में नहीं बदला यथा *[kɔ-ptos] > गॉथिक [hafts] प्राक्-ग्रीक में [ph, th, kh] केवल तभी [p, t, k] हो गया जब दूसरा अक्षर महाप्राण से आरम्भ होता था। इस प्रकार के भाषाई परिवर्तन ध्वन्यात्म परिवर्तन अथवा ध्वनिपरिवर्तन कहे जाते हैं। आधुनिक शब्दावली में, ध्वनि परिवर्तन की धारणा इस वाक्य द्वारा व्यक्त की जा सकती है "स्वनिम परिवर्तित होते रहते हैं ।"

20.5 उन सदृश-रूपों का चयन कर लेने के बाद जिन में मान्य सह-सम्बन्ध मिलता है, अवशिष्ट रूपों में दो स्वतः सिद्ध सम्भावनाएँ मिलती हैं।

सह-संबंध का अतिसीमित अथवा अति-विस्तृत रूप में वर्णन किया जा सकता है। एक अपेक्षाकृत अधिक सावधानी से किए गए सर्वेक्षण से अथवा नई सामग्री की उपलब्धि से संशोधन हो सकता है। इसका उल्लेखनीय उदाहरण ग्रासमैन की खोज थी। यह तथ्य कि अवशेषों द्वारा बार-बार नए-नए सह-संबंधों का उद्घाटन हुआ है, हमारी पद्धति की एक दृढ़ संपुष्टि है। दूसरे, एक समानरूप एक ही प्राचीन रूप के भिन्न उच्चारण रूप नहीं भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए ग्रिम ने लैटिन dies अंग्रेजी day का उल्लेख एक ऐसी व्युत्पत्ति के रूप में किया है जो उसके सह-संबंधों के अन्तर्गत नहीं आते थे और उसके समय से अब तक किसी भी शोध द्वारा अन्यथा युक्ति संगत सहसंबंधवर्गों के परिवर्तित होने की सम्भावना नहीं दिखाई पड़ती जिससे कि उनमें यह समुच्चय भी रखा जा सके। इसी प्रकार लैटिन habere "रखना" : गॉथिक haban, प्राचीन जर्मन haben गहरी समरूपता के बावजूद, सहसंबंध के प्रतिरूपों के विरोध में आते हैं जो अन्यथा उपयुक्त हैं। इन स्थितियों में हम सादृश्य को आकस्मिक मान सकते हैं जिसका अर्थ हुआ कि यह ऐतिहासिक संबंधों के कारण नहीं है। इस प्रकार लैटिन dies : अंग्रेजी day की व्युत्पत्ति को अब सभी लोग मिथ्या मानने लगे हैं। अथवा अन्य स्थितियों में समानता मूल भाषा के रूपों की व्याकरणिक सादृश्य के कारण हो सकती है। इस प्रकार लैटिन habere "रखना" तथा प्राचीन उच्च जर्मन haben "रखना" क्रमशः दो प्रातिपादिक* [gha'-bhe:—] तथा *[Ka'bhe :—] से जो रूपरचना की दृष्टि से आदिम भारत-यूरोपीय में समानान्तर थे, निकले हुए हो सकते हैं। अन्ततः हमारे एक तरह के रूपों की समानता एक उभयनिष्ठ प्रकृत रूप से निकले होने के अतिरिक्त, ऐतिहासिक संबंध के कारण हो सकती है। इस प्रकार लैटिन 'dentalis' "दाँत से संबंधित" तथा अंग्रेजी 'dental' एक दूसरे से मिलते तो हैं किन्तु उनसे कोई सह-संबंध नहीं दिखाई पड़ता (यथा लैटिन d : अंग्रेजी t) जो आदिम भारत-यूरोपीय भाषा के लैटिन तथा अंग्रेजी के उभयनिष्ठ प्रतिवर्ती में दिखाई पड़ती है। इसका कारण यह है कि dental केवल अंग्रेजी वक्ता द्वारा लैटिन शब्द का पुनः उच्चारण है।

तो सारांश यह है कि वे अवशिष्ट रूप जो ध्वन्यात्म सहसंबंध के अंगीकृत प्रतिरूपों में बँट नहीं पाते निम्नलिखित हो सकते हैं :—

1. एक उभयनिष्ठ पूर्वरूप से निकले हुए रूप जिनकी विख्याति केवल

इसलिए है कि हमने ठीक तरह से ध्वन्यात्म सह-संबंध की यथा संस्कृत बोधामि तथा ग्रासमैन की खोज के पूर्व अंग्रेजी bid की, संपुष्टि नहीं की है।

2. जो एक उभयनिष्ठ पूर्वरूप से नहीं निकले हुए हैं जिस स्थिति में समरूपता निम्न कारणों से हो सकती है :—

(अ) आकस्मिक रूप से, यथा लैटिन dies : अंग्रेजी day ;

(ब) स्रोतभाषा की रूप-रचनात्मक दृष्टि से आंशिक समरूपता, यथा लैटिन habēre : अंग्रेजी have

(स) अन्य ऐतिहासिक संबंधों से, यथा लैटिन dentalis अंग्रेजी dental।

यदि यह ठीक है, तो अवशिष्ट एक तरह के रूपों के अध्ययन द्वारा हम ध्वन्यात्म सहसंबंध के नए प्रतिरूपों की खोज कर लेंगे—(1) मिथ्या व्युत्पत्तियों का प्रतिरोधन, (1 अ) स्रोतभाषा के रूपात्मक संरचना का उद्घाटन, (2 ब) अथवा ध्वनि परिवर्तन के अतिरिक्त भाषाई परिवर्तन के प्रतिरूपों से परिचित होना (2 स)। यदि अवशिष्ट रूपों के अध्ययन से हम इन परिणामों पर नहीं पहुँचते तो हमारी योजना अनुपयुक्त है।

20.6 19वीं शती के प्रथम 15 वर्षों में, जहाँ तक हम जानते हैं हमारी योजना के उद्देश्य की सम्भावनाओं को सीमित करने का साहस किसी ने नहीं किया। यदि एक तरह के रूपों की एक तालिका मान्य सह-संबंधों के अन्तर्गत नहीं आती थी तो विद्वानों को यह मानने की स्वतन्त्रता थी कि वे इन रूपों को बिल्कुल उसी प्रकार एक दूसरे से संबंधित मान लें जैसा कि प्रसामान्य रूप में प्रकृतरूप से उद्भूतों को मानते हैं। वे इसे ऐतिहासिक ढंग से यह कहते हुए उक्ति-व्यवहार में लाते थे कि एक भाषण ध्वनि के कुछ रूपों में एक ओर कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, किन्तु दूसरी ओर अन्य रूपों में परिवर्तित हो सकते थे अथवा अपरिवर्तित रह सकते थे। एक आदिम भारत-यूरोपीय [d] प्राक्-जर्मन में अधिकांश रूपों में [t] में बदल सकता था, यथा

two (: लैटिन duo), ten (: लैटिन decem),

tooth (: लैटिन dens), eat (: लैटिन edere)

किन्तु कुछ रूपों में अपरिवर्तित बना रहता है यथा day (: लैटिन dies)।

जब तक कि अवशिष्ट रूपों के विस्तृत अध्ययन से यह व्यक्त नहीं हो जाता कि संभावनाएं (1) तथा (2 अ, ब, स) इतनी अधिक संख्या में

उपलब्ध थीं कि अनियमित ध्वनि-परिवर्तन की सम्भावना ही समाप्त हो गई थी। तब तक समग्र रूप में, इस दृष्टिकोण के विरोध में कुछ भी नहीं कहना था––वास्तव में इसके लिए अत्यधिक सावधानी की अपेक्षा थी। 1860 और 1870 के बीच अनेक विद्वानों ने, सबसे अधिक उल्लेखनीय 1867 में आगस्ट लेस्किन (August Leskien) (§1.9) ने यह निष्कर्ष निकाला कि बिल्कुल ऐसा हो ही चुका था, अवशिष्ट रूपों की छान-बीन के परिणामस्वरूप प्राय: अविरोधी तथ्यों (1, 2ब, 2स) की खोज हुई थी अथवा मिथ्या व्युत्पत्तियों (2अ) का प्रतिरोधन हुआ जिससे कि भाषा वैज्ञानिकों की मान्यता में पुष्टि हुई कि स्वनिमों में परिवर्तन नियमित है। हमारी पद्धति की शब्दावली में इसका यह अर्थ था कि रूपों के बीच हर प्रकार के मेल जो मान्य अनुरूपता-वर्गों के अन्तर्गत नहीं आते, ध्वनि-परिवर्तन के लक्षणों के कारण हैं जिसे हम मान्यता नहीं दे सके हैं (1) अथवा एक ही आदमी के विभिन्न रूप नहीं हैं, या तो इसलिए कि व्युत्पत्ति भ्रमपूर्ण है (2अ), अथवा इसलिए कि ध्वनिपरिवर्तन के अतिरिक्त अन्य कुछ कारणों से एकसमान रूपों की अवस्थिति बनी हुई है (2ब, स)। ऐतिहासिक दृष्टि से व्याख्या करने पर इस उक्ति का अर्थ यह होता है कि ध्वनि परिवर्तन का अभिप्राय केवल वक्ता के स्वनिमों के उच्चारण की रीति में परिवर्तन से होता है, तथा तदनुसार जहाँ कहीं एक स्वनिम आता है विशेष भाषाई रूप की प्रवृत्ति से निरपेक्ष रहकर जिसमें स्वनिम का व्यवहार होता है, भाषण प्रवृत्ति से प्रभावित होता है। परिवर्तन का संबंध उच्चारण की किन्हीं प्रवृत्तियों से जोड़ा जा सकता है जो सम्पूर्ण स्वनिमों में आती हैं यथा प्राक्-जर्मन भाषा में घोष व्यंजन [b, d, g] के अघोषीकरण में। दूसरी ओर परिवर्तन का संबंध स्वनिमों के उच्चारण-क्रम की कुछ प्रवृत्ति से जोड़ा जा सकता है तथा इस प्रकार केवल विशेष स्थितियों में ही घटित होता है यथा जब जर्मन में [p, t, k] उसी वर्ग के अन्य ध्वनि अथवा [s] के पूर्व गाँथी नहीं होने पर [f, θ, h] हो गया। इसी प्रकार [ph, th, kh] प्राक्-ग्रीक में, दूसरे अक्षर के आदि व्यंजन के महाप्राण होने की स्थिति में [p, t, k] हो गया। इन सोपाधिक ध्वनि-परिवर्तनों की (conditional sound changes) सीमाएँ वास्तव में शुद्धरूप से ध्वन्यात्मक हैं क्योंकि परिवर्तन का संबंध मात्र उच्चारण प्रयत्न की प्रवृत्ति से होता है। ध्वन्यात्म परिवर्तन अध्वन्यातम उपादानों से कोई संबंध नहीं रखता,

यथा, अर्थ, आवृत्ति, समध्वनि अथवा किसी विशेष भाषाई रूप का कोई भी उपादान। आधुनिक पारिभाषिक शब्दावली में संक्षेप में यह पूर्व धारणा इन शब्दों से व्यक्त की जा सकती है: स्वनिम परिवर्तन (phonemes change), क्योंकि स्वनिम शब्द से संकेतन व्यवस्था की अर्थहीन लघुतम इकाई का बोध होता है।

नए सिद्धान्त का प्रयोग अनेक भाषा वैज्ञानिकों ने किया जिन्हें "नव्य-वैयाकरण" की उपाधि मिली। दूसरी ओर जार्जक्रूटस (Georg Curtius, 1820–1885) जैसे पुराने विद्वान ही नहीं बल्कि नए विद्वानों ने भी जिनमें उल्लेखनीय ह्यूगो (Hugo Schuchardt, 1842–1927) का नाम आता है नई परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया। सूक्ष्म तथ्यों संबंधी परिचर्या कभी नहीं बन्द हुई। जहाँ तक इसका संबंध है भाषा वैज्ञानिक आज भी 1870 की भाँति दो वर्गों में बँटे हुए हैं।

इस वाद-विवाद का अधिकाँश भाग केवल अनुपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली के कारण था। 1870 में, जब पारिभाषिक शब्दावली आज की अपेक्षा कम यथार्थ थी, एक-रूप ध्वनि परिवर्तन की धारणा के लिए अस्पष्ट और आलंकारिक शब्दावली का प्रयोग हुआ था यथा "ध्वनि-नियमों में अपवाद नहीं होते"। यह स्पष्ट है कि "नियम" (law) शब्द का यहाँ यथार्थ अर्थ नहीं है क्योंकि ध्वनिपरिवर्तन किसी भी अर्थ में "नियम" नहीं है, प्रत्युत एक ऐतिहासिक अवस्थिति है। वाक्यांश "कोई अपवाद नहीं है" यह कहने का एक बहुत ही गलत ढंग है कि अध्वन्यात्म उपादान यथा आवृत्ति (frequency) अथवा किसी विशेष भाषाई रूप का अर्थ स्वनिमों के परिवर्तन में कोई प्रतिरोध नहीं उपस्थित करता।

यहाँ वास्तविक समस्या ध्वन्यात्म-अनुरूपता वर्गों के क्षेत्र तथा अवशिष्ट रूपों के महत्त्व से है। नव्य-वैयाकरण यह दावा करते थे कि अध्ययन के परिणामों से अनुरूपता-वर्गों की अविरोधी रचना में तथा अवशिष्ट रूपों के पूर्ण विश्लेषण में वे तर्कसंगत सिद्ध होते थे। यदि हम कहें कि आदिम भारत-यूरोपीय [d] जर्मन में [t] रहता है तो नव्य-वैयाकरण के अनुसार, लैटिन dies तथा अंग्रेजी day अथवा लैटिन dentālis और अंग्रेजी dental की समता केवल "एक अपवाद" की कोटि में नहीं रखी जा सकती अर्थात् ऐतिहासिक दृष्टि से, यथा प्राक्-जर्मन वक्ताओं की प्रवृत्ति में सामान्य परिवर्तन नहीं ले आ पाने के कारण—बल्कि यह एक समस्या खड़ी कर देती है।

इस समस्या का समाधान या तो पारिभाषिक शब्दावली का तिरस्कार है— यथा आकस्मिक सादृश्य के कारण (लैटिन dies अंग्रेजी day) अथवा एक उससे भी अधिक सटीक ध्वन्यात्म अनुरूपता (ग्रासमैन की खोज) की व्यवस्था अथवा कुछ अन्य उपादानों को अंगीकृत करना है जिसमें एक तरह के रूपों (लैटिन dentālis अंग्रेजी में आगत dental) की उत्पत्ति होती है। नव्य-वैयाकरणों का विशेष आग्रह है कि यह परिकल्पना इस अन्तिम दिशा में सफल है। यह उन एकरूपताओं को अलग करती है जो ध्वन्यात्मक परिवर्तन के अतिरिक्त अन्य उपादानों के कारण हैं तथा तदनुसार हमारे इन उपादानों की समझदारी में सहायक होती है।

यहाँ वास्तविक विवाद का संबंध मिथ्याव्युत्पत्तियों के उन्मूलन, हमारे ध्वन्यात्म ध्वनित के पुनःविचार के विवरण तथा ध्वनि-परिवर्तन के अतिरिक्त अन्य भाषाई परिवर्तनों को अंगीकृत करने से है।

20.7 नव्य वैयाकरणों की उपकल्पना के विरोधी यह दावा करते हैं कि सादृश्य जो ध्वन्यात्म अनुरूपताओं के मान्य प्रतिरूपों के अन्तर्गत नहीं आते, ध्वनिपरिवर्तन की यदाकदा अवस्थिति अथवा (विच्युति) विचलन अथवा अनवस्थिति के कारण हो सकते हैं। अब आधुनिक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की नीव का संबंध ध्वन्यात्म-अनुरूपता-वर्गों के निर्धारण से है। केवल इसी प्रकार से ही रास्क और ग्रिम सादृश्यों की अव्यवस्था में व्यवस्था लाते हैं जिसने सभी पूर्व के विद्यार्थियों को संकट में डाल दिया था। यदाकदा भावी ध्वनि-परिवर्तन के प्रतिपादक तदनुसार नव्य-वैयाकरणों से इस प्रकार की व्युत्पत्तियों के यथा लैटिन dies : अंग्रेजी day के निराकरण से सहमत हैं तथा कुछ ही को बनाए रखने के पक्ष में हैं जहाँ सादृश्य काफी स्पष्ट हैं, यथा लैटिन habēre : प्राचीन उच्च जर्मन habēn अथवा संस्कृत कोकिलः, ग्रीक ['kokkuks], लैटिन cuculus, अंग्रेजी cuckoo। वे स्वीकार करते हैं कि इस प्रकार हमें निर्णय की कोई कसौटी नहीं मिलती किन्तु आग्रह करते हैं कि कोई सीमा रेखा न खींच पाने की हमारी अक्षमता से कुछ भी नहीं सिद्ध होता। अपवादपूर्ण ध्वनि परिवर्तन होते थे, यद्यपि हमारे पास अभिज्ञान का कोई मार्ग नहीं था।

नव्य-वैयाकरण को यहां वैज्ञानिक पद्धति में भारी व्युतिक्रम दिखाई पड़ता है। हमारे विज्ञान का आरम्भ ही उस प्रक्रिया से हुआ जिसमें ध्वन्यात्म परिवर्तन की नियमितता थी तथा आगे के विकास भी, यथा ग्रासमैन की

खोज, उसी प्राक्-धारणा पर आधारित थे। वास्तव में ऐसा हो सकता है कि कुछ अन्य प्राक्धारणाओं से हम तथ्यों के कुछ और अच्छे सह-संबंधों तक पहुँचते, फिर भी यदाकदा भावी ध्वनि-परिवर्तन के प्रतिपादक इस प्रकार का कुछ भी प्रस्तुत नहीं करते। वे वास्तविक पद्धति के निष्कर्षों को स्वीकार करते हैं और फिर भी कुछ तथ्यों की विरोधी पद्धति से (अथवा पद्धतिहीनता से) व्याख्या करने का दावा करते हैं जिसका प्रयोग हो चुका था तथा रास्क और ग्रिम के पहले की सभी शताब्दियों में जिसका अभाव बना रहा।

ऐतिहासिक व्याख्या में, यदाकदा भावी ध्वनि-परिवर्तन के सिद्धान्त के सामने एक बहुत गम्भीर कठिनाई आती है। यदि हम मान लें कि cuckoo की तरह का रूप प्राक्-जर्मन [k] का [h] के स्थान पर आने का प्रतिरोधी था, तथापि आज भी उसमें आदिम भारत-यूरोपीय [k] बना हुआ है, तो हमें यह भी मानना पड़ेगा कि कई पीढ़ियों में जब प्राक्-जर्मन लोग अपने आदिम भारतयूरोपीय के उच्चारण का ढँग अधिकांश शब्दों में बदल चुके थे और पूर्ण आवर्ती ध्वनिक प्रतिरूपों यथा [kh-kx-x-h] पर काम कर रहे थे वे उस समय भी cuckoo शब्द में अपरिवर्तित आदिम भारत-यूरोपीय [k] का उच्चारण करते थे। यदि ऐसा कुछ भी हुआ होता तो प्रत्येक भाषा में सभी प्रकार की विचित्र, विच्युत ध्वनियां उन रूपों से भर गई होतीं जिन्होंने ध्वनि-परिवर्तन का प्रतिरोध किया था अथवा जो सामान्य परिवर्तन से विच्युत हुए थे। किन्तु वास्तव में एक भाषा कुछ सीमित स्वनिमों द्वारा परिचालित होती है। आधुनिक अंग्रेजी cuckoo में का [k] cow, calf, kin के [k] से भिन्न नहीं है जो सामान्यत: आदिम भारत-यूरोपीय [g]-प्रतिरूप से विकसित हुआ है। इसलिए हमें यह भी मानना होगा कि बाद के कुछ परिवर्तनों में cuckoo का आदिम भारत-यूरोपीय [k], पूर्णरूप से जर्मन [k] के समान प्रयोग में आया, जो आदिम भारत-यूरोपीय [g] को प्रतिभासित करता है। इसके अतिरिक्त चूँकि प्रत्येक भाषा एक सीमित ध्वनि-व्यवस्था से परिचालित होती है हमें यह मानना होगा कि यदाकदा भावी ध्वनि-परिवर्तन अथवा ध्वनि-परिवर्तन के प्रतिरोध की हर स्थिति में विसंगत ध्वनियां कुछ सामान्य स्वनिमात्मक प्रतिरूपों में बदल गई हैं जिससे पर्यवेक्षक को ठीक से सुनाई नहीं पड़ता। अन्यथा हमें आधुनिक मानक-अंग्रेजी, जैसी भाषा में उन रूपों का बिखराव मिलता है जिनमें 18वीं शती की अंग्रेजी प्राग्-आधुनिक काल की अंग्रेजी, मध्यकालीन अंग्रेजी, प्राचीन अंग्रेजी,

आदिम जर्मन इत्यादि की ध्वनियां बनी हुई हैं। उन विच्युत ध्वनियों का तो कहना ही क्या जो एक निश्चित दिशा में यदाकदा भावी परिवर्तन के कारण हुई थीं।

वास्तव में वे रूप जो सामान्य ध्वन्यात्म सहसम्बन्धों को नहीं प्रकट करते अपनी भाषा की स्वनिम-व्यवस्था के अनुकूल पड़ते हैं तथा उनका वैचित्र्य अन्य रूपों के सहसंबंध के कारणमात्र है। उदाहरण के लिए आधुनिक मानक अंग्रेजी में प्राचीन अंग्रेजी [o:] के अनुरूप में कुछ निर्धारित अनियमितताएं व्यंजित होती हैं, किन्तु इनका संबंध साधारणतः असम्भावित ध्वनियों की उपस्थिति से है, तथा कभी भी ध्वनि-व्यवस्था से विच्युति की स्थिति में नहीं होता है। प्रसामान्य निरूपण इस प्रकार का लगता है :—

[ɔ] [s,z] तथा [t] के अतिरिक्त अन्य ध्वनियों के पूर्व : goshawk, gosling, blossom;

[ɔ:] प्राचीन अंग्रेजी व्यंजनों तथा [t] के पूर्व : soft, sought (प्राचीन अंग्रेजी sōhte), brought, thought;

[u,], [k] के पूर्व book, brook (संज्ञा) cook, crook, hook, look, rook, shook, took;

[ʌ] [n] तथा [t] के अतिरिक्त अन्य व्यंजनों तथा [r̥] से संयुक्त व्यंजन के पूर्व : Monday, month, brother, mother, other, rudder;

[ow] [nt] [r] तथा प्राचीन अंग्रेजी संयोग [o:w] के पूर्व : don't, floor, ore, swore, toward, whore, blow, ('bloom'), flow, glow, grow, low (क्रिया) row, stow,

[uw] अन्यथा do, drew, shoe, slew, too, to, woo, brood, food, mood, hoof, roof, woof, cool, pool, school, stool, tool, bloom, broom, doom, gloom, loom, boon, moon, noon, soon, spoon, swoon, whoop, goose, loose, boot, moot, root, soot, booth, sooth, tooth, smooth, soothe, behoove, prove, ooze.

यदि हम प्राचीन अंग्रेजी [o:] के सह-संबंधों को इन ध्वनियों के साथ लें कि ये हर एक की ध्वन्यात्म स्थिति में सामान्य हैं तो हमें विरोधी रूपों के निम्न अवशेष मिलेंगे :

[ɔ] shod, fodder, foster.

[aw] bough, slough.

[e] Wednesday;

[ʌ] blood, flood, enough, tough, gum, done, must, doth, glove;

[ow] woke;

[u] good, hood, stood, bosom, foot, तथा वैकल्पिक रूप से hoof, roof, broom, soot;

[uw] moor, roost.

इन सात विच्युत प्रतिरूपों में से सभी में कुछ सामान्य अंग्रेजी स्वनिम हैं : उदाहरण के लिए blood आदि में [ʌ] - साधारण [ʌ] स्वनिम है जो love, tongue, son, sun, come आदि शब्दों के प्राचीन अंग्रेजी [u] का बोध करता है। हर दशा में विच्युत रूप केवल असंगत ध्वनियों को ही नहीं व्यंजित करते बल्कि वितरण में केवल सामान्य स्वनिम ही ऐसा करते हैं जो इतिहास वेत्ताओं के अपवादों के समानान्तर चलते हैं।

20.8 जहाँ तक अवशिष्ट रूपों के अवधानपूर्वक सर्वेक्षण द्वारा संशोधन का प्रश्न है, नव्य-वैयाकरण को शीघ्र ही उनकी परिकल्पना की अपूर्व पुष्टि [f, θ, h] के स्थान पर विच्युत [b, d, g] मिलने वाले जर्मन रूपों की वर्नर व्याख्या द्वारा मिल गई (§18.7)। वर्नर ने लैटिन pater गॉथी ['fadar] प्राचीन अंग्रेजी ['fɛder] की तरह के उदाहरणों का चयन किया था जहाँ आदिम भारत-यूरोपीय [t] जर्मन में [θ] की जगह [d, ð] में दिखाई पड़ता है। स्वरों के बीच महाप्राण ध्वनियों का घोषीकरण ध्वनि-परिवर्तन का एक अति सामान्य रूप है तथा अनेक जर्मन भाषाओं के इतिहास में कई बार घटित हुआ है। आदिम जर्मन [θ] प्राचीन नार्स में आदिम जर्मन प्रतिवर्त (reflex) [d] के अनुकूल जहाँ उदाहरणार्थ ['faðer] की तरह ही ['bro:ðer] का व्यंजन बोला जाता है घोष महाप्राण में प्रकट होता है। प्राचीन अंग्रेजी में आदिम जर्मन [θ] निसंदेह स्वरों के बीच घोष हो गया था यथा ['bro:ðor] में, यद्यपि यह आदिम जर्मन प्रतिवर्त [d] से मेल नहीं खाता, जैसाकि ['fɛder] में है। प्राचीन नार्स तथा प्राचीन अंग्रेजी दोनों में ही आदिम-जर्मन [f] स्वरों के बीच [v] हो गया था, यथा प्राचीन अंग्रेजी में ofen ['oven] "चूल्हा" (प्राचीन उच्च जर्मन ofan ['ofan]) के [v] से मेल खाता है जो आदिम जर्मन [b] का बोध कराता था, यथा प्राचीन अंग्रेजी yfel ['yvel] "बुराई" (प्राचीन

उच्च जर्मन ubil ['ybil]) । यदि कोई अनियमित ध्वनि-परिवर्तनों की सम्भावना स्वीकार करता है तो इससे बढ़कर कोई स्वाभाविक बात न होगी कि वह यह मानले कि प्राक्-जर्मनीय समय में ही कुछ शब्दों में छुटपुट रूप से स्वर-मध्यवर्ती संघर्षियों का घोषत्व प्रारंभ हो गया था और *['bro:θer] के साथ-साथ आरम्भीय जर्मन *['fader] केवल उस प्रक्रिया का प्रारंभ प्रदर्शित करता था जो कि हमारे वास्तविक आलेख में उपलब्ध प्राचीन नार्स, प्राचीन अंग्रेजी और प्राचीन सैक्सन में जाकर पूर्णता को प्राप्त करे। फिर भी 1876 में विच्युत रूपों का जो अध्ययन वर्नर ने प्रस्तुत किया उससे निर्भ्रान्त सह-संबन्ध स्पष्ट हो गया। अधिकांश स्थितियों में तथा निश्चायक व्यवस्थाबद्ध स्थानों में जर्मनीय विच्युत [b, d, g] आता था जहाँ संस्कृत और ग्रीक में (और इसलिए सम्भवतः आदिम भारत-यूरोपीय में) एक [p, t, k] के पूर्व या तो बलाघातहीन स्वर अथवा संध्यक्षर आता था, यथा संस्कृत "पिता", ग्रीक [pa'te:r] : आदिम जर्मन *['fader] संस्कृत के "भ्राता", ग्रीक के ['phra:te:r] से भिन्न रूपों में, आदिम जर्मनीय *['bro:θer] । इसी प्रकार संस्कृत "श्वशुरः", संभवतः आदिम भारत-यूरोपीय *['swekuros] से सम्बद्ध, जर्मनी में [h] का [k] के लिए प्रतिवर्त व्यंजित करता है यथा प्राचीन उच्च जर्मन में ['swehar] किन्तु संस्कृत में "श्वश्रूः", आदिम भारत-यूरोपीय *[swe'kru:s] से सम्बद्ध जर्मनीय में [g] के साथ दिखाई पड़ता है यथा प्राचीन उच्च जर्मन में ['swigar] बलाघात युक्त स्वर के बाद आदिम भारत-यूरोपीय [k] को अभिज्ञापित करता है।

इस परिणाम की पुष्टि के लिए यह तथ्य था कि आदिम भारत-यूरोपीय के अघोष संघर्षी [s] में उसी स्थिति में वही परिवर्तन घटित हुआ। आदिम भारत-यूरोपीय में केवल उस स्थिति को छोड़कर जबकि पूर्वगामी आक्षरिक बलाघातहीन था जर्मनीय में यह [s] रूप में दिखाई पड़ता है। इस स्थिति में यह प्राक्-जर्मनीय में घोष था तथा प्राक् जर्मनीय [z] रूप में व्यक्त होता है जो बाद में नार्स तथा पश्चिमी जर्मनीय में [r] हो गया। अनियमित क्रिया तालिका की अनेक स्थितियों में जर्मनीय भाषा में वर्तमान काल, एकवचन, संकेत सूचक रूपों के मध्य में [f, θ, h, s] आता है किन्तु अतीत काल तथा अतीत कालिक कृदन्त बहुवचन तथा संदेह सूचक रूपों में [b, d, g, z] आता है, यथा प्राचीन अंग्रेजी में :—

['weorθan] होना, [he: 'wearθ] "वह हुआ" किन्तु [we:'wurdon] 'हम हुए हैं'।

['ke:osan] छाँटना, [he:'ke:as] "उसने छाँटा" किन्तु [we:'kuron] हमने छाँटा है।

['wesan] होना,[he:'wes] वह था, किन्तु [we: 'wε:ron] "हम थे"।

यह परिवर्तन, वर्नर ने दिखाया कि शब्द में बलाघात के स्थान में उसी प्रकार के संस्कृत रूप तालिकाओं के परिवर्तन के अनुकूल होता है यथा क्रिया रूप उपरोक्त रूपों से अन्वित है:—

(वर्तते) वह पलटता है, होता है, (ववर्त) 'वह पलटा' (व-वर्त्तिम) 'हम पलटे।' *['ɟotʃati] 'वह आनन्द प्राप्त करता है', [ɟu-'ɟo:ʃa] 'उसने आनन्द प्राप्त किया', किन्तु [ɟu-ɟuʃi'ma] 'हमने आनन्द प्राप्त किया।' ['vasati] 'वह रहता है', [u'-va:sa] 'वह रहा' किन्तु [u:ʃi' ma] 'हम रहे।'

किन्तु नियमित ध्वनि परिवर्तन की परिकल्पना का यह इतना स्पष्ट पुष्टीकरण था कि अब विरोधी परिकल्पना के लिए प्रमाणों की आवश्यकता पड़ने लगी। यदि अवशिष्ट रूपों द्वारा इस प्रकार का सह-संबंध व्यक्त हो सकता है तो हमें मान्य अनुरूपताओं और अवशिष्टों में रूपों को पृथक् करने के और नई अनुरूपताओं के लिए अवशिष्ट रूपों को खोजने के सिद्धान्तों को छोड़ने के पूर्व काफी सोचना होगा। एक पर्यवेक्षक जो यदाकदा भावी ध्वनि परिवर्तन के सिद्धान्त से सहमत है ऐसे सह-संबंधों को खोज सकता था, यह हम निर्भ्रान्त रूप से नहीं कह सकते।

संक्षेप में, अन्वीक्षण की आकस्मिक स्थितियों से कभी-कभी हमारी पद्धति का वैसा ही पुष्टिकरण प्राप्त होता है। मध्य अलगोंकी भाषाओं में जिनके सम्बन्ध में प्राचीन आलेख हमारे पास उपलब्ध नहीं हैं--हमें निम्न सामान्य अनुरूपताएं दिखाई पड़ती हैं जिन्हें हम आदिम मध्य अलगोंकी [Primitive Central Algonquian] के पुनर्रचित रूपों द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं:—

	फाक्स	ओजीब्वे	मिनोमनी	प्लेन-क्री	आदिम मध्य अलगोन्की
(1)	hk	ʃk	tʃk	sk	tʃk
(2)	ʃk	ʃk	sk	sk	ʃk
(3)	hk	hk	hk	sk	xk
(4)	hk	hk	hk	hk	hk
(5)	k	ng	hk	hk	hk

उदाहरण :

(1) फाक्स [kehkjɛ:wa] "वह बूढ़ा है", मिनोमनी [kɛtʃki:w], आदिम मध्य अल्गोंकी *[ketʃkjɛ:wa]।

(2) फाक्स [aʃkutɛ:wi] "अग्नि", ओजीब्वा [iʃkudɛ:], मिनोमनी [esko:tɛ:w], क्री [iskute:w], आदिम मध्य अल्गोंकी *[iʃkutɛ:wi]।

(3) फाक्स [mahkesɛ:hi], "मोकासिन", ओजीब्वा [mahkizin], मिनोमनी [mahkɛ:sen], क्री [maskisin], आदिम मध्य अल्गोंकी *[maxkesini].

(4) फाक्स [no:hkumesa] "मेरी दादी", ओजीब्वा [no:hkumis], मिनोमनी [no:hkumɛh], क्री [no:hkum], आदिम मध्य अल्गोंकी *[no:hkuma]।

(5) फाक्स [takeʃkawɛ:wa] "वह उसे मारता है", ओजीब्वा [tangiʃkawa:d], मिनोमनी [tahkɛ:skawɛ:w], क्री [tahkiskawe:w], आदिम मध्य अल्गोंकी *[tankeʃkawɛ:wa]।

अब एक अवशिष्ट पदिम बच जाता है जिसमें इन अनुरूपताओं में से कोई भी अनुरूपता उपयुक्त नहीं जंचती अर्थात् वह तत्व जिसका अर्थ होता है "लाल"।

(6) फाक्स [meʃkusiwa] "वह लाल है", ओजीब्वा [miʃkuzi], मिनोमनी [mɛhko:n], क्री [mihkusiwa], आदिम मध्य अल्गोंकी *[meçkusiwa]।

यदाकदा भावी ध्वनि परिवर्तन की धारणा के अन्तर्गत इसका कोई महत्व नहीं होगा। छठी अनुरूपता के लागू किए जा चुकने के बाद यह पाया गया कि क्री की दूरवर्ती बोली में जो मैदानी क्री व्यवस्था से 1 से 5 तक समूहों में मिलती है red पदिम के लिए विचित्र गुच्छ [htk] मिलता है यथा [mihtkusiw] "वह लाल है" में। तो इस स्थिति में अवशिष्ट रूपों द्वारा आधारवर्ती भाषा में विशिष्ट ध्वन्यात्म इकाई (phonetic unit) दिखाई पड़ती थी।

नियमित ध्वनिपरिवर्तन की धारणा (अर्थात् शुद्ध रूप से स्वनिमात्मक) उन सह-संबंधों से जिसे वह खोलता है तर्कसंगत सिद्ध होती है। इससे निकलने वाले परिणामों को स्वीकार करना तथा उस स्थिति में अस्वीकार कर देना

जब कठिन स्थलों की व्याख्या के लिए विरोधी धारणाओं की आवश्यकता होती है, असंगत होगा।

20.9 अवशिष्ट रूपों का भाषाई इतिहास के ध्वनिपरिवर्तन के अतिरिक्त उपादानों से जो संबंध है, वह ध्वनिपरिवर्तन की नियमितता-संबन्धी विवाद का एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। नव्य वैयाकरण वास्तवमें यह दावा नहीं कर सकते कि भाषाई समरूपताएँ कभी नियमित श्रेणियों में चलती थीं। वास्तविक आधार-सामग्री जिसपर हम काम करते हैं बहुत ही अनियमित है—इतनी अनियमित है कि रास्क और ग्रिम के पूर्व शताब्दियों के अध्ययन से भी कोई लाभदायक सह-संबन्ध नहीं निकला। फिर भी नव्य वैयाकरण यह दावा अवश्य करते हैं कि ध्वनि-परिवर्तन के अतिरिक्त भाषाई परिवर्तन के उपादान ध्वनिपरिवर्तन के फलस्वरूप हुए सह-संबन्धों के त्याग देने के बाद अवशिष्ट रूपों में दिखाई पड़ेंगे। इस प्रकार बलाघात अक्षरों में प्राचीन अंग्रेजी [a:], आधुनिक अंग्रेजी में सामान्यतः [ow] रूप में दिखाई पड़ता है यथा boat में (प्राचीन अंग्रेजी [ba:t] से), sore, whole, oath, snow, stone, bone, home, dough, goat, तथा बहुत से अन्य रूपों में। अवशिष्ट रूपों में हमें प्राचीन अंग्रेजी [swa:n] :bait, जैसे रूप मिलते हैं, प्राचीन अंग्रेजी [ha:l] : hale, प्राचीन अंग्रेजी, [swa:n] "चरवाहे", swain। यह जान लेने पर कि प्राचीन अंग्रेजी [a:] आधुनिक मानक अंग्रेजी में [ow] रूप में दिखाई पड़ता है हम अवशिष्ट को असंगत आधुनिक अंग्रेजी [ej] रूप देते हैं। इस अवशिष्ट के रूप विच्युति के प्राचीन अंग्रेजी [a:] के आधुनिक अंग्रेजी [ej] में यदाकदा भावी ध्वनि-परिवर्तन के परिणाम नहीं हैं। उनकी विच्युति ध्वनि-परिवर्तन के कारण नहीं बल्कि भाषाई परिवर्तन के एक अन्य उपादान के कारण है। bait, hale, swain की तरह के रूप प्राचीन अंग्रेजी के [a:] के साथ आधुनिक प्रचलित रूप नहीं हैं बल्कि स्कैंडनेवी से आदत्त हैं। उन रूपों में जहाँ प्राचीन अंग्रेजी में [a:] था, प्राचीन स्कैन्डनेवी में [ej] था। प्राचीन स्कैन्डनेवी (प्राचीन नार्स) में कहा जाता है [stejnn, bejta, hejll, swejnn], जहाँ प्राचीन अंग्रेजी में [sta:n, ba:t, ha:l, swa:n] कहा जाता है। अनुरूपता की नियमितता वास्तव में आदिम-जर्मन से एक सामान्य प्रथा के कारण है। इग्लैण्ड पर नार्स आक्रमण के बाद, अंग्रेजी भाषा में ये स्कैन्डनेवी शब्द ले लिये गए और यह प्राचीन नार्स संध्यक्षर [ej] आधुनिक अंग्रेजी [ej] के साथ विच्युत रूपों में दिखाई पड़ता है।

इस तरह की अथवा लैटिन dentālis : अंग्रेजी dental की तरह की स्थितियों में नव्य-वैयाकरणिक परिकल्पना के विरोधी कोई विरोध नहीं करते तथा सहमत हैं कि "भाषाई आदान (linguistic borrowing) सादृश्य का कारण है। फिर भी अन्य अनेक स्थितियों में वे कहना अधिक उपयुक्त समझते हैं कि अनियमित ध्वनि-परिवर्तन घटित हो रहा था तथा यह विचित्र बात है कि वे ऐसा उन स्थितियों में कहते हैं जहाँ केवल नव्य-वैयाकरणिक परिकल्पना से महत्वपूर्ण परिणाम निकलता है।

बोली-भूगोल के अध्येताओं को विशेषरूप से यह भ्रम हो जाता है। किसी एक बोली में हमें प्रायः एक प्राचीन स्वनिम इकाई मिल जाती है जिसका बोध अनेक स्वनिमों से कराया जाता है--यथा प्राचीन अंग्रेजी [o:] की स्थिति में, आधुनिक अंग्रेजी में food, good, blood इत्यादि (§20.7) प्रायः इनमें से एक प्राचीन स्वनिम की तरह का है तथा अन्य एक या एकाधिक ध्वन्यात्म परिवर्तन के निर्माण में दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार केन्द्रीय पश्चिमी अमेरिकी अंग्रेजी में gather में [ɛ], rather में [ɛ] अथवा [a] तथा father में सदा [a] बोला जाता है। कुछ वक्ता tune, dew, stew, new में [juw] बोलते हैं। कुछ वक्ता प्रथम तीन शब्दों में [uw] बोलते हैं किन्तु साधारणतः [juw] के बाद [n-] बनाए रखते हैं। अन्य वक्ता सभी स्थितियों में [uw] बोलते हैं। अथवा फिर यदि हम समीपी बोलियों का एक क्षेत्र में परीक्षण करें, हमें समतुलन दिखाई पड़ेगा। कुछ बोलियों में प्रत्यक्षरूप से एक ध्वनिपरिवर्तन का निर्वाह हुआ है जबकि डच में हमारे मानचित्र 6 के कुछ जिलों में प्राचीन [u:] के लिए [y:] mouse तथा house में है। इसके दूसरे नम्बर पर हमें ऐसी बोलियाँ मिल सकती हैं जिनमें प्रत्यक्ष रूप से कुछ रूपों में ध्वनि-परिवर्तन का निर्वाह हुआ है। किन्तु कुछ रूपों में नहीं हुआ है, जैसे कि मानचित्र 6 के कुछ जिलों में परिवर्तित स्वर के साथ [hy:s] कहा जाता है किन्तु बिना किसी परिवर्तन के [mu:s] कहा जाता है। अन्त में, हमें एक ऐसा जिला मिलता है जहाँ परिवर्तित रूपों का अभाव है, यथा मानचित्र 6 में जहाँ प्राचीन रूप [mu:s, hu:s] आज भी बोले जाते हैं। यदाकदा भावी परिवर्तन परिकल्पना के अन्तर्गत कोई-कोई निश्चित परिणाम नहीं निकाला जा सकता किन्तु नियमित-ध्वनि परिवर्तन की धारणा के अन्तर्गत इस प्रकार के विभाजन तत्काल विश्लेषित हो सकते हैं। एक अनियमित विभाजन से प्रकट होता है कि नए रूप कुछ भागों में अथवा सारे क्षेत्र में ध्वनि-

परिवर्तन के कारण नहीं बल्कि आदान के कारण हैं। ध्वनि-परिवर्तन किसी एक केन्द्र में हुआ और इसके बाद वे रूप जिनमें परिवर्तन हो गया था इस केन्द्र से भाषाई आदान द्वारा फैल गए। अन्य स्थितियों में, एक जाति में ध्वनि-परिवर्तन ग्रहण किया हुआ हो सकता है, किन्तु परिवर्तित रूपों पर अपरिवर्तित रूपी अंशतः हावी हो सकते हैं जो एक ऐसे केन्द्र से प्रसारित हुआ जहाँ परिवर्तन नहीं हुआ था। बोली भूगोल के अध्येता यह अनुमिति निकालते हैं तथा इसीपर अपनी भाषाई पुनःरचना तथा सांस्कृतिक गतिविधि को आधारित करते हैं। किन्तु साथ ही अधिकांश विद्यार्थी नियमित ध्वनि-परिवर्तन की धारणा को अस्वीकार करने का दावा करते हैं। यदि वे इसके निहितार्थों का परीक्षण बन्द कर दें, तो उन्हें शीघ्र ही दिखाई पड़ेगा कि उनका कार्य इस मान्यता पर आधारित है कि ध्वनि-परिवर्तन नियमित होता है क्योंकि यदि हम अनियमित ध्वनि-परिवर्तन की सम्भावना को स्वीकार करें तो डच बोली में [hy:s] के साथ [mu:s] का प्रयोग अथवा ['ra:ðə] rather के साथ ['gɛðə] gather का प्रयोग मानक अंग्रेजी में, भाषाई आदान के संबंध में किसी निष्कर्ष की संपुष्टि नहीं करता है।

20.10 ध्वनि-परिवर्तन-विवाद का एक दूसरा पहलू अवशिष्ट रूपों से जुड़ा है जिनका विचलन अर्थ के लक्षणों से सम्बद्ध है। अधिकतर वे रूप जो सामान्य ध्वन्यात्म सह-संबंध से विचलित होते हैं किसी सुस्पष्ट आर्थी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

प्राचीन-ग्रीक में स्वरों के मध्य आदिम भारतयूरोपीय (s) ध्वनिपरिवर्तन के कारण लुप्त हो गया था। इस प्रकार आदिम भारतयूरोपीय *['gewso:] "मैं चखता हूँ" (गाँथी ['Kiwsa] "मैं पसन्द करता हूँ") ग्रीक में ['gewo:] "मैं एक स्वाद देता हूँ", रूप में आता है। आदिम भारतयूरोपीय *['genesos] "जाति का" (संस्कृत जनसः) ग्रीक में ['geneos], परवर्ती [genows-] रूप में दिखाई पड़ता है। आदिम भारत-यूरोपीय *[e:sm] "मैं था" (संस्कृत 'आसम्'), ग्रीक में [˝e:a], परवर्ती [˝e:] रूप में दिखाई पड़ता है।

इस प्रकार की स्थितियों के अतिरिक्त रूपों के यथेष्ट अवशेष रह जाते हैं जिनमें प्राचीन स्वर मध्यग [s] प्राचीन ग्रीक में सुरक्षित लगता है। इस अवशिष्ट के प्रमुख प्रतिरूप भूतकाल (अर्थात् निश्चित भूतकाल) क्रियारूपों से जुड़े हैं, जिनमें इसकाल का परप्रत्यय [-s-] धातु अथवा क्रिया प्रातिपदिक के अन्तिम

स्वर के बाद आता है। इस प्रकार ग्रीक धातु [plew-] "खेना" (वर्तमान-काल ['plewo:] "मैं खेता हूँ" संस्कृत के "प्लवते", "वह खेता है" से समानान्तरित) का भूतकाल रूप ['eplewsa] "मैंने खेया है", ग्रीक भूतकाल रूप ['etejsa] "मैंने जुर्माना दिया" संस्कृत 'अचैषम्' "मैंने जमा किया" के समानान्तर है। ग्रीक धातु [ste:-] "खड़ा होना" (वर्तमान-काल ['histe:mi] "मैं खड़ा करता हूँ") का भूतकालिक रूप है ['este:sa] "मैंने खड़ा कराया" प्राचीन बल्गेरियाई [staxu] "मैं खड़ा हुआ", का समानान्तर आदिम भारतयूरोपीय प्रतिरूप *['esta:sm] है। आदिम भारत-यूरोपीय भूतकालिक प्रतिरूप *['ebhu:sm] (प्राचीन बल्गेरियाई [byxu] "मैं हुआ") प्रत्यक्षरूप से ग्रीक ['ephu:sa] "मैंने उगाया" के द्वारा सूचित किया जाता है। नव्य-वैयाकरण पद्धति के विरोधी मानते हैं कि जब स्वर मध्यग [s] दुर्बल पड़ गया तथा अन्ततः पूर्वग्रीक-काल में लुप्त हो गया, तो इन रूपों के [s] में परिवर्तन नहीं हो सका क्योंकि इससे महत्वपूर्ण अर्थ की अर्थात् भूतकाल की अभिव्यक्ति होती थी। उनका दावा है कि ध्वनि-परिवर्तन-रूपों का ध्वनिपरिवर्तन रोका जा सकता है जहाँ इससे अर्थ की दृष्टि से किसी महत्वपूर्ण अभिलक्षण के समाप्त होने की आशंका हो।

नव्य-वैयाकरण परिकल्पना के अनुसार ध्वनि-परिवर्तन आर्थी लक्षणों से अप्रभावित रहता है तथा इसका संबंध केवल भाषण-ध्वनि उच्चारण प्रवृत्ति से रहता है। यदि अवशिष्ट रूप कुछ आर्थी लक्षणों से विशेषित हों तो उनका विघटन अवश्य ही ध्वनि-परिवर्तन के कारण नहीं होगा वरन् अर्थ-सम्बन्धी भाषाई परिवर्तन के अन्य उपादानों के कारण होगा। हमारे उदाहरण में वह ध्वनि-परिवर्तन जिसके कारण स्वर मध्यग [s] का लोप हुआ, प्रत्येक स्वरमध्यग [s] को लोप कर गया। ग्रीक ['este:sa] की तरह के रूप ध्वनिपरिवर्तन के पूर्वस्थित रूपों के पररूप नहीं हो सकते। वे ध्वनि-परिवर्तन समाप्त हो जाने के बाद रूपिमों के मिश्रित रूप में नए संयोजनों की इस प्रक्रियास्वरूप जिसे हम सादृश्यजन्य नव-संयोजन अथवा सादृश्य परिवर्तन कहते हैं, अस्तित्व में आए। अनेक रूपों में जहाँ भूतकालिक पर-प्रत्यय स्वर मध्यग स्थिति में नहीं था, ध्वनि-परिवर्तन द्वारा यह अक्षत रूप में उपस्थित हुआ था। इस प्रकार आदिम भारतयूरोपीय रूप भूत *['ele:jkwsm̥] "मैंने छोड़ा" (संस्कृत अरैक्षम्) ग्रीक में सामान्य ध्वनि विकास द्वारा ['elejpsa] रूप में आता है। आदिम भारतयूरोपीय

*[efe:wksm] "मैं मिला" (संस्कृत अयोक्षम्) ग्रीक में ['ezewksa] रूप में प्रकट होता है। आदिम भारतयूरोपीय धातु *[gews-] "स्वाद" (ग्रीक वर्तमान ['gewo:] उपरोक्त) भूतकालिक परप्रत्यय से जुड़कर प्रातिपदिक [ge:ws-s-] रूप में आता है। द्वित्व [ss] पूर्वग्रीक में लुप्त नहीं हुआ था बल्कि केवल बाद में [s] में साधारणीकृत हो गया, ग्रीक भूतकालिक ['egewsa] "मैंने एक स्वाद दिया" सामान्य ध्वन्यात्म प्रतिरूप है। तदनुसार ग्रीक भाषा में भूतकालिक परप्रत्यय [-s-] था। हर काल में यह परप्रत्यय निर्भ्रान्तरूप से क्रिया प्रातिपदिक की हर पद्धति से जोड़ा जा सके तथा [-s-] के साथ स्वरमध्यग अंग्रेजी भूतकालिक रूप स्वर परिवर्तन के बाद बने हुए सयोजनमात्र हैं जिन्होंने [-s-] के निष्क्रिय हो जाने पर प्रभाव डाला। परम्परागत वर्तमानकाल ['gewo] के आदर्श पर, भूतकालिक रूप ['egewsa] के साथ वर्तमानकाल के लिए ['plewo:] रूप बनता है, एक नया भूतकालिक रूप ['eplewsa] (कुछ मिलाकर अवशिष्ट रूप ध्वनि-परिवर्तन प्रक्रिया की विच्युति (deflections) के कारण नहीं है वरन इससे भाषाई-परिवर्तन का एक भिन्न उपादान सामने आता है, यथा सादृश्यजन्य परिवर्तन।

बहुत कुछ उसी तरह, कुछ अध्येताओं का विश्वास है कि उन ध्वनियों में जिनका अर्थ महत्वपूर्ण नहीं है, अनियमित ध्वनि-परिवर्तन के कारण लोप तथा अतिदुर्बलता की सम्भावना है। इस प्रकार वे व्याख्या करते हैं:—उदाहरण के लिए I'll go की तरह के रूपों में will के [l] का दुर्बलीकरण है। नव्य-वैयाकरण इस दुर्बलीकरण को इस तथ्य से जोड़ते हैं कि इस तरह की पदसंहितियों के क्रियारूप बलाघातहीन होते हैं। अंग्रेजी में बलाघातहीन स्वनिमों का दुर्बलीकरण तथा लोप होता रहा है।

20.11 नव्य-वैयाकरण ध्वनिपरिवर्तन की परिभाषा एक शुद्ध ध्वन्यात्म प्रक्रिया रूप में करते हैं। यह एक स्वनिम अथवा स्वनिम प्रतिरूप को सार्वभौमिक रूप में अथवा कुछ निश्चित ध्वन्यात्म स्थितियों में प्रभावित करता है तथा स्वनिम रखने वाले रूपों के आर्थी अभिलक्षण से इसकी पुष्टि अथवा अपुष्टि नहीं होती। तो ध्वनि-परिवर्तन का प्रभाव, जिस रूप में यह तुलनावादी के समक्ष उपस्थित होता है, नियमित स्वनिमात्मक अनुरूपताओं की तालिका होगी यथा प्राचीन अंग्रेजी [sta:n, ba:n, ba:t, ga:t, ra:d, ha:l] आधुनिक अंग्रेजी [stown, bown, bowt, gowt, rowd, howl] stone,

bone, boat, goat, road (rode), whole. फिर भी इन अनुरूपताओं का सदा तालिकाओं अथवा विचलित रूपों के विखराव द्वारा विरोध होगा, यथा प्राचीन अंग्रेजी [ba:t, swa:n ha:l] बनाम आधुनिक अंग्रेजी [bejt, swejn, hejl] bait, swain, hale क्योंकि भाषाई परिवर्तन के अनेक उपादानों में से ध्वन्यात्मक परिवर्तन केवल एक उपादान है। हमें यह अवश्य मान लेना होगा कि हमारा पर्यवेक्षण चाहे जितना भी सूक्ष्म और सही हो, हमें सदा ही विचलित रूप मिल जाएगें क्योंकि ध्वनि-परिवर्तन के आरम्भ से और इसके पूर्वकाल में तथा इसके बाद भी भाषा के रूप परिवर्तनजन्य उपादानों के अनवरत कार्यरत होने से प्रभावित रहते हैं, यथा विशेष रूप से आदान तथा नए मिश्रित रूपों के सादृश्यजन्य संयोजन। ध्वनि-परिवर्तन की अवस्थिति जैसा कि नव्य-वैयाकरणों द्वारा इसकी परिभाषा की जाती है, प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण का तथ्य नहीं बल्कि एक परिकल्पना है। नव्य-वैयाकरणों का विश्वास है कि यह परिकल्पना इसलिए सही है कि मात्र इसी के कारण भाषा-वैज्ञानिक तथ्यात्मक विषयवस्तु पा लेने में सफल हुए हैं तथा केवल इसी के द्वारा भाषाई परिवर्तन के अन्य उपादानों का युक्तिसंगत नियमन हो सका है।

सैद्धान्तिक रूप से यदि हम मान लें कि भाषा प्रवृत्ति के दो स्तरों से बनी है तो स्वनिमों के नियमित परिवर्तन को समझ सकते हैं। एक स्तर स्वनिमात्मक है : वक्ताओं के बोलने की कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियाँ, जिह्वा संचालन आदि होती हैं। ये प्रवृत्तियाँ एक भाषा की ध्वन्यात्म व्यवस्था बनाती हैं। दूसरे स्तर का संबंध रूपीय आर्थी प्रवृत्ति से होता है। वक्ता स्वभावतः कुछ विशेष प्रकार से उत्तेजनाओं के प्रत्युत्तर में स्वनिमों के कुछ विशिष्ट संयोजनों को बोलता है तथा जब वे उन्हीं संयोजनों को सुनते हैं तो उनका ठीक-ठीक प्रत्युत्तर देते हैं। इन प्रवृत्तियों से किसी भाषा का व्याकरण तथा कोष बनता है।

कोई किसी भाषा के बिना महत्वपूर्ण रूपों का प्रयोग किए एक भाषा की ध्वन्यात्मक प्रवृत्ति को विचारपूर्वक ग्रहण कर सकता है। ऐसा एक गवैये के साथ भी हो सकता है जिसे सही-सही उच्चारण के साथ फ्रेंच-गीत गाने को शिक्षा मिली है अथवा एक स्वांगिया (mimic) जो फ्रेंच नहीं जानने पर भी फ्रेंच की अंग्रेजी का अनुकरण कर सकता है। दूसरी ओर, यदि एक विदेशी भाषा के स्वनिम पूरी तरह अंग्रेजी के स्वनिमों से मेल नहीं खाते तो

भी अंग्रेजी वक्ता उस भाषा के महत्वपूर्ण रूपों का उच्चारण, बिना उसकी ध्वन्यात्म प्रवृत्ति को अपनाए, कर सकते हैं। यही स्थिति फ्रेंच और अंग्रेजी वक्ताओं की है जो एक दूसरे की भाषा में स्वच्छन्दतापूर्वक बात कर सकते हैं किन्तु हम उसे भ्रष्ट उच्चारण कहते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से हम ध्वन्यात्म परिवर्तन का चित्रण कुछ क्रमिक अप्रभेदक (gradual favouring) रूपान्तरों के अनुकूल तथा कुछ दूसरों के अनुकूल करते हैं। इसका पर्यवेक्षण केवल वक्ताओं की अनेक पीढ़ियों से होते हुए पहुँचकर यान्त्रिक आलेखों द्वारा किया जा सकता था। इस परिकल्पना के अन्तर्गत यह मान लिया जाता है कि इस प्रकार का चयन—बशर्ते कि हम आदान तथा सादृश्यजन्य परिवर्तन के प्रभाव बहिष्कृत कर सकें—एक रूपान्तर की किसी एक दिशा में अनवरत अनुकूलता दिखाई पड़ेगी, साथ ही दूसरी सीमा पर रूपान्तर का अप्रचलन (obsolescence)। इस प्रकार पुरानी अंग्रेजी तथा मध्यकाल की अंग्रेजी में gos' goose' तथा ges' geese' तरह के रूपों में दीर्घमध्य स्वर बोला जाता है। हम मान लेते हैं कि बहुत समय तक उच्चतर रूपान्तर को समर्थन प्राप्त था तथा निम्नतर रूपान्तर प्रयोग से निकल गए थे जब तक कि 18वीं शती में पुनः प्रयोग में आनेवाले रूपान्तरों का वर्णन उच्च स्वर-प्रतिरूप [u:, i:] में किया जा सकता था, तभी से अधिक सन्ध्यक्षरीय परिवर्ती को समर्थन प्राप्त हुआ है तथा साधारण स्वर प्रतिरूप प्रयोग से निकल गए हैं।

एक भाषा के अप्रभेदक ध्वानिकी लक्षण सदा बड़ी मात्रा में परिवर्तनशील होते हैं। यहाँ तक कि एक समय के एकभाषा के अति यथार्थ ध्वन्यात्म आलेख भी नहीं बता सकते कि किस स्वनिम में परिवर्तन हो रहा है। फिर भी यह निश्चित है कि ये अप्रभेदक उप-स्वनिमी रूपान्तर भाषाई आदान (अनुकरण) तथा सादृश्यजन्य परिवर्तन (व्यवस्थापन) के आश्रित हैं। यह इस तथ्य से प्रकट होता है कि जब कभी भाषा-वैज्ञानिक परिवर्तन पर बात करता है—और निश्चित रूप से कुछ स्थितियों में उसके विवरण अथवा उसके पर्यवेक्षण का संबंध परिवर्तन उपस्थित हो जाने के बहुत कम समय बाद का होगा—वह ध्वनि-परिवर्तन के परिणाम को अन्य उपादानों द्वारा अव्यवस्थित पाता है। वास्तव में जब हम उप-स्वनिमी रूपान्तरों का पर्यवेक्षण करते हैं कभी-कभी हम उन्हें बोलने वालों में बंटा हुआ अथवा रूपों में भाषाई आदान तथा सादृश्यजन्य परिवर्तन के ढंग से व्यवस्थित पाते हैं। अमेरिका अंग्रेजी के

मध्य-पश्चिमी प्रतिरूप में, स्वर-मात्रा प्रभेदक नहीं है किन्तु कुछ बोलनेवाले स्वभावतः (यद्यपि सम्भवतः निरपवाद रूप में नहीं) स्वनिम [a] के एक लघुतर रूपान्तर का प्रयोग मूल परप्रत्यय [-r-n-] से अनुगमित [rk:rp] गुच्छ के पहले करते हैं, यथा dark और sharp में तथा [-r-n] और [-rd, rt] गुच्छ से पहले करते हैं यथा barter, carter, garden, marten [Martin] में। फिर भी गौण परप्रत्यय [-ṛ,-ṇ] के पहले एक दीर्घतर रूपान्तर का प्रयोग होता है, यथा starter, carter (जो गाड़ी हाँकता है), harden। यहाँ साधारण शब्द (start, cart, hard) का अस्तित्व जिसका [a] ह्रस्व नहीं होता, सामान्य दीर्घतर परिवर्तन का समर्थन करता है। larder शब्द (जो बातचीत की शब्दावली का अंश नहीं है) लघुतर रूपान्तर के साथ पढ़ा जा सकता था किन्तु कर्तृ संज्ञा 'larder' केवल [a] स्वनिम के दीर्घतर प्रतिरूप से बन सकती थी। उप-स्वनिमी रूपान्तर का वितरण समरूपी परिवर्तन के परिणाम के ही समान है तथा इसकी उत्पत्ति जैसे भी हुई हो बोलनेवालों में इस प्रवृत्ति का वितरण निस्संदेह अनुकरण की प्रवृत्ति से प्रभावित है जिसे हम भाषाई आदान के अनुरूप मान सकते हैं। यदि दो रूपान्तरों के मध्य का अन्तर प्रभेदक होता है तो तुलनावादी कहेगा कि ध्वनि-परिवर्तन हुआ है किन्तु उसे इस ध्वनि-परिवर्तन का परिणाम आरम्भ से ही आदान तथा सादृश्यजन्य परिवर्तन के प्रभाव रूप आरोपित लगेगा।

हम देख सकते हैं कि एक अप्रभेदक रूपान्तर पूर्णरूप से निरर्थक हो गया है। 18वीं शती की अंग्रेजी में geese, eight, goose, goat की तरह के रूपों में [i:, e:, u:, o:] प्रतिरूप के दीर्घस्वर थे जोकि उस समय से अब तक सन्ध्यक्षरीय प्रतिरूप [ij, ej, uw, ow] में बदल गए हैं। इस विस्थापन का भाषा की संरचना पर प्रभाव नहीं पड़ा है। आधुनिक मानक अंग्रेजी का अनुलेखन जिसमें [i:, e:, u:, o:] चिह्नों का प्रयोग होता था पूर्णतः यथार्थ होता। यह तो केवल ध्वनिशास्त्री अथवा ध्वनि-विद् हमें बता सकता है कि इन स्वनिमों के निरपेक्ष भौतिकी तथा ध्वानिकी संयोजनों में विस्थापन हुआ है। फिर भी हम देख सकते हैं कि अ-सन्ध्यक्षरी परिवर्त जो पहले प्रमुख थे आज निरर्थक हो गए हैं। आधुनिक मानक अंग्रेजी का वक्ता जो फ्रेंच अथवा जर्मन भाषा बोलने का प्रयत्न करता है जिसमें दीर्घ स्वरों का असंध्यक्षरीकरण हुआ है—इन प्रतिरूपों के उच्चारण अधिक श्रमसाध्य हैं। इन ध्वानिकी प्रतिरूपों का उच्चारण उसके लिए उतना ही

कठिन होता है (जो कुछ शताब्दियों पूर्व अंग्रेजी में विद्यमान थे), जितना एक फ्रेंच अथवा जर्मन के लिए अंग्रेजी संध्यक्षरीय प्रतिरूपों का उच्चारण करना। वक्ता कठिनाई से ही उन भाषण-ध्वनियों का उच्चारण सीखता है जो उसकी मातृभाषा में नहीं बोली जातीं यद्यपि इतिहासवेत्ता उसे अप्रासंगिक रूप से आश्वस्त कर सकते हैं कि उसकी भाषा की पूर्वकालिक अवस्था में भी ये ध्वनियाँ थी।

हम ध्वनिपरिवर्तन के संबंध में तभी कुछ कह सकते हैं जब प्रवृत्ति के विस्थापन से भाषा की संरचना में कुछ परिवर्तन हो चुका हो। अमेरिकन अंग्रेजी के अधिकांश प्रतिरूप got, rod, not की तरह के रूपों में निम्नस्वर [a] का प्रयोग किया जाता है जहाँ ब्रिटिश अंग्रेजी में प्राचीनतर मध्य स्वर [ɔ] प्रतिरूप बना रहता है। अमेरिकन मानक अंग्रेजी के कुछ प्रतिरूपों में यह [a] calm, far, pa, के [a] से भिन्न है जिससे कि bother का लय father के साथ नहीं मेल खाता तथा bomb, balm: का समध्वनिक नहीं है। स्वनिमी व्यवस्था में कहीं विस्थापन नहीं हुआ है। फिर भी अमेरिकन मानक अंग्रेजी के अन्य प्रतिरूपों में दो स्वनिम एक दूसरे से मेल खा जाते हैं : got, rod, bother, bomb, calm, far, pa, father b alm, सभी में उसी निम्न स्वर [a] में से एक है तथा हम तदनुसार कहते हैं कि ध्वनिपरिवर्तन हो गया है। इस प्रतिरूप के कुछ वक्ता (साथ ही कुछ दूसरे वक्ता भी) bomb को [bom] की तरह उच्चरित करते हैं। यह रूप कुछ विशिष्ट प्रकार के भाषाई आदान के कारण है और तदनुसार इससे सामान्य सह-संबंध नहीं व्यक्त हो सकता।

आदिगुच्छ [kn-,gn-] यथा knee, gnat में 18वीं शती के आरम्भ में ही स्पर्श का लोप हो गया जिससे knot, तथा not, knight तथा night, gnash तथा nash समध्वनिक हो गए। आज के अंग्रेजी बोलने वाले बहुत कठिनाई से जर्मन knie [kni:] 'knee' की तरह के आदिगुच्छों का उच्चारण कर पाते हैं।

डच-जर्मन क्षेत्र में, आदिम जर्मन स्वनिम [θ], [ð] में और फिर [d] में बदल गया। मध्यकाल के अन्त तक यह [d] क्षेत्र के उत्तरी भाग में आदिम जर्मन [d] से मेल खाता था। इसलिए आधुनिक मानक डच में आदि [d], dag, [dax] 'दिन', doen [du:n] "करना", droom [dro:m] 'स्वप्न' में एकरूप से हैं जहाँ अंग्रेजी में [d] हैं तथा उन शब्दों में यथा

dik [dik] "मोटा", doorn [do:rn] काँटा, drie [dri:] "तीन", जहाँ अंग्रेजी में [θ] आता है। इसका विभेदन पूर्णरूप से भुला दिया गया है तथा उसको एक भाषा से आदान द्वारा जिसमें वह अभी तक सुरक्षित है पुनः प्रस्तुत किया जा सकता था। यह कहना अनावश्यक है कि डच अथवा उत्तरी-जर्मन लोगों को अंग्रेजी [θ] ध्वनि का उच्चारण सीखने में ऐसी कठिनता हुई है कि मानो यह ध्वनि उनकी भाषा में कभी रही ही न हो।

उन रूपान्तरों का समर्थन जिनसे ध्वनि-परिवर्तन होता है ऐतिहासिक घटना होती है। एक बार इसके गुजर जाने पर हम इसके दुबारा घटित होने के सम्बन्ध में निश्चित नहीं रहते। बाद की प्रक्रिया उसी ध्वानिकी प्रतिरूपों को समर्थित करते हुए समाप्त हो सकती है जो कुछ पहले के परिवर्तन द्वारा लुप्त कर दिए गये थे। प्राचीन और मध्य अंग्रेजी दीर्घ स्वर [i:,u:] यथा [wi:n], [hu:s] में, आधुनिककाल के संध्यक्षरीय प्रतिरूप के कारण आरम्भ में ही लुप्त हो चुके थे, यथा आधुनिक अंग्रेजी wine, house में। लगभग ठीक उसी समय फिर भी प्राचीन और मध्य अंग्रेजी दीर्घ मध्य स्वर यथा [ge:s, go:s] में, उठाए जा रहे थे जिससे कि 18वीं शताब्दी की अंग्रेजी में geese, goose की तरह के शब्दों में [i:, u:] प्रतिरूप थे। नए [i:, u:] बहुत बाद में पहुँचे जब उनमें परिवर्तन हुआ और वे [aj, aw] हो गए जिससे मध्य अंग्रेजी के उच्च स्वरों पर हावी हो गए थे। इसी प्रकार हमें यह भी अवश्य मानना होगा कि पीढ़ियों के पूर्व ग्रीक वक्ता, जो स्वरों के मध्य स्वनिम [s] को दुर्बल बना रहे थे कठिनाई से ही स्वर मध्यग साधारण [s] का उच्चारण सीख पाते थे किन्तु परिवर्तन समाप्त हो जाने के बाद दीर्घ [ss] के साधारणीकरण द्वारा यह ध्वन्यात्म प्रतिरूप पुनः प्रस्तुत हुआ तथा (इससे निस्सन्देह रूप से) प्रतिरूप के नए संयोजन ['este:sa] (§20.10) फिर से पूरी तौर पर उच्चारणीय थे। इस प्रकार हम प्रायः परिवर्तनक्रम (आपेक्षिक कालांकन) निर्धारित कर सकते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पूर्वी जर्मनी काल में आदिम भारत-यूरोपीय [b, d, g] आदिम जर्मन [p, t, k] प्रतिरूपों को पहुँच सके होते केवल तभी जब आदिम भारत-यूरोपीय [p, t, k] में पहले ही परिवर्तन हो चुका था, कुछ सीमा तक आदिम-जर्मनी [f, θ, h] की दिशा में, क्योंकि वास्तविक जर्मनीय रूपों से प्रकट होता है कि स्वनिमों की ये दो श्रेणियाँ आपस में मेल नहीं खातीं। (§20.2)।

अध्याय 21

ध्वन्यात्म परिवर्तन के प्रतिरूप

21.1 पिछले अध्याय में परिभाषित ध्वन्यात्म परिवर्तन ध्वनिजनक संचलनों को संचालित करने की प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना है। यथार्थतः इस प्रकार के परिवर्तन की कोई महत्ता नहीं है जब तक वह भाषा की स्वनिमीय व्यवस्था में हेरफेर नहीं लाता, वस्तुतः यदि हमारे पास सर्वथापूर्ण आलेख भी हों, हम कदाचित् उस बिन्दु को निर्धारित करने में असमर्थ होंगे जहां एक रूपान्तर के प्रति आग्रह ऐतिहासिक परिवर्तन की पदवी पा जाता है। जिस समय अंग्रेजी वक्ता gōs 'हंस' (goose) और gēs हंस (बहुवचन) (geese) जैसे शब्दों में उच्चतर जिह्वा स्थिति वाले स्वरों को रखने वाले रूपान्तरों को पसन्द करने लगे थे, यह विस्थापन पूर्णतया महत्वहीन था। वक्ताओं के पास अपने स्वरों के ध्वानिकी गुणों की, उन्हीं भाषिकरूपों में कुछ पीढ़ी पूर्व अपने पूर्वजों से उच्चरित स्वरों के ध्वानिकी गुणों से तुलना करने के कोई साधन न थे। जब वे ऐसी बोली सुनते थे जिससे यह परिवर्तन नहीं हुआ था तो उसमें उन्हें अन्तर मालूम पड़ता था किन्तु यह अन्तर कैसे आया इस विषय पर कुछ न कह सकते थे। ध्वन्यात्म परिवर्तन तभी महत्ता पाते हैं जब कि उनसे स्वनिमीय प्रतिमानों में भी अन्तर आए। उदाहरण के लिए, पूर्व आधुनिक युग में मध्यकालीन अंग्रेजी स्वर [ɛ:] जैसे sed [sɛ:d] "बीज" में ऊपर उठता गया यहां तक कि स्वर [e:] जैसे ges [ge:s] "हंस" (बहुवचन)" से एकीभूत हो गया और इस सदैव के लिए एकीभवन ने भाषा के रूपों में स्वनिमों का वितरण बदल दिया। इसके अनन्तर, मध्यकालीन अंग्रेजी ह्रस्व [e] जो तथाकथित स्वरान्त अक्षर में अर्थात् एक एकाकी व्यंजन के पूर्व जो स्वयं एक स्वर से अनुगमित होता है, जैसे ete ['ete] "खाना" में था दीर्घ हो जाता था और अन्ततः अभी उल्लिखित दीर्घ स्वरों के साथ एकीभूत होगया। इस कारण आधुनिक अंग्रेजी की स्वनिमीय संघटना मध्यकालीन अंग्रेजी से भिन्न है। अंग्रेजी स्वनिम [ij] अन्य के साथ इन तीन

प्राचीनतर स्वनिमों के साथ चलता रहा। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उस एकीभवन के कारण अनेक समध्वनिक उत्पन्न हो गए।

प्राचीन और मध्यकालीन अंग्रेजी [e:] आधुनिक [ij] में परिवर्तित हो गया, जैसे heal, steel, geese, queen, meet (क्रिया), need, keep में।

प्राचीन और मध्यकालीन अंग्रेजी [ɛ:] आधुनिक [ij] में परिवर्तित हो गया, जैसे heal, meal, cheese, clean, lean (विशेषण) street, mead (मैदान), meet (विशेषण) में।

प्राचीन और मध्यकालीन अंग्रेजी [e] आधुनिक [ij] में परिवर्तित हो गया, जैसे, steal, meal (आटा) weave, lean (क्रिया) queen, speak, meat, mete, eat, mead (एक पेय) में।

इसके विपरीत, इस अन्तिम परिवर्तन के सीमित ध्वन्यात्म स्थितियों में प्रतिबद्ध होने के कारण इस स्वनिम को रखनेवाले रूपों में विभिन्न स्वनिम उत्पन्न हुए। प्राचीन [e] मध्यकालीन अंग्रेजी में दीर्घ हो गया : weve> weave किन्तु मध्यकालीन अंग्रेजी रूप weft>weft में नहीं। इसी प्रकार, कुछ विशिष्ट व्यंजनगुच्छों के पूर्व दीर्घस्वरों के ह्रस्वीकरण करनेवाले ध्वन्यात्म परिवर्तन ने meadow (<प्राचीन अंग्रेजी ['mɛ:dwe]) और mead अथवा kept (प्राचीन अंग्रेजी ['ke:pte] और keep के बीच स्वरों को परिवर्तित कर दिया।

कोई दो-एक सदी पूर्व, प्रारम्भिक [k] [n] के पूर्व लुप्त हो गया। इससे स्वनिमीय व्यवस्था में परिवर्तन आ गया जिससे knot और not अथवा knight और night आदि में समध्वनिता आ गई एवं [n] और [-kn-] का एकान्तरण भी आ गया, जैसे, know, knowledge: acknowledge.

21.2 अधिकतर ध्वनिपरिवर्तन की सामान्य दिशा उन संचलनों के सरलीकरण की ओर है जो किसी अभीष्ट भाषिकरूप के उच्चारण में होते हैं। इसी प्रकार, व्यंजनवर्ग प्रायः सरलीकृत होते हैं। प्राचीन अंग्रेजी प्रारम्भिक गुच्छ [hr, hl, hn, kn, gn, wr] के प्रारम्भिक व्यंजन लुप्त हो गए हैं, जैसे प्राचीन अंग्रेजी hring>ring, hlēapan>leap, hnecca,>neck, cnēow> knee, gnagan>gnaw, wringan>wring. इन वर्गों में [h] का लोप उत्तर-मध्यकाल में हुआ, और अन्य व्यंजनों का लोप पूर्व-आधुनिक युग में हुआ है। हम यह नहीं जानते कि इन दिनों कौन से नए घटक आ गए थे जिनसे

सदियों तक अपरिवर्तित रूप से उच्चरित व्यंजनगुच्छ अब आकर लुप्त हो गए। [h]- गुच्छ अब भी आइसलैण्डी में उच्चरित हैं, प्रारम्भिक [kn] न केवल जर्मनीय भाषाओं (जैसे, डच knie [kni:] जर्मन knie [kni:], डैनी [knɛ: ?] स्वेडी [kne:]) में>अपितु शेटलैण्ड और ओर्कनी द्वीप और उत्तरपूर्वी स्काटलैण्ड में उच्चरित होता है। [gn] गुच्छ विस्तृतरूप से प्रचलित है, अंग्रेजी में अधिक विस्तार से, [wr-] के रूप में [vr-] स्कैंडनेवियाई, डच-जर्मन के उत्तरी भाग में, मानक डच में, और अंग्रेजी की अनेक बिखरी हुई बोलियों में मिलता है। जब तक हम उन घटकों का पता नहीं लगा पाते जिनसे एक स्थान और काल में तो परिवर्तन होते हैं किन्तु दूसरे स्थान या दूसरे काल में नहीं, तब तक हम परिवर्तन के कारणों को जानने का दावा नहीं कर सकते—अर्थात् वह कहां और कब होगा इसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकते। अनुकूल रूपान्तरों की अधिक सरलता एक स्थायी घटक है किन्तु इससे सह-सम्बन्ध निकलने की कोई सम्भावना नहीं है।

अन्तिम व्यंजनगुच्छों का सरलीकरण और अधिक सामान्य है। एक आदिम भारतयूरोपीय *[pe:ts] "पैर" (कर्त्ता एकवचन) संस्कृत में 'पात्' और लैटिन में pes [pe:s] मिलता है, एक आदिम भारतयूरोपीय *['bheronts] "धारण करता हुआ" (कर्त्ता एकवचन पुंलिंग) संस्कृत में 'भरन्' और लैटिन में ferens ['Ferens] और बाद में [Fere:s] बन गया। इसी प्रतिरूप के परिवर्तन के कारण अन्तिम मान्य गुच्छों (§ 8.4) की प्रवृत्ति पड़ी और (§ 13.9) में वर्णित रूपीय एकान्तरण के प्रतिरूप स्थापित हुई। इस प्रकार, आदिम केन्द्रीय-अलगोन्की *[axkehkwa] "केतली", बहुवचन *[axkehkwaki] फाक्स में [ahko:hkwa, ahko:hko:ki] के रूप में अन्तिम स्वर के लोप के साथ, और क्री [askihk, askihkwak] में तथा मिनोमनी [ahkɛ:h, ahkɛ:hkuk] में व्यंजनगुच्छ के आंशिक लोप के साथ मिलते हैं। इस प्रकार इन भाषाओं में बहुवचन में एक व्यंजनगुच्छ है जोकि एकवचन रूप के निरीक्षण से निर्धारित नहीं हो सकता है। अंग्रेजी में, अन्तिम [ŋg] और [mb] के स्पर्श-व्यंजन का लोप हो चुका है, अतएव long: longer [lɔŋ-lɔŋgə], climb: clamber [klajm-'klɛmbə] का व्यतिरेक उत्पन्न हुआ।

कभी-कभी एकाकी अन्तिम व्यंजन भी दुर्बल हो जाते हैं या लुप्त हो जाते हैं। प्राक्-ग्रीक में अन्तिम [t, d] लुप्त हो गए, जैसे आदिम भारतयूरोपीय

*[tod] "वह", संस्कृत 'तत्' : ग्रीक [to] ; अन्तिम [m] [n] बन गया, जैसे, आदिम भारतयूरोपीय *[ɟu'gom] "हल", संस्कृत 'युगम्' ; ग्रीक [zu'gon]ये ही परिवर्तन प्राक्-जर्मनीय में घटित हुए हैं। कभी-कभी सभी अन्तिम व्यंजन लुप्त हो जाते हैं और उससे ऐसा ध्वन्यात्म प्रतिमन बनता है कि प्रत्येक शब्द स्वरान्त बन जाता है। यह प्राक्-स्लावी में हुआ, देखिए प्राचीन बल्गेरियाई [to] "वह", [igo] "हल"। इस भांति के परिवर्तन के कारण समोअन (§13.9) में रूपीय परिस्थितियां उत्पन्न हुईं, समोअन रूप [inu] "पेय" प्राचीनतर रूप *[inum] का पररूप है जिनका अन्तिम व्यंजन तगलाग [i'nunı] में अब भी सुरक्षित है।

जब इस प्रकार के परिवर्तन शब्द के प्रारंम्भ में अथवा प्रायः अधिकतर शब्द के अन्त में मिलते हैं तो हम यह मानते हैं कि उन भाषाओं में जहां ऐसा परिवर्तन हुआ है शब्द-इकाई का कुछ ध्वन्यात्म अंकन था। यदि कोई ऐसे रूप थे जिनमें शब्द के प्रारम्भ अथवा अन्त में विशिष्ट प्रारम्भिक अथवा अन्तिम उच्चारण नहीं होता, तो उनमें परिवर्तन नहीं होता था और वे सन्धिरूप में बने रहते थे। इस प्रकार, मध्यकालीन अंग्रेजी में अन्तिम [n] लुप्त हो गया था, जैसे eten > ete "खाना", किन्तु स्वरों के पूर्व आर्टिकल an का अवश्य ऐसा उच्चारण होता होगा कि मानो वह परवर्ती शब्द का अंश है, अर्थात् बिना अन्तिम स्थिति की ध्वन्यात्म विचित्रता के कारण इसका उच्चारण होता होगा। इस प्रकार [n] इस स्थिति में (अन्तिम [n] के समान) लुप्त नहीं होता था बल्कि (मध्यवर्ती [n] के समान) सुरक्षित रहता था : a house किन्तु an arm। लैटिन vōs "तुम" से फ्रेंच vous [vu] निकला किन्तु लैटिन पदसंहितीय-प्रतिरूप जैसे vōs amātis "तुम प्यार करते हो" फ्रेंच में सन्धिसहित बोलने की प्रवृत्ति से vousaimez [vuz eme] रूप में मिलता है। लैटिन, est "वह है" से फ्रेंच est [ɛ] "है" निकला किन्तु लैटिन पदसंहितीय प्रतिरूप, जैसे est ille ? "क्या वह है ?" फ्रेंच में सन्धिरूप est-il ? [ɛt i ?] 'क्या वह है ?", के रूप में मिलता है। इसी प्रकार आदिम भारतयूरोपीय *[bheronts] न केवल संस्कृत 'भरन' में मिलता है, जैसा अभी ऊपर उद्धृत किया है, अपितु संस्कृत में इस [s] संधि जोड़ने की प्रवृत्ति में मिलता है जैसे 'भरँस् तत्र' "वहां ले जाता हुआ" में।

21.3 व्यंजनगुच्छों का सरलीकरण ध्वनिपरिवर्तन का प्रायः परिणाम होता है। इस प्रकार, प्राक्-लैटिन *['Fulgmen] "चमक (बिजली की)" से लैटिन

fulmen निकला। यहां गुच्छ [lgm] सरलीकरण से [lm] में परिवर्तित हुआ, किन्तु वर्ग [lg], जैसे fulgur "चमक" में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और न वर्ग [gm], जैसे agmen "सेना" में कोई परिवर्तन हुआ। ऐसे परिवर्तनों के वर्णन में, हम प्रतिबन्धों को प्रतिबाधक घटक (कारक घटक) कहते हैं, और उदाहरण के लिए, इनमें से एक fulgar और agmen जैसे उदाहरण में अनुपस्थित है जहां [g] सुरक्षित रखा गया है। कथन का यह रूप अशुद्ध है चूँकि परिवर्तन केवल [lgm] का [gm] में था, और fulgur, agmen जैसे उदाहरण अनुपयुक्त थे, किन्तु प्रायः इस पदावली का प्रयोग सुविधाजनक प्रतीत होता है। प्रतिबाधित परिवर्तन (सोपाधिक परिवर्तन) प्रायः रूपीय एकान्तरण उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार लैटिन में agere में परप्रत्यय-men लगाकर agmen "सेना" बना, किन्तु fulgere: चमकना, fulmen ("बिजली की चमक")। इसी प्रकार प्राक्-लैटिन [rkn] का रूप [rn] होता है, pater "पिता": paternus "पैतृक" के साथ quercus "ओक वृक्ष": quernus" "ओक वृक्ष संबंधी।"

प्रायः सामान्यतया, व्यंजन-गुच्छ समीकरण (assimilation) के द्वारा परिवर्तित होते हैं। वाग् अवयवों की स्थिति जो एक स्वनिम के लिए आवश्यक है अन्य स्वनिमों की स्थिति ले लेती है। सामान्यतर उदाहरण पश्चगामी समीकरण के हैं जहां पूर्व-स्वनिम परिवर्तित होता है।

इस प्रकार व्यंजन का सघोषत्व अथवा अघोषत्व प्रायः परवर्ती व्यंजन के अनुकूल बन जाता है, goose और house का [s] gosling, husband जैसे संयोजनों में सघोष [z] बन जाता है। फिर इसके कारण रूपीय एकान्तरण होते हैं। रूसी के इतिहास में दो ह्रस्व-स्वरों (लेखक के द्वारा [i], [u] द्वारा प्रदर्शित) के लोप से व्यंजनगुच्छ उत्पन्न हो गए, इन गुच्छों में तब एक स्पर्श अथवा ऊष्म ध्वनि का घोषत्व की दृष्टि से परवर्ती स्पर्श अथवा ऊष्मध्वनि से समीकरण हुआ। प्राचीन रूप प्राचीन बल्गेरियाई में मिलते हैं जहां पर ये परिवर्तन नहीं हुए। इस प्रकार * ['svatɪba] "विवाह" से रूसी ['svadba] निकला, तुलना कीजिए रूसी [svat] "विवाह ठीक करने वाला"। प्राचीन बल्गेरियाई [otube:zati] "भागना" रूसी के [odbe'zat] के रूप में मिलता है, तुलना कीजिए, प्राचीन बल्गेरियाई [otu] "दूर" : रूसी [ot]। इसके विपरीत प्राचीन बल्गेरियाई [podukopati] "क्षति पहुँचाना" रूसी में

*[potko'pat] मिलता है : व्यतिरेक के लिए देखिए प्राचीन बल्गेरियाई [podu igo] "जुआ के नीचे" रूसी ['pod igo] ।

समीकरण से कोमलतालु, जिह्वा अथवा ओठों की क्रियाएँ भी प्रभावित हो सकती हैं । यदि व्यंजनों के बीच कुछ अन्तर रखा गया है, तो समीकरण आंशिक माना जाता है, इस प्रकार प्राक्-लैटिन [pn] [mn] से समीकृत होकर आदिम भारतयूरोपीय *['swepnos] 'सोना' संस्कृत 'स्वप्नः' : लैटिन [somnus] । यदि अन्तर पूर्णतया समाप्त हो जाता है तो समीकरण 'पूर्ण' (to:al) कहा जाता है और परिणामस्वरूप दीर्घ व्यंजन बन जाता है, जैसे इतालवी sonno ['sɔnno] । इसी प्रकार, लैटिन octō 'आठ" > इतालवी otto ['ɔtto], लैटिन ruptum "भग्न" > इतालवी rotto ['rotto] ।

अग्रगामी समीकरण में परवर्ती व्यंजन समीकृत होता है । इस प्रकार, प्राक्-लैटिन *[kolnis] "पर्वत" से लैटिन collis निकला है : तुलना कीजिए, लिथुएनी ['ka:lnas] "पर्वत" । अंग्रेजी शब्द hill में ये ही परिवर्तन [ln]>[ll] प्राक्जर्मनीय में हो गए, देखिये, आदिम भारतयूरोपीय *[pl̥:'nos] "पूर्ण", संस्कृत (पूर्णः), लिथुएनी ['pilnas]: आदिम जर्मनीय *['Follaz], गॉथी fulls, प्राचीन अंग्रेजी full अथवा आदिम भारतयूरोपीय *['wl̥:na:] "ऊन", संस्कृत 'ऊर्णा', लिथुएनी ['vilna], आदिम जर्मन [*'wollo:], गॉथी wulla, प्राचीन अंग्रेजी wull ।

21.4 अन्य अनेक व्यंजनपरिवर्तन भी स्वभाव से समीकरण के अन्तर्गत आ सकते हैं । इस प्रकार अन्तिम व्यंजनों का अघोषीकरण जो विभिन्न भाषाओं के इतिहास में आता है एक प्रकार का पश्चगामी समीकरण है : घोषतंत्रियों की खुली स्थिति जोकि भाषण की समाप्ति पर होती है अन्तिम व्यंजन के उच्चारण में ही पहले से आ गई । इस प्रकार, मानकभाषाओं के साथ डच-जर्मन प्रदेश की बोलियों में सभी अन्तिम स्पर्श और ऊष्म अघोष हो गए, फलस्वरूप अघोष अन्तिमों का मध्यवर्ती सघोषों से एकान्तरण हो गया (§13.9) ।

प्राचीन उच्च-जर्मन tag "दिन" > नवीन उच्च-जर्मन Tag [ta:k], किन्तु taga "दिन" बहुवचन > Tage ['ta:ge] जहां [g] अपरिवर्तित है ;

प्राचीन उच्च-जर्मन bad "स्नान" > नवीन उच्च-जर्मन bad [ba:t] किन्तु षष्ठी विभक्ति में bades > Bades ['ba:des];

प्राचीन उच्च-जर्मन gab "उसने दिया" > नवीन उच्च-जर्मन gab [ga:p] किन्तु, बहुवचन gābun "उन्होंने दिया" > gaben ['ga:ben]

सघोष व्यंजन सन्धि में सुरक्षित भी रखा जा सकता है—अर्थात् परम्परागत उपसंहितीय प्रतिरूपों में जहां वह अन्त में नहीं आ रहा है। यह मानकजर्मन में नहीं होता है, यहां प्रत्येक शब्द इकाई द्वारा अन्तिमरूप सम्पन्न किया जाता है। किन्तु रूसी में, न केवल अन्तिम रूप मिलते हैं जिनसे प्राचीन [podu] स्वरलोप के बाद [pot] बनता है, अपितु पदसंहितीय रूप भी मिलते हैं, जैसे ['pod igo] "जुआ के नीचे"। एक डच उच्चारण का प्रतिरूप है जहां प्राचीन hebbe "मेरे पास है" अन्तिम स्वरलोप के बाद न केवल [-p] के अन्तिमरूप के साथ मिलता है, जैसे, ik heb [ek'hap] अपितु पदसंहितीय सन्धि प्रतिरूप, hebek ? ['heb ek ?] "क्या मेरे पास है ?" बनता है। यह अवशिष्ट सन्धि (§12.5) की उत्पत्ति है।

एक बहुत सामान्य प्रतिरूप का परिवर्तन स्वरों के मध्य अथवा विवृत ध्वनियों के व्यंजनों का दुर्बल होना है। यह भी समीकरणवत् है, क्योंकि जब पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों ध्वनियां विकृत और सघोष हैं तो अपूर्ण स्पर्शन अथवा स्पर्श अथवा ऊष्म व्यंजन का सघोषीकरण प्रयासलाघव दिखाता है। यह परिवर्तन जिससे [t] की अमेरिकन-अंग्रेजी सघोष जिह्वा उत्क्षेप प्रतिरूप की ध्वनि बनती है, जैसे water, butter, at all में, निश्चयतः इसी भांति का था। लैटिन rīpam "तट", sētam "रेशम", focum "चूल्हा", जैसे उदाहरणों में प्राप्त लैटिन [p, t, k] स्वरमध्यवर्ती होकर रोमानी भाषाओं में मुख्यतया दुर्बल हो जाते हैं और स्पेनी में riba, seda, fuego "आग" बनते हैं जहां [b, d, g] मुख्यतया स्वभाव से ऊष्म हैं, और फ्रेंच में rive, soie, feu [ri:v, swa, fφ] होते हैं। कुछ भाषाओं जैसे प्राग्-ग्रीक, में स्वर-मध्यवर्ती [s, j, w] का लोप हो चुका है। पोलेनेशियाई भाषाएं और कुछ सीमा तक मध्य भारतीय आर्य भाषाएं भी ऊपर उद्धृत फ्रेंच रूपों के समान मध्यवर्ती व्यंजनों की प्राचीन संघटना में ह्रास दिखाती हैं। अंग्रेजी के इतिहास में [v] का लोप उल्लेखनीय है, जैसे प्राचीन अंग्रेजी में ['hɛvde, 'havok, 'hla:vord, 'hla:vdije, 'he:avod, navoga:r] > आधुनिक had, hawk, lord, lady, head, auger और यह परिवर्तन कदाचित् तेरहवीं सदी में हुआ था।

यदि बाद के परिवर्तनों के द्वारा प्रतिबाधक तत्त्व (घटक) हट जाते हैं तो

एक अनियमित एकान्तरण मिलता है। इस प्रकार के उदाहरण के लिए आइरी भाषा में प्रारम्भिक व्यंजनों में सन्धि-एकान्तरण (§ 12.4) उत्पन्न हुआ। इस भाषा के इतिहास में स्वरमध्यवर्ती स्पर्श दुर्बल होकर संघर्षी बन जाते थे, जैसे आदिम भारतयूरोपीय *['pibo:mi] "मैं पीता हूं," संस्कृत "पिबामि" : प्राचीन आइरी ebaim ['evim]। प्रत्यक्षतः इस स्थिति में भाषा ने शब्द-इकाई को ध्वन्यात्म मान्यता नहीं दी और घनिष्ठतया बद्ध पदसंहितियों में यह परिवर्तन हुआ। उदाहरण के लिए *[eso bowes] "उसकी गाय" (तुलना कीजिए संस्कृत अस्य गावः) परिवर्तित होकर [a va:] बन गया, जबकि व्यतिरेक में निरपेक्षरूप [ba:] "गाय" है। इस प्रतिरूप की सन्धि कुछ सीमित उदाहरणों में सुरक्षित है, जैसे हमारे उदाहरण में, सर्वनाम ['a] "उसका, की" के बाद सुरक्षित है। इसी प्रकार, स्वरमध्यवर्ती [s] दुर्बल होकर [h] हो गया और फिर लुप्त हो गया : आदिम भारतयूरोपीय [*sweso:r] "बहिन", संस्कृत 'स्वसा', इससे संभवतः पहले *['sweho:r] और फिर प्राचीन आइरी siur निकला। इसी प्रकार अन्तिम [s] लुप्त हो जाते थे : गाली tarbos "बैल" प्राचीन आइरी tarb। अब हमें यह मानना पड़ेगा कि स्वरमध्यवर्ती परिवर्तन [s>h] घनिष्ठतया बद्ध पदसंहितियों में भी घटित हुआ था, तभी *[osa:s o:wjo] उस (स्त्री०) का अंडा (तुलना कीजिए संस्कृत अस्याः 'उस (स्त्री०) का", जहाँ [-s] के स्थान पर [-h] है) का आधुनिक रूप [a huv] बना, इसके व्यतिरेक में स्वतन्त्र [uv] 'अण्डा" देखिए। और यहाँ यह प्रवृत्ति कुछ संयोजनों में ही सुरक्षित रहती है जैसे 'her' के लिए प्रयुक्त शब्द के बाद। इसी प्रकार, [m] का परिवर्तन होकर [n] हुआ और फिर शब्दान्त में लोप हो गया किन्तु स्वरों के बीच स्वर सुरक्षित रहा। दोनों प्रकार के प्रयोग *[neme:tom] "पवित्र स्थल" प्राचीन गैली [neme:ton], प्राचीन आयरी nemed। इस स्थिति पर जहाँ [-m] परिवर्तित होकर [-n] बन गया था, एक प्राचीन रूप *[sen-to:m o:wjo:m] "इन अण्डों का" (तुलना कीजिये कि ग्रीक षष्ठी, बहुवचन ['to:n]) ने आज के [na nuv] प्रदान किया, इसके व्यतिरेक में निरपेक्ष रूप [uv] "अण्डा" मिलता है। ऐसा ही किन्तु कहीं अधिक जटिल विकास के कारण हमें प्रारम्भिक [t] वाला संधि रूपान्तर मिलता है। जैसे [an tuv] "अण्डा में" अन्ततः यह इस कारण है कि आदिम भारतयूरोपीय कर्ता-कर्म एकवचन नपुंसकलिंग सर्वनाम रूप का अन्त [d] जैसे संस्कृत (तद्) "वह" लैटिन id "वह"।

हम वर्नर (§ 18.7 और § 20.8) द्वारा खोजे हुए प्राग्-जर्मनी परिवर्तन की भी यह व्याख्या कर सकते हैं कि अघोष ऊष्म [f, θ, h, s] संगीतात्मक ध्वनियों के बीच में अघोष संघर्षी के स्थान पर दुर्बल होकर सघोष [v, ð, v̦, z] हो गया, इसके बाद यह प्रतिबन्ध कि परिवर्तन वहीं होगा जहाँ पूर्ववर्ती स्वर अथवा संध्यक्षर बलाघातहीन है, इसी भांति की व्याख्या के अन्दर आता है। जोर से बलाघातयुक्त स्वर के बाद स्वरतंत्रियों के पीछे श्वास की बड़ी मात्रा भरी रहती है, इससे अघोष संघर्षियों के लिये विवार सघोष के लिए संवार की अपेक्षा अधिक सरल होता है। हम इन व्याख्याओं को कारणकार्य व्याख्या नहीं मान सकते, क्योंकि बहुत-सी भाषाओं के बीच भी अघोष संघर्षी अक्षण्ण बने रहते हैं जबकि कुछ भाषाओं में वे सघोष हो जाते हैं। यद्यपि पूर्ववर्ती स्वर के ऊपर उच्च बलाघात रहता है। यहाँ भी प्रतिबाधक घटक अन्य परिवर्तनों के द्वारा बाद में हट गया: पूर्व प्राक्-जर्मन में *['werθonon] "हो जाना" *[wurðu'me] "हम हो गये" में एकान्तरण [θ:ð] बलाघात के स्थान पर निर्भर है। जब बलाघात सभी शब्दों के प्रथम अक्षर पर पहुँच गया तब आदिम जर्मनी में एकान्तरण *['werθanan-'wurdume], प्राचीन अंग्रेजी ['weorðan-'wurdon] एक यादृच्छिक अनियमितता है बिल्कुल उसी प्रकार जैसे आधुनिक अंग्रेजी was: were आदिम जर्मनी *['wase-'we:zume] से निकला है। अंग्रेजी के इतिहास में बहुत बाद भी ऐसा परिवर्तन हुआ है। उसी के कारण उच्चारण के सामान्य प्रतिरूप में luxury: luxurious ['lʌkʃeri-lʌg'ʒuəriəs] अन्तर मिलता है और इसी प्रकार के दो प्रयोग possessor [pə'zesə] जैसे रूपों में फ्रेंच [s] है। इस परिवर्तन के अन्तर्गत पर-प्रत्ययों के स्वराघातहीन स्वर के बाद प्राचीन [s] का घोषकरण हुआ है, जैसे glasses, misses, Bess's, dice (die का बहुवचन) pence जैसे कुछ रूप भी बलाघातयुक्त स्वर के बाद [s] को बनाये रखते हैं। इस परिवर्तन के ठीक बाद बलाघातयुक्त रूप off [of], with [wiθ], *is* [is], *his* [his] और बलाघातहीन रूप of [ov] और [wið, iz, hiz] बने होंगे किन्तु यह एकान्तरण बाद में चलकर नष्ट हो गया : off और of का सादृश्य-जन्य परिवर्तन द्वारा पुर्नवितरण हो गया, [wiθ] एक रूपान्तर [wið] के रूप में बचा हुआ है और is, his के [s] वाले रूप प्रयोग से हट गये।

21.5 व्यंजन प्राय: पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती स्वर की जिह्वास्थिति के

अनुसार समीकृत हो जाते हैं। सबसे अधिक सामान्य उदाहरण विशेषतौर से एक अग्र स्वर के बाद दन्त्य और कोमल तालव्य ध्वनियों का समीकरण है जो तालव्यीकरण (palatalization) कहलाता है। इस प्रकार के परिवर्तन जो स्वनिमीय एकान्तरणों को उत्पन्न नहीं करता अंग्रेजी में बहुत पहले नहीं हुए होंगे। क्योंकि ध्वनिशास्त्री हमें यह बताते हैं कि अंग्रेजी वक्ता अग्रस्वर के पूर्व, जैसे kin, keep, kept, give, geese, और get में एक पश्चस्वर के पूर्व की अपेक्षा cook और good में 'क' और 'ग' [k, g] की जिह्वास्थिति में कहीं अधिक आगे हैं। प्राग्-इंगलिश में इसी प्रकारका एक परिवर्तन हुआ था जिससे स्वनिमीय संघटना में एकान्तरण उत्पन्न हुये। प्रारम्भ में [g] का तालव्यीकृत रूप कदाचित् यह स्वनिम एक ऊष्म ध्वनि था जो दूसरे स्वनिम [j] से एकीभूत हो गया। स्वनिमीय वितरण में परिवर्तन साफ-साफ तब दिखाई पड़ता है जब उत्तर जर्मन (प्राचीन सेक्शन) सजातीय रूपों की तुलना करते हैं जहाँ पुराना स्वनिमीय अक्षुण्ण बना हुआ है।

उत्तर जर्मन	प्राग्-अंग्रेजी>	प्राचीन अंग्रेजी>	आधुनिक अंग्रेजी
gold	*[gold]	gold [gold]	gold
gōd	*[go:d]	god [go:d]	good
geldan	*['geldan]	gieldan ['jeldan]	yield
garn	*[gɛrn]	gearn [jarn]	yarn
jok	*[jok]	geoc [jok]	yoke
jār	*[jɛ:r]	gear [je:ar]	year

दूसरी रीति जिसके द्वारा प्राग्-अंग्रेजी के तालव्यीकरण ने समय पाकर भाषा की संघटना को प्रभावित किया, प्रतिबाधक घटकों को धूमिल करने के लिये थी। पश्चस्वर स्वर [o,u] जोकि पूर्ववर्ती कोमल तालव्य को प्रभावित नहीं करते थे, कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में स्वयं अग्रस्वर [θ,y] में और बाद में [e, i] में परिवर्तित हो गये जोकि तालव्यीकरण करने वाले प्राचीन अग्रस्वरों से एकीभूत थे। इस कारण अंग्रेजी की बाद की स्थितियों में तालव्यीकृत और अतालव्यीकृत दोनों प्रकार के कोमल तालव्य अग्रस्वर के पूर्व मिलते हैं।

प्राचीन अग्रस्वरों के पूर्व तालव्यीकृत कोमलतालव्य :

प्राग्-अंग्रेजी>	प्राचीन अंग्रेजी>	आधुनिक अंग्रेजी
*['kɜ:si]	ciese['ki:ese]	cheese
*[kinn]	cinn[kin]	chin
*['geldan]	gieldan['jeldan]	yield
*[gɛrn	gearn[jarn]	yarn

नये अग्र स्वरों के पूर्व अतालव्यीकृत कोमलतालव्य :

प्राग्-अंग्रेजी>	प्राचीन अंग्रेजी>	आधुनिक अंग्रेजी
*['ko:ni>'kϕ:ni]	cene['ke:ne]	keen
*['kunni>'kynni]	cynn[kyn]	kin
*['go:si>'gϕ:si]	ges[ge:s]	geese
['guldjan>'gyldjan]	gyldan['gyldan]	gild

इसी प्रकार का तीसरा घटक प्रतिबाधक लक्षण का बाद में होनेवाले ध्वनि-परिवर्तन के कारण लोप था अर्थात् तालव्यीकरण करने वाले अग्रस्वर [e, i, j] का लोप था।

अग्रस्वर के पूर्व तालव्यीकृत कोमल तालव्य :

प्राग्-अंग्रेजी >	प्राचीन अंग्रेजी >	आधुनिक अंग्रेजी
*['drenkjan]	drencean['drenkan]	drench
*['stiki]	stice ['stıke]	stitch
*['sengjan]	sengan['sengan]	singe
*['bryggju]	brycg[brygg]	bridge

वह ध्वनि-परिवर्तन जिसे हम तालव्यीकरण कहते हैं पहले व्यंजनों को उस भाँति के व्यंजनों में परिवर्तित करता है जिसे ध्वनिशास्त्री तालव्यीकृत ध्वनियाँ कहते हैं; पूर्ववर्ती उदाहरणों में आधुनिक अंग्रेजी रूप जिनमें [tʃ, dʒ, j] मिलता है यहाँ दिखाते हैं कि ये तालव्यीकृत प्रतिरूप आगे भी परिवर्तित हो सकते हैं। वस्तुतः ये बहुत व्यवहृत हैं यद्यपि उनका प्रयोग विभिन्न है। कोमल तालव्य और दन्त्य दोनों के विषय में स्पष्ट संघर्षी प्रतिरूप [tʃ, dʒ] और अपसामान्य [ʃ, ʒ] और सामान्य [s, z] दोनों भाँति के ऊष्म प्रतिरूप पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। आधुनिक अंग्रेजी में हमें [tj>tʃ, dj>dʒ, sj>ʃ,ʒj>ʒ] इनका हमें विकास मिलता है, जैसे virtue Indian, session, vision ['vɜ:tʃuw, 'indʒn, 'seʃn,

अतालव्यीकृत कोमल तालव्य जो अग्रस्वर से अनुगमित नहीं हैं।

प्राक् अंग्रेजी	प्राचीन अंग्रेजी	आधुनिक अंग्रेजी
*[ˈdrinkan]	drincan [ˈdrinkan]	drink
*[ˈstikka]	sticca [ˈstikka]	stick
*[ˈsingan]	singam [ˈsingan]	sing
*[ˈfrogga]	frogga [ˈfrogga]	frog

ʹviʒn] अधिक औपचारिक रूपान्तर, जैसे [ˈvɔːtjuw, ʹindjṇ] बाद के परिवर्तनों के कारण उत्पन्न हुये हैं। रोमानी भाषाएँ तालव्यीकृत कोमल तालव्यों में विभिन्न प्रकार के विकास प्रदर्शित करती हैं :

	लैटिन	इतालवी	फ्रेंच	स्पेनी
'सौ'	centum	cento	cent	ciento
	[ʹkentum]	[ˈtʃɛnto	[sã]	[ˈθʃento[
राष्ट्र'	gentem	gente	gens	gente
	[ʹgentem]	[ʹdʒɛnte]	[ʒã]	[xente]

फ्रेंच-प्रदेश के एक अंश में मध्ययुग में [a] के पूर्व [k] का तालव्यीकरण होता था जब अंग्रेजी ने अनेक फ्रेंच शब्द आदान में लिये तब तालव्यीकरण [tʃ] की स्थिति में पहुँचा था और इसी कारण लैटिन प्रतिरूप जैसे cantare [kanˈtaːre] "गाना" > प्राचीन फ्रेंच chanter [tʃanˈteːr], अंग्रेजी में chant मिलता है। इस प्रकार लैटिन cathedram [ˈkatedram] अंग्रेजी में chair, लैटिन catenam [kaˈteːnam] अंग्रेजी में chain और लैटिन cameram [ˈkameram] अंग्रेजी में chamber मिलता है। आधुनिक मानक फ्रेंच में यह [tʃ] आगे चलकर [ʃ] बन गया : chanter chaire, chambre [ʃãte, ʃɛːr, ʃɛːn, ʃãbr]।

स्लावी-भाषाओं के इतिहास में भी तालव्यीकरण का बड़ा हाथ रहा है। वह विभिन्न समयों में विभिन्न परिणामों के साथ हुआ है और उसने सभी भाँति के व्यंजनों को यहाँ तक कि ओष्ठ्य व्यंजनों को भी प्रभावित किया है।

तालव्यीकरण की एक स्थिति जिसमें तालव्यीकरण करने वाला घटक बाद के परिवर्तनों द्वारा धूमिल कर दिया गया है, भारत-यूरोपीय अध्ययनों के विकास में महत्वपूर्ण भाग ले रही है। हिन्दू-ईरानी भाषाओं में एक अकेला स्वर प्रतिरूप [a] अन्य भारतयूरोपीय भाषाओं के तीन प्रतिरूपों [a, e, o] के स्थान पर मिलता है। इस प्रकार लैटिन ager 'खेत", equos

"घोड़ा", octo "आठ", संस्कृत अज्रः, अश्वः, अष्टौ सजातीय रूप मिलते हैं। बहुत समय तक लोग ये मानते रहे कि हिन्द-ईरानी भाषाओं ने आदिम भारतीय भाषाओं की व्यवस्था सुरक्षित रखी और यूरोपीय भाषाओं के विभिन्न स्वर उन परवर्ती परिवर्तनों के कारण थे जो सर्वनिष्ठ प्राग्-यूरोपीय काल में हुए थे। हिन्द-ईरानी भाषाओं के [a] के पूर्व आदिम भारतयूपीय [k, g] कहीं तो अपरिवर्तित मिलते हैं और कहीं च, ज। 1870 में अनेक अध्येताओं ने इन्हें कदाचित तालव्यीकरण के कारण बतलाया है और वस्तुतः उन उदाहरणों से पर्याप्त सहसंबद्ध हैं जिनमें यूरोपीय भाषाओं में [e] मिलता है। इस प्रकार हमें पता लगता है कि यूरोप की भाषाओं के पश्च स्वरों के साथ हिन्द-ईरानी के कोमलतालव्य स्पर्श व्यंजनों की इस प्रकार अनुरूपताएँ थीं:—

आदिम-भारत-यूरोपीय *[kwod], लैटिन quod [kwod] 'क्या' संस्कृत 'कत्'–(समास के पूर्वपद में)।

आदिम भारत यूरोपीय *[gwo:ws] प्राचीन अंग्रेजी , cu[ku:] "गाय" संस्कृत 'गौः'।

इसके विपरीत, यूरोप की भाषाओं में अग्रस्वर [e] और स्पर्श संघर्षी के साथ हिन्द-ईरानी में कोमलतालव्य स्पर्शों के स्थानों में हमें इस प्रकार की अनुरूपताएँ मिलती हैं :—

आदिम भारतयूरोपीय *[kwe], लैटिन que[kwe], "और", संस्कृत [च] :

आदिम भारतयूरोपी *[gwe:nis], गॉथी gens[kwe:ns] "पत्नि" संस्कृत [जानिः] (समास का उत्तरपद)।

इस प्रकार के उदाहरणों से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हिन्द-ईरानी का एक रूप [a] बाद के विकास के कारण है : प्राग्-हिन्द-ईरानी में [e] अन्य स्वरों से अवश्य भिन्न रहा होगा और इसी [e] ने पूर्ववर्ती कोमलतालव्य स्पर्शों का तालव्यीकरण किया होगा। चूँकि यह यूरोपीय भाषाओं के [e] से मेल खाता है और यह अन्तर आदिम भारत-यूरोपीय में अवश्य रहा होगा और यूरोपीय भाषाओं के संयुक्त नवरचन के कारण ही हुआ होगा। इस खोज ने इस धारणा का अन्त कर दिया कि आदिम भारतयूरोपीय और यूरोपी (हिन्द-ईरानी के विरोध में) भाषाओं के बीच कोई सामान्य पूर्वज-भाषा रही होगी।

21.6 कभी-कभी व्यंजन की दुर्बलता अथवा लोप की क्षतिपूर्ति पूर्ववर्ती स्वर के दीर्घीकरण से होती है। प्राचीन अंग्रेजी गुच्छ [ht] ने

[h] को जोकि आज भी कुछ उत्तरीय बोलियों में सुरक्षित है, खो दिया और अधिकांश प्रदेश में पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ कर दिया। इस प्रकार प्राचीन अंग्रेजी *niht* [niht, nixt] "रात", आधुनिक स्कॉट [nixt, next] आगे चलकर [ni:t] बन गया जिसमें आधुनिक night [najt] निकला है। सघोष अनाक्षरिक के पूर्व ऊष्म का लोप और स्वर का क्षतिपूर्वीय दीर्घीकरण भी बहुत प्रचलित है, जैसे प्राग् लैटिन *['dis-lego:] मैं उठाता हूँ", मैं पसन्द करता हूँ>लैटिन dīligō (तुलना कीजिए dispendo "मैं तौलता हूँ", में dis- और legō "मैं चुनता हूँ") पूर्व लैटिन cosmis> लैटिन cosmis; प्राग् लैटिन ['kaʒnos] सफेद बालवाला> लैटिन cānus (तुलना कीजिये एक पड़ोसी की इतालवी बोली पैलिग्नियन में casnar "बुड्ढा आदमी")। आदिम भाग्तयूरोपीय *[nisdos] "घोंसला" (तुलना कीजिये nest)>लैटिन nīdus।

यदि लोप होने वाला व्यंजन नासिक्य है तो पूर्ववर्ती स्वर प्रायः सानुनासिक कर दिया जाता है, क्षतिपूर्वीय दीर्घीकरण और अन्य परिवर्तन कभी होते हैं कभी नहीं। बहुत-सी भाषाओं के, जैसे फ्रेंच के, सानुनासिक स्वरों की उत्पत्ति इस प्रकार हुई है : लैटिन cantāre>फ्रेंच chanter[ʃãte], लैटिन centum > फ्रेंच cent [sã] आदि। प्राचीन जर्मनी की रूपरचना अनुनासिक और बिना अनुनासिक दोनों प्रकार के रूपों को दिखलाती है, जैसे गॉथी ['bringan-ˈbra:hta] 'लाना', 'लाया' ['θankjan- θa:hta] 'सोचना', 'सोचा'। बिना [n] वाले रूप सभी दीर्घस्वर के ठीक बाद [h] रखते हैं। इन रूपों को देखने से जो यह आशंका ह ती है कि यहाँ [n] का लोप हो गया है और उसके स्थान पर दीर्घीकरण हुआ है उसकी अन्य भारत-यूरोपीय भाषाओं के साथ तुलना करने पर पुष्टि हो जाती है, जैसे लैटिन vincere "जीतना" : गॉथी [ˈwi:han] "लड़ना"। इसके अतिरिक्त हमें बारहवीं सदी के आइसलैण्डी वैयाकरणों के कथन मिलते हैं कि उस भाषा में [θe:l] *ˈθinhlo: से निकला हुआ) रूपों में सानुनासिक स्वर है। प्राचीन अंग्रेजी में ऐसे रूपों में जहाँ अन्य जर्मनी भाषाओं में [a:] था [o:] मिलता है, जैसे -['bro:hte] 'लाया', ['θo:hte] 'सोचा'। हम तर्कानुसार यह मान सकते हैं कि यह विभिन्न स्वरमात्रा प्राचीन अनुनासिकीकरण के प्रतिरूप है क्योंकि और उदाहरणों में भी प्राचीन अंग्रेजी पूर्वकालीन सानुनासिक [a:] के स्थान पर [o:] को प्रदर्शित करती है। [h] के बाद [n] का लोप प्राग्-जर्मनी में होता था। अधिकांश

जर्मनी बोलियों में अघोष ऊष्म [f, s, θ] वैसा का वैसा ही बना रहता था किन्तु अंग्रेजी फ्रीजी और कुछ समीपवर्ती बोलियों में [n] का लोप हो चुका था और क्षतिपूर्वीय दीर्घीकरण होता था। इन स्थलों में भी दीर्घ और अनुनासिक [a] के स्थान पर प्राचीन अंग्रेजी में [o:] मिलता है। इस प्रकार शब्द five, us, mouth, soft, goose, other प्राचीन जर्मन प्रलेखों में [finf, uns, mund sanfto, gans, 'ander] (प्राचीन [d] के स्थान पर [θ] के साथ) किन्तु प्राचीन अंग्रेजी में [fi:f, u:s, mu: θ, 'so:fte, go:s, 'o:ðer] मिलते हैं।

जब दो स्वरों के बीच व्यंजन का लोप हो जाता है तब एक के बाद आने वाले स्वरों का संक्षेपन (contraction) होता है और एक अकेला स्वर अथवा संध्यक्षर संयोजन बन जाता है। हमारे प्राचीनतम अंग्रेजी आलेखों में भी एक [h] दिखाई पड़ता है लेकिन शीघ्र ही आगे जाकर यह लुप्त हो गया और अकेला स्वर लिखा हुआ मिलता है। इस प्रकार शब्द toe पहले tahae, कदाचित् '[ta:hɛ], किन्तु शीघ्र बाद में *ta*[ta:] मिलता है। एक प्राग्-अंग्रेजी प्रतिरूप* ['θanho:n] "चिकनी मिट्टी", पहले thohae[θo:hɛ] और फिर [θo:] मिलता है। गॉथी ['ahwa] "नदी", (लैटिन aqua "पानी") प्राचीन अंग्रेजी में ea [e:a] मिलता है और इसका प्राग्-अंग्रेजी रूप *['ahwu] था। गॉथी ['sehwan] "देखना" का प्राचीन अंग्रेजी में seon [se: on] मिलता है।

21.7 अधिकतर स्वर दूसरे अक्षरों के अपने पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती स्वरों से समीकृत हो जाते हैं। मध्ययुग के आरंभ में इस प्रकार के परिवर्तन अनेक जर्मन बोलियों में हुए। जर्मन-भाषाओं के ये परिवर्तन अभि-श्रुति की संज्ञा से सूचित होते हैं। कुछ भ्रामक रूप से यह शब्द प्रतिफलित व्याकरणिक एकान्तरणों के लिए भी लागू होता है। अभि-श्रुति का सामान्यतम प्रतिरूप बलाघातयुक्त पश्चस्वर का, परवर्ती [i, j] से आंशिक समीकरण है। प्रतिफलित एकान्त प्रतिबाधक [i, j] के लोप के बाद शुद्धरूप व्याकरणिक हो गया :

पूर्व-अंग्रेजी	**प्राचीन-अंग्रेजी**	**आधुनिक-अंग्रेजी**
*[gold]	gold	सोना (gold)
*['guldjan]	gyldan	(gild)

*[mu:s]	mus [mu:s]	चूहा (mouse)
*['mu:si]	mys [my:s]	चूहे (mice)
*[fo:t]	fot [fo:t]	पैर (foot)
*['fo:ti]	fet [fe:t]	पैरों (feet)
*[gans]	gos [go:s]	हंस (goose)
*['gansi]	ges [ge:s]	हंसों (geese)
*[drank]	dranc [drank]	पिआ (drank)
*['drankjan]	drencean [drenkan]	भीगा (drench)

प्राचीन नार्स में अन्य दूसरे प्रकार की भी अभिश्रुति थी, यथा [a] का अनुग्रामी स्वर [u] के अनुसार पश्च-स्वर की ओर समीकरण, यथा *['saku] 'accusation' प्राचीन अंग्रेजी sacu 'झगड़ना,)>प्राचीन नार्स [sɔk]। निस्संदेहरूप से नई रचनाओं के नियमन द्वारा पूरित इसी प्रकार के परिवर्तन के कारण अवश्य ही स्वरों में एकरूपता आ गई होगी जो तुर्कतातारी तथा कुछ अन्य भाषाओं में (§11.7) मिलती है।

सरलीकरण का प्रभाव बहुत स्पष्टरूप से स्वरों के लोप तथा ह्रस्वीकरण में दिखाई पड़ता है। शब्दों के अन्त्य साक्षर में, तथा विशेषरूप से अन्त्य स्थान में, भाषाओं की सभी रीतियों में यह दिखाई पड़ता है। केन्द्रीय अलगोंकी भाषाओं में केवल फाक्स में ही अन्त्य स्वर बने हुए हैं: आदिम केन्द्रीय अलगोंकी *[eleniwa] आदमी > फॉक्स [neniwa], ओजिब्वा [inini], मिनोमनी [enɛ: niw], प्लेन क्री [ijiniw]। दो अक्षरोंवाले शब्दों के कुछ निश्चित प्रतिरूप, इस ह्रस्वीकरण के अपवाद हैं *[ehkwa] 'louse' > फाक्स [ehkwa] ओजिब्वे [ihkwa], मिनोमनी [ehkuah], क्री [ihkwa]।

प्रबल-शब्द-बलाघात-युक्त भाषाओं का स्वर अधिकतर लुप्त हो जाता है अथवा दुर्बल पड़ जाता है। अन्त्य-स्वरों का लोप यथा प्राचीन अंग्रेजी में (ic) singe > (I) sing अन्त्यवर्णलोप के नाम से जाना जाता है। मध्यम स्वरों के लोप को यथा प्राचीन अंग्रेजी stānas>stones [stownz को syncope कहते हैं। आदिम जर्मन के दीर्घरूप, प्राचीन अंग्रेजी के ह्रस्वतर रूप, तथा आधुनिक अंग्रेजी के अति लघ्वीकृत रूपों का विरोध, इस प्रकार के क्रमिक परिवर्तनों के कारण है। इस प्रकार आदिम भारतयूरोपीय

*['bheronom] "ढोने की क्रिया" संस्कृत 'भरणम्', आदिम जर्मन *[beranan] से प्राचीन अंग्रेजी beran, मध्ययुगीन अंग्रेजी bere और तब आधुनिक अंग्रेजी to bear निकला है। कुछ शब्दों की पदसंहिति में इस प्रकार निरूपण की प्रवृत्ति जैसे कि वे पूर्ववर्ती या पश्चवर्ती शब्दों के ही अंश हों, आदिम भारतयूरोपीय से आई है। जब आदिम जर्मन काल में, हर शब्द पर एक उच्च बलाघात पड़ता था, इन स्वरित रूपों पर कोई भी बलाघात नहीं था। बाद में बलाघातहीन स्वरों के दुर्बलीकरण के कारण इस प्रकार के शब्दों के सन्धि-वैकल्प, बलाघातहीन अथवा बलाघातयुक्त हुए। अंग्रेजी के इतिहास में इस प्रकार का दुर्बलीकरण बार-बार हुआ है किन्तु प्रतिफलित परिवर्तन पुनःरचना द्वारा जिसमें या तो समूचे रूप का बलाघातहीन अथवा बलाघातयुक्त निर्बल प्रयोग होता है बहुत सीमातक समाप्त हो चुके हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का on मध्ययुग में सबल रूप था। इस शब्द का [on'wej] था। यह निर्बल रूप में जिसका प्राचीन अंग्रेजी रूप on 'weg निर्बल रूप a था, यथा away कुछ सीमित संयोजनों में ही दिखाई पड़ता है, यथा away, ashore, aground, aloft तथा अनिर्बल रूप बलाघातहीन स्थानों में अब प्रयुक्त होता है, यथा on the table किन्तु यहाँ इसका नया निर्बलीकरण हो गया है जिसके फलस्वरूप बलाघातयुक्त [ɔn] के अतिरिक्त बलाघातहीन [ɔn] भी प्रयुक्त होता है, यथा go on [gow'cn] में। इसकी तुलना में अंग्रेजी सर्वनाम I में जिसका बलाघातयुक्त तथा बलाघातहीन दोनों स्थितियों में प्रयोग किया जाता है, एक प्राचीन बलाघातहीन रूप का आभास मिलता है जिसमें प्राचीन अंग्रेजी ic के अन्त्य व्यंजन का लोप हो गया है। प्राचीन बलाघातयुक्त रूप [itʃ] I कुछ स्थानीय बोलियों में बना हुआ है। इन परिवर्तनों ने अपना चिन्ह अनेक शब्दों में बलाघातहीन सन्धि में छोड़ रखा है, यथा is, किन्तु he's here, will में [z] किन्तु केवल I'll go, में Il।

not, किन्तु isn't में [nt] तथा कुछ बलाघातहीन समासों के निर्बल रूपों में man किन्तु gentleman में [-mən] swain किंतु boatswain, में [-sn]। लैटिन की तुलना में फ्रेंच शब्दों के लघुरूप का कारण भी वही उपादान है, यथा centum >cent[sa] में। इस लघ्वीकरण के समय से फ्रेंच में प्रबल बलाघात का लोप हो गया है तथा रूपों का लघ्वीकरण रुक गया है।

यदि एक भाषा में उस समय इस प्रकार के परिवर्तन हैं जबकि पदरूप से सम्बद्ध रूपों में बलाघात भिन्न अक्षरों पर पड़ता है तो इसके परिणामस्वरूप

रूपप्रक्रिया अति-अनियमित होती है। इसका आरम्भ विदेशी सीखी शब्दावली में देखा जा सकता है जिसमें विभिन्न व्युत्पन्न रूपों के विभिन्न अक्षरों पर बलाघात पड़ता है : angel ['ejndʒl] किन्तु angelic [ɛn'dʒe'lik'] आदिम जर्मन में क्रियारूपों में पूर्वप्रत्यय पर बलाघात नहीं था किन्तु अधिकांश दूसरे शब्दों पर था। दुर्बलीकरण जिसने रूप-प्रक्रिया से जुड़ी हुई कुछ शृंखलाओं को तोड़ दिया, प्रारम्भ हो गया था :

प्राक्-अंग्रेजी *[bi-ˈha:tan] "धमकी देना">प्राचीन अंग्रेजी behatan, (be'ha:tan) किन्तु प्राक्-अंग्रेजी * ['bi-ha:t] 'एक धमकी' > प्राचीन अंग्रेजी *be:ot* [be:ot]।

इसी प्रकार की प्रक्रिया के कारण प्राचीन आयरी की रूप-प्रक्रिया तथा संधि-संबंधित वाक्य-प्रक्रिया अति अनियमित हो गई।प्राक्-आयरी *[ˈbereti] "वह धारण करता है" > प्राचीन आयरी berid [ˈberið];

प्राक्-आयरी *[eksˈberet "वह धारण करता है">प्राचीन आयरी asbeir [asˈber] 'वह कहता है'।

प्राक्-आयरी *[ne esti ˈeks beret] 'not it-is that-he forth-' brings (अर्थात् "वह नहीं लाता है")>प्राचीन आयरी ni epir [ni:'epir] "वह नहीं कहता है।"

21.8 कुछ परिवर्तनों में जो ऊपरी दृष्टि से निर्बलीकरण अथवा गति के संक्षिप्त रूप नहीं लगते, सरलीकरण दिखाई पड़ सकता है। अनेक भाषाओं में मध्यवर्ती व्यंजन का गुच्छ रूप में अन्तःप्रवेश दिखाई पड़ता है। आदिम-भारतयूरोपीय [sr] जर्मनी तथा स्लावी में [str] रूप में दिखाई पड़ता है। इस प्रकार आदिम भारतयूरोपीय *[srow-] (तुलना के लिए संस्कृत स्रवति) का आभास आदिम जर्मन के *[ˈstrawmaz] 'झरना' में मिलता है। प्राचीन नार्स [stra-wmr] प्राचीन अंग्रेजी [stre:am] तथा प्राचीन बल्गेरिया में [struja] 'झरना' अंग्रेजी में एकाधिक बार [nr, nl] समूह में [d] का और [mr, ml] समूह में [b] का अन्तःप्रवेश हुआ है। प्राचीन अंग्रेजी [ˈθunrian]>[to] thunder; प्राचीन अंग्रेजी ['alre] (कर्मकारक)> alder; गाथी में ['timrjan] "संरचना करना" तथा [ˈtimbrjan] दोनों रूप हैं।

किन्तु प्राचीन अंग्रेजी में [ˈtimbrian] तथा [je'timbre] 'बढ़ई का

काम' ही रूप है जिससे आधुनिक timber निकलता है। प्राचीन अंग्रेजी ['θymle]>thimble अंगुश्ताना। इन परिवर्तनों में अतिरिक्त गति निहित नहीं है अपितु क्रमिक रूप से एक समय की गतियों का विस्थापनमात्र है। उदाहरण के लिए [n] से [r] तक गुजरने में एक वक्ता को उसी समय कोमलतालु से अवश्य ही ऊपर उठाना पड़ता है तथा अपनी जिह्वा को स्पर्श स्थान से लुण्ठित स्थान तक ले जाना पड़ता है:

[n] [r]

कोमलतालु नीचे की ओर———→कोमलतालु ऊपर उत्थित

दन्त्य स्पर्शन——— ———————→लुण्ठित स्थिति।

यदि अपेक्षाकृत कम सूक्ष्म समन्वयन के साथ, कोमल तालु को जिह्वा स्थान बदलने के पूर्व ऊपर उठाया जाए, तो एक क्षण अनासिक्य स्पर्शन का आता है जो [d] स्वनिम के समस्तरीय है:

[n] [d] [r]

कोमलतालु नीचे की ओर——→(कोमलतालु ऊपर
(
(की ओर

दन्त्य स्पर्शन ——→लुण्ठित स्थिति

इनमें से दूसरी स्थिति पहली की अपेक्षा सरल है।

अन्य स्थितियों में भी एक रूप का बाह्यरूप से दीर्घीकरण भी उच्चारण प्रयत्न लाघव के अन्तर्गत लिया जा सकता है। जब अपेक्षाकृत मुख्य स्वनिम अनाक्षरिक होता है तो अधिकतर इसकी कार्यकारिता आक्षरिक हो जाती है। इस परिवर्तन की संस्कृत संज्ञा 'सम्प्रसारण' नाम से जानी जाती है। इस प्रकार उपमानक अंग्रेजी elm [elm] परिवर्तित होकर ['elm̩] हो गया। अधिकतर इसका अनुगामी एक और प्रकार का परिवर्तन भी होता है, जिसे स्वरविभक्ति (विप्रकर्ष) कहते हैं। सघोष के समीपवर्ती स्वर का उत्थान जो अनाक्षरिक हो जाता है आदिम भारतयूरोपीय *[agros] 'खेत' से प्राक्-लैटिन *[agr] निकला है। इसमें [r] अवश्य ही आक्षरिक हो गया होगा और फिर विप्रकर्षी स्वर उत्थित हुआ होगा क्योंकि ऐतिहासिक लैटिन ager ['ager] में e पूर्णरूप से रचे स्वर का प्रतिनिधित्व करता है। इसी प्रकार आदिम जर्मन रूप *['akraz] "खेत", [foglaz]*

"चिड़िया", *['tajknan] "चिह्न". *['majθmaz] "बहुमूल्य वस्तु" का पुरानी बोलियों में बलाघातहीन स्वर लुप्त हो गया। गाथी रूप [akrs, fugls, tajkn, majθms] शायद एकाक्षरिक अथवा आक्षरिक सघोष रहे हों। प्राचीन अंग्रेजी रूपों ['ɛker, 'fugol, 'ta:ken, 'ma:ʒom] में स्वर-विभक्ति हुआ यद्यपि यहाँ भी fugl के तरह की वर्तनी असाधारण नहीं है।

दूसरा परिवर्तन जिसे प्रयत्नलाघव के अन्तर्गत रखा जा सकता है, बलाघात प्रयोग करने वाली कुछ भाषाओं के इतिहास में दिखाई पड़ता है। बलाघातयुक्त स्वरों की मात्रा का नियमन परवर्ती स्वनिमों के गुणानुसार हुआ है। सामान्यतः मुक्त (स्वरान्त) अक्षरों में अर्थात् एकल व्यंजन के पूर्व जिसके बाद दूसरा स्वर आता है दीर्घ स्वर दीर्घ बने रहते हैं तथा ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाते हैं। अन्य स्थानों में दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं तथा ह्रस्व, ह्रस्व बने रहते हैं। इस प्रकार मध्ययुगीन अंग्रेजी के दीर्घ स्वर clene[klɛ:ne]> clean, kepe['ke:pe]>keep, mone ['mo:ne]>moon रूपों में दीर्घ बने रहे किन्तु clense>cleanse, kepte>kept, mon> (en)dai> Monday रूपों में ह्रस्व हो गए। ह्रस्व स्वरों के इन रूपों में weve [ˌweve]> weave, stele ['stele]>steal, nose ['nose]> nose दीर्घ हो गए किन्तु weft, stelth>stealth, nos (e) thirl>nostril ये ह्रस्व बने रहे। कुछ भाषाओं में यथा मिनोमनी में दीर्घ तथा ह्रस्व स्वरों का पूर्ववर्ती तथा परवर्ती व्यंजनों तथा उपान्त्य दीर्घस्वर के बाद अक्षरों की संख्या अनुसार जटिल नियमन मिलता है।

मात्रासंबंधी भेद का पूर्ण लोप, जो उदाहरणार्थ मध्ययुगी ग्रीक तथा आधुनिक स्लावी भाषाओं में हुआ उच्चारण प्रवृत्ति को अधिक से अधिक एकरूप बना देता है। अक्षरसुर प्रभेद का त्याग जो इन्हीं भाषाओं में हुआ है इनके इस संबंध में भी यही कहा जा सकता है। इसी प्रकार एक रूप से एक स्थान की ओर शब्द सुरों का ले जाया जाना यथा प्राक्-जर्मन तथा बोहेमी में प्रथम अक्षर तथा पोली का उपान्त्य भी सम्भवतः प्रयत्न-लाघव के अन्तर्गत आता है।

उसी अर्थ में, स्वनिम इकाइयों का लोप भी प्रयत्न लाघव के अन्तर्गत किया जा सकता है। अंग्रेजी तथा आइसलैण्डी को छोड़कर जर्मन भाषाओं में [θ] का लोप हो गया है तथा सघोष रूप में यह [ð] हो गया है। यह पूर्वरूप फ्रीजियन तथा स्कैन्डनेवी में अधिकतर [t] से मेल खाता है,

यथा स्वेडी में torn [to:rn:] thorn उसी आदि के साथ जैसा tio [ˈti:e]: ten में तथा डच-जर्मन क्षेत्र के उत्तरी भाग में [d] के साथ, यथा डच में doorn [do:rn:] thorn उसी आदि के साथ, यथा doen [du:n] :do व्यंजन के पूर्व प्राचीन अंग्रेजी [h] यथा niht "रात" में अथवा अन्त्य स्थान में यथा seah "मैंने देखा" में निस्सन्देह रूप ध्वानिकी दृष्टि से अघोष कंठ्य तालव्य संघर्षी था। अधिकाँश अंग्रेजी क्षेत्रों में इस ध्वनि का लोप हो गया था अथवा अन्य स्वनिमों से इसका ऐक्य हो गया है।

21.9 **यद्यपि** अनेक ध्वनिपरिवर्तन भाषाई रूपों को लघु बना देते हैं, ध्वन्यात्म व्यवस्था को सरल कर देते हैं। फिर भी कोई भी अध्येता ध्वनि-परिवर्तन तथा पूर्ववृत्तीय स्थिति में सहसंबंध स्थापित करने में सफल नहीं हो सका। ध्वनिपरिवर्तन के कारणों का पता नहीं है। जब बड़े पैमाने पर लघ्वी-करण तथा स्वरलोप मिलने लगता है तो यह मान लेना अधिक अप्रयुक्त होता है कि भाषा में प्रबल शब्द बलाघात था किन्तु अनेक भाषाएँ जिनमें प्रबल शब्द बलाघात होता है बलाघातहीन स्वरों को निर्बल नहीं करतीं। उदाहरण के लिए इतालवी, स्पेनिश, बोहेमियाई, पोली। [kn-, gn-] का [n-[में अंग्रेजी में परिवर्तन इसके घटित हो जाने पर स्वाभाविक लगता है किन्तु यह 18वीं शताब्दी के पूर्व कैसे घटित हुआ तथा क्यों अन्य जर्मन भाषाओं में नहीं घटित हुआ है ?

प्रत्येक विचारणीय कारण को लिया गया है : 'जाति', 'जलवायु' भौगो-लिक स्थितियाँ, भोजन, पेशा तथा जाने की सामान्य रीति इत्यादि। वुन्डट [wundt] ने ध्वनि-परिवर्तन को भाषण की तीव्रगति से जोड़ा था और यह तीव्रता स्वयं में सांस्कृतिक तथा सामान्य रूप से प्रतिभा में विकास के कारण होती है। यह कहना उचित है कि वक्ता इतनी तीव्रगति से तथा इतने कम प्रयत्न से बोलना चाहता है जितना वह कर सके और इस प्रकार यह सदा उस सीमा तक पहुँच जाता है जहाँ अन्तर्वादी भाषण को दुहराने का आग्रह करता है तथा ध्वनि परिवर्तन का अधिकाँश इस उपादान से संबद्ध है। फिर भी कोई स्थायी उपादान विशिष्ट-परिवर्तनों का कारण नहीं स्पष्ट कर सकता जो किसी एक ही काल में एक स्थान पर तो घटित होते हैं किन्तु दूसरे स्थान पर नहीं होते। इस सिद्धान्त के विरोध में भी वही विचार लागू होता है कि ध्वनि-परिवर्तन बच्चों के भाषा सीखने की अपूर्णता से उत्पन्न होते हैं। दूसरी ओर उपरोक्त उपादानों की तरह के उपादानों का अस्थायी व्यवहार

यथा प्रवृत्ति, पेशा, अथवा भोजन में परिवर्तन इस तथ्य द्वारा शासित होता है कि ध्वनि-परिवर्तन प्रायः हुआ करते हैं तथा उनमें काफी भिन्नता मिलती है।

उपस्तरण का सिद्धान्त (substratum theory) ध्वनि-परिवर्तन को भाषा के स्थानान्तरण से जोड़ता है : एक समुदाय जो किसी नई भाषा का प्रयोग करने लगता है उसे अपूर्ण ढँग से बोलेगा तथा अपनी मातृभाषा की ध्वनिरूपता के साथ। भाषा के स्थानान्तरण संबंध में आगे विचार होगा। प्रस्तुत संबंध में यह देखना महत्वपूर्ण है कि उपस्तरण के सिद्धान्त द्वारा उन्हीं परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश पड़ता है, जब भाषा का प्रयोग उन्हीं लोगों द्वारा होता है जिन लोगों की यह द्वितीय-भाषा होती है। उपस्तरण-सिद्धान्त के रहस्यवादी संस्करण का कोई अर्थ नहीं है जिसमें परिवर्तन होते है, यथा आधुनिक जर्मन भाषाओं में से एक केल्टी उपस्तरण में—अर्थात् उस तथ्य से, कि अनेक शताब्दियों पूर्व, कुछ वयस्क केल्टी वक्ताओं ने जर्मन भाषण सीख लिया। फिर भी केल्टी भाषा जो दक्षिणी जर्मनी में, नीदरलैण्ड और इंगलैण्ड में जर्मन-भाषा से पूर्व बोली जाती थी स्वयं में आक्रमणकारियों की भाषा थी। इस सिद्धान्त के आधार पर अतीत की ओर लौटना होता है जब एक जाति से दूसरी जाति की अस्पष्ट प्रवृत्तियों का कारण स्पष्ट हो जाता है जो स्वयं में ध्वनिपरिवर्तन की वास्तविक ऐतिहासिक अवस्थिति को व्यक्त करती हैं।

सह-संबंध स्थापित न करने के अतिरिक्त इस प्रकार के सिद्धान्त इस तथ्य से कट जाते हैं कि जब ध्वनि-परिवर्तन से कोई ध्वन्यात्म लक्षण मिट जाता है बाद में के ध्वनि-परिवर्तन इसी लक्षण के नवीनीकरण के फलस्वरूप हो सकते हैं। यदि कुछ विशेष गुण ओदिम भारतयूरोपीय अघोष स्पर्श [p, t, k] पर आरोपित किए जाएं—निर्देशन के लिए मान लिया जाय कि वे प्राणहीन सबल रूप थे—फिर पूर्व जर्मन-वक्ता जिन्होंने इन ध्वनियों को संघर्षी [f, θ, h] की दिशा में परिवर्तन आरम्भ कर दिया था, निस्संदेह मूलध्वनियों को उच्चरित करने में असमर्थ थे, ठीक वैसे ही जैसे आज का अंग्रेजी वक्ता फ्रेंच अल्पप्राण [p, t, k] का उच्चारण नहीं कर पाता। फिर भी परवर्ती काल में आदिम भारतयूरोपीय [b, d, g] पूर्व जर्मन में अघोष [p, t, k] में बदल गए थे। ये ध्वनियाँ प्रथम वर्ग में आनेवाली ध्वनियों से मेल नहीं खाती थीं। प्रथम वर्ग की ध्वनियों में अब [p, t, k] की विशिष्टता नहीं रही, वे महाप्राण में बदल गए अथवा स्पर्श संघर्षी में

अथवा सम्भवतः वे संघर्षी पहले से ही थे। दूसरी ओर दूसरे वर्ग की ध्वनियों में वही परिवर्तन नहीं हुआ जैसा कि पहले वर्ग की ध्वनियों में हुआ, क्योंकि जैसा कहा जाता है [p, t, k] का [f, θ, h] में परिवर्तन बीत चुका था। अपेक्षाकृत अधिक सही यह कहना होगा कि [p, t, k] ध्वनि-परिवर्तन के मार्ग पर पहले से ही था। नया [p, t, k] एक भिन्न-प्रवृत्ति से बना था जिसने प्राचीन प्रवृत्ति के विस्थापन में हाथ नहीं बँटाया। समय पाकर [p, t, k] महाप्राण हो गए जैसाकि वे आधुनिक अंग्रेजी में हैं जिससे कि एकबार फिर हम अल्पप्राण, अघोष स्पर्श ध्वनियों को उच्चरित करने में असमर्थ हैं।

अंग्रेजी ध्वनि-परिवर्तन जिन्हें महास्वर विवर्तन (the great vowel -shift) के नाम से जाना जाता है इस प्रतिरूप के हैं कि उनका प्रभाव प्रत्येक स्वनिम के ध्वानिकी रूपों में परिवर्तन लाने के अतिरिक्त बहुत कम पड़ता है। दीर्घस्वर क्रमिक रूप से ऊपर की ओर तथा संध्यक्षरीय प्रतिरूपों में स्थानान्तरित हुए थे :—

मध्ययुगीन अंग्रेजी >	पूर्व-आधुनिक, युग के	> आधुनिक
[ˈna:me]	[ne:m]	[nejm]—नाम
[dɛ:d]	[di:d]	[dijd]—कार्य
[ge:s]	[gi:s]	[gijs]—हंस
[wi:n]	[wejn]	[wajn]—शराब
[stɔ:n]	[sto:n]	[stown]—पत्थर
[go:s]	[gu:s]	[guws]—हंस
[hu:s]	[hows]	[haws]—घर

दूसरा सिद्धान्त एक भाषा की रूपात्मक दशा के कुछ ध्वनि-परिवर्तनों के कारण की खोजबीन करता है, यह मानते हुए कि दुर्बल अर्थवाले रूपों का उच्चारण दूषित हो जाने पर वह स्थायीरूप से निर्बल पड़कर लुप्त हो जाता है। इस सिद्धान्त पर उन सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त की तरह जो शुद्धरूप से ध्वन्यात्म परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता है विचार किया जा चुका है (§ 20.10)। कोई ऐसा पैमाना नहीं जिससे कि भाषा के बाह्य क्षणों को देखा जा सके कि वे आर्थी से निर्बल हैं अथवा अनावश्यक। यदि अर्थ के सभी लक्षणों को, व्यापारायासी अभिधानों को छोड़कर, जो

वैज्ञानिक वार्तालाप में आते हैं, निष्प्रयोजन मान लिया जाय, तो इस सिद्धान्त से लगभग सभी भाषाओं से बहुत सारे रूपों के लोप को मान लेना होगा; उदाहरण के लिए, आधुनिक जर्मन में रूपसाधक अन्त-तक की दृष्टि से निरर्थक हैं। विशेषण का प्रयोग बिल्कुल अंग्रेजी की तरह है और एक पाठ्य सामग्री जिसमें ये अन्त्य ओत हैं, ग्राह्य है।

वास्तव में, ध्वनिपरिवर्तनों से अधिकतर उन लक्षणों का जो धुंधले पड़ ज़ाते हैं, बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थ होता है। कोई भी व्याकरणिक अन्तर भारत-यूरोपीय भाषा के कर्त्ता तथा क्रिया-लक्ष्य की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकता था। फिर भी आदिम भारतयूरोपीय कर्त्ता *[-os] में यथा संस्कृत 'वृकः', ग्रीक ['lukos] लैटिन lupus आदिम जर्मनः *['wolfaz] गॉथी wulfs के बीच का अन्तर, प्राक्-अंग्रेजी के शब्दान्त के निर्बल पड़ने के कारण, धुंधला नहीं पड़ा था जिससे कि दोनों स्थितियाँ एक दूसरे में अन्तयुक्त हो गईं, यहाँ तक कि wulf "भेड़िया" रूप में, अंग्रेजी के प्राचीनतम आलेख में भी। प्राचीन अंग्रेजी में कुछ संज्ञा-प्रतिरूप यथा कर्त्ता caru : कर्म care में अभी तक भेद बना हुआ था; 1,000 ईस्वी सन् तक बलाघातहीन स्वरों से निबलन के कारण ये सम्भवतः ['kare] रूप में अन्तर्युक्त हो गए थे। उसी प्रकार ध्वनिपरिवर्तन के कारण सभी प्रकार के समध्वनि रूप मिलते हैं, यथा meet: meat; meed: mead (चरागाह) : mead (पेय), knight: night. इसका प्राचीन क्लासिकी उदाहरण चीनी-भाषा का है, क्योंकि यह दिखाया जा सकता है कि आधुनिक भाषाओं के बहुत सारे सम-ध्वनि रूप विशेषरूप से उत्तरी चीन के ध्वन्यात्म परिवर्तन के कारण हैं। समध्वनि तथा संहतिवाद, रूपसाधक कोटियों के एकीभवन, ध्वनिपरिवर्तन के प्रसामान्य परिणाम हैं।

आर्थी निबलन का सिद्धान्त कुछ निश्चित सूत्रों तक अति-आलेय (excess slurring) के साथ लागू होता है (§ 97)। ऐतिहासिक दृष्टि से इन सूत्रों की व्याख्या मात्र सामान्य ध्वनिपरिवर्तन की अतिशयता रूप में की ज़ा सकती है। इस प्रकार, good-bye से प्राचीनतर God be with ye का प्रतिनिधित्व होता है, ma'm से प्राचीनतर madam का, स्पेनी usted [u'sted] से एक प्राचीनतर vuestra merced ['vwestra mer'θed] का तथा रूसी [s] यथा [das] में से प्राचीनतर ['sudar] "लार्ड" का। फिर भी इन स्थितियों में सामान्य भाषणरूप, आलिप्त रूप से पार्श्व में अवस्थित मिलता

है। इन रूपों में अति निबलन की व्याख्या नहीं हुई है तथा निस्सन्देह रूपसे किसी तरह वह उस रूप से संबंधित है जिसे इन परम्परागत सूत्रों का उपभाषाई पद वाला कहा जा सकता है। किसी भी दशा में इनका अतिनिबलन साधारण ध्वनिपरिवर्तन से बहुत भिन्न होता है।

क्योंकि ध्वनि-परिवर्तन एक आरम्भ तथा अन्त वाली ऐतिहासिक घटना है निश्चित समय के लिए तथा निश्चित वक्ताओं के लिए सीमित है। इसके कारण, सर्वदेशीय अथवा अन्य स्थान तथा काल में वक्ता को रखकर, नहीं पाए जा सकते। एक ध्वनिशास्त्री ने [azna>asna] प्रतिरूप परिवर्तन के कारण को, एक प्रयोगशाला में अनेक लोगों को, जिन्हें ध्वनिक्रम [azna] के उच्चारण का निर्देश था, क्रमशः कई बार उच्चारण कराकर, निश्चित करने का प्रयत्न किया जो अवेस्ता के प्राक्-ऐतिहासिक काल में घटित हुआ था। अधिकांश लोग—वे लोग फ्रेंच थे—कोई हल नहीं दे सके, किन्तु अन्त में एक ऐसा भी निकला जिसने अन्त में [asna] कहा। ध्वनिशास्त्री का उत्साह इस तथ्य से ठण्डा नहीं पड़ा कि अन्तिम व्यक्ति जर्मन था जिसकी मातृभाषा में [z] ध्वनि आक्षरिक के पूर्व आती है।

यह सुझाव दिया गया है कि यदि एक स्वनिम एक भाषा में निश्चित सापेक्ष आवृत्ति (§ 8.7) से अधिक बार आता है तो इस स्वनिम के उच्चारण में आलेप हो जाएगा तथा परिवर्तन होगा। ऐसा माना जाता है कि सह्य आवृत्ति की उच्चतम सीमा विभिन्न स्वनिम प्रतिरूपों के साथ भिन्न होती है। इस प्रकार [t] अंग्रेजी में उच्चरित स्वनिमों में 7 प्रतिशत से भी अधिक प्रयुक्त होती है तथा अन्य अनेक भाषाओं (रूसी, हंगेरियन, स्वेडी, इतालवी) में अघोष दन्त्य स्पर्श के प्रयोग का यही प्रतिशत होता है जबकि दूसरी ओर [d] प्रतिरूप अपेक्षाकृत निम्न सापेक्ष आवृत्ति (अंग्रेजी में 5 प्रतिशत से कम) के साथ आने के इस सिद्धान्त के आधार पर [t] की सापेक्ष आवृत्ति तक पहुँचने के पूर्व ध्वनिपरिवर्तन का भागी हो सकता है। एक स्वनिम की सापेक्ष आवृत्ति प्रमुख रूपों की आवृत्ति से शासित होती है जिसमें वह स्वनिम आता हो। इस प्रकार अंग्रेजी में [ð] को प्रत्यक्षरूप से *the* की उच्च आवृत्ति के कारण समर्थन प्राप्त होता है। प्रमुख रूपों की आवृत्तियों की जैसा कि देखा जाएगा व्यावहारिक जीवन के परिवर्तन के अनुसार निरंतर अस्थिरता होती रहती है। इसलिए इस सिद्धान्त में सदा अवस्थित तथा फिर भी अति वैकल्पिक उपादानों के साथ ध्वनिपरिवर्तन का सहसंबंध जोड़ने का गुण है। यदि

स्वनिमों के प्रतिरूपों की निरपेक्ष उच्च सीमा हो सके तथा एक भाषा के एक स्तर पर स्वनिम परिवर्तन के कुछ ही पूर्व एक स्वनिम की वास्तविक आवृत्ति का निर्धारण किया जा सके तो इसकी भी परीक्षा हो सकती थी—यथा havok>hawk परिवर्तन के पूर्व अंग्रेजी का [v]। फिर भी परिवर्तन की विशिष्ट प्रवृत्ति का निरूपण बाकी रह जाएगा क्योंकि किसी एक सामान्य प्रतिरूप के स्वनिम विभिन्न भाषाओं के इतिहास में विभिन्न प्रकार से परिवर्तित हुए हैं। इस सिद्धान्त के प्रतिपक्ष में भाषाओं के बीच के महत् ध्वन्यात्म अन्तरों को तथा कुछ भाषाओं में उच्च आवृत्ति को जिसे असामान्य ध्वन्यात्म प्रतिरूप कहा जा सकता है, अवश्य तोलना होगा। [ð] जो अंग्रेजी में इतना महत्वपूर्ण है कि किसी समय ([d] में प्राक्-पश्चिमी जर्मन परिवर्तन द्वारा) विलुप्त कर दिया गया था डच-जर्मन में उसी प्रकार बना रहा। बाद में इसे संयोगवश [θ] से [ð] में परिवर्तन द्वारा अंग्रेजी में पुनः लाया गया।

21.10 भाषाई परिवर्तन जिनका सामान्यतः ध्वनिपरिवर्तन रूप में वर्णन किया जाता है, जिनमें धीरे-धीरे स्वनिम इकाइयां बदल जाती हैं, ऐसे ध्वन्यात्म परिवर्तन की परिभाषा में नहीं आते। उदाहरण के लिए यूरोप के अनेक भागों में प्राचीन जिह्वानोक, लुण्ठित [r] के स्थान पर आजकल अलिजिह्व लुण्ठित ध्वनि प्रयुक्त होने लगी है। यह स्थिति उत्तरी उम्ब्री, अंग्रेजी, डैनी, दक्षिणी नार्वेजियन, स्वेडी, फ्रेंच के अधिक नागरी प्रतिरूप (विशेषतः पेरिस में) तथा डच-जर्मन में मिलती है। आदान द्वारा इसके विस्तार के अतिरिक्त, नई प्रवृत्ति चाहे जिस किसी भी काल तथा स्थान में पहले पनपी हो, मात्र एक लुण्ठित ध्वनि के दूसरे लुण्ठित ध्वनि से आकस्मिक विस्थापन द्वारा आरम्भ हुई होगी। इस प्रकार का विस्थापन निश्चित रूप से उस विस्थापन से भिन्न है जिससे ध्वन्यात्म-परिवर्तन धीरे-धीरे अदृश्य रूप से होता है।

कुछ परिवर्तन स्वनिमों के पुनः वितरण से होता है। इनमें से सामान्यता का विषमीकरण हुआ लगता है। जब एक स्वनिम अथवा स्वनिम प्रतिरूप एक रूप के अन्तर्गत बार-बार आते हैं, इनमें से एक की पुनरावृत्ति के स्थान पर कभी-कभी एक भिन्न ध्वनि आ जाती है। इस प्रकार लैटिन peregrīnus "विदेशी, अजनवी" के स्थान पर रोमानी भाषाओं में, एक प्रतिरूप *pelegrīnus आता है, यथा लैटिन में pellegrino तथा अंग्रेजी में pilgrim जो रोमानी भाषाओं से आगत है। इन दोनों में से प्रथम रूप के [r] के स्थान पर [l] आ

गया है। यूरोप की भाषाओं में [r, l, n] ध्वनियों में विशेषरूप से इस प्रकार का विस्थापन होता है। विस्थाप्य ध्वनि सामान्यतः उसी समुदाय में की कोई ध्वनि होती है। जहां कहीं विस्थापन होता है यह कुछ निश्चित नियमों का अनुगमन करता है किन्तु इसकी अवस्थिति का पूर्वानुमान नहीं किया जा सकता। परिवर्तन यदि चलता रहा तो यह एक ऐसी स्थिति लाएगा जहां कुछ ध्वनियों की अवस्थिति यथा, [r] और [l] की, शब्द में नहीं अनुमोदित थी—यह स्थिति वास्तव में प्रतीकात्मक शब्दों के आधुनिक अंग्रेजी व्युत्पन्न रूपों से बनी हुई है जहां clatter, blubber तरह के शब्द हैं किन्तु rattle, crackle (§ 14.9)। सम्भवतः इस प्रकार का परिवर्तन साधारण ध्वन्यात्म परिवर्तन से नितान्त भिन्न है।

एक प्रकार का विषमीकरण वहां भी है जहां स्वनिमों में से एक स्वनिम निकल गया है, यथा जब लैटिन quinque [ˈkwinkwe] 'पांच' के स्थान पर रोमान्स भाषाओं में *[ˈkiːnkwe], इतालवी cinque [ˈtʃinkwe] के स्थान पर फ्रेंच cinq [sɛ̃k] आता है।

अन्य अनेक प्रकार के भी ध्वन्यात्म विस्थापन दिखाई पड़ते हैं जो उपयुक्त रूप से, साधारण ध्वनिपरिवर्तन के स्तर पर नहीं रखे जा सकते। सुदूर समीकरण में एक स्वनिम के स्थान पर दूसरा सम्बन्धित ध्वानिकी प्रतिरूप स्वनिम प्रयुक्त होता है जो उसी शब्द में अन्य स्थानों पर आता है। इस प्रकार आदिम भारत *[ˈpenkwe] "पांच" संस्कृत पंच, ग्रीक [ˈpente] लैटिन [pinkwe] रूप में ही न आकर quinque रूप में दिखाई पड़ता है। प्राक्-जर्मन में इस शब्द के साथ बिल्कुल उल्टे प्रकार का समीकरण *[ˈpempe] हुआ लगता है क्योंकि प्राक्-जर्मन *[ˈfimfe] गॉथी तथा प्राचीन उच्च जर्मन में ʃimʃ प्राचीन अंग्रेजी fif इत्यादि—संस्कृत में उन शब्दों में [ç—ç] दिखाई पड़ता है जहां [s—] की सम्भावना थी।

एक शब्द के अन्तर्गत आने वाली दो ध्वनियों का आपसी हेरफेर विपर्यय कहा जाता है। सम्भावित āscian "पूछना" के अतिरिक्त प्राचीन अंग्रेजी में ācsian भी मिलता है। तगलाग में कुछ पद-रूपात्मक हेरफेर इसी प्रकार के परिवर्तन के कारण हुए लगते हैं। इस प्रकार परप्रत्यय [-an] यथा [aˈsin] "नमक" [asˈnan] 'जिसको नमकयुक्त होना है', के साथ ही कभी-कभी दो साथ-साथ आने वाले व्यंजनों का हेरफेर हो जाता है : [aˈtip] "छाजन" : [apˈtan] "जिसका छाजन होना है"; [taˈnim] "जो रोप

दिया गया'' : [tamˈnan] "जिसके भीतर पौदा रखा जा सके"। यूरोप की भाषाओं में [r-l] का सुदूर विपर्यय बहुत-ही सामान्य बात है। प्राचीन अंग्रेजी alor "आल्डरवृक्ष" के अनुरूप प्राचीन उच्च जर्मन में केवल elira ही नहीं अपितु erila भी आता है (>आधुनिक Erle) गॉथी [ˈwerilo:s] 'होठों' के लिए प्राचीन अंग्रेजी में weleras है। लैटिन parabola 'शब्द' (ग्रीक से आदान) स्पेनी में palabra रूप में दिखाई पड़ता है।

अब एक स्वनिम या स्वनिम-समुदाय एक ही शब्द में बार-बार आने लगे, तो मध्यवर्त ध्वनियों के साथ एक बार वह हटाया जा सकता है। इस प्रकार के परिवर्तन को समाक्षरलोप (haplology) कहा जाता है। इस प्रकार लैटिन nūtriō "मैं पालन करता हूं", नियमित स्त्रीलिंग कर्तृ संज्ञा *nūtrī-trīx 'नर्स' होगा। किन्तु वास्तव में रूप nūtrix है। इसी प्रकार समास जिसका सामान्यतः रूप stīpi-pendium "मजदूरी भुगतान" होगा वास्तव में stīpendium रूप में दिखाई पड़ता है। प्राचीन ग्रीक [amphi-phoˈrews] दोनों ओर से ढोनेवाला [amphoˈrews] रूप में भी दिखाई पड़ता है। इस प्रकार के परिवर्तन उन परिवर्तनों से बिल्कुल भिन्न हैं जो ध्वनिपरिवर्तन की धारणा के अन्तर्गत आते हैं। यह सम्भव है कि ये भाषाई परिवर्तन के प्रतिरूप की तरह हैं जिन पर अभी भी विचार करना बाकी है--सादृश्य-जन्य परिवर्तन तथा आदान।

अध्याय 22

रूपों की आवृत्ति में अस्थिरता

22.1 ध्वन्यात्म परिवर्तन भी पूर्व-धारणा के आधार पर भाषाई परिवर्तन को दो प्रधान प्रतिरूपों के अन्तर्गत विभक्त करता है। ध्वन्यात्म परिवर्तन का प्रभाव केवल स्वनिमों पर पड़ता है तथा भाषाई रूपों को केवल ध्वन्यात्म आकृति में परिवर्तन द्वारा परिवर्तित करता है। अंग्रेजी रूप wolf आदिम जर्मन कर्ता *[ˈwulfaz] कर्म *[wolfan] तथा अन्य अनेक कारक रूपों का आधुनिक उच्चारण है और इनका संहतिवाद (syncretism) में विलयन मात्र ध्वन्यात्म परिवर्तन का परिणाम है। अंग्रेजी [mijd] meed, प्राचीन अंग्रेजी [mɛ:d] "चरागाह" [me:d] "पुरस्कार" तथा [ˈmedu] "मधुप्रेय" का आधुनिक उच्चारण रूप है। समध्वनिक केवल उच्चारण-प्रवृत्ति में अन्तर के कारण प्रतिफलित होते हैं। ध्वन्यात्म सह-सम्बन्धों की सूची बना लेने के बाद भी बहुत सारी असंगतियाँ बची रह जाती हैं। इस प्रकार यह जान लेने पर कि प्राचीन अंग्रेजी (a:) आधुनिक मानक अंग्रेजी में [ow] रूप में दिखाई पड़ता है यथा [ba:t] <boat इत्यादि। एक असंगति प्राचीन अंग्रेजी [ba:t] "चारा" की आधुनिक अंग्रेजी bait के साथ असमानता में मिलती है। प्राचीन अंग्रेजी के आदि [f] की आधुनिक अंग्रेजी father, five, foot आदि में उपस्थिति के साथ ही हम प्राचीन अंग्रेजी [fɛt] : आधुनिक अंग्रेजी vat और प्राचीन अंग्रेजी [ˈfyksen] : आधुनिक अंग्रेजी vixen में असंगति पाते हैं। जबकि आधुनिक रूप cow का प्राचीन अंग्रेजी [ku:] के साथ सामान्य ध्वन्यात्म सह-सम्बन्ध दिखाई पड़ता है, ठीक वैसे ही जैसे house, mouse, out का प्राचीन अंग्रेजी [hu:s, mu:s, u:t] के साथ है। प्राचीन अंग्रेजी [hwy:]>why [fy:r]>fire [my:s]<mice को ध्यान में रखते हुए बहुवचन cows प्राचीन अंग्रेजी बहुवचन [ky:] "गाएं" का आधुनिक रूप नहीं हो सकता। यदि हम नियमित ध्वनि-परिवर्तन की धारणा को ही अपनाए रहें तो हम bait, vat, vixen, cows आदि रूपों को प्राचीन अंग्रेजी का आधुनिक उच्चारण नहीं मान सकते, बल्कि हमें उन्हें सामान्य परम्परा की नहीं, अन्य उपादानों की उपज मानना पड़ेगा। इस प्रकार हमारी समस्या इन अवशिष्ट रूपों में एक-

रूपता अथवा सह-सम्बन्ध पा लेने की है। उस सीमा तक जहाँ तक हम सफल होते हैं ध्वन्यात्म-परिवर्तन की पूर्व-धारणा के प्रतिमान तथा स्थापित ध्वनि-अनुरूपता की हम पुष्टि कर लेते हैं। नव्य वैयाकरण यह दावा करते हैं कि ध्वन्यात्म परिवर्तन की पूर्व-धारणा के अन्तर्गत कुछ अवशिष्ट रूप नहीं आते जिनमें महत्वपूर्ण सह-संबंध दिखाई पड़ता है तथा जो ध्वनि परिवर्तन को छोड़कर भाषाई परिवर्तन से अन्य उपादानों को समझने में हमारी सहायता करते हैं। नव्य वैयाकरणों की परिकल्पना के विरोधियों की यह मान्यता है कि ध्वनि-परिवर्तन से संबंधित एक विभिन्न पूर्व-धारणा द्वारा हमें अपेक्षाकृत अधिक ग्राह्य अवशिष्ट रूप मिलेंगे, किन्तु उन्होंने इसका परीक्षण विषय-वस्तु के पुनः वर्गीकरण द्वारा नहीं किया है।

यदि अवशिष्ट रूप ध्वनिपरिवर्तनजन्य रूपान्तरण मात्र के साथ प्राचीन रूपों की शृंखला में नहीं है तो वे अवश्य ही भाषा में नवीन रूप होंगे। हम देखेंगे कि अवशिष्ट रूपों का स्पष्टीकरण दो प्रकार के नवीन रूपों से है अर्थात् अन्य भाषा से (प्राचीन नार्स से bait) अथवा अन्य बोलियों से (दक्खिनी बोलचाल की अंग्रेजी से vat, vixen) रूप-ग्रहण तथा नए संमिश्र-रूपों के संयोजन (एकवचन संज्ञा तथा बहुवचन परप्रत्यय के योग से बने हुए बहुवचन संज्ञा cows के ढाँचे पर) से है। इन दो प्रकार के नवीन रूपों की उपस्थिति, आदान तथा समरूपी परिवर्तन पर बाद के अध्यायों में हम विचार करेंगे। इस समय हमारा सम्बन्ध केवल इस दावे से है कि वे रूप जिनका ध्वन्यात्म सह-संबंध नहीं है, भिन्न-भिन्न समय में भाषा में आए।

22.2 किसी भाषा में नवप्रस्तुत रूप यदि सामान्य व्यवहार में चल जाए—यथा cow के साधारण बहुवचन रूप में cows चलता है—तो हमें मानना पड़ेगा कि इसको प्रथम प्रस्तुति के साथ ही सर्वमान्यता प्राप्त हो गई थी। इसके विपरीत, यदि एक प्राचीन रूप यथा प्राचीन अंग्रेजी बहुवचन [ky:] जिसका उच्चारण ध्वन्यात्म विकास के कारण आज *[kaj] होता है—लुप्त हो गया है हमें अवश्य ही इसे मानना पड़ेगा कि इसे ह्रास-काल से होकर गुजरना पड़ा है और दिनों दिन इसका प्रयोग कम होता गया है। भाषण रूप में आवृत्ति में अस्थिरता सभी अध्वन्यात्म परिवर्तनों में एक उपादान है। यह अस्थिरता कुछ सीमा तक लिखित आलेखों तथा बोलचाल की भाषा दोनों में पाई जाती है। उदाहरण के लिए, कार के प्रचलन के साथ ही फ्रेंच से आदत्त गैरेज (garage) शब्द बहुप्रचलित हो गया है। वास्तव में हम

उन वक्ताओं का नाम बता सकते हैं जिन्होंने पहलेपहल chortle, kodak तथा blurb शब्दों का प्रयोग किया। प्रथम प्रयोग के समय के बाद से इनमें प्रत्येक एक सामान्य शब्द बन गया है। किसी रूप का लोप तुरन्त नहीं देखा जा सकता क्योंकि हम आश्वस्त नहीं हो सकते कि इनका प्रयोग फिर नहीं होगा, किन्तु प्राचीनतर आलेखों में हमें बहुत से भाषण-रूप दिखाई पड़ते हैं जो अब प्रयोग में नहीं हैं। प्राचीन अंग्रेजी में ['weorθan] "होना" सामान्यतम शब्दों में से था : [he:'wearθ 'torn] "वह नाराज हो गया", [he:je'wearθ'mɜ:re] "वह प्रसिद्ध हो गया", [he:'wearθ of'slɛjen] "वह मार डाला गया," [heo'wearθ'widuwe] "वह विधवा हो गई।" डच-जर्मन क्षेत्र में यह क्रिया, डच worden ['wurde], जर्मन werden ['verden] में अब भी उसी तरह प्रयुक्त होती है। large के लिए साधारण प्राचीन अंग्रेजी शब्द mycel स्काटलैंडी mickle में बचा हुआ है किन्तु मानक अंग्रेजी से लुप्त हो गया है। गॉथी बायबिल अनुवाद के हमारे अंशों में, mother शब्द के स्थान पर पूरी तौर से एक शब्द ['ajθi:] आता है तथा father केवल एक बार आता है (Galatians 4, 6) तथा अन्य सभी अंशों में उसके स्थान पर ('atta) आता है, एक शब्द जो हूणों (Hüns) के बादशाह Attila "लघुपिता" से जाना जाता है। बाहर से मूल अभिधान के अनुसार यह नर्सरी शब्द सम्भवतः किसी तरह 'पिता' के लिए स्लावीक शब्द से सम्बद्ध है, आदिम स्लावीक *[otɪ'tsɪ], रूसी [o'tets̩], जो निश्चितरूप पूर्व स्लावीक में आदिम भारतयूरोपीय के प्रतिवर्त *[pe'te:r] से विकसित हुआ है।

अधिकांशतः हमें दो रूपों में पूरक अस्थिरता दिखाई पड़ती है। इस प्रकार it's I तथा it's me अथवा rather [ɛ] तथा [a] के साथ आधुनिक अंग्रेजी में एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी रूप (rival forms) हैं। cows के अतिरिक्त बहुवचन रूप kine प्राचीन काव्यात्मक रूप की हैसियत से कम ही प्रयोग में आता है। एलिजाबेथ के समय के लेखन में हमें आज भी vat के लिए fat वर्तनी मिलती है जिससे प्राचीन अंग्रेजी [fɛt] की पुष्टि होती है जिसके स्थान पर उस समय से vat की प्रयोग-बहुलता है। जहाँ वक्ता दो प्रतिस्पर्धी रूपों को जानता है, अभिधान की दृष्टि से भिन्न होते हैं क्योंकि उसने उसे भिन्न लोगों द्वारा तथा भिन्न स्थितियों में सुना है।

रूपों की आवृत्ति की अस्थिरता ठीक-ठीक उसी स्थिति में देखी जा सकती है जब हमारे पास भाषा-समुदाय के अध्ययन के लिए अपेक्षित एक काल

विशेष की हर आवृत्ति का आलेख हो। तब हम प्रत्येक रूप के लिए एक मिलान-तालिका रख सकते थे (he ran away; he fell down की तुलना में away he ran; तथा down he fell की तरह के व्याकरणिक रूप)। जब कभी कोई उक्ति कही जाती हो, तो हम इस उक्ति के हर रूप का मिलान-सूची में बिन्दु निर्धारित कर लेते। इस प्रकार हमें तालिकाएँ अथवा ग्राफ मिलते रहते जिनसे हमारे अभिलेख के काल में हर रूप की आवृत्ति का चढ़ाव-उतार दिखाई पड़ता। इस प्रकार से बिन्दु-निर्धारण की व्यवस्था निस्संदेह हमारी शक्ति के परे है। किन्तु इस कल्पित व्यवस्था से हमारे सामने एक चित्र खिच जाता है कि वास्तव में हर भाषण समुदाय के अन्तर्गत प्रतिक्षण क्या होता रहता है। हम स्पष्टता से इस अस्थिरता को उस समय देख सकते हैं जब वह विशेषरूप से तीव्र हो, यथा रूपों के अचानक चढ़ाव तथा उतने ही बहु-प्रचलित व्यंग्योक्ति के दुरुपयोग में। अपेक्षाकृत छोटे पैमाने पर ही यदि हम एक समुदाय की सारी अस्थिरताओं को लें तो छोटे समुदायों तथा व्यक्तियों को एक समान अपने-अपने मन का करता पाएँगे। प्रत्येक आदमी प्राचीन बहु-प्रचलित शब्दों तथा पदसंहितियों को दुहरा सकता है जिसे वह तथा उससे संबद्ध सभी लोग सदा प्रयोग में लाते थे। अधिकांश अस्थिरता अपेक्षाकृत कम तीव्र होती है तथा उसका प्रत्यक्ष निरीक्षण नहीं हो पाता किन्तु शब्दावली तथा व्याकरण के उन अन्तरों द्वारा यह प्रकट होता है जो उस समय दिखाई पड़ते हैं जब हम एक क्षेत्र की भाषा अथवा बोली की अथवा संबंधित भाषाओं की विभिन्न ऐतिहासिक अवस्थाओं की तुलना करते हैं।

नए रूपों की उत्पत्ति की बात को छोड़कर, जिस पर हम आगे के अध्यायों में विचार करेंगे इस समय उन उपादानों पर विचार करते हैं जिनसे भाषण रूप की आवृत्ति में चढ़ाव या उतार होता है। अभी कुछ दिनों पहले तक इस विषय की उपेक्षा होती थी तथा इस संबंध में हमारा ज्ञान आज भी संतोषप्रद नहीं है।

22.3 हमारे सामने स्वाभाविक रूप से तत्काल यह प्रश्न उठता है कि क्या किसी रूप का भाषाई दृष्टि से परिभाषासाध्य कोई लक्षण उसके प्रचलन के पक्ष में अथवा विपक्ष में होता है। शैलीकार तथा अलंकारवादी के अनुसार कुछ भाषण रूपों की ध्वनि अपेक्षाकृत अधिक अच्छी होती है। एकमात्र ध्वन्यात्मक कसौटी यह लगती है कि स्वनिमों की आवृत्ति अथवा अनुक्रम की अधिकतर अवहेलना की जाती है। the observation of the systema-

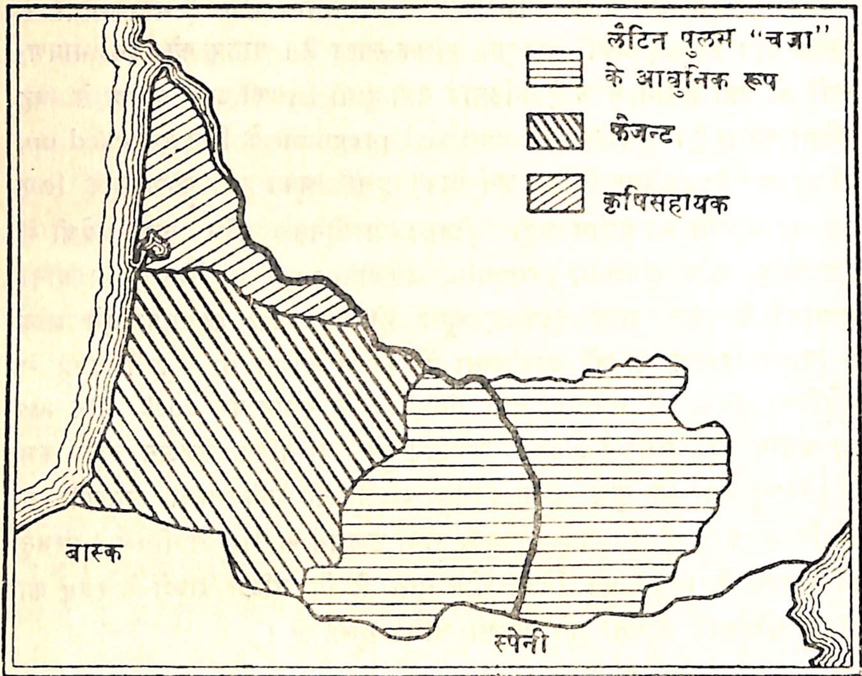
tization of education की तरह की पदसंहिति पक्ष में नहीं आती। फिर भी साधारण बोलचाल में श्रुतिमधुरता का कोई योग नहीं दिखाई पड़ता। दुरूह ध्वनिशास्त्र के ढेर सारे उदाहरण यथा Pater Piper picked a peck of pickled peppers अथवा she sells sea-shells दूर की कौड़ी जैसे लगते हैं। दूसरी ओर प्रत्यावर्ती स्वनिमों के विभिन्न ढाँचे यथा अनुप्रास (hearth and home) (cabbages तथा kings), स्वरानुरूपता (a stitch in time saves nine) तथा तुक एवं लयात्मक पुनरुक्तियाँ (first come, first served) अनेक भाषण रूपों के अनुकूल लगते हैं।

सभी सामान्य अवस्थाओं में रूपीय उपादान से नहीं बल्कि आर्थी उपादानों से एक रूप के पक्ष अथवा विपक्ष का निर्धारण होता है। फिर भी यह मान लेना स्वाभाविक है कि वे रूप जो तुलनीय अर्थ वाले दूसरे रूपों से बिल्कुल भिन्न हैं विपक्ष में होंगे। अनेक अध्येताओं ने अटकल लगाया है कि कुछ भाषण रूपों का दुरुपयोग इसलिए होने लगा कि उसी अर्थ के भाषण रूप से वे छोटे थे। गिलीरां (Gilliéron) का विश्वास था कि लैटिन apis "मक्खी" का फ्रेंच क्षेत्र की लगभग सभी बोलियों से लोप इसलिए हो गया कि आधुनिक उच्चारण में केवल एक स्वनिम [e] आता है। यह कहना कोई प्रति-तर्क नहीं है कि फ्रेंच में इस ढाँचे के व्याकरणिक तथा संबंधी शब्द हैं जैसा कि et [e] "और।" किन्तु eau [o] "पानी" की तरह स्थिति में (<equam) यह सिद्धांत गलत पड़ जाता है। ऐसा लगता है कि भारत-यूरोपीय भाषाओं की कुछ अधिक प्राचीन अवस्था के क्रिया-रूपों का दुरुपयोग होने लगा क्योंकि वे इस प्रकार के साधारण रूपों से छोटे थे। मिनोमनी भाषा में फ्रेंच और अंग्रेजी की तरह छोटे-बड़े सभी तरह के रूप खप जाते हैं। मिनोमनी [o:s] "डोंगी" सामान्य संज्ञाओं की अपेक्षा छोटा पड़ता है तथा [uah] "वह इसका प्रयोग करता है" सामान्य क्रिया रूप की अपेक्षा छोटा है। ये रूप जो प्राचीन समय से बने हुए हैं अधिकतर परिवार की अन्य भाषाओं में स्थानान्तरित हो गए हैं। आदिम मध्य अलगोन्की *[o:ʃi] "डोंगी" अपेक्षाकृत अधिक लम्बी व्युत्पन्न संज्ञाओं से यथा फॉक्स [anakɛ:weni], क्री तथा ओजिब्वा [tʃi:ma:n],—यद्यपि क्री में [o:si] भी है तथा आदिम अलगोंकी *[o:wa] "वह इसका उपयोग करता है", एक पुनरुक्त रूप फॉक्स [ajo:-wa] से अथवा अन्य शब्दों से यथा क्री [a:patʃihta:w] से। फिर भी यह सभी कुछ संदेहास्पद है।

उन भाषण रूपों में जो वर्जित रूपों से ध्वनिसाम्य रखते हैं भाषण-रूपों के विपक्ष बोध के लिए आर्थी उपादान अधिक स्पष्ट है। पाठक को इन भाषण-रूपों को पता लगाने में कोई कठिनाई नहीं होगी जिसकी इसी कारण से वह उपेक्षा करता है। अमेरिका में rendered pregnant के लिए knocked up, वर्जित रूप है; इसलिए ब्रिटिश अर्थ 'थका हुआ' 'चुका हुआ' के भाव के लिए इस पद-संहिति का प्रयोग नहीं होता। प्राचीनतर फ्रेंच तथा अंग्रेजी में एक शब्द, फ्रेंच connil, connin, अंग्रेजी coney के लिए था। दोनों भाषाओं में यह शब्द इसलिए लुप्त हो गया कि यह एक ऐसे शब्द से मिलता-जुलता था जो अश्लीलता के कारण वर्जित था। इसी वजह से अमेरिका अंग्रेजी में rooster तथा donkey के स्थान पर cock और ass का प्रयोग होने लगा है। ऐसी स्थितियों में वास्तविक उलझन बहुत कम है। किन्तु फिर भी कुछ श्रोता वर्जित शब्दों की शक्तिशाली उत्तेजना से प्रतिक्रिया करते हैं। वक्ता उपहास तथा उलझन के भय से सीधेसादे संस्वन को बचाता है। यह एक विचारणीय तथ्य है कि वर्जित शब्दों के स्वयं का जीवन सीधेसादे सं वनों की अपेक्षा अधिक दुरूह है।

22 4 इन स्थितियों से पता चलता है कि सम-ध्वनिता व्यापक रूप से एक रूप की आवृत्ति को क्षति पहुँचा सकती है। बहुत-सी समध्वनियों में व्याकरणिक कार्यकारिता के आधार पर भेद किया जाता है, यथा leader (संज्ञा) तथा lead'er (क्रियार्थक संज्ञा पदसंहिति) अथवा bear (संज्ञा), bear (क्रिया) तथा bare (विशेषण)। फ्रेंच में [sã] sang "रक्त" है, cent "सौ", sans 'बिना', sent "महसूस करता है, महकता है" तथा s'en 'इसका स्वयं' यथा s'en aller "बाहर जाना"। यहाँ तक कि बहुत कुछ समान व्याकरणिक कार्यकारिता के साथ pear, pair अथवा piece, peace अथवा mead, meed की तरह की समध्वनियाँ रूपों की आवृत्ति को कम करती हुई नहीं लगतीं।

फिर भी, कुछ ऐसे प्रमाण हैं कि समध्वनि से वार्तालाप में कुछ कठिनाई उपस्थित हो सकती है जिसके परिणामस्वरूप एक रूप का दुरुपयोग होता है। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण दक्षिणी फ्रांस में लैटिन gallus "मुर्गा" का लोप (चित्र 4) है जो गिलीराँ की व्याख्या है। साधारणतः दक्षिणी फ्रांस में यह शब्द आधुनिक रूप में अभी तक प्रयुक्त होता है यथा [gal] अथवा [zal]। फिर भी दक्षिण के विस्तृत क्षेत्र में cock के लिए एक दूसरा



आकृति 14. फ्रेंच भाषाई क्षेत्र का दक्षिण पश्चिमी भाग। सघन रेखा—के दक्षिण-पश्चिम की ओर लैटिन शब्द के अन्त्य [ll] को [t] हो जाता है। बिना छाया दिया हुआ क्षेत्रीय भाग लैटिन गलस "मुर्गा" के आधुनिक रूपों का प्रयोग करता है। छाया दिए हुए क्षेत्र मुर्गे के लिए अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं।—डाजाट के आधार पर।

लैटिन शब्द pullus, आधुनिक रूप [pul] प्रयुक्त होता है। मूल में इसका अर्थ "चूजा" था। अब फ्रेंच क्षेत्र के दक्षिणी कोने में ध्वनिपरिवर्तन हुआ है जिससे लैटिन शब्द के अन्त का [ll] [t] हो गया। इस प्रकार लैटिन bellus "सुन्दर", आधुनिक [bɛl] दक्षिणी भाग में [bɛt] रूप में दिखाई पड़ता है। इस ध्वनिपरिवर्तन की समभाषिक रेखा (isogloss) pullus पुलस-जिले को पूर्वी तथा पश्चिमी भागों में बाँट देती है। पूर्व भाग में [pul] तथा पश्चिमी भाग में [put] कहा जाता है। पुलस-जिले की सीमा के बाहर तदनुसार साधारण दक्षिणी रूप [gal] के जोड़ *[gat] के मिलने की सम्भावना है। किन्तु वास्तव में इस तरह का रूप कहीं भी नहीं दिखाई पड़ता। समूचे [-t]- क्षेत्र में जहाँ तक कि [put] नहीं कहा जाता,

मुर्गे के लिए एक विलक्षण तथा देखने में ग्राम्य शब्दों का प्रयोग करते हैं जो या तो pheasant "शब्द के स्थानीय रूप हैं यथा [azā], लैटिन phāsiānus अथवा [begej] शब्द के जिसका अर्थ होता है 'कृषि-सहायक, अनुभवी व्यक्ति" और कहा जाता है कि इससे लैटिन vicārius उप, एवजी, पुरोहित का प्रतिनिधित्व होता है ।

अब गिलीएराँ इस जिले के *[gat] 'मुर्गा' शब्द की ओर संकेत करता है जो बिल्ली के लिए प्रयुक्त शब्द अर्थात् [gat], लैटिन gattus, का समध्वनिक है । इस समध्वनिक के परिणामस्वरूप व्यावहारिक जीवन में अवश्य ही कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित हुई होंगी । इसलिए *[gat] 'मुर्गा' का प्रयोग बचाया जाता था तथा अस्थायी शब्द इसके स्थान पर प्रयुक्त होते थे।

इस सिद्धांत को बल देने वाला उल्लेखनीय तथ्य यह है कि समभाषरेखा जो विलक्षण शब्द [azā] और [begej] को सामास्य शब्द [gal] से अलग करती है [-t] और [-l] के बीच समभाषिकरेखा से ठीक-ठीक मेल खा जाती है। यह इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है कि समभाषिक रेखाएँ—यहां तक कि वे समभाषिक रेखाएँ भी जो संबंधित अभिलक्षणों को सूचित करती हैं—शायद ही कभी किसी उचित सीमा तक मेल खाती हों ।

इस विस्तार के संलग्न [-t] और [-l] के बीच की समभाषरेखा, [put] और [gal] के बीच की समभाषरेखा से एक तरह से मेल खा जाती है। यह भी उल्लेखनीय है और केवल तभी व्याख्यासाध्य लगता है जब हम मान लेते हैं कि [-t] क्षेत्र के इस भाग में पहले gallus प्रयुक्त होता था और जब बदलकर [-ll] [-t] हो गया तो पड़ोसी pullus जिले का [put] दूरूह *[gat] की जगह आ गया ।

इसके बचे हुए मार्ग में [-t] और [-l] के बीच की समभाषरेखा जिले को काटती हुई चली जाती है तथा केवल पश्चिमी भाग के [put] को पूर्वी [pul] से अलग कर देती है । pullus जिले में ध्वनिपरिवर्तन से समध्वनि की स्थिति नहीं आई और कोष अप्रभावित बना रहा ।

यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि *[gat] "बिल्ली" क्यों समध्वनि से प्रभावित हुआ और [gat] "मुर्गा" प्रभावित नहीं हुआ । डाजाट (Dauzat) का कहना है कि रूपिम *[gat] 'मुर्गा' केवल इस शब्द में आता था क्योंकि व्युत्पन्न रूप लैटिन gallīna 'मुर्गी' में बहुत से परिवर्तन हुए जिससे

[garina] निकला, जबकि दूसरी ओर [gat] 'बिल्ली' की पृष्ठभूमि में अनेक स्पष्ट व्युत्पन्न रूप थे यथा मानक फ्रेंच के जोड़-तोड़ के chatte "बिल्ली स्त्री०", chaton "बिल्ली का बच्चा" chatière "बिल्ली की माँद"।

जब कि कुछ उदाहरण इसी तरह निश्चयात्मक हैं यह सम्भव है कि समध्वनिता रूपों के अव्यवहार में कभी-कभी अधिक योग देती हो। कुछ ही शताब्दियों पूर्व, अंग्रेजी में केवल आधुनिक let (जो प्राचीन अंग्रेजी की सरणि [ˈlɛːtan] को सूचित करता है) ही नहीं था बल्कि समध्वनिक क्रिया भी थी जिसका अर्थ था 'रोकना' (प्राचीन अंग्रेजी [ˈlettan] का बोध कराती हुई)। अभी भी पदसंहिति without let or hindrance तथा टेनिस के खेल में a let ball का प्रयोग होता है। जब शेक्सपियर हेमलेट से यह कहलवाता है कि I'll make a ghost of him that lets me तो उसका अभिप्राय उस व्यक्ति से है 'जो मुझे रोकता है।' let "आज्ञा देना" का समध्वनिक बन जाने के बाद यह शब्द निश्चय ही एकान्तरूप से प्रभाव-शून्य हो गया होगा। एक वक्ता जो यह चाहता हो कि उसके श्रोता किसी को रोक दें—यथा एक बच्चा जो खतरे में पड़ा रहा हो अथवा एक चोर—और चिल्लाता हो Let him ! हो सकता था कि उसके श्रोता एक किनारे खड़े होकर उसे रास्ता दे देते। ऐसी ही स्थिति में उसे कहना पड़ सकता था stop him ! अथवा Hold him ! इस तरह के कुछ अनुभवों के बाद प्रथम प्रयोग में ही वह कुछ प्रभावोत्पादक रूप का प्रयोग करेगा।

22.5 हमें प्रायः नियमित अथवा अनियमित मिश्ररूपों के साथ कम से कम अपेक्षाकृत अधिक नियमित रूप मिलते हैं, यथा, roofs, hoofs, dwarfs के साथ rooves; hooves, dwarves अथवा dreamed और learned के साथ dreamt, learnt प्रयुक्त होता है अथवा you ought to के साथ you had better प्रयुक्त होता है। कुछ स्थितियों में अनियमित रूप निश्चित रूप से विरल हैं यथा cows, eyes, shoes, brothers बनाम kine, eyne, shoon, brethern। अन्य उदाहरण हैं नियमित forehead [ˈfɔə-ˌhed], goose-berry [ˈguws-ˌberi], seamstress [ˈsijmstris]। इसके विरुद्ध अनियमित [ˈfɔrid] ˈguzbri, ˈsemstris]। इतिहास से यह प्रकट होता है कि इन स्थितियों में अधिकतर अनियमित रूप समाप्त हो जाते हैं अथवा केवल किन्हीं विशेष अर्थों में ही पुनः प्रकाश में आते हैं जैसे कि seethe का प्राचीन कृदन्त sodden बदले हुए अर्थ में ही प्रकाश में आता है। goat,

book, cow के बहुवचन, यदि इनके प्राचीन अंग्रेजी रूप [gɛ:t, be:k, ky:] का प्रयोग बना रहता, तो *[gijt, bijtʃ, kaj] बन गए होते। जब हम कभी एक लम्बे काल का किसी भाषा का इतिहास समझते हैं, हमें इस तरह की बहुत-सी स्थितियाँ मिलती हैं। किन्तु इस उपादान का व्यवहार संदिग्ध है क्योंकि बहुत-सी स्थितियों में नियमित रूप आगे चलते ही नहीं। feet की जगह नियमित foots का अथवा brought की जगह bringed का प्रयोग इतना कम है कि हम इन्हें 'बचकाना, भूल' अथवा वृद्ध लोगों में 'जबान का फिसलना' मानते हैं। अनियमित रूपों की खपत की दृष्टि से भाषाओं में अन्तर दिखाई पड़ता है। किन्तु साधारणतः ऐसा लगेगा कि नियमित प्रतिस्पर्द्धी रूप का यदि आरम्भ अच्छा हो तो उसके लिए अच्छा अवसर है। बहुप्रचलित रूप यथा अंग्रेजी में be क्रिया की रूपसरणि तथा सर्वनाम I, we, he, she they अपने अति-विभेद के साथ, बहुत अनियमितता के होते हुए भी बने रहते हैं।

22.6 अधिकांशतः अस्थिरता रूपीय लक्षण पर नहीं वरन् अर्थ पर निर्भर रहती है और तदनुसार एक शुद्ध भाषाई अन्वेषण के अन्तर्गत नहीं आती। उन परिवर्तनों से जो एक जाति के व्यावहारिक जीवन में निरंतर होते रहते हैं, भाषण रूप से संबंधित आवृत्ति का प्रभावित होना निश्चित है। रेलवे, ट्राम तथा मोटर-कार के जीवन में प्रवेश कर जाने के कारण उन तमाम शब्दों की आवृत्ति घट गई है जिनका संबंध घोड़े, डिब्बे तथा लगाम आदि से था और मशीनों से सम्बन्धित शब्दों की संख्या बढ़ गई है। यहाँ तक कि बहुत ही दूरवर्ती और रूढ़िवादी समुदायों में भी संबंधित शब्दों का निरन्तर विस्थापन होता रहता है। यदि और कुछ नहीं तो कम-से-कम उनके जन्म और मृत्यु में परिवर्तन होता ही है।

एक नई वस्तु या व्यवहार जिसका प्रचलन होता है के लिए प्रयुक्त प्राचीन अथवा नए भाषण रूपों की आवृत्ति बढ़ जाती है। आधुनिक जीवन में बहुत से उदाहरण हैं, यथा motoring, flying तथा wireless के लिए शब्दावली। यदि व्यावहारिक स्थिति न रहे तो वे रूप जो इस स्थिति में प्रयुक्त होते हैं निश्चित रूप से कम होकर लुप्त हो जाएँगे। उदाहरण के लिए बाज पालने की कला संबंधी शब्दावली की यही स्थिति हुई है। यद्यपि हमें 'ओथेलो' के शब्दों में सौन्दर्य दिखता है, हम उन्हें समझते नहीं।

If I do prove her haggard,
Though that her jesses were my dear heart-strings,

I'd whistle her off, and let her down the wind,
To prey at fortune.

haggard शब्द का प्रयोग जंगली पकड़े हुए लावारिस प्रौढ़ बाज के लिए होता है । jesses चमड़े की पट्टियाँ थीं जो बाज के पैरों में बाँधी जाती थीं और जब उसे छोड़ा जाता था तो हटाई नहीं जाती थीं । यदि बाज हवा में हवा की दिशा में उड़ गया तो शायद ही कभी लौटता था ।

ईसवीय प्रारंभिक सदियों में कुछ जर्मनी जातियों में एक वर्ग के लोग होते थे जिन्हें [la:t] कहते थे। दक्षिणी-जर्मन के [la:ts], पद में सामन्त और स्वतंत्र नागरिक के मध्य की स्थिति रखते थे । [lɛ:t] शब्द का अंग्रेजी रूप अंग्रेजी आलेख में केवल एक बार आता है। प्राचीनतम अंग्रेजी विधि-संहिता में और यहाँ भी इस शब्द की व्याख्या अशुद्ध ढँग से हुई है। वहाँ पर [θe:ow] 'सामन्त' शब्द पंक्ति के ऊपर लिखित है। ब्रिटेन में अंग्रेजी बोलने वाली जाति के सामाजिक गठन में इस वर्ग के लोग नहीं थे तथा स्थापना के साथ-ही-साथ शब्द प्रयोग से निकल गया ।

22.7 उन शब्दों के जो संस्कार अथवा अशुभ की आशंका से प्रतिबंधित होते हैं, लुप्त हो जाने की सम्भावना रहती है । भारत-यूरोपीय भाषाओं में "चाँद" के लिए एक दूसरे से भिन्न अनेक शब्दों का प्रयोग होता है । यह उल्लेखनीय है कि रूसी भाषा में लैटिन ['lu:na] शब्द [lu'na] रूप से लिया गया है, यद्यपि अन्य स्थितियों में उच्चशिक्षाप्राप्त लोगों की भाषा में छोड़कर शायद ही कहीं लैटिन शब्द लिए गए हों। यह संस्कार अथवा शिकार में निषेध का ही परिणाम हो सकता है कि 'भालू' के लिए आदिम भारत-यूरोपीय शब्द संस्कृत "ऋक्ष", ग्रीक ['arktos], लैटिन ursus, जर्मन तथा बाल्तोस्लावीक में लुप्त हो गए। स्लावीक में इसके स्थान पर रूसी प्रतिरूप [med'vet] प्रयुक्त हुआ है जो मूल रूप से स्पष्ट समास था जिसका अर्थ था 'मधु-भक्षी'। इसी तरह की स्थिति मिनोमनी की भी है जहाँ bear' के लिए फॉक्स में बना हुआ प्राचीन शब्द [mahkwa], क्री में [maskwa] है जो[awɛ:hsɛh] की लघ्वर्थक रचना से विस्थापित हुआ है जिसका मूल अर्थ था (little what-you-may-call-him), क्री ['ma:tʃi:w] "वह शिकार पर जाता है" का मूल अर्थ केवल "वह बाहर जाता है" था । पूर्वानुमानित रूप से वहाँ खेल अथवा आध्यात्मिक प्रतिनिधियों द्वारा पहले से सुन लेने की आशंका थी । बाईं दिशा के लिए

शब्द के स्थान पर अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। भारतयूरोपीय भाषाओं में अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनमें से प्राचीन ग्रीक [ew-'o:numos] शब्दार्थ की दृष्टि से "अच्छे नाम का" प्रत्यक्षरूप से मृदुभाषण है। अधिकतर ऐसा दिखाई पड़ता है कि लोग अशुभशब्दों को बचाते हैं यथा die, death—ये शब्द पूर्व-जर्मन में भारतयूरोपीय लैटिन शब्द morī "मरना" अथवा "असाध्य रोग" के स्थान पर प्रयुक्त हुए। आरंभ में undertaker शब्द अस्पष्ट रूप से उपेक्षित था। किन्तु अब अनुष्ठाता इसके स्थान पर mortician के प्रयोग का प्रयत्न कर रहे हैं। उस तरह की स्थिति में जहाँ वास्तविक स्थिति में अप्रियता निहित रहती है, भाषण रूप, जैसे ही विशिष्टदुःखसूचक अर्थ युक्त होता है, अनपेक्षित रह जाता है।

अश्लीलताजन्य निषेध से व्यवहार-लोप नहीं होता है। वर्जितरूप, अनेक अथवा अधिकांश सामाजिक स्थितियों में बहिष्कृत होते हैं। किन्तु अन्य स्थितियों में उनकी अपेक्षा नहीं होती। स्थानापन्न किसी विशेष समय में अर्थ के साथ बहुत गहरे संबंधित रह सकते हैं और बदले में निषिद्ध हो सकते हैं। अंग्रेजी शब्द whore जो लैटिन cārus "प्रिय" का सजातीय है, किसी समय अवश्य ही आज के लुप्त शब्द का विनम्र स्थानापन्न रहा होगा। फिर भी पूरी तौर पर इस तरह के शब्द विशेष रूप से व्यवहार लोप नहीं लाते।

व्यावहारिक स्थिति उन शब्दों के पक्ष में होती है जिनकी प्रतिक्रिया अधिक होती है। व्यापार में, विक्रेताओं के लिए अपने माल पर आकर्षक लेबिल चिपकाना लाभदायक होता है। सम्भवतः यही कारण है कि छोटे जानवरों के बच्चों के लिए प्रयुक्त शब्द कभी-कभी जाति के अति सामान्य नाम के लिए प्रयुक्त होते हैं, यथा अंग्रेजी में hen के लिए chicken कह लिया जाता है। फ्रेंच poule [pul] 'मुर्गी' तथा बोली का [pul] 'मुर्गा' चूजे के लिए एक लैटिन शब्द chick व्यवहार में लाता है। house के लिए home शब्द निस्संदेह परिकल्पी निर्माताओं द्वारा प्रयुक्त होता रहा है। जर्मनी में एक्सप्रेस गाड़ी से धीमी गाड़ी का अर्थ लेते हैं जैसाकि schnellzug ['ʃnel-ˌtsu:k] का शब्दार्थ हुआ 'तेज गाड़ी', और वास्तव में तेज ट्रेन को Blitzzug ['blits-ˌtsu:k] कहते हैं। शब्दार्थ की दृष्टि से अर्थ हुआ "विद्युत् जैसी गाड़ी"। यह ठीक वैसे ही है जैसे अमेरिका में रेलवे के प्रथम श्रेणी का अर्थ होता है दिन में बैठने की साधारण जगह।

अक्सर श्रोता के समक्ष अनुकूल शब्द व्यवहार में लाने से एक लाभ

होता है। एकवचन सर्वनाम thou के स्थान पर बहुवचन ye प्रयोग करने की प्रवृत्ति मध्यकाल में यूरोप में फैल गई। अंग्रेजी में, you (ye का प्राचीन कर्म-सम्प्रदान कारक) ने प्राचीन thou को आर्षता की ओर धकेल दिया। डच में jij [jej] के कारण thou पूरी तरह व्यवहार से लुप्त हो गया और इसके स्थान पर मूल आदरार्थक u[y:] के दबाव से Uwe Edelheid ['y:we 'e:delhejt] "आपकी महानता" अतिप्रचलित हो गया है। इस प्रकार के आदरार्थक रूप प्राय: साधारण मध्यम-पुरुष स्थानापन्न के स्थान पर (§ 15.7) प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार श्रोता से संबंधित बातों के लिए आदरार्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इतालवी में 'my wife' के लिए mia moglie [mia 'moʎe] प्रयुक्त होता है, किन्तु 'your wife' के लिये la sua signora [la sua si'ŋora] 'आपकी श्रीमती' (your wife) प्रयुक्त होता है। फ्रेंच और जर्मन में, श्रोता के संबंधियों के लिए पहले Mr., Mrs, Miss जोड़ते हैं यथा madame votre mère [madam vɔtr mɛ:r] "तुम्हारी माँ"। जर्मन में श्रोता के पति अथवा पत्नी को संबोधित करने के लिए अभिजाति प्राचीन रूप : meine frau [majne 'fraw] "मेरी पत्नी" किन्तु Ihre Frau Gemahlin ['i:re fraw ge'ma:lin] 'आपके साथी श्रीमान् और mein Mann [majn'man] 'मेरा पति', किन्तु Ihr Her Gemahl [i:r her ge'ma:l] 'आपके साथी श्रीमान्'। मध्य अलगोन्की भाषाओं में, 'मेरी पत्नी' और 'तुम्हारी पत्नी' दोनों के लिए साहित्यिक शब्द निषेध है—डायने इसका प्रयोग परियों की कहानियों में करती हैं तथा अधिकतर कहा जाता है "बूढ़ी औरत" अथवा 'वह औरत जिसके साथ मैं रहता हूँ' अथवा "भण्डारी" भी।

सामान्यत: लोगों के लिए आदरार्थक शब्द साधारण शब्दों के स्थान पर प्रचलित हो गए। (gentleman) और (lady) श्रीमान् और श्रीमती की अपेक्षा पुरुष (man) और स्त्री (woman) अधिक अभिजात्य शब्द हैं।

22.8 विरोध अथवा मेधा के रूप में सामान्य प्रभावोत्पादकता अस्थिरता का एक शक्तिशाली उपादान है जो दुर्भाग्यवश भाषावैज्ञानिक के नियंत्रण से बिल्कुल बाहर है। उदाहरण के लिए इसके कारण अपभाषा में आकस्मिक चढ़ाव-उतार होता है। लगभग 1896 के समय rubber शब्द का स्थानान्तरित प्रयोग "निर्निमेष", "शिकार" की अपभाषा में बहुत प्रचलन रहा, दस वर्ष बाद यह लोप की ओर उन्मुख हुआ और केवल rubber neckwagon 'दृश्य-

प्रदर्शक-बस', की आवृत्ति अब बढ़ गई है। उस समय 1905 के लगभग विस्मयादिबोधक skidoo "दूर हटो" और उसी अर्थ में twenty-three का विस्मयादिबोधक के समान प्रयोग होने लगा और शीघ्र ही समाप्त हो गया। इस प्रकार के रूपों का जन्म प्रत्यक्षरूप से श्रोता की प्रतिक्रिया में प्रभावोत्पादकता के कारण है। प्रथमतः यह उनकी विलक्षणता के कारण है, फिर भी उसमें अर्थान्तरण की क्षमता है। बाद में श्रोता अच्छी तरह प्रतिक्रिया करता है क्योंकि उसने इसे अनुकूल परिस्थितियों में तथा आकर्षक लोगों से सुना है। ये सभी अनुकूल उपादान केवल आवृत्ति से लुप्त हो जाते हैं। विलक्षणता घिर जाती है, विरोधी रूपक शक्तिहीन हो जाता है जबकि स्थानान्तरित अर्थ केन्द्रीय अर्थ की अपेक्षा अधिक परिचित होता है। रूप से संबद्ध औसत वक्ता तथा परिस्थितियाँ तटस्थ हो जाती हैं। परिणामस्वरूप अपभाषा का रूप नष्ट हो जाता है। फिर भी कुछ स्थितियों में, इस बीच प्राचीनतर रूप व्यवहार से कट जाते हैं अथवा प्राचीन अथवा विशिष्ट बन जाते हैं। व्यंग्योक्ति के प्रयोग लुप्त हो जाने के बाद भी उसका एक सामान्य रूप की भाँति प्रयोग बना रहता है। इस प्रकार लैटिन caput "सर" इतालवी और फ्रेंच में विशिष्ट तथा स्थानान्तरित रूप में बना रहता है किन्तु मुख्य अर्थ में लैटिन testa 'वर्तन' इतालवी testa ['tɛsta] फ्रेंच tete [tɛ:t] प्रत्यावर्त से विस्थापित किया जाता है। इसी प्रकार, जर्मनी में अंग्रेजी head की जाति का प्रयोग, यथा Haupt [hawpt], विस्थापित प्रयोगों में प्राचीन काव्यात्मक रूप में बना रहता है किन्तु kopf के अर्थ में अंग्रेजी का सजातीय cup उसके स्थान पर आता है। एक सशक्त अथवा तीखा शब्द, आवृत्ति के कारण अशक्त पड़ जाने पर, एक नए प्रतिस्पर्द्धी शब्द द्वारा दबाया जा सकता है, यथा head या man या girl अथवा kill अथवा awfully, terribly, frightfully (glad to see you) की तरह की तालिका में।

यह उपादान चरम स्थितियों में सरलता से पहचाना जा सकता है किन्तु निस्संदेहरूप से बहुत सारी अन्य स्थितियों में दिखाई पड़ता है जो हमारी पकड़ में नहीं आते, विशेष रूप से अब अस्थिरता का पर्यवेक्षण केवल सुदूर अतीत से किया जा सकता है।

22.9 अस्थिरता में सबसे अधिक शक्तिशाली दबाव भाषावैज्ञानिक की पहुँच से सर्वथा बाहर है। एक वक्ता दूसरे अन्य वक्ता से सुने हुए रूप का समर्थन करता है जो अपने गौरव के कारण उसकी प्रवृत्ति को प्रभावित करता

है। इसी आधार पर अगणित उदाहरणों में, चाहे कोई कहे it's me अथवा it's I, rather [ɛ] अथवा [a] के साथ, either तथा neither [ij] अथवा [aj] के साथ, roofs अथवा rooves, you ought to अथवा you'd better इत्यादि रूपान्तरों की अनन्त तालिका और लगभग पर्याय-वाची रूपों में। बोली भूगोल तथा मानक भाषाओं के इतिहास से प्रकट होता है कि कैसे महत्वपूर्ण जातियों की भाषा के एक न एक अभिलक्षण निरंतर कम गौरववाले समूहों तथा जातियों द्वारा अनुकरण किए जाते हैं। इस समतलन प्रक्रिया की अधिक उल्लेखनीय प्रावस्था पर आगे भाषाई आदान-प्रदान के अन्तर्गत विचार किया जायगा। हम मान सकते हैं कि शब्द कोष तथा व्याकरण के बहुत सारे लक्षण तथा ध्वनिशास्त्र के कुछ लक्षणों के सामाजिक अभिधान हैं, जो भिन्न वर्ग के लिए तथा व्यक्ति के लिए भिन्न हैं। संचार-घनत्व के आदर्श रेखांकन में (§ 3.4) हमें उन संकेतों को पहचानना पड़ेगा जो एक वक्ता से श्रोता तक क्रमव्यवस्था द्वारा वक्ता के गौरव का प्रत्येक श्रोताओं के संदर्भ में बोध कराते हैं। यदि हमारे पास एक आरेख हो जिसके संकेतों (arrows) की इस प्रकार बहुतायत हो, बहुत सीमा तक भाषाई रूप की आवृत्ति का हम निस्संदेह यह अनुमान लगा सकते हैं। वास्तव में, यह बचपने में होता है कि एक वक्ता पुराने वक्ताओं के अधिकार से बहुत प्रभावित होता है किन्तु सारे जीवन में वह अपने भाषण का संयोजन उन लोगों के भाषण से करता रहता है जिन्हें वह आदर्श मानता है अथवा जिन्हें प्रसन्न रखना चाहता है।

अध्याय 23

सादृश्यजन्य परिवर्तन

23.1 बहुत-से भाषणरूप, उन भाषणरूपों के अविच्छिन्न रूप नहीं हैं जो उसी भाषा के प्राचीनकाल में उपस्थित थे। आदत्त शब्दों की स्थिति में यह बात स्पष्ट है। toboggan की तरह का शब्द जो अमेरिकन-इण्डियन भाषाओं से लिया गया है अमेरिका के उपनिवेशन के पूर्व अंग्रेजी में नहीं लिया जा सकता था और सचमुच हम इसे अंग्रेजी भाषा के उन प्रलेखों में नहीं पाते जो बहुत पहले के हैं। फिर भी, बहुत सारे उदाहरणों में नए रूप विदेशी भाषा से आदत्त नहीं हैं। इस प्रकार बहुवचन रूप cows प्राचीन तथा मध्य अंग्रेजी में नहीं दिखाई पड़ते। cu [ku:] का प्राचीन अंग्रेजी ब० व० (जिससे आधुनिक cow निकला है) cy [ky:] है जो [kaj] रूप में सम्पूर्ण आधुनिक अंग्रेजी बोलियों में अभी तक बना हुआ है। 1300 ईसवीय के लगभग अंग्रेजी आलेखों में एक रूप kyn मिलता है जो आधुनिक आर्ष-काव्यात्मक रूप में kine है। केवल कुछ ही शताब्दियों बाद हमें cows रूप मिलता है। 'न्यू इंग्लिश डिक्शनरी' में प्रथम संदर्भ सन् 1607 का मिलता है जहाँ यह प्राचीनतर रूप का विकल्प है, kine अथवा cows। प्रत्यक्षरूप से ध्वन्यात्म परिवर्तयुक्त cows, kine का अविच्छिन्न रूप नहीं है। kine का इससे अधिक संबंध kye से है। इन दोनों स्थितियों में एक नया भाषण-रूप भाषा में आ गया है।

यह तथ्य कि cows रूप केवल ध्वनि-परिवर्तन के विकल्प के साथ प्राचीन-तर रूप का अविच्छिन्न रूप नहीं है स्वतः स्पष्ट है। फिर भी वास्तव में यह केवल अनुमिति है जो ध्वन्यात्म-विभेद के मूल तथ्य से अपनाई जाती है। यह पता है कि प्राचीन अंग्रेजी [y:] आधुनिक मानक अंग्रेजी में [aj], हो जाता है यथा why, mice, bride, प्राचीन अंग्रेजी [hwy:, my:s, bry:d] से, तथा आधुनिक[aw] यथा cows में, प्राचीन अंग्रेजी[u:]से, यथा cow, how, mouse, out, प्राचीन अंग्रेजी [ku:, hu:, mu:s, u:t] से, इसके अतिरिक्त यह भी पता है कि आधुनिक [z] यथा cows में किसी ध्वनि-परिवर्तन द्वारा नहीं जोड़ा है बल्कि प्राचीन अंग्रेजी [s] का बोध कराता है यथा stones में, प्राचीन

अंग्रेजी ['sta: nas] से। फिर भी अनेक स्थितियों में भाषण रूप की विलक्षणता उतनी प्रत्यक्ष नहीं है तथा उसे ध्वनियों की क्रमबद्ध तुलना द्वारा प्रकट किया जाता है। रूप days ऊपरी तौर पर प्राचीन अंग्रेजी ब० व० रूप dagas जिसकी व्याख्या ['dagas] रूप में करते हैं पूर्वानुमानित रूप से ऊष्म [g] से मिलता है किन्तु प्राचीन अंग्रेजी ध्वनिगुच्छ [ag] का विकास ['sage]>saw (औजार) ['sagu]>saw "कथन", ['hagu-'θorn]>haw-thorn, ['dragon]> draw में दिखाई पड़ता है। इसकी पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि पहले की मध्यकालीन अंग्रेंजी में dei 'दिन' के बहुवचन के लिए daues, dawes जैसी वर्तनी जो आधुनिक रूप days से मिलती-जुलती है 1200 के आस-पास मिलती है। यदि हमारे ध्वन्यात्म संगति संबंधी विवरण ठीक हैं तो पूर्वधारणा के अवशेष में नए रूप होंगे। नियमित ध्वनिपरिवर्तन की पूर्वधारणा को अपनाने का सबसे बड़ा कारण यह तथ्य है कि अवशेष की संरचना (भाषाई आदान के अतिरिक्त जिस पर बाद वाले अध्याय में विचार किया जाएगा) नए रूपों की उत्पत्ति पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। अधिकांश शब्द-रूप जो समय पाकर उठते हैं तथा सामान्य ध्वन्यात्म संगति से विचलन द्वारा स्वयं को प्रकट करते हैं, एक सुपरिभाषित प्रतिरूप के अन्तर्गत आते हैं। यह केवल आकस्मिक नहीं हो सकता। इससे ध्वन्यात्म परिवर्तन की पूर्वधारणा की पुष्टि होती है तथा दूसरी ओर नए रूप-निर्माण की प्रक्रिया के अध्ययन की दिशा मिलती है।

शब्द-रूपों का अधिकांश जो समय के साथ प्रयोग में आते हैं संमिश्र रूपों के नए संयोजन हैं। जैसे cows रूप जो kye और kine के साथ-साथ प्रचलित होता हुआ एकवचन परप्रत्यय cow (<प्राचीन अंग्रेजी ku:) धन+बहुवचन परप्रत्यय [-z]< प्राचीन अंग्रेजी का [as] है। इसी प्रकार days प्राचीनतर daws के साथ-साथ प्रचलित होता हुआ एकवचन से निकला है ('< प्राचीन अंग्रेजी [dɛj]) धन वही परप्रत्यय। अत्यधिक भिन्न-भिन्न भाषाओं के इतिहास से इस तरह के विस्तृत उदाहरण हमें विश्वास दिलाते हैं कि सादृश्य प्रवृत्ति (§16.6) का स्थानान्तरण होता रहता है—अर्थात् उस समय जब cow का बहुवचन अनियमित रूप kine था, वक्ता एक नियमित रूप cow का निर्माण कर सकते थे जो प्राचीन रूप की स्पर्द्धा में उपस्थित हुआ। तदनुसार इस प्रकार का नव्यीकरण सादृश्यजन्य परिवर्तन (analogic change) कहा जाता है। साधारणतः भाषा-वैज्ञानिक इस शब्द के प्रयोगान्तर्गत नए रूपों का मूल

निर्माण तथा प्राचीन रूप के साथ उसके प्रतिस्पर्द्धी, दोनों को सम्मिलित कर लेते हैं। असल में हमें इन दोनों घटनाओं में भेद करना चाहिए। एक वक्ता के नए रूप बोलने अथवा सुनने के बाद नया रूप (अर्थात् cows) उसके बाद इस रूप का उच्चारण अथवा प्राचीनतर रूप (kine) का उच्चारण अस्थिरता का विषय है जिसका पिछले अध्याय में विचार किया जा चुका है, जिस पर वहाँ विचार नहीं किया जा सका और यहाँ बिचार किया जाएगा वह किसी ऐसे व्यक्ति की उक्ति है जिसने कभी एक नए संयोजन तथा kine के स्थान पर cows सुना नहीं है।

23.2 अधिकांश स्थितियों में—और ये ऐसी स्थितियाँ हैं जिन्हें हम अधिक सरलता से समझ लेते हैं—एक नए रूप उच्चारण की प्रक्रिया बिल्कुल साधारण व्याकरणिक सादृश्य की तरह है। एक वक्ता जो बिना सुने, cows रूप का उच्चारण करता था, इस रूप का उच्चारण ठीक वैसे ही करता था जैसे किसी योजना के अन्य नियमित बहुवचन संज्ञा का उच्चारण।

sow : sows = cow : x

इस आरेख के आदर्श समुच्चय (sow : sows) से आदर्शों की एक शृंखला (यथा bough : boughs, heifer : heifers, stone : stones इत्यादि) का बोध होता है जो इस उदाहरण में भाषा की सभी नियमित रूपसरणि को सन्निहित रखता है। फिर भी, अनुपात चिह्न के किसी भी तरफ के समुच्चय दो सदस्यों तक सीमित नहीं हैं। एक रूप का स्वतंत्र उच्चारण, यथा dreamt [dremt] के स्थान पर dreamed, आरेख से दिखाया जा सकता है :—

scream : screams : screaming : screamer : screamed
= dream : dreams : dreaming : dreamer : x

मनोवैज्ञानिक कभी-कभी इस सूत्र का इस आधार पर विरोध करते हैं कि वक्ता में उस समानुपाती प्रतिमान के समान युक्ति नहीं होती। यदि यह विरोध ठीक बैठे तो भाषा-वैज्ञानिक कोई भी व्याकरणिक विवरण देने से वंचित रह जाएँगे क्योंकि एक सामान्य वक्ता जो भाषा-वैज्ञानिक न हो अपनी भाषण-प्रवृत्ति का वर्णन नहीं करता तथा यदि हम मूर्खता से उस सम्बन्ध में पूछ भी बैठें तो सही वर्णन नहीं कर पाएगा। शिक्षित लोग जो स्कूली व्याकरण में प्रशिक्षित होते हैं भाषण प्रवृत्ति के निगमन में अपनी क्षमता को बढ़ाकर

आँकते हैं तथा इससे भी बुरी बात यह होती है कि हम यह भूल जाते हैं कि उनकी यह योग्यता कूटतर्कीय दार्शनिक परम्परा से प्राप्त हुई है। बल्कि वे इसे प्राकृतिक देन के रूप में देखते हैं जिसे वे सभी लोगों में पाने की आशा रखते हैं तथा किसी भाषाई विवरण की सच्चाई को अस्वीकार करने के लिए अपने को स्वतन्त्र पाते हैं जो एक सामान्य वक्ता में नहीं हो सकता। हमें सदा यह ध्यान रखना चाहिए कि वक्ता जिसे उच्च विशिष्ट प्रशिक्षण नहीं मिला हो अपनी भाषण-प्रवृत्ति का वर्णन नहीं कर सकता। सादृश्य तथा सादृश्यजन्य परिवर्तन के हमारे समानुपाती सूत्र, भाषा-विज्ञान के अन्य विवरणों की भाँति ही वक्ता की क्रियाओं का वर्णन करते हैं और यह नहीं है कि वक्ता स्वयं इस प्रकार का विवरण दे सकता हो।

प्राचीन भाषण आलेखों का अध्ययन करते हुए अथवा सम्बन्धित भाषाओं और बोलियों की तुलना करते हुए भाषा-वैज्ञानिक को शब्द-रूपों के बहुत से अन्तर दिखाई पड़ेंगे, यथा प्राचीनतर रूप kine के साथ cows का प्रचलन। रूप प्रक्रिया की प्रवृत्ति पर्याप्त दृढ़ होती है। शब्द-सूची अथवा रूप-सिद्धि की तालिका तैयार करना अधिक सरल होता है। तथा इससे नव्यीकरण का पता लगाने में सहायता मिलती है। पदसंहितीय रूपों के साथ स्थिति भिन्न है। हमारी वाक्य-प्रक्रिया की विवरण-पद्धति की अपूर्णता के अतिरिक्त जो दार्शनिक प्रवृत्ति के कारण पश्चार्थमुखी हो गई है किसी भाषा के वाक्यीय-स्थान अनेक भिन्न रूपों से भरे जा सकते हैं जिसका सर्वेक्षण कठिन है। एक भाषा-वैज्ञानिक को यह भ्रम हो सकता है कि एक विशेष अवस्था अपनी भाषा के प्राचीनतर वाक्यीय प्रवृत्ति से अलग हो जाती है। फिर भी निश्चयपूर्वक यह कह पाना कि यह प्राचीनतर प्रयोग सचमुच पदसंहिति को अलग कर देता था अथवा नए और प्राचीन रूप के बीच की वास्तविक सीमा-रेखा का निर्धारण करना उसे कठिन अथवा असंभव लगेगा। फिर भी कभी-कभी हम वाक्यीय नव्यीकरण को समानुपाती प्रतिमान पर पहचान सकते हैं। 16वीं शताब्दी से आगे हमें अंग्रेजी उपवाक्य like से आरम्भ होते हुए मिल जाते हैं। हम नव्यीकरण को इस तरह दिखा सकते हैं :—

to do better than Judith: to do better than Judith did
=to do like Judith. : x,

जहाँ परिणाम यह संरचना है to do like Judith did।

23.3 केवल सैद्धान्तिक रूप से हम वास्तविक नव्यीकरण में जिसमें एक

वक्ता एक अनसुने रूप का प्रयोग करता है तथा बाद के प्रतिस्पर्द्धी रूप में एवं इस नए रूप और प्राचीनतर रूप में भेद कर सकते हैं। एक पर्यवेक्षक जिसने कुछ वर्षों पूर्व radios रूप सुना हो, संदेह कर सकता है कि वक्ता ने इसे कभी नहीं सुना था तथा वह इसे साधारण संज्ञा बहुवचन के सादृश्य पर प्रयोग में ला रहा है। वक्ता इसके लिए आश्वस्त नहीं हो सकता फिर भी क्योंकि यह रूप जिन लोगों ने इसे बोले जाते हुए सुना है और जिन लोगों ने नहीं सुना है दोनों के द्वारा समानरूप से अच्छी तरह बोला जा सकता था। दोनों तरह के वक्ता जो एकवचन radio जानते हैं अनुकूल स्थिति में बहुवचन का उच्चारण कर सकते हैं।

यह ध्यान देन योग्य बात हो सकती है कि इस तरह की स्थिति में जहाँ स्पष्ट रूप से व्याकरणिक कोटियाँ सम्मिलित हैं, अर्थ को परिभाषित करने की हमारी अक्षमता से हमें रुकने की आवश्यकता नहीं है। इस तरह का एक सूत्र :—

एक०		बहु०
piano	:	pianos
=radio	:	x

उस स्थिति में भी ठीक रहेगा चाहे इन व्याकरणिक कोटियों (यथा one तथा more than one एक और 'एकाधिक') के अर्थ की परिभाषा गलत सिद्ध हो।

Radios रूप का विरोध किसी प्राचीनतर रूप से नहीं था, सादृश्यात्मक परिवर्तन की अधिकांश स्थितियों में प्राचीनतर रूप की उपस्थिति के कारण कठिनाई होती है। मान लें कि लगभग 1600 ई० में यदि एक पर्यवेक्षक cows के प्राचीनतम उच्चारण को सुने तो उसका पर्यवेक्षण वही होगा जो कुछ ही वर्ष पूर्व हमारा radios के सम्बन्ध में हुआ। निस्संदेह बहुत से वक्ता इसका उच्चारण स्वतंत्रतापूर्वक करते थे और उन वक्ताओं से अलग नहीं किए जा सकते थे जिन्होंने इसे पहले ही सुन रखा था। फिर भी cows रूप का उच्चारण अवश्य ही अपेक्षाकृत बहुत क्षीण रहा होगा क्योंकि साथ ही kine के उच्चारण की परम्परा भी थी। बाद की प्रतिस्पर्धा में नए रूप की रचना नियमित होती थी। यह कहना उचित है कि वे उपादान जिनसे एक रूप की उत्पत्ति हुई, वही हैं जो एक उपस्थित रूप की आवृत्ति का समर्थन करते हैं।

हमें यह पता नहीं कि क्यों कभी-कभी परम्परागत-रूप के स्थान पर वक्ता नए संयोजन बोलते हैं और क्यों कभी-कभी नए संयोजनों की आवृत्ति बढ़ जाती है। feet के स्थान पर foots की तरह के रूप अक्सर बच्चों द्वारा बोले जाते हैं। हम इसे बाल भूल (childish error) कहते हैं और आशा रखते हैं कि बच्चा शीघ्र ही परम्परागत प्रवृत्ति को अपना लेगा। एक वयस्क आदमी foots कह सकता है जब वह थका हुआ अथवा व्यग्र हो किन्तु वह इस रूप को दुहराता नहीं है और कोई इसे अपनाता भी नहीं। हम इसे जिह्वा-च्युति (बोलने की भूल) कहते हैं (slip of the tongue)।

ऐसा लगता है कि एक भाषा की एक अवस्था-विशेष में कुछ लक्षण स्थायी तथा कुछ अस्थायी होते हैं। हमें यह अवश्य ही मान लेना होगा कि 16वीं शताब्दी में पूर्व विकास के कारण, बहुत सारे विकल्पी बहुवचन रूप थे (यथा eyen: eyes, shoon: shoes, brethern: brothers) जिससे cows की तरह के रूप का प्रचलन में लाना अपेक्षाकृत अधिक सरल और ग्राह्य था। अब foots की तरह के रूप के नए प्रचलन की सम्भावना नहीं दिखाई देती जबकि समय-समय पर इसका प्रयोग होता रहा है। हम मान सकते हैं कि नव्यीकरण तथा अस्थिरता, बहुवचन रूपों में भी उष्म-घोषीकरण द्वारा, अभी भी अपना काम कर रहे हैं: hooves: hoofs, laths [la:ðz, la:θs] इत्यादि।

Cows की तरह के रूप की उत्पत्ति, नियमित बहुवचन परप्रत्ययों [-iz, -z-s] की आवृत्ति के चढ़ाव में मात्र एक आकस्मिक घटना है। सादृश्यजन्य आर्थी परिवर्तन, जहाँ तक इसके व्याकरणिक तथा कोषीय रूपों का विस्थापन होता है, मात्र आवृत्ति में अस्थिरता है। एक रूप का नए संयोजन के नए सहवर्ती रूप के साथ विस्तार, सम्भवतः पूर्वतर अवस्थिति द्वारा, ध्वन्यात्म अथवा अर्थ की दृष्टि से संबंधित रूपों द्वारा अनुमोदित होता है। इस प्रकार [-z] के साथ cow का प्रयोग सम्भवतः [-aw, -z] में अन्य बहुवचन रूपों की अवस्थिति द्वारा अनुमोदित था, यथा : sows, brows में। इसमें अर्थसाम्य का ही हाथ होता है : sows, heifers, ewes रूपों द्वारा cows रूप खिंच सकता है। प्रसंग में बारबार की अवस्थिति सम्भवतः एक आदर्शरूप के खिंचाव को बढ़ा देती है। लैटिन संज्ञा senatus [*se'na:tus] में संबंधसूचक senatus [se'na:tu:s] को सम्मिलित करते हुए अनियमित

रूप-विभक्ति थी। इसके साथ ही साथ नियमित आदर्श पर एक नया संबंधवाचक रूप senati [se'na:ti:] सामने आया। ऐसा सुझाया गया है कि इस नव्यरूप का प्रमुख आदर्श नियमित संज्ञा populus ['popula:s] 'लोग' था, सम्बन्धवाचक populi ['populi:], दो शब्दों के लिए स्वभावतः साथ-साथ एक पदसंहिति senatus populusque [sena:tus popu'lus kwe] "सीनेट और लोग" प्रयुक्त होते थे। निस्संदेह सबसे अधिक शक्तिशाली उपादान आवृत्ति तथा संख्याएँ होती हैं। एक ओर नियमित रूप वर्ग छोटे समूहों का लोप करके बढ़ते हैं तथा दूसरी ओर अत्यन्त उच्च आवृत्ति वाले अनियमित रूप नव्यरूप का विरोध करते हैं। अनियमित रूप मुख्यतः एक भाषा के सामान्यतम शब्दों तथा पदसंहितियों में दिखाई पड़ते हैं।

23.4 सादृश्यजन्य परिवर्तन की नियमन प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से रूपसाधक रूपसरणि में दिखाई पड़ती है। अंग्रेजी के नियमित बहुवचन-रचना के इतिहास विस्तारों की एक लम्बी शृंखला है। परप्रत्यय [-iz,-z,-s] प्राचीन अंग्रेजी परप्रत्यय [-as] के आधुनिक रूप हैं यथा stan [sta:n] पत्थर (ए०व०), बहुवचन stanas ['sta:nas] पत्थरों (stones)। प्राचीन अंग्रेजी में यह परप्रत्यय केवल बहुवचन के कर्त्ता तथा कर्म कारक में लागू होता था। संबंधवाचक ब०व० stana ['sta:na] तथा सम्प्रदान ब०व० stanum ['sta:num] आजकल दोनों stone रूप से निरूपित होते हैं। उस रूप का विस्थापन, जो आज सभी बहुवचन रूपों के लिए वाक्यीय स्थान से असम्पृक्त होकर प्रयुक्त होता है, अपेक्षाकृत एक लम्बी प्रक्रिया का, अर्थात् संज्ञा में कारक विभक्ति के लोप का, भाग है, जिसके अन्तर्गत ध्वन्यात्म तथा सादृश्यात्म परिवर्तन दोनों आ जाते थे।

प्राचीन अंग्रेजी कर्त्ता-कर्म बहुवचन -as में केवल एक विशेष प्रकार की (निश्चितरूप से सबसे बड़ी) पुंल्लिग संज्ञाओं के साथ आता था। पुंल्लिग संज्ञाओं के कुछ ऐसे वर्ग थे जो भिन्न प्रकार के बहुवचन बनाते थे, यथा ['sunu] "बेटा" ब०व० ['suna]; इनमें एक बड़ा वर्ग n- ब०व० रूपों का था, यथा ['steorra] 'तारा', ब०व० ['steorran]। कुछ संज्ञाओं में अस्थिरता थी : [feld] (खेत) ब०व० ['felda] अथवा ['feldas]। हमें इस अस्थिरता की उत्पत्ति का पता नहीं, किन्तु एक बार इसका अस्तित्व स्वीकार कर लेने पर, हमें इसमें [-as-] बहुवचन के प्रसार के अनुकूल परिस्थितियाँ

दिखाई पड़ सकती हैं । यदि field जैसे शब्दों में परिचित अस्थिरता न आती तो प्राचीनतर ['suna] "लड़के" के स्थान पर ['sunas] जैसा नवप्रयोग कदाचित् आधुनिक foots से अधिक सफलता न पा सकता।

प्राचीन अंग्रेजी की लिंगनिरपेक्ष तथा स्त्रीलिंग संज्ञाओं में s- बहुवचन नहीं था । लिंगनिरपेक्ष प्रतिरूपों के उदाहरण हैं [word] 'शब्द' समध्वनि बहुवचन spears, अं ['spere] "भाला" ब०व० ['speru], अं० ['e:aje] "आँख" ब० व० ['e:agan]; स्त्रीलिंगप्रतिरूप ['karu], अं० care "परवाह" ब० व० ['kara], अं०['tunge] "जिह्वा", ब० व० ['tungan], अं० [bo:k] "किताब" ब०व० [be:k] ।

जहाँ s- ब०व० परम्परागत था, वहाँ भी ध्वनिपरिवर्तन के कारण रूप-वैभिन्न्य उपस्थित हुआ । इस प्रकार स्वरमध्यम ऊष्मों के घोषीकरण से knife: knives जैसे प्रतिरूप आए । इस तरह की अन्य अनियमितताएँ नई संरचनाओं द्वारा आछन्न हो गईं । प्राक् अंग्रेजी में [a], एकाक्षरिक में तथा अनुवर्ती अक्षर [e] के पूर्व [ɛ] हो गया । इस परिवर्तन के बाद अग्र स्वर के बाद तथा अग्रस्वर के बाद अन्तर स्थिति में [g] [j] हो गया । परिणामस्वरूप विकल्प का एक क्रम दिखाई पड़ता है यथा day की सरणि में :—

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता-कर्म	[dɛj]	['dagas]
सम्प्रदान	['dɛje]	['dagum]
संबंध	['dɛjes]	['daga]

बाद में [g] बदलकर [w] हो गया जिससे कि dei की मध्य अंग्रेजी अनियमितता, ब०व० dawes है । बाद के रूपों पर जैसा कि देखा जा चुका है day के नियमित संयोजन [-z] के साथ जुड़कर हावी हो गए ।

पूर्वतर प्राचीन अंग्रेजी में संकुचन (§ 21.6) के साथ स्वरमध्यग [h] के लोप के कारण shoe की तरह की सरणि बनी जो प्राचीन अंग्रेजी में नियमित था किन्तु परवर्ती ध्वन्यात्म परिवर्तन के कारण बहुत ही अनियमित आधुनिक क्रम का कारण बना :

	प्रा० अं०	आ० अं०
एक वचन		
कर्त्ता-कर्म	[sko:h]	*[ʃvf]
सम्प्रदान	[sko:]	[fuw]

संबंध	[sko:s]	*[ʃʌs]
बहुवचन		
कर्त्ता-कर्म	[sko:s]	*[ʃʌs]
सम्प्रदान	[sko:m]	*[ʃuwn, ʃum]
संबंध	[sko:]	[ʃuw]

अन्य प्रतिरूपों की प्राचीन अंग्रेजी रूपसरणि में, यथा foot में, रूपों का एक रुचिपूर्ण पुनर्वितरण दिखाई पड़ता है :

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता-कर्म	[fo:t]	[fe:t]
सम्प्रदान	[fe:t]	['fo:tum]
संबंध	['fo:tes]	['fo:ta]

यहाँ [o:] युक्तरूप, आधुनिक foot, प्राचीन रूप सम्प्रदान **पर हावी** होकर तथा [e:] युक्तरूप, आधुनिक feet, बहुवचन में प्राचीन सम्प्रदान तथा संबंधवाचक रूप पर हावी होकर सामान्यीकृत हो गया है।

कुछ थोड़ी-सी स्थितियों में कोषीय अन्तर के साथ दो-रूप बने रह गए हैं। अंग्रेजी शब्द shade तथा shadow एक प्राचीन अंग्रेजी सरणि के भिन्न रूपों के प्रतिवर्त हैं :

	प्राचीन अंग्रेजी	आधुनिक ध्वन्यात्म पर्याय
एकवचन		
कर्त्ता	['skadu]	[ʃejd] shade
अन्य-कारक	['skadwe]	['ʃɛdow] shadow
बहुवचन		
सम्प्रदान	['skadwum]	['ʃɛdow] shadow
अन्य-कारक	['skadwa]	['ʃɛdow] shadow

shade तथा shadow दोनों रूप समूचे एकवचन के लिए सामान्यीकृत हो गए हैं। परिणमित दो रूप-सरणियों के प्रतिस्पर्द्धी की समाप्ति कोषीय विभेदीकरण में हो गई है। mead और meadow इसी प्रकार प्रयोग में आए, किन्तु इस स्थिति में अस्थिरता mead रूप के अप्रचलन के साथ समाप्त होती हुई लगती है।

प्राचीन अंग्रेजी में 'gate' शब्द का कर्त्ता-कर्म कारक एकवचन में geat [jat], बहुवचन में gatu ['gatu] रूप था। प्राचीन एकवचन जिससे आधुनिक *yat रूप की सम्भावना थी, समाप्त हो गया। आधुनिक रूप gate प्राचीन ब० व० का प्रतिनिधित्व करता है तथा आधुनिक ब०व० gates नियमित ढाँचे पर गढ़ा गया है।

सादृश्यात्मक जनन केवल संमिश्र रूपों तक ही सीमित नहीं है। एक साधारण रूप उन रूपों के सादृश्य के आधार पर गढ़ा जा सकता है जहाँ संमिश्र और साधारण रूप साथ-साथ चलते हैं। मध्यकालीन अंग्रेजी संज्ञा redels 'riddle' में समध्वन्यात्म व० व० के साथ, ढाँचे में सादृश्यात्मक परिवर्तन हुआ :

बहुवचन		एकवचन
stones	:	stone
=redels	:	x

जिससे आधुनिक एकवचन रूप riddle है। इस तरह अपेक्षाकृत लघुतर रूप अथवा आधारवर्ती रूप का गढ़न पश्च-रचन (back-formation) कहा जाता है। एक दूसरा उदाहरण है प्राचीन अंग्रेजी ['pise] 'pea', ब०व० ['pisam] रूपसरणि के सभी रूपों से आधुनिक pease, peas [pijz] तथा एकवचन pea पश्चरचन है। इसी प्रकार प्राचीन फ्रेंच cherise 'cherry' मध्यकालीन अंग्रेजी में cheris रूप में आदत्त था जिससे आधुनिक cherries निकला है। एकवचन cherry सादृश्यात्मक जनन है।

23.5 शब्द-रचना में सादृश्यात्मक रूपों के लिए सबसे अनुकूल आधार एक शब्दसाधित रूप होता है जिसका कोई स्पष्ट अर्थ होता है। इस प्रकार हम सभी तरह की नई कर्तृ संज्ञाएँ -er के साथ बनाते हैं जो आज सामान्य व्याकरणिक सादृश्य है। यह परप्रत्यय प्राक्-अंग्रेजीकाल में लैटिन से लिया गया था तथा इसने वहाँ के बहुत सारे मूलप्रतिरूपों को स्थानान्तरित कर दिया है। प्राचीन अंग्रेजी ['huntian] का कर्तृ रूप ['hunta] था जिसके स्थान पर hunter प्रयुक्त होने लगा है। बाद में webster के स्थान पर weaver प्रयुक्त होने लगा और अब केवल पारिवारिक नाम के रूप में बना रह गया है। boot-black, chimney-sweep में प्राचीन रूप समास-सदस्य रूप में ही बने हुए हैं। यही नहीं कि हम कर्तृ संज्ञाएँ यथा :

camou-flager, debunker, charlestoner बना लेते हों, वरन पश्च रचनाएँ भी होती हैं, यथा क्रिया chauffe [ʃowf] "हाँकना" ('drive') (कोई एक) "एक मोटर-कार चलाना" से chauffeur ['ʃowfə]. एक सादृश्य जिससे नई रचना अनुमोदित होती है उसे जीवित (living) कहा जाता है।

webster का प्राचीन परप्रत्यय -ster एक ऐसे प्रतिरूप का उदाहरण है जिसे सम्भवतः कभी भी नियमित अथवा "जीवित" नहीं कहा जा सकता था, फिर भी इसके प्रसार की एक अवधि थी। इसके द्वारा एक स्त्रीलिंग कर्तृ द्योतित होता हुआ लगता है (यथा अभी भी डच-भाषा में होता है)। spinster में स्त्रीलिंग अर्थ बना हुआ है जो मूलतः 'spinneress' था। प्रत्यक्षरूप से सारे शब्दों में स्त्री० अर्थ स्पष्ट नहीं था। पर-प्रत्यय लिंग-निरपेक्ष बना रहा और tapster, huckster, teamster, maltster, webster, dunster में दिखाई देता है। क्रिया आवश्यक रूप से उपादेय नहीं थी, उदाहरण के लिए songster, rimester, trickster, punster, gamester. एक अमानव कर्तृ lobster में दिखाई पड़ता है जो सम्भवतः प्राचीन अंग्रेजी loppestre मूलतः 'jumper' का प्रतिनिधित्व करता है। roadster निर्जीव वस्तु है। क्रिया अथवा संज्ञा के स्थान पर विशेषण youngster में समाहित है। स्त्री० की सीमा समाप्त हो जाने पर -ster वाले शब्द में जुड़ गया : huckstress, songstress, seamstress. अन्तवाले के साथ गुच्छ के पूर्व स्वर का ह्रस्वीकरण हो गया ['semstris]। अपेक्षाकृत अधिक नियमित स्पर्द्धी रूप ['sijmstris] seam में सन्निहित स्वर के सादृश्य पर है। -ster के तरह की स्थितियों में हमें एक ऐसी रचना दिखाई पड़ती है जो एक रूप से दूसरे रूप तक बिना 'जीवित' रूपों के विस्तार को कभी भी उपलब्ध किए हुए व्याप्त है।

कुछ रचनाएँ बिना अर्थ-क्षेत्र के पूर्व-रिक्तन के विस्तृत प्रयोग के योग्य हो जाती हैं। अंग्रेजी में परप्रत्यय -y, -ish, -ly जिनसे विशेषण व्युत्पन्न होते हैं ऐतिहासिक काल में पूर्णरूप से जीवित बने रहे हैं। एक शब्द से दूसरे शब्द तक इनके प्रयोग का विस्तार होता रहा है तथा विभिन्न आर्थी विभेदों में प्रयुक्त होते रहे। इस प्रकार परप्रत्यय -y के साथ (प्राचीन अंग्रेजी -ig से) कुछ शब्द हमारे प्राचीन अंग्रेजी आलेखों में दिखाई पड़ते हैं (यथा mighty, misty, moody, bloody, speedy) जबकि अन्यरूप केवल बाद

के काल में दिखाई पड़ते हैं (यथा earthy, wealthy, hasty, hearty, fiery)। जब किसी विदेशी उत्पत्ति वाले शब्द में परप्रत्यय जुड़ता है, आदान-तिथि से नए संयोजनों के प्राचीनतम सीमा का बोध होता है (sugary, flowery, creamy)। आधुनिक काल में यह परप्रत्यय अर्थ के कुछ विशेष क्षेत्रों में प्रसारित हो रहा है यथा arch, affected; summery (यथा (of clothes वस्त्रों का) sporty, swanky, arty, booky. इसी प्रकार कुछ संयोजनों में -ish जो मात्र एक विशेषण-रचक है (boyish, girlish) "अनपेक्षित, अनुपयुक्त से मिलते-जुलते" अर्थ को सूचित करता है यथा -mannish, womanish (तुलना करें manly, womanly) childish (तुलना में childlike)। आर्थी विशिष्टीकरण का आरंभिक बिन्दु उन रूपों में तलाश किया जाना चाहिए जहाँ आधारवर्ती शब्द का विशेष मूल्य है। इस प्रकार -ish का अरुचिकर भाव loutish, boorish, swinish, hoggish जैसे शब्दों से आता है।

रूपीय संरक्षक की आकृति में सादृश्यजन्य परिवर्तन होता है और विशेष रूप से वृद्धि की स्थिति में। लैटिन में argentum [ar'gentum] "चाँदी" : argentarius [argen'ta:rius] का समुच्चय शब्दसिद्धि का एक नियमित प्रतिरूप प्रदर्शित करता है। फ्रेंच के इतिहास में, अन्तिम स्वनिमों का बारबार लोप हुआ। आधुनिक रूप हैं argent [arzã] : argentier [arzãtje]. परप्रत्यय [-tje] का संयोजन शब्दसिद्धि का सूत्र बन गया है। तदनुसार यह परप्रत्यय उन शब्दों में दिखाई पड़ता है जिनमें (जैसा कि इतिहासवेत्ता नितांत असंगति ढंग से कहते हैं) [t] कभी भी विषम स्थान पर नहीं था। फ्रेंच fer blanc [fɛr-blã] 'टिन' (लैटिन प्रतिरूप *ferrum blankum "सफेद लोहा" जर्मन विशेषण blank 'कोरा' के साथ) ferblantier [fɛrblãtje] "टिन मिस्त्री" का आधारवर्ती है। bijou [bizu] "रत्न" (ब्रेटेन (bizun) से bijoutier [bizutje] "जौहरी" का आधारवर्ती है। इसी तरह के अनेक उदाहरण मिल जाएँगे।

एक समय में, एक प्रत्यय नितांतरूप से उपजनी तत्वों का बना हो सकता है और उसके मूल आवृत्ति का पता नहीं भी चल सकता है। प्राचीन अंग्रेजी में, क्रिया-रूपसरणि संज्ञा से [wund] "घाव" ['wundian] "घाव लगाना" और यह अभी तक जीवित है यथा wound: to wound; radio: to radio। कुछ थोड़े से उदाहरणों में फिर भी आधारवर्ती

संज्ञा स्वयं में एक परप्रत्यय [-en-] के योग से साधित थी यथा [fɛst] "दृढ़, मजबूत"; ['fɜsten] "दृढ़ स्थान, किला" ['fɛstenian] "मजबूत बनाना, किलेबंदी करना" । आवृत्ति अथवा अर्थ में कुछ अस्थिरता के कारण, जैसे कि, सम्भवतः संज्ञा में अथवा विशिष्टीकरण से ['fɛsten]-युग्म [fest] दृढ़ ['fɛstenian] "दृढ़ बनाना, योजना में नई रचना के लिए एक आदर्श का काम करता था ।"

fast: fasten=hard: x

परिणामस्वरूप harden, sharpen, sweeten, fatten, gladden की तरह के रूप निकले जिनमें एक परप्रत्यय -en विशेषणों से क्रिया साधित करता है ।

बहुत कम ऐसा होता है कि अपेक्षाकृत एक मुक्तरूप प्रत्ययीय स्थिति तक पहुँचा हो । ध्वनि-परिवर्तन के कारण समास-रूपों के कभी-कभी परप्रत्यय बन जाते हैं । इस प्रकार परप्रत्यय ly (manly) like का क्षीण रूप है तथा परप्रत्यय -dom (kingdom) doom शब्द का । यह विशेषरूप से तब होता है जब एक मुक्तरूप प्रयोग से निकल जाता है, यथा hood (childhood) की स्थिति में जो प्राचीन अंग्रेजी शब्द [ha:d] "व्यक्ति, पदवी" का अवशेष है । जर्मन messer ['meser] "चाकू" आधुनिक रूप है जिसमें प्राचीन उच्च-जर्मन ['messi-rahs] मूलतः "भोजन का चाकू" का सादृश्यात्मक के साथ ही ध्वन्यात्म ह्रस्वीकरण हुआ है जिसमें दूसरा सदस्य [sahs] "चाकू" वर्नर के परिवर्तन-नियम के (§20.8) अनुसार बदल गया था और बाद में [z] परिर्वातित होकर [r] हो गया । जर्मन Schuster [ʃu:ster] 'मोची' में [-ster] का आभास मिलता है । दोनों शब्दों का एक शब्द में विलीन हो जाना बहुत ही कम देखने को मिलता है । इस सम्बन्ध में सर्वश्रेष्ठ ज्ञात उदाहरण है रोमान्स भाषाओं में क्रियार्थक संज्ञा-पदसंहिति have से भविष्यकालिक रूपों की उत्पत्ति । लैटिन amare habeo [a'ma:re'habeo:] I have to, I am to love> फ्रेंच aimerai [ɛmre] मैं प्यार करूँगा; लैटिन amare habet [a'ma:re 'habet] 'he has to, is to love'>फ्रेंच aimera [ɛmra] '(वह) प्यार करेगा' इत्यादि । यह विकास अति सामान्य स्थिति में हुआ होगा । सर्वोपरि हमें यह ध्यान रखना होगा कि लैटिन तथा रोमान्स भाषाओं ने क्रिया

रूप विभक्ति को उलझा दिया है जो एक-शब्द वाक्य-रूप के लिए कभी आदर्श काम करता था।

शब्द-संरचना में पश्चरचना (Back-formations) किसी भी तरह असाधारण बात नहीं है, चाहे भले ही उसे पहचान पाना अधिकतर दुरुह हो। अंग्रेजी के विदेशी विद्वत्-वर्गीय शब्दावली की बहुत-सी क्रियाएँ लैटिन के भूतकालिक कृदन्तों से मिलती हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण स्थिति इसलिए है कि अंग्रेजी ने इन शब्दों को फ्रेंच से लिया और फ्रेंच में लैटिन भूतकालिक कृदन्त ध्वनि-परिवर्तन के कारण से अस्पष्ट हो गए हैं अथवा उसके स्थान पर नई रचनाएँ आ गई हैं। लैटिन agere [ˈagere] "रास्ता दिखाना, ले जाना, करना" भूतकालिक कृदन्त actus [ˈaktus] "रास्ता दिखाना, किया" फ्रेंच agir [azi:r] "करना", कृदन्त (नई रचना) agi [azi] "किया": अंग्रेजी to act; लैटिन affligere [affli:gere] "नीचा दिखाना" (to strike down) "पीड़ा पहुँचाना", कृदन्त afflictus [afˈfliktus] "मारा हुआ, पीडित:" : फ्रेंच affliger [aflize], कृदन्त afflige[aflize]: अंग्रेजी to afflict; लैटिन separare [se:paˈra:re] "अलग करना", कृदन्त separatus [se:paˈra:tus]; फ्रेंच séparer [separe], कृदन्त séparé [separe]: अंग्रेजी to separate। अंग्रेजी क्रियाएँ act, afflict, separate संज्ञा रूप action, affliction, separation पर आधारित है जो लैटिन actionem, afflictionem, separationem [aktiˈo:nem, afflikti'o:nem, se:para:tiˈo:nem] जो फ्रेंच action, affliction, separation आधुनिक उच्चारण में [aksjõ, afliksjõ, separasjõ] होते हुए पहुँचा है। समीपी आदर्शों (immediate models) के साथ communion: to commune (प्राचीन फ्रेंच communion: comuner) की तरह की स्थिति अवश्य रही होगी। इसकी सामान्य पृष्ठ-भूमि में warm: to warm; separate: to separate की तरह की अंग्रेजी के विशेषण और क्रिया की समध्वनिता थी। यह अनुमान इस तथ्य से भी पुष्ट होता है कि अंग्रेजी के पूर्वकाल के आलेखों में पूरी तौर पर -t युक्त क्रियाओं की अपेक्षा -tion युक्त संज्ञाएँ मिलती हैं। "न्यू इंग्लिश डिक्शनरी" के आदि A वाले 108 युग्मों में से, 74 स्थितियों में संज्ञा रूप क्रिया के पूर्व आते हैं यथा 1330 में action, किन्तु to act 1384 में, 1303 में affliction, किन्तु to afflict 1393 में। फिर भी कभी-कभी हम -t के साथ क्रियाओं को बाद

में प्रयोग में आते हुए पाते हैं। aspiration: to aspire की स्थिति में हमारे ध्यान में लैटिन-फ्रेंच योजना आती है किन्तु 1700 के लगभग to aspirate की नई रचना मिलती है। इस तरह की आधुनिक रचनाएँ प्राचीनतर evolve की प्रतिस्पर्द्धी में evolution पर evolute तथा elocution पर elocute है।

23.6. शब्द-समासन में सादृश्य पता लगाने का कार्य बहुत कम किया गया है। अंग्रेजी से शब्द-समासन की आधुनिक प्रवृत्ति यह भ्रम उपस्थित कर देती है कि समास शब्दों के साधारण तथा पास-पास आ जाने से बनते हैं। पाठकों को यह कहने की आवश्यकता कम है कि आधुनिक अंग्रेजी प्रतिमान जिसमें समास केवल शब्द-बलाघात के मूर्धन के साथ सदस्यों के स्वतन्त्ररूप के समान होते हैं, नियमनकारी सादृश्यजन्य परिवर्तन की एक लम्बी-लम्बी श्रृंखला के कारण हैं। इस प्रकार [ˈfcɔ-ˌhed] forehead, [ˈfɔrid] के प्रतिस्पर्द्धी की हैसियत से जिसमें ध्वनि-परिवर्तन के कारण अनियमित हुआ है, यह सादृश्यात्मक पुनःरचना के कारण है :

fore; arm: fore-arm [ˈfɔer- ˌa:m]
=fore, head: x

समास के स्वतन्त्र शब्दों से संबंध में अधिकतर विस्थापन हो जाता है। आदिम भारतयूरोपीय भाषा में समास-सदस्य के रूप में क्रिया-प्रातिपदिक का प्रयोग नहीं होता था। आजकल अंग्रेजी में क्रियात्मक प्रतिरूप *to meat-eat का अभाव है जो संज्ञा और विशेषण प्रतिरूप meat-eater तथा meat-eating (§ 14.3) से मेल खाता है। फिर भी अनेक भारतयूरोपीय भाषाओं में क्रिया-सदस्यों के साथ समासों का विकास हुआ है। अंग्रेजी में हमें housekeep, dressmake, backbite की तरह के कुछ अनियमित रूप मिलते हैं। whitewash की तरह के संज्ञा-समास से शून्य तत्व के साथ हम एक क्रिया whitewash और इससे कर्तृ संज्ञा whitewasher व्युत्पन्न करते हैं। housekeep के अनियमित प्रातीक्य सम्भवतः इसी आदर्श पर की पश्च रचना है :—

whitewasher : to whitewash
=housekeeper : x

अब के प्रतिष्ठित शोधों में हर्मान ओस्ताफ (Hermann Osthoff)

ने यह दिखाया है कि कैसे इस प्रकार के रूप अनेक योरोपीय भाषाओं में प्रचलित प्राचीन उच्च-जर्मन में ['beta] "प्रार्थना" की तरह की भाववाचक संज्ञाएँ सामान्य आनुवंशिक प्रथानुसार, समास के ['beta-ˌhu:s] "प्रार्थना-गृह" के पूर्व-सदस्य के रूप में प्रयुक्त होता था। पदरचना की दृष्टि से जुड़ी हुई क्रिया ['beto:n] "प्रार्थना करना" में भिन्न परप्रत्ययी स्वर था तथा समास में वह बाधा नहीं उपस्थित करता था। फिर भी मध्यकाल में बलाघातहीन स्वर एकरूप [e] हो गए तथा आंशिक रूप से लुप्त हो गए थे। इस कारण मध्य उच्च जर्मन में (1200 के लगभग) ['beten] 'प्रार्थना करना'; ['bete] "प्रार्थना"; [bete-ˌhu:s] "प्रार्थना गृह" समास-सदस्य क्रिया से उतना ही मिलते-जुलते थे जितना कि संज्ञा से। यदि संज्ञा की आवृत्ति कम हो जाती थी, अथवा वह अर्थ की दृष्टि से विशिष्टीकृत हो जाती थी, समास-शब्द क्रिया-प्रातिपदिकों के समान हो जाते थे। इस प्रकार ['bete] "प्रार्थना" की आवृत्ति घट गई—आधुनिक भाषा में भिन्न व्युत्पत्ति का प्रयोग होता है, Gebet [ge'be:t] "प्रार्थना"—तथा अवशेष के लिए contribution, tax के अर्थ में विशिष्टीकृत हो गया। इसके परिणामस्वरूप Bethaus ['be.t-ˌhaws] "प्रार्थना-गृह" की तरह के समास, Bettag ['be:t-ˌta:k] "प्रार्थना-दिवस", Betschwester ['be:t-ˌʃvester] "भिक्षुणी, पुजारिन" अथवा अतिधार्मिक स्त्री॰ केवल इस तरह वर्णित हो सकता है कि इसमें beten [be:tan] 'प्रार्थना करना' पवित्र क्रिया प्रातिपदिक [be:t-] निहित है। तदनुसार मध्यकाल से ही क्रिया के पूर्व सदस्य के साथ इस तरह के नए समासों की रचना हुई है, यथा schreiben "लिखना" से schreibtisch ['ʃrajp-ˌtiʃ] "लिखने की मेज" अथवा lesen "पढ़ना" से Lesebuch ['le:ze-ˌbu:x] "पढ़ने की पुस्तक।"

अनियमित समासों के बीच अस्थिरता, यथा ['fɔrid] forehead तथा सादृश्यात्मक रूप से रचित नियमित रूपान्तर यथा ['fɔe,hed] नई रचना के लिए एक आदर्श (model) का काम करता है जिसके स्थान पर एक समास-सदस्य का अल्प परिचित रूप प्रयुक्त होता है। इस प्रकार inmost, northmost, utmost, (तथा प्रथम सदस्य से outmost) द्वितीय सदस्य के रूप में most शब्द के साथ, सादृश्यात्मक रचनाएँ होती हैं जो प्राचीन अंग्रेजी प्रतिरूप ['innemest, 'nor θmest,u:temest] स्थान पर आती हैं। इन शब्दों में [mest] तम परप्रत्यय [-est] का एक विशिष्ट रूप था (संवार्द्ध के साथ)

इस तरह की नई रचनाओं का नियमन जो (जैसा कि इतिहासवेत्ताओं की खोज है) रूप से पूर्वतर संरचना के अनुसार नहीं है, कभी-कभी जन-निरुक्तियाँ (popular etymologies) कही जाती हैं।

23.7 पदसंहिति में सादृश्यात्मक नवरचन तब बहुत आसानी से देखा जा सकता है जब इसके द्वारा अकेले शब्द की आवृत्ति प्रभावित होती है। सोपाधिक, ध्वनि-परिवर्तनों से पदसंहिति में ध्वन्यात्म स्थान के अनुसार एक शब्द के विभिन्न रूप दिखाई पड़ सकते हैं। अंग्रेजी के प्रतिरूपों में जिनमें अन्त्य [r] तथा व्यंजन के पूर्व [r] का लोप हो गया, किन्तु स्वरों के पूर्व बना रहा, water के तरह के शब्दों का संधि-वैकल्प परिणामित हुआ। अन्त स्थान में तथा व्यंजनों के पूर्व यह [ˈwɔːtər] हो गया किन्तु एक स्वर के पूर्व, सुसम्बद्ध पदसंहिति में [r] बना रहा : the water is [ˈwɔːtər iz], the water of [ˈwɔːtər əv]. water का अन्त्य-स्वर अब idea [ajˈdiə] के स्वर की तरह था जिसमें कभी भी अन्त में [r] नहीं था। इसके कारण एक नई रचना हुई :

water [ˈwɔːtə] : the water is [ˈwːɔtər iz]
=idea [ajˈdiə] : x

जिसके परिणामस्वरूप संधि-रूप the idea-r is [ajˈdiər iz] है।

आधुनिक अंग्रेजी की तरह की भाषा में, जिसमें शब्द के आरम्भ अथवा अन्त का विशेष ध्वन्यात्म निरूपण किया जाता है इन स्थानों पर स्वनिम शायद ही साधारण ध्वन्यात्म परिवर्तन की दशा का निर्वाह कर पाते हैं वरन वे अपने स्वयं के सोपाधिक परिवर्तन के अनुकूल ही होते हैं। केवल बलाघातहीन शब्दों वाली पदसंहितियाँ एक शब्द के भीतर रहने वाली दशाओं के समानान्तर होती हैं। इस प्रकार उपरोक्त बहुत सारी स्थितियों में संधि-परिवर्तन सीमित हैं (······of,······is) अथवा इस तरह के जैसे don't, at you [ˈɛtʃuw], did you [ˈdidʒuw], और भी, अधिकांश शब्दों का साधारण ध्वन्यात्म अंकन और किन्हीं स्थितियों में सामान्यतः स्वराघातहीन शब्दों का अंकन भी वैकल्पिक रूपों की पुनर्रचना तथा उज्जीवन को मान्यता देता है जो निरपेक्ष रूपों से एकता रखते हैं : जैसे do not, at you [ˈet juw], did jou [ˈdid juw]।

उन भाषाओं में जिनमें शब्द-सीमाओं का अपेक्षाकृत स्वल्प निरूपण

मिलता है, संधि-वैकल्प अधिक संख्या में प्रयुक्त होते हैं तथा उन अनियमितताओं को जन्म देते हैं जो स्वयं में नई रचनाओं द्वारा समतल बना दिये गये हैं। §21.4 में आयरी के आदि-संधि की उत्पत्ति देखी जा चुकी है। फ्रेंच में संज्ञा पूरी तौर पर संधि-वैकल्प से संबद्ध नहीं है। pot [po] 'वर्तन' अथवा pied [pje] "पैर" पदसंहिति में अपरिवर्त्य हैं। फिर भी यह देखने के लिए कि बाह्य स्थिरता सादृश्यात्मक नियमन के कारण है हमें केवल संधि (§ 14.2) के समान पदसंहितियों पर ही विचार करने की आवश्यकता है, यथा pot-au-feu [pɔt o f ϕ] "आग-पर-बर्तन" अर्थात् (broth) अथवा pied-á-terre [pjeta tɛ:r] "धरती पर पैर" अर्थात् "निवास-स्थान"। अन्य-पुरुष एकवचन क्रियाएँ जो आदि-मध्यकाल से एकाक्षरिक थीं, नियमित ध्वन्यात्म विकास के कारण संधि में स्वर के पूर्व [t] है। लैटिन est> फ्रेंच est [ɛ] "है" किन्तु लैटिन est ille> फ्रेंच est-il [ɛt i] 'क्या वह ?' दूसरी ओर एक से अधिक अक्षर वाले क्रिया-रूपों में यह [t] नहीं था। लैटिन 'amat' "वह प्यार करता है" से स्वर के पूर्व भी फ्रेंच aime [ɛm] "प्यार करता है" रूप निकलता है। फिर भी प्रतिमान [ɛ]:[ɛt i] =[ɛm] : x के परिणामस्वरूप आधुनिक संधि-रूप aime-t-il [ɛmt i] "क्या वह प्यारा है ?" रूप बना।

बाद के प्राचीन अंग्रेजीकाल में वलाघातहीन स्वर के बाद अन्त्य [-n] स्वर के पूर्व संधि को छोड़कर लुप्त हो गया था। इस प्रकार eten "खाना" ete हो गया, an hand, a hand हो गया, किन्तु an arm वैसे ही बना रहा। आर्टिकल a : an की स्थिति से परिणमित रूपान्तर बना रहा है। पूर्व आधुनिक अंग्रेजी के प्रारम्भकाल में my friend: mine enemy बना रहा है। -n के लोप के समय में यह अवश्य ही माना जा सकता है कि अंग्रेजी में आधुनिक अंग्रेजी की भांति शब्द-सीमा निर्धारण नहीं होती थी। संधि [n] शब्द के आदि की कुछ स्थितियों में सामान्यीकृत हो गया था। प्राचीन अंग्रेजी efeta [ˈeveta] "तेंदुआ" मध्यकालीन अंग्रेजी में ewte तथा newte रूप में दिखाई पड़ता है जिससे आधुनिक newt निकला है। an ewte के तरह की पदसंहिति का उच्चारण अवश्य ही [aˈnewte] होता रहा होगा तथा (निस्सन्देह आवृत्ति अथवा अर्थ की कुछ विशेष दशाओं में) नई रचना :

[aˈna:me] 'a name': [ˈna:me] 'name'

=[a'newte] 'a lizard':x
इस परिणाम के साथ कि newte कहा जाता था, हुई होगी । इसी प्रकार eke-name "पूरक नाम" से n- युक्त एक उपरूप निकला, आधुनिक nick-name, for then anes अब for the nonce हो गया है । दूसरी ओर आदि [n] कुछ रूपों में संधि [n] की तरह निरूपित हुआ था । इस प्रकार प्राचीन अंग्रेजी nafogar ['navo-ˌga:r] शब्दार्थ की दृष्टि से 'nave-lance', मध्यकालीन अंग्रेजी navegar के स्थान पर auger प्रयुक्त हुआ है। प्राचीन अंग्रेजी ['nɛ:drɪ] से मध्यकाल की अंग्रेजी में naddere तथा addere रूप निकले जिनसे आधुनिक adder निकला । प्राचीन फ्रेंच naperon रूप में आगत था, apron से स्थानान्तरित हुआ है।

इस अन्त्य [n] के लोप के बाद दूसरे ध्वनि-परिवर्तन के कारण कुछ अन्त्य स्वरों का लोप हो गया जिससे होकर बहुत से यहां के मध्य [n] अन्त्य स्थान पर आए, जैसे oxena>oxen में । ये नवीन अन्त्य [n] अन्त्य स्थान पर इतनी देर से आए कि यह सम्भव नहीं रहा कि इनका लोप हो सके जिससे कि अंग्रेजी में अब संधि [n] के अतिरिक्त जो केवल स्वर के पूर्व दिखाई पड़ता था स्थायी अन्त्य [n] भी बना हुआ है । इसके कारण कुछ जटिल संबंध अस्तित्व में आए :

	प्राचीन अंग्रेजी	प्रारंभिक स्वर के पूर्व	मध्यकालीन अंग्रेजी अन्त्य
एकवचन			
कर्त्ता	oxa	ox	oxe
अन्य कारकों में	oxan	oxen	oxe
बहुवचन			
कर्त्ता-कर्म	oxan	oxen	oxe
सम्प्रदान	oxum	oxen	oxe
संबंध	oxena	oxen	oxen

इस जटिल प्रवृत्ति का पुनः रूपन हमारे आधुनिक वितरण एकवचन ox बहुवचन oxen में हुआ।

अधिकांश स्थितियों में एक पदसंहितीय नवरचन एक नए शब्दरूप में

ही नहीं, वरन् नए वाक्यरूपात्मक तथा कोषीय प्रयोगों में भी होता है, यथा like का संयोजक (§ 23.2) रूप में प्रयोग। जर्मन में हमें ein Trunk wasser [ajn 'truŋk 'vaser] 'जल का एक पेय" की तरह के विरोधी वर्ग मिलते हैं जहाँ कि संबंधी भाषाओं में हम आशा करेंगे कि दूसरी संज्ञा संबंध कारक में होगी जैसे Wassers "जल का"। स्त्री० तथा ब०व० संज्ञाओं का संबंध-कारक अन्त्य, ध्वन्यात्म परिवर्तन के कारण घटकर शून्य रह गया है। Milch [milx] "दूध" का संबंध-कारक (स्त्री० संज्ञा) कर्त्ता तथा कर्म की समध्वनि वाला है। प्राचीन ein Trunk wassers के स्थान पर आधुनिक रूप प्रयुक्त होता है जो इस योजना से निकला :

Milch Trinken "दूध पीनाः" ein Trunk Milch "दूध का एक पेय"

=Wasser Trinken "पानी पीना" है : x

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह उन संज्ञाओं की अवस्थिति से जिनके संबंध-कारक शून्य तथा -es के बीच दोलित होते रहते थे तथा संबंधकारक की आवृत्ति-कमती से अनुमोदित था। प्रत्यक्ष कठिनाइयों के होते हुए भी इसकी संभावना लगती है कि आगे के अनुसंधानों से पदसंहिति में सादृश्यात्मक नवरचन के अनेक उदाहरण मिल जायेंगे जो वाक्यरूपात्मक तथा कोषीय दोनों ही होंगे। दार्शनिक पूर्वाग्रह के कारण हम अधिकतर परिवर्तन की प्रवृत्ति को शब्द-विशेष तथा उसके अर्थ में खोजते रहे हैं।

23.8 अनेक नई रचनाओं के लिये हम एक समानुपातिक आदर्श नहीं दे पाते। हम विश्वास करते हैं कि ऐसा सदा एक आदर्श-समुच्चय पाने की अक्षमता के कारण से ही नहीं है और सचमुच ही एक ऐसा भाषाई परिवर्तन का प्रतिरूप है जो सादृश्य-जन्य परिवर्तन से मिलता-जुलता है, किन्तु उसका कोई आदर्श-समुच्चय नहीं बन पाता है। ये अनुकूली नवरचनाएँ किसी प्राचीन रूप से मिलती-जुलती हैं जिसमें अर्थसम्बद्ध रूपों की दिशा में कुछ परिवर्तन हो गए हैं। उदाहरण के लिए दो अपभाषारूप actorine "अभिनेत्री" तथा chorine "सहगान में भाग लेने वाली लड़की" में से केवल पहले वाले के लिए यह कहा जा सकता है कि वह समानुपातिक सादृश्य (Paul : Pauline=actor : x) का परिणाम है। अब chorine कुछ अर्थ में actorine "अभिनेत्री" पर आधारित लगता है किन्तु समुच्चय

chorus: chorine न तो रूप और न अर्थ की दृष्टि से actor: actorine के समानान्तर है। समुच्चय Josephus: Josephine [jowˈsijfəs, ˈjowzifijn] अपसामान्य है, अर्थ की दृष्टि से सुदूर तथा ध्वन्यात्म दृष्टि से अनियमित। केवल इतना कहा जा सकता है कि बहुत सी संज्ञाओं में परप्रत्यय [-ijn] रहता है, उदाहरण के लिये chlorine, colleen और इस परप्रत्यय से कुछ स्त्रियों के नाम व्युत्पन्न होते हैं और विशेष करके संज्ञा actorine और chorus का -us, विशेषण choral को ध्यान में रखें, तो स्पष्ट रूप से परप्रत्यय है। यह सामान्य पृष्ठभूमि किसी से chorine का उच्चारण कराने के लिये पर्याप्त रही होगी, यद्यपि इसका उपर्युक्त सादृश्य नहीं था।

एक नया रूप (यथा chorine) जो परम्परानुमोदित रूप (chorus, chorus-girl) पर आधारित है, किन्तु जिससे अर्थ की दृष्टि से संबंधित रूपों (chlorine, colleen, Pauline इत्यादि, विशेषरूप से actorine को भी मिलाकर) की श्रेणी की ओर उन्मुख होता है अनुकूलन (adaptation) द्वारा उत्पन्न माना जाता है। अनुकूलन एकाधिक उपादानों से अनुमोदित लगता है किन्तु यदि सभी उपादानों को सम्मिलित कर लें, तो रूप के सम्बन्ध में पूर्वानुमान नहीं लगा सकते। प्रायः, जैसा कि हमारे उदाहरण में है, एक नए रूप का अभिधान हास्यजनक होता है, यह अभिधान सम्भवतः नए शब्द के यत्नसाध्य अननुमेय रूप से जुड़ा हुआ है। यह scrumptious, rambunctious, absquatulate की तरह के हास्य-शिक्षित शब्दों के लिए सच है। यह असंभव लगता है कि एकाधिक वक्ता इन रूपों का प्रयोग करें। हमें उनके किसी एक वक्ता व्यक्ति द्वारा उत्पन्न, भाषाई तथा व्यावहारिक वैचित्र्य द्वारा निर्धारित होने में संदेह है। कुछ सीमा तक समुदाय की सामान्य प्रवृत्ति से वह अवश्य सहमत रहे होंगे क्योंकि वे अन्य वक्ताओं द्वारा भी गृहीत हुए।

कुछ अनुकूलन अपेक्षाकृत कम यत्नसाध्य होते हैं तथा केवल ऐसे नए रूप को पैदा करते है जो अर्थ से संबंधित रूपों के अधिक अनुकूल होता है। अंग्रेजी में बहुत से शब्द फ्रेंच से परप्रत्यय -ure के साथ लिए गए हैं, यथा measure, censure, fracture। प्राचीन फ्रेंच शब्द plaisir, loisir, tresor जिसमें अन्य परप्रत्यय जुड़े होते हैं, अंग्रेजी में -ure प्रतिरूप के समान प्रयुक्त होते हैं pleasure, leisure, treasure, [-zə] से प्राचीन [-zju:r]

का आभास मिलता है । हमारे विदेशी सीखे हुए शब्दों में egoism फ्रेंच के आदर्श पर है किन्तु egotism, despotism, nepotism की दशा में गृहीत रचना है ।

रोमानी-भाषाओं में, लैटिन reddere ['reddere] "पीठ देना" के स्थान पर अधिकांशत: *rendere प्रतिरूप प्रयुक्त हुआ है, यथा, इतालवी में rendere ['rεndere], फ्रेंच rendere [rãdr] जिससे अंग्रेजी render निकला है । यह *rendere, reddere का अनुकूलन जो लैटिन prehendere [pre 'hendere, 'prendere]' "लेना" > इतालवी prendere['prεndere], फ्रेंच prendre [prãdr]; लैटिन attendere [at'tendere 'ध्यान देना' > इतालवी attendere [at'tεndere] "प्रतीक्षा करना", फ्रेंच attendre [atãdr] (तथा लैटिन के अन्य समास tendere) । लैटिन vendere ['we:ndere] "बेचना" > इतालवी vendere ['vendere] फ्रेंच vendre [vãdr], यहाँ पर 'take' के लिए शब्द अपने अर्थ के घनिष्ठ संबंध के साथ, निस्सन्देह एक प्रमुख उपादान था ।

कभी-कभी केवल एकल रूप ही आकृष्ट करता है । प्राचीन शब्द gravis "भारी" के अतिरिक्त परकालीन लैटिन में भी एक रूप grevis था जिसका स्वर 'levis' "हल्का" से प्रभावित लगता है । इस तरह की रचनाएँ निश्रित (contaminations) कही जाती हैं । हम सदा निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि आकर्षक केवल एकलरूप के कारण था । हमारे उदाहरण में brevis "छोटा" शब्द से grevis की रचना में सहायता मिलने की सम्भावना हो सकती है ।

'foot' के लिए रूपसरणि में, आदिम भारतयूरोपीय *[po:ds] संबंध कारक *[po'dos] संस्कृत [पात्], संबंधकारक [पद:] एक प्राचीन ग्रीक बोली में सम्भावित रूप में [ᵛpo:s], संबंधकारक [po'dos] में दिखाई पड़ता है किन्तु एटिक बोली में असम्भावित कर्त्ता रूप ['pows] है । इसकी व्याख्या मिलावट से दी जा सकती है । tooth के लिए [o'dows] संबंधकारक [o'dontos] जो ध्वन्यात्म दृष्टि से आदिम भारतयूरोपीय प्रतिरूप [o'donts] सामान्य प्रतिवर्त है ।

जर्मनीय भाषाओं की प्राचीनतर अवस्थाओं में पुरुषवाचक सर्वनाम अवश्य ही अस्थाई स्थिति में रहे होंगे । 'ye' के लिए प्राचीन रूप एक आद्य जर्मनीय प्रतिरूप *[ju:z, juz] रहा होगा जो कि गॉथी में jus [ju:s] अथवा

[jus] में मिलता है। अन्य जर्मनीय बोलियां एक आद्य जर्मनीय प्रतिरूप *[jiz] प्राचीन नार्स [e:r], प्राचीन अंग्रेजी [je:], प्राचीन उच्च जर्मन [ir] की ओर इंगित करती हैं। यह रूप *[juz] "तुम" का 'हम' अर्थसूचक शब्द के साथ संमिश्रण है। आद्य जर्मन *[wi:z, wiz] गॉथी [wi:s] प्राचीन नार्स [ve:r], प्राचीन अंग्रेजी [we:] प्राचीन उच्च जर्मन [wir] रूप मिलते हैं।

इसी प्रकार गॉथी में "thou" "तू" का कर्म कारक [θuk] और सम्प्रदान कारक [θus] है। ये रूप उन अन्य बोलियों से सम्बन्ध नहीं रखते जिनमें आद्य जर्मनीय प्रतिरूप कर्मकारक *[ˈθiki], प्राचीन नार्स [θik], प्राचीन अंग्रेजी [θek], प्राचीन उच्च जर्मन [dih], और सम्प्रदान *[θiz] प्राचीन नार्स [θe:r], प्राचीन अंग्रेजी [θe:], प्राचीन उच्च जर्मन [dir] मिलते हैं। गॉथी रूप कर्तृ कारक *[θu:], गॉथी, प्राचीन नार्स, प्राचीन अंग्रेजी [θu:], प्राचीन उच्च जर्मन [du:] के संमिश्रण हैं। इनके लिए अक्षर 'I' जो कि गॉथी के [ik, mik, mis] तीनों रूपों में मिलता है आदर्श हो सकता है। किन्तु दोनों रूप-सरणियों में यथार्थ सादृश्य नहीं है। सम्भव है कि [mik, mis] *[θik, θis] के ही रूपान्तर हों।

कई भाषाओं में संख्यावाचक शब्दों में भी सम्मिश्रण हुआ है। आद्य भारत-यूरोपीय में "four" चार के लिए *[kʷeˈtwo:res] और 'five" 'पांच' के लिए *[ˈPenkʷe]; रूप थे। देखिए संस्कृत [caˈtva:rah, ˈpanca], लिथुएनियाई [ketuˈri, penˈki] जर्मनीय भाषा में दोनों शब्द (f) से शुरू होते हैं जो कि आद्य भारत यूरोपीय (P) का प्रतिरूप है जैसा कि अंग्रेजी में four, five; और five में द्वितीय आक्षरिक [kʷ] के स्थान पर [f] मिलता है जैसा कि गॉथी [fimf में। दूसरी ओर लैटिन में दोनों शब्द [kw] से शुरू होते है: quattuor, quinque [ˈkwattuor, ˈkwi:nkwe]। ये अपवादी रूप असमीपी समीकरण के कारण बने होंगे। यह अधिक सम्भव है कि ये तथा इस प्रकार के अन्य परिवर्तन वास्तव में या तो संमिश्रण के परिणाम हों अथवा किसी अन्य बोली से लिए गए हों। प्राचीन ग्रीक [hepˈta] 'सात' और [okˈto] 'आठ' एक बोली में संमिश्रण से [opˈto:] अन्य बोलियों में [hokˈto] में बदल गया। नौ और दस के लिए आद्य भारत-यूरोपीय *[ˈnewṇ ˈdekṃ], जैसा कि संस्कृत में [ˈnava, ˈdaça], लैटिन में novem, decem, दोनों स्लावी और बाल्टी भाषाओं में आद्य अक्षर [d] है जैसे बल्गेरियाई भाषा में [devᵉ̈ti, desᵉ̈ti]।

मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि प्रयोगशाला में Four जैसे शब्द की ध्वनि के उद्दीपन से "five" जैसे शब्द का उच्चारण होता है किन्तु इससे संमिश्रण की व्याख्या नहीं हो सकती। सम्भवतः यह कथन अधिक यथार्थ सिद्ध होगा कि वे संमिश्रित रूप जो जिह्वास्खलन के परिणाम हैं कम प्रचलित नहीं हैं जैसे "I'll just grun (go+run) over and get it."

वाक्य-प्रक्रिया में नवागत शब्द संमिश्रण-प्रक्रिया से बनते हैं। "I am friends with him" इस प्रतिरूप की रचना I am friendly with him and we are friends इन दो वाक्यों के संमिश्रण से हुई है। अनियमितताएँ—जैसे सम्बन्धवाचक सर्वनामों का संमिश्रण (§ 15.11)—इसी कोटि में आती हैं।

तथाकथित सार्वजनिक निरुक्तियां (§ 23.6) अधिकांशतः आगत और संमिश्रित होती हैं। एक अनियमित और अज्ञेयार्थ रूप के स्थान पर अपेक्षतः एक साधारण रचना के नवीन रूप का जिसमें कुछ आर्थीतत्त्व भी रहते हैं प्रचलन होने लगता है—यद्यपि आर्थी तत्त्वों का सम्बन्ध प्रायः बहुत दूर का रहता है, जैसे प्राचीन रूप sham-fast से एक आर्थी दृष्टि से विलक्षण समस्त रूप shame-faced बना। प्राचीन अंग्रेजी sam-blind शब्द का अप्रयुक्त प्रथमपद sam 'आधा' ऐलिजावेथकालीन sand-blind पद से परिवर्तित हुआ। प्राचीन अंग्रेजी bryd-guma ('bry:d-ˌguma "वर" का bride-groom पद से परिवर्तन हुआ। इसका कारण guma "*guma*" 'मनुष्य' पद का अप्रयोग था : विदेशी शब्दों में इस प्रकार के परिवर्तन प्रायः होते हैं। प्राचीन फ्रेंच crevisse मध्य अंग्रेजी crevise का cryfish, crawfish में रूपान्तर हुआ है; mandragora का man-drake में; प्राचीन उपमानिकी भाषण में asparagus का sparrow-gross में। gooseberry का प्राचीनतर रूप groze-berry का रूपान्तर है जैसा कि हमें बोली रूप grozet, groser से पता चलता है। इन रूपों का उस फ्रेंच के एक रूप से आदान हुआ है जो आधुनिक फ्रेंच रूप groseille (grɔzɛ:j) से निकटतम सम्पर्क रखता है।

सम्भवतः संकेतात्मक शब्दों के रूप बालकीय शब्द (nursery words) और संक्षिप्त नाम अधिकांशतः सामान्य रूपात्मक प्रचलनों के आधार पर बनते हैं, नियमित सादृश्य के आदर्शों पर बहुत कम। तो भी पता चलता है कि Bob Dick जैसे शब्द जातिवाचक संज्ञाओं के रूप में प्रचलित थे, सम्भवतः संकेतात्मक लक्षणार्थों के साथ; बाद में Robert, Richard जैसे पालतू रूपों

में उनका विशेषीकरण हुआ। लक्षणार्थों के निरूपण मात्र से उनके रूपों के निर्माण का वर्णन करना एक महान् भूल होगी।

कुछ उदाहरणों में हम जानते हैं कि एक व्यक्ति ने एक रूप का निर्माण किया। एक अति-प्रसिद्ध उदाहरण gas है जिसका निर्माण डच रसायनिक फॉन हैल्माँत ने सत्रहवीं शताब्दी में किया। वाक्य में उसने chaos के अर्थ में इसका प्रयोग किया। डच भाषा में इसका उच्चारण 'gas' के निकट आता है यद्यपि इसका स्वनिम सर्वथा भिन्न है। और भी, फॉन हैल्मांत ने एक पारिभाषिक शब्द "blas" का प्रयोग किया जो कि डच भाषा में "blazen" क्रिया से नियमतः व्युत्पन्न हुआ था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इन स्थितियों में हम शब्द-निर्माता के वैयक्तिक और निजी संकेतों की पुनर्रचना नहीं कर सकते। हम केवल उनकी सामान्य भाषिक पृष्ठभूमि का अनुमान लगा सकते हैं। चार्ल्स डागसन (लेविस केरोल) ने अपनी प्रसिद्ध कविता "जाबर वोकी" (दर्पण के माध्यम से) में कुछ इस प्रकार के पुनर्रचनात्मक शब्दों का प्रयोग किया है और पश्चात् पुस्तक में सांकेतिक अर्थ की व्याख्या की है। आखिर उनमें से एक शब्द chortle का अधिक प्रयोग होने लगा है। आधुनिक उदाहरणों में एक व्यावसायिक शब्द kodak है जिसे जार्ज इस्तमन ने प्रयुक्त किया है, दूसरा शब्द blurb है जिसे गेलेट बर्गस प्रयोग में लाए हैं।

अध्याय 24

आर्थी परिवर्तन

24.1 वे नवरचन जिनके द्वारा व्याकरणिक कार्यकारिता में परिवर्तन न होकर कोषीय अर्थ में परिवर्तन होता है उन्हें अर्थ-परिवर्तन (change of meaning) अथवा आर्थी-परिवर्तन (semantic change) की कोटि में रखते हैं ।

प्राचीनतम आलेखों में एक रूप के संदर्भ तथा पदसंहितीय संयोजनों से अधिकतर यह प्रकट होता है कि कभी इसका अर्थ भिन्न था । राजा जेम्स के बायबिल अनुवाद (1611) में जिस शब्द से पेड़, पौधों का अर्थ निकलता है (Genesis 1.19) आज उनसे मांस का अर्थ प्रकट होगा । इसी प्रकार इस अंश के प्राचीन अंग्रेजी अनुवाद में mete शब्द का प्रयोग होता था । हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि meat का प्रयोग भोजन के अर्थ में होता था तथा हम इसकी पुष्टि विदेशी पाठशाला (foreign texts) से कर सकते हैं जिनसे अनुवाद किया गया था । कभी-कभी वृद्धजनों से हमें सीधा-सीधा अर्थ मुख्यरूप से शब्दार्थ-विवरण के रूप में सुनने को मिल जाता है। इस प्रकार प्राचीन अंग्रेजी में mete शब्द का प्रयोग लैटिन cibus के अनुवाद के लिए हुआ है जिसका अर्थ 'भोजन' होता है ।

अन्य उदाहरणों में संबंधी भाषाओं की तुलना करते हुए उन रूपों में अर्थ-वैभिन्न्य दिखाई पड़ता है जिन्हें हम तर्क-संगत आधार पर सजातीय मानते हैं । इस प्रकार chin अर्थ की दृष्टि से जर्मन kinn, डच kin से मिलता है किन्तु गॉथी kinnus तथा स्कैन्डनेवी रूप जो प्राचीन नार्स kinn से लिए गए हैं, इनका आधुनिक अर्थ "गाल" होता है । अन्य भारतयूरोपीय भाषाओं में, हमें ग्रीक [ˈgenus] "ठुड्डी" जो पश्चिमजर्मन के समान है, किन्तु लैटिन gena "गाल" गॉथी और स्कैन्डनेवी के समान है जबकि संस्कृत "हनु" (जबड़ा) से तीसरा अर्थ प्रकट होता है । हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्राचीन अर्थ चाहे जो भी रहा हो यह कुछ भाषाओं या सभी भाषाओं में बदल गया है।

अर्थ-परिवर्तन का एक तीसरा किन्तु अपेक्षाकृत कम निर्देशन एक रूप के संघटनात्मक विश्लेषण में होता है। इस प्रकार प्राचीन अंग्रेजी के समय में understand का वही अर्थ था जो आज है, किन्तु शब्द stand और under का समास है, हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि उस समय जब समास की पहले-पहल रचना हुई थी (यथा सादृश्यजन्य नवरचना) इसका अर्थ अवश्य ही नीचे खड़ा होना (stand under) रहा होगा। इसकी सम्भावना इस तथ्य से भी प्रकट होती है कि कभी under का अर्थ "बीच में" रहा होगा क्योंकि सजात जर्मन unter तथा लैटिन inter के यही अर्थ हैं। इस प्रकार I understand these things का पहले अर्थ रहा होगा "मैं इन चीजों के बीच खड़ा होता हूँ (I stand among these things)। अन्य स्थितियों में, एक रूप जिसकी रचना भाषा की आधुनिक अवस्था में अर्थ से कोई संबंध नहीं रखती, बहुत पहले अर्थ की दृष्टि से विश्लेषण-योग्य रह सकती है। ready शब्द में विशेषण रचक प्रत्यय-y है जो एक विलक्षण धातु से जुड़ा है किन्तु प्राचीन अंग्रेजी रूप [je'rɛːde] जो परप्रत्यय के सादृश्यजन्य पुनर्रचना के लिए ready का पूर्वज माना जा सकता है जिसका अर्थ था "तेज, उपयुक्त, चतुर (प्रवीण) तथा क्रिया ['riːdan] "चढ़ना" भूतकाल [raːd] "चढ़ा" का व्युत्पन्न रूप था, व्युत्पन्न संज्ञा [raːd] "एक सवारी की सड़क"। हम निष्कर्ष निकालते हैं कि जब [je'rɛːde] पहले-पहल बना था इसका अर्थ था "उपयुक्त अथवा सवारी के लिए तैयार"।

इस प्रकार की अनुमितियां कभी-कभी गलत होती हैं, क्योंकि एक रूप की निर्मिति, अर्थ की अपेक्षा हाल की हो सकती है। इस प्रकार crawfish तथा gooseberry जो crevise तथा *groze-berry (§ 23.8) से ग्रहण किए हैं प्राचीनतर अर्थ के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बता सकते।

24.2 यह आज सरलता से देखा जा सकता है कि एक भाषणरूप के अर्थ में परिवर्तन उसके तथा अर्थ की दृष्टि से सम्बन्धित दूसरे प्रयोग में परिवर्तन का परिणाममात्र है। फिर भी पहले के अध्येताओं ने इस समस्या पर इस तरह विचार किया जैसे कि भाषण-रूप अपेक्षाकृत स्थायी वस्तु रहे हों और कभी अर्थ एक प्रकार से परिवर्तनीय पिछलग्गू की भाँति जोड़ दिए हों। एक रूप के क्रमिक अर्थ, यथा meat 'भोजन'>fleshfood 'मांस-भोजन' के अध्ययन से उन्हें आशा थी कि उन्हें इस परिवर्तन में 'मांस' का पता मिल जाएगा। इससे उन्हें प्रेरणा मिली कि आर्थी परिवर्तनों को क्रमिक अर्थ

को जोड़ने वाले तर्क-संबंध के आधार पर वर्गीकृत करें। उन्होंने इन वर्गों को निम्नकोटियों में रखा :

संकोच—

प्राचीन अंग्रेजी mete भोजन>meat "मांस"
" dēor जानवर>deer "हिरन (एक विशेष जाति)"
" hund कुत्ता>hound शिकारी कुत्ता (" ")

विस्तार—

मध्य अंग्रेजी bridde छोटी चिड़िया>bird "पक्षी का बच्चा"
" dogge [एक विशेष (प्राचीन) जाति का कुत्ता >dog "कुत्ता"
लैटिन virtūs "आदमी का गुण (वीर) पौरुष,> फ्रेंच vertu (>अंग्रेजी virtue) 'अच्छा गुण।'

रूपक—

आदिम जर्मन *['bitraz] 'काटना' (*['bi:to:] मैं काटता हूँ का व्युत्पन्न)>bitter "कड़वा"।

(Metonymy) वक्रोक्ति। नाम-विपर्यय

देश अथवा काल में अर्थ एक दूसरे के समीप होते हैं :

प्राचीन अंग्रेजी cēace "जबड़ा">cheek "कपोल" प्राचीन फ्रेंच joue "कपोल">jaw "जबड़ा" (synecdoche)।

अर्थों का सम्बन्ध पूर्ण और अंश का होता है :

आदिम जर्मन *['tu:naz] "बाड़ा" (इसी तरह अभी तक जर्मन Zaun)>town "नगर"

पूर्व-अंग्रेजी *['stobo:] "गर्म कमरा" (तुलना के लिए जर्मन stube, पूर्वरूप "गर्म कमरा" अब रहने का कमरा) >stove "स्टोव"।

(Hyperbole) सबल से दुर्बल अर्थ की ओर—

पूर्व-फ्रेंच *ex-tonāre "बिजली की कड़क से मरना > फ्रेंच étonner "आश्चर्य में डालना (प्राचीन फ्रेंच से अंग्रेजी ने लिया astound, astonish)

(Litotes) दुर्बल से सबल अर्थ को--

पूर्व-अंग्रेजी *['Kwalljan] "पीड़ित करना" (जर्मन में अभी भी quälen> प्राचीन अंग्रेजी cwellan "जान मारना"

अपकर्ष

प्राचीन अंग्रेजी cnafa "नौकर, लड़का" > knave 'धूर्त'

उत्कर्ष

प्राचीन अंग्रेजी cniht 'नौकर, लड़का' (तुलना के लिए जर्मन knecht नौकर) >knight 'वीर योद्धा'

उदाहरणों का वर्गों में इस प्रकार का चयन सम्भावित परिवर्तन को प्रकट करने में उपयोगी होता है। chin शब्द के जातीय शब्दों में jaw, cheek और chin के जो अर्थ मिले अन्य स्थितियों में उनमें अस्थिरता मिलती है, यथा आधुनिक अर्थ में cheek (प्राचीन अंग्रेजी अर्थ) से आधुनिक अर्थ में jaw, फ्रेंच joue 'कपोल' से विरोधी दिशा में परिवर्तित हुआ है। लैटिन maxilla "जबड़ा" cheek के स्थान पर पहुँच गया है, यथा इतालवी mascella [ma'ʃella] कपोल हमें सन्देह होता है कि chin शब्द का अर्थ jaw तथा cheek होने के पहले chin रहा होगा। इस स्थिति की कुछ प्राचीन उच्चजर्मन शब्दार्थ विवरण से पुष्टि होती है जिससे लैटिन molae तथा maxillae (jaw अथवा jaws के अर्थ में बहुवचन रूप) का अनुवाद बहुवचन kinne से होता है। प्राचीन अंग्रेजी ['weorθan] "होना" तथा अन्य जर्मन भाषाओं में इसके सजातीय (यथा जर्मन werden § 22.2) संस्कृत वर्तते, लैटिन verto "मैं वापस होता हूँ" प्राचीन बल्गेरियाई [vṛte:ti] "लौटाना", लिथुएनी [ver'tʃu] "मैं लौटता हूँ।" हम इस निरुक्ति को इसलिए मान लेते हैं कि संस्कृत शब्द का सीमान्त अर्थ है "होना" तथा अंग्रेजी turn से समानान्तर विकास भी प्रकट होता है, यथा turn sour, turn traitor।

24.3 इस आधार पर देखे जाने पर, अर्थ के परिवर्तन में व्यावहारिक वस्तुओं के बीच संबंध निहित हो सकता है और इस प्रकार प्राचीनतर समय के जीवन पर प्रकाश पड़ सकता है। अंग्रेजी fee प्राचीन अंग्रेजी feoh रूपसरणि का आधुनिक रूप है जिसका अर्थ था ढोर, मवेशी, सम्पत्ति, रुपया। जर्मन जातीय शब्दों में केवल प्राचीन गाँथी faihu ['fehu] का अर्थ

सम्पत्ति होता है। अन्य सभी यथा जर्मन vieh[fi:] अथवा स्वेडी fä [fe:] के अर्थ मवेशी (का सर), ढोर (का सर) की तरह का है। यही स्थिति अन्य भारतयूरोपीय भाषाओं के सजातीय शब्दों के साथ है, यथा संस्कृत 'पशु' अथवा लैटिन pecu, किन्तु लैटिन में व्युत्पन्न शब्द pecūnia "रुपया" तथा pecūlium "बचत, सम्पत्ति" है। इससे हमारे इस विश्वास की पुष्टि होती है कि प्राचीन काल में मवेशी विनिमय के माध्यम माने जाते थे।

अंग्रेजी hose पहले डच hoos [ho:s], जर्मन Hose ['ho:ze] के मेल में था, किन्तु ये शब्द सामान्यतः बहुवचन रूप में 'मोजे' का नहीं, पायजामे का अर्थ द्योतित करते हैं। स्कैन्डनेवी रूपों, यथा प्राचीन नार्स hosa, का अर्थ है "मोजा"। एक प्राचीन रूप, अनुमानतः पश्चिमी जर्मनी लैटिन में हमारे युग के आरम्भ की शताब्दियों में आया, निस्सन्देह रूप से रोमी सिपाहियों के माध्यम से, क्योंकि रोमानी भाषाओं में एक प्रतिरूप *hosa (यथा इटैलियन wosa ['wɔsa]) मोजे के अर्थ में है। निष्कर्ष यह निकलता है कि प्राचीन जर्मनी में इस शब्द का अर्थ पैरों के लिए आवरण से था—पाँव को लेकर अथवा टखने के अन्त तक। आदमी अपनी कमर के चारों ओर एक दूसरे प्रकार का वस्त्र पहनता था। breeches बिरजिस (प्राचीन अंग्रेजी brōc)। अंग्रेजी तथा स्कैन्डनेवी पारिभाषिक शब्द से किसी प्रकार का परिवर्तन प्रकट नहीं होता है, किन्तु जर्मन विकास से यह निर्देश मिलता है कि प्रायद्वीप में, पायजामे की तरह के पहनावे में मोजा ऊपरी सिरे से जुड़ गया था।

इस प्रकार, अर्थ की दृष्टि से विभिन्न व्युत्पत्ति तथा सांस्कृतिक चिन्ह एक दूसरे के अनुकूल हो सकते हैं। जर्मन शब्द wand [vant] से एक कमरे की दीवार का बोध होता है किन्तु मोटी पत्थर की दीवार नहीं। परवर्ती रूप Mauer ['mawer] लैटिन से आदत्त शब्द है। जर्मन शब्द to wind क्रिया के साधित रूप जैसा सुनाई पड़ता है, जर्मन winden (wand का भूतकालिक रूप), किन्तु जहाँ तक इन अर्थों के संबंध का प्रश्न था निरुक्त निरुपाय पड़ गया था जब तक कि मेरिंगर (Meringer) ने यह नहीं दिखाया कि साधित संज्ञारूप मॉसल दीवारों के लिए लागू हुआ होगा जो लचीले बेंट से मिट्टी ढक कर बनाई गई थी। उसी प्रकार आदिम जर्मन *['wajjuz], 'दीवाल', गॉथी में waddjus, प्राचीन नार्स veggr, प्राचीन अंग्रेजी wāg एक क्रिया के साधित रूप में जिसका अर्थ "हवा देना' उमेठना" से

निकला हुआ मान लिया गया है। यह देखा जा चुका है कि आचार्य लोग आर्थी तथा पुरातत्व संबंधी सामग्री के संयोजन द्वारा प्रागैतिहासिक स्थितियों पर प्रकाश डालते हैं, यथा भारतयूरोपीय परिवार वर्ग (§ 18.14)। सूत्र या वाक्य "शब्द तथा वस्तुएं" उन पत्रिकाओं के शीर्षक रूप में प्रयुक्त हुए हैं जो निरुक्ति के इस पक्ष से संबंधित थे।

ठीक वैसे ही जैसे रूपीय लक्षण बहुत ही विशिष्ट वैकल्पिक उपादानों (§ 23·8) से निकल सकते हैं, उसी प्रकार एक रूप का अर्थ उन स्थितियों के कारण हो सकता है जिनकी पुनर्रचना नहीं हो सकती और तभी जान सकते हैं जब परम्परा अनुकूल हो। जर्मन kaiser ['kajzer] 'राजा' तथा रूसी [tsar] जार शाखाएँ हैं, लैटिन caesar ['kajsar] के आदान द्वारा जिनका एक विशेष रोमन नाम Gaius Julius Caesar से सामान्यीकरण हो गया। यह संज्ञा caedō "मैं काटता हूं" क्रिया का साधित रूप कहा जाता है। वह मनुष्य जिसे यह संज्ञा पहलेपहल दी गई थी सर्जन के आपरेशन द्वारा पैदा हुआ था जिसे इसी परम्परा के आधार पर (caesarian operation) सीजेरियन ओपरेशन कहा जाता है। इस परम्परा से अलग, यदि सीजर तथा रोम राज्य के संबंध में ऐतिहासिक ज्ञान नहीं होता तो यह अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता था कि सम्राट के लिए शब्द का आरम्भ पारिवारिक नाम के रूप में हुआ था। आजकल व्यवहारातीत क्रिया burke "दबाना" (यथा to burke opposition) Burke के नाम से व्युत्पन्न हुआ जो एडेनबरो का एक हत्यारा था जिसने अपने बध्यों का गला घोट दिया। pander शब्द Pandarus नाम से निकला है। ट्रायलस तथा क्रेसिडा की प्राचीन कहानी के चॉसर संस्करण में पन्डारस मध्यस्थ का काम करता है। नार्थ कैरोलिया के एक देश के नाम से Buncombe "बुनकोम्बे" निकला है। काँग्रेसजनों की विलक्षणता के कारण यह हुआ। Tawdry "टाड्री" St. Audrey "सेन्ट आड्रे" से निकला है। सेन्ट आड्रे के मेले में किसी ने 'टाड्री लाख' (tawdry lac) खरीदा। landau तथा wizner की तरह के शब्द उत्पादन के मूल स्थान से निकलते हैं। अन्ततः डालर शब्द जर्मन Taler जो Joachimstaler का लघुरूप है तथा Joachimstal (जोकिम डेल) बोहेमिया में एक स्थान जहाँ 16वीं शती में चाँदी का टकसाल घर था, से व्युत्पन्न है। रोमन टकसाल जूनोमोनेटा (Junō Moneta 'Juno the Warner') के मन्दिर में था जिससे कि रोमन लोग monēta शब्द

का प्रयोग 'टकसाल' तथा 'सिक्का' दोनों ही अर्थों में करते थे। अंग्रेजी mint इस लैटिन शब्द से पूर्व-अग्रेजी में आदान किया है तथा अंग्रेजी money लैटिन शब्द के प्राचीन फ्रेंच से मध्ययुग में आदान किय गया है।

आर्थी परिवर्तन के ऊपरी अध्ययन से निर्देश मिलता है कि परिष्कृत तथा अमूर्त अर्थ, अधिकतर अधिक कठोर अर्थों से निकलते हैं। (किसी वस्तु या भाषण) के "ठीक-ठीक प्रत्युक्त के लिए" प्रतिरूपों के अर्थ बारबार 'निकट होना' अथवा 'अधिकार में लेना' से विकसित होते हैं। इस प्रकार understand "समझना", जैसा कि देखा जा चुका है, का अर्थ "निकट खड़ा होना" अथवा "बीच में खड़ा होना" जैसे अर्थवाला लगता है। जर्मन verstehen [fer-'ʃte:n] "समझना" का अर्थ 'चारों ओर खड़ा होना' अथवा 'सामने खड़ा होना' लगता है। प्राचीन अंग्रेजी पर्याय forstandan "समझने" तथा रक्षा करने (understand, protect, defend) दोनों ही के लिए आता है। प्राचीन ग्रीक (e'pistamaj) "मैं समझता हूँ" शब्दार्थ की दृष्टि से "मैं ऊपर खड़ा होता हूँ" (I stand upon), तथा संस्कृत अवगच्छति "वह नीचे जाता है" तथा "वह समझता है" दोनों के लिए है। इतालवी capire [ka'pire] "समझना" लैटिन (capere) पर आधारित एक सादृश्यात्मक नई रचना है। लैटिन comprehendere "समझना" का अर्थ 'अधिकार में करना' भी होता है। 'समझने' के लिए स्लावी शब्द यथा रूसी में [po'nat] एक प्राचीन क्रिया जिसका अर्थ 'पकड़ना', 'लेना' है, का समासरूप है। understand का सीमान्त अर्थ अंग्रेजी के grasp, catch on तथा get में (यथा I don't get that) दिखाई पड़ता है। अंग्रेजी की अधिकांश अमूर्त शब्दावली लैटिन से फ्रेंच में होकर आदान की हुई है अथवा फ्रांसीसी रूप है। बहुत से मूल लैटिन शब्द स्थूल अर्थ के साथ पाए जा सकते हैं। इस प्रकार लैटिन definīre "परिभाषित करना" शब्दार्थ की दृष्टि से 'to set bounds to', finis 'अन्त', 'सीमा' है। अंग्रेजी eliminate का लैटिन में व्युत्पादन वैशिष्ट्य के अनुसार केवल ठोस अर्थ 'घर से बाहर निकाल देना' है, क्योंकि लैटिन elīmināre संरचना की दृष्टि से ex 'बाहर को (out of) बाहर से (out from) तथा līmen "दालान" का संश्लिष्ट समास रूप है।

24.4 अतिभाषाई तथ्यों को छोड़कर इन सारी बातों से सम्भावना को कुछ आधार मिलता है जिसके द्वारा निरुक्तिपूर्ण तुलनाओं का निर्धारण किया जा सके। किन्तु इससे यह नहीं पता चलता कि समय पाकर कैसे एक भाषाई

रूप का अर्थ बदल जाता है। जब कोई ऐसा रूप मिलता है जो कभी तो 'क' अर्थ में और बाद में चलकर 'ख' अर्थ में प्रयुक्त होने लगता है तो ऐसी स्थिति में जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह प्रत्यक्षरूप से कम से कम दो बार के स्थानान्तरण का परिणाम होता है अर्थात 'क' स्थिति में प्रयुक्त होने वाले रूप का विस्तार क-ख स्थिति में होने लगता है और तब उसका आंशिक लोप हो जाता है जिसके कारण उस रूप का प्रयोग उस प्राचीन की निकटस्थ स्थिति में रुक जाता है और जिसके कारण अन्त में केवल 'ख' स्थिति में ही इसका प्रयोग होने लगता है। साधारण स्थितियों में, पहली प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी प्रतिस्पर्धी रूप का लोप अथवा अवरोध आता है जो 'ख' स्थिति में प्रयोग से बहिष्कृत हो जाता है तथा दूसरी प्रक्रिया के अन्तर्गत 'क' स्थिति में किसी प्रतिस्पर्धी रूप का दबाव आता है। निम्न तालिका द्वारा इसको प्रतीकात्मक ढंग से रखा जा सकता है :

अर्थ	पुष्टकारी पदार्थ	भोज्य पदार्थ	पशु शरीर का भोज्य अंग	पशु शरीर का पुरुष अंग
प्रथम स्तर	भोजन	कलिया	मांस	मांस
द्वितीय स्तर	भोजन	कलिया →	कलिया	मांस
तृतीय स्तर	भोजन →	भोजन	कलिया	मांस

इसलिए, सामान्य स्थिति में, सादृश्यजनक परिवर्तन की आवृत्ति की अस्थिरता से निबटना पड़ता है। अन्तर केवल इतना है कि अस्थिरता व्याकरणिक विस्थापन के स्थान पर कोषीय होती है और इसलिए अधिकतर भाषाशास्त्री की पकड़ में नहीं आती। सम्भवतः, हरमैन पॉल प्रथम अध्येता था जिसने यह लक्षित किया कि आर्थी परिवर्तन में विस्तारतया लोप आते हैं। पॉल ने यह लक्षित किया कि किसी वक्ता की प्रवृत्ति में एक रूप का अर्थ, किसी उच्चार के अन्तर्गत उस रूप को सुनने का परिणाममात्र है। कभी-कभी निश्चितरूप से एक रूप का प्रयोग उन स्थितियों में होता है जो पूरी तरह अर्थ की श्रृंखला को अपने में समेट लेती हैं, यथा एक परिभाषा में (लोगों के एक बड़े निवास-स्थान को कस्बा कहते हैं) अथवा बहुत सामान्य विवरण में (चौपायों के सर होते हैं)। इन स्थितियों में एक रूप अपने साधारण अर्थ के साथ दिखाई पड़ता है। फिर भी साधारणतः किसी एक उच्चार में एक रूप अति दूर के विशिष्ट

लक्षण का प्रतिनिधित्व करता है। जब कहा जाता है कि John Smith bumped his head "जान स्मिथ ने उसका सर उड़ा दिया" तो 'सर' से तात्पर्य किसी एक व्यक्तिविशेष के 'सर' से होता है। जब किसी नगर, पड़ोस में एक वक्ता कहता है I'm going to town "मैं कस्बा जा रहा हूँ" तो 'town' कस्बा का अर्थ उसी नगर् विशेष से होता है। इन स्थितियों में सांयोगिक अर्थ के साथ रूप दिखाई पड़ते हैं। eat an apple a day (एक सेव प्रतिदिन खाओ) में 'apple' (सेव) शब्द का सामान्य अर्थ है। किसी एक पदसंहिति के विशेष उच्चार में पदसंहति eat this apple (यह सेब खाओ) में apple (सेब) का सांयोगिक अर्थ है। सेब, कहा जा सकता है कि बड़ा भूना हुआ सेब। सभी सीमान्तक अर्थ सांयोगिक होते हैं, यथा पाल ने लक्षित किया था कि सीमान्तक अर्थ केन्द्रीय अर्थ से संक्षेप में इस तथ्य द्वारा भिन्न होते हैं कि कुछ परिस्थितियाँ केन्द्रीय अर्थ को असम्भव बना देती हैं (§ 9.8)। जब कभी भी उस आदर्श स्थिति से, जो एक रूप के अर्थ की प्रत्येक स्थिति से मेल खाती है, स्थिति भिन्न होती है तो केन्द्रीय अर्थ सांयोगिक होता है।

तदनुसार, यदि एक वक्ता ने किसी रूप को केवल सांयोगिक अर्थ में अथवा सांयोगिक अर्थों की शृंखला में सुना है वह उस रूप को केवल उसी प्रकार की परिस्थितियों में उच्चरित करेगा। उसकी प्रवृत्ति अन्य वक्ताओं की प्रवृत्ति से भिन्न हो सकती है। meat शब्द हर प्रकार के भोजन के लिए प्रयुक्त होता था। एक समय ऐसा अवश्य आया होगा जब कि दूसरे शब्द के दबाव के कारण (यथा food अथवा dish) अनेक वक्ताओं ने meat शब्द को केवल (अथवा प्रधानतः) उन्हीं स्थितियों में सुना होगा जहाँ वास्तविक भोजन में मांस रहा हो। उनके स्वयं के उच्चारों में वक्ता तदनुसार meat शब्द का प्रयोग तभी करते थे जब कि भोजन में मांस भी सम्मिलित रहता हो। यदि एक वक्ता ने किसी शब्द को केवल कुछ सीमान्तक अर्थ में ही सुना हो तो वह इस रूप का प्रयोग उसी अर्थ के साथ करेगा जैसा कि केन्द्रीय अर्थ था—अर्थात् वह उस रूप का प्रयोग उस अर्थ में करेगा जिसमें अन्य वक्ता इसका प्रयोग कुछ विशेष स्थितियों में करते थे जैसे नगर का बच्चा जो इस निष्कर्ष पर पहुंचा हुआ था कि अपनी अस्वच्छ प्रवृत्ति के कारण ही pigs का *pigs* कहा जाना उपयुक्त है। बाद के मध्ययुग में जर्मन शब्द kopf, अंग्रेजी 'cup' का सजातीय, का केन्द्रीय अर्थ "प्याला" bowl "बर्तन" था तथा सीमान्तक अर्थ 'सर' था। ऐसा समय अवश्य आया होगा जब अनेक वक्ताओं

ने इस शब्द को सीमान्तक अर्थ में ही सुना था क्योंकि आधुनिक जर्मन में kopt का अर्थ केवल 'सिर' होता है।

24.5 आर्थी परिवर्तन की पॉल की व्याख्या सीमान्तक अर्थ की अवस्थिति तथा लोप मानकर चलती है तथा इन प्रक्रियाओं को किसी व्यक्तिविशेष के भाषण रूप का अभियान मानकर विचार करती है, बिना प्रतिस्पर्धी रूपों का संदर्भ किए जो एक ओर तो विचारान्तर्गत रूप के लिए जमीन तैयार करती है दूसरी ओर इसके क्षेत्र को दबा लेती है। फिर भी यह दृष्टि अर्थभेद के वर्गीकरणमात्र से आगे बढ़कर एक महान प्रगति सूचित करती है। विशेष रूप से पॉल इसी के आधार पर कुछ दिशाओं की ओर विस्तार से प्रकाश डालने में समर्थ हो सके जिनमें कि अर्थ में एकात्मक क्षेत्र टूटा था—यह एक प्रक्रिया थी जिसे वह पृथक्करण कहता था।

इस प्रकार meat के वर्तमान केन्द्रीय अर्थ 'मांस-भोजन' के अतिरिक्त, विचित्र सीमान्तक (प्रत्यक्ष रूप से विस्तृत) प्रयोग meat and drink तथा sweetmeats में मिलता है। मांस के अतिरिक्त भोजन के लिए यह शब्द प्रयोग से निकल गया, केवल उन दो अभिव्यक्तियों को छोड़कर जो आज के शब्द के केन्द्रीय अर्थ से अलग किए जा चुके हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ये दोनों अभिव्यक्तियाँ मध्यवर्ती अर्थ क्षेत्र के आविष्कार द्वारा अलग कर दी गई हैं जो अब food तथा dish द्वारा पूरा कर लिया जाता है। इसी प्रकार knave का अर्थ "लड़का, युवक, नौकर" से हटकर 'धूर्त' के लिए प्रयुक्त होने लगा है किन्तु ताश खेलने वाले का knave का प्रयोग तीन तस्वीरों वाली ताश की पत्तियों में निम्नतम (जैक) प्राचीनतर अर्थ का पृथक्कृत अवशेष है। charge शब्द, प्राचीन फ्रेंच charger, जिसका अर्थ मूलत: 'डिब्बे में सामान भरना' था, से आदत्त है। इसकी आधुनिक अर्थ की गुणन-क्षमता प्रत्यक्षत: सीमान्तक क्षेत्र में विस्तार के कारण है जिसके बाद ही मध्यवर्ती अर्थों का लोप हो गया। इस प्रकार कर्तृ संज्ञा charger अब 'कर्ज ढोने वाले, बोझा ढोने वाले पशु' के लिए नहीं प्रयुक्त होती अपितु विशेष अर्थ में "लड़ाई का घोड़ा" के अर्थ में प्रयुक्त होती है। charge का "बहुत ही तीव्र आक्रमण करता है" यह अर्थ charger "लड़ाई का घोड़ा" पश्चरचन है। पुरानी अंग्रेजी में board शब्द का वही केन्द्रीय अर्थ था जो आज है "लकड़ी का चपटा तख्ता" और इसके साथ ही अनेक विशिष्ट अर्थ हैं। इनमें से एक अर्थ "ढाल" पूर्णतया लुप्त हो गया है। एक अन्य अर्थ "एक जहाज का

पार्श्व" के कारण कुछ पृथक्-भूत-रूप बन गए हैं, यथा On board, aboard, to board (एक जहाज) और इनका प्रयोग अन्य सवारियों के संबंध में भी होने लगा है, यथा रेलवे कार । एक तीसरा सीमान्तक अर्थ "मेज" भाषण के परिमार्जित रूप में बना हुआ है, यथा festive board । फिर भी इसके सामान्य लोप के पूर्व board "मेज" का फिर से नियमित भोजन के अर्थ में परिवर्तन हुआ जो आज भी चालू है, यथा bed and board, board and lodging, to board (at a boarding-house) इत्यादि । board का यह प्रयोग आज 'तख्ता' के अर्थ से इतना विलग हो गया है कि इन दोनों को सम्भवत: समध्वनि शब्द कहा जा सकता है ।

प्राचीन-जर्मन में विशेषण* ['hajlaz] का अर्थ था "अक्षत, खुशहाल" यथा आज भी heil का जर्मन अर्थ है । यह अर्थ अंग्रेजी क्रिया to heal में आज भी बना हुआ है । आधुनिक अंग्रेजी में whole का केवल स्थानान्तरित अर्थ रह गया है । व्युत्पन्नरूप *['hajlaz] और विशेषण ['hajlagaz] था जिसका अर्थ था 'योगक्षेम, स्वास्थ्य, अथवा उन्नति में सहायक' । इस शब्द का प्रयोग धार्मिक अथवा अन्धविश्वास के अर्थ में हुआ लगता है । गॉथी अभिलेखों में यह रूनी में आता है । किन्तु जैसा कि पादरी उलफिला (Bishop Ulfila) ने इसका बायबिल में प्रयोग नहीं किया हम इसका संबंध मूर्तिपूजकों से जोड़ सकते हैं । अन्य जर्मन भाषाओं में अंग्रेजी आलेख के आरम्भ से ही लैटिन sanctus "पवित्र" के पर्याय रूप में दिखाई पड़ता है । इस प्रकार whole और holy का आर्थी संबंध, अंग्रेजी में पूर्णतया समाप्त हो गया है, यहाँ तक कि जर्मन heil "अक्षत, उन्नत" तथा heilig "पवित्र" सूदूर आर्थी संबंध तथा अपेक्षाकृत धातुओं की अधिक समध्वनिता के बीच सीमान्त रेखा पर आते हैं ।

प्राचीन अंग्रेजी विशेषण heard "कठिन" दो क्रिया-विशेषणों hearde तथा heardlice का आधारवर्ती है । प्रथम वाला रूप hard रूप में अपने प्राचीन संबंध के साथ बना हुआ है किन्तु बाद वाला रूप hardly "केवल, शायद ही" के सुदूर स्थानान्तरित अर्थ में भिन्न पड़ गया है ।

किसी संरचना के लोप से पृथक्करण आगे भी चल सकता है । understand शब्द का अर्थ under और stand के अलग-अलग अर्थों के संयोजन से लगा पाना कठिन लगता है । ऐसा केवल इसलिए नहीं है कि "पास खड़ा होता" अथवा "बीच में खड़ा-होना" जो अवश्य ही समास के समय केन्द्रीय

अर्थ रहा होगा, पूर्व-ऐतिहासिक काल से निरर्थक पड़ गया अपितु इसलिए भी कि समास-रचना क्रिया तथा पूर्वसर्ग (preposition) और अव्यय बलाघात के साथ समाप्त हो गया है। यह केवल कुछ परम्परागत रूपों में अनियमितता के रूप पर बचा हुआ है, यथा undertake, undergo, underlie, overthrow, overcome, overtake, forgive, forget, forbid। straw शब्द (प्राचीन अंग्रेजी strēaw) तथा strew (प्राचीन अंग्रेजी strewian) पूर्व ऐतिहासिक काल में रूप-प्रक्रिया की दृष्टि से सम्बद्ध थे। आदिम जर्मन प्रतिरूप *['strawwan] 'a strewing, that strewn' तथा *['strawjo:] 'I strew' हैं। उस समय strawberry (प्राचीन अंग्रेजी Strēaw-berige) strewn-berry अवश्य ही स्ट्राबेरी पौधे का विवरण 'इसके जमीन पर पड़े रहने' द्वारा दिया गया रहा होगा। जब straw मात्र 'सूखे पौधे' के लिए ही प्रयुक्त होने लगा तथा strew के साथ रूपप्रक्रियात्मक संबंध समाप्त हो गया तो strawberry का पूर्व सदस्य विचलित अर्थ के साथ straw के पदार्थ रूप में अलग हो गया।

ध्वन्यात्म परिवर्तन पृथक्करण को तीव्र कर देता है तथा सहायक होता है। इसका ज्वलंत उदाहरण है ready जो ride तथा road से बहुत अधिक पृथक् पड़ गया है। इसके अन्य उदाहरण हैं holiday तथा holy, sorry तथा sore, dear तथा dearth, और विशेष रूप से प्राचीन स्वरभक्ति (§ 21.7) विप्रकर्ष के साथ whole तथा heal, dole तथा deal। lord शब्द (प्राचीन अंग्रेजी hlāford) रचना के समय loaf-ward था जो निस्सन्देह रोटी देने वाले के अर्थ में प्रयुक्त होता था। lady शब्द (प्राचीन अंग्रेजी hlāfdige) 'रोटी बनाने वाले' के अर्थ वाला लगता है। disease शब्द पहले 'lack of ease, un-ease' "आराम न होना" था। आज के विशिष्ट अर्थ 'बीमारी' में यह dis—तथा ease से एक पूर्वसर्ग के विचलित रूप[s] के स्थान पर बलाघातहीन स्वर के बाद [z] के साथ (§ 21.4) भिन्न पड़ गया है।

दूसरा सहायक उपादान है सादृश्यजन्य नई रचनाओं का अन्त.प्रवेश। सामान्यतः ये केन्द्रीय अर्थ पर हावी हो जाते हैं और प्राचीन रूप के केवल कुछ सीमान्तक अर्थ को ही बचा रहने देते हैं। इस प्रकार sloth 'सुस्ती' मूलतः slow अर्थ का गुणवाचक संज्ञा रूप था ठीक वैसे ही जैसे आज भी truth का true है। किन्तु गुणवाचक संज्ञा के th की विच्युति तथा नियमित रचना— ness व्युत्पादकता के कारण slowness के उत्थान के साथ ही sloth अलग पड़

गया। एक प्राचीन अंग्रेजी समास *hūs-wif "गृहिणी" अनेक ध्वन्यात्म परिवर्तनों से होकर एक ऐसा रूप बन पाया जो आज केवल स्थानान्तरित अर्थ hussy ['hʌzi] 'गुस्ताख, कर्कशा स्त्री" इस ध्वन्यात्म परिवर्तन से होकर hussif ['hʌzif] रूप तक पहुँचा जो आजकल प्रचलित है, यद्यपि 'सिलाई का थैला' के स्थानान्तरित अर्थ का लोप हो गया है किन्तु इसका केन्द्रीय अर्थ और भी नए समासीकृत रूप housewife ['haws–,wajf] द्वारा बहिष्कृत हो गया है। मध्यकालीन जर्मन में स्वर-विभक्ति के साथ कुछ विशेषणों का व्युत्पन्न रूप स्वर-विभक्तिहीन क्रियाविशेषण था : schoene['ʃϕ:ne] "सुन्दर" किन्तु schone ['ʃo:ne] "सुन्दर ढंग से", feste "दृढ़" किन्तु faste "दृढ़तापूर्वक"। आधुनिक काल में ये क्रियाविशेषण नियमित रूप से रचित क्रियाविशेषणों द्वारा जो विशेषणों के समध्वनि हैं, बहिष्कृत हो गए हैं: आज schön [ʃϕ:n] "सुन्दर" तथा क्रिया-विशेषण रूप में सुन्दरतापूर्वक दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त होते हैं तथा fest "दृढ़, कठोर" तथा दृढ़तापूर्वक तथा "कठोरतापूर्वक" दोनों ही अर्थों में। किन्तु प्राचीन क्रिया-विशेषण रूप सुदूर सीमान्तक स्थितियों में बने हुए हैं जैसे schon "पहले ही" तथा "कभी न डरो" और fast "लगभग"।

अन्तिम रूप से, व्यावहारिक जगत में पृथक्करण के उपादान रूप में एक परिवर्तन को देखा जा सकता है। इस प्रकार जर्मन wand "दीवाल" का winden "हवा देना" से पृथक्करण मांसल दीवालों के दुष्प्रयोग के कारण है। लैटिन penna "पंख" (>प्राचीन फ्रेंच penne), डच और अंग्रेजी में लेखन के लिए कलम (pen) के लिए आदान किए गए थे। फ्रेंच में plume [plym] तथा जर्मन feder ['fe:der] "पंख" (feather) के लिये वर्नाक्युलर शब्द कलम (pen) के लिए भी प्रयुक्त होता है। बतख के पंख के कलम के अप्रयोग ने इन अर्थों को अलग कर दिया है।

24.6 आर्थी परिवर्तन के लिए पॉल की व्याख्या से सीमान्तक अर्थों के उत्थान के कारणों के संबंध में तथा आर्थीक्षेत्र में रूपों के आंशिक लोप के संबंध में कुछ पता नहीं चलता। यही स्थिति तथाकथित मनोवैज्ञानिक व्याख्याओं की भी है, यथा वुन्डट (Wundt) की व्याख्या जो परिवर्तन के परिणामों का पुनरुक्तिपूर्ण विवरणमात्र है। वुन्डट केन्द्रीय अर्थ की परिभाषा, अर्थ के प्रधान तत्व रूप में करते हैं और यह दिखलाते हैं कि किस प्रकार प्रधान तत्व बदल जाता है जब एक रूप नए संदर्भ में आता है। इस प्रकार जब meat शब्द

प्रधानतः उन स्थितियों में सुना गया था जहाँ मांस-भोजन का संबंध था, तो प्रधान तत्व अधिक से अधिक वक्ताओं के लिए केवल भोजन नहीं अपितु 'मांस-भोजन' बन गया । यह विवरण बात को यथास्थान छोड़ देता है ।

लोप के लिए जो अनेक आर्थी परिवर्तनों में महत्वपूर्ण होता है आवृत्ति के साधारण क्षति के अतिरिक्त अन्य किसी विशिष्टता दिखाने की आवश्यकता नहीं; जो कुछ थोड़ा बहुत ज्ञान अस्थिरता के संबंध में एक रूप का हो इस दिशा (अध्याय 22) में लागू होगा । फिर भी नए अर्थों में एक रूप का विस्तार आवृत्ति के ऊँचे उठने की एक विशेष स्थिति है तथा बहुत कठिन भी है । क्योंकि यदि गहराई से विचार करें तो लगभग किसी भी उच्चार का रूप एक नई परिस्थिति से प्रेरित होता है तथा विचित्रता का स्तर सूक्ष्म माप की सीमा में नहीं आता । अपेक्षाकृत प्राचीन अध्येताओं ने बिना किसी विशेष उत्पादन की खोज में प्रवृत्त हुए ही सीमान्तक अर्थों के उत्थान को स्वीकार कर लिया । सम्भवतः वे एक स्थानान्तरण विशेष को जो उनकी परिचित भाषाओं में हुआ था, (एक पर्वत का पाद foot, एक बोतल की गर्दन neck, इत्यादि § 9.8) मानकर चले थे । वास्तव में भाषाएँ इस रूप में भी एक दूसरे से भिन्न होती हैं तथा संक्षेपतः नए अर्थ में एक रूप के प्रसार के कारण जिसका आर्थी परिवर्तन के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है ।

एक नए अर्थ में स्थानान्तरण उसी स्थिति में ग्राह्य होता है जब वह व्यावहारिक जगत् में मात्र एक स्थानान्तरण को पुनः उपस्थित करता है। ship अथवा hat अथवा hose की तरह का रूप, व्यावहारिक जगत् की वस्तुओं में परिवर्तनों के कारण, वस्तुओं के एक स्थानान्तरण क्रम को सूचित करता है । यदि चौपायों का प्रयोग विनिमय के लिए होता तो fee "चौपाया" शब्द रुपए के अर्थ में प्रयुक्त होता और यदि कोई बतख के पंख से लिखता था, तो पंख के लिए स्वभावतः इस लेखयंत्र का प्रयोग होता । फिर भी इस बिन्दु पर भाषा की कोषीय संरचना में कोई स्थानान्तरण नहीं हुआ है । ऐसा तभी होता है जब एक सीखा हुआ आगत शब्द pen पंख से अलग होता है अथवा एक ओर तो fee का प्रयोग cattle चौपायों के लिए नहीं होता तथा दूसरी ओर इसका प्रयोग रुपए के लिए भी नहीं होता जब तक कि यह केवल "एक सेवा अथवा विशेषाधिकार के एवज में दी गई धनराशि से" के विशेष प्रतिमान में नहीं बना रहता ।

आर्थी विस्तार का मात्र एक प्रतिरूप जो अच्छी तरह समझा जाता है, वह

है जिसे घटनाजन्य प्रतिरूप कहा जा सकता है। कुछ समीप परिवर्तन—ध्वनि-परिवर्तन, सादृश्यात्म पुनराकृतिकरण अथवा आदान—केवल बोलचाल में प्रतिफलित होते हैं जो किसी प्राचीन रूप से जिसका सुदूर अर्थ नहीं होता मेल खाते हैं। इस प्रकार आदिम जर्मन *['awzo:] किसी व्यक्ति अथवा पशु के 'कान' का बोध कराता था। यह गॉथी ['awso:], प्राचीन नार्स eyra प्राचीन जर्मन ōra (>आधुनिक डच oor [o:r]), प्राचीन अंग्रेजी ['e:are] जो लैटिन auris का सजातीय है, प्राचीन बलगेरियाई के उसी अर्थ में [uxo] में दिखाई पड़ता है। आदिम जर्मन *['ahuz] से एक पौधे के छिलकेदार दाने का बोध किया जाता है। यह गॉथी में ahs, प्राचीन नार्स ax, प्राचीन जर्मन ah तथा विकारी कारकरूपों के कारण सादृश्यात्मक कर्ता में, प्राचीन जर्मन ahir> (>आधुनिक डच aar [a:r]), प्राचीन अंग्रेजी ['ɛhher] तथा ['e:ar] जो लैटिन acus "दाने का भूसा", "चोकर" का सजातीय है। अंग्रेजी में [h] तथा बलाघातहीन स्वर के लोप से दोनों रूप ध्वन्यात्म दृष्टि से समान हो गए हैं और तभी से अर्थ में समानता है। दाने का ear (कान) पशु के कान के लिए सीमान्तक (स्थानान्तरित) अर्थ हो गया है। क्योंकि प्राचीन अंग्रेजी [we:od] "घास" तथा [wɛ:d] "पोशाक" ध्वनिपरिवर्तन द्वारा एक दूसरे से मेल खा गए हैं, बाद वाले रूप का प्रयोग window's weeds में प्रथम का सीमान्तक अर्थ है। वास्तव में अर्थ की निकटता के स्तर का संक्षिप्त मापन नहीं हो सकता। कोषकार अथवा इतिहासकार, जिसे उद्भव का पता है इन रूपों का समध्वनि युग्म रूप में वर्णन करने का आग्रह करेगा। फिर भी अधिकांश वक्ताओं के लिए निस्संदेह रूप से पैर पर का दाना corn "दाने" के मात्र सीमान्तक अर्थ का ही प्रतिनिधित्व करता है। बाद वाला रूप, प्राचीन मातृ-शब्द का चला आता रूप है। पहले वाला रूप प्राचीन फ्रेंच corn (>लैटिन cornū "सींग", अंग्रेजी horn के सजातीय) से आदान किया गया है। फ्रेंच में allure, aller "चलना, जाना" से व्युत्पन्न भाववाचक संज्ञा है तथा इसका अर्थ है "चलने का ढंग, गाड़ी" तथा विशिष्ट अर्थ में "चलने का अच्छा ढँग, अच्छी गाड़ी"। अंग्रेजी में इस allure का आदान किया गया है। क्योंकि यह पहले to allure (प्राचीन क्रिया aleurer से आगत) क्रिया से मेल खा जाता है, इसका प्रयोग charm 'आकर्षण' के अर्थ में होता है। ऐसा हो सकता है कि let or hindrance में let तथा a let ball कुछ वक्ताओं के लिए let "आज्ञा देना" का विकृति सीमान्तक है तथा यहाँ तक कि एलिजाबेथ के युग का let "रोकना" (§ 22.4) का भी

यही प्रतिमान था। इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर का कोई मानक नहीं है।

इन स्थितियों की ध्वन्यात्म असंगतियाँ, नई रचनाओं द्वारा हटाई जा सकती हैं। इस प्रकार स्कैन्डनेवी आदत्त शब्द būenn "सुसज्जित, तैयार" से आधुनिक अंग्रेजी *[bawn] निकलेगा। यह रूप ध्वन्यात्म तथा अर्थ की दृष्टि से प्राचीन अंग्रेजी प्रतिवर्त bunden "बाँधना", bindan का भूतकालिक कृदन्त (>आधुनिक bound [bawned], bind का भूतकालिक कृदन्त) की नई रचना bound [bawnd] इसके स्थान पर प्रयुक्त होने लगी, [-d] का संयोग सम्भवतः सन्धि की प्रवृत्ति के अनुसार था। परिणामस्वरूप bound for England तथा bound to see it की तरह की पदसंहितियों में, bound में भूतकालिक कृदन्त bound का ही अर्थ प्रधान है। law तथा इसका समास by-law दोनों ही शब्द स्कैन्डनेवी से आदत्त हैं। बाद वाले का प्रथम सदस्य प्राचीन नार्स [by:r] कस्बा था—साक्ष्य के लिए प्राचीन अंग्रेजी रूप bir-law, bur-law—किन्तु by-law के पुनराकृतिकरण ने पूर्वसर्ग (preposition) तथा क्रियाविशेषण by को सीमान्तक प्रयोग में बदल दिया।

please के केन्द्रीय अर्थ 'आनन्द अथवा संतोष देना" के अतिरिक्त, if you please में सीमान्तक अर्थ "इच्छा करना" भी है। मध्य अंग्रेजी में इस पदसंहिति का अर्थ था—'यदि यह तुम्हें आनन्द दे' (if it pleases you)। कर्त्ताविहीन समापिका क्रिया के लोप तथा वाक्यांश में समापिका क्रिया का स्थगन, संदिग्धकाल if it please you (यदि इससे तुम्हें आनन्द मिले) का निकट लोप तथा कारक-विभेद का सादृश्यात्मक लोप (कर्त्ता ye; you सम्प्रदान-कर्म) में if you please को you के कर्त्तारूप तथा please के कर्त्ता-क्रिया वाक्यांश में छोड़ दिया गया है। you इसमें कर्त्ता है तथा please का प्रयोग विश्रृंखल है। ये ही उपादान if you like की तरह की पदसंहितियों में काम करते हुए like क्रिया के अर्थ में पूर्ण उलट-फेर कर दिए लगते हैं जिनका अर्थ पहले उपयुक्त होना 'आनन्द देना' हुआ करता था, यथा प्राचीन अंग्रेजी [he: me: 'wel 'li:kaθ] "वह मुझे अच्छी तरह आनन्द देता है, मैं उसे पसन्द करता हूँ।"

एक रूप का आंशिक अप्रचलन एक असंगत अर्थ वाले सीमांतक अर्थ को छोड़ सकता है। पूर्व दिये हुए उदाहरणों में (यथा meat, board) कुछ और जोड़े जा सकते हैं जहाँ इस लक्षण के कारण आगे भी विवर्तन हुआ है। लैटिन फ्रेंच

आदत्त शब्द favor पहले अंग्रेजी में दो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता था। अपेक्षाकृत एक मूल 'दयापूर्ण प्रवृत्ति' "रूझान" इसकी शाखाओं के साथ "दयापूर्ण कार्य" अभी भी केन्द्रीय है। अन्य "चेहरे वाला" सामान्यतः निरर्थक है किन्तु एक सीमा तक अर्थ ill favoured "कुरूप" में अभी भी बना हुआ है। पूर्व ऐतिहासिक वाक्य kissing goes by favour में अंग्रेजी शब्द का पहले सीमान्तक प्रतिमान था (अर्थात् कोई सुन्दर दीखने वाले लोगों को चूमना पसन्द करता है) किन्तु अब इसका केन्द्रीय प्रतिमान है (रुचि की बात है)। इस प्रकार prove, proof का उसी अर्थ में केन्द्रीय अर्थ 'परखना' था जो लोकोक्ति the proof of the pudding is in the eating में बना हुआ है। यही अर्थ the exception proves the rule में भी था किन्तु अब prove, proof का विवर्तन निर्णायक साक्ष्य (देने) के (वास्ते) अर्थ में हो गया है। बाद वाली पदसंहिति अन्तविरोधी बनकर रह गई है।

प्राचीन भारतयूरोपीय तथा नकारात्मक क्रिया-विशेषण *[ne] 'नहीं' के चिन्ह no, not, never जैसे शब्दों में मिलते हैं जिससे प्राचीन पदसंहितीय संयोग का आभास मिलता है किन्तु स्वतंत्र प्रयोग में इसके स्थान पर पूरक मिलते हैं। अनेक जर्मन भाषाओं में इसका लोप, अंशतः ध्वनिपरिवर्तन के कारण था तथा इसके कारण अनेक आर्थी स्थितियाँ सामने आईं। नार्स में इसका चिन्ह एक ऐसे रूप में मिलता है जो मूल पदसंहितीय बनाव के कारण नकारात्मक *[neˈ wajt ek hwerr] "नहीं जानता मैं कौन" अर्थात् "मैं नहीं जानता कि कौन" ध्वन्यात्म परिवर्तन के कारण प्राचीन नार्स [ˈnøkurr, ˈnekkwer] "कोई एक" में प्रतिफलित हुआ। अन्य ध्वन्यात्म स्थितियों में, पूर्व नार्स में *[ne] पूर्णतया लुप्त हो गया था। कुछ रूप जो प्रवृत्ति से ही नकारात्मक प्रयोग वाले थे, इस प्रकार अवश्य ही दो विरोधी हो गए होंगे। इस प्रकार *[ne ˈajnan] से प्राचीन नार्स a not निकलता है, *[ne ˈajnato:n] "एक वस्तु नहीं" से प्राचीन नार्स में at 'not,' *[ne ˈajnaz ge] "एक भी नहीं" से प्राचीन नार्स einge "कोई नहीं," *[ne ˈajnato:n ge] "एक भी वस्तु नहीं से etke, ekke "कुछ भी नहीं, *[ne ʼajwan ge] "किसी भी समय नहीं" से eige 'नहीं,' *[ne ˈmannz ge] "एक आदमी भी नहीं" से mannge "कोई भी नहीं" निकला है। जर्मन जहाँ ne के स्थान nicht [nixt] का प्रयोग हुआ है, मूलतः nat a whit; दुहरा अर्थ किसी ध्वन्यात्म स्थिति में इसके लोप के कारण, अंग्रेजी अभिलेखों में अभी तक दिखाई पड़ता है। मध्ययुग के अन्त में संदिग्ध क्रिया के साथ अपवाद के

वाक्यांश मिलते हैं ('unless……………') जो बिना क्रियाविशेषण अथवा क्रियाविशेषण ne, en, n के साथ प्रत्यक्षतः उसी अर्थ में रचित हुए हैं।

ne के साथ ez en mac mih nieman tröesten, si en tuo z. ''मुझे कोई भी ढाढस नहीं बंधा सकता, जब तक वह नहीं करती।''

ne के बिना -nieman kan hie fröude finden, si zerge ''कोई भी यहाँ आनन्द नहीं पा सकता, जो लुप्त न हो जाता हो।''

यहाँ का प्रथम उदाहरण तर्कसंगत है। दूसरे उदाहरण में संदिग्धात्मक का उपहासात्मक प्रयोग है जिसकी अवस्थिति उसी संदर्भ में ne के ध्वन्यात्म लोपमात्र से संबद्ध है। इन उदाहरणों nobody ''कोई भी नहीं'' के साथ मुख्य वाक्यांश में ne, en का संयोग तथा असंयोग देखा जाता है। इसने एक अस्पष्ट प्रतिरूप छोड़ दिया है। प्राचीन dehein ''कोई'' तथा एक प्राचीन ne dehein ''कोई नहीं'' दोनों के कारण किसी विशेष ध्वन्यात्म संदर्भ में dehein ''कोई नहीं'' निकला होगा। dehein के ये दोनों अर्थ अंग्रेजी के अपेक्षाकृत प्राचीन पाठ्यसामग्री में मिलते हैं, साथ ही a ne dehein 'कोई नहीं' भी। इन तीन संभावनाओं में से केवल dehein 'कोई नहीं' (>kein) आधुनिक मानक जर्मन में बना हुआ है।

फ्रेंच में, कुछ शब्द जिनका क्रिया के साथ तथा नकारात्मक क्रिया-विशेषण के साथ विस्तृत रूप से प्रयोग होता है, जब बिना क्रिया के प्रयुक्त होते हैं उस दशा में भी नकारात्मक अर्थ वाले होते हैं। इस प्रकार pas [pa] 'कदम' (<लैटिन passum) के दो प्रयोग je ne vais pas [zə n ve pa] 'मैं नहीं जाता हूँ'' (मूलतः मैं एक डग भी नहीं जाता हूँ) तथा pas mal [pa mal] ''बुरी तरह नहीं 'उतना बुरा नहीं', personne [pɛrsɔn] 'आदमी' (<लैटिन persōnam) je ne vois personne [zə n vwa pɛrsɔn] ''मैं किसी को नहीं देखता हूँ'' में भी दिखाई पड़ता है, तथा personne में कोई भी व्यक्ति नहीं। rien [rjɛ̃ (<लैटिन rem एक वस्तु) का सामान्य संज्ञा प्रतिमान समाप्त हो चुका है तथा je na vois rien <zɔ n vwa rjɛ̃] ''मैं कुछ भी नहीं देखता हूँ'' तथा rien ''कुछ भी नहीं'' में दिखाई पड़ता है इस विकास को संक्रमण अथवा संक्षिप्ति कहा गया है। यह अपेक्षाकृत भी अच्छी तरह समझा जा सकता है यदि यह मान लिया जाए कि मध्ययुग के उच्च-बलाघात तथा स्वर के दुर्बलीकरण में फ्रेंच ne (< लैटिन nōn) ध्वन्यात्म दृष्टि से किन्हीं विशेष संदर्भों में लुप्त हो गया।

इस प्रक्रिया का विरोधी प्रक्रिया-तथ्यों का लोप होना है। लैटिन रूप cantō "मैं गाता हूँ," cantās "तुम गाते हो," cantat "वह-वह-यह गाता है।" (जिसके साथ (§12. 9) द्वारा कर्त्ता का विशेष रूप से उल्लेख जोड़ दिया गया था) फ्रेंच में chante (s) [ʃāt] "गाता" है केवल कर्त्ता के साथ प्रयुक्त होता है अथवा बहुत कम पूरक भाषण में अंग्रेजी क्रिया रूप की तरह। सार्व-नामिक कर्त्ता अर्थ का यह लोप प्रत्यक्षरूप से सादृश्यात्मक परिवर्तन के कारण है जिसके कारण cantat "वह गाता है" प्रतिरूप के स्थान पर ille cantat "वह गाता है" (> फ्रेंच il chante [i ʃāt] वह गाता है) प्रयुक्त होने लगा। इसके बाद के परिवर्तन की व्याख्या फ्रेंच के संदर्भ में अनेक लैटिन रूपविभक्तियों के ध्वनिपरिवर्तन के कारण हुई समध्वनिता के परिणामस्वरूप दी गई है। फिर भी अंग्रेजी तथा जर्मन में sing, singest, singeth की तरह के रूप समध्वनि नहीं होने पर भी कर्त्ता की अपेक्षा रखने लगे हैं।

24.7 इस प्रकार के विशिष्ट उपादानों द्वारा, सीमान्तक अर्थों के एक छोटे अंश का ही कारण दिया जा सकता है जो हर भाषा में दिखाई पड़ते हैं। अर्थ का विस्तार किसी भी प्रकार से अनायास ही नहीं स्वीकार किया जा सकता तथा इन्हें समझने के लिए यदि खोजा जा सके, प्रथम स्तर खोजना होगा कि किस संबंध में नया अर्थ सर्वप्रथम सामने आया। यह संकेत करने का श्रेय आधुनिक काल के विद्वान एच० स्पर्बर (H. Sperber) को है। यह सदा कठिन होगा क्योंकि इसके लिए अपेक्षा है कि अध्येता सभी प्राचीनतर अर्थों में एक रूप का अवलोकन करें। नकारात्मक लक्षण के प्रति, यथा किसी निश्चित अवधि तक, किसी निश्चित छाया-अर्थ अभाव के प्रति निश्चित हो लेना, विशेषरूप से कठिन है। फिर भी अधिकांश स्थितियों में प्रयत्न का असफल होना अवश्यम्भावी है क्योंकि आलेखों में निर्णायक बोलचाल नहीं रहता। फिर भी स्पर्बर (H. Sperber) प्राचीनतर जर्मन koff "प्याला, "bowl, "बर्तन" सिर के अर्थ में विस्तार का निर्णायक संदर्भ पता लगाने में सफल हुआ। नया प्रतिमान सबसे पहले मध्ययुग के अन्त में अंग्रेजी पाठ्य सामग्री के युद्ध दृश्यों में मिलता है जहाँ पर किसी का सर तोड़ने की बात है। इसी प्रकार का उदाहरण bede "प्रार्थना" bead "माला का दाना" आधुनिक अर्थ में विस्तार का है। यह विस्तार माला के संबंध में हुआ लगता है जहाँ कोई अपनी माला को गिनता है, (मूलतः 'प्रार्थन' फिर 'धागे में गुथे हुए माला के दाने')।

आर्थी विस्तार के साधारण उदाहरण में उस संदर्भ पर विचार कर लेना

आवश्यक होता है जिसमें रूप का प्रयोग प्राचीन तथा नई दोनों प्रकार के अर्थों से हो सके। अन्य संदर्भों का लोप--इन उदाहरणों में जर्मन kopf मिट्टी के बर्तनों के लिए तथा bead 'प्रार्थना'—का स्पष्ट केन्द्रीय अर्थ के साथ नया प्रतिमान रहा होगा। फिर भी विस्तार का कारण दूसरा है। यह प्रश्न अभी तक उठता है कि मध्ययुग का कवि एक योद्धा के लिए शत्रु का 'प्याला' अथवा 'बर्तन' तोड़ना प्रयोग करता था अथवा अंग्रेज पुजारी के लिए 'मोती' गिनना नहीं कहकर 'प्रार्थना' गिनना कहता था। स्पर्बर (Sperber) की मान्यता है कि तीव्र आवेग (जो शक्तिशाली प्रेरणा है) इस प्रकार के स्थानान्तरण की ओर उन्मुख करता है। प्रबल प्रेरणा के कारण, उन रूपों के स्थान पर जो भिन्न संदर्भों में सुने गए हैं (§22.8) नए भाषण रूप समर्पित होते हैं। किन्तु इस सामान्य प्रवृत्ति द्वारा विशिष्ट सीमान्तक अर्थों के उत्थान का कारण नहीं मिल पाता।

सैद्धान्तिक त्रुटि जिसके कारण इस दिशा में अधिक कार्य नहीं हो सका है वह है अभाषाई शब्दों—अर्थ की दिशा में, रूप की दिशा में नहीं—में इस प्रश्न को रखना। जब यह कहा जाता है कि meat शब्द का परिवर्तन 'भोजन' के अर्थ से 'भोज्य मांस' में हो गया है, तो इस प्रकार भाषाई प्रक्रिया का एक व्यावहारिक परिणाम मात्र ही रखा जाता है। उन स्थितियों में जहाँ दोनों शब्द व्यवहार में आ सकते हैं, flesh के स्थान पर meat शब्द को प्राथमिकता मिली थी तथा इसी प्रकार के आदर्शों पर उन स्थितियों में भी इसका प्रयोग होने लगा जहाँ पहले केवल flesh शब्द का ही प्रयोगादि था। इसी प्रकार food तथा dish शब्द भी meat के क्षेत्र में घुस पड़े। यह दूसरा विस्थापन पहले तो इसलिए हुआ होगा क्योंकि meat 'भोजन' तथा meat 'मांस-भोजन' की अस्पष्टता के कारण इसका चौके में व्यवहार कष्टप्रद रहा होगा। किसी दिन इस बात का भी पता चल सकता है कि कैसे flesh का प्रयोग **पाकशालीय** परिस्थितियों में भी समर्थ नहीं हो सका।

एक बार यदि इन प्रश्नों को इन शब्दों में रख दिए जाने पर, यह पता लग जाता है कि अर्थ के सामान्य विस्तार की भी वही प्रक्रिया है जो व्याकरणिक कार्यकारिता की। चाहे जिस किसी भी कारण से meat शब्द का समर्थन होने लगा और flesh प्रयोग च्युत होने लगा, उस समय ढाँचे में समानानुपात से विस्तार हुआ होगा (§23.2) leave the bones and bring the flesh

leave the bones and bring the meat (हड्डियाँ छोड़ दो तथा गोश्त लाओ) = give us bread and flesh (हमें रोटी और माँस दो) : इसके परिणामस्वरूप नई पदसंहिति give us bread and meat बनी। बाईं ओर के रूपों में जिनमें flesh (माँस) शब्द आया है, अवश्य ही प्रतिकूल अभिधान रहे होंगे जो दाईं ओर के रूपों में जहाँ meat (गोश्त) आया है, नहीं रहा होगा।

तो आर्थी परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है। इसके अन्तर्गत अनुकूलता तथा प्रतिकूलता आती है तथा महत्वपूर्ण बिन्दु से रूप में अनुकूल रूपों का व्यावहारिक प्रयोग में विस्तार आता है जो अब तक अननुकूल रूपों में ही आते थे। महत्वपूर्ण विस्तार केवल तभी देखा जा सकता है जब हम उस बोलचाल का पता लगा लें जिसमें विस्तार हुआ था तथा आदर्श बोलचाल का पता लगाने अथवा उनकी पुनर्रचना कर लेने पर जिनमें रूपान्तर से दोनों रूपों का प्रयोग हुआ था। आलेखों से बोली जाने वाली भाषा के अनन्त खण्ड मिलते हैं और यह खण्ड लगभग उसी परिष्कृत भाषण से बना होता है जिसमें बोलचाल के नए रूपों का प्रवेश बचाया जाता है। स्पर्बर के उदाहरण जर्मन kopf बर्तन > head 'सिर' में (युद्ध में सर तोड़ने) का संदर्भ प्रकट है, जहाँ नवरचन हुआ था। यहाँ समस्या, आदर्श के लगा लेने की है। उदाहरण के लिए कोई यह अटकल भी लगा सकता है कि नवरचन जर्मनों द्वारा हुआ था जो युद्ध कौशल तथा वीरता में रोमान्स वक्ताओं के लैटिन testam, testum 'पात्रखण्ड, पात्र' > सर, प्रतिरूप से परिचित थे जिसने फ्रेंच तथा लैटिन प्रतिरूप caput 'सिर' को केवल स्थानान्तरित अर्थ में छोड़कर अन्य सभी अर्थों में निकाल फेंका है। यह जटिल स्थिति अंग्रेजी let, bound, ear जैसी दृढ स्थितियों को छोड़ कर जो किसी ध्वन्यात्म घटना के कारण हैं, सभी आर्थी परिवर्तनों में दिखाई पड़ती है।

आधुनिक स्थितियों में विवर्तन वहां बहुत अच्छी तरह समझा जा सकता है जहाँ पर अभिधान प्रतिमान तथा व्यावहारिक पृष्ठभूमि का पता है। गत पीढ़ी में नगरों के उत्थान के साथ नगर भूमि तथा घरों का जीवन्त व्यापार चला। बेकार पड़ी जमीन का 'विकास' निवास के लिए बने जनपदों तथा ऊँची इमारतों में हुआ। उसी समय उन लोगों का सम्मान जो इन वस्तुओं के साथ रहते हैं बिन्दु तक उठ गया है जो उनसे होकर रहन सहन की रीति श्रमिक वर्ग में प्रवेश पाती है, जो भाषा की दृष्टि से अनुगमी होते हैं किन्तु

उनकी संख्या अधिक होती है और 'शिक्षित' व्यक्ति क्रमिक नेतागिरी करता है। अब बड़े लाभ की आशा से कालोनी बसाने वाले की कमजोरी, जिसमें भविष्य में उन्नति की सम्भावना वाले क्रेता की भावना भी सम्मिलित है,—से लाभ उठाना सीख लेता है। वह उसी भाषणरूप का प्रयोग करता है जिसमें श्रोता को सही दिशा में मोड़ सके। अनेक बोल चाल रूपों में house में व्यंजना नहीं है तथा home शब्द भावनापूर्ण है।

व्यंजनहीन	**भावनात्मक रुचिकर अभिधान**
Smith has a lovely house :	Smith has a lovely home.
=a lovely new eight-room house	:x

इस प्रकार एक विक्रेता ऐसी रिक्त खोली को जिसमें कभी कोई नहीं रहा 'घर' कहने लगता है और बाकी लोग उसकी शैली का अनुकरण करने लगते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि house शब्द विशेष रूप से विक्रेता के उपमानक क्षेत्र में अर्थ के कारण अस्पष्ट रहा हो, यथा व्यापारिक अधिष्ठान (एक विश्वसनीय घर) होटल, चकला, भाषणकक्ष (एक अध-भरा घर)।

लैटिन फ्रेंच प्रयोग में पाण्डित्यपूर्ण (transpire) शब्द का अर्थ (लैटिन spīrāre) (लै० trans) से होकर 'सांस लेना,' या "रिसना" था और इस प्रकार फ्रेंच transpirer [trãspire] 'निःश्वास छोड़ना, चूना, पसीजना, रिसना था। अर्थ के स्थानान्तरण से (समाचार का) 'जन प्रचलित होना' हो गया प्राचीन प्रयोग (वास्तव में क्या हुआ) of what really happened, very little transpired (बहुत कम हुआ) होगा। अस्पष्ट स्थिति है it transpired that the president was out of town। उसी ढाँचे पर :

व्यंजनहीन	**परिष्कृत पाण्डित्यपूर्ण**
it happened that the : president was out of town	it transpired that the president...............
(ऐसा हुआ कि राष्ट्रपति नगर से बाहर था)	
what happened, remains a secret : x	
(जो कुछ हुआ वह एक रहस्य बना है।)	

पहले का असम्भव प्रतिरूप what transpired, remains a secret मिलता है जहाँ transpire शब्द happen तथा occur का परिष्कृत पर्याय रूप है।

स्थानान्तरण की यह समानान्तरता आर्थी-क्षेत्र में क्रमिक घुसपैठ विवरण प्रस्तुत करती है । जैसे ही terribly की तरह के रूप जिनका अर्थ "इस प्रकार भय पैदा करे', है very के प्रबलतर पर्याय प्रयोग में विस्तार पाते हैं, awfully, frightfully, horribly की तरह के शब्दों के भी उसी प्रकार के स्थानान्तरण के लिए मार्ग-प्रदर्शन हो जाता है।

यहां तक कि जब सीमान्तक अर्थ का उद्भव बहुत अर्वाचीन होता है सदैव ही उद्भव को ज्ञात नहीं किया जा सकता । किसी व्यावहारिक स्थिति-विशेष में यह उत्पन्न हो सकता है जिसका कोई पता नहीं अथवा जैसा कि समान वस्तुओं के साथ होता है, यह किसी वक्ता द्वारा सफलता पूर्वक ढला हुआ हो सकता है और इसकी आकृति उस व्यक्तिविशेष की परिस्थिति से सम्बद्ध हो सकती है । कोई यह शंका भी कर सकता है कि पच्चीस वर्ष पूर्व get-out के लिए twenty-three का असंगत अपभाषी प्रयोग क्रीड़ा, जुआ, अपराध अथवा किसी अन्य दुराचारपूर्ण वातावरण के कारण हुआ । इसी सीमान्तर्गत यह भी किसी एक व्यक्तिविशेष के वाग्विलास द्वारा आरम्भ किया गया होगा । क्योंकि हर व्यावहारिक स्थिति वास्तव में अपूर्व होती है, एक अच्छे वक्ता की प्रतिक्रिया सदा ही आर्थी नवरचन की ओर उन्मुख हो सकती है । कर्त्ता और वाग्विलासिता दोनों ही प्रायः इस सीमा का अतिक्रमण कर सकते हैं तथा उनका नवरचन जन-प्रचलित भी हो सकता है । फिर भी बहुत सीमा तक ये व्यक्तिगत नवरचन चालू रूपों के अनुरूप होते हैं । काव्य उपमा भी बहुत सीमा तक साधारण भाषण के स्थानान्तरित प्रयोग से विकसित होती है । एक सटीक उदाहरण होगा, कि जब वर्ड्सवर्थ ने कहा ।

The gods approve
The depth and not the tumult of the soul,

तो इस प्रकार उसने केवल उस प्रचलित उपमायुक्त प्रयोग जो गहन (deep) हलचलपूर्ण (ruffled) अथवा तूफान (stormy) भावनाओं में था, उसे ही बढ़ाया । इन प्राचीन रूपों के आदर्श पर नए स्थानान्तरण द्वारा, उसने 'चित्र' को पुनः प्रस्तुत किया चित्रात्मक कथन की "भाषा बुझे हुए रूपकों की पुस्तिका है" इस यथार्थ का कि कविता एक तरह से भाषा की देदीप्यमान पुस्तिका है, विरोधी है ।

अध्याय 25

सांस्कृतिक आदान

25.1 एक बच्चा जो बोलना सीख रहा हो अपनी प्रवृत्ति का अधिकांश किसी एक व्यक्ति-यथा अपनी मां से ग्रहण कर सकता है, किन्तु साथ ही वह अन्य वक्ताओं को भी सुनेगा और उनसे अपनी प्रवृत्ति के कुछ अंश ग्रहण करेगा। यहाँ तक कि आधारभूत शब्दावली (Basic vocabulary) तथा व्याकरणिक लक्षणायें जिन्हें वह इस काल में ग्रहण करता है किसी भी एक ज्येष्ठ व्यक्ति का यथार्थतः अनुकरण नहीं होतीं। एक वक्ता आजीवन अपने साथियों से लक्षण ग्रहण करता रहता है तथा ये अभिस्वीकरण यद्यपि अपेक्षाकृत कम मौलिक होते हैं, फिर भी प्रचुर मात्रा में होते हैं तथा साधनों की प्रत्येक रीति से आते हैं। इनमें से कुछ तो बड़े पैमाने के समानीकरण, स्तरीकरण के मूल में होते हैं जो पूरे समुदाय को प्रभावित करते हैं।

तदनुसार तुलनावादी अथवा इतिहासवेत्ता, यदि वह सादृश्यजन्य आर्थी परिवर्तनों को निकाल दे तो भी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति अथवा एक समूह से दूसरे समूह में भाषणरूपों के संक्रामण से विचलित ध्वन्यात्म सहसम्बन्ध पाने की आशा रख सकता है। एक वक्ता की भाषा के विभिन्न लक्षणों की वास्तविक परम्परा का यदि हम पता लगा सकते हों हम देखते कि इसका संबंध अतीत के नितांत भिन्न लोगों तथा समुदायों से जुड़ा हुआ है। इतिहासवेत्ता बाहरी असंगति की स्थिति में इसे पहचान लेता है। उदाहरण के लिए वह देखता है कि वे रूप जहाँ पुरानी अंग्रेजी में विशेष ध्वन्यात्म परिवेशों में ह्रस्व [a] था, मध्यपश्चिमी अमेरिकी अंग्रेजी यथा man, hat, bath, gather, lather आदि में [ɛ] हो गया। यह मूल परम्परा को उपस्थित करता है यद्यपि विशेष रूपों में बिल्कुल ही भिन्न प्रकार के परिवर्तन मिलते हैं। तदनुसार जब वक्ता father तथा rather शब्द के परिष्कृत विकल्प के प्राचीन स्वनिम के लिए एक ही स्वनिम [a] को प्रयोग में लाता है तो इतिहासवेत्ता यह निष्कर्ष निकालता है कि कहीं सम्प्रेषणीयता में ये रूप विभिन्न प्रवृत्ति वाले वक्ताओं से आए हैं। उन लक्षणों का अभिस्वीकरण जो प्रधान परम्परा से विभिन्न होते हैं भाषाई आदान (linguistic borrowing) कहलाता है।

आदान (borrowing) की सीमा में बोली-आदान में, जहाँ आदत्त लक्षण एक ही भाषण-क्षेत्र से आते हैं (यथा [a] बोली में [ɛ] के साथ father, rather) तथा सांस्कृतिक आदान में, जहाँ आदत्त लक्षण भिन्न भाषा से आते हैं भेद करते हैं। अन्तर सदा ही नहीं चल सकता क्योंकि भाषा-सीमा तथा बोली-सीमा के बीच कोई निरपेक्ष सीमांकन नहीं है (§ 3.8)। इस अध्याय में तथा अगले अध्याय में विदेशी भाषा से आदान के संबंध में विचार किया जाएगा तथा 27वें अध्याय में एक क्षेत्र की बोलियों के बीच आदान का विचार होगा।

25.2 प्रत्येक भाषण-समुदाय अपने पड़ोसियों से सीखता है। प्राकृतिक तथा कृत्रिम, दोनों प्रकार की वस्तुएँ एक समुदाय से दूसरे समुदाय में जाती हैं और इसी प्रकार प्रक्रिया की पद्धति भी, यथा तकनीकी पद्धतियाँ। यह प्रयुक्त व्यवहार, धार्मिक संस्कारों अथवा व्यक्ति-विशेष के आचरण, वस्तुओं तथा प्रवृत्तियों का यह प्रसार नृवंशवेत्ताओं द्वारा अध्ययन किया जाता है जो इसे सांस्कृतिक प्रसरण (cultural diffusion) कहते हैं। कोई भी मानचित्र में सांस्कृतिक लक्षण के प्रसारण को अंकित कर सकता है, यथा पूर्व-कोलम्बियन उत्तरी अमेरिका में मक्का की पैदावार। सामान्यतः विभिन्न सांस्कृतिक लक्षणों के प्रसारण के क्षेत्र समान नहीं होते। वस्तुओं और व्यवहारों के साथ-साथ भाषण रूप जिनमें इनका नामकरण हुआ रहता है, एक से दूसरे में संक्रामित होते हैं, उदाहरणार्थ एक अंग्रेजी वक्ता जो चाहे द्विभाषी हो अथवा उसे फ्रेंच का कुछ विदेशी ज्ञान हो। जब फ्राँसीसी वस्तु अपने देशवासियों के समक्ष प्रस्तुत करेगा तो वह उन्हें फ्रांसीसी नामों से ही सूचित करेगा, यथा rouge [ru:z], jabot [zabo], chauffeur [ʃofoe:r] garage [gara:z] comouflage [kamufla:z]. अधिकांश उदाहरणों में हम वास्तविक नव्यीकरण के क्षण को निश्चित नहीं कर सकते। सम्भवतः वक्ता स्वयं भी निश्चित नहीं हो सकते थे कि उन्होंने मातृभाषा में विदेशी रूपों को कभी सुना अथवा प्रयोग किया। बहुत से वक्ता स्वतंत्र रूप से, जिनमें से किसी ने भी दूसरों से नहीं सुना हो, प्रवर्तन कर सकते हैं। वास्तव सैद्धान्तिक-तौर पर, हमें अवश्य ही इस वास्तविक प्रवर्तन तथा परवर्ती आवर्तन के बीच उसी तथा अन्य वक्ता द्वारा प्रभेद करना चाहिए। नए रूप आवृत्ति की दृष्टि से घटते-बढ़ते रहते हैं। फिर भी एक इतिहासवेत्ता देखता है कि आदत्त रूपों में बाद के कुछ परिवर्तन उसके विदेशी आधार के कारण हैं।

यदि मूल प्रवर्तक अथवा बाद का प्रयोक्ता विदेशी-भाषा पर पूर्ण अधिकार रखता है, तो वह अपनी मातृ-भाषा के प्रसंग में भी विदेशी रूप का विदेशी ध्वनि के अनुकूल उच्चारण कर सकता है। फिर भी कुछ विदेशी उच्चारण प्रक्रिया के स्थान पर मातृभाषा उच्चारण प्रक्रिया द्वारा अधिकतर वह अपने को दुहरे वागिन्द्रिय संयोजन से बचाएगा। उदाहरण के लिए वह एक अंग्रेजी वाक्य में फ्रांसीसी rouge के [r] का उच्चारण फ्रांसीसी अलिजिह्वीय कम्पित जैसा न करके अंग्रेजी [u:] की तरह करेगा तथा फ्रेंच दृढ़, असंध्यक्षरीय के स्थान पर अंग्रेजी [u:] का प्रयोग करेगा। यह ध्वन्यात्म स्थानापत्ति भिन्न वक्ताओं तथा प्रसंग के अनुसार भिन्न होगी। वे वक्ता जिन्होंने फ्रेंच स्वनिमों का उच्चारण नहीं सीखा है निश्चय ही ऐसा करेंगे। इतिहासवेत्ता इसे अनुकूल (§23.8) के विशेष प्रतिरूप के अन्तर्गत वर्गीकृत करेगा जिसमें विदेशी रूप में भाषा की मूल ध्वन्यात्म प्रवृत्ति के अनुसार परिवर्तन किया जाता है।

ध्वन्यात्म स्थानापत्ति में वक्ता विदेशी ध्वनियों के स्थान पर अपनी भाषा के स्वनिमों का प्रयोग करता है। जहाँ तक ध्वन्यात्म व्यवस्थाएँ समानान्तर चलती हैं, इनके अन्तर्गत केवल छोटे-मोटे अन्तरों की उपेक्षा की जाती है। इस प्रकार यूरोपीय विभिन्न प्रकार [r] और [l] के स्थान पर अंग्रेजी-वक्ता अपनी भाषा के [r] और [l] का प्रयोग करता है। फ्रेंच अल्पप्राण स्पर्श के स्थान पर महाप्राण तथा फ्रेंच पश्चदन्त्य के स्थान पर वर्त्स्य (यथा tête-`a-tête) तथा दीर्घ स्वरों के स्थान पर सन्ध्यक्षरीय [ij, uw əj, ow]. जब ध्वन्यात्म व्यवस्थाओं में समानता कम होती है तो दाता को स्थानापत्ति से आश्चर्य हो सकता है। इस प्रकार प्राचीनतर मनोमिनी वक्ता, जिन्हें अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था automobile का उच्चारण [atmo:pen] की तरह से करता है। मनोमिनी में केवल एक ही अघोष श्रेणी के स्पर्श हैं तथा पार्श्विक और कम्पित ध्वनियाँ नहीं हैं। तगलाग में जिसमें [f]—प्रतिरूप नहीं है स्पेनी [f] के स्थान पर [p] प्रयुक्त होता है यथा [pi'jesta] में जो स्पेनी fiesta ['fjesta] "उत्सव" से आया है।

प्राचीन भाषण की स्थिति में ध्वन्यात्म स्थानापत्ति से दो भाषाओं के स्वनिमों के बीच के ध्वनिक-संबंधों की सूचना मिल सकती है। ग्रीक राष्ट्रों के लैटिन नाम, Graeci ['grajki:] बाद में ['grɛ:ki:] जर्मन भाषाओं में

ईस्वी सदी के प्रारम्भ में ही ले लिया गया था और आदि [k] के रूप में यहाँ दिखाई पड़ता है, यथा गॉथी krekōs, प्राचीन अंग्रेजी crēcas, प्राचीन उच्च जर्मन kriahha "ग्रीक"। प्रत्यक्ष-रूप से लैटिन सघोष स्पर्श [g] जर्मन स्वनिम की अपेक्षा श्रोतिकी के अनुसार जर्मन अघोष स्पर्श [k] के अधिक निकट था, यथा, प्राचीन अंग्रेजी में grēne "हरा"। अनुमानतः उस समय जब ग्रीक greek के लिए प्राचीन शब्द लिया गया था, यह जर्मन [g] ऊष्म था। इस आरंभिक-काल में लैटिन [w] जर्मन [w] से लिया गया था, यथा, लैटिन vinum ['wi:-num] > प्राचीन अंग्रेजी win [wi:n] में तथा उसी प्रकार गॉथी और जर्मन में भी। प्रारंभिक मध्यकाल में लैटिन [w] सघोष ऊष्म [v] में बदल गया। मिशनी युग के तदनुसार आदत्त शब्दों में यह लैटिन स्वनिम, सातवीं शताब्दी से जर्मन [w] द्वारा नहीं बल्कि जर्मन [f] द्वारा प्रस्तुत किया जाता रहा। इस प्रकार लैटिन versus ['vɛrsus], प्राचीनतर रूप ['wersus] से, प्राचीन अंग्रेजी तथा प्राचीन उच्च-जर्मन में fers रूप मिलता है। एक तीसरी अवस्था आधुनिक काल में दिखाई पड़ती है। जर्मनी के प्राचीन [w] का ऊष्म में परिवर्तन हो लेने के बाद तथा अंग्रेजी में दूसरे ढंग से [v]- की तरह के स्वनिम आ लेने पर, अब ठीक-ठीक लैटिन [v] प्रस्तुत कर लिया जाता है, यथा, फ्रेंच vision [vizjõ] (लैटिन visionem) [wi:-si'o:nem]: > जर्मन [vi'zjo:n], अंग्रेजी ['vizn]। बोहेमियाई में जहाँ हर शब्द के प्रथम अक्षर पर बलाघात होता है, यह बलाघातीकरण विदेशी शब्दों में मिला है यथा ['akvarijum] 'aquarium', ['konstelatse] 'constellation', ['ʃofe:r] 'chauffeur'।

25.3 यदि आदाता अपेक्षाकृत दाताभाषा से परिचित हों अथवा यदि आदत्त शब्द संख्या में बहुत अधिक हों, तो विदेशी ध्वनियाँ जो ध्वनिक दृष्टि से मातृभाषा के स्वनिम से दूर पड़ती है, न्यूनाधिक यथार्थतः आरक्षित रह सकती हैं यद्यपि वे मातृभाषा की ध्वनि-व्यवस्था के विपरीत हैं। इस स्थिति में बहुत से स्थानीय तथा सामाजिक अन्तर दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार फ्रेंच अनुनासिक स्वर अंग्रेजी में विस्तार से बने हुए हैं। यहाँ तक उन लोगों द्वारा भी जो फ्रेंच नहीं बोलते हैं, यथा, फ्रेंच salon [salõ] > अंग्रेजी [sa'lõ], ['sɛlõ], फ्रेंच rendez-vous [rãde-vu] अंग्रेजी ['rã:divuw], फ्रेंच restaurant [rɛstɔrã] > अंग्रेजी ['restɔrɛ]. फिर भी कुछ वक्ता

इसके स्थान पर स्वर धन (+) [ŋ] का प्रयोग करते हैं, यथा ['rɔŋdivuw] में। अन्य स्वर धन (+) [n] यथा ['rɔndivuw] में। जर्मन में भी ऐसा ही होता है। स्वीडी में सदा फ्रेंच अनुनासिक स्वर के स्थान पर स्वर+ (धन) [ŋ] आता है। कुछ रूपों में अंग्रेजी वक्ता अनुनासिक स्वर नहीं प्रस्तुत करता, यथा फ्रेंच chiffon [ʃifõ] > अंग्रेजी ['ʃifɔn] तथा अपेक्षाकृत अधिक शिष्ट रूपान्तर -['envilowp] envelope में।

विदेशी ध्वनियों का यह अभिस्वीकरण नितांत स्थिर हो सकता है। अंग्रेजी में [sk] गुच्छ स्कैन्डनेवी आदत्त शब्दों के कारण है। प्राचीन अंग्रेजी का [sk] बाद के प्राचीन में [ʃ] में परिवर्तित हो गया था, यथा, प्राचीन अंग्रेजी का [sko:h]>आधुनिक अंग्रेजी shoe। स्कैन्डनेवी गुच्छ केवल आदत्त शब्दों में ही नहीं आता यथा sky, skin, skirt (मातृ-भाषा shirt) में, अपितु नव-रचनाओं में भी आता है यथा scatter, scrawl scream। यह अंग्रेजी ध्वन्यात्म व्यवस्था का अपना अंग बन गया है। आदि [v-, z, dz-] अंग्रेजी में फ्रेंच शब्दों में आए, यथा, very, zest, just अब ये तीनों अंग्रेजी के बिल्कुल अपने बन गए हैं तथा अन्त के दो [-z-dz] नव-रचनाओं में भी आते हैं, यथा zip, zoom, jab, jounce। इस प्रकार ध्वन्यात्म व्यवस्था में आदत्त रूपों द्वारा स्थाई परिवर्तन हो गया है।

जहाँ ध्वन्यात्म स्थानापत्ति होती है, विदेशी भाषा से बढ़ते हुए सम्पर्क के कारण विदेशीरूप का अपेक्षाकृत नया तथा शुद्ध संस्करण बन जाता है। इस प्रकार एक मनोमिनी वक्ता जो अंग्रेजी कम जानता है, अब [atamo:pen] 'automobile' नहीं कहता बल्कि [atamo:pil] कहता है तथा आधुनिक तगलाग वक्ता [fi'jesta] "उत्सव" कहता है। फिर भी आदत्त रूपों के प्राचीन रूपों का विशेष प्रयोगों में पुनःस्थापन हो सकता है, यथा व्युत्पत्तियों में। इस प्रकार आधुनिक तगलाग वक्ता भी [kapijes'ta:han] कहता है, जहाँ पूर्व-प्रत्यय, पर-प्रत्यय तथा बलाघात मातृभाषानुकूल होते हैं और अंग्रेजी में व्युत्पन्न-क्रिया सदा envelop [in'velop] होती है जिसके प्रथम अक्षर में स्वर के साथ [n] होता है।

बिल्कुल ऐसा ही समंजन समय की दीर्घतर अवधि में हो सकता है, यदि आदाता भाषा ने एक ऐसे नए स्वनिम का विकास किया है जो विदेशी रूपों के साथ अपेक्षाकृत अधिक न्याय कर सकती है। इस प्रकार अंग्रेजी Greek

जर्मन Grieche['gri:xe] में वह शुद्धीकरण भी निहित है जो इन भाषाओं में सघोष स्पर्श [g] के विकास के बाद हुआ है। इसी प्रकार अंग्रेजी verse प्राचीन fers का परिष्कृत रूप है। जर्मन-भाषा प्राचीन रूप Vers [fe:rs] पर अड़ी रह गयी। इस प्रकार के परिष्करण में, विशेष रूप से जहाँ साहित्यिक पदों का संबंध होता है, अभिजात वर्ग द्वारा कुछ प्रभाव पड़ सकता है। इस प्रकार बाद के प्राचीनतर रूपों का [kr] द्वारा विस्थापन निश्चय ही अभिजात लोगों के कारण था।

फिर भी अधिकांशतः पढ़े लिखे लोगों का प्रभाव शुद्ध अनुवाद के विपक्ष में भी काम करता है। प्रथमतः पढ़ालिखा आदमी जो विदेशी-भाषा बिल्कुल नहीं जानता किन्तु विदेशी रूपों के लिखित रूप को देखता है मातृभाषा की लिपि के अनुसार ही विदेशी-भाषा की लिपि की व्याख्या करता है। इस प्रकार फ्रेंच रूप puce, ruche, menu, Victor Hugo [pys, ryf, məny, viktɔr ygo] निस्सन्देह अंग्रेजी में फ्रेंच [ij] के स्थान पर [ij] द्वारा प्रस्तुत किये जाते, नकि वर्तनी में वर्ण u न होता जिससे पढ़ालिखा अंग्रेजी वक्ता [(j)uw] का उच्चारण करता है, यथा [pjuws, ruwʃ, ˈmenjuw, ˌviktəˈhjuwgow]। स्पेनी मेक्सिको (Mexico) प्राचीनतर [ˈmeʃiko], आधुनिक [ˈmexiko] पढ़ेलिखे लोगों द्वारा की गई व्याख्या के कारण अंग्रेजी में ks, x है। इसी प्रकार डॉन क्विक्जोट (Don Quixote) (स्पेनी [don kiˈxote] का प्राचीनतर अंग्रेजी रूप [dɔn ˈkwiksət] है। बाद वाले रूप का परिष्कार [dɔn kiˈhowti] निश्चितरूप से पढ़े लिखे लोगों के प्रभाव के कारण हुआ है। किन्तु प्राचीनतर संस्करण प्राचीनतर अंग्रेजी व्युत्पन्नरूप quixotic [kwikˈsɔtik] में बना हुआ हैं। tsar में अथवा tse-tse-fly में आदि [ts] का उच्चारण कर लेते हैं किन्तु जर्मन रूपों में नहीं, यथा, Zeitgeist [ˈtsajt-ˌgajst] > अंग्रेजी [ˈZajtgajst], या Zwieback [ˈtsvib:ak] > अंग्रेजी [ˈZwijbɛk] < जहाँ Z वर्ण से केवल [Z] का बोध होता है। जहाँ तक कि वहां ध्वन्यात्म कठिनाई नहीं होती, यथा जर्मन Dachshund [ˈdaks- ˌhunt], Wagner [ˈva:gner], Wiener [ˈvi:ner] वहाँ भी वर्तनी के कारण [ˈdɛʃˌhawnd, ˈwɛgnə, ˈwijnə, ˈwijni] उच्चारण है।

विदेशी उच्चारण तथा लिपि से कुछ भी परिचित पढ़े लिखे लोगों द्वारा यह संबंध और भी उलझा दिया जाता है। एक वक्ता जो वर्तनी jabot तथा

अंग्रेजी रूप ['zɛbow] (फ्रेंच [zabo] के स्थान पर जानता है tete-`a tete ['tejtə, tejt] (फ्रेंच [tɛ:t a tɛ:t] से) को अतिविदेशी hyper-foreign [ˌtejtətej[में बिना अन्त्य [t] के परिष्कृत कर सकता है। एक पढ़ा लिखा व्यक्ति जो parlez-vous francais? ['parlej 'vuw ˌʃrã:saj?] (फ्रेंच parle vu frãsɛ? के स्थान पर) जानता है, वह Alliance Francaise [aliˈjã:s ˌfrã:sej] को बोलता है यद्यपि फ्रेंच-वक्ता यहां पर अन्त्य [Z]:aljãs frãsɛ:z] का प्रयोग करता है।

25.4 आदत्त ध्वनियों के अतिरिक्त आदत्त शब्द अधिकतर ध्वन्यात्म ढांचे का उल्लंघन कर जाते हैं। इस प्रकार, जर्मन आदि [ts] वर्तनी के अतिरिक्त भी, बहुत से अंग्रेजी वक्ताओं के लिए कठिन हो सकता है। सामान्यतः ध्वन्यात्मक ढाँचे का अनुकूलन रूपीय संरक्षण के अनुकूलन के साथ-साथ होता है। इस प्रकार garage का अन्त्य [z] जो अंग्रेजी ढांचे का अतिक्रमण करता है [dz] द्वारा विस्थापित होता है और बलाघात जो ['gɛridz] रूप में स्थानान्तरित होता है cabbage, baggage तथा carriage के परप्रत्ययी प्रतिरूप के अनुसार होता है। इसी प्रकार सामान्य ध्वन्यात्म स्थानापत्ति से chauffeur [ʃowˈfɔ:] के साथ अंग्रेजी में अधिक पूर्ण ढंग से अनुकूलन [ˈʃowfə] चलता है।

इस प्रकार एक भाषा के वर्णन में विदेशी रूपों का एक स्वर स्वीकार किया जाता है, यथा, salon [səˈlõ], rouge [ruwz], garage [gəˈra:z] जो सामान्य ध्वनि रूप से विचलित मिलते हैं। कुछ भाषाओं में वर्णनात्मक विश्लेषण के आधार पर आगे भी एक स्तर, अर्ध-विदेशी रूपों का, स्वीकार किया जाता है जिसे परम्परित सीमा तक ग्रहण कर लिया गया है किन्तु कुछ निश्चित परम्परा से निर्धारित विदेशी लक्षणों को बनाए रखता है। अंग्रेजी की विदेशी शब्दावली इसी प्रकार की होती है। इस प्रकार फ्रेंच préciosité [presiɔsite] का केवल उसी सीमा तक अंग्रेजीकरण हुआ था जहाँ यह preciosity [presiˈɔsite, preʃiˌɔsiti] हो गया। बलाघातहीन प्रत्यय पर-प्रत्यय -ity (पर-प्रत्ययी बलाघात के साथ) तथा रूप और अर्थ की दृष्टि से precious [ˌpreʃəs] से विचित्र संबंध आगे अनुकूलन के लिए प्रेरित नही करता। अंग्रेजी वक्ता (अल्प संख्या में) जो किसी तरह शब्द का प्रयोग करते हैं उस शब्द को उन प्रवृत्तियों के अन्तर्गत सम्मिलित कर लेते हैं जो अंग्रेजी के सामान्य शब्दों की संरचना से विलग होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से

भाषण प्रवृत्ति के इस गौण स्तर का मूल संबंध आदानों की उस प्राचीन लहर तक जाता है जिसका शेष भाग में विचार होगा।

जब अनुकूल पूरा हो जाता है, यथा chair में (प्राचीनकाल से प्राचीन फ्रेंच से आदत्त) अथवा [ˈʃowfə] chauffeur में, तो रूप का विदेशी स्रोत लुप्त हो गया होता है और न तो वक्ता और न फलस्वरूप प्रसंगानुकूल वर्णन इसे मातृ-भाषा रूप से अलग कर सकता है। फिर भी एक इतिहासवेत्ता जो स्रोत पर विचार कर रहा है, इसे आदत्तरूप के अन्तर्गत वर्गीकृत करेगा। इस प्रकार chair तथा [ˈʃowfə] chauffeur भाषा की वर्तमान स्थिति में, सामान्य अंग्रेजी शब्द हैं, किन्तु इतिहासवेत्ता जो अतीत को भी ध्यान में रखता है, इन्हें आदत्त शब्दों के अन्तर्गत वर्गीकृत करता है।

सभी अवस्थाओं में विदेशी आत्मसात्मरण में समस्याएँ उपस्थित होती हैं। ध्वन्यात्म विषमीकरण के प्रतिरूप का परिवेश (§ 21.10) यथा फ्रेंच में marbre > अंग्रेजी marble अधिकतर दिखाई पड़ते हैं। सम्भवतः हमें यहां वक्ताविशेष की प्रवृत्ति पर आधारित अनुकूलन—जैसे अत्यन्त परिवर्त्य उपादानों की गणना करनी पड़े। आदत्त-रूप के स्तर तक पहुँचने में तथा इस स्तर के पहुँचने के बाद भी, संरचना के अबोध्य हो जाने की सम्भावना है। भाषाएँ, तथा एक भाषा में वह वक्ता-समूह जो विदेशी तथा अर्ध-विदेशी रूपों से परिचित होते हैं, इस स्थिति को सहन कर लेगें। अन्य स्थितियों में इसके बाद के अनुकूलन प्रचलित व्युत्पत्ति के अर्थ में रूप को संरचना अथवा कोशीय दृष्टि से अधिक बोध्य बना देते हैं यथा *groze > *groze-berry > gooseberry; asparagus > sparrow-grass; crevise > crayfish > crawfish (§ 23 8)। विस्थापन का एक बहुप्रचलित उदाहरण प्राचीन फ्रेंच arbaleste 'crossbow' की मध्यजर्मन में अभि-स्वीकृत नई रचना Armbrust [ˈarm-, brust] शब्दशः 'हाथ-छाती' है।

आदत्त रूप में आदान के बाद होनेवाले ध्वन्यात्म परिवर्तन होते हैं। यह उपादान ध्वन्यात्म स्थानापत्ति तथा अन्य अभिस्वीकृत परिवर्तनों से भिन्न होता है। इस प्रकार हमें यह निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि vision [viˈzjoːn] (लैटिन [wiːsiˈoːnem] को प्रतिभासित करने वाले) प्राचीन फ्रेंच रूप, मध्यकालीन अंग्रेजी में कुछ बहुत ही स्वल्प अप्राप्य ध्वन्यात्म स्थानापत्ति के साथ लिया गया था तथा इसके कारण एक सफल अनुकूलीकृत रूपान्तर, प्रथम अक्षर पर बलाघात के साथ, प्रकाश में आया। फिर भी बाद के

परिवर्तन जिससे आधुनिक अंग्रेजी [vizn] बना, केवल ध्वन्यात्म परिवर्त्य हैं जो शब्द के आदानकाल से उपस्थित होते आए हैं। फिर भी ये दोनों उपादान, सदा पृथक-पृथक नहीं किए जा सकते। पर्याप्त आदान हो लेने के बाद आदत्त अंग्रेजी रूपों का फ्रेंच मूलरूपों के साथ नियमित संबंध स्थापित हो गया। फ्रेंच से नए आदत्त रूप प्राचीनतर आदत्तों के आदर्श पर गृहीत हो सकते थे। इस प्रकार फ्रेंच préciosité [presiɔsite] तथा अंग्रेजी preciosity [presiˈɔsiti,preʃiɔsiti] के बीच विपर्यय उस ध्वन्यात्म परिवर्तनों के कारण नहीं है जो अंग्रेजी में आदान के बाद हुआ, प्रत्युत यह फ्रेंच और अंग्रेजी प्रतिरूपों के बीच सामान्य संबंध को प्रतिभासित करता है—एक ऐसा संबंध जो उन अंग्रेजी वक्ताओं में घर कर गया है जो फ्रेंच के निश्चित आधार पर रूपों के ग्रहण करने की प्रवृत्ति से परिचित है।

25.5 जहाँ हम इस अनुकूलन उपादान को स्वीकृति दे देते हैं आदत्त-रूपों के ध्वन्यात्म विकास से प्रायः उनके आदान के समय का ध्वन्यात्म रूप तथा तदनुसार अनेक ध्वन्यात्म परिवर्तनों की समीपवर्ती तिथि का पता चलता है। caesar (सीजर) का नाम ग्रीक में उस वर्तनी के साथ दिखाई पड़ता है (k, a, i वर्णों के साथ) जिनकी हम पूर्व समय के [kajsar], बाद के [ˈkɛːsar] रूपों में व्याख्या कर सकते हैं तथा यह उसी वर्तनी के साथ गॉथी में भी दिखाई पड़ता है जहाँ एक ध्वनिसूचक ai का प्रतिमान अनिश्चित है तथा यह रूप तदनुसार [kajsar] अथवा [ˈkɛːsar] हो सकता है। ये रूप हमें आश्वस्त करते हैं कि इनके आगमन के समय लैटिन में अभी आदि [k] बोला जाता था तथा तब तक इतालवी cesare [ˈtʃezare] (§ 1.5) की तरह के आधुनिक रूपों की दिशा में नहीं बढ़ा था। पश्चिमी जर्मनी में विदेशी शब्द, उच्च जर्मन keisur, प्राचीन सैक्सन kēsur, प्राचीन अंग्रेजी casere की तरह दिखाई पड़ता है। यह अन्तवाला रूप, अनुमानतः [ˈkaːseːre] से मिलते-जुलते रूप को सूचित करता है। इन रूपों से लैटिन [k] उच्चारण की पुष्टि होती है साथ ही उनसे प्रथम अक्षर में लैटिन [aj] की तरह के एक लैटिन संध्यक्षर की गारन्टी रहती है क्योंकि दक्षिणी जर्मनी ei, उत्तरी जर्मनी [eː] तथा अंग्रेजी [aː] की अनुरूपता, आदिम सन्ध्यक्षर का सामान्य प्रतिभास है यथा *[ˈstajnaz 'पत्थर' > प्राचीन उच्च जर्मन stein > प्राचीन सैक्सन [steːn], प्राचीन अंग्रेजी [staːn] में। इस प्रकार रोम का जर्मन लोगों से प्रारम्भिक सम्पर्क-काल में, लैटिन caesar के

प्रथम अक्षर के रूप में [kaj-] के संबंध में हम आश्वस्त हैं। दूसरी ओर, पश्चिमी जर्मनी रूपों से हमें पता चलता है कि संध्यक्षर [aj] में हुए विभिन्न परिवर्तन प्राचीन सैक्सन में [e:] प्राचीन अंग्रेजी में [a:] रोमनस् के प्रथम सम्पर्क के बाद ही उपस्थित हुए द्वितीय अक्षर का स्वर तथा प्राचीन अंग्रेजी में तीसरे अक्षर का संयोग निश्चित रूप से किसी प्रकार के अनुकूलन के कारण ही है। विशेष रूप से अंग्रेजी रूपों से लगता है कि रोमन शब्द इस तरह लिया गया था जैसे कि वह *[kaj'so:rius] > पूर्व अंग्रेजी *['Kajso:rjaz] हो। यह शब्द जर्मन भाषा से, निस्सन्देह, स्लाव द्वारा गॉथी से लिया गया था। यह रूप प्राचीन बल्गेरियाई में [tse:sar] रूप में मिलता है। अब पूर्व-स्लावी काल में, जैसाकि हमें अंग्रेजी शब्दों की अनुरूपता से पता चलता है संध्यक्षर [aj] का [e:] एक स्वरीकरण हो गया था तथा इस प्रकार के [k] के पूर्व आनेवाला [e:] परिवर्तित होकर [ts] हो गया था। इस प्रकार आदिम भारतयूरोपीय *[k^{w}oj'na:] "जुर्माना", अवेस्ता [kaena:], ग्रीक [poj'ne:] प्राचीन बल्गेरियाई में [tse:na] "मूल्य" रूप में दिखाई पड़ता है। तदनुसार स्लावी आदान वास्तविक विच्युति के स्थान पर, प्राचीन जर्मन रूपों की पुनर् रचना की पुष्टि करता है तथा इसके साथ ही साथ जर्मन के आदिम आदान के बाद [kaj] से [tse:] के पूर्व-स्लावी परिवर्तन कालनिर्धारण के समर्थ बनाता है जो इतिहास के अनुसार लगभग 250 से 450 ईस्वी सन के आसपास हुआ था। फिर भी स्लावी रूप के दूसरे और तीसरे अक्षर उसी अनुकूलन को स्पष्ट करते हैं जैसा कि प्राचीन अंग्रेजी, जर्मन प्रतिरूप *['kajso:rjaz] से। अन्त में यह कहा जा सकता है कि यह अनुकूलीकृत रूप गॉथी लोगों में भी बना हुआ था यद्यपि गॉथी बायबिल में, जिससे भाषण का पांडित्यपूर्ण रूप सामने आता है, शुद्ध रूप से लैटिन Kaisar था।

लैटिन Strāta (via) "चुनी हुई सड़क" प्राचीन सैक्सन में ['stra:ta] प्राचीन उच्च-जर्मन में ['stra:ssa] तथा प्राचीन अंग्रेजी में [strɛ:t] रूप में दिखाई पड़ता है। इससे अनुमान किया जाता है कि यह शब्द भी Caesar की ही भाँति अंग्रेजों के पूर्व ही लिया गया था। जर्मन [a:] अंग्रेजी [ɛ] की अनुरूपता से अंग्रेजी शब्दों में आदिम जर्मन [e:] प्रतिभासित होता है यथा ['de:diz] 'कार्य', गाथी [ga-'de:θs], प्राचीन सैक्सन [da:d], प्राचीन उच्च-जर्मन [ta:t], प्राचीन अंग्रेजी [dɛ:d]। तदनुसार यह निष्कर्ष निकलता है कि उस समय जबकि लैटिन strāta का आदान हुआ है, पश्चिम

जर्मनी वक्ताओं ने [e:] से [a:] में पहले से ही परिवर्तन कर लिया था क्योंकि वे इस स्वर-स्वनिम का प्रयोग लैटिन [a:] के पुनःस्थापन के लिए कर रहे थे। दूसरी ओर [a:] का अग्रस्वर प्राचीन अंग्रेजी [ɛ:] की ओर एंग्लोफ्रीजियन परिवर्तन, निश्चय ही street शब्द के आदान के बाद का होगा। इसकी पुष्टि प्राचीन फ्रीजी रूप यथा strete से भी होती है (यद्यपि यह निश्चित रूप से बहुत बाद का रूप है)। जर्मन शब्दों के मध्य [t] से प्रकट होता है कि आदान के समय तक के भी लैटिन में उस समय भी [ˈstra.ta] कहा जाता था और [ˈstrada] (इतालवी strada) नहीं। बाद के आदान के साथ का यह विरोध था। यथा प्राचीन उच्च जर्मन *[ˈsi:da] "सिल्क", [ˈkri:da] 'खड़िया', जिसके बाद के लैटिन उच्चारण के अनुसार [ˈsa:da, ˌkreda] [d] प्रारम्भिककाल का लैटिन[ˈse:ta.ˈkre:ta] (§ 21.4) है। अन्त में उच्च-जर्मन रूपों के [ss] से स्पष्ट होता है कि जर्मन मध्य [t] का दक्षिणी जर्मन विचलन स्पर्श-संघर्षी तथा ऊष्म प्रतिरूप (§ 19.8) लैटिन strāta के आदान के बाद उपस्थित हुआ। इसी प्रकार लैटिन [ˈte:gula] "खपरैल" प्राचीन अंग्रेजी में [ˈti:gol] रूप में दिखाई पड़ता है (जिससे आधुनिक अंग्रेजी tile निकला है)। किन्तु प्राचीन उच्च जर्मन में यह रूप [ˈtsiagal] (जिससे आधुनिक जर्मन Ziegel [ˈtsi:gel] निकला है) था। दक्षिणी जर्मन व्यंजन विचलन के पूर्व ही आदान हुआ और उपयोगी वस्तुओं तथा तकनीकों की पूरी श्रृंखला के साथ यही स्थिति है। इसके विपरीत, लैटिन शब्द जो साहित्यिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में अनुमानतः मिशनरी काल में लिए गए थे, सातवीं शती के बाद, जर्मन व्यंजन विचलन के कारण दक्षिणी-जर्मन में बहुत बाद में आए। लैटिन templum मंदिर; प्राचीन उच्च-जर्मन [ˌtempal] रूप में, लैटिन tincta रोशनाई, [ˈtinkta] रूप में तथा लैटिन tĕgula का आदान फिर बाद में भी प्राचीन उच्च जर्मन [ˈtegal] 'पात्र' (—आधुनिक-जर्मन Tiegle [ˈti:gel]। इस अन्तवाले शब्द का ऐसा ही पुनरादान प्राचीन अंग्रेजी [ˌtijele] में भी दिखाई पड़ता है; किन्तु यहाँ कोई विलक्षण ध्वनि-परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता जिससे आदान के प्राचीन (ऐतिहासिक) स्तरों का पृथक्करण किया जा सके।

[t] का स्पर्श-संघर्ष तथा ऊष्म-प्रतिरूपों में दक्षिणी जर्मन परिवर्तन, वास्तव में, आदत्त रूपों के द्वारा तिथि-अंकन का एक विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत करता है। एक आदिम जर्मन प्रतिरूप *[ˈmo: to:] गॉथी शब्द [ˈmo:ta] द्वारा सूचित होता है जिसके ग्रीक शब्दों का अनुवाद "टैक्स"

तथा "टॉल स्टेशन" (उदाहरणार्थ रोमन 13,7 तथा मैथ्यू 9,9-10) एक व्युत्पन्न रूप ['mo:ta:ri:s] "टैक्स कलेक्टर" भी है। पुरानी अंग्रेजी सजातीय [mo:t] एकबार "कर" के अर्थ में भी आता है (मैथ्यू 22,19); मध्य उच्च जर्मन ['muosse] "चक्की वाले की फीस" से [t] का ऊष्म में तथा समानरूप से [o:] का [uo] में नियमित विचलन दिखाई पड़ता है। अब जर्मन-क्षेत्र के दक्षिणी भाग में हमें प्राचीन उच्च-जर्मन ['mu:ta] "कर" (>आधुनिक Maut) तथा डैन्यूब नदी पर स्थित किसी कस्बे का स्थान-नाम ['mu:ta:run] (शब्दार्थ की दृष्टि से कर-आदाताओं का स्थान) (> आधुनिक Mautern) मिलता है। इन रूपों में केवल [t] के स्थानान्तरण का अभाव मात्र ही नहीं दिखाई देता बल्कि साथ ही जर्मन [o:] के स्थान पर असमानान्तर [u:] दिखाई पड़ता है। इसे विश्वास कर लेने का भी कारण है कि गॉथी [o:], [u:] के बहुत निकट था तथा बाद में सम्भवतः इससे मिल गया था। इतिहास से पता चलता है कि छठी शताब्दी के प्रथमार्ध में, इटली के गॉथी सम्राट महान थियोडोरिक, (Theodoric) ने अपने राज्य की सीमा डेन्यूब तक बढ़ा ली। हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि जर्मन-शब्द गॉथी से लिया गया है तथा तदनुसार आदान के समय, आदिम-जर्मन [t] बवेरियाई जर्मन में ऊष्म हो गया था। गॉथी शब्द का [t] आदिम-जर्मन [d] द्वारा पुनः प्रयुक्त हुआ था। यथा प्राचीन उच्च-जर्मन में [hlu:t] (>आधुनिक laut) आदिम-जर्मन *['hlu:—daz], प्राचीन अंग्रेजी [hlu:d] से तुलना की जा सकती है। गाथी ['mo:ta] अथवा *['mu:ta] के प्रसार की पुष्टि आदिम स्लावी *['myto, 'mytari] से होती है, उदाहरण के लिए प्राचीन बल्गेरियाई [myto] 'वेतन', भेंट, [mytari].

25.6 व्याकरण की दृष्टि से, आदत्तरूप, आदान करने वाली भाषा की व्यवस्था के अनुसार व्यवस्थित होता है। वाक्य-रचना (some rouge, this rouge) तथा अपरिहार्य रूपसाधन (garages) दोनों में ही तथा पूर्ण प्रचलित जीवित संरचना-समासन (rouge-pot) में तथा शब्द-संरचना में (to rouge, she is rouging her face) ऐसा होता है। ऐसा भी होता है—किन्तु बहुत कम कि अनेक विदेशी रूपों का समकालिक आदान इस अनुकूलन को होने देता हो। इस प्रकार रूसी से अंग्रेजी में केवल bolshevik ही नहीं बल्कि रूसी बहुवचन bolsheviki भी लिया गया है जिसका प्रयोग अंग्रेजी बहुवचन शब्दसिद्ध bolsheviks के साथ-साथ होता है। दूसरी ओर अंग्रेजी

भाषा की व्याकरणिक रचनाएँ जो आदान के समय केवल कुछ ही परम्परित रूपों में होती हैं कठिनाई से विदेशी शब्दों पर लागू होती हैं। पूर्ण अनुकूलन के बाद आदत्त शब्द में भी वे समरूपताएँ आती हैं जो आदाता-भाषा में आती हैं। इस प्रकार पूरी तरह अंग्रेजिया रूप [ˈʃowfə] chauffeur में पश्चरचना to chauffe [ʃowf] मिलता है यथा I had to chauffe my mother around all day.

जब अनेक रूप एक ही भाषा से लिए जाते हैं तो उनका अपना व्याकरणिक संबंध विदेशी रूपों द्वारा भी प्रकट हो सकता है। इस प्रकार, अंग्रेजी के लैटिन-फ्रेंच विद्वत्-स्वीकृत शब्दों की अपनी रूपीय व्यवस्था (§ 9.9) होती है। इस व्यवस्था की समरूपताओं से नई रचनाएँ हो सकती हैं। इस प्रकार mutinous, mutiny, mutineer अंग्रेजी में mutine से जो फ्रेंच से आदत्त हैं, लैटिन फ्रेंच रूप-प्रक्रिया के अनुसार साधित हुए हैं। इसी प्रकार due फ्रेंच से आदत्त है किन्तु duty, duteous, dutiable (तथा अंग्रेजी मातृभाषा परसर्ग dutiful) के सम्भवतः फ्रेंच उद्गम नहीं थे बल्कि अंग्रेजी में फ्रेंच से आदत्त पर-प्रत्ययों द्वारा बने थे। -ate में (§ 23.5) छद्म फ्रेंच क्रियाओं की पश्चरचना इसका उदाहरण है।

जब एक प्रत्यय (affix) बहुत सारे विदेशी शब्दों में आता है तो इसका विस्तार मातृभाषाई सम्पत्ति के साथ नई रचनाओं के लिए हो सकता है। इस प्रकार लटिन फ्रेंच परसर्ग -ible, -able, यथा agreeable, excusable, variable में, bearable, eatable, drinkable की तरह के रूपों में प्रसारित हुआ है, जहाँ पर आधारवर्ती क्रिया अंग्रेजी की है। आधारवर्ती अंग्रेजी रूपों के साथ फ्रेंच परप्रत्ययों के अन्य उदाहरण हैं breakage, hindrance, mur—derous, bakery. लैटिन में "विभिन्न प्रकार की वस्तु वाले मनुष्य के लिए" संज्ञारूप एक पर-प्रत्यय -āriu- द्वारा अन्य संज्ञा रूप से व्युत्पन्न होता है, यथा monētārius "सिक्के ढालनेवाला," "शर्राफ," monēta "टकसाल, सिक्का" से, gemmārius 'जौहरी" gemma "रत्न" (jewel) से, telōnārius "टैक्सवसूल करने वाला," telōnium 'चुंगी-घर' से। इनमें से बहुतों का प्राचीन जर्मन में आदान हो गया था। इस प्रकार प्राचीन अंग्रेजी में myntere, tolnere, तथा प्राचीन उच्च-जर्मन में gimmāri रूप मिलते हैं। अंग्रेजी के प्राचीन आलेखों में यह लैटिन पर-प्रत्यय जर्मन आधारवर्ती संज्ञाओं तक प्रसारित मिलता है। लैटिन lāna "ऊन" lānārius "ऊन कातने वाला" गॉथी के

wulla "ऊन" wullāreis ['wulla:ri:s] 'ऊन कातने वाला' से मेल खाता है, इसी प्रकार boka 'पुस्तक' bōkāreis 'लेखक' mota 'टैक्स', mōtāreis, "टैक्स वसूल करने वाला" अथवा प्राचीन अंग्रेजी में [wɛjn] "डिब्बा" ['wɛjnere] "वैगनवाला।" प्राचीन अंग्रेजी [re:af] "नष्ट करता है, लूट का माल" :['re: avere] "डाकू" की तरह की स्थितियों में जहाँ रूपप्रक्रिया की दृष्टि से संबंधित क्रियाएँ ['re:avian] "नष्ट करना," "लूटना" मिलती हैं ['re:avian:'re:avere] के आदर्श पर नई रचनाओं का कारण बनीं। यहाँ तक कि जहाँ उन स्थितियों में भी कोई आधारवर्ती संज्ञा नहीं थी, यथा ['rɛ:dan] "पढ़ना" ['rɛ:dere] "पाठक" अथवा ['wr:tan] "लिखना" ['wri:tere] "लेखक"। इस प्रकार अंग्रेजी पर-प्रत्यय -er "कर्तृवाचक" के लिए प्रयुक्त होने लगा जो सभी जर्मन भाषाओं में दिखाई पड़ता है। बिल्कुल इसी प्रकार, बहुत बाद में चलकर वही पर-प्रत्यय स्पेनी banco ['banko] "बैंक": banque o [ban'kero] की तरह के युग्म में तगलाग मातृभाषा के शब्दों के साथ जोड़े गए, यथा मातृभाषा के शब्दसिद्ध ['si:pa?] 'फुटबाल', :[si'pe:ro] फुटबाल का खिलाड़ी के अतिरिक्त,: [ma:ni'ni:pa?] की तरह के युग्म में था।

यदि बहुत सारा आदान किसी एक भाषा में हुआ है, तो विदेशी संरचना में, अनुकूलन की रीति पर मातृभाषा के शब्द भी आ सकते हैं। मानक भाषा को लेकर, कुछ जर्मन बोलियों में, मातृभाषा के शब्द मिलते हैं जो लैटिन, फ्रेंच स्वराघातन से अनुवर्तित हैं। प्राचीन उच्च-जर्मन ['forhana]'brook-trout,? ['holuntar] 'elder, lilac,' ['wexxolter] 'juniper' आधुनिक मानक जर्मन में Forelle [fo'rele, Holunder [ho'lunder], wacholder [va'xolder] से प्रदर्शित किया जाता है।

25.7 वे वक्ता जो विदेशी वस्तुएँ प्रकाश में लाते हैं, उन वस्तुओं को अपनी मातृभाषा की किसी मिलती-जुलती वस्तु के नाम से सूचित करते हैं। ईसाई धर्म को अपनाने में जर्मन लोगों ने कुछ मूर्तिपूजक धर्म की शब्दावली को भी बनाए रखा: god, heaven, hell नए धर्म में स्थानान्तरित हो गए थे। यह कहना अनावश्यक है कि वह एकस्तरीयता जिससे उनका एक रूप-चयन विभिन्न जर्मन-भाषाओं में हुआ है आदान का एक दूसरा उदाहरण है। मूर्ति-पूजक शब्द Easter अंग्रेजी और जर्मन में प्रयुक्त होता है। डच तथा स्कैन्डनेवी ने हिब्रू-ग्रीक-लैटिन शब्द pascha (डैनिश paaske आदि) को ग्रहण किया।

यदि कोई घनिष्ठतया समानार्थी मातृभाषा शब्द न हो तो भी मातृभाषा

की शब्दावली में विदेशी वस्तु का वर्णन किया जा सकता है। इस प्रकार ग्रीक—लैटिन तकनीकी शब्द baptize का आदान नहीं किया गया था बल्कि प्राचीनतर जर्मन में इसका छायानुवाद कर लिया गया था। गॉथी में daupjan कहा जाता था; (सम्भवतः गॉथी प्रभाव के कारण) जर्मन में taufen "नहाना, मज्जन रूप करना" प्राचीन अंग्रेजी में ['fulljan] था जो प्रत्यक्ष रूप से *['full-wi:hjan] "पूरी तरह पवित्र बना लेना" से लिया गया था। प्राचीन नार्स में ['ski:rja] "चमकाना अथवा शुद्ध करना" प्रयुक्त होता था। इसमें मातृभाषा रूप का आर्थिक-विस्तार सन्निहित है। अमरीकी इण्डियन भाषाएँ आदान के स्थान पर अधिकतर वर्णनात्मक रूप-पद्धति अपनाती हैं। इस प्रकार वे whiskey को "ऊष्म-जल" तथा railroad को "अग्नि-बोगी" रूप में बदल लेते हैं। मिनोमनी में अंग्रेजी read से [ri:tewɛw] "वह पढ़ता है," का प्रयोग मातृभाषाई वर्णन [wa:pahtam] अर्थ की दृष्टि से "वह इधर देखता है" की अपेक्षा कम होता है। electricity के लिये मिनोमनी में कहा जाता है his glance "उसकी दृष्टि" (अर्थ है बिजली की कड़क का) तथा टेलीफोन करने को [telɛfo:newɛw] "वह टेलीफोन करता है के स्थान पर 'लघु-तार-भाषण' में बदल दिया जाता है। एक समास 'rubber-wagon' आदत्त [atamo:pen] की अपेक्षा अधिक प्रचलित है। औज़ार तथा चौके के बर्तन मातृभाषा के वर्णनात्मक शब्दों द्वारा सूचित किए जाते हैं।

यदि विदेशी शब्द स्वयं में वर्णनात्मक हो, आदाता वर्णन को पुनः प्रस्तुत कर सकता है। यह विशेष रूप से अमूर्त क्षेत्र में होता है। अंग्रेजी के अधिकांश अमूर्त तकनीकी शब्द, लैटिन और ग्रीक के वर्णनात्मक शब्दों के अनुवादमात्र हैं। इस प्रकार ग्रीक [sun'ejde:sis] "सम्मिलित ज्ञान, चेतना,. अन्तरात्मा" [ej'denaj] "जानना" क्रिया का [sun] "साथ" अव्यययुक्त व्युत्पन्न रूप है। रोमन लोगों ने दर्शनशास्त्र के इस शब्द का अनुवाद conscientia द्वारा जो scientia "ज्ञान" तथा con—"साथ" का संयुक्त रूप है, किया। जर्मन-भाषाओं ने इसे पुनः प्रयुक्त किया। गॉथी में [ˈmiθwissi:] "अन्तरात्मा" के प्रथम भाग का अर्थ है "साथ" और द्वितीय भाग एक अमूर्त संज्ञा है, जो ग्रीक आदर्श पर 'to know' क्रिया से व्युत्पन्न हुआ है। प्राचीन अंग्रेजी में [je -'wit] तथा उच्च-जर्मन [gi -'wissida] में पूर्व प्रत्यय का पुराना अर्थ "साथ" था। उत्तरी जर्मन तथा स्कैंडनेवी रूपों में, यथा प्राचीन नार्स ['sam-vit] पूर्वप्रत्यय, प्राचीन [ga-] का नियमित स्थानपरिवर्ती है। अन्ततः स्लावी भाषाएँ इस शब्द का अनुवाद 'with' तथा 'knowledge' से करती हैं, यथा

रूसी ['so-vest] "अन्तरात्मा" में । यह प्रक्रिया जिसे आदत्त-अनुवाद [loan-translation] कहते हैं, आर्थीपरिवर्तनयुक्त होती है । मातृभाषा के शब्दों में अथवा उन संरचकों में जो मिलकर मातृभाषा में शब्दों को जन्म देते हैं, प्रत्यक्षतः अर्थ-विस्तार होता है । यूरोप की सभी भाषाओं की अधिक विद्वत्तापूर्ण तथा परिष्कृत शैली इस प्रकार के अर्थ-विस्तार से भरीपुरी है, मुख्य रूप से प्राचीन ग्रीक के आदर्श पर, लैटिन तथा अधिकतर फ्रेंच अथवा जर्मन मध्यवर्ती भाषा के रूप में । स्टाइक (stoic) दार्शनिक हर गहरे आवेग को रोग मानते थे तथा इसके साथ ['pathos] "क्लेश, रोग" का प्रयोग करते थे जो ['paskho:] क्रिया "मैं दुख सहता हूँ", का भाववाचक संज्ञा रूप था; (भूतकाल ['epathon] 'मैंने दुख सहा') । रोमन लोगों ने इसका अनुवाद passiō "पीड़ा" से किया जो patior "मैं पीड़ा सहता हूँ" का अमूर्त-रूप था, तथा इसी अर्थ में ही अंग्रेजी में सामान्यत: आदत्त passion का प्रयोग किया जाता है । 17वीं शताब्दी के जर्मन लेखकों ने लैटिन प्रयोग का अनुकरण किया अथवा फ्रेंच passion का, जो Leidenschaft 'passion,' leiden 'कष्ट उठाना' का भावात्मक रूप था । तथा स्लावी भाषाओं ने उसी आदर्श का अनुकरण किया; यथा उदाहरण के लिए रूसी [strast] 'passion', [stra'dat]. प्राचीन ग्रीक [pro -'ballo:] "मैं (किसी के) सामने (कुछ) फेंकता हूँ", का मध्य-सुर रूप में [pro -'ballomaj] "मैं (किसी को) (किसी तरह के) दोष लगाता हूँ" स्थानान्तरिक प्रयोग था । इसी प्रकार के समास का लैटिन प्रयोग, एक आदत्त-अनुवाद हो सकता है। किसी ने केवल cani bus cibum objicere "कुत्तों के आ भोजन डालना" ही नहीं कहा, अपितु alicuī probra objicere "किसी व्यक्ति को उसके बुरे कार्यों के लिए कोसना" भी कहा। जर्मन में इसका अनुकरण हुआ था : er wirft den Hunden futter vor "वह कुत्तों के सामने भोजन डालता है" तथा er wirft mir meine missetaten vor "वह मुझे मेरे बुरे कामों के लिए कोसता है"। call, calling की तरह के शब्दों का "व्यवसाय" के अर्थ में प्रयोग इसी प्रकार के ईसाई धर्म के विचार से उद्भूत है । अंग्रेजी के शब्द, इस अर्थ में बाद के लैटिन प्रयोग vocātiō का, जो vacāre 'पुकारना' का भाववाचक संज्ञारूप है, अनुकरण करते हैं। इसी प्रकार जर्मन Beruf "प्रयोजन, व्यवसाय, पेशा" rufen "बुलाना" से व्युत्पन्न है और रूसी ['zvanije] 'प्रयोजन, व्यवसाय,' [zvat] "बुलाना" का अमूर्त रूप है । अंग्रेजी की व्याकरणिक शब्दावली में अधिकांश को इस प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ा है ।

बहुत ही विचित्र प्रसार के साथ, प्राचीन ग्रीक वैयाकरण लोग [ˈpto:sis] "पतन" शब्द का प्रयोग करते थे, पहले तो रूपसाधित रूपों के लिए और फिर विशेष रूप से 'कारक रूपों' के लिए। इसका अनुकरण लैटिन में भी किया गया जहाँ, cāsus, अर्थ की दृष्टि से "पतन" का प्रयोग उसी प्रकार हुआ था (जिससे कि आगत की 'स्थिति' है); यह जर्मन में fall "पतन", case "स्थिति" के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, तथा स्लावी में जहाँ [paˈdoʃ] "एक प्रपात" का रूसी [paˈdeʃ] "स्थिति" विदेशी पांडित्यपूर्ण (प्राचीन बल्गेरियाई) रूप है। अंग्रेजी में आदत्त अनुवादों का बहुत स्थानान्तरण हुआ है, यथा इन उदाहरणों में लैटिन फ्रेंच अर्धशिक्षित आदत्त रूपों द्वारा। इस प्रकार लैटिन commūnis का जटिल आर्थी क्षेत्र जो अब आदत्त common द्वारा आवृत्त हो चुका है, प्राचीन अंग्रेजी में मातृभाषा [je -ˈmɛ:ne] के विस्तार द्वारा समानान्तर रचना द्वारा अनुकरण किया गया था, जैसा कि यह भी जर्मन में gemein, तथा gemeinsam मातृभाषा रूप है। रूसी में, आदत्त अनुवाद अधिकतर प्राचीन बल्गेरियाई रूप में हैं क्योंकि इस भाषा ने धार्मिक लेखन के एक माध्यम का काम किया।

अपेक्षाकृत कम परिष्कृत क्षेत्र में, हमें फ्रांसीसीकरण दिखाई पड़ता है जैसे कि a marriage of convenience अथवा it goes without saying अथवा I' ve told him I don't know how many times फ्रेंच मुहावरा का शब्दशः अनुवाद है। superman शब्द, नीत्शे द्वारा अविष्कृत जर्मन शब्द का अनुवाद है। क्योंकि, परम्परित (conventionalized) के लिए फ्रेंच तथा जर्मन-फ्रेंच style संज्ञा के व्युत्पन्न रूप stylisé [stilize] का प्रयोग करते हैं। प्रायः यह शब्द stylized रूप में अंग्रेजी में सुनने को मिल जाता है।

ये स्थानान्तरण कभी-कभी इतने अकुशल ढँग से दिखाई पड़ते हैं कि इनके लिए कहा जा सकता है कि इनमें अनुकृत रूप को अन्यथा ग्रहण कर लिया जाता है। प्राचीन ग्रीक वैयाकरण क्रियात्मक लक्ष्य के कारण को (प्रत्यक्ष कर्म को) [ajtia:tiˈke:ˈpto:sis] "प्रभावित वस्तु से सम्बद्ध" द्वारा व्यक्त करते थे। यहाँ एक विशेष [ajta:tos] "प्रभावित" है जिसमें आधारवर्ती संज्ञा '[-ajˈtia:] "कारण" है। इस शब्द का चयन स्पष्टतः he built a house, की तरह की संरचनाओं के कारण किया गया था जहाँ भारोपीय वाक्य-रचना-प्रक्रिया में house क्रिया-लक्ष्य के स्थान पर होता है। [ajˈtia:] शब्द का भी स्थानान्तरित अर्थ "दोष, त्रुटि" था और साधित क्रिया

[ajti'aomaj] का अर्थ "मैं दोषारोपण करता हूँ" हो गया था। तदनुसार रोमन वैयाकरणों ने ग्रीक व्याकरणिक, शब्द accūsātīvus का accūsō "मैं दोषारोपण करता हूँ" से त्रुटिपूर्ण अनुवाद किया। यह शब्द accusative रूसी-भाषा में अनूदित हुआ जहां प्रत्यक्ष-कर्मकारक का नाम, [vi'nit] "दोषारोपण करना" से साधित [vi'nitelnoj] रूप है। मिनोमनी में जिसमें (अघोष) स्पर्श की केवल एक ही श्रेणी है, अंग्रेजी शब्द swede को sweet रूप में समझा गया तथा मिथ्या आदत्त अनुवाद के कारण [saje: wenet] अर्थात् "वह जो मधुर है" स्वेडी कबाड़ी को सूचित करता है। [l,r] प्रतिरूप तथा [z] में से किसी के भी नहीं होने के कारण उन्होंने phlox नगर (wisconsin) की व्याख्या frogs में की और [uma:hkah-kow-mεn-i:ka:n] "मेंढक-नगर" में अनुवाद किया।

25.8. सांस्कृतिक आदानों से प्रकट होता है कि एक राष्ट्र ने दूसरे राष्ट्र को सिखाया। अंग्रेजी में हाल ही में फ्रेंच से आए हुए शब्द अधिकतर स्त्रियों के वस्त्र, शृंगारसामग्री तथा विलास-वस्तुओं से संबन्धित हैं। जर्मन से अंग्रेजी में अपेक्षाकृत अधिक अपरिष्कृत भोजन वस्तुएँ ली गई हैं (frankfurter, wiener, hamburger, sauerkraut, pretzel lager-beer) तथा कुछ दर्शनसंबंधी और विज्ञानसंबंधी शब्द (zeitgeist, wanderlust, umlaut), इतालवी से संगीतसंबंधी शब्द (piano, sonata, scherzo, virtuoso), भारत से pundit, thug, curry, calico, अमरीकी इण्डियन भाषाओं से tomahawk, wampum, toboggan, moccasin। अन्य भाषाओं में अंग्रेजी से roast beef तथा beefsteak लिया गया है (यथा) फ्रेंच bifteck [-biftεk] रूसी [bif'ʃteks]; कुछ परिष्कृत जीवन के शब्द भी। यथा club, high life, five -o'clock, (tea), smoking (डिनर-जैकेट के वास्ते), fashionable तथा सर्वोपरि क्रीड़ा-शब्दावली यथा match, golf, football, baseball, rugby. इस प्रकार के सांस्कृतिक आदान, एक भाषा से दूसरी भाषा में, व्यापारिक वस्तुओं के साथ-साथ विस्तृत क्षेत्र तक फैल सकते हैं। sugar, pepper camphor, coffee, tea, tobacco की तरह के शब्द सारे संसार में फैल गए हैं। sugar का आदि-स्रोत सम्भवतः संस्कृत "शर्करः" "शक्कर, भूरी शक्कर है।" इन शब्दों के विभिन्न रूप यथा फ्रेंच sucre [sykr], इतालवी zucchero ['tsukkero] जिससे जर्मन zucker ['tsuker, ग्रीक ['sakkharon] (जिससे रूसी ['saxar] स्थानापत्ति तथा अनुकूलन के कारण हैं

जो कि आदाता और दाता भाषाओं में अत्यधिक विभिन्न परिस्थितियों में हुए हैं। उदाहरणार्थ स्पेनी azucar [θ'oukar] निश्चयबोधक अव्यय के साथ अरबी रूप से आदत्त रूप है यथा [as sokkar] "चीनी—" ठीक वैसे जैसे algebra, alcohol, alchemy में अरबी अव्यय [al] निहित है। यह बहुव्यापक सांस्कृतिक आदान का वही उपादान है जो आदिम भारत-यूरोपीय शब्दावली की संरचना के hemp (§ 18.14) जैसे शब्द की स्थिति में अवरोध उपस्थित करता है। axe, sack तथा silver की तरह के शब्द विभिन्न भारतयूरोपीय भाषाओं में आते हैं किन्तु ध्वन्यात्म विपर्ययों के साथ जो उन्हें प्राचीन आदत्त रूप से लक्षित करते हैं, अनुमानतः पूर्व से। saddle शब्द सभी जर्मन भाषाओं में एक ही प्रतिरूप में आता है, आदिम-जर्मन *['sadulaz] किन्तु, जैसा कि इसमें धातु sit आदिम भारतयूरोपीय अपरिवर्तित, [d] के साथ निहित है (यथा लैटिन sedeo "मैं बैठता हूँ")। हम आवश्यकरूप से मान लेते हैं कि saddle प्राक्जर्मन में बहुत बाद में लिया गया होगा क्योंकि [d>t] दूसरी भारतयूरोपीय भाषाओं से स्थानान्तरण—अनुमानतः दक्षिण-पूर्व के किसी अश्वारोही राष्ट्र से, हुआ होगा। Hundred के लिए स्लावी शब्द, प्राचीन बलगेरियाई [suto], ध्वन्यात्म दृष्टि से, जो यथा-समान स्रोत से सम्भवतः ईरानी से आदत्त, अभिलक्षित है, इसी भौगोलिक क्षेत्र का है। रोमन लोगों से जर्मन वक्ताओं का प्रारम्भिक सम्पर्क सांस्कृतिक आदत्त शब्दों के एक स्तर पर दिखाई पड़ता है जो अंग्रेजी के बहिर्गमन को प्राचीन बना देता है। लैटिन vīnum> प्राचीन अंग्रेजी wi:n>wine: लैटिन strāta (द्वारा)> प्राचीन अंग्रेजी [strɛ:t]>street: लैटिन caupo "शराब-व्यापारी प्राचीन अंग्रेजी में ['ke:apian] "खरीदना" (जर्मन kaufen) से प्रतिभासित होता है तथा आधुनिक काल में cheap, chapman; लैटिन mangō "गुलामों का व्यापारी,"> प्राचीन अंग्रेजी ['mangere] 'व्यापारी' (आज भी मछली व्यापारी), लैटिन monēta "टकसाल" (सिक्का)> प्राचीन अंग्रेजी mynet (सिक्का)। इस स्तर के अन्य शब्द pound, inch, mile हैं। प्राचीन अंग्रेजी [kirs] 'शेरी', [persok] आड़ू, ['pise] 'मटर'। दूसरी ओर रोमन सिपाही तथा व्यापारियों ने जर्मनी से कुछ कम नहीं सीखा। यह, केवल रोमन लेखकों द्वारा जर्मन शब्दों के सामयिक प्रयोग से ही नहीं अपितु रोमानी भाषाओं में कुछ अधिक निश्चयात्मकता से, बहुत प्राचीन जर्मन शब्दों की उपस्थिति से भी प्रमाणित होता है। इस प्रकार, एक प्राचीन जर्मन *['werra:]

"घबड़ाहट, अस्तव्यस्तता" (प्राचीन उच्च जर्मन ['werra]), जर्मन [w-] के स्थान पर [-gw-] की स्थानापत्ति यथा लैटिन *['gwerra] 'युद्ध' इतालवी में guerra ['gwɛrra] फ्रेंच guerre [gɛ:r] (फ्रेंच से अंग्रेजी war में वापस आदान के साथ) दिखाई पड़ता है। प्राचीन जर्मन *['wi:so:] "बुद्धिमान," "ढँग" (प्राचीन अंग्रेजी [wi:s]>लैटिन *['gwi:sa] तथा इतालवी और स्पेनी में guisa, फ्रेंच guise[gi:z]; अंग्रेजी guise, wise के साथ ही साथ फ्रेंच से आदत्त है। जर्मन *['wantuz] 'mitten' (डच want, स्वेडी vante) लैटिन *['gwantus], इतावली में guanto 'ग्लोव' "दस्ताना", फ्रेंच gant [gã], अंग्रेजी gauntlet, फ्रेंच से आदत्त है। अन्य जर्मनी शब्द, जो हमारे युग की पहली शताब्दियों में लैटिन में आ गये, वे हैं hose (>इतालवी wosa 'legging § 24,3), soap (लैटिन sāpō, *['θwahljo:] (>फ्रेंच touaille जिसके बदले में अंग्रेजी towel) roast (>फ्रेंच rotir जिससे आगे अंग्रेजी में roast) helmet (>फ्रेंच heaume) crib (>फ्रेंच crêche.) (flask (> इतालवी fiasca), harp (>फ्रेंच harpe)। आदत्त अनुवाद का एक उदाहरण है लैटिन compāniō 'साथी'—संश्लिष्ट यौगिक con- "साथ-साथ" तथा pānis 'रोटी' जर्मन *[ga-'hlajbo:] आदर्श पर गॉथी [ga'hlajba] "साथी" जोकि विशेष रूप से अर्थ-लक्षणयुक्त जर्मन रचना है जिसमें पूर्वप्रत्यय *[ga-] "साथ-साथ" तथा *['hlajbaz] रोटी (> अंग्रेजी loaf)।

अध्याय 26

घनिष्ठ आदान

26.1 भाषणरूपों का सांस्कृतिक आदान साधारणतः पारस्परिक होता है। यह एकपक्षीय उसी सीमा तक है जहाँ तक एक राष्ट्र के पास दूसरे राष्ट्र की अपेक्षा देने को बहुत है। इस प्रकार मिशनरी-काल में, सातवीं शती के बाद से प्राचीन अंग्रेजी ने क्रिश्चियन-धर्म संबंधी लैटिन शब्द लिए, यथा church, minister, angel, devil, apostle, bishop, priest, monk, nun, shrine, cowl, mass और आदत्त लैटिन अर्थप्रक्रिया का आदत्त-अनुवाद के रूप में अनुकरण किया, किन्तु प्राचीन अंग्रेजी ने इसके बदले में लैटिन को कुछ नहीं दिया। स्केन्डनेवी भाषाओं में व्यापार-सम्बन्धी तथा जहाज-सम्बन्धी शब्दों की एक शृंखला है जो निम्न-जर्मन से लिए गए हैं तथा जो उस काल के हैं जब हैनसेटिक नगरों का मध्ययुग में व्यापारिक प्रभुत्व था। इस प्रकार रूसी में बहुत जहाज-संबंधी शब्द हैं जो निम्न-जर्मन तथा डच से लिए गए हैं।

इस तरह की स्थितियों के होते हुए भी, साधारण साँस्कृतिक आदान तथा घनिष्ठ आदान के बीच सामान्यतः भेद किया जा सकता है। घनिष्ठ आदान उस स्थिति में होता है जब दो भाषाएं भौगोलिक तथा राजनीतिक दृष्टि से एक ही वर्ग के अन्तर्गत होती हैं। यह स्थिति अधिकतर विजय द्वारा उपस्थित होती है और कभी-कभी शान्तिपूर्ण निष्क्रमण द्वारा। घनिष्ठ आदान एकपक्षीय होता है। उच्चवर्गीय तथा प्रभुत्वशील भाषा, जो विजेता अथवा समाज में अन्यथा अधिक सम्मान प्राप्त वर्ग द्वारा व्यवहृत होती है, तथा निम्नवर्ग की भाषा (lower language) जो प्रजा द्वारा बोली जाती है, अथवा जैसे अमेरिका में नगण्य प्रवासियों द्वारा बोली जाती है, इनमें भेद किया जा सकता है। प्रमुखतः आदान उच्चवर्ग से निम्नवर्ग में होता है, तथा अधिकांश उन भाषण रूपों तक फैला होता है जो सांस्कृतिक विचित्रताओं से सम्बद्ध नहीं है।

अमेरिका में प्रवासियों की भाषा के अंग्रेजी से सम्पर्क में चरम कोटि का आदान मिलता है। उच्चवर्ग की भाषा अंग्रेजी प्रवासियों की भाषा से केवल कुछ बहुत ही प्रत्यक्ष सांस्कृतिक आदान लेती है, यथा इतालवी से spaghetti,

जर्मन से delicatessen, hamburger इत्यादि (अथवा आदत्त-अनुवाद के रूप में liver-sausage)। आरम्भ में, प्रवासियों की भाषा में बहुत अधिक साँस्कृतिक आदान होते हैं। अपनी मातृ-भाषा बोलते हुए उसे उन बहुत सारी वस्तुओं को जिन्हें अमेरिका पहुँचने के बाद उसने जाना है, उनके अंग्रेजी नामों से पुकारने का अवसर मिला है, यथा baseball, alderman, boss, ticket इत्यादि। कम से कम वह आदत्त-अनुवाद करता है यथा जर्मन erste papiere 'प्रथम कागज' (**राष्ट्रीयकरण के लिए**)। policeman, conductor, street-car, depot, road, fence, saloon के सम्बन्ध में सांस्कृतिक कारण उतना स्पष्ट नहीं है, किन्तु कम से कम यह कहा जा सकता है कि इन वस्तुओं की अमेरिका में किस्म यूरोपीय किस्म से थोड़ी-बहुत भिन्न है। फिर भी बहुत सारी स्थितियों में यह व्याख्या भी सटीक नहीं होगी। एक जर्मन यहाँ पहुँचने के तुरन्त बाद ही, अपनी जर्मन-भाषा में ढेर सारे अंग्रेजी रूपों का प्रयोग करने लगता है यथा coat, bottle, kick, change। उदाहरणार्थ, वह कहता है : ich hoffe, Sie werden's enjoyen [ixˈhofe, zi: ˈverden s enˈt-ʃojen] "मुझे आशा है तुम इसका उपयोग करोगे" अथवा ich habˈeinen kalt gecatched [ix ha:p ajnen ˈka geˈketʃt] 'मुझे ठण्ड लग गई है, वह आदत्त-अनुवाद करता है, यथा ich gleich'das nicht [ixˈglajx das ˈnixt] "मैं वह नहीं चाहता" जहाँ अंग्रेजी like के आदर्श पर एक क्रिया "शौकीन होना" gleich "सदृश" विशेषण से व्युत्पन्न होती है। इनमें से अन्तिम उदाहरण के समान कुछ उक्तियाँ अमेरिका में आकर बसे हुए जर्मन प्रवासियों की भाषा में परम्परा से स्थिर हो गई हैं। इन आदत्तों के ध्वन्यात्म, व्याकरणिक तथा कोषीय प्रावस्थाओं (phases) का जितना अध्ययन हुआ है, उससे अधिक अध्ययन की आवश्यकता है। जर्मन में अथवा स्केन्ड-नेवी में अंग्रेजी शब्दों का लिंग-निर्धारण पर्यवेक्षण के लिए एक उपयोगी विषय सिद्ध हुआ है।

इस प्रक्रिया की व्यावहारिक-पृष्ठभूमि प्रत्यक्ष है। उच्चभाषा प्रभुत्वशील और अधिक सम्मान प्राप्त अभिजातवर्ग द्वारा बोली जाती है। अनेक प्रकार के प्रभावों से बाध्य होकर निम्नवर्ग के लोग उच्चवर्ग की भाषा के प्रयोग में प्रवृत्त होते हैं। निम्नवर्ग की इन त्रुटियों पर उपहास तथा भारी असुविधाएँ मिलती हैं। अपने अपने साथियों से निम्नवर्ग की भाषा में बातें करते हुए, प्रमुख भाषण से आदत्त-प्रयोगों द्वारा उसे अलंकृत करने में वह गर्व का अनुभव करने लगता है।

घनिष्ठ सम्पर्क के अधिकांश उदाहरणों में निम्नवर्ग की भाषा स्वदेशीय तथा उच्चवर्ग की भाषा विजेताओं द्वारा लाई हुई होती है। अधिकतर विजेताओं की संख्या कम होती है। अमेरिकन उदाहरणों में शायद ही कभी आदान इतनी तेज गति से आगे बढ़ता है। इसकी गति अनेक उपादानों पर निर्भर करती है। यदि निम्नवर्ग की भाषाएँ बोलने वाले लोग अविजित क्षेत्र में सहभाषी लोगों के सम्पर्क में रहें, उनकी भाषा बहुत धीमी गति से परिवर्तित होगी। आक्रमणकारी जितने ही कम होते हैं, आदान गति उतनी ही धीमी होती है। दूसरा अवरोधक उपादान, सांस्कृतिक श्रेष्ठता है, वह चाहे वास्तविक हो अथवा प्रभुत्व-सम्पन्न लोगों की परम्परा से आरोपित हो, यहाँ तक कि प्रवासियों में भी शिक्षित परिवार अपनी भाषा को कई पीढ़ियों तक अंग्रेजी के बहुत थोड़े मिश्रण के साथ बनाए रख सकता है।

प्रत्यक्षरूप से, वे ही उपादान, किन्तु गरिमा की भिन्नता के साथ, अन्ततः एक या दूसरी भाषा के अप्रचलन (लोप) का कारण हो सकते हैं। आदान की अपेक्षा, यहाँ संख्या का महत्त्व बहुत अधिक होता है। अमेरिका के प्रवासियों के बीच, आदान की तरह लोप भी बहुत द्रुतगति से होता है। यदि प्रवासी भाषाई दृष्टि से अलग छूट जाता है, यदि उसका सांस्कृतिक स्तर निम्न होता है, तथा यदि कहीं वह अन्य भाषा-भाषी से विवाह कर लेता है तो उसका अपनी मातृभाषा का बोलना बिल्कुल बन्द हो सकता है, और यहाँ तक कि वह स्पष्टरूप से अपनी मातृभाषा के उपयोग की क्षमता खो भी सकता है। मात्र अंग्रेजी उसकी भाषा बन सकती है, यद्यपि वह त्रुटिपूर्ण ढंग से बोलता है और यही उसके बच्चों की मातृभाषा बन जाती है। पहले तो वे इसे विदेशी ढँग से बोलते रह सकते हैं किन्तु जैसे ही वे सम्पर्क से अलग होते हैं, भाषा में शीघ्र ही पूर्ण अथवा लगभग पूर्ण संशोधन हो जाता है। अन्य स्थितियों में, प्रवासी घर पर अपनी मातृभाषा बोलता रहता है, यही उसके बच्चों की मातृभाषा होती है, किन्तु स्कूल तक पहुँचते पहुँचते अथवा इसके भी पहले, वे इसका प्रयोग बन्द कर देते हैं तथा अंग्रेजी वयस्कों की भाषा बनकर रह जाती है। यहाँ तक कि यदि उनकी अंग्रेजी में कुछ विदेशी रंग होता भी है तो उन्हें अपने माँ बाप की भाषा पर बहुत थोड़ा अधिकार होता है अथवा बिल्कुल ही अधिकार नहीं होता। द्विभाषीपन निरंतर बना नहीं रहता। विजय की स्थिति में, लोप की प्रक्रिया बहुत समय तक निलम्बित रह सकती है। द्विभाषी वक्ताओं की एक या दूसरी पीढ़ी व्यवधान

उपस्थित कर सकती है और तब किसी एक समय ऐसी पीढ़ी आ सकती है, जो अपने वयस्क काल में निम्नतर भाषा का प्रयोग नहीं करती तथा उसके बच्चे केवल उच्चवर्ग की भाषा ही सीखते हैं।

निम्नतर वर्ग की भाषा का पुनरुत्थान हो सकता है तथा उच्चवर्ग की भाषा समाप्त हो सकती है। यदि विजेताओं की संख्या अधिक नहीं है, अथवा विशेषरूप से, यदि वे अपनी स्त्रियां साथ नहीं लाते, इस परिणाम की सम्भावना है। अपेक्षाकृत कम अतिवादी स्थितियों में विजेता पीढ़ियों तक अपनी भाषा बोलते रहते हैं किन्तु विजेता की भाषा का प्रयोग भी उनके लिए अधिक से अधिक आवश्यक बनता जाता है। एक बार वे मात्र द्विभाषी उच्चवर्ग बनाते हैं, अपेक्षाकृत कम उपयोगी उच्च-भाषा का लोप सरलता से हो सकता है। इंग्लैण्ड में नार्मन-फ्रेंच का यही अन्त हुआ।

26.2 तो भाषाओं का संघर्ष, कई भिन्न करवटें ले सकता है। उच्चतर भाषा पूरे क्षेत्र पर व्याप्त होकर निम्नतर को समाप्त कर सकती है। ईस्वीय सदी के आरम्भ में रोमन विजेताओं के द्वारा गॉल (Gaul) में लाई गई लैटिन कुछ ही शताब्दियों में गॉल की कैल्टिक भाषा पर हावी हो गई। पूरे क्षेत्र का समापन निम्न भाषा से भी हो सकता है। नार्मन-फ्रेंच, जो विजेता द्वारा 1066 में इंग्लैण्ड में लाई गई थी, अंग्रेजी द्वारा तीन सौ वर्षों में ही बहिष्कृत हो गई। प्रवेशीय वितरण हो सकता है। जब पांचवी शती में अंग्रेजी ब्रिटेन में लाई गई, इसने कैल्टिक मातृभाषा को प्रायद्वीप के सुदूर भागों में बहिष्कृत कर दिया। ऐसी स्थितियों में सीमा के साथ भौगोलिक संघर्ष अनुगमन करता है। इंग्लैण्ड में कार्नी-भाषा 1800 के आसपास समाप्त हो गई तथा वेल्श भी, बहुत हाल तक, लोप होने की दिशा में रही।

फिर भी, सभी स्थितियों में, निम्नतर भाषा ही उच्चतर भाषा से आदान करती है। तदनुसार यदि उच्चतर भाषा का पुनरुत्थान होता है, तो केवल सांस्कृतिक आदान को छोड़कर, जो वह अपने पड़ोसी से ले सकती थी। यह ऐसे ही बना रहता है। रोमानी भाषाओं में उस भाषा के केवल कुछ ही सांस्कृतिक शब्द होते हैं जोकि रोमन विजय के पूर्व उनके क्षेत्र में बोले जाते थे। ब्रिटेन की कैल्टी भाषाओं से अंग्रेजी में बहुत कम सांस्कृतिक शब्दों का आदान हुआ है तथा अमेरिकन अंग्रेजी में भी अमेरिकन इण्डियन भाषाओं से अथवा 19वीं शती के प्रवासियों की भाषा से बहुत कम सांस्कृतिक शब्दों का आदान हुआ है। विजय की स्थिति में,

सांस्कृतिक आदान जो उच्चतर भाषाओं में बने रहते हैं, मुख्यरूप से स्थान-नाम हैं। उदाहरण के लिए अमरीकी इण्डियन स्थान-नाम, यथा : Massachusetts, Wisconsin, Michigan, Illinois, Chicago, Milwaukee, Oshkosh, Sheboygan, Waukegan, Muskegon. यह एक उल्लेखनीय बात दिखाई पड़ती है कि जहां अंग्रेजी, उत्तरी अमरीका में डच, फ्रेंच अथवा स्पेनी पर एक उपनिवेशी रूप से हावी है, स्पेनी ने अन्य किसी भी निम्नतर भाषा के समान ही प्रभाव छोड़ा है। इस प्रकार, डच से cold slaw, cookie, cruller, spree, scow, boss की तरह के सांस्कृतिक आदान शब्द और विशेषरूप से स्थान-नामों से यथा Schuylkill, Catskill, Harlem, the Bowery, लुप्त भाषाओं का बहुमूल्य प्रमाण मिलता है। इस प्रकार एक विस्तृत कैल्टी स्थान-नामों की पट्टी यूरोप के पास बोहेमिया से इंग्लैण्ड तक फैली हुई है; Vienna, Paris, London—ये कैल्टी नाम हैं। स्लावी स्थान-नाम : Berlin, Leipzig, Dresden, Breslau पूर्वी-जर्मनी में व्याप्त हैं।

दूसरी ओर यदि निम्नतर भाषा बनी रहती है, तो इसमें प्रचुर आदान के रूप में संघष चिन्हों का पता चलता है। अंग्रेजी अपने नार्मन-फ्रेंच के आदान शब्दों तथा अर्ध-विद्वत् (लैटिन-फ्रेंच) शब्दावली के अनेक स्तरों के साथ, इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। 1066 में हैस्टिंग्स के युद्ध के साथ इसका आरम्भ हो जाता है। अंग्रेजी के लिखित आलेखों में फ्रेंच शब्दों का प्रथम दर्शन प्रमुख रूप से 1250 से 1400 के बीच दिखाई पड़ता है। सम्भवत: इसका यह अर्थ है कि हर स्थिति में वास्तविक आदान कुछ दशक पूर्व ही हो गया था। सन् 1300 के आसपास उच्चवर्गीय अंग्रेज, चाहे किसी भी कुल का रहा हो या तो द्विभाषी था, अथवा कम से कम फ्रेंच, पर एक विदेशी वक्ता का सा पूर्ण अधिकार रखता था। अधिकांश लोग केवल अंग्रेजी बोलते थे। 1362 में अंग्रेजी का प्रयोग कचहरियों के लिए आवश्यक कर दिया गया। उसी वर्ष पार्लियामेंट का अंग्रेजी में उद्घाटन हुआ। दो भाषाओं के बीच का संघर्ष 1100 से 1050 तक चलता रहा। प्रतीत होता है, इसने अंग्रेजी के ध्वन्यात्म अथवा व्याकरणिक संरचना को प्रभावित नहीं किया है, केवल कुछ ध्वन्यात्म अभि-लक्षण, यथा आदि [v-, z-, dz-] तथा फ्रेंच की पदरूपात्मक व्यवस्था के अनेक लक्षण, आदत्तरूपों में बने रहे हैं। फिर भी इसका कोषीय प्रभाव बहुत भयानक रहा। शासकीय शब्दों का अंग्रेजी ने आदान किया, यथा (state,

crown, reign, power, country, people, prince, duke, duchess, peer, court), कानून सम्बन्धी (judge, jury, just, sue, plea, cause, accuse, crime, marry, prove false, heir) युद्धसंबंधी (war, battle, arms, soldier, officer, navy, siege, danger, enemy, march, force, guard) धर्म और नीति संबंधी (religion, virgin, angel, saint, preach, pray, rule, save, tempt, blame, order, nature, virtue, vice, science, grace, cruel, pity, mercy) शिकार तथा खेल संबंधी शब्द (leash, falcon, quarry, scent, track, sport, cards, dice, ace, suit, trump, partner) सामान्य संस्कृति महत्व की वस्तुएँ (honor, glory, fire, noble, art beauty, color, figure, paint, arch, tower, column, palace, castle) तथा घर गृहस्थी से संबंधित शब्दावली जैसा कि नौकर अपने मालिक तथा मालकिनों से सीखते हैं (chair, table, furniture, serve, soup, fruit, jelly, boil, fry, roast, toast); इस अन्त वाली स्थिति में खुर वाले पशुओं के अंग्रेजी नामों (ox, calf, swine, sheep) तथा उनके मांस के लिए फ्रेंच से आगत शब्दों (beef, veal, pork, mutton) में विरोध दिखाई पड़ता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अंग्रेजी व्यक्तिवाचक संज्ञाएं अधिकांशत: फ्रेंच हैं, यथा John, James, Frances, Helen, यहां तक कि वे भी जिनका स्रोत मूलत: जर्मन है, यथा Richard, Roger, Henry।

26.3 एक विस्तृत आर्थी-क्षेत्र में सांस्कृतिक विचित्रताओं की अपेक्षा आदत्त शब्दों की उपस्थिति के आधार पर एक अवशिष्ट निम्नतर भाषा पहचान ली जाती है, तथा यह अभिज्ञान केवल ऐतिहासिक स्थितियों पर ही प्रकाश नहीं डालता, अपितु आदत्त शब्दों के स्वयं साक्ष्य के कारण प्राचीन भाषाई लक्षणों को भी प्रकाश में लाता है। जर्मन भाषणरूप के प्राचीनतर स्तर की बहुत सारी सूचनाएँ, उन भाषाओं के आदत्त शब्दों से मिलती हैं जो किसी समय वक्ता जाति के अधीन थीं।

फीनी, लैपी एस्थोनियाई भाषाओं में ऐसे सैकड़ों शब्द हैं जो जर्मन से निकले हैं, यथा फीनी kuningas "राजा" lammas 'भेड", rengas "अंगूठी", niekla "सुई", napakaira auger pelto "खेत" (§ 18.6)। ये आदत्त शब्द केवल इसी आर्थीक्षेत्र यथा राजनीतिक संस्थाओं, शस्त्रों, औजारों तथा पहनावों के ही भीतर नहीं आते अपितु पशु, पौधे, शरीर के अंग, खनिज पदार्थ, अमूर्त संबंधों तथा गुणवाचक विशेषणों में भी आते हैं क्योंकि ध्वनि-परिवर्तन जो

फीनी में हुआ, जर्मन भाषाओं में हुए ध्वनि-परिवर्तनों से भिन्न है, ये आदत्त शब्द तुलनात्मक पद्धति के परिणामों के पूरक होते हैं, विशेषरूप से जैसा कि इन आदानों में से प्राचीनतम ईसा शती के आरम्भ में हुआ रहा होगा, जर्मन-भाषण के लिखित आलेखों के शताब्दियों पूर्व ।

सभी स्लावी भाषाओं में जर्मन आदत्त-शब्दों की एक शृंखला मिलती है, जो पूर्व स्लावी भाषाओं में तदनुसार अवश्य ले ली गई होगी । एक प्राचीनतर स्तर भी है, जो फीनी में, जर्मन आदत्त शब्दों से मेल खाता है, यथा प्राचीन बल्गेरियाई [Kunedzi] 'राजकुमार' <*['Kuninga-], प्राचीन बल्गेरियाई, [xle:bu] ''दाना', रोटी, <*['hlajba-] गॉथी hlaifs 'रोटी', अंग्रेजी loaf) प्राचीन बोहेमियाई [neboze: z] auger, बर्मा <*['nabagajza-] । बाद के स्तरों में जिनमें ग्रीस-रोम से उत्पन्न शब्दावली निहित है, विशेषरूप से गॉथी लक्षण प्रकट होते हैं । इसी स्तर पर प्राचीन बल्गेरियाई के [Kotɪlu] ''केतली'' < *['Katila-] की तरह के शब्द, प्राचीन बल्गेरियाई [myto] 'टैक्स' < *['mo:ta], प्राचीन बल्गेरियाई [tse:sarɪ] ''बादशाह'' < *['kajso:rja-] (§ 15.5) प्राचीन बल्गेरियाई [userēdzɪ] ''कर्णफूल'' <*[bwsa-hringa]. हम इस अनुमान पर पहुँचते हैं कि प्रारम्भिक स्तर पूर्व गॉथी है तथा उसका काल ईसा सदी के आरंभ से है तथा बाद के स्तर गॉथी स्तर से आते हैं जो चौथी शताब्दी के लिखित दस्तावेजों से प्रदर्शित होते हैं ।

जिसे महा-निष्क्रमण (Great Migrations) के नाम से जाना जाता है, जर्मन जातियों ने रोम राज्य के विभिन्न भागों को जीत लिया । इसी समय लैटिन में पहले से ही जर्मन के अनेक प्राचीन सांस्कृतिक आदत्त शब्द उपस्थित थे । निष्क्रमणकाल के नए (§ 25.8) आदत्त शब्द, आंशिक रूप से या तो भौगोलिक वितरण से पहचाने जा सकते हैं अथवा रूपात्मक लक्षणों से, जो विजेताओं की बोलियों की ओर संकेत करते हैं । इस प्रकार इतालवी elmo ['elmo] 'गाँव'' के स्वर से प्राचीन [i] का आभास मिलता है तथा जर्मन *[helmaz] (प्राचीन अंग्रेजी helm) की तरह के शब्दों का [e] केवल गॉथी के [i] रूप में दिखाई पड़ता है । गॉथी लोगों ने छठी शती में इटली पर शासन किया । दूसरी ओर, जर्मन शब्दों का एक स्तर दक्षिण-जर्मन जैसे एक स्थायी व्यंजन स्थानान्तर के साथ, लम्बार्ड आक्रमण तथा शासन को प्रकट करता है । इस प्रकार इतालवी tattera ['tattera]

"कूड़ा" अनुमानतः गॉथी से लिया गया है किन्तु zazzera ['tsattsera] "लम्बे बाल" उसी जर्मन शब्द के लम्बार्ड रूप को प्रदर्शित करता है। इतालवी ricco "धनी" elso "तलवार की मुठिया", tuffare "कूदना" भी उसी प्रकार लम्बार्ड से आदत्त प्रदर्शित होते हैं।

रोमानी-भाषाओं में जर्मन-भाषा से सबसे अधिक आदान फ्रेंच में हुआ है। फ्रेंकी शासकों द्वारा फ्रेंच आदान जो फ्रांस देश के नाम के साथ आरम्भ होता है शब्दावली पर व्याप्त है। उदाहरण हैं, फ्रेंकिश *[helm]'helmet>प्राचीन फ्रेंच helme (आधुनिक heaume [o:m]; फ्रैंकिश *['falda-,sto:li] 'मोड़ने योग्य स्टूल'>प्राचीन फ्रेंच faldestoel (आधुनिक fauteuil [fotoe:j]); फ्रैंकिश *[bru:n] "भूरा">फ्रेंच brun; फ्रेंकिश *[bla:w]नीला>फ्रेंच bleu; फ्रेंकिश *['hatjan] "घृणा करना">फ्रेंच hair; फ्रेंकिश *[,wajdano:n] "प्राप्त करना" > प्राचीन फ्रेंच gaagnier (आधुनिक gagner; फ्रेंच से अंग्रेजी gain)। इस अन्तिम उदाहरण से इस तथ्य का स्पष्टीकरण होता है कि अंग्रेजी के अधिकांश फ्रेंच आगत शब्दों का अन्ततः जर्मन स्रोत है। इस प्रकार अंग्रेजी word मातृभाषा का रूप है तथा प्राचीन अंग्रेजी [,weardjan] को प्रदर्शित करता है, सजातीय फ्रेंकिश *['wardo:n] फ्रेंच में garder [garde] रूप में दिखाई पड़ता है जहां से अंग्रेजी ने guard का आदान किया है।

इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि रोमानी भाषाओं की अधिकांश व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का मूल स्रोत जर्मन है यथा फ्रेंच Louis, Charles, Henri, Robert, Roger, Richard अथवा स्पेनी Alfonso (अनुमानतः< गॉथी *[,haθu-funs] "कलह युद्ध के लिए उत्सुक") Adolfo (अनुमानतः गॉथी *['aθal-ulfs] 'जमीन पर का भेड़िया')। नाम देने का उच्चवर्गीय ढंग, उच्चवर्ग की भाषा के लुप्त हो जाने के बाद भी बना रहता है।

बार-बार का प्रभुत्व एक भाषा को आगत शब्दों से भर सकता है। एल्बेनी के लिए कहा जाता है कि उसमें केवल कुछ ही सैकड़ों मातृभाषा के शब्द हैं, शेष, लैटिन, रोमानी, ग्रीक, स्लावी तथा तुर्की के प्रमुख आदत्त शब्द हैं। यूरोप के जिप्सी एक भारतयूरोपीय भाषा बोलते हैं। ऐसा लगता है कि वे अपने विभिन्न निवास-स्थानों पर इतने अलग पड़ गए कि वे अपनी भाषा को अचल न रख सके। यह भाषा सदा निम्नतर भाषा तथा आदाता बनी रही। सारी जिप्सी बोलियों ने, विशेष रूप से, ग्रीक से आदान किया है। एफ० एन०

फिन्क जर्मन जिप्सी की परिभाषा केवल उस भाषा के रूप में करते हैं जिसमें किसी आर्य व्यक्ति के लिए शब्दावली की कमी की जर्मन शब्द से पूर्ति की जाए, यथा [ˈflikerwa:wa] "मैं चकती लगाता हूं" : जर्मन flicken "चकती लगाना" से, अथवा [ʃtu:lo] "कुर्सी" जर्मन stuhl से। फिर भी सिद्धि की व्यवस्था अखण्ड बनी रही है तथा ध्वनियाँ प्रत्यक्षरूप से जर्मन से भिन्न हैं।

उच्चतर भाषा का आदर्श निम्नतर भाषा के व्याकरणिक रूप पर भी प्रभाव डाल सकता है। आंग्लवाद के, यथा अमेरिका के जर्मन प्रवासियों में, अधिकृत लोगों के समानान्तर अनेक रूप मिलते हैं। इस प्रकार लैडिन के लिए कहा जाता है कि उसमें उसके पड़ोसी जर्मन की बहुत सी वाक्य-प्रक्रियाएँ मिलती हैं यद्यपि रूपिम लैटिन के हैं। अंग्रेजी में केवल लैटिन फ्रेंच पर-प्रत्यय ही नहीं है, यथा eatable, murderous (§ 25·6) में, वरन् ध्वन्यात्म ढांचे के कुछ विदेशी लक्षण भी हैं, यथा zoom, jounce में। स्वनिमों के अभेदक लक्षण आदत्त नहीं लगते। अमेरिका के जर्मन प्रवासियों (जिनकी अंग्रेजी में भी कुछ जर्मन रंग झलकता है) को देखने से पता लगता है कि वे अपनी जर्मन में अमेरिकी-अंग्रेजी [l] अथवा [r] का प्रयोग करते हैं। इसका कारण यह कहकर स्पष्ट किया जा सकता है कि उनके लिए जर्मन एक विदेशी भाषा है।

राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक स्थितियों में परिवर्तन के साथ निम्नतर भाषाओं के वक्ता आदान रोकने का प्रयत्न कर सकते हैं और यहां तक कि आदत्त शब्दों को बिल्कुल निकाल सकते हैं। इस प्रकार जर्मन लोगों ने एक बहुत दीर्घ सीमा तक सफल संघर्ष लैटिन-फ्रेंच के आदत्त शब्दों के साथ किया है। स्लावी-भाषी राष्ट्रों ने जर्मन के विरुद्ध भी ऐसा ही संघर्ष किया है। बोहेमी में यहाँ तक कि आदत्त शब्दों के अनुवाद को भी बहिष्कृत किया जाता है। इस प्रकार [zana:ʃka] "प्रवेश" (यथा एक खाते में) अन्दर ले जाना (to carry in) एक क्रिया का भाववाचक रूप, जर्मन का आदत्त-अनुवाद Eintragung "भीतर ले जाना, एक प्रवेश" के स्थान पर तर्क-संगत मातृ-भाषा रूप [za:-pis] "भीतर लिखना, अंकन" प्रयोग हो रहा है।

26.4 उच्चतर-भाषा यदि बनी रहती है और अखण्ड बनी रहती है तो प्रसामान्य संघर्ष रहता है, और निम्नतर भाषा यदि बनी रहती है तो उसमें बहुत सारे आदत्त शब्द, आदत्त अनुवाद और आदत्त वाक्यीय प्रवृत्तियां आ जाती हैं, किन्तु ऐसी स्थितियाँ भी हैं जहाँ इसके अतिरिक्त भी कुछ घटित

हुआ रहता है। सैद्धान्तिक दृष्टि से एक असम्बद्ध परिणाम की अनेक सम्भावनाएं मिलती हैं । उपस्तर सिद्धान्त (substratum theory) (§21.9) के रहस्यमय संस्करण के अतिरिक्त, ऐसा संभव लगता है कि एक बहुत बड़ी जनसंख्या अपूर्णरूप से उच्चतर भाषा अपना लेने के बाद, इसके संस्करण को चिरस्थायी बनाए रह सकती है और यहां तक कि उच्चवर्ग द्वारा प्रयुक्त मौलिक रूपों द्वारा अपनी भाषा को भर सकती है। दूसरी ओर, यह पता नहीं कि किस सीमा तक निम्नतर भाषा बदली जा सकती है और फिर भी बनी रह सकती है। अन्ततः यह विचारणीय है कि संघर्ष के बाद एक ऐसा मिश्रण बच रहे जिसमें इतना समान संतुलन हो कि इतिहासकार किसे मौलिक माने और किसे आदत्त मिश्रण । फिर यह भी पता नहीं कि इनमें से अथवा अन्य कल्पनीय उलझनों में से कौन-सी बात वास्तव में हुई है तथा प्रत्यक्षतः कोई भी व्यक्ति अव्यवस्थित मिश्रण (aberrant mixture) की स्थितियों की व्याख्या करने में सफल नहीं हुआ है ।

आठवीं शती के बाद बराबर, डैनी और नार्वे विकिंग्स (Vikings) आक्रमण करते रहे हैं तथा इंग्लैण्ड में बस गए हैं। सन् 1903 से 1942 तक इग्लैण्ड पर डैनी राजाओं का शासन था। फिर भी अंग्रेजी का स्कैन्डनेवी तत्व उच्चवर्ग द्वारा पीछे छोड़े गए प्रतिरूपों से मेल नहीं खाता । उनका प्रयोग शब्दावली के घनिष्ठ भाग तक सीमित है : egg, sky, oar, skin, gate, bull, bait, skirt, fellow,husband, sister, law, wrong, loose, low, meek, weak, give, take, take, call, cast, hit । क्रिया-विशेषण तथा संयोजक though स्कैण्डनेवी हैं और ऐसे ही सर्वनाम रूप they, their, them, मातृभाषा रूप [m̩] यथा I saw'em (< प्राचीन अंग्रेजी him, सम्प्रादान बहुवचन) them रूप को आदत्त बलाघाततहीन रूपान्तर समझा जाता है। स्कैन्डनेवी स्थान-नामों की उत्तरी इंग्लैण्ड में भरमार है। यह पता नहीं कि किन परिस्थितियों से यह विचित्र परिणाम हुआ । सम्पर्क के समय की भाषाएँ समझी जाने की स्थिति में थीं। सम्भवतः उनके वक्ताओं की संख्या तथा प्रभुता से संबंध भिन्न स्थानों में भिन्न था तथा समय के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटता रहता था ।

अपगामी आदान (aberrant borrowing) के अधिकांश उदाहरण ऐसे लगते हैं जैसे कि उच्चतर-भाषा निम्नतर-भाषा से प्रभावित हुई हो । चिली-स्पेनी का उदाहरण सबसे अधिक स्पष्ट है। चिली में, वहां के निवासियों

के शौर्य के कारण उन स्पेनी सिपाहियों का एक असाधारण समागम हुआ जो उस देश में बस गए थे तथा जिन्होंने वहां की औरतों से शादी कर ली थी। शेष लैटिन अमेरिका की तुलना में, चिली की इण्डियन भाषाएँ समाप्त हो गई हैं तथा केवल स्पेनी बोली जाती है तथा यह स्पेनी, ध्वन्यात्म दृष्टि से उस स्पेनी से भिन्न है जो स्पेनी अमेरिका के बचे हुए भाग में (उच्चवर्ग के प्रमुख लोगों द्वारा) बोली जाती है। ये विभिन्नताएँ अनेक भाषाओं की दिशा में, जिनके स्थान पर स्पेनी प्रयुक्त होने लगी थी, प्रयुक्त होती हैं। यह अनुमान किया जाता है कि प्रथम मिश्र-विवाह से उत्पन्न बच्चों ने अपनी माताओं के ध्वन्यात्म दोषों को अपना लिया।

रोमानी-भाषाओं के सामान्य प्रतिरूपों के लक्षणों की व्याख्या उन भाषाओं की प्रतिछाया रूप में हुई है जिन पर लैटिन हावी हो गया। यह दिखाना पड़ेगा कि वे लक्षण जिनके प्रति संदेह उठता है वास्तव में उस समय से जुड़े हुए हैं जब कि आरम्भ की भाषाओं के बोलने वालों ने, लैटिन का अपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद, इसे अपने बच्चों में इस रूप में प्रेषित किया। यदि यह स्वीकार कर लिया जाए, तो यह मानना पड़ेगा कि लैटिन मातृभाषा वाले अमरीका अधिकारी तथा उपनिवेशक वर्ग इतना बड़ा नहीं था कि वह सतत वर्तमान आदर्श प्रस्तुत करता जिससे कि इन त्रुटियों का निराकरण हो सकता। वास्तव में, रोमानी-भाषाओं का विचित्र लक्षण इतना बाद में दिखाई पड़ता है कि यह व्याख्या तब तक असंभव लगती है जब तक कि उपस्तर सिद्धान्त (§21.9) के रहस्यपूर्ण संस्करण की ओर प्रवृत्त न हुआ जाए।

आक्रमणकारियों की एक छोटी टुकड़ी द्वारा भारत में भारत-यूरोपीय भाषा लाई गई होगी तथा आधिपत्य की दीर्घ प्रगति के साथ शासक वर्ग द्वारा आरोपित हुई होगी। उन भाषाओं से कम से कम कुछ भाषाएँ जो दबा दी गई थीं भारत में बोली जाने वाली आजकल की अनार्य भाषाओं से अवश्य ही सम्बद्ध रही होंगी। इनमें से एक प्रधान द्राविड़-भाषा में स्पर्श ध्वनियों के दन्त्य [T.D.N.] त द न के साथ एक मूर्धन्य श्रेणी ट ड ण है। भारत-यरोपीय-भाषाओं से ल और र की एक प्राचीन अव्यवस्था भी झलकती है जिसकी व्याख्या इस प्रकार हुई है कि ये उन उपस्तरों के कारण है जो मात्र एक ध्वनि और इनमें से किसी भी ध्वनि में नहीं था। बाद के भारतीय-आर्य की संज्ञा-रूप विभक्ति से वह पुनर्रचना प्रकट होती है जिससे कि वही कारक विभक्ति भिन्न प्रातिपदिकों में एकवचन तथा बहुवचन के लिए जुड़ती

है, यथा द्राविड़-भाषा में। इसके कारण विभिन्न कारक विभक्तियों की भारतयूरोपीय प्रवृत्ति का, एकवचन तथा बहुवचन के बीच प्रमुख प्रभेदरूप में, जो एक-मात्र तथा उसी प्रातिपदिक में जुड़ती है, विस्थापन हो गया।

स्लावी-भाषाओं में, विशेष रूप से रूसी तथा पोली-भाषाओं में, पुरुष-निरपेक्ष तथा विभागकारी संरचनाएँ, फीनी प्रवृत्ति के बहुत ही समानान्तर हैं। बल्कान प्रायद्वीप भाषाओं में विभिन्न समरूपताएँ दिखाई पड़ती हैं यद्यपि वे भारतयूरोपीय की चार शाखाओं, ग्रीक, अल्बेनी, स्लावी (बल्गेरियाई तथा सर्बियाई) और लैटिन (रूमानीय) का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस प्रकार अल्बेनी, बल्गेरियाई तथा रूमानी, सभी में निश्चयबोधक अव्यय का संज्ञा के बाद प्रयोग होता है। बल्कान भाषाओं में सामान्यतः क्रियार्थक संज्ञा का अभाव है। संसार के अन्य भागों में भी ध्वन्यात्म तथा व्याकरणिक लक्षण भिन्न परिवार की भाषाओं में मिलते हैं। काकेशस के कुछ ध्वन्यात्म लक्षणों की यही स्थिति है जोकि कुछ अभारत-यूरोपीय, अमेरिकन तथा ईरानी आसेती में उभयनिष्ठ हैं। उत्तरी अमेरिका के उत्तरी-पश्चिमी किनारे पर ध्वन्यात्म तथा रूपीय विचित्राएँ उसी विस्तार में दिखाई देती हैं। इस प्रकार क्विलेट (Quilleute) क्वाक्यत्ल (Kwakiutl) तथा त्सिमशियन (Tsimshian) सभी में जातिवाचक संज्ञा के तथा नामों के लिए भिन्न अध्याय दिखाई पड़ते हैं तथा संकेतवाचक सर्वनाम के दृश्य तथा अदृश्य के बीच भेद किया जाता है। बादवाली विचित्रता पड़ोसी चिन्नक (chinook) तथा सेलिश (salish) बोलियों में भी दिखाई पड़ती है किन्तु भीतरी बोलियों में नहीं दिखाई पड़ती। यह सुझाव रखा गया है कि भिन्न जातियों ने एक दूसरे के लिये स्त्रियों पर प्रभुत्व जमा लिया जिन्होंने अपनी मातृभाषा का प्रचलन किया जिनके मातृ भाषाई मुहावरों के चिन्ह दूसरी पीढ़ी में दिखाई पड़ते हैं।

जहाँ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इसे देखा जाता है, ध्वन्यात्म तथा व्याकरणिक प्रवृत्तियाँ एक भाषा से दूसरी भाषा में बिना प्रभुत्व के गुजरती रहती हैं। आधुनिककाल में अलिजिह्वीय कम्पित [r] पश्चिमी यूरोप के विस्तृत क्षेत्र में, जिह्वाग्र [r] के स्थान पर फैल गया है। आजकल फ्रांस तथा डच जर्मन क्षेत्र में प्रथम पर आभिजात्य तथा द्वितीय पर ग्राम्य व प्राचीन परम्परा का प्रभाव पड़ गया है। मध्ययुग के अन्त में, अंग्रेजी, डच तथा जर्मन क्षेत्रों के विस्तृत भाग में समाज-स्वीकृत बोलियों को भी सम्मिलित कर लेने पर दीर्घ, उच्च-स्वर का सन्ध्यक्षरीकरण हो गया। लैटिन तथा जर्मन दोनों ही क्षेत्रों में मध्ययुग के प्रारम्भ में पदसंहितीय क्रियारूपों का प्रयोग, जिनमें भूतकालिक कृदन्त के साथ पूर्णता

अथवा कर्मणि प्रयोग सूचित करने के लिये have, be अथवा become आता है तथा आर्टिकल का प्रयोग प्रारम्भ होने लगा।

26.5 एक अपगामी आदान प्रतिरूप अभी बचा रह जाता है जिसमें कम से कम यह आश्वासन तो है ही कि उच्चतर भाषा का परिष्कार हो गया है यद्यपि इस प्रक्रिया का विवरण कम अस्पष्ट नहीं है।

अंग्रेजी (अब बड़े पैमाने पर अमरीकी) जिप्सियों ने अपनी भाषा खो दी है तथा उनमें ध्वन्यात्म और व्याकरणिक दृष्टि से उपमानक अंग्रेजी के एक प्रसामान्य प्रकार की बोली का प्रचलन है। किन्तु आपस में वे लोग पुरानी जिप्सी भाषा के एकाध दर्जन से लेकर कई सौ शब्दों का प्रयोग करते हैं। ये शब्द अंग्रेजी स्वनिमों के साथ अंग्रेजी रूपसिद्धि संबंधी और अंग्रेजी वाक्य-प्रक्रिया के अनुसार बोले जाते हैं। ये शब्द सामान्यतम वस्तुओं के लिए हैं तथा उनमें व्याकरणिक शब्द आते हैं, यथा सर्वनाम। उनका अंग्रेजी के पर्यायों के साथ अदला-बदला किया जा सकता है। प्राचीनतर उल्लेखों में इस प्रकार के अत्यधिक शब्द मिलते हैं। प्रत्यक्षरूप से एक लम्बा भाषण पूरी तरह से जिप्सी शब्दों में अंग्रेजी ध्वन्यात्म तथा व्याकरणिक रीति से प्रस्तुत किया जा सकता है। आधुनिक उदाहरण हैं [ˈmɛndi] "मैं", [ˈlɛdi] "तुम", [sɔː] "सभी" [kejk] "नहीं" [pʌn] "कहना" [ˈgrajə] "घोड़ा", [aj ˈdownt ˈkaːm tu ˈdik ə ˈmuʃə-ˈtʃumərənə ˈgruvn] 'I don't like to see a man a-kissin' a cow'। समय-समय पर जिप्सी रूपसाधन सुनाई पड़ता है, यथा [ˈrukjə][ruk] "पेड़" का बहुवचन। जिप्सी शब्दों की ध्वनि तथा व्याकरणिक व्यवस्था असंदिग्ध रूप से उन्हें अंग्रेजी मातृभाषा-भाषियों द्वारा विदेशी भाषा से आदान की हुई दिखाती है। अनुमानतः वे जिप्सी मातृभाषा-भाषी लोगों अथवा द्विभाषियों से होकर उनके बच्चों की अथवा अन्य लोगों की भाषा में जिनके लिए जिप्सी भाषा मातृभाषा नहीं रह गई थी, गुजरे। फिर भी यह ध्यान देने योग्य है कि दूसरी वाली भाषा-भाषियों को अंग्रेजी को जीर्णोन्मुख निम्नतर भाषा द्वारा अन्तर्विन्यस्त कर लेना चाहिए था। विलगाव की सामान्य परिस्थितियों में, इन आदानों का सम्भवतः हास्योत्पादक महत्व था। निश्चित रूप से उनमें बाहरी लोगों के लिए भाषण को सुबोध बना सकने का गुण होता है। अंग्रेजी न बोलनेवाले परिवार के अमरीकी, जो अपने परिवार की भाषा नहीं बोलते, कभी-कभी मजाक के तौर पर अंग्रेजी तथा रूपसाधना के साथ उस भाषा के शब्दों का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार

जर्मन-अमेरिका समय-समय पर [Swits] "पसीना आना" (जर्मन schwitzen] से, अथवा [klatf] 'बहस करना" (जर्मन klatschen से) का प्रयोग करेगा। यह चाल यहूदियों की सामान्यतम प्रवृत्ति रही है जो बिल्कुल अलग होकर रहते हैं तथा बहुत सीमा तक आदान उन्हीं शब्दों का हुआ है जो जर्मन में भी यहूदियों से लिए गए हैं, यथा साहित्यिक यहूदी-भाषा से उत्पन्न अर्ध-पाण्डित्यपूर्ण शब्द, यथा [ˈganef] "चोर" [gɔj] "सनकी" [meˈʃuga] "नास्तिक काफिर", [meˈzuma] "रुपया" अथवा जूडोजर्मन बोलीवाले रूप, यथा [ˈnebix] गरीब (—मध्य उच्चजर्मन [ˈneb ix] क्या मैं वैसा ही नहीं रख सकता हूँ')। इसकी भी सम्भावना लगती है कि अंग्रेजी में जिप्सी रूप उन स्थितियों में मात्र इस प्रवृत्ति का विस्तार द्योतित करते हैं जिनके कारण यह विशेष रूप से उपयोगी हो गया।

निम्नतरभाषा के वक्ताओं की प्रगति, प्रभुत्व-सम्पन्न भाषा सीखने में इतनी स्वल्प हो सकती है कि विशेषज्ञ को उनसे बात करते हुए "बचकानी-भाषा" (baby-talk) की शरण लेनी पड़े। यह "बचकानी-भाषा" एक विशेषज्ञ द्वारा अशुद्धवक्ताओं की भाषा का अनुकरण होता है। विश्वास करने का भी कारण है कि यह भाषण किसी भी तरह से उसी रूप में अनुकरण नहीं होता तथा इसके कुछ लक्षण वक्ता की त्रुटियों पर नहीं अपितु व्याकरणिक संबंधों पर आधारित होते हैं जो उच्चतरभाषा में होते हैं। भाषण के शुद्ध आदर्श से वंचित लोग उच्चतर भाषा का सरलीकृत बचकानी-भाषा संस्करण सीखने के अतिरिक्त और कुछ भी अधिक नहीं सीख पाते। परिणामस्वरूप एक परम्परित गंवारूभाषा बन जाती है। गत कुछ शताब्दियों के उपनिवेशन के परिणामस्वरूप, यूरोपी लोगों ने बारबार अपनी भाषा का गंवारू संस्करण गुलाम तथा प्रजाजनों में फैलाया है। पूर्तगाली अपभाषा अफ्रीका, भारत तथा सुदूर पूर्व में भिन्न स्थानों पर पाई जाती है। फ्रेंच अपभाषा मारिटास तथा अन्नाम में बनी हुई है। स्पेनी अपभाषा पहले फिलीपाइन्स में बोली जाती थी। अंग्रेजी अपभाषा दक्षिणी सागरों (Beach-la-Mar के नाम से परिचित) के पश्चिमी द्वीपसमूहों में, चीनी बन्दरगाहों में (पिडगिन अंग्रेजी) तथा सियरा लेओन (Sierra Leone) तथा लाइबेरिया में बोली जाती है। दुर्भाग्य-वश इन अपभाषाओं के समुचित आलेख नहीं हैं। Beach-la-Mar के उदाहरण :

What for you put diss belonga master in fire? Him cost. plenty money and that fellow kai-kai him. 'आपने मालिक की

तस्तरियाँ आग में क्यों रखीं ? इनकी कीमत बहुत रुपया है, इसने उनको नष्ट कर दिया ।

यह एक महाराज से कही गई उक्ति है जिसने चाँदी का बर्तन चूल्हे में रख दिया था ।

What for you wipe hands belonga you on clothes belonga esseppoon ? तौलिया से आपने हाथ क्यों पोंछे थे ?

kai-kai he finish ? 'क्या भोजन तैयार है ?'

You not like soup ? He plenty good kai-kai, क्या आप इसे पसन्द नहीं करते ? यह बहुत अच्छा है ।

What man you give him stick ? 'आपने किसको छड़ी दी थी ?'

Me savey go. 'मैं वहाँ जा सकता हूँ ।'

अशक्त आलेख के होते हुए भी सम्भवतः इस प्रकार के भाषण रूपों के उद्भव की पुनर्रचना की जा सकती है । इसका आधार एक विदेशी का अंग्रेजी के लिए विषम प्रयत्न है। इसके बाद अंग्रेजी वक्ता द्वारा इसका हेय अनुकरण होता है, जो वह इस आशा से करता है कि वह समझा जा सके। उदाहरण के लिए, इस स्थिति का प्रतिनिधित्व एकदेशीय भाषा द्वारा होता है जो अमरीकी वक्ता गरीबों की बस्ती में सेवा-भावना से अथवा विदेश-यात्रा करते समय अंग्रेजी के स्थान पर प्रयोग में लाता है जिससे कि विदेशी उसकी भाषा समझ सके। इन उदाहरणों में विशेषरूप से दिखाई पड़ता है कि अंग्रेजी भाषी उन विदेशी शब्दों का प्रयोग करता है जिन्हें उसने किसी तरह सीख लिया है। (kai-kai 'खाना' जो किसी पोलनेशी भाषा से है) और वह विदेशी भाषाओं में भेद नहीं करता (savey 'जानना' जो स्पेनी से है, सभी अंग्रेजी उपबोलियों में मिलता है) । परिवर्तन का तीसरा स्तर विदेशी द्वारा अंग्रेजी वक्ता के सरलीकृत अपूर्ण पुनरुच्चारण के कारण है तथा विदेशी के ध्वन्यात्म और व्याकरणिक प्रवृत्ति के अनुसार यह भिन्न-भिन्न होगा यहाँ तक कि हमारे उदाहरणों की अपूर्ण लिपि से भी dish में [ʃ] के स्थान पर [s] की स्थानापत्ति तथा belonga में अन्त्य [ŋ] के प्रयोग की असफलता तथा spoon के लिए esseppoon में आदि [sp] की।

विभिन्न राष्ट्रीयता वाले लोगों में एक अपभाषा सामान्य व्यापारिक प्रयोग में आ सकती है और तब इसे lingua franca कहते हैं। आधुनिक काल के प्रारंभ में इस शब्द का प्रयोग पूर्वी भूमध्य-सागरी-क्षेत्र में इतालवी अपभाषा में हुआ लगता है । उदाहरण के लिए पिडगिन अंग्रेजी का प्रयोग बहुत सामान्य

ढंग से चीनी-यूरोपी तथा अन्य अंग्रेजी वक्ताओं के बीच व्यापार में होता है। वाशिंगटन तथा ओरेगोन में, विभिन्न वर्ग के इण्डियन, फ्रेंच और अंग्रेजी वक्ता व्यापारी एक माध्यमभाषा 'चिनूक गंवारू'– भाषा (chinook Jargon) का प्रयोग करते थे जो आश्चर्यजनक रीति से अन्य इण्डियन भाषाओं तथा अंग्रेजी के साथ चिनूक भाषा के गंवारू रूप पर आधारित था।

इस तथ्य को जिसकी अधिकतर उपेक्षा की जाती है ध्यान में रखना आवश्यक है कि एक अप-बोली अथवा एक माध्यम भाषा किसी भी व्यक्ति की मातृभाषा नहीं होती अपितु एक भाषा के विदेशी संस्करण के वक्ताओं के बीच हुई तथा विदेशी भाषा संस्करण का मातृभाषा संस्करण इत्यादि है जिसमें प्रत्येक दल अपूर्ण ढंग से दूसरे दल के पुनर्भाषित रूप को पुनर्भाषित करता है। अनेक स्थितियों में अपबोली अथवा माध्यम भाषा का बिना किसी समुदाय की मातृभाषा बने ही लोप हो जाता है, यथा चिनूक (chinook Jargon) अपभाषा।

फिर भी कुछ स्थितियों में, एक वक्ता-समुदाय अपभाषा के पक्ष में अपनी मातृभाषा छोड़ बैठता है। यह विशेषरूप से तब होता है जब कि वक्ता-समुदाय विभिन्न भाषण-समुदाय के लोगों से बना होता है जो केवल एक अपभाषा के माध्यम से ही परस्पर विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। अमेरिका के अनेक भागों में हब्शी गुलामों के बीच अनुमानतः यही स्थिति थी। जब केवल अपभाषा ही प्रजावर्ग की भाषा बनी रह जाती है तो इसे क्रीओलाईज भाषा (creolized language) कहते हैं। यह भाषा, प्रजा वर्ग की भाषा, निम्नतर बोली का पद प्राप्त किए रहती है। इसमें स्थायी रूप से सुधार, समतलन तथा विकासवाद वाली दिशा में चलता रहता है। 'हब्शी बोली' के विभिन्न प्रतिरूप जो अमेरिका में दिखाई पड़ते हैं इस सुधार की अन्तिम स्थिति को सूचित करते हैं। सामाजिक दशा में सुधार के साथ ही यह सुधार बढ़ता जाता है। परिणाम-स्वरूप एक जातिबोली का निर्माण होता है जिसके वक्ता, जहाँ तक भाषाई उपादानों का संबंध है, अमानक वक्ताओं के मानक भाषा सीखने की अपेक्षा अधिक कठिनाई नहीं झेलते।

यह एक प्रश्न है कि क्या इस प्रक्रिया के बीच, वह बोली जो क्रीओ-लाईजहीन हो रही हो उस वर्ग के भाषण-रूप को प्रभावित नहीं कर सकती। दक्षिण अफ्रीका के डच जिन्हें अफ्रीकान (Afrikaans) नाम से जाना जाता है, कुछ ऐसे लक्षण प्रकट करते हैं जो क्रीओलाईज भाषा की याद दिला देते हैं,

यथा उदाहरण के लिए, अतिरूप विभक्तिक साधारणीकरण। क्योंकि यह भाषा पूरी जाति द्वारा बोली जाती है, यह मान लेना पड़ेगा कि डच प्रवासियों ने आदान-प्रदान के लिए डच-भाषा का एक गँवारू रूप विकसित किया तथा इस गँवारू बोली ने मातृभाषी नौकरों के माध्यम से (विशेष रूप से परिचारिकाओं द्वारा), मालिकों की भाषा को प्रभावित किया।

बहुत असामान्य स्थिति में जहाँ पर प्रजावर्गसमूह अपनी मातृ भाषा अथवा भाषाएँ खो चुकने के बाद केवल क्रीओलाईज-भाषा बोलता है, आदर्श-भाषा प्रभुत्व से परे हट जाता है। क्रीओलाईज-भाषा में समीकरण नहीं होता तथा उसका स्वतन्त्र विकास होता रहता है। इस तरह की कुछ स्थितियाँ देखी गई हैं। इस प्रकार भगेडू गुलामों की पीढ़ियाँ जो पश्चिमी अफ्रीका के तट पर सान-थोमे (San Thome) में बस गईं, क्रीओलाईज पुर्तगीज बोलती थीं। क्रीओलाइज डच बहुत काल तक वर्जिन में बोली जाती रही। अंग्रेजी के दो क्रीओलाईज रूप सूरीनेम (Suriname) (डचगिनी) में बोले जाते हैं। इन में से एक जो निंग्रे तोंगो (Ningre Tongo) अथवा तकी-तकी (taki-taki) नाम से जानी जाती है। दूसरी बुशनीग्रो लोगों द्वारा, जो उन गुलामों की संतान हैं जिन्होंने 18वीं शती में विद्रोह तथा युद्ध से स्वतन्त्रता प्राप्त की, सरामक्का (Saramakka) नदी के किनारे बोली जाती है। इसका नामकरण इस तथ्य से जुड़ा है कि गुलामों में से कुछ पुर्तगीज यहूदियों के अधिकार में थे। बुशनीग्रो अंग्रेजी का विचित्र लक्षण है पश्चिमी अफ्रीकी ध्वनियों तथा संरचनाओं के प्रति उसकी अतिग्रहण-शीलता तथा पश्चिमी शब्दावली को बनाए रखना। यदि गुलाम अभी तक अफ्रीकी भाषा बोलते रहे तो यह एक विचित्र बात है कि क्यों उन्होंने गंवारू अंग्रेजी के पक्ष में इसे छोड़ा होता।

निंग्रे-तोंगो के निम्न उदाहरण, एम॰ जे॰ हर्सकोविट (M.J. Herskovits) द्वारा सम्पादित पाठ्यपुस्तक से लिए गए हैं :

[ˈKom na ˈini:-sej. mi: sɛ ˈgi: ju wan ˈsani: fo:ju: de ˈnjam] अन्दर आओ। मैं तुझे कुछ खाने को दूँगा।

[a ˈtaki:, ˈgran ˈtaŋgi: fo: ˈju:] उसने कहा, 'बहुत धन्यवाद'।

[mi: ˈnjam mi: ˈbɛre ˈfuru] मैंने पेट भर खा लिया है।

निम्न नीग्रोबुश मुहावरों में से प्रथम प्रोफेसर हर्सकोविट द्वारा साभार

प्राप्त हुआ है, सुर संख्याओं द्वारा दिखाया गया है यथा उच्च,[1] सम,[2] निम्न[3] तथा संख्यागुच्छ द्वारा जैसे उच्च[13] फिर निम्न, समान[23] फिर निम्न आदि।

[fu[13] Kri[21] Ki[23] an[1] taŋ[13] hɔcŋ[2] wi[21]] full creek not stand uproot weeds; अर्थात् 'A full creek does not uproot any weeds'—तब कहा गया जब एक व्यक्ति ने उस कार्य की जिसे वह पूर्ण करने जा रहा था, बड़ाई की।

[ɛfi: ju, sei: ju: hɛdɛ, tɛ ju: baj hati:, pɛ ju: pɔti: ɛŋ] यदि आप सिर बेचें, तब एक हैट खरीदो, उसे कहाँ रखेंगे? अर्थात् 'यदि आप हैट खरीदने के लिए सिर बेचते हो तो इसे कहाँ रखोगे?

[pi:ki: matʃaw faa gã paw] छोटी कुल्हाड़ी ने बड़ी छड़ी गिराई अर्थात् एक छोटी कुल्हाड़ी एक बड़े पेड़ को काट सकती है।

अध्याय 27

बोली आदान

27.1 एक शिशु अपनी देख-रेख करने वालों की भाषण-प्रवृत्ति को ग्रहण करते हुए बोलना आरम्भ करता है। उसकी अधिकांश प्रवृत्तियाँ किसी एक व्यक्ति की सामान्यतः उसकी माँ से ली गई होती हैं। किन्तु वह किसी एक व्यवितविशेष के भाषणरूप को अक्षरशः नहीं दुहराता क्योंकि अन्य लोगों से भी वह कुछ रूप ग्रहण करता है। यह एक विवादास्पद विषय है कि सामान्य स्थिति में कोई स्थायी प्रवृत्ति अनुकरण की अशुद्धता से बन पाती हो। बाद में एक बच्चा भाषण-रूपों को अनेक लोगों से प्राप्त करता है। बच्चे तो विशेषरूप से समीपी परिवार की सीमा के बाहर प्रथम सम्पर्क में अनुकरण करने में तेज होते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है अनुकरण किए जाने वाले लोगों की श्रृंखला बढ़ती जाती है। एक वक्ता आजीवन अपने साथियों की भाषण-प्रवृत्ति को ग्रहण करता रहता है। किसी भी क्षण उसकी भाषा विभिन्न लोगों से प्राप्त की गई भाषण-प्रवृत्तियों का विचित्र मिश्रण है।

अधिकतर वक्ताओं का पूरा समूह एक भाषणरूप को ग्रहण करने, समर्थन करने अथवा असमर्थन करने में एकमत होता है। एक समवयस्क-वर्ग, एक व्यावसायिक-वर्ग अथवा एक पड़ोसी-वर्ग के भीतर भाषण रूप का परिवर्तन एक व्यक्ति से दूसरे व्यवित में होता चलेगा। एक समुदाय के भीतर भाषण प्रवृत्तियों का आदान, अधिकतर एकपक्षीय होता है। वक्ता नए रूपों तथा आग्रहों को कुछ लोगों की अपेक्षा अन्य कुछ लोगों से अधिक ग्रहण करता है। किसी एक समूह में, कुछ व्यक्तियों का दूसरों की अपेक्षा अधिक अनुकरण होता है। वे शक्ति-सम्पन्न तथा प्रतिष्ठित नेता होते हैं। अस्पष्टरूप से परिभाषित जैसा कि वे हैं, विभिन्न समूह उसी प्रकार एकपक्षीय ग्रहण अपनाता है। प्रत्येक आदमी एकाधिक अल्पसंख्यक भाषणसमूह से संबंधित होता है। एक समूह उन लोगों द्वारा प्रभावित होता है जो विभाजन की अन्य रेखा के साथ ही, एक प्रभुत्वसम्पन्न वर्ग से जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए उसके व्यावसायिक

साथियों में एक वक्ता उनका अनुकरण करता है जिन्हें वह 'समाज' में उच्चतम-स्थान-प्राप्त समझता है। अतिवादी उदाहरणों में जब एक वक्ता उन लोगों के सम्पर्क में आता है जिन्हें अधिक सम्मान मिला रहता है, वह उत्सुकतापूर्ण ढँग से उनके सामान्य आचरण का ही नहीं, अपितु उनके भाषण का भी अनुकरण करता है। यहाँ पर समतलन की दिशा बहुत ही स्पष्ट है। एक नगण्य व्यक्ति का अनुकरण नहीं किया जाता। एक मालिक अथवा नेता श्रोताओं का आदर्श होता है। उससे बातचीत के दौरान में, साधारण जन दोषारोपण अथवा उपहास के कारण को बचाता है। वह अपनी विचित्र लगने वाली प्रवृत्तियों को दबा देता है तथा स्वयं को अपने सुने अनुसार बातचीत के द्वारा कृपा-पात्र बनाता है। बड़े लोगों से बातचीत कर लेने पर वह स्वयं अपने समूह में उन लोगों के लिए एक आदश बन सकता है जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त नहीं है। प्रत्येक वक्ता विभिन्न समुदायों के बीच एक मध्यस्थ भी होता है।

अधिकतर संयोजन बहुत ही सूक्ष्म होते हैं। उनका संबंध पूर्णतया नए रूपों के ग्रहण की अपेक्षा उन भाषण-रूपों के समर्थन से अधिक रहता है। अधिकांश संयोजन का संबंध सम्भवतः ध्वनि के अविभेदक विकल्प से रहता है। दूसरी ओर, जब प्रतिस्पर्धी रूपों में समानता रहती है वास्तव में विकल्प के संबंध में विवाद उपस्थित हो सकता है। एक वक्ता सोचता है कि वह क्या कहे it's I अथवा it's me अथवा either, और neither को [ij] के साथ बोले अथवा [aj] के साथ। अंग्रेजी वक्तावर्ग में भाषणरूप शुद्धता की परम्परा के साथ, एक वक्ता 'किसके साथ वह एकमत है?' के स्थान पर "कौन-सा रूप शुद्ध है?" पूछता है। फिर भी, प्राधानतः, यह प्रक्रिया वादविवाद के स्तर तक नहीं पहुँचती।

हर एक वक्ता तथा बड़े पैमाने पर प्रत्येक स्थानीय या सामाजिक समुदाय, एक अनुकरण करने वाले तथा आदर्श का काम करता है, यथा समतलन की प्रक्रिया में एक साधक का काम। कोई भी व्यक्ति अथवा समुदाय सदा एक या दूसरे रूप से काम नहीं करता। अपितु ऊँची जातियाँ तथा प्रधान और प्रभुत्वशाली समुदाय अधिकतर आदर्श का काम करते हैं तथा निकृष्टतम वर्ग और अति दूर स्थानों पर रहने वाले व्यक्ति प्रायः अनुकरण करते हैं।

27.2 इस समतलन में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रक्रिया मध्यवर्ती भाषणरूपों का प्रकाश में आना है जोकि विस्तृत से विस्तृत क्षेत्रों में फैलता गया। उदाहरण

के लिए यदि मान लिया जाए कि स्थानीयता की दृष्टि से भिन्न-क्षेत्र में कोई एक नगर, जो निवासियों के कारण अथवा अनुकूल भौगोलिक क्षेत्र के कारण आवर्ती धार्मिक अनुष्ठानों राजनीतिक सम्मेलन अथवा बाजार का केन्द्र बन जाता है। गाँवों के निवासी लगभग अभी तक समय-समय पर इस केन्द्रीय नगर में आते-जाते रहते हैं। इन अवसरों पर वे अपने घरेलू भाषण के नितांत भिन्न रूपों के प्रयोग की अवहेलना करते हैं। उनके स्थान पर वे ऐसे रूप रखते हैं जिससे भ्रम अथवा उपहास की स्थिति नहीं आती। ये अनुकूल भाषण रूप ऐसे होंगे जो सभी अथवा अधिकांश स्थानीय समूहों में प्रचलित हैं। यदि किसी एक रूप का विशेष प्रचलन नहीं है तो ऐसे रूप का ग्रहण होगा जिसका केन्द्रीय नगर में प्रयोग होता है। जब ग्रामवासी अपने घर जाता है तो वह इन नए वार्तालाप के एक या दूसरे रूप का प्रयोग करता रहता है तथा उसके पड़ोसी भी उसका अनुकरण करते रहेंगे। ऐसा वे दो कारणों से करते हैं—प्रथम तो इसलिए कि वे इसके उद्गमस्थल से परिचित हैं और दूसरे इसलिए कि उस वक्ता की जिसने केन्द्रीय नगर को देखा घर पर महत्ता बढ़ जाती है। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलते-फैलते ये वार्तालाप बहुत दूर-स्थित व्यक्तियों तथा स्थानों तक पहुँच सकते हैं। केन्द्रीय नगर, एक ऐसा 'भाषण केन्द्र' हो जाता है जिसके भाषण-रूप, जब उनके विरोध में दबाव अधिक नहीं होता, आसपास के गाँव के पूरे क्षेत्र के लिए अपेक्षाकृत अधिक अच्छे रूप बन जाते हैं।

जैसे-जैसे व्यापार तथा सामाजिक संगठन में विकास होता है, इस प्रक्रिया की आवृत्ति बड़े से बड़े पैमाने पर होती रहती है। प्रत्येक केन्द्र का एक निश्चित क्षेत्र में अनुकरण होता है। एक राजनीतिक शक्ति का नया केन्द्रीकरण इनमें से कुछ केन्द्रों को उच्चतर पद तक पहुँचा देता है। अपेक्षाकृत कम केन्द्र इस प्रमुख केन्द्र का अनुकरण करने लगते हैं तथा इसके और अपने रूपों का, अपने-अपने क्षेत्रों में प्रसारण करते रहते हैं। यह विकास यूरोप में मध्य-युग में हुआ। मध्ययुग के अन्त में, इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा जर्मनी की तरह के राष्ट्रों में अपने एक प्रान्तीय भाषण-केन्द्र थे, यद्यपि इंग्लैंड तथा फ्रांस में, राजधानी को पूरे क्षेत्र के लिए उच्चतम भाषण-केन्द्र का स्थान मिला था। ये समतलन, जहाँ बड़े पैमाने पर हुए, बड़े समभाषरेखीय समूहन से प्रतिलक्षित होते हैं जो सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का संघर्ष सूचित करते हैं, जैसे वे समूहन जो उच्चजर्मन तथा निम्नजर्मन अथवा उत्तरी दक्षिणी फ्रेंच को भिन्न करते हैं। अपेक्षाकृत कमप्रान्तीय तथा पेरिश-सम्बन्धी समतलन (parochial

levelings) निम्नतर समभाषरेखा के रूप में दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार ऐसा देखा गया कि कुछ राज्यों की सीमाएँ निम्न राइन नदी के तट के साथ जो 1789 में फ्रेंच आक्रमण से अधिकार में कर लिए गए थे आज के अपेक्षाकृत कम समभाष रेखीय समूहन से प्रतिभासित होते हैं। यह सभी कुछ अधिक सरल होता यदि राजनैतिक सीमाओं तथा केन्द्रों के सापेक्ष प्रभाव का बार-बार स्थानान्तरण नहीं हुआ होता। फिर भी सबसे अधिक वैकल्पिक उपादान, भाषणरूपों के बीच का अपना अन्तर है क्योंकि कुछ रूप दूसरे रूपों की अपेक्षा अधिक जोरदार ढंग से फैलते हैं। ऐसा या तो आर्थी कारणों से होता है अथवा कभी-कभी रूपीय संरचना के कारण।

बड़े या छोटे किसी भी एक जिले में, भाषणरूप की समानता का संबंध उस काल से हो सकता है जबकि भाषण-समुदाय इस जिले में फैला। उदाहरण के लिए house शब्द अंग्रेजी भाषा के प्रवेश के साथ ही सैक्सन विजय के समय इंग्लैंड में फैल गया। उस समय इसमें [hu:s] रूप था तथा उत्तरी बोलियों में जिनमें अभी भी ऐसा ही बोला जाता है, आधुनिक रूप, प्राचीन रूप का चला आता हुआ रूप हो सकता है।

फिर भी बहुत सारे उदाहरणों में एकरूपता आवासकाल से ही नहीं आरम्भ होती। इस प्रकार यह पता लगता है कि house, mouse आदि में सन्ध्यक्षर [aw] प्राचीनतर [u:] से, इंग्लैण्ड के आवास के बहुत बाद में निकला। इन स्थितियों में पहले के अध्येताओं ने एकरूप भाषाई परिवर्तन को एक विस्तृत क्षेत्र में अपने से ही स्वीकार कर लिया। उदाहरण के लिए यह मान लिया जाए कि अंग्रेजी क्षेत्र के विस्तृत भाग ने [u:] से [aw] में ध्वन्यात्म परिवर्तन किया। वर्तमान समय में हम यह विश्वास करने लगे हैं कि वास्तविक परिवर्तन अपेक्षाकृत एक छोटे भाषण-समुदाय में हुआ तथा इसके पश्चात् नया रूप भाषाई आदान के कारण एक विस्तृत क्षेत्र में फैल गया। इस तथ्य के कारण हम इस मत पर पहुँच गए हैं—कि समानान्तर रूपों के लिए समभाष रेखाएं नहीं मिलतीं। नीदरलैण्ड (§ 19.4) में mouse और house में स्वरों की समभाष-रेखाओं की भिन्नता की तरह, यह भिन्नता भाषाई आदान के वर्गीकरण में उपयुक्त बैठती है किन्तु ध्वन्यात्म परिवर्तन के वर्गीकरण में नहीं। कुछ अध्येताओं को इसमें यह वर्गीकरण छोड़ने का एक कारण दिखाई पड़ता है तथा वे आग्रह करते हैं कि "ध्वन्यात्मपरिवर्तन" इस नियमित रूप से फैलता रहता है। फिर भी यह विवरण "ध्वन्यात्म-परिवर्तन" के मूल प्रयोग से, सजातीय भाषणरूपों के स्वनिमिक समानान्तरता से असम्बद्ध है (§ 20.4) तदनुसार, एक नए वर्गीकरण

का ढंग अथवा अन्य दो प्रकार की स्थितियां जो "ध्वन्यात्म परिवर्तन" शब्दावली के नए प्रयोग में अन्तर्निहित हैं तथा किसी ने भी इन दोनों में से किसी भी एक के लिए प्रयत्न नहीं किया है। वह पद्धति ही जिसके द्वारा एकरूप ध्वन्यात्मक परिवर्तन तथा प्रसार के बीच परिणमित आदान द्वारा प्रभेद किया जाता है, एकमात्र सूत्र है जो कि तथ्यों के अनुसार अब तक निर्धारित हुआ है।

यहां तक कि जब कोई एकरूप लक्षण द्वारा उस प्रतिरूप का प्रतिनिधित्व हो सके जो मूल प्रवास के समय लाया गया था, तो गहरी खोजबीन से यह पता चल जाता है कि लक्षण द्वारा एक प्राचीनतर प्रभेदमात्र ढक गया है। इसका भेद एकल अवशिष्ट द्वारा (§ 19.5) अथवा अतिवादी रूपों के विशिष्ट तत्व अनुलक्षण द्वारा होता है। इनमें से गैमिलसेग (Gamillscheg) एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। डोलोमाइट पर्वतों की लैडिन में, लैटिन (wi-) (u-) हो गया है। उदाहरण के लिए लैटिन [wi'ki:num] "पड़ोसी" [uzin] हो गया है। फिर भी इस जिले के एक कोने में राऊ घाटी में यह परिवर्तन प्रत्यक्ष रूप से संघटित नहीं हुआ। लैटिन [wi-] का [vi-] के द्वारा प्रतिनिधित्व होता है, यथा [vizin] "पड़ोसी" में। फिर भी यहां एक विकृत विपर्यय मिलता है। लैटिन प्रतिरूप [aw'kɛllum] "चिड़िया" जो इतालवी के [ut' tʃɛllo] रूप में तथा डोलोमाइटस लैडिन के [utʃel] में दिखाई पड़ता है तथा जिसके आदि में [wi-] नहीं आता था राऊ घाटी (Rau valley) ने [vitʃel] "चिड़िया" रूप में मिलता है। यदि राऊ घाटी (Rau valley) में सचमुच ही लैटिन [wi-] यथा [vi-] बना रह गया होता, '[vitʃel] "चिड़िया" रूप अव्याख्येय होता। केवल इतना मान लेने से कि राऊ बोली में अन्य डोलोमाइट बोलियों की तरह [wi-] बदलकर [u-] हो गया, बाद में अपेक्षाकृत अधिक अभिजात इतालवी [vi-] मातृभाषाई [u-] के स्थान पर प्रयुक्त होने लगा, इसे समझा जा सकता है। ऐसा करने में राऊ वक्ता बहुत दूर निकल गए थे, तथा [u-] को [vi-] से विस्थापित किया यहाँ तक कि *[utʃel] "चिड़िया" की तरह के शब्द में भी, जहां इतालवी में [vi-] न होकर [u-] है।

एक समभाषरेखा से मात्र इतना पता चलता है कि किसी समय, किसी स्थान पर ध्वन्यात्म-परिवर्तन-समरूपी आर्थी-परिवर्तन अथवा सांस्कृतिक आदान हुआ था, किन्तु समभाष रेखा से यह नहीं पता चलता कब और कहाँ परिवर्तन हुआ था। वह रूप जो परिवर्तन के कारण प्रतिफलित हुआ, चारों ओर

प्रसारित हुआ और सम्भवतः पश्चगामी हुआ। एक बोली आदान प्रक्रिया, जिसका प्रतिफल समभाषरेखा द्वारा सूचित होता है, हमें यह पता नहीं कि किस अनुक्रम से हुई है। एक रूप के आधुनिक क्षेत्र में उस बिन्दु को भी नहीं सम्मिलित किया जा सकता है जहाँ यह रूप उत्पन्न हुआ था। साधारण भाषाई परिवर्तन की सीमा के त्रुटिपूर्ण समभाष रेखाओं को समझना यह बहुत मामूली भूल है। बोली भूगोल से भाषाई आदान पर प्रकाश पड़ता है।

27.3 यदि किसी भाषाई रूप का भौगोलिक विस्तार (geographic domain) आदान के कारण है तो यह निश्चित करना एक समस्या बन जाती है कि मूल परिवर्तन किसने किया। साँस्कृतिक आदान अथवा एक समरूपी-आर्थी नवरचन, अकेले एक वक्ता के कारण भी हो सकता है। अधिकांश स्थितियों में निस्संदेह यह परिवर्तन स्वतंत्र रूप से एकाधिक लोगों द्वारा होता है। सम्भवतः यही स्थिति अप्रभेदक विचलन के साथ भी, जिसके कारण अन्ततः ध्वनि-परिवर्तन हुआ, ठीक बैठती है। किन्तु यह अधिक अस्पष्ट है, क्योंकि वास्तविक अवलोकनीय भाषाई परिवर्तन यहाँ सूक्ष्म रूपान्तरों की पराकाष्ठा परिणामस्वरूप हुआ है। एक वक्ता जो किसी स्रोत-रूपान्तर का समर्थन अथवा अतिशय वर्णन करता है, और साथ ही वह वक्ता भी जो इस तरह के रूपान्तरों को ग्रहण करता है, केवल एक अप्रभेदक लक्षण में परिवर्तन कर चुका होता है। कभी-कभी, इस तरह के समर्थनों के क्रम से परिणामस्वरूप स्वनिमातमक संरचना में परिवर्तन आ गया है, निस्सन्देह आदान-प्रक्रिया दीर्घकाल तक चलती रहती है। अंग्रेजी-भाषण समुदाय के कुछ भागों में hot, cod, bother की तरह के शब्दों में स्वरों के अपेक्षाकृत कम गोल रूपान्तर प्रयुक्त होते थे। यह प्रश्न निरर्थक होगा कि कौन व्यक्ति अथवा कौन से लोगों ने सर्वप्रथम इन रूपान्तरों का समर्थन किया। यहाँ इतना ही मान लेना पर्याप्त होगा कि वह व्यक्ति अथवा वे लोग किसी वक्ता समुदाय में सम्मान पाए हुए थे तथा बदले में इस समुदाय ने दूसरे समुदायों को प्रभावित किया तथा इसी प्रकार इसका विस्तार होता गया। नए रूपान्तर एक कालावधि तथा आवर्ती परिस्थितियों में अधिक महत्त्वपूर्ण थे, क्योंकि वे अधिक प्रभुत्व-सम्पन्न वक्ताओं तथा समुदायों से जुड़े हुए थे। यह समर्थन एक बहुत बड़े क्षेत्र में फैलता गया। निस्संदेह एक समय में तथा सर्वत्र नहीं फैला। hot, cod, bother के स्वर far, palm, तथा father के स्वरों से मेल खा गये। केवल इसी क्षण को दृष्टि में रखकर एक द्रष्टा यह कह सकता है कि ध्वनि परिवर्तन हुआ है। फिर भी इस समय तक वक्ताओं, समुदायों तथा स्थानों के बीच रूपान्तरों का विवरण आदान के परिणामस्वरूप

हुआ था। पूर्व से स्वनिमों के **एकीभवन** क्षण का निर्धारण नहीं हो सकता था। निस्संदेह रूप से एक ही वक्ता एक समय तो भेद करता है तो दूसरे समय एक ही तरह से बोलता था। समय पाकर जब ध्वनि-परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा तो इसका प्रभाव समतलन प्रक्रिया के द्वारा वितरित हुआ है जो प्रत्येक समुदाय में होता रहा है।

भाषाशास्त्री द्वारा तीन प्रतिरूपों में परिवर्तनों का वर्गीकरण, ध्वनि-परिवर्तन तथा आदान, यह तथ्यों का ऐसा वर्गीकरण है जो सूक्ष्म तथा जटिल प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है। ये प्रक्रियाएँ स्वयं में पर्यवेक्षण में नहीं आ पातीं। एक आश्वासनमात्र रह जाता है कि उनके परिणामों के साधारण विवरण उन उपादानों से अवश्य संबंधित होंगे जिनके कारण ये परिणाम निकले।

क्योंकि प्रत्येक वक्ता जिस समुदाय का होता है, एक मध्यस्थ का काम करता है बोली-क्षेत्र के भीतर भाषण वैभिन्न्य केवल मध्यस्थ वक्ता के अभाववश है। एक भाषण केन्द्र के प्रभाव से एक भाषणरूप किसी भी दिशा में फैलता जाएगा जब तक कि जन-संख्या के घनत्व के किसी क्षीण रेखा पर इसे ग्रहण करने वाले न मिलने लगें। भिन्न आर्थी-प्रतिमान के भिन्नरूपीय वैशिष्ट्य तथा हावी होने के लिये भिन्न प्रतिस्पर्धी रूपों के साथ भिन्न भाषणरूप विभिन्न गति से विभिन्न दूरियों में व्याप्त होंगे। पड़ोसी भाषण-केन्द्र से प्रतिस्पर्धा रूपों की बढ़ती के साथ अथवा सम्भवतः केवल इस तथ्य के कारण कि पड़ोसी भाषण-केन्द्र में अपरिवर्तित रूप प्रयुक्त होता है, नए रूपों की बढ़ती रुक सकती है।

प्रभेदीकरण का एक और संभव साधन भी ध्यान में रखना होगा वह है एक विदेशी-क्षेत्र का विलीनीकरण जिसके निवासी विशेष प्रकार से अपनी नई भाषा बोलते हैं। देखा जाचुका है (§26.4) कि यह पूर्णरूप से समस्या खड़ी कर देने वाली बात है क्योंकि कोई भी विशेष उदाहरण नहीं मिलता। तब, अधिकांश भागों के लिए, एक भाषण–क्षेत्र के भीतर प्रभेदीकरण अपूर्ण समतलन का परिणाममात्र है।

27.4 क्षेत्र-विस्तार तथा एकरूपता का घनत्व अनेक उपादानों के कारण होता है जिसे इस कथन द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है कि आर्थिक तथा राजनीतिक इकाइयाँ विस्तृत होती जाती हैं तथा साथ ही आवागमन के साधन भी विकसित होते हैं। केन्द्रीयकरण की इस प्रक्रिया के सम्बन्ध में विस्तार से अधिक पता नहीं, क्योंकि इस संबंध में प्राप्त प्रमाण लिखित

आलेखों पर ही आधारित हैं तथा विशेषरूप से इस सम्बन्ध में लिखित आलेख भ्रामक हैं। प्रारंभ में, यूरोप में वे आलेख लैटिन में हैं न कि देश की भाषा में। अंग्रेजी तथा डच जर्मन क्षेत्र के अ-लैटिन (वर्नाक्युलर) में आलेख अर्थात् 8वीं शती के बाद प्रान्तीय-भाषाएँ मिलती हैं। आन्तरिक साक्ष्य से पता चलता है कि ये भी किसी प्रकार के एकरूपीकरण से होकर उठी हैं, किन्तु यह पता नहीं कि इस प्रकार का कितना एकरूपीकरण वास्तविक भाषण में था। उत्तर मध्ययुग में महत्तर केन्द्रीकरण का आरम्भ दिखाई पड़ता है:— डच-जर्मन क्षेत्र में विशेषरूप से भाषा के एकरूप तीन प्रतिरूप; फ्लेमी (Flemish) (Middle-Dutch) (मध्य डच); हैनसेटिक क्षेत्र (Hanseatic area) से उत्तरी-जर्मन (मध्यनिम्न जर्मन) रूप-प्रतिरूप, तथा दक्षिणी राज्यों के अभिजात साहित्य के दक्षिण-जर्मनी (मध्यजर्मन उच्चजर्मन) प्रतिरूप। इन दस्तावेजों की भाषा एक विस्तृत भौगोलिक-क्षेत्र में बहुत ही एकरूप है। किसी-किसी स्थिति में देखा जा सकता है कि कैसे स्थानीय विचित्रताएँ बहिष्कृत हो जाती हैं। उत्तरी-जर्मन प्रतिरूप प्रधानतः लूबेक (Lübeck) नगर के भाषण पर आधारित है। दक्षिणी प्रतिरूप कुछ स्थानीयताओं को परे रखते हुए जो आजकल की बोलियों में दिखाई पड़ती हैं, प्रान्तीय बोलियों में इस प्रकार का औसत प्रकट करता है। प्राचीन जर्मनी में, व्यक्ति-वाचक सर्वनामों के, द्विवचन तथा बहुवचन में, भिन्न रूप थे। साधारणतः द्विवचन की स्थितियों में भी बहुवचन रूपों के विस्तार से दोनों का अन्तर समाप्त हो गया, किन्तु किन्हीं क्षेत्रों में बहुवचन रूपों के स्थान पर भी द्विवचन रूपों का विस्तार हो गया। अधिकांश जर्मन-क्षेत्र में, प्राचीन बहुवचन रूप, मध्य उच्च जर्मन ir "ye" से (सम्प्रदान iu; कर्मकारक iuch) बने रहे, किन्तु कुछ जिलों में विशेषतः बवेरिया तथा आस्ट्रिया में दूसरा विकल्प अपनाया गया। आधुनिक स्थानीय बोलियों में प्राचीन द्विवचन रूप ess "ऐ" (सम्प्रदान तथा कर्मकारक enk) प्रयुक्त होता है। अब बाद के क्षेत्रों से लिए गए मध्य-उच्च जर्मन प्रलेखों में शायद ही कभी इस प्रकार के प्रान्तीय रूप दिखाई पड़ते हों, अपितु सामान्यतः जर्मन ir "ऐ" लिखा जाता है। दूसरी ओर पाठ्य-पुस्तकों का यदि ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो पता लगता है कि दक्षिण जर्मनी के किस भाग में ये उद्भूत हुए थे क्योंकि बहुत से विवरणों का मानकरूप नहीं बन सका था। कवि के छन्दों से विशेषरूप से एक ओर कुछ परम्पराओं की पुष्टि होती है, किन्तु दूसरी ओर ही कवि की

ध्वनिरूपता भी सूचित होती है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि आधुनिक कला के आरम्भ में, 15 वीं शती में तथा 17वीं शती के आरम्भ में यह दक्षिण-जर्मनी परम्परा ध्वस्त हो गई थी तथा आधुनिक राष्ट्रीय मानक भाषा के आने तक पुनः प्रलेख प्रान्तीय हैं।

आधुनिक मानक भाषाएँ जो एक राष्ट्र के समूचे क्षेत्र में व्याप्त रहती हैं, प्रान्तीय प्रतिरूपों पर हावी हो जाती हैं। ये मानक भाषाएँ समय के साथ अधिक से अधिक एकरूप होती चलती हैं। अधिकांश उदाहरणों में वे उन प्रान्तीय प्रतिरूपों से ही निकली हैं जो उस केन्द्र नगर के उच्चवर्ग में प्रचलित था जो एकरूप राष्ट्र की राजधानी बन गया। आधुनिक मानक अंग्रेजी लन्दन प्रतिरूप पर आधारित है तथा आधुनिक फ्रेंच मानक पेरिस प्रतिरूप पर। अन्य उदाहरणों में उद्गम केन्द्र का भी पता नहीं है। आधुनिक मानक जर्मन किसी एक प्रान्तीय बोली पर आधारित नहीं है वरन् उस अधिकारी तथा व्यापारी वर्ग के भाषण-प्रतिरूप से निखर कर निकला है जो पूर्वी सीमा क्षेत्र में विकसित हुआ। यह पैदा नहीं किया गया था, वरन् लूथर बायबिल अनुवाद के प्रयोग से सत्तोन्मुखता के सहायक मात्र हुआ। यह उद्भव इस तथ्य से प्रतिभासित होता है कि मानक जर्मन के प्रलेखों में 18वीं शती तक एक-रूपता की कमी है तथा उनमें अंग्रेजी और फ्रेंच की बहुतसी प्रान्तीयता झलकती है। यह बात आज की बोली जानेवाली मानकभाषा के संबंध में भी कही जा सकती है।

आधुनिक राज्य की एक मानकभाषा होती है जो सरकारी कामकाज, चर्च, स्कूल तथा लिखितरूप में प्रयुक्त होती है। जैसे ही भाषण-समुदाय, राजनीतिक स्वातन्त्र्य प्राप्त कर लेता है अथवा इसके लिए प्रयत्न करने लगता है, अथवा अपने सांस्कृतिक वैचित्र्य के लिए प्रयत्न करने लगता है, एक मानक-भाषा की स्थापना की दिशा में वह काम करने लगता है। इस प्रकार तुर्की शासन से छुटकारा पानेवाले सर्बोक्रोटी (Serbo-Croatians) के पास कोई मानक-भाषा नहीं थी। एक विद्वान Vuk Stefanovich Karadjich (ऊक स्टेफानोविच काराडीख) (1787-1864) ने व्याकरण तथा कोष लिखकर अपनी स्थानीय बोली के आधार पर एक भाषा का निर्माण किया। जर्मन-वक्ता केन्द्रों से शासित बोहेमिया ने सुधार के काल में भी मानक जैसी भाषा विकसित कर ली थी। महानतम सुधारक जान हूस (Jan Hus) (1369-1415) ने विशेषरूप से अत्युक्त वर्तनी व्यवस्था चलाई थी। 17वीं तथा 18वीं शती में

यह आन्दोलन मर गया । किन्तु इस काल के अन्त में राष्ट्रीय पुनरुत्थान में साथ ही, एक नई मानकभाषा जो प्राचीन भाषा पर आधारित थी, भाषाविचारक जोसेफ डोब्रोवस्की (1753-1829) के प्रयत्नस्वरूप प्रकाश में आई । आजकल के जीवित लोगों की स्मृति में, लिथुएनी मानकभाषा जो आज राजकाज की भाषा है तथा राष्ट्र की सीमा में पूरी तरह प्रचलित है स्थानीय बोलियों के क्रोड़ से ऊपर उठी । उन समुदायों ने जिनको राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हुई, यथा स्लावेक, केटालन तथा फीजियनों ने मानक भाषाएँ विकसित की हैं । नार्वे की स्थिति तो विशेषरूप से रुचिकर है । कुछ शताब्दियों तक नार्वे राजनीतिक दृष्टि से डेनमार्क के आधिपत्य में था तथा राष्ट्रभाषा रूप से मानक डेनी का प्रयोग करता था । डेनी, नार्वेन भाषणरूपों से इतना मिलता-जुलता था कि स्कूली प्रशिक्षण प्राप्त लोगों के लिए यह संभव था । नार्वे वासियों ने मानक डैनिश को नार्वे भाषण रूपों के अनुकूल सुधार लिया । यह डैनो-नार्वेन (Dano-Norwegian) रिक्समाल (Riksmaal) (राष्ट्रभाषा), शिक्षित उच्चवर्ग की मातृभाषा बन गई । अशिक्षित बहुसंख्यकों के लिए जो स्थानीय बोलियां बोलते थे, यह लगभग विदेशी भाषा थी, यद्यपि 1813 में डेनमार्क से राजनीतिक विच्छेद के बाद भी, यह अधिक से अधिक मातृभाषा की बोलियों के सामान्य प्रतिरूप से समीकृत होती गई । 1840 के एक भाषा-अध्येता ईवर आसेन (Ivar Aasen) (1813-1896) ने नार्वे की स्थानीय बोलियों के आधार पर एक मानक भाषा की रचना की तथा डैनी-नार्वेजियन स्थान पर इसका प्रयोग प्रस्तावित किया । बहुत से परिवर्तनों तथा विकल्पों के साथ, यह नई मानक-भाषा जो लैण्डसमाल (मातृभाषा) (Landsmaal) के नाम से विख्यात है, विस्तृत रूप से गृहीत हुई है जिससे कि नार्वे के पास सहकारी तौर पर स्वीकृत दो मानक-भाषाएँ हैं । इन दोनों के समर्थकों से अधिकतः पूरी ईमानदारी से मतभेद भी मिलता है । ये दोनों भाषाएँ, किसी भी पक्ष की रियायत के साथ एक ही समान विकसित हो रही हैं ।

27.5 महान मानक भाषाओं के उत्थान का विवरण, यथा मानक अंग्रेजी के विवरण का, पता नहीं, क्योंकि लिखित साधनों से बहुत निकट का परिचय नहीं मिलता । आरम्भिक अवस्थाओं में स्थानीय बोली के रूप में, तथा बाद में प्रान्तीय प्रतिरूप की हैसियत से, उस भाषणरूप ने जो बाद में मानकभाषा बन गया बहुत विस्तृत रूप से आदान किया होगा । यहाँ तक कि उसके बाद भी, इसकी उच्चसत्ता निर्धारित होने के पूर्व, इसमें बाहरी रूपों का अन्तःप्रवेश

होता रहा है। प्राचीन अंग्रेजी [y] का लन्दन मातृभाषा विकास संभवतः [i] है, यथा fill, kiss, sin, hill, bridge में [o] जो bundle, thrush में दिखाई पड़ता है पश्चिमी-अंग्रेजी प्रतिरूप का प्रतिनिधित्व करता हुआ सा प्रतीत होता है। तथा knell, merry का [e] पूर्वी प्रतिरूप। bury ['beri] वर्तनी में पश्चिमी विकास निहित है, किन्तु वास्तविक उच्चारण में [e] है। busy ['bizi] में वर्तनी पश्चिमी है, किन्तु वास्तविक उच्चरित-रूप स्थानीय है। विदेशी [o] तथा [e] सरकारी लन्दन की भाषा में अवश्य ही बहुत पहले आ चुका होगा। प्राचीन [er] का [a:] में परिवर्तन यथा heart, parson, far, dark, varsity अथवा clerk के ब्रिटिश उच्चारण (earth, person, university अथवा clerk के अमरीकी उच्चारण की तुलना में) प्रान्तीय लगते हैं। [a:-] रूप लन्दन के उच्चवर्ग के भाषण में 14 वीं शती के बाद से प्रविष्ट होने लगे। चौसर (chaucer) ने अन्यपुरुष एकवचन, वर्तमानकाल के लिए -th अन्त्य का प्रयोग किया है (hath, giveth इत्यादि)। अंग्रेजी [-iz,-z,-s] अन्त्य 16वीं शती के अन्त तक प्रान्तीय (उत्तरी) था। विशेषरूप से ईस्ट मिडलैण्ड बोली ने, लन्दन की अंग्रेजी को प्रभुत्व-सम्पन्न होने के पूर्व आरम्भ की शताब्दियों में, प्रभावित किया। बाद में चलकर मानकभाषा अन्य बोलियों से केवल तकनीकी शब्दों का आदान करती है। यथा vat, vixen (§ 19.1) अथवा laird, cairn (स्काच से) अथवा मज़ाक के तौर पर, यथा hoss, cuss, horse और curse के हास्योत्पादक रूप हैं। यहां bass (मछली की एक जाति) *berse के लिए (प्राचीन अंग्रेजी bears) प्रारंभिक काल के गम्भीरतर आदान का प्रतिनिधित्व करता है।

मानक भाषा, प्राप्त कर लेने पर, आसपास की बोलियों को विस्तृत तथा व्यापक रूप में प्रभावित करती है। यह विशेषरूप से प्रान्तीय केन्द्रों को प्रभावित करती है तथा उनसे होकर अनुगामी बोलियों को। यह क्रिया अपेक्षाकृत मन्दगति से चलती है। यह देखा जा चुका है कि मानकभाषा का कोई लक्षण, दूरस्थ बोली तक अपने घर में निष्प्रभाव हो जाने के बहुत बाद में पहुँचता है। (§ 19.4) राजधानी के समीपी परिवेश में, मानक भाषा बहुत प्रबलता से काम करती है। पड़ोसी बोलियों में, मानक भाषा इतनी बस सकती है कि उनकी अपनी विशेषता ही समाप्त हो जाए। ऐसा कहा जाता है कि लन्दन से तीस मील के भीतर कोई भी ऐसा भाषण रूप नहीं है जिसे स्थानीय बोली कहा जाए।

मानक भाषा के वक्ता प्रान्तीय तथा स्थानीय बोली बोलने वाले

होते हैं। अत्यधिक साधारण लोग इसे ग्रहण करने में किसी तरह का आडम्बर नहीं करते किन्तु शिक्षा तथा समृद्धि के प्रसार के साथ वह बड़े से बड़े वर्ग में स्थान प्राप्त करने लगती है। आज पश्चिमी यूरोपीय देशों में अधिकांश लोग मानक भाषा की कम से कम साधारण जानकारी रखते हैं। वह व्यक्ति जो संसार में उत्थान प्राप्त करता है, वयस्क भाषा के रूप में इसे बोलता है तथा केवल अपने बच्चों में ही इसको प्रेषित करता है। जनसंख्या के उभरे हुए उच्चतर स्तर की यह मातृबोली हो जाती है।

अपेक्षाकृत कम प्रयुक्त बोलियों के उत्तरोत्तर समीकरण में, तथा व्यक्तियों और परिवारों के मानकभाषा के अपनाने में, दोनों ही स्थितियों में परिणाम सामान्यतः अधूरा रहता है तथा इसका वर्णन उपमानक अथवा अनुकूल स्थिति में प्रान्तीयतायुक्त मानक (§ 3.5) के रूप में किया जाता है। इन प्रतिरूपों का मूल्यांकन भिन्न देशों में भिन्न प्रकार से किया जाता है। इंग्लैण्ड में उनकी गणना हीनों में होती है तथा उनके वक्ता अपेक्षाकृत अधिक रूढ़ मानकीकरण की ओर प्रेरित किए जाते हैं। किन्तु अमेरिका अथवा जर्मनी में, जहाँ मानक-भाषा किसी एक स्थानीय वर्ग की सम्पत्ति नहीं होती, मानक अपेक्षाकृत कम रूढ़ होता है तथा अस्पष्टरूप से परिभाषित विभेदों की शृंखला समानरूप से सम्भावित होती है। वह अंग्रेजी जो अमेरिका में प्रथम प्रवासियों द्वारा लाई गई, प्रत्यक्षरूप से स्थानीय बोलियों की अपेक्षा मानक तथा उपमानक भाषाओं से बनी थी। उपमानक अमरीकी अंग्रेजी के विशिष्ट लक्षण, बोली तथा उपमानक ब्रिटिश अंग्रेजी के सम्मान्य लक्षण प्रतीत होते हैं। ऐसा नहीं लगता कि यह किन्हीं विशेष ब्रिटिश स्थानीय बोलियों के आयातित रूप हैं।

27.6 लिखित आलेखों के अध्ययन से भाषण के केन्द्रीकरण तथा मानक भाषण के उत्थान के सम्बन्ध में बहुत कम पता चलता है। ऐसा केवल इसी लिए नहीं है कि लेखन परम्परा बहुत सीमा तक वास्तविक भाषण रूप से स्वतंत्र विकसित होती है वरन् इसलिए भी कि उनका अपेक्षाकृत अधिक द्रुत गति से मानकीकरण हो जाता है और फिर वे भाषणरूप के मानकीकरण में वास्तविक रूप से प्रभाव छोड़ने लगते हैं। यह देखा जा चुका है कि भाषा के प्रारंभिक लिखित रूप भी एकरूप चिन्हों के प्रयोग की ओर प्रवृत्त होते हैं जो शीघ्र ही परम्परित बन जाते हैं (§ 17.7)। मध्ययुगीन हस्तलेखों की वर्तनी आधुनिक काल के अध्येताओं के लिए बहुरूपीय प्रतीत होती है। फिर भी यदि गहराई से विचार करें तो पता चलता है कि वे अधिकतर परम्-

परागत हैं। मध्य-युग के अन्त में, जैसे-जैसे लेखन का प्रयोग बढ़ता है, लिपि का प्रान्तीय प्रतिरूप अधिक से अधिक स्थिर होता चलता है। छपाई के आविष्कार तथा शिक्षा के प्रसार के साथ परम्परा अधिक एकरूप तथा रूढ हो जाती है। अन्ततः व्याकरण तथा शब्दकोष आते हैं जिनकी शिक्षा उन आदर्शों की एक पूरक होती है जो सभी लोग अपने समक्ष मुद्रित पुस्तकों के रूप में रखते हैं। स्कूल में पढ़ने की परम्परा अधिक प्रचलित होती है तथा परम्परागत पद्धति का आग्रह बढ़ता है।

इस विकास के कारण उच्चरित भाषा का वास्तविक केन्द्रीकरण ओझल हो जाता है। इतिहासवेत्ता को स्थायी रूप से दो विरोधी सम्भावनाओं से निपटना होता है। लिखित परम्परा मूलतः उन रूपों को प्रतिभासित करती है जो वास्तविक भाषण में, सम्मान प्राप्त कर लिए होते हैं। दूसरी ओर यह अपेक्षाकृत अधिक द्रुत गति से परम्परानुयायी बनाता है तथा प्रतिस्पर्धी भाषण रूपों के सम्मान पर प्रभाव डालती है। निर्णयात्मक घटनाएँ उच्चरित भाषा में घटित होती हैं, फिर भी लिखित शैली में यदि एक बार कोई रूप प्रवेश पा गया, तो वह रूप अपेक्षाकृत स्थायी रूप से बना रहता है और तब इसका पलड़ा भारी हो सकता है। उच्चरित भाषा में इस तरह यदा कदा भावी वर्तनी अथवा छंद के कारण इस तरह की स्थिति की एक झलक मिलती है। इस प्रकार कभी-कभी की वर्तनी अथवा छन्दों से, मानक अंग्रेजी के [aj] तथा [-ɔj] के उच्चारणों में oil, boil, join की तरह के शब्दों में प्रतिस्पर्द्धा दिखाई पड़ती है। अन्तिम दो शताब्दियों में बाद वाले प्रतिरूपों का निर्णयात्मक विजय निस्सन्देह रूप से इस वर्तनी अनुकूलता के कारण है। एक ही प्रकार की स्थिति में अभी तक की अनिश्चित अस्थिरता की तुलना की जा सकती है जहाँ वर्तनी का दबाव नहीं पड़ता, यथा [a] बनाम [ɛ] अमरीकी rather में; [a:] बनाम [ɛ] ब्रिटिश lather में।

वाक्य-रचना तथा शब्दावली में लिखित आलेख के तथ्य संदेश में कोई त्रुटि नहीं है तथा वह मानक भाषा पर यह बहुत अत्यधिक प्रभाव डालता है। प्राचीन अंग्रेजी में तथा आज भी उपमानक अंग्रेजी में, कुछ नकारात्मक रूपों में समापिका-क्रिया के साथ नकारात्मक क्रियाविशेषण लगते हैं। I don't want none; मानक-भाषा की प्रवृत्ति पहले लिखित रूप में लैटिन वाक्य-रचना के अनुकरणस्वरूप आई हुई लगती है। प्रत्येक को किसी शब्द के साथ ऐसा अनुभव हुआ होगा कि वह उसे बोलने वाला था जब कि उसे बीच में ही

आभास हो आया कि उसने केवल लिखित रूप में ही उस शब्द को देखा है और उसे यह नहीं पता कि किस प्रकार उसे शब्द को बोलना चाहिए। कुछ शब्द तो भाषण में नितान्त अप्रचलित हो गए हैं और फिर लिखित साधनों से पुनः ले लिए गए। इस प्रकार sooth, guise, prowess, paramour, behest, caitiff, meed, affray अठारहवीं शती के कवियों द्वारा पुनः प्रकाश में लाए गए।

लिखित रूपों के प्रभाव की धारणा उन स्थितियों में अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट है जहाँ इसके कारण भाषा में वास्तविक परिवर्तन होते हैं। कभी-कभी पुराने रूपों का पुनरुद्धारक अपने मूल पाठ को त्रुटिपूर्ण समझ लेता है तथा भूत-शब्दों (ghost-word) को जन्म देता है। इस प्रकार anigh "निकट" तथा idlesse "सुस्ती" (idleness) शब्द दृश्य-प्राचीन रचनाएँ हैं जो 19वीं शताब्दी के कवियों द्वारा बनीं। हैमलेट के विख्यात भाषण में bourne का अर्थ "सीमा" है। किन्तु आजकल, इस उद्धरण को गलत समझने के कारण bourne का प्रयोग realm के अर्थ में लोग करते हैं। चॉसर की पदसंहिति in derring do that length to a knight (in daring to do what is proper for a knight) "एक वीर के लिए उपयुक्त कार्य करने का साहस" स्पेन्सर द्वारा गलत समझी गई। उसने derring-do को एक समास अर्थ "वीर-कर्म" में लिया और परिष्कृत अंग्रेजी में इस भूत-रूप (ghost -form) को लाने में सफल हुआ। प्राचीन वर्ण की त्रुटिपूर्ण व्याख्या के कारण the (§ 17.7) के लिए भूतरूप ye हो गया।

फिर भी केवल प्राचीनानुयायी लेखन के कारण ही वास्तविक भाषण में परिवर्तन नहीं हुआ। यदि किसी प्रकार की प्रतिस्पर्द्धा भाषणरूपों में है तो उन रूपों के भारी पलड़ा होने की सम्भावना है जिनका लिखित परम्परा द्वारा प्रतिनिधित्व होता है। परिणामतः यदि लिखित रूप भाषण रूप से भिन्न होता है, तो लोगों के अनुमान की सम्भावना है कि एक वरेण्य विकल्प का अस्तित्व भी है जो लिखित रूप से मेल खाता है। विशेषरूप से, गत शताब्दियों में ऐसा शिक्षा के प्रसार तथा आँचलिक बोली तथा उपमानक भाषा वाले लोगों के मानक वक्ताओं के भीतर, तीव्र अन्तरागमन के कारण, लिखित रूप का प्रभाव बढ़ गया है––क्योंकि ये वक्ता स्वयं के प्रति अनाश्वस्त, विदेशी बोली होने के कारण, मार्ग-निर्देशन के लिए लिखित परम्परा की ओर मुड़ते हैं। स्कूली अध्यापक, जो सामान्यतः एक अतिसाधारण कोटि के लोगों में होता है

तथा वास्तविक उच्चतर वर्ग की शैली से अपरिचित होता है इसे जानने का आडम्बर दिखाने को बाध्य होता है तथा नए मानक भाषा वक्ताओं की उभरती पीढ़ी पर अधिकार जमाता है। अधिकांश वर्तनी-उच्चारण जो अंग्रेजी तथा फ्रेंच में प्रचलित है इसी स्रोत से आया है। जर्मन के तरह की मानक भाषा में जो मूलतः किसी एक वर्ग अथवा जिले की नहीं थी, यह उपादान बहुत गहरेतर बैठा हुआ है। उच्चारित मानक रूप अधिकतर लिखित रूप से व्युत्पन्न हुआ है।

मानक अंग्रेजी में प्राचीन [sju:] विकसित होकर [ʃuw] हो गया जैसा कि sure [ʃuə] तथा sugar [ˈʃugə] शब्दों से मिलता है। यह परिवर्तन सांयोगिक वर्तनी में लगभग 1600 से ही दिखाई पड़ने लगता है, यथा shuite (उपयुक्त होना), shewtid 'उपयुक्त'। 1301 में जॉन जोन्स की "प्रैक्टिकल फोनोग्राफी" से assume, assure, censure, consume, ensue, insure, sue, suet, sugar के उच्चारण में [ʃ] ध्वनि का निर्देश मिलता है। इनमें से कुछ शब्दों में आधुनिक [s] अथवा [sj] निस्सन्देह रूप से वर्तनी उच्चारण के परिणामस्वरूप है। यही स्थिति tune, due जैसे शब्दों में, जहाँ अभिजात [tʃ, dʒ] उच्चारण में आ गए हैं, [t.d] अथवा [tj, dj] की है। साक्ष्य के लिये virtue [ˈvə:tʃuw], soldier [ˈsowldʒə] रूप है। सम्भवतः ब्रिटिश मानक उच्चारण [ˈindʒə] India आज के सामान्य रूप [ˈindjə] की अपेक्षा पुराना है। जब से lamb, long शब्दों के प्राचीन अन्त्य रूप [mb, ŋg] के स्पर्श का लोप हुआ, यह सम्भव है कि hand जैसे शब्द में स्पर्श [nd] का बना रहना वर्तनी उच्चारण के कारण है। 15वीं, 16वीं तथा 17वीं शताब्दी में blyne "अन्धा", thousan, poun की तरह की सांयोगिक वर्तनी मिलती है। often, soften, fasten रूपों में प्राचीन [t] को मानक भाषा के निम्नवर्गी प्रयोक्ताओं द्वारा निरंतर पुनः प्रकाश में लाया जा रहा है।

अतिप्रबल साक्ष्य वहाँ दिखाई पड़ता है जहाँ शुद्धलेखीय पद्धति के कारण नए भाषण रूप जन्म लेते हैं। prof., lab ec आदि के तरह के लिखित संक्षिप्त रूपों के कारण, विद्यार्थियों की अपभाषा में professor, laboratory, economics [Prof, lɛb,ek] के लिए बोला जाने लगता है। आगे चलकर नवरचन में ये ही आदर्श का काम करने लगते हैं, यथा [Kwɔd] quadrangle के लिए, dormitory के लिए [dɔəm] [ej em, pij em] की तरह के रूप रेलवे समयसारिणी के A.M., P.M से आते हैं। इस तरह के अन्य उदाहरण

हैं, United States of America के लिए [juw es ej], इलिनोस सेन्ट्रल (रेलरोड) Illinois Central Railroad) के लिए [aj, sij] तथा [ej bij, ej em, em dij, pij ejtʃ dij] शिक्षा उपाधि के लिए जिसका पूर्णरूप Bachelor of Arts, Master of Arts, Doctor of Medicine, Doctor of Philosophy सचमुच ही अपेक्षाकृत कम प्रचलित है। फिर भी संक्षिप्त रूपों का शब्दक्रम मूल लैटिन शब्दों का है। फ्रेंच में [te ɛs ɛf] रूप télégraphe sans fil "बेतार का तार "रेडियो" के लिए प्रयुक्त होता है। रूस में अनेक नई जनतंत्रीय संस्थाएँ इस संक्षिप्त रूप लेखीय संज्ञा से ही जानी जाती हैं, यथा [Kommuni ˌstitʃeskoj so'jus moloˈdoʒi] "युवकों का साम्यवादी संघ"[Komsoˈmol]द्वारा अथवा [fseros'sijskoj tsen ˈtralnoj ispol'nitelnoj komiˈtet] "सर्व रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति" के लिए [ftsik]।

लिखित रूपों का प्रभाव मानक भाषा के माध्यम से कार्य करता है। किन्तु वे लक्षण जो इस प्रकार प्रकाश में लाए जाते हैं समय पाकर भाषण के अन्य स्तरों में भी आ जाते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार के प्रभावों का वर्णन केवल सतही अर्थ में रुढ अथवा नियमनकारी रूप में किया जा सकता है। लिखित रूपों के आदान, साधारण विकास के परिणामों से मेल नहीं खाते।

27.7 लिखित प्रलेखों से आदान का पूरा प्रभाव उन स्थितियों में देखा जा सकता है जहाँ लिखित संकेतन कुछ ऐसे भाषण रूप तक चला आया है जो वास्तविक भाषा से पूर्णतया मेल नहीं खाता।

रोमन लोगों में ईसापूर्व प्रथम शताब्दी की भाषा—सीजर (Caesar) और सिसरो (Cicero) के लेखों में पाई जानेवाली भाषा लैटिन—लिखित संकेतन तथा औपचारिक वार्तालाप की उपयुक्त शैली रूप में स्थिर हो गई। शताब्दियों बाद, वास्तविक भाषा इस परम्परा से पृथक् होने लगी। किन्तु जैसा कि पढ़े लिखे लोग अल्पसंख्या में थे, इस परम्परा का निर्वाह कठिन नहीं हुआ। जिसने भी लिखना सीखा, क्लासिकी लैटिन रूपों का प्रयोग करना भी शिक्षण अनुशासन की एक शाखा रूप में सीख लिया। ईसा बाद की पाँचवी शती तक, परम्परित रूप में लेखन के पूर्व एक साधारण वक्ता के लिए गहरे स्कूली शिक्षा की अपेक्षा थी। जोर से पढ़ने तथा औपचारिक भाषण में प्रत्यक्ष

रूप से, प्रत्येक वर्ण को वह ध्वन्यात्म प्रतिमान देते हुए जो भाषा के चालू रूपों में अनुमोदित था, लिखित रूपों के अनुसरण की प्रथा थी। इस प्रकार centum "सैकड़ा" की तरह का अंकन जो क्लासिकी युग में [ˈkentum] रूप का प्रतिनिधित्व करता था अब क्रमशः [ˈkentum, ˈtʃɛntum, ˈtsɛntum] की तरह उच्चरित होने लगा। यह स्थिति वास्तविक भाषा के ध्वनिविकास के अनुसार थी जहाँ इन स्थितियों में क्रमशः [ˈkentu tʃɛntu, ˈtsɛntu] उच्चरित होता था। आजकल लैटिन पढ़ने में विभिन्न राष्ट्रों द्वारा इसी व्यवहार का अनुसरण होता है। इतालवी, लैटिन centum को [ˈtʃɛntum] की तरह पढ़ता है क्योंकि वह अपनी भाषा में cento लिखता है और [ˈtʃɛnto] बोलता है। एक फ्रेंच इसे [sɛntɔm] पढ़ता है क्योंकि वह अपनी भाषा में इसे cent लिखता और [sã] बोलता है जर्मन लोगों ने लैटिन पढ़ने की परम्परा रोमन लोगों से प्राप्त की जो c के लिए [ts] का प्रयोग करते थे और तदनुसार लैटिन centum को [ˈtsentum] की तरह बोलते थे। इंग्लैण्ड में आज भी लैटिन का 'अंग्रेजी' उच्चारण centum [ˈsentʌm] सुना जा सकता है क्योंकि यह एक फ्रेंच परम्परा से होकर आया है। लैटिन के ये परम्परागत उच्चारण एक ऐसी व्यवस्था द्वारा दबाए जा रहे हैं जो क्लासिक युग के उच्चारण की पुनर्रचना की दिशा में प्रयत्नशील हैं।

लैटिन में लिखित तथा औपचारिक अथवा विद्वत्तापूर्ण वार्तालाप को प्रचलित किए रखने की यह प्रथा ईसाई-धर्म के साथ अ-लैटिन भाषी देशों में फैल गई। वास्तविक रोमानी भाषाओं, अथवा केल्टी या जर्मन-भाषा के आलेख 700 वर्ष के आसपास मिलते हैं। प्रथम तो वे आलेख बहुत दुर्लभ हैं और 12वीं, 13वीं शती में चलकर ही वे प्रचुरमात्रा में मिलने लगते हैं। मुद्रण के अविष्कार के कुछ समय बाद भी लैटिन-पुस्तकों की संख्या अधिक बनी रही। क्योंकि लैटिन अभी तक रोमन कैथोलिक चर्च की सरकारी भाषा है, यह कहा जा सकता है कि लिखित तथा औपचारिक भाषा के रूप में इसका प्रयोग अभी तक बना हुआ है।

जैसे ही क्लासिकी लैटिन प्राचीन पड़ने लगी थी, वे लोग जिन्हें पर्याप्त स्कूली शिक्षा नहीं मिली थी निश्चय ही लिखने में भूल कर बैठते थे। अ-लैटिन-भाषी देशों में, वास्तव में, यह स्थिति उसी क्षण से बनी हुई थी जब से लैटिन-लेखन का आरम्भ हुआ था। जहाँ तक प्रशिक्षण की पूर्णता का

प्रश्न है, इसमें समय और स्थान के अनुसार अन्तर थे। 7वीं से 8वीं शती तक मेरोविंजियन फ्रांस (Merovingian France) में लिखित लैटिन, निश्चित रूप से अ-क्लासिकी है तथा लेखक की उच्चरित-भाषा की अनेक विशेषताओं को प्रस्तुत करती है—वह भाषा जिसके बाद वाले रूप को फ्रेंच कहा जाता है। नवीं शती में महान् चार्ल्स के शासनकाल में स्कूली-शिक्षा का फिर जोर बढ़ा। अंग्रेजी की पाठ्य पुस्तकें परम्परानुयायी लैटिन के अधिक समीप लौट आईं। यह कहना अनावश्यक है कि रोमानी भाषाभाषी देशों में तथा कुछ सीमा तक, सम्भवतः, अन्य देशों में लैटिन लेखन की त्रुटियों से लेखक द्वारा बोली जाने वाली वास्तविक भाषा के सम्बन्ध में सूचना मिलती है। यह देखा जा चुका है कि प्राचीन भाषा शास्त्रज्ञ इस स्थिति को गलत ढंग से लेते थे। भाषाई परिवर्तन के लिए लैटिन लेखन में परिवर्तन को कारण मानकर यह निष्कर्ष निकाला कि भाषाई परिवर्तन अज्ञान तथा लापरवाही के कारण हैं तथा एक प्रकार के ह्रास का प्रतिनिधित्व करते हैं (§ 1.4)। दूसरी भूल अधिक कट्टर सिद्ध हुई है, यथा अंग्रेजी प्रलेखों के मध्ययुगीन लैटिन पर दृष्टिपात करते हुए उसे एक साधारण भाषा रूप में मान लेना। जब इन प्रलेखों में प्राप्त नए रूप प्राप्त होते हैं तो केवल एक दूर की सम्भावना बच जाती है कि यह रूप क्लासिकी लैटिन रूप के एक वास्तविक परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है। अधिकांश उदाहरणों में यह या तो क्लासिक लैटिन के आधार पर की गई नई रचना होती है अथवा किसी उच्चरित रूप का लैटिनीकृत रूप होता है। इस प्रकार quiditas "क्यात्व (whatness), विशिष्ट गुण" जो मध्ययुगीन लैटिन लेखन में दिखाई पड़ता है, क्लासिकी लैटिन के सादृश्य पर असम संरचना है तथा इसके द्वारा क्लासिकी अथवा मध्ययुगीन किसी भी भाषणरूप का आभास नहीं मिलता। mansionaticum "सामन्त के रात ठहरने की सराय, गृहस्थी" रूप से क्लासिकी लैटिन में इस रूप के प्रयोग का साक्ष्य नहीं मिलता। यह वास्तविक रूप से व्यवहृत प्राचीन फ्रेंच masnage (अथवा इसके पूर्व-फ्रेंच पूर्ववृत्त) का मात्र लैटिनीकरण है जो बाद के फ्रेंच mesnage तथा आधुनिक ménage [mena:z] "गृहव्यवस्था" में दिखाई पड़ता है। अंग्रेजी menage "व्यवस्था करना" रूप व्युत्पन्न क्रिया, फ्रेंच ménager, से आदान किया गया है। निश्चित रूप लैटिनीकरण उस अर्थ में उपयुक्त है। masnage एकरूपीय संयोग है जिसके अवयवों को हम पीछे क्लासिकी लैटिन रूपों की ओर लौटा लें तो संयोग *mansiōnāticum होगा।

मध्ययुगीन लिपिक ऐतिहासिक दृष्टि से लटिन समकक्ष रूप की ओर ध्यान देगा, यद्यपि वास्तविक क्लासिकी लैटिन में इस तरह के संयोग नहीं होते थे। मेरोविनजियन प्रलेखों में मिलने वाले पूर्णकालिक क्रियारूप presit "उसने लिया" के सम्बन्ध में यह कहना कि यह इतालवी prese ['prese] "उसने लिया" अथवा फ्रेंच prit [pri] का पूर्वरूप है इसलिए गलत है कि यह स्थिति एक ऐसे लिपिक के भूलस्वरूप आई जो क्लासिकी लैटिनरूप prehendit "उसने लिया" से पूरी तरह परिचित नहीं था और जो उसके स्थान पर उच्चरित भाषा पर आधारित कदम लैटिन रूप लिख गया। इस प्रकार यह त्रुटि लैटिन-लेखन की त्रुटि है। इस मूल से पता चलता है कि लिपिक की भाषा में लैटिन *prensit, प्रतिरूप की नई रचनाएँ प्रवेश पा चुकी थीं जो रोमान्स रूपों की आधारवर्ती हैं तथा सम्भवतः जो पहले से चली आ रही हैं किन्तु यह कहना एक बड़ी सैद्धान्तिक अव्यवस्था ला देना होगा कि रोमान्स रूप "मध्ययुगीन लैटिन रूपों" से व्युत्पन्न हुए हैं। पुनः जब जर्मन प्रान्तों के लैटिन प्रलेखों में muta 'चुंगी' शब्द देखा जाता है तो 'मध्ययुगीन लैटिन' में प्राचीन उच्चजर्मन muta 'चुंगी' (§25.5) का उद्‌गम देखना भूल होगा। लेखक ने तो केवल जर्मन तकनीकी शब्द का लैटिन लेखन में प्रयोग किया था, क्योंकि उसे सटीक पर्याय का ज्ञान नहीं था। एक लेखक यहाँ तक कि nullum teloneum neque quod lingua theodisca muta vocatur "चुंगी नहीं अथवा जर्मन में जिसे muta कहा जाता है।" फिर भी mutarius, mutnarius "चुंगी वसूल करना" व्युत्पन्न रूप मिलते हैं, परवर्ती रूप -n- के सादृश्य के साथ जो जर्मन रूप क्रिया की विचित्रता है (आधुनिक Mautner)। इस सबको सम्मिलित करते हुए मध्ययुगीन लैटिन लेखक के क्लासिकी लैटिन प्रयोग से विचलन, इस वास्तविक भाषण पर प्रकाश छोड़ सकता है, किन्तु परवर्ती रूप के पूर्वावृत्त से अव्यवस्थित होने का साहस नहीं कर सकता, यहाँ तक कि उन स्थितियों में भी जहाँ लिपिक शुद्ध लैटिनीकरण में सफल हो गया।

27.8 अब ऐसी स्थिति है कि सभी समय में, और विशेष रूप से शिक्षा के आधुनिक प्रसार के साथ रोमानी भाषाभाषी लोगों ने पहले अपने औपचारिक भाषण में और फिर साधारण स्तर पर पुस्तकीय-लैटिन की अभिव्यक्तियों को, परम्परागत पठन उच्चारण के ध्वन्यात्म रूप में लाया। लिखित भाषाओं से ये आदान सीखे हुए शब्द (learned words) अथवा फ्रेंच शब्दावली

में (मो सावाँ) mots savants [mo savã] कहे जाते हैं। पुस्तकीय लैटिन शब्दों के प्रचलित भाषण प्रयोग में आ जाने के बाद, वास्तव में, यह भी सामान्य परिवर्तन का भागी हो जाता था जो तत्पश्चात् भाषा में होता था। फिर भी कभी-कभी इनके पीछे पुस्तकीय-रूपों की दिशा में इनकी पुनरावृत्ति निर्धारण होती थी। अनेक लैटिन शब्द रोमानी भाषाओं में दिखाई पड़ते हैं जो सामान्यरूप से विकसित आधुनिक रूप में, यथा जनप्रचलित शब्द (popular word) तथा अर्ध-आधुनिकी लैटिन (एक छद्म लैटिन) के रूप में यथा सीखे हुए शब्द, दोनों तरह से मिलते हैं।

लैटिन redemptionem [redempti'o:nem] redemption सामान्य रूप से विकसित होकर आधुनिक फ्रेंच में rançon [rãsõ] 'ransom' (अंग्रेजी ransom फ्रेंच से आदान किया गया है) हो गया है। किन्तु आधुनिक फ्रेंच के लिखित रूप से आदान किया गया रूप redemption [redãpsjõ] redemption है। पुस्तकीय आदान के समय, फ्रेंच लोग लैटिन पढ़ते हुए ऐसे उच्चारण (जैसा कि देखा जा चुका है वास्तविक भाषाई अन्विति पर आधारित) का प्रयोग करते थे जिसके कारण उच्चारण द्वारा redemptionem की तरह का अंकन बन गया। यथा [redɛmp'(t)sjo:nɛm] के तथा आज के फ्रेंच [redãdejõ] के बीच का अन्तर फ्रेंच भाषा में हुए परवर्ती परिवर्तनों के कारण है। सीखे शब्दों में से केवल कुछ सम्भवतः केवल एक अल्पसंख्यक में ही यह विकास हुआ। किन्तु यह विकास उन रूपों के आदर्श पर ही हुआ जो किताबों से लिए जा सकने योग्य किसी नए रूप को पुनरावृत्तीकरण कर सकता था। इस प्रकार यदि एक शिक्षित फ्रेंच लैटिन procrastinationem लेना चाहता था तो वह इन्हीं आदर्श के अनुसार उन्हें ढाल देगा, यथा procrastination [prɔkrastinasjõ]।

दुहरे विकास में अन्य उदाहरण हैं—लैटिन fabricam ['fabrikam] "फैक्ट्री > फ्रेंच forge [fɔrʒ] "जाल" सीखा हुआ रूप fabrique [fabrik] "फैक्ट्री"; लैटिन fragile ['fragile] "नाजुक" > फ्रेंच frêle [frɛ:l] "दुर्बल" सीखा हुआ रूप fragile [fraʒil] "नाजुक", लैटिन securum [se:'ku:rum] "सुरक्षित" > फ्रेंच sur [sy:r] "सुरक्षित", लैटिन securitatem [se:ku:ri'-ta:tem] > फ्रेंच sureté [syrte] "सुरक्षा की भावना", सीखा हुआ रूप sécurité [sekyrite] "सुरक्षा"।

कभी-कभी पुस्तकीय शब्द भाषा में इतना पहले प्रवेश कर आया कि उसमें

यह ध्वनिपरिवर्तन हो गया जिसके कारण ऊपरी तौर पर देखने में यह सामान्य लगने लगा। इस प्रकार लैटिन capitulum [ka'pitulum] "शीर्षक" फ्रेंच में बहुत पहले ले लिया गया था अतः वह विकास में भाग ले सका [ka>tʃa->ʃa] तथा आधुनिक फ्रेंच में chapitre [ʃapitr] "अध्याय" रूप में दिखाई पड़ता है। लैटिन [l] के लिए [r] प्रत्यक्षरूप से उस प्रतिरूप के अनुकूलनों के कारण है जिन्हें सामान्यतः अपगामी ध्वनि परिवर्तन (§ 21.10) के वर्ग में रखा जाता है। निस्सन्देह रूप से इस प्रकार के बहुत थोड़े से परिवर्तन, पुस्तकीय रूपों की जो असामान्य स्थिति प्रस्तुत करते हैं, पुनरावृत्तीकरण के कारण हुए हैं। अन्य स्थितियों में ध्वनिपरिवर्तन के बाद आदान किया हुआ पुस्तकीय शब्द, अभी तक अनुकूलन के कारण, एक ऐसे रूप के अन्तर्गत रखा जाता है जो पूर्णतया या अंशतया इस परिवर्तन के प्रभाव की प्रतिलिपि करता है। इस प्रकार लैटिन discipulum [dis'kipulum] "शिष्य" द्वारा सामान्य विकास के कारण आधुनिक इतालवी *[de'ʃeppjo] (दूसरी अवस्थिति नहीं है) निकलेगा। किन्तु सीखा हुआ इतालवी आदान अंशतः इन स्वर-परिवर्तनों के अनुकूल है। *[di'ʃipulo] नहीं, वरन् discepolo [di'ʃepolo] है। सीखे तथा अर्ध-सीखे रूपों की संख्या पश्चिमी रोमान्स भाषाओं में बहुत अधिक है। विशेषरूप से जैसा कि मानक भाषाओं में अपनी सदृशता ने उस सीमा तक विस्तार कर लिया है जहाँ किसी लैटिन अथवा ग्रीक-लैटिन शब्द का आधुनिकीकरण हो सकता है।

फ्रेंच रूपों के रूप जो नार्मन विजय के बाद वाले काल में अंग्रेजों से आदान किए गए थे, उनमें से अनेक लैटिन पुस्तकों से सीखे हुए फ्रेंच आदान थे। शिक्षित अंग्रेज जो फ्रेंच तथा लैटिन दोनों से परिचित था, उसकी लैटिन शब्दों को उसी रूप में प्रयोग की प्रवृत्ति बन गई जैसा रूप अंग्रेजी में था, यथा फ्रेंच mots savants। यह देखा जा चुका है कि किस प्रकार अंग्रेज वक्ता स्वयं अनुकूलन करता है। (§ 25.4)। बाद में चलकर अंग्रेजी लेखक लैटिन शब्दों का प्रयोग करते रहे। इस प्रकार के आदानों में अंग्रेज लैटिन अंकन को बदल लेते हैं तथा उसका उच्चारण अपनी स्थाई प्रवृत्ति के अनुसार करने लगते हैं। ये प्रवृत्तियाँ हैं (1) अनुकूलन तथा ध्वन्यात्म अनुरूपन जैसा कि 1200 के आस-पास किताबी लैटिन शब्दों का फ्रेंच में चलन था, (2) अनुकूलन जो लैटिन फ्रेंच रूपों के अंग्रेजी प्रयोग में प्रचलित है तथा (3) नार्मनकाल से लेकर अंग्रेजी ध्वनि-परिवर्तनों के कारण हुए ध्वन्यात्म अनुरूपन। इस प्रकार, लैटिन procrastinationem जिसका फ्रेंच में प्रचलन नहीं है लैटिन

पुस्तकों से procrastination [prə,krεsti'nejʃn] रूप में उपरोक्त सादृश्य के अनुसार अंग्रेजी में आदान किया गया है। (1) के अन्तर्गत यह तथ्य आता है कि फ्रेंच में लैटिन कर्ता एकवचन में शब्दों का आदान नहीं हुआ है (लैटिन procrastinatio), किन्तु अन्त्य के लोप के साथ कर्म तथा अपादान कारकों का आदान हुआ है। कहीं उस शब्द का प्रयोग 1200 से 1300 की प्राचीन फ्रेंच में पुस्तकीय आदान के रूप में हुआ होता तो इसका रूप ध्वनि-परिवर्तनों के साथ जो कारक चयन के समान अन्ततः असीखे फ्रेंच शब्दों के आदर्श पर है *procrastination [prokrastina'sjo:n] होता। अवशिष्ट अंग्रेजी रूपों का विचलन यथा द्वितीय अक्षर में a- के स्थान [ε], तीसरे में a के लिए [ej], स्वर के पूर्व ti के लिए [ʃ] तथा शब्दान्त के [-n̩] में दुर्बलीकरण उन ध्वन्यात्म परिवर्तनों के आदर्शानुकूल है जिनका उसी प्रकार की रचना वाले शब्दों के अनुसार वास्तव में नार्मनकाल में आदान हुआ था—यथा लैटिन nationem > प्राचीन फ्रेंच [na'sjo:n] > अंग्रेजी nation ['nejʃn] में हुआ है। अन्त में, सुर का पूर्व-परसर्गीय स्थिति में स्थानान्तरण एक अनुकूलन की नकल है जो फ्रेंच से वास्तव के आदान करते हुए अंग्रेजों ने किया। इसी प्रकार जब अंग्रेजी में लैटिन पुस्तकों से procrastinare क्रिया का आदान होता है तो अंग्रेजी अनुकूलन प्रवृत्ति के अनुसार (§ 23.5) -ate- पर-प्रत्यय जुड़कर यह procrastinate हो जाता है।

इस प्रकार, अंग्रेजी तथा रोमानी दोनों ही भाषाएँ केवल वास्तविक लैटिन शब्दों का ही आदान नहीं कर सकतीं वरन् मध्ययुगीन लेखीय टकसाली शब्दों का भी, यथा विद्वत् quiditas से अंग्रेजी quiddity। लैटिन पदरचना के सामान्य आदर्श पर नए शब्द भी ढाले जाते हैं। eventual, immoral, fragmentary आदि उन सीखे शब्दों के उदाहरण हैं जो लैटिन में नहीं मिलते हैं। रोमन लोगों ने ग्रीक शब्दों का आदान किया, इसी प्रकार रोमनों की लैटिनीकरण की प्रवृत्ति के अनुसार ग्रीक शब्दों में परिवर्तन लाकर, तथा फ्रेंच लोगों की प्रवृत्ति के अनुसार लैटिन पुस्तकीय शब्दों का फ्रांसीसीकरण करके तथा अंग्रेजी प्रवृत्ति के अनुसार फ्रेंच सीखे शब्दों का आंग्लीकरण करके उन्हें प्रयोग में लाया जा सकता है। प्राचीन ग्रीक [philoso'phia:] से इसी प्रकार अंग्रेजी रूप [fi'lɔsəfi] philosophy निकला है। जैसी लैटिन में स्थिति है, ग्रीक शब्दों को ढालने की स्वतन्त्रता है : telegraphy उसी परिष्कार के साथ अनवस्थित प्राचीन ग्रीक *[te:le gra'phia:] "दूर-लेखन" का प्रतिनिधित्व करती है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सादृश्य कभी-कभी भ्रम में डाल देता है। रोमानी भाषाओं के प्रचलन के विरुद्ध प्राचीन ग्रीक [th] अंग्रेजी में [θ] कर दिया जाता है, यथा [mu:tho'lo'gia:] > mythology में। यह सच है कि प्राचीन ग्रीक [th] आधुनिक ग्रीक में परिवर्तित होकर [θ] बन गया है। किन्तु अंग्रेजी प्रवृत्ति सम्भवतः इससे स्वतन्त्र है और ऐसा केवल वर्तनी के कारण है। फिर भी मध्ययुगीन लिपिक th को अमूर्त ग्रीक अंकन जानते हुए तथा *t*[t] जैसा उच्चारण करते हुए सांयोगिक रूप से ऐसे शब्दों में रखते रहे जो बिल्कुल ही ग्रीक नहीं थे। इस प्रकार Goths गॉथस की संज्ञा प्राचीन जर्मन *['goto:z] मध्ययुगीन लैटिन-लेखन में केवल goti रूप में ही नहीं वरन् gothi रूप में भी दिखाई पड़ती है और इसे बाद के अंकन से लिया गया है। उच्चारण रूप में [θ] के साथ Goth, Gothic और [θ] मिलता है; Lithuanian (लिथुएनियन) में θ का प्रयोग उसी छद्म-सीखे पांडित्यपूर्ण का आधुनिक उदाहरण है। साधारण लैटिन शब्दों auctorem > फ्रेंच autor (आधुनिक auteur [otœ:r]) > मध्ययुगीन अंग्रेजी autor। अंग्रेजी में इसकी वर्तनी author थी और अन्ततः वर्तनी-उच्चारण [θ] के साथ होने लगा।

क्लासिकी भाषाओं से सीखे हुए आदानों की प्रथा यूरोप की अन्य भाषाओं में भी प्रचलित हुई। सीखे हुए आदानों के प्रयोग रोमान्स भाषा-भाषियों द्वारा लैटिन से गृहीत एवं स्वीकृत होकर उनके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सम्पर्क की अवस्था को द्योतित करते हैं। इस प्रकार एक जर्मन व्यवित जो nation [na'tsjo:n], station [ʃta'tsjo:n] शब्दों का उच्चारण करता है इन्हें *Prokrastination [Prakrastina'tsj:on] शब्द से लिया होगा। आदान की ये प्रथाएँ यूरोप की अन्य भाषाओं में भी प्रचलित हैं।

इस पूरे इतिहास के समानान्तर स्थिति, यहाँ तक कि यदि इसमें उच्चरित रूपों के प्राचीनी अंकन भी सम्मिलित कर लें (मध्ययुगी लिपिकीय mansionaticum, presit), भारत के संस्कृत भाषा प्रयोग में मिलती है। भारत की भाषाओं में संस्कृत से अंकन आदान तत्सम कहे जाते हैं। यूरोप के mots savants की तरह इन रचनाओं से प्रकट होता है कि लिखित रूप ने भाषा पर प्रभाव छोड़ा है।

अध्याय 28

प्रयोग और दृष्टिकोण

28.1 एक असामान्य वक्ता के सम्मुख उस समय एक भाषाई समस्या आती है जब कभी वह ऐसे परिवर्त्य रूपों को जानता है जोकि लक्षण से भिन्न हैं, जैसे it's I और it's me. वक्ता इस समस्या को इस प्रश्न के रूप में रखता है, "मैं किस प्रकार बोलूँ ?"। अधिकतर उसे कोई कठिनाई नहीं होती है क्योंकि सामाजिक अभिधान स्पष्ट होते हैं और वक्ता यह जानता है कि कुछ रूपान्तर (जैसे, I done it) का एक अवांछित अभिधान है और लोग प्रयोक्ता के प्रति परुषता से व्यवहार करते हैं। हम इसे परम्परागत रूप से इस प्रकार कहते हैं कि अवांछित रूपान्तर (undesirable variant) "अशुद्ध" अथवा "बुरी अंग्रेजी" अथवा "ग़ैर-अंग्रेजी" है। निस्सन्देह ये कथन तथ्यहीन हैं : अवांछित रूपान्तर कोई विदेशियों द्वारा की गई अशुद्धियां नहीं हैं बल्कि पूर्णतया अच्छी अंग्रेजी हैं, केवल वे समाज में प्रतिष्ठित वर्ग की बोली में अप्रयुक्त हैं और तदनुसार मानक भाषणरूपों के कोष (repertory) में नहीं पहुँच पाए हैं। इससे भी कहीं छोटे और कहीं कम स्तर वाले भाषण-समुदायों में भी, जहाँ मानक भाषणरूप पृथक् स्पष्टतया उमड़ नहीं पाए हैं, वक्ता को सामान्यतया यह मालूम रहता है कि कौन-से रूपान्तर उसके अधिक काम के हैं।

जब रूपान्तरों में कोई प्रकट अन्तर नहीं होता है वहां यह समस्या उठती ही नहीं है क्योंकि स्पष्टतया इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि कौनसा रूपान्तर वक्ता प्रयुक्त करता है। it's I कहूँ या it's me कहूँ—ऐसी दुविधा में पड़े वक्ता ने ये दोनों रूपान्तर करीब-करीब एक-से ही लोगों द्वारा सुने हैं। यदि ऐसा न होता तो उसमें वांछित अथवा अवांछित होने के अभिधान अवश्य होते। चूँकि उसके सहकारी लोग दोनों रूप प्रयुक्त करते हैं, वक्ता की प्रतिष्ठा पर कोई आंच नहीं आएगी चाहे वह इन प्रयोगों में पहला प्रयुक्त करे, चाहे दूसरा। फिर भी, लोग ऐसी समस्याओं पर समय और शक्ति खर्च करते हैं और इन पर चिन्तित रहते हैं।

भाषा के विषय में हमारी प्रचलित धारणाओं की पृष्ठभूमि में अठारहवीं सदी के "वैयाकरणों" के काल्पनिक सिद्धान्त हैं। ये सिद्धान्त अब भी स्कूलों में प्रचलित हैं और रूपों पर चाहे वे न भी हों तो भी, "अशुद्ध" की छाप लगी मिलती है। जब वक्ता देखता है कि अवांछित अभिधान के न होते हुए भी कुछ रूपान्तरों को "अशुद्ध" कहा जाता है तो वक्ता दुविधा में पड़ा रहता है और प्रायः किसी भी भाषणरूप को "अशुद्ध" समझ बैठता है।

"वैयाकरणों" के लिए यह असम्भव था कि भाषणसमुदाय के इतने बड़े अंश को वे धोखा देते रहते, और न वे ऐसा करते, यदि जनता स्वयं धोखे में आने को उद्यत न होती। प्रायः सभी, यहाँ तक कि मानक-भाषा के नैसर्गिक वक्ता भी, जानते हैं कि किसी अन्य व्यक्तियों की बोली उनकी बोली से अधिक लब्धप्रतिष्ठ है। निस्सन्देह, चोटी पर एक सर्वाधिक प्रतिष्ठित लोगों का वर्ग होगा जिसके सदस्य भाषणरूपों के विषय में, उसी प्रकार निश्चित होते होंगे जिस प्रकार अन्य शिष्टता के विषय में। अंग्रेजी-भाषी समुदाय में यह ब्रिटिश उच्चवर्ग है जो दक्षिणी अंग्रेजी के "पब्लिक स्कूल" प्रतिरूप की भाषा बोलता है। फिर भी यह आशंका हो सकती है कि इनमें भी मुद्रित पुस्तकों की प्रतिकृति में और शिष्टाचारानुरूप समुदाय के गौण परिवर्तनों के कारण वक्ता को कभी-कभी दुविधा उत्पन्न होती होगी। अतएव मिथ्या-वैभव के कारण जो कि अधिक प्रतिष्ठित वर्ग के लोगों द्वारा किसी कार्य करने के ढंग को कहते हैं, प्रायः अस्वाभाविक भाषण की उत्पत्ति हो जाती है। वक्ता ऐसे रूप को उच्चारित करता है जो उसके सहकारियों में प्रचलित नहीं है। किन्तु जिसे वह समझता है (अधिकतर गलती से समझता है) कि कुछ उच्चतर वर्ग के वक्ता ऐसे रूपों को प्रयुक्त करते हैं। निस्सन्देह वह प्राधिकारवादी (authoritarian) का एक आसान शिकार बन जाता है।

यह कोई अचानक घटना नहीं थी कि उस युग में "वैयाकरणों" का प्रादुर्भाव हुआ। अठारहवीं और उन्नीसवीं सदियों में यूरोपीय समाज में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए। अनेक व्यक्ति और परिवार अपेक्षाकृत उच्चतर प्रतिष्ठित स्थानों पर पहुँचे और उन्हें अमानक-भाषा के स्थान पर मानक-भाषा का व्यवहार करना पड़ा। इस प्रकार भाषा-परिवर्तन करने वाले वक्ता के सम्मुख क्या समस्याएँ आई होंगी, इस पर हम आगे विचार करेंगे, इतना निश्चित है कि प्राधिकारवादियों का अंकुश सबसे अधिक उन आत्मसंशयी लोगों पर था जिनकी पृष्ठभूमि अमानक थी अर्थात् जो अपने बाप-दादों से सुने भाषण-

रूपों को बोलने में झिझकते थे। अमेरिका में यह और भी जटिल रूप में है क्योंकि मानक अंग्रेजी के अनेक नैसर्गिक वक्ताओं की भी विदेशी पृष्ठभूमि है और वे प्रायः मन में डरते रहते हैं कि कदाचित् उनके लिए सहज भाषण-रूप वस्तुतः शुद्ध अंग्रेजी न हो।

सत्यतः, अपने भाषण के प्रति झिझक एक प्रायः सार्वभौमिक विशेषक है। किसी अजनबी भाषा या स्थानीय बोली के अध्ययन में लगे पर्यवेक्षक को अपने सूचकों से प्रायः ऐसे भाषणरूप मिलते हैं जोकि सूचक अपने लोगों से बोलने में प्रयुक्त नहीं करते। सूचक अपने लोगों से बोलने वाले रूपों को कुछ हीन मानता है और पर्यवेक्षक को वह रूप नहीं बताता है। इस प्रकार एक पर्यवेक्षक ऐसी भाषा अंकित करने लगता है जोकि उसकी अभीष्ट भाषा नहीं है।

अपनी बोली को संशोधित करने की प्रवृत्ति सार्वभौमिक है, किन्तु संशोधन सामान्यतया उन रूपों को अपनाने से होता है जिन्हें व्यक्ति अपने सहकारियों से सुनता है। वैयाकरणों के मत का विशिष्ट भाषणरूपों को निष्कासित करने अथवा स्थापित करने में कोई विशेष प्रभाव न था, किन्तु उसने साक्षर लोगों में यह धारणा अवश्य जमा दी थी कि वे रूप जोकि वक्ता ने नहीं सुने हैं, उनसे जो कि वस्तुतः सुने हैं, और बोले हैं "अधिक शुद्ध" हैं। मानक-भाषा के नैसर्गिक वक्ता के सामने संकट कृत्रिमता का है। यदि वह वर्गदम्भी है या प्रदर्शनप्रिय है या भीरू है तो उसके भाषण में (कम से कम जब वह शिष्ट व्यवहार करना चाहता है) वर्तनी-अनुरूप उच्चारण और विलक्षण "शुद्ध" रूप मिलेंगे। एक वक्ता जिसकी मानक भाषा नैसर्गिक है कदाचित् ही अपने सहज भाषणरूपों को तथाकथित शुद्ध रूपों से बदलेगा। it's I : it's me जैसे रूपान्तर सदियों से अंग्रेजीभाषी उच्चस्तरीय लोगों में प्रयुक्त होते रहे हैं और कोई कारण नहीं है कि लोग इनको प्रयुक्त करने में झिझकें।

कभी-कभी ऐसा होता है कि वक्ता को मानक भाषा के अन्तर्गत असली और अपेक्षाकृत सुपरिभाषित रूपान्तरों में से चुनाव करना होता है। अमेरिका में केन्द्रीय-पश्चिमी मानक अंग्रेजी के वक्ता के सामने जो कि समभाव से man, mad और mat में स्वर [ε] का प्रयोग करता है, मानक भाषा का उच्चतर-सुर वाला प्रतिरूप आता है जिसमें laugh, bath, can't में एक भिन्न स्वर [a] व्यवहृत होता है। अब वह वक्ता यह अधिक शिष्ट लक्षण स्वीकार करेगा या नहीं, यह इस पर निर्भर है कि वक्ता उन रूपों को

व्यवहार में लाता है। यदि वह पूर्णतया ऐसे लोगों के बीच में स्थित है, जैसे न्यू इंग्लैण्ड में या ग्रेट ब्रिटेन में, तो वह स्वभावतः यह नई आदत सीख लेगा। यहाँ पर यह स्मरण रखना चाहिए कि परिवर्तन कोई सरल कार्य नहीं है और नौसिखिया इस नए लक्षण को ऐसे स्थलों पर भी प्रयुक्त कर सकता है जहाँ वस्तुतः वह नहीं है और तब अनोखे अस्वीकार्य प्रतिरूप प्रस्तुत करता है, जैसे [ma:n] को [mɛn] man के स्थान पर बोलकर। यदि वक्ता को निरन्तर अपने सहकारियों से शिष्टतर वांछनीय रूपों को सुनने का अवसर नहीं मिलता है तो उसे इसमें दखल नहीं देना चाहिए। अस्वाभाविक बोली अच्छी नहीं लगती है। इंग्लैण्ड में, जहां मानक भाषा के प्रादेशिकता-रंजित प्रतिरूप को "पब्लिक स्कूल" प्रतिरूप से हीन माना जाता है, वहाँ इस प्रश्न का दूसरा ही पक्ष है।

जहाँ तक भाषण के अप्रभेदक लक्षणों का सम्बन्ध है, परिस्थिति भिन्न है। यद्यपि ये लक्षण आदत से पड़ जाते हैं, तो भी ये हमारी संकेत-पद्धति के अंग नहीं हैं और इनमें विभिन्नता और सुधार हो सकते हैं। जिस प्रकार वक्ता अन्य शिष्टाचरणों में प्रिय और दूसरों का ध्यान रखने वाला बनता है उसी प्रकार वह कर्णप्रिय श्रुतिमधुर वाणी में बोल सकता है। अर्थात् वह अप्रभेद ध्वानिकी लक्षणों को रुचिकर संयोजित करके बोल सकता है। यही बात अप्रभेदक और आर्थी लक्षणों के संयोजनों के विषय में कही जा सकती है जिसे हम शैली (style) कहते हैं। यहाँ भी व्यक्ति बिना आडम्बर के उपयुक्त और प्रियकर रूपों को प्रयुक्त कर सकता है। अभाग्यवश पाश्चात्य अलंकारशास्त्र के ग्रन्थ इसे "शुद्धता" की व्यर्थ समस्या के साथ जोड़ देते हैं।

उपमानक अंग्रेजी के अथवा बोली के वक्ताओं के सम्मुख मानक-अंग्रेजी सीखना वास्तव में एक समस्या है और बहुत कुछ विदेशी भाषा सीखने के समान है। यह बताना कि वक्ता की आदतें "अज्ञानता से", "प्रमाद से" हैं और "गैर-अंग्रेजी" हैं, कोई सहायक उपाय नहीं है। इस ओर स्कूल वास्तव में अपराधी है। अमानक-भाषा के वक्ता के सामने यह कठिन कार्य है कि वह अपने कुछ रूपों को (जैसे, I seen it) अन्य रूपों से (जैसे, I saw, it), जो कि अधिक प्रतिष्ठित लोगों में प्रचलित हैं, प्रतिस्थापित करे। एक अवास्तविक दृष्टिकोण, जैसे हीनता का, निश्चयतः उसकी उन्नति में बाधक होगा। प्रतिष्ठा का असमान वितरण, जिसका वह बचपन में भुक्तभोगी था, उस समाज का दोष है जिसमें वह पला है। अतएव उसे बिना किसी उलझन के उन रूपों को जो अमानक हैं उन मानकरूपों से प्रतिस्थापित करना चाहिए जिन्हें उसने वस्तुतः सुना है। प्रारम्भ में उसे अति-नागरीय रूप बनाने का भय है,

जैसा कि प्रयोग I have saw it (अनुपात I seen it : I saw it=I have seen it : x से उत्पन्न)। बाद में, वह प्रायः सामान्य बोली से बचने के प्रयास में शब्दाडम्बरपूर्ण शैली और अतिजटिल वाक्य-विन्यास में फँस जाता है जब कि उसे भाषण की एकरूपता पर गर्व करना चाहिए था और अपनी असानक पृष्ठभूमि को इस ओर एक हितकारी अंग बनाना चाहिए था।

28 2 समाज भाषाई मामलों को स्कूली पद्धति द्वारा निपटाता है। जो कोई भाषाई और गैर-भाषाई आचरणों में भेद करने से अभिज्ञ है वह उस आलोचना से सहमत होगा कि स्कूलों में भाषाई आचरणों पर अधिक ध्यान दिया जाता है अर्थात् अंकगणित, भूगोल अथवा इतिहास की भाषण-अनुक्रियाओं पर बच्चे को बहुत अभ्यास कराया जाए इसके प्रशिक्षण की अपेक्षा रहती है। कुछ पीढ़ी पहले के अब से सरल समाज में कला और विज्ञान के विषय दूर की वस्तु थे, मशीनी और सामाजिक प्रक्रियाएँ इस भांति कार्य कर रही थीं कि वे विषय प्रत्यक्ष प्रतिदिन के पर्यवेक्षण की पहुंच में आ गए थे (या लगते थे कि आ गए हैं) : बच्चे बिना स्कूली सहायता के व्यावहारिक विषयों को सीख लेते थे और स्कूल में केवल उन्हें पढ़ने-लिखने गिनने का प्रारंभिक ज्ञान सिखाया जाता था। स्कूल अब भी इसी प्रतिमान को अपनाए हुए हैं यद्यपि आधुनिक जीवन कहीं अधिक जटिल हो चुका है। सुधार के प्रयत्न कोई उत्साहजनक नहीं हैं। व्यावहारिक विषय (अर्थात् गैर-भाषाई विषय) अविवेकपूर्ण ढंग से सनक के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। यह देखते हुए कि स्कूलों में मौखिक आचरणों पर बड़ा ध्यान दिया जाता है, यह आश्चर्यजनक बात है कि भाषाई विषयों में वे नितान्त अनभिज्ञ हैं। ऐसा प्रशिक्षण किस प्रकार सर्वोत्तम रीति से दिया जाए वह शिक्षा-शास्त्री को निर्धारित करना है, किन्तु इतना निश्चित है कि कोई भी अध्ययनशास्त्रीय निपुणता उस शिक्षक की सहायता नहीं कर सकती है जिसे अध्यापित विषय का ज्ञान ही नहीं है।

अभाग्यवश मानक और अ-मानक भाषण ("शुद्ध अंग्रेजी") के विषयों पर अंग्रेजी-भाषियों का दृष्टिकोण अधिकतर स्कूलों से निश्चित होता रहा है। स्कूलों का निश्चित व्यवहार प्राधिकारवादी रहा है। "अच्छी अंग्रेजी" क्या है इस पर विचित्र-विचित्र मत शिक्षाधिकारियों और अध्यापकों के द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे हैं। यद्यपि ये लोग, इस ओर समस्या है क्या, इसका भी किंचिन्मात्र ज्ञान नहीं रखते, जैसे shall- और will- के प्रयोग के

विषय में, या सुस्थापित कथनों (I've got it) अथवा संरचनाओं (the house he lived in) की तथाकथित "अशुद्धि" के विषय में। इसके साथ-साथ मानक और प्रचलित अमानक रूपों (I saw it: I seen it) को तर्कपूर्ण ड्रिलों से अभ्यास कराने के स्थान पर ये "अज्ञान", "प्रमाद", "कुसंगति" से उत्पन्न हुए हैं, यों कहा जाता है। ये सब उस व्याकरणजन्य मत की पृष्ठभूमि में चल रहा है जोकि अंग्रेजी-भाषा की कोटियों को दार्शनिक सत्य के रूप में और दार्शनिक पदावली में ('संज्ञा व्यक्ति, स्थान या वस्तु का नाम है', विषय जिसके सम्बन्ध में हम स्पष्ट कह चुके हैं आदि) परिभाषित करता है।

निस्सन्देह मुख्य उद्देश्य साक्षरता है। यद्यपि रोमन लिपि वर्णात्मक है, तो भी इसमें वर्णात्मक सिद्धान्तों से इतने अधिक विचलन हैं कि एक वास्तविक समस्या खड़ी हो गई है जिसका समाधान शिक्षाशास्त्रियों द्वारा अनिश्चित-काल से टाला जा रहा है, क्योंकि उन्हें लेखन का भाषण से सम्बन्ध-ज्ञान ही नहीं है। "शिक्षाशास्त्रियों" द्वारा बच्चों को कैसे पढ़ना सिखाया जाए इस पर लिखी पुस्तकों को देखकर अत्यन्त निराशा होती है। प्रस्तुत ग्रंथ में इस ओर जो विविध भ्रान्तियां उठी हैं उन पर विस्तारभय से विवेचन नहीं किया जा रहा है। प्राइमर और प्रारंभिक पाठ्य पुस्तकें, जोकि इन मतों को स्वीकार करती हैं, लिखित रूपों को केवल **गड़बड़-झाला** मानती हैं और उनमें यथोचित क्रमिकत्व नहीं देखती हैं। एक ओर पर अतिलौकिक मत है जो लिखित प्रतीकों को प्रत्यक्षतः "विचार", 'धारणा" से सम्बद्ध करता है मानों ये प्रतीक भाषणध्वनियों से सहसम्बद्ध न होकर वस्तुओं अथवा परिस्थितियों से सहसम्बद्ध हों। दूसरी ओर पर तथाकथित "स्वनात्म (phonic)" रीतियां हैं जोकि लेखन और पठन के शिक्षण को उच्चारण के शिक्षण से भ्रान्तितया मिला देती हैं और बच्चे को ध्वनि-उत्पादन में प्रशिक्षित करने लगती हैं यद्यपि इस प्रशिक्षण में प्रारंभिक ध्वनि-विज्ञान की पूर्णतया अवहेलना से जटिलता और भी अधिक बढ़ जाती है।

बालशिक्षाशास्त्रियों को यह अवश्य निर्धारित करना चाहिए कि पठन तथा लेखन किस प्रकार सिखाया जाए। नेत्र-संचलनों का अध्ययन इस दिशा में प्रगति का सूचक है। इसके विपरीत वे सफलता की आशा नहीं कर सकते जब तक कि वे लेखन की प्रकृति का गहरा ज्ञान नहीं प्राप्त करते। पढ़ना-सीखने वाला व्यक्ति अक्षरों को देखकर स्वनिम उच्चारण करने का अभ्यास डालता है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वह स्वनिमों को उच्चरित करना

सीख रहा है, उसे पढ़ना तब सिखाया जा सकता है जबकि उसकी स्वनिमीय आदतें सुदृढ़तया स्थापित हो चुकी हों। निस्सन्देह, वह स्वनिमों का एकल (विविक्त) उच्चारण नहीं कर सकता है। अक्षर b दिखाकर [b] का उच्चारण करवाना, जोकि अंग्रेजी ध्वन्यात्म ढांचे में एकल नहीं बोला जा सकता, एक कठिनाई उत्पन्न करना है। अक्षरों और स्वनिमों का समन्वय एक सादृश्यमूलक प्रक्रिया के रूप में स्थापित करना चाहिए था। उनका लेखन में अभ्यास करना चाहिए था जहां प्रत्येक प्रतीक का एक ही मान होता है, जैसे, bat, cat, fat, hat, mat, pat, rat, sat, can, Dan, fan, man, pan, ran, tan, van bib, fib, rib—आदि। कठिनाई का वास्तविक कारण यह है कि अनेक अनियमित वर्तनियां हैं जोकि अनियमित ही बनी रहेंगी, चाहे नियमित रूप से कोई भी मान उन प्रतीकों को दिया जाए। स्पष्टतया दो विधियों को अपनाने का प्रयत्न किया जा सकता है। एक तो यह है कि बच्चों को ध्वन्यात्म प्रतिलेखन पढ़ना सिखाया जाए और जब आवश्यक पठन अभ्यास हो जाए केवल तब उन्हें परम्परागत लेखन सिखाया जाए। दूसरा यह है कि उन लिपिचिह्नकों से प्रारम्भ किया जाए जिनका केवल एक ही स्वनिमीय मूल्य है—जैसा कि ऊपर के उदाहरण में दिया है—और अन्य लिपिचिह्नक तब तक न सिखाए जायें जब तक कि प्रारम्भिक प्रवृत्तियाँ स्थिर न हो जाएँ अथवा उन्हें पूर्वस्थिति में कुछ तर्कसंगत सुनियोजित रीति से सिखाया जाए। अनियमित लिपिचिह्नक व्यवस्था से सिखाने चाहिएँ (जैसे, अनुच्चारित gh: fight, light, might, night, right, sight, tight : [ɔ:] के लिए l के पूर्व a: all, ball, call, fall, gall, hall, tall, wall, halt malt, salt, bald, false)। यह भी सुविधाजनक होगा यदि हम अनुच्चारित वर्णों के लिए तथा अनियमित स्वनिमीय मूल्यों वाले वर्णों के लिए कुछ विशिष्ट चिह्नक (जैसे कि विभिन्न रंग से मुद्रण) प्रयुक्त करें। प्रक्रियारीति, प्रस्तुतिक्रम, और विविध गौण विधियां कुछ परीक्षणों के बाद निर्धारित हो सकती हैं, किन्तु प्रारंभ से ही व्यक्ति को यह ज्ञान रखना चाहिए कि वह क्या करने जा रहा है।

28·3 अंग्रेजी वर्तनी की कठिनाई प्रारंभिक शिक्षा में पर्याप्त विलम्ब उत्पन्न करती है और प्रौढ़ों का पर्याप्त समय खा जाती है। जब स्पेनी, बोहेमियाई अथवा फीनी की सर्वथा संगत लेखनप्रणाली दिखाई पड़ती है तो स्वभावतः यह इच्छा होती है कि काश अंग्रेजी में भी ऐसी व्यवस्था होती।

यह सही नहीं है कि लेखनप्रणाली के परिवर्तन से अंग्रेजी भाषा में परिवर्तन आ जाएगा। हम लोगों की भाषा वही रहती है चाहे हम किसी लेख प्रणाली से लिखें। हां, अन्ततोगत्वा लेखनप्रणाली से कुछ भाषाई विकल्प आते हैं (§ 27.6)। इसके अतिरिक्त सौन्दर्य-भावना से भी—और यहां इसी पर ध्यान है—भद्दे वर्तनी-उच्चारणों के घटक से दूर होने का बड़ा लाभ भी होगा। यह मानना एक भूल है कि अंग्रेजी किसी प्रकार एक "अध्वन्यात्म भाषा" है जोकि वर्णक लेखन द्वारा संगतिपूर्वक संकेतित नहीं की जा सकती है, अन्य सभी भाषाओं के समान, अंग्रेजी स्वनिमीय इकाइयों की ठीक-ठीक परिभाषा योग्य परिसीमा के भीतर रहती है। केवल मानक अंग्रेजी उच्चारण के प्रान्तीय प्रतिरूपों के बीच कोई मध्यमार्ग निकालना आवश्यक होगा। इस प्रकार केन्द्रीय पश्चिमी अमेरिकन जैसे प्रतिरूपों का [r] सुरक्षित रखा जाएगा क्योंकि यह ब्रिटिश *red* [red], far [fa:], bird [bɔ:d], bitter [ˈbitɔ] जैसे रूपों में सरलतम स्वनिमीय विश्लेषण देगा। इसके विपरीत, [ɛ] जैसे bad में और [a:] जैसे bath में ब्रिटिश भेद स्पष्टतया सुरक्षित रहेगा। यह मानना ठीक नहीं है कि लेखन असम्बोध्य होगा यदि समध्वनिकों (जैसे, pear, pair, pare अथवा piece, peace) की एक सी वर्तनी हो। लेखन जो भाषण के स्वनिमों को उत्पन्न करता है भाषण के समान ही सम्बोध्य होता है। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी के वर्तमान अनियमित लेखन में ठीक यही कमी है कि स्वनिमीय विभिन्न रूप जैसे read [rijd, red], lead [lijd, led] अथवा tear [tiɔ, tɛɔ] के लिए एक से लिपि-चिह्न रखे जाते हैं। शिक्षित लोगों की यह धारणा होती है कि लेखीय विचित्रताएँ, जैसे ghost अथवा rhyme की वर्तनी, किसी प्रकार शब्दों के लक्षणार्थ से सम्बद्ध है, अतिशिक्षित लोगों में से कुछेक के लिए ये शब्द निस्संदेह कुछ पुस्तकीय लक्ष्यार्थ प्रकट करते हैं जिसका अच्छे लेखक परिहार करते हैं। मानक अंग्रेजी के सभी प्रतिरूपों के लिए सरल तथा प्रभावशाली लिपिमाला बनाना कोई बहुत कठिन कार्य नहीं है। उसका प्रयोग समय और श्रम की पर्याप्त बचत करेगा और अंग्रेजी भाषा को हानि पहुंचाने की अपेक्षा मानक भाषा का सामान्य स्तर ऊँचा करेगा और अमानक का ठीक स्वरूप मातृभाषा-भाषियों के सम्मुख प्रस्तुत करेगा और वर्तनी-उच्चारण की प्रवृत्ति दूर करेगा।

वास्तविक कठिनाई आर्थिक और राजनीतिक है। नई लिपि कोई प्राय:

पचास साल के भीतर सभी आधुनिक मुद्रित पुस्तकों को कठिन तथा असम्बोध्य बना देगी, हमारे पोते-परपोतों के लिए आज के अंग्रेजी के मुद्रित-रूपों का वही विलक्षण प्रभाव होगा जो चॉसरकालीन वर्तनी का आजकल के लोगों के लिए। सभी उपयोगी ग्रंथों को पुनः मुद्रित करने का खर्चा और उससे उत्पन्न भ्रम बहुत बड़ा होगा। इसके अतिरिक्त स्वयं परिवर्तन जोकि प्रत्येक मुद्रक और प्रत्येक स्कूल-अध्यापक को प्रमाणित करेगा (सामान्य जनता का तो कहना ही क्या) उन गहरी जमी आदतों को परिवर्तित करने में सहयोग की एकरूपता चाहेगा और ये आदतें आधुनिक राजनीतिक और प्रशासकीय शक्तियों से कहीं ऊपर हैं। कुछ साल पहले अंग्रेजी वर्तनी में कहीं कम परिवर्तनों द्वारा सुधार का आन्दोलन चला था। मामूली परिवर्तन स्पेनी, जर्मन, डच, स्वेडी, रूसी जैसी लिपियों में सफलता से हुए जहाँ अनियमितताएँ थोड़ी थीं और कुछ सरल समंजनों द्वारा दूर या कम की जा सकती थीं। किन्तु अंग्रेजी के विषय में आंशिक परिवर्तन कठिनाई और बढ़ाएँगे, उदाहरणार्थ, आज किसी भी अंग्रेजी शब्द की वर्तनी [v] में अन्त होती है, कुछ शब्दों में v के बाद वाले अन्तिम अनुच्चरित e को छोड़ देने से (have के लिए hav लिखने से), किन्तु अन्यत्र ऐसा न करने से, कोई उपयोग न होगा। जब तक अंग्रेजी लिखने वालों की मुख्य प्रवृत्तियां अक्षुण्ण बनी हैं, गौण परिवर्तन कठिनाई और बढ़ाएँगे। हम यह आशा लगा सकते हैं कि कुछ भविष्यकाल में हमारा सामाजिक ढाँचा समन्वयन और परिवर्तनशीलता की मात्रा को पहुँच जाएगा जहाँ सर्वतोमुखी परिवर्तन सम्भव हो सकेगा, अथवा ध्वनि-उत्पादन की यांत्रिक विधियाँ अंग्रेजी की आधुनिक लिखने और मुद्रण की प्रवृत्तियों को निष्प्रभावित कर देंगी।

28·4 स्कूली शिक्षा में बाद में विदेशी भाषा शिक्षण की बहुमुखी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। सांस्कृतिक परम्परा अथवा निरन्तरता के लिए, जनसंख्या के कुछ भाग को प्राचीन भाषाओं से, विशेषतया लैटिन और ग्रीक से, परिचय बनाये रखना होता है। दूसरे राष्ट्रों से सम्पर्क बनाने के लिए, विशेषतया, तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति में साथ-साथ रहने के लिये, बहुत सारे व्यक्तियों को आधुनिक विदेशी भाषायें समझना आवश्यक है। हाई स्कूल और कालेजों में विदेशी भाषाओं का अध्ययन एक बड़ा व्यर्थ प्रयास है। सौ में से एक छात्र भी विदेशी भाषा को बोल या समझ नहीं पाता अथवा पढ़ भी नहीं पाता। विदेशी भाषा के यादृच्छिक शब्द

अर्थ का सीखना प्रायः शून्य के बराबर मूल्य रखता है। इसबके अनुभव स ने विदेशी भाषा शिक्षण की पद्धति के सम्बन्ध में बहुत वाद-विवाद उत्पन्न कर दिया। विभिन्न पद्धतियां जोकि विवेचन मात्र में तो बहुत विस्तार से विभिन्न हैं, वास्तविक कक्षा में अभ्यास के विषय में एकसी हैं। भाषा-शिक्षण के परिणाम प्रस्तुति के सैद्धान्तिक आधार पर कम और शिक्षण की परिस्थितियों तथा शिक्षक की योग्यता पर अधिक निर्भर हैं, आवश्यक केवल यह है कि कुछ त्रुटियों का परिहार किया जाय जो परम्परागत शिक्षण में आ जाती हैं।

जनसंख्या का एक अल्पसंख्यक समुदाय स्कूल में उतने समय तक पढ़ता है और उस स्थिति तक पहुँचता है जहाँ विदेशी भाषा-शिक्षण प्रारम्भ होता है। पहले इन अल्पसंख्यकों को भी लैटिन, ग्रीक का अध्ययन करना पड़ता है। इस प्रथा को छोड़ने के विरुद्ध जो कड़ा संघर्ष चलता है वह अवांछनीय है, क्योंकि छात्र इन भाषाओं को पढ़ना तक नहीं सीख पाते हैं। हाई-स्कूलों में चार साल वाला लैटिन पाठ्यक्रम पर्याप्तमात्रा में प्रचलित है। अन्य घटकों के अतिरिक्त इस पाठ्यक्रम की विफलता इस तथ्य से भी स्पष्ट है कि कठिनाई से कोई शिक्षक लैटिन पढ़ने का ज्ञान रखता है। आधुनिक विदेशी भाषायें कहीं अधिक अच्छी प्रकार से सिखाई जाती हैं क्योंकि इनके कुछ शिक्षक अपने विषय को जानते हैं। किन्तु यहाँ भी परिणाम इतने कम सफलताजनक हैं कि विदेशी भाषा शिक्षण को बन्द कर देने के आन्दोलन का सामना नहीं कर पाते। जैसी स्थिति है, बहुत कम आदमी, यहाँ तक कि मध्यमवर्गीय व्यक्ति भी, विदेशी भाषा का उपयोगी ज्ञान रखते हैं। ऐसे व्यक्ति की संख्या बढ़ाई जाय या नहीं और यदि बढ़ाई जाय तो चयन किस प्रकार किया जाय——यह एक बड़े पैमाने की शिक्षाविषयक समस्या है। हम लोग उस स्थिति से बहुत दूर हैं जहाँ यह छात्र की अपनी रुचि से निर्धारित होता हैं नकि माता-पिता की आर्थिक स्थिति अथवा संयोग वा प्रबल अनुराग से। विशेषतया हमको ऐसा करना चाहिये कि बच्चे जिस भाषा को घर पर सुनते हैं उसे पढ़ें।

दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न छात्रों की आयु का है। आठ साल का व्याकरण-स्कूल का पाठ्यक्रम प्रत्येक बच्चे के प्रायः चार साल समय को व्यर्थ करता है। यूरोपियन बच्चा चार-पाँच साल की प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा के बाद माध्यमिक स्कूल में आठ अथवा नौ साल के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेता है

जिसमें वह सामान्य शिक्षा प्राप्त करता है और जिसके अन्त में वह व्यवसायिक अध्ययन प्रारम्भ करता है। औपचारिक शिक्षा के अतिरिक्त वह सभी दिशाओं में इतना अधिक परिपक्व बुद्धि वाला होता है कि इसे सामान्य और प्रारम्भिक शिक्षाओं से संतोष नहीं होता और इसीलिये विचित्र व्यवहार और मूर्खतापूर्ण बातें करता है जोकि अमेरिकन कालेजों में दिखाई पड़ती हैं। चार साल की देरी जोकि उन छात्रों के इतिहास में स्पष्टतया प्रतीत होती है जो व्यावसायिक अध्ययन के लिए आते हैं बहुत गम्भीर देरी है। उतनी ही अधिकांश व्यक्तियों के लिए गम्भीर है जोकि ऐसे अध्ययन के लिये नहीं जाते हैं और इस देरी का विदेशी भाषा शिक्षण की प्रभावशालिता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। आठ-साल वाला व्याकरण-स्कूल का पाठ्यक्रम प्रशासकों और शिक्षाविशेषज्ञों का निहित स्वार्थ बन गया है और इस बात की बहुत थोड़ी आशा है कि स्कूल के पांचवें या छठे साल से माध्यमिक शिक्षा और विशेषतया विदेशी भाषा की शिक्षा प्रारम्भ हो जाये। फिर भी, यह कदाचित् इस शीघ्र प्रारम्भ के ही कारण है कि यूरोप में विदेशी भाषा शिक्षण को इतनी अधिक सफलता मिली है। इस अध्ययन का बाह्य और पुनरावर्ती स्वरूप पाठ्य सामग्री की सरलता और विश्वास की आवश्यकता यह सब छोटे बच्चों के पक्ष की बात है। छात्र जोकि विदेशी भाषा को हाई स्कूल या उसके बाद सीखना प्रारम्भ करता है विश्लेषण को केवल आवृत्ति के स्थान पर स्थानापन्न करना चाहता है और इस प्रकार अयोग्य शिक्षक से आधे रास्ते में मिलता है जो विदेशी भाषा के सम्बन्ध में तो बहुत कुछ कहता है लेकिन प्रयोग नहीं करता है। इन दो सीमाओं के बीच एक अठारहवीं सदी की योजना भी है, इसकी अपनी व्याकरणिक प्रतीत होने वाली धारणाएँ हैं और इसमें पहेली बुझने जैसा अनुवाद है।

प्राचीन भाषा में और बहुत से विद्यार्थियों के लिए आधुनिक भाषा में भी लक्ष्य भाषा का 'पढ़ना' है। यह परिस्थिति बहुधा भद्दे शिक्षण का एक बहाना बनती है। एक विद्यार्थी जोकि भाषा की ध्वनि नहीं जानता पढ़ने में बड़ी कठिनाई अनुभव करता है। वह विदेशी रूपों की तब तक याद नहीं रख सकता जब तक वे उसके लिये केवल वर्णों का संयोजन-मात्र हैं। सौन्दर्य-भावना के घटक के अतिरिक्त, ध्वन्यात्म-प्रवृत्तियों का सुस्पष्ट समुच्चय, चाहे सही चाहे गलत, द्रुत या शुद्ध वाचक (पढ़ने) के लिये अत्यावश्यक है। उन विद्यार्थियों के लिये जिन्हें विदेशी भाषा बोलनी है—

और वे जितने अब हैं उनसे अधिक होने चाहिएँ—यह प्रश्न अनावश्यक-सा है

प्रस्तुत सामग्री—विदेशी भाषा के हजारों रूपिम और विन्यासिम—केवल निरन्तर अभ्यास द्वारा सीखे जा सकते हैं। शब्दावली, जोकि बहुत विस्तृत होती है, सबसे अधिक कठिनाई प्रस्तुत करती है। प्रत्येक रूप जो प्रस्तुत किया जाए कई बार सामग्री में आना चाहिए। बहुत-सी पाठ्य-पुस्तकें नए शब्द तो अधिक दे देती हैं, किन्तु उनको बाद के अध्यायों में बार-बार लाती नहीं हैं। आधुनिक परीक्षणों से विदित हुआ है कि शब्दावली के नियन्त्रण से बड़े लाभ होते हैं। पाठ्य-पुस्तकों के लेखकों को और अध्यापकों को ठीक-ठीक यह मालूम रहना चाहिये कि कब एक नई कोषीय इकाई (अधिकाँश स्थलों पर नया शब्द) प्रथम बार लाई गई है और उसे आगे तक बार-बार चलाना चाहिए। कुछ भाषाओं, जैसे लैटिन अथवा जर्मन, की प्रस्तुति में शब्द-निर्माण परम्परागत स्कूली व्याकरणों में अपेक्षित महत्त्वपूर्ण अंग है। विदेशी रूपों के अर्थों को कठिनाई से समझाया जा सकता है। मातृभाषा में अनुवाद शिक्षार्थी को अवश्य कुमार्ग पर लगा देगा क्योंकि विभिन्न-भाषाओं की आर्थी इकाइयाँ मेल नहीं खाती हैं और छात्र, मातृभाषीय रूप के अभ्यस्त उद्‌दीपन के कारण, विदेशी इकाई को निस्सन्देह भूल जायेगा। विदेशी भाषा का नाभिकेन्द्रक वास्तविक वस्तुओं और परिस्थितियों के सम्बन्ध में प्रस्तुत करना चाहिए—कक्षा अथवा चित्रों द्वारा वाचन के सन्दर्भ से बहुत कुछ समझ में लाना चाहिए। हाँ, इसके लिये मातृभाषीय रूपों को पृष्ठभूमि में यथाशक्ति दूर रखना होगा।

व्याकरणिक धारणाओं को तभी स्वीकृत करना चाहिये जबकि वे उपयोगिता के परीक्षण में से उत्तीर्ण हो जाएँ, और तब भी उन्हें वास्तविक आवश्यकता के अनुसार पुनः स्थापित करना चाहिये। लैटिन और जर्मन में संज्ञारूप तथा लैटिन और फ्रेंच में क्रियारूप समझने के लिये अनिवार्य हैं, किंतु इनकी परम्परागत प्रस्तुति भ्रान्तिदायक और आवश्यकता से अधिक विस्तृत है। रूपसारणियों की स्मृति से इन रूपों का ऐसा समुच्चय उत्पन्न होता है कि इनका वास्तविक भाषण से इतना कम सम्बन्ध है कि वह व्यर्थ है।

शिक्षा के सभी भाषाई चरणों में यह अनिवार्य है कि व्यावहारिक उपयोगिता सम्मुख रखी जाये और विदेशी भाषा की पाठ्यसामग्री उस विदेशी राष्ट्र के जीवन तथा इतिहास के सम्बन्ध में प्रचुर सूचना देवे। सबसे ऊपर,

जो कुछ भी छात्र पढ़ता है या बोलता है, छात्र की योग्यता के भीतर हो : पहेली बूझना भाषा सीखना नहीं है।

28·5 भाषण के अंकन तथा प्रेषण में भाषाशास्त्र का व्यवहार, यथा आशुलेखन अथवा संकेतावली, अधिकतर स्वनिमिक सिद्धान्तों पर निर्भर होता है, वह विशेष विवेचन की अपेक्षा नहीं रखता। स्रोतों की अपेक्षा होगी और जितना ही अधिक यह स्रोत होगा उतना ही अधिक लाभ होगा तथा इसी आधार पर सार्वदेशिक भाषा का गठन होगा। संवादवहन के लिये अन्तर्राष्ट्रीय माध्यम के लाभ स्वयंसिद्ध हैं। अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के लिये यह आवश्यक नहीं कि कोई अपनी मातृभाषा छोड़ दे। इसका अभिप्राय केवल इतना ही होगा कि किसी भी राष्ट्र में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बोलने वाले अनेक विदेशी लोग होंगे। केवल किसी एक भाषा के लिए एकमत होने की आवश्यकता होगी जो सभी देशों में पढ़ी जाये। ऐसा तर्क रखा जाता है कि वास्तविक रूप से अवस्थित भाषाएं सीखने में कठिन हैं तथा किसी एक भाषा के अंगीकरण से वैमनस्य भी बढ़ेगा। तदनुसार, निदानस्वरूप अनेक कृत्रिम भाषाएं गढ़ी गईं। इन कृत्रिम भाषाओं में मात्र एक भाषा को थोड़ी बहुत सफलता मिली है और वह है सरलीकृत लैटिन अथवा रोमान्स, विशेष रूप से 'एस्पेरेन्टो' रूप में। इस प्रकार की भाषाएं अर्थ-कृत्रिम हैं। वे पश्चिमी यूरोप की प्रमुख व्याकरणिक कोटियों को बनाए रखती हैं। रूपप्रक्रिया की दृष्टि से वास्तविक भाषा की अपेक्षा वे अधिक सरल होती हैं। वाक्य-प्रक्रिया तथा आर्थी ढाँचा पश्चिमी यूरोप के भाषाप्रतिरूपों से निर्व्याज ले लिए गए हैं। इनका पर्याप्त विश्लेषण नहीं हुआ है जिससे एकरूपता के प्रति निश्चित हुआ जा सके। विशेषरूप से आर्थी क्षेत्र में विचारपूर्ण अथवा स्वार्थी योजना व्यवस्थित कर पाने की आशा कठिनाई से ही की जा सकती है। कोई ऐसा अधिवासी नहीं जिसके पास निर्णय के लिये पहुँचा जाए। संसार भर में एस्पेरेन्टो पढ़ने वाले लोगों को पाने की राजनीतिक कठिनाई, सम्भवतः, इतनी बड़ी होगी कि कोई प्राकृतिक भाषा उसे खदेड़ दे। अंग्रेजी के वरण की अधिक सम्भावना है और इस संभावना का मार्ग भी प्रमुख रूप से अनियमित लेखक पद्धति द्वारा अवरुद्ध हो जाता है।

28·6 एक सार्वदेशीय भाषा के लिए आन्दोलन भाषा को विस्तृत क्षेत्र के लिए उपयोगी बना देने का एक प्रयत्न है। भाषाशास्त्री से यह

अपेक्षा भी की जा सकती है कि वह भाषा की उपयोगिता को भाषणरूपों के प्रादुर्भाव द्वारा और अधिक करने का प्रयत्न करेगा जिससे व्यावहारिक जीवन में बहुमूल्य प्रतिक्रियाएँ प्राप्त होंगी। फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि सभी भाषाएँ पर्याप्त रूप से इतनी लचीली हैं कि बिना कृत्रिम सहायता के उनसे भाषणरूप मिल सके। इच्छानुसार वैज्ञानिक शब्दावली को ढाला तथा उसकी परिभाषा की जा सकती है। गणितीय तर्क किसी भाषा में अनूदित हो सकते हैं। समस्या यहाँ भाषाई संरचना की नहीं अपितु व्यावहारिक प्रयोग की है। प्राचीन और मध्यकाल का तर्क तथा न्यायशास्त्र वार्तालाप के एक सार-गर्भित तथा उपयोगी सूत्र तक पहुँचने की दिशा में गलत प्रयुक्त है। इस बीच गणित के रूप में इस प्रकार की एक तर्कसंगत व्यवस्था प्रकाश में आ गई है। यदि एक स्थिति का गणित की शब्दावली में विवरण प्रस्तुत किया जा सके, तो गणित के द्वारा इसे अनेक सरल आकृतियों में पुनः रखा जा सकता है। और अन्ततः इसके द्वारा एक उपयोगी व्यावहारिक प्रतिक्रिया तक पहुँचा जा सकता है। ये प्रक्रियाएँ व्यावहारिक जगत की समझदारी पर निर्भर रहती हैं। एक स्थिति का गणित की शब्दावली में (सामान्यतः संख्याओं द्वारा) विवरण और यह निर्धारण कि किस प्रकार का पुनर्विवरण संगत है (अर्थात् जिससे उचित प्रतिक्रिया मिल सके), भाषाई लक्षणों पर निर्भर नहीं रहता। जब 'दो' को 'एक धन एक' रूप में, तीन को 'दो धन एक' में, तथा चार को 'तीन धन एक' में परिभाषित किया जाता है, तो यहाँ भाषाशास्त्री का काम यह बताना नहीं कि यदि 'दो धन दो बराबर तीन' कहा जाय, तो कठिनाई होगी। भाषाशास्त्र केवल इतना कर सकता है कि वह गणित के वाचिक लक्षण को स्पष्ट करदे तथा इस ओर के रहस्यपूर्ण विपथन से बचा दे।

यदि यह स्थिति अपेक्षाकृत साधारण भाषणरूपों के लिए उपयुक्त है जो गणितीय वार्तालाप में प्रयुक्त होते हैं तो अपेक्षाकृत अधिक अस्पष्ट और उलझे वार्तालाप में यह स्थिति और भी अधिक उपयुक्त होगी। कोषीय तथा व्याकर-णिक विश्लेषण किसी सिद्धान्त की सच्चाई अथवा गलती नहीं निकाल सकता। भाषाशास्त्र केवल वाचिक प्रतिक्रिया प्रवृत्ति के गुणदोष निरूपण में हमें सक्षम बना देता है। भाषाशास्त्र यह भी नहीं कह सकता कि एक जाति में उत्पन्न शिशुओं के दशम भाग को असाध्य प्रतिस्पर्द्धा में छोड़ देना सहायक होगा क्योंकि उनके माँ-बाप विवाह संस्कार में नहीं बध सके। भाषाशास्त्री केवल इस बात को ध्यान में रखेगा कि शायद ही कभी इस तरह की बात पर चर्चा होती है और

अभी बहुत हाल तक इस प्रकार की चर्चा अश्लील मानी जाती रही है। धारणा के साथ कि कुछ आचार घातक होते हैं भाषाशास्त्री देखेगा कि भाषण द्वारा प्रतिक्रिया की असफलता (टालमटोल) इसका विशिष्ट लक्षण है। उच्चतर स्तर पर, जब इस प्रकार के आचारों पर विचार होने लगता है, ऐसा प्राय: देखा जाता है कि एक भाषण प्रतिक्रिया जो प्रत्यक्षत: मूल्यवान किन्तु असंगत समर्थन को प्रेरित करती है जैसा कि क्री इण्डियन के इस कथन में कि वह अपनी बहन का नाम इसलिए नहीं लेता क्योंकि वह उसका सम्मान करता है। यह उच्चतर अनुमोद की अभ्यर्थना बाद में चलकर तर्कसिद्धि में, आचार परप्रत्यय रूप से तर्कसंगत शब्दों में विचार करने की प्रवृत्ति (सामान्य ज्ञान अथवा तर्कसंगत) में, परिणत हो जाती है।

भाषाशास्त्र के जनप्रचलित (तथा दार्शनिक-विद्वत्तापूर्ण) विश्वासों के विश्लेषण द्वारा जिससे उस स्थिति पर प्रकाश पड़ता है जो वास्तव में भाषा के कारण है, व्यावहारिक प्रयोग से कुछ और अधिक उपयोग किया जा सकता है। यह ध्यान देने योग्य है कि सारे संसार में जन-प्रचलित विश्वास, भाषा के प्रभाव को अन्धविश्वास की दिशा में (जादू मंत्र, मोहनी, शाप, नाम-वर्जन आदि) अति कर देते हैं। किन्तु साथ ही इसके सामान्य तथा प्रत्यक्ष प्रभाव पर ध्यान नहीं देते। जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को भाषण द्वारा उत्तेजित करता है जनप्रचलित विश्वास मात्र भाषा को असमर्थ मानता है। उसके विचार में उसकी उस क्रिया में आधिभौतिक शक्ति 'मन' या 'विचार' का भी स्थानान्तरण होता है। जब कोई व्यक्ति संपन्न करने से पूर्व किसी कार्य का वर्णन करने लगता है, जनप्रचलित विश्वास प्रत्यक्ष संबंध मात्र से संतुष्ट नहीं हो जाता अपितु परवर्ती क्रियाओं की निर्धारिका आधिभौतिक इच्छा अथवा उद्‌देश्य की अतिसमीपी अभिव्यक्ति मानने लगता है। फिर सादृश्य का स्थानान्तरण हेतुवादी व्याख्याओं द्वारा अजीवी वस्तुओं के आचार तक होने लगता है। वृक्ष प्रकाश की ओर बढ़ते हैं, जल अपना तल ढूँढ़ता है, प्रकृति रिक्तता को गर्हित समझने लगती है।

28.7 यद्यपि भाषाशास्त्री व्यावहारिक वस्तुओं की व्याख्या की दिशा में इतनी दूर नहीं जा सकता जहाँ कहीं भी उसका अर्थ अन्य विज्ञानों से निर्धारित होता है उसे भाषाई रूपों का वर्गीकरण करना होता है। इस प्रकार, मूल संख्याओं की अवस्थिति का साक्ष्य सभी पठित भाषाओं में दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए यह देखकर कि इसके समूह में व्यवस्था, दार्शनिक प्रणाली, विस्तृत रूप से व्याप्त है, नृतत्त्वशास्त्री यह बताता है कि किसी समय उंगलियों पर गिनने

की प्रवृत्ति के कारण ऐसी स्थिति हुई है। अति-भाषाशास्त्रीय ज्ञान की सीमा तक, और जिससे अधिक संबंध है, संसार की भाषाओं के संबंध में सटीक तथा पूर्ण सूचना के अभाव में, सामान्य व्याकरण तथा कोष के लिए प्रयास निरर्थक सिद्ध हुआ है। जब तक कि यह अनुसंधान चलाया जाता रहे तथा इसके परिणामों का प्रयोग होता रहे, मानव व्यवहार के जातिगत रूपों के गहन अध्ययन का दम नहीं भरा जा सकता।

ऐतिहासिक ज्ञान के लिए भाषा के संबंध में उपयुक्त विवरणात्मक सूचना एक पूर्व-आवश्यकता है। अभी भी यह प्रत्यक्ष है कि मानव व्यापारों का ऐतिहासिक परिवर्तन बहुत घनिष्ठतापूर्वक भाषापरिवर्तन में देखा जा सकता है किन्तु साथ ही यह भी स्पष्ट है कि व्यावहारिक (अर्थात् अति-भाषाई) घटनाओं तथा वास्तविक रूप से घटित भाषाई-परिवर्तनों के सम्बन्ध में अधिक जानकारी की अपेक्षा है। अभी भी यह स्पष्ट है कि भाषा में परिवर्तन लघुतर तथा अपेक्षाकृत अधिक नियमित रूप से संरचित शब्दों की ओर प्रवृत्त होता है। ध्वनि परिवर्तन द्वारा शब्द लघ्वीकृत होते हैं तथा सादृश्य परिवर्तन के द्वारा अनियमित व्युत्पन्न रूपों के स्थान पर नियमित रूप आ जाते हैं। इस प्रक्रिया की गति तथा संगत दिशा, स्थान और काल के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। एक सामान्य पूर्वज भाषा से यदि आरंभ किया जाए तो आधुनिक अंग्रेजी में बहुत सारे लघ्वीकृत शब्द तथा सरल पदप्रक्रिया मिलती है, किन्तु लिथुएनी में अधिक बड़े शब्द तथा जटिल रूपप्रक्रिया है। इस सरलीकरण के परिणामस्वरूप समान व्यावहारिक परिस्थिति की प्रतिक्रिया में बहुत सारे शब्द मिलते हैं। विशेषक तथा संबंधसूचक लक्षण और स्थानापत्ति रूप, जो कभी प्रत्ययों (affix) द्वारा अथवा अन्य रूप-प्रक्रिया के लक्षण द्वारा स्पष्ट किए जाते थे बाद में अलग शब्द रूप में दिखाई पड़ने लगे। अन्तिम परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति आती है जो चीनी भाषा में है, जहाँ प्रत्येक शब्द एकपद है तथा प्रत्येक व्यावहारिक लक्षण जिसे अर्थव्यक्ति मिलती है, शब्द या पदसंहिति रूप में उसे प्राप्त करता है।

भाषाशास्त्र की पद्धतियाँ तथा परिणाम, क्षेत्र के साधारण होने पर भी, प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र से मेल खाती हैं जहाँ विज्ञान को सर्वाधिक सफलता मिली है। यह मात्र अग्रदृष्टि है किन्तु आशा से सुदूर नहीं कि भाषा के अध्ययन से मानव को घटनाओं को समझने तथा उन पर नियंत्रण रखने में सहायता मिलेगी।

NOTES

Full titles of books and journals will be found in the Bibliography at the end of these Notes.

Chapter 1

History of linguistic studies: Pedersen, *Linguistic science.* Older period Benfey. Indo-European studies: Delbrück, *Einleitung;* Streitberg, *Geschichte.* Germanic studies: Raumer; Paul, *Grundriss* 1.9; W. Streitberg and V. Michels in Streitberg, *Geschichte* 2.2. The history of a single scholastic tradition: Jellinek, *Geschichte der deutschen Grammatik.* Some interesting details in the first chapter of Oertel.

1. 2. The ancients' philosophical views about language: Steinthal, *Geschichte.* The anecdote about the children in the park: Herodotus 2.2.

The etymology of *lithos* in *Eymologicon magnum* (ed. T. Gaisford, Oxford, 1848) 565.50; that of *lucus* from Quintilian 1.6.34, and in Lactantius Placidus' gloss on Statius, *Achilleis* 593 (ed. R. Jahnke, Leipzig, 1898, p. 502).

Greek grammarians: G. Uhlig, *Grammatici Graeci,* Leipzig, 1883 ff.; Herodian edited by A. Lentz, Leipzig, 1867 ff.

1. 3. Theories about the origin of language: Steinthal, *Ursprung;* Wundt, *Sprache* 2.628.

The epigram about etymology is attributed to Voltaire by Max Müller, *Lectures on the science of language; Second series* (London, 1864), p. 238; I have sought it in vain in Voltaire's writings.

Latin grammarians: H. Keil, *Grammatici Latini,* Leipzig, 1857 ff.; H. Funaioli, *Grammaticae Romanae fragmenta,* Leipzig, 1907.

Medieval work in Latin grammar: Wackernagel, *Vorlesungen* 1.22; Thurot.

The Port-Royal grammar was written by A. Arnauld and C. Lancelot; it appeared in Paris in 1660, a second edition in 1664, another in Brussels in 1676; I have seen only this last (at the Newberry Library, Chicago); modern reprints with additions appeared at Paris in 1803 and 1810.

Eighteenth-century normative grammar: Fries; Leonard (very full account). The *shall* and *will* doctrine: C. C. Fries in *PMLA* 40.963 (1925).

Pallas, Peter Simon, *Linguarum totius orbis vocabularia comparativa,* St. Petersburg, 1786–89, two volumes (Newberry Library, Chicago). I have not seen the second edition. An alphabetical index, anonymous (according to the Newberry Library catalog, by Theodor Janković von Mirijevo) under the title *Sravnitel'nyj slovar' vsex jazykov i narečij,* in four volumes, appeared in St. Petersburg, 1790–91. Vuk Stefanovich (Karadjich) published a supplement (*Dodatak*) at Beč in 1822, correcting the Serbian and adding Bulgarian forms (copy in Newberry Library).

Adelung-Vater's *Mithridates* was named after the first book of its kind, an alphabetical list of languages, with a very few specimens, by Konrad Gessner

(1516–65), which appeared in Zurich in 1555; a new edition of this, with a commentary by Kaspar Waser, Zurich, 1660 (both editions in Newberry Library).

Junius, F., *Quatuor D. N. Jesu Christi Euangeliorum versiones perantiquae duae*, Dordrecht, 1665.

Hickes, G., *Institutiones grammaticae Anglo-Saxonicae et Moesogothicae*, Oxford, 1689; *Antiquae literaturae septentrionalis libri duo* (*Linguarum vett. thesaurus*), Oxford, 1705.

1. 5. On the philological-linguistic work of the Chinese, Karlgren, *Philology*. On Hindu grammar, Belvalkar; bibliography in *Lg* 5.267 (1929).

1. 6. Jones' address appeared in *Asiatick researches* (Calcutta, 1788) 1.422; this volume has been reprinted, repeatedly, as volume 1 of the *Transactions of the Royal Asiatic society of Bengal.*

1. 7. Etymology: Thurneysen; Thomas 1.

On Brugmann: W. Streitberg in *IJ* 7.143 (1921). On Delbrück: Hermann.

1. 8. The second edition (1886) of Paul's *Prinzipien* served as the basis for the excellent English adaptation by Strong-Logeman-Wheeler. On Paul's life and work: W. Streitberg in *IJ* 9.280 (1924).

1. 9. On Leskien: W. Streitberg in *IJ* 7.138 (1921); K. Brugmann in *Berichte Leipzig* 68.16 (1916). On Böhtlingk: B. Delbrück in *IF Anzeiger* 17.131 (1905). On de Saussure: A. Meillet in *BSL* 18.clxv (1913).

Chapter 2

Psychologists generally treat language as a side-issue. General discussion: Marett 130; Boas 1.5; Wundt, *Sprache;* Sapir; Allport; de Laguna; and, especially, Weiss.

2. 1. The term *philology*, in British and in older American usage, is applied not only to the study of culture (especially through literary documents), but also to linguistics. It is important to distinguish between *philology* (German *Philologie*, French *philologie*) and *linguistics* (German *Sprachwissenschaft*, French *linguistique*), since the two studies have little in common. On the confusion in English usage: H. Pedersen in *Litteris* 5.150 (1928); G. M. Bolling in *Lg* 5.148 (1929).

2. 4. The popular belief seems to be that in thinking we finally suppress the speech-movements altogether, like the horse in the story, that finally learned to go without fodder.

The use of numbers is characteristic of speech-activity at its best. Who would want to live in a world of pure mathematics? Mathematics is merely the best that *language* can do.

2. 5. The child's learning of language: Allport 132; Weiss 310. Almost nothing is known because observers report what the child says, but not what it has heard; so Stern; Preyer; Bühler. Learning to speak is the greatest feat in one's life: Jespersen, *Language* 103.

2. 8. Disturbances of speech: Kussmaul; Gutzmann, *Sprachheilkunde;* Wilson; Head; Travis.

2. 9. Gesture: Wundt, *Sprache* 1.143.

The universe symbolically reduced to library dimensions: A. P. Weiss in *Lg* 1.52 (1925).

Chapter 3

3. 2. The largest speech-communities: Jespersen, *Growth* 252; L. Tesnière in Meillet, *Langues.* For the languages of India, Tesnière's figures deviate slightly from those of Grierson (volume 1); both estimates are based on the census of 1921.

3. 3. Sex-differences: Jespersen, *Language* 237; E. Sapir in *Donum Schrijnen* 79.

3. 9. Saer discusses children's shift of language in Wales. Saer uses the term *bilingual* of children who have shifted from Welsh to English — an unfortunate extension; thus, in spite of Saer's careful distinction (32 ff.), West, *Bilingualism* confuses the situation of these children with genuine bilingualism, and both of these things with the position of a child who hears an entirely foreign language in school.

On real bilingualism: Ronjat; a realistic fictional account, based on the author's childhood, will be found in George Du Maurier's *Peter Ibbetson,* published in *Harper's new monthly magazine,* volume 83 (1891) and in book form.

Chapter 4

F. Müller surveys the languages of the world, giving grammatical sketches and bits of text. Finck, *Sprachstämme* gives a bare list. Meillet-Cohen is a collection of surveys by specialists; it contains maps and some bibliography. W. Schmidt has excellent bibliographies and, in a separate atlas, several maps. Useful charts also in Kroeber; for America in Wissler. India: Grierson. Africa: Meinhof, *Moderne Sprachforschung.*

4. 3. Relation of Hittite to Indo-European: E. H. Sturtevant in *Lg* 2.25 (1926); *TAPA* 40.25 (1929); *AJP* 50.360 (1929); a different view: W. Petersen in *AJP* 53.193 (1932).

4. 4. Languages now extinct: Pedersen, *Linguistic science.* A few legible but unintelligible inscriptions represent the language of the Picts in Scotland; it is uncertain whether Pictish was Indo-European (Celtic) or not; see Hubert 247.

4. 8. Deny in Meillet-Cohen. Chinese dialects: Arendt, *Handbuch* 258; 340; map.

4. 9. Papuan: S. H. Ray in *Festschrift Meinhof* 377.

4. 10. On the grouping of the Algonquian languages (in the text listed geographically) see T. Michelson in *BAE Annual report* 28.221 (1912).

Chapter 5

5. 1. *Semantics,* from *semantic* 'pertaining to meaning.' These words are less clumsy than *semasiology, semasiological.* Literally, then, semantics is the study of meaning. If one disregards the speech-forms and tries to study meaning or meanings in the abstract, one is really trying to study the universe in general; the term *semantics* is sometimes attached to such attempts. If one studies speech-forms and their meanings, semantics is equivalent to the study of grammar and lexicon; in this sense I have defined it in the text.

5. 2. Laboratory phonetics: Rousselot, *Principes;* Scripture; Panconcelli-Calzia, *Einführung* (excellent introductory survey); *Experimentelle Phonetik*

(theoretical outline); Gutzmann, *Physiologie;* Russell; Fletcher (especially for analysis of sound-waves and on the ear); Paget (except Chapters 7, 8, 9 and Appendix 8, which deal inadequately with unrelated topics).

5. 3. The phoneme: Baudouin de Courtenay 9; de Saussure 55; 63; E. Sapir in *Lg* 1.37 (1925); see also *Lg* 2.153 (1926); *Modern philology* 25.211 (1927); H. Pedersen in *Litteris* 5.153 (1928).

5. 8. The chief systems of phonetic transcription are assembled by Heepe. Visible Speech: Sweet, *Primer.* Analphabetic Notation: Jespersen, *Lehrbuch.* Other systems: Lepsius; Lundell; Bremer; *Phonetic transcription.*

International Phonetic Association Alphabet: Sweet, *Handbook; Collected papers* 285; Passy-Jones; Jespersen-Pedersen. Discussion and texts in *Maître phonétique.*

5. 10. On transliteration and the like: G. M. Bolling and L. Bloomfield in *Lg* 3.123 (1927); Palmer, *Romanization.*

Chapter 6

6. 1. Practical phonetics: Passy, *Phonétique* (the best introduction); Sweet, *Primer;* Rippmann; Soames; Noël-Armfield. Larger works: Sievers, *Grundzüge* (the classical text); Jespersen, *Lehrbuch;* Viëtor, *Elemente.*

American English: Krapp; Kenyon; H. Kurath in *SPE* 30.279 (1928); L. Strong in *RP* 5.70 (1928); *Maître phonétique* 3.5.40 (1927); bibliography: H. Kurath in *Lg* 5.155 (1929).

British English: Sweet, *Sounds;* Jones, *Outline;* Palmer, *First course;* Lloyd. Phonetic dictionaries: Michaelis-Jones; Jones, *English pronouncing dictionary;* Palmer-Martin-Blandford (the American part is inadequate).

German: Hempl; Viëtor, *German pronunciation; Aussprache; Aussprachewörterbuch;* Bremer; Siebs.

French: Passy, *Sons; Sounds;* Passy-Rambeau; G. G. Nicholson; Michaelis-Passy; Passy-Hempl.

Dutch: Kruisinga, *Grammar;* Scharpé. Danish: Jespersen, *Fonetik;* Forchhammer. Swedish: Noreen *VS.* Spanish: Navarro Tomás. Russian: Trofimov-Jones. North Chinese: Guernier.

6. 2. African languages: Meinhof, *Moderne Sprachforschung* 57.

6. 3. Voiced *h:* Broch 67; E. A. Meyer in *NS* 8.261 (1900).

Resonance: Paget.

6. 6. Domals: E. Srámek in *RP* 5.206 (1928); Noël-Armfield 99. Palatal stops: Noël-Armfield 91. Glottal stop: Jespersen, *Fonetik* 297. Glottalized stops: Boas 1.429; 565; 2.33. South-German stops: Winteler 20.

6. 7. Trills: Jespersen, *Fonetik* 417; *Lehrbuch* 137; Bohemian: Chlumsky in *RP* 1.33 (1911). Tongue-flips: Lundell 48; Noreen *VS* 1.451.

6. 8. German spirants: *Maître phonétique* 3.8.27 (1930). Arabic glottal spirants: Gairdner 27; W. H. Worrell in *Vox* 24.82 (1914); G. Panconcelli-Calzia in *Vox* 26.45 (1916).

6. 10. Laterals: Sweet, *Collected papers* 508; Boas 1.429; 565; Broch 45.

6. 12. Vowels: Russell, *Vowel;* Paget; C. E. Parmenter and S. N. Treviño in *Quarterly journal* 18.351 (1932). Vowel systems: N. Troubetzkoy in *Travaux* 1.39 (1929). For the English-speaker, study of the French vowels is especially enlightening: H. Pernot in *RP* 5.108; 289; 337 (1928).

CHAPTER 7

7. 2. Mora: E. Sapir in *Lg* 7.33 (1931).

7. 4. For the contrast between American and British treatment of unstressed vowels, see the introductory remarks of Palmer-Martin-Blandford; their general outlook, however, will scarcely find acceptance.

7. 5. *A name: an aim:* many examples are assembled by D. Jones in *Maître phonétique* 3.9.60 (1931).

7. 6. Pitch in (British) English: Jones, *Curves;* Palmer, *Intonation;* Armstrong-Ward. German: Barker; Klinghardt. French: Klinghardt-de Fourmestraux.

Eduard Sievers (1850–1932) gave many years to the study of non-distinctive speech-patterns; summary and bibliography: Sievers, *Ziele;* Ipsen-Karg.

7. 7. Word-pitch in Swedish and Norwegian: Noreen *VS* 2.201; E. Selmer in *Vox* 32.124 (1922). In Japanese: K. Jimbo in *BSOS* 3.659 (1925). North Chinese: Guernier; Karlgren, *Reader.* Cantonese: Jones-Woo. Lithuanian: R. Gauthiot in *Parole* 1900.143; Leskien, *Lesebuch* 128; in Serbian: R. Gauthiot in *MSL* 11.336 (1900); Leskien, *Grammatik* 123; in African languages: E. Sapir in *Lg* 7.30 (1931); in Athabascan: E. Sapir in *Journal de la Société* 17.185 (1925).

7. 8. Palatalization: Broch 203; velarization: 224.

CHAPTER 8

8. 1. An example of two languages with similar sounds in entirely different phonemic distribution: E. Sapir in *Lg* 1.37 (1925).

8. 7. Relative frequency of phonemes: Dewey; Travis 223; Zipf. The conclusions of Zipf do not seem warranted by his data; see also his essay in *Harvard studies* 40.1 (1929)

CHAPTER 9

Many of the examples in the text are taken from the excellent popular treatise of Greenough-Kittredge. See also Bréal; Paul, *Prinzipien* 74; Mc-Knight; Nyrop *Liv;* Darmesteter, *Vie;* Hatzfeld. For individual English words, see *NED.* Position of the study of meaning: L. Weisgerber in *GRM* 15.161 (1927). The mentalistic view of meaning: Ogden-Richards. Bibliography: Collin; G. Stern.

9. 1. Kinship terms: L. Spier in *University of Washington publications* 1.69 (1925). Demonstration: Weiss 21. The definition of *apple* is taken from *Webster's new international dictionary,* Springfield, 1931.

9. 7. Facetious malformation: M. Reed in *American speech* 7.192 (1932). Over-slurred formulas: Horn, *Sprachkörper* 18.

9. 8. See especially Collin 35.

9. 9. Examples of speech-levels: Noreen *VS* 1.21, with table on p. 30. Slang: Farmer-Henley; Mencken, *The American Language.*

9. 10. Tabu: Meillet, *Linguistique* 281; G. S. Keller in *Streitberg Festgabe* 182.

9. 11. Jespersen, *Language* 396; Hilmer; Wheatley. Hypochoristic forms: Sundén; Rotzoll; L. Müller in *Giessener Beiträge* 1.33 (1923).

Chapter 10

On the structure of languages: Sweet, *Practical study;* de Saussure; Sapir; Hjelmslev; see also *Lg* 2.153 (1926). The best example of descriptive analysis is the Hindus' work on Sanskrit; see note on § 1.6. English: Jespersen, *Grammar; Philosophy;* Kruisinga, *Handbook;* Poutsma, *Grammar;* German: Curme; French: Beyer-Passy. Various languages are analyzed in Boas and by Finck, *Haupttypen.*

10. 1. The asterisk before a form (as, **cran)* indicates that the writer has not heard the form or found it attested by other observers or in written documents. It appears, accordingly, before forms whose existence the writer is denying (as, **ran John*), and before theoretically constructed forms (such as **cran*, the theoretically posited independent word corresponding to the compound-member *cran-* in *cranberry*). Among the latter the most important are ancient speech-forms not attested in our written records, but reconstructed by the linguist.

Chapter 11

In this and the following chapters, examples from less familiar languages have been taken from the following sources: Arabic, Finck, *Haupttypen;* Bantu (Subiya), same; Chinese, same, and Arendt, *Einführung;* Cree in *Atti* 2.427; Eskimo, Finck, *Haupttypen* and Thalbitzer in Boas 1.967; Finnish, Rosenqvist; Fox, T. Michelson in various publications listed in *IJAL* 3.219 (1925); Georgian, Finck, *Haupttypen;* Gothic, Streitberg, *Elementarbuch;* Irish, Borthwick; Menomini, *Proceedings 21st* 1.336; Polish, Soerensen; Russian, Berneker, *Grammatik;* Samoan, Finck, *Haupttypen;* Sanskrit, Whitney, *Grammar;* Tagalog, Bloomfield; Turkish, Finck, *Haupttypen.*

11. 1. Traditionally and in school grammar, the term *sentence* is used in a much narrower value, to designate the subject-and-predicate sentence-type of the Indo-European languages. If we adhered to this use, we should have to coin a new term to designate the largest form in an utterance. The older definitions are philosophical rather than linguistic; they are assembled by Ries, *Satz.* The definition in the text is due to Meillet, *Introduction* 339; compare *Lg* 7.204 (1931).

11. 2. Impersonal sentence-types are usually confused with pseudo-impersonal types, which contain a pronominal actor (as, *it's raining*, § 15.6).

11. 5. Difficulty of making word-divisions: Passy, *Phonétique* 21.

11. 7. The French-speaker occasionally uses stress to mark word-divisions (Passy, *Sons* 61), but this use is not distinctive; it is comparable to our or the Frenchman's occasional pause between words. The word-unit in South German: Winteler 185; 187.

Chapter 12

On syntax: Morris; Wackernagel, *Vorlesungen;* Blümel; Jespersen, *Philosophy.* For English, beside the books cited for Chapter 10, see Curme-Kurath; for German, Paul, *Grammatik.*

12. 1. Definition of syntax: Ries, *Syntax.*

12. 4. Pitch and stress in Chinese sandhi: Karlgren, *Reader* 23; examples from Arendt, *Einführung* 14.

12. 10. Ranks: Jespersen, *Philosophy* 96.

12. 12. Bibliography of writings on word-order: E. Schwendtner in *Wörter und Sachen* 8.179 (1923); 9.194 (1926).

CHAPTER 13

Description of a complex morphologic system (ancient Greek): Debrunner.

13. 1. Classification of languages according to their morphology: Steinthal, *Charakteristik;* Finck, *Klassifikation; Haupttypen;* Sapir.

CHAPTER 14

14. 1. Compounds: Künzel; Darmesteter, *Traité.*

14. 4. Inclusion of words between members of compounds: T. Michelson in *IJAL* 1.50 (1917).

14. 6. Exocentric compounds: Uhrström; Last; Fabian.

14. 7. Denominative verbs: Bladin. On *drunken: drunk* and the like, M. Deutschbein in *Streitberg Festgabe* 36. Male and female in English: Knutson.

14. 8. Concrete suffixes of Algonquian in *Festschrift Meinhof* 393. Incorporation: Steinthal, *Charakteristik* 113. English *flip: flap: flop*, etc.: Warnke.

CHAPTER 15

15. 6. Impersonal and pseudo-impersonal types, bibliography: Ljunggren.

15. 7. Annatom Island: F. Müller 2.2.73.

CHAPTER 16

Some dictionaries:

English: *NED*; Bosworth-Toller; Stratmann; German: Grimm, *Wörterbuch;* Benecke-Müller-Zarncke; Lexer; Graff; Dutch: Verwijs-Verdam; de Vries-te Winkel; Danish: Dahlerup; Swedish: *Ordbok;* Old Norse: Cleasby-Vigfusson; Fritzner; Russian: Blattner; Latin: *Thesaurus;* French: Hatzfeld-Darmesteter-Thomas; Sanskrit: Böhtlingk-Roth; Chinese: Giles.

16. 5. English aspects: Poutsma, *Characters;* Jespersen, *Grammar* 4.164; Kruisinga, *Handbook* 2.1.340.

16. 7. Number of words used: Jespersen, *Language* 126; *Growth* 215.

Relative frequency of words: Zipf; Thorndike.

16. 8. Kham Bushman numerals: F. Müller, *Grundriss* 4.12; numerals, bibliography: A. R. Nykl in *Lg* 2.165 (1926).

CHAPTER 17

Linguistic change: Paul, *Prinzipien;* Sweet, *History of language;* Oertel Sturtevant; de Saussure.

History of various languages:

The Indo-European family: the best introduction is Meillet, *Introduction;* standard reference-book, with bibliography, Brugmann-Delbrück; summary, Brugmann, *Kurze vergleichende Grammatik;* recent, more speculative, Hirt, *Indogermanische Grammatik;* etymological dictionary, Walde-Pokorny.

The Germanic branch: Grimm, *Grammatik* (still indispensable); Streitberg,

Grammatik; Hirt, *Handbuch des Urgermanischen;* Kluge, *Urgermanisch;* etymological dictionary, Torp, *Wortschatz.*

English: readable introduction, Jespersen, *Growth;* Sweet, *Grammar; History of sounds;* Horn, *Grammatik;* Kaluza; Luick; Wyld, *Historical study; History; Short history;* Wright, *Elementary;* Jespersen, *Progress;* etymological dictionaries: *NED;* Skeat, *Dictionary;* Weekley, *Dictionary.* Old English: Sievers, *Grammatik;* Sweet, *Primer; Reader.*

German: readable summaries, Kluge, *Sprachgeschichte;* Behaghel, *Sprache;* larger works: Wilmanns; Paul, *Grammatik;* Sütterlin; Behaghel, *Geschichte; Syntax;* etymological dictionary, Kluge, *Wörterbuch.* Old High German, Braune; Old Low German (Old Saxon), Holthausen; Middle High German: Michels.

Dutch: Schönfeld; van der Meer; etymological dictionary, Franck-van Wijk.

Old Norse: Heusler; Noreen, *Grammatik.* Danish, Dahlerup, *Historie.* Dano-Norwegian: Seip; Torp-Falk, *Lydhistorie;* Falk-Torp, *Syntax;* etymological dictionaries: Falk-Torp, *Wörterbuch;* Torp, *Ordbok.* Swedish: Noreen *VS,* etymological dictionary, Tamm; see also Hellquist.

Gothic: Streitberg, *Elementarbuch;* Jellinek, *Geschichte der gotischen Sprache;* etymological dictionary, Feist.

Latin: Lindsay; Sommer; Stolz-Schmalz; Kent; etymological dictionary, Walde.

Romance: introductions, Zauner; Bourciez; Meyer-Lübke, *Einführung;* larger works: Gröber; Meyer-Lübke, *Grammatik;* etymological dictionary, Meyer-Lübke, *Wörterbuch.* French: Nyrop, *Grammaire;* Dauzat, *Histoire;* Meyer-Lübke, *Historische Grammatik.* Italian: d'Ovidio; Grandgent. Spanish: Hanssen; Menéndez Pidal.

Oscan and Umbrian: Buck; Conway.

Celtic: Pedersen, *Grammatik.* Old Irish: Thurneysen, *Handbuch.*

Slavic: Miklosich, *Grammatik;* Vondrák; Meillet, *Slave;* etymological dictionaries: Miklosich, *Wörterbuch;* Berneker, *Wörterbuch.* Russian: Meyer. Old Bulgarian: Leskien.

Greek: Meillet *Aperçu;* Brugmann-Thumb; Hirt, *Handbuch;* etymological dictionary, Boisacq; ancient dialects: Buck; modern Greek: Thumb.

Sanskrit: Wackernagel, *Grammatik;* etymological dictionary, Uhlenbeck. Marathi: Bloch.

Finno-Ugrian: Szinnyei. Semitic: Brockelmann. Bantu: Meinhof, *Grundzüge; Grundriss.*

On writing: Sturtevant; Jensen; Pedersen, *Linguistic science;* Sprengling.

17. 1. Picture messages: Wundt, *Sprache* 1.241; in America: G. Mallery in *BAE Annual reports* 4 (1886); 10 (1893); Ojibwa song record in W. Jones, *Ojibwa texts, Part 2,* New York, 1919 (*Publications of the American ethnological society,* 7.2), 591.

17. 2. Egyptian writing: Erman. Chinese: Karlgren, *Sound.* Cuneiform: Meissner. Runes: Wimmer; O. v. Friesen in Hoops, *Reallexikon* 4.5.

17. 9. Conventional spellings in Old English: S. Moore in *Lg* 4.239 (1928); K. Malone in *Curme volume* 110. Occasional spellings as indications of sound: Wyld, *History.* Inscriptions: Kent. Re-spelling of Homeric poems: J. Wacker-

nagel in *Beiträge zur Kunde* 4.259 (1878); R. Herzog; of Avesta: F. C. Andreas and J. Wackernagel in *Nachrichten Göttingen* 1909.42; 1911.1 (especially this); 1913.363.

17. 10. Rimes: Wyld, *Studies;* theoretical discussion: Schauerhammer. Alliteration as evidence: Heusler 11. Inaccuracy of older English phoneticians: Wyld, *History* 115.

Chapter 18

Comparative method: Meillet, *Linguistique* 19; *Méthode;* K. Brugmann in *IZ* 1.226 (1884).

18. 4. Latin *cauda, coda: Thesaurus* under *cauda;* Schuchardt, *Vokalismus* 2.302; Meyer-Lübke, *Einführung* 121. Latin *secale:* same 136. Suetonius: *Vespasian* 22.

18. 6. Gallehus horn: Noreen, *Altisländische Grammatik* 379. Germanic loan-words in Finnish: see note on § 26.3.

18. 7. On K. Verner: H. Pedersen in *IF Anzeiger* 8.107 (1898). Verner's discovery in *ZvS* 23.97; 131 (1877).

The acoustic value of the Primitive Indo-European vowel phoneme which in our formulae is represented by the inverted letter *e*, is unknown; linguists sometimes speak of this phoneme by the name *shwa*, a term taken from Hebrew grammar.

Primitive Indo-European form of Latin *cauda:* Walde under *cauda;* K. Ettmayer in *ZrP* 30.528 (1906).

Hittite: see note on § 4.3.

18. 8. The Indonesian example from O. Dempwolff in *Zeitschrift für Eingeborenensprachen* 15.19 (1925), supplemented by data which Professor Dempwolff has kindly communicated.

18. 11. Dialect differences in Primitive Indo-European: J. Schmidt; Meillet, *Dialectes;* Pedersen, *Groupement.* Figures 1 and 3 are modeled on those given by Schrader, *Sprachvergleichung* 1.59; 65.

18. 13. Hemp: Schrader, *Sprachvergleichung* 2.192. Herodotus 4.74.

18. 14. Schrader, *Sprachvergleichung;* Meillet, *Introduction* 364, Hirt, *Indogermanen;* Feist, *Kultur;* Hoops, *Waldbäume;* Hehn; Schrader, *Reallexikon.* Germanic pre-history: Hoops, *Reallexikon.* General: Ebert.

Terms of relationship: B. Delbrück in *Abhandlungen Leipzig* 11.381 (1889).

Chapter 19

Dialect geography: Jaberg; Dauzat, *Géographie; Patois;* Brøndum-Nielsen; Gamillscheg; Millardet; Schuchardt, *Klassifikation;* E. C. Roedder in *Germanic review* 1.281 (1926). Questions of principle in special studies: L. Gauchat in *Archiv* 111.365 (1903); Terracher; Haag; Kloeke; A. Horning in *ZrP* 17.160 (1893), reprinted in *Meisterwerke* 2.264.

Discussion of a single dialect: Winteler; of an area: Schmeller, *Mundarten;* Bertoni; Jutz. Dictionaries: Schmeller, *Wörterbuch;* Feilberg.

English dialects: Ellis, volume 5; Wright, *Dictionary; Grammar;* Skeat, *Dialects; Publications of the English dialect society; Dialect notes.* On the American atlas: H. Kurath in *Dialect notes* 6.65 (1930); M. L. Hanley in *Dialect notes* 6.91 (1931).

19. 2. With the fifth issue (1931), the German atlas takes up some of the hitherto omitted parts of the area. Studies based on the German atlas: *Deutsche Dialektgeographie; Teuthonista.*

19. 3. Kaldenhausen: J. Ramisch in *Deutsche Dialektgeographie* 1.17; 62 (1908).

19. 4. Every word has its own history: Jaberg 6.

19. 5. Latin *multum* in France: Gamillscheg 51; *fallit:* Jaberg 8.

19. 6. Latin *sk-* in French: Jaberg 5; my figures, taken directly from Gilléron-Edmont's maps, differ slightly from Jaberg's.

19. 8. French and Provençal: Tourtoulon-Bringuier. Low and High German: W. Braune in *Beiträge zur Geschichte* 1.1 (1874); T. Frings in *Beiträge zur Geschichte* 39.362 (1914); Behaghel, *Geschichte* 156 and map; see also map 3 of Wrede and the map given by K. Wagner in *Deutsche Dialektgeographie* 23 (1927).

19. 9. Rhenish fan: J. Ramisch in *Deutsche Dialektgeographie* 1 (1908); plates 1 and 2 of Wagner's study, cited in the preceding note; Frings.

Chapter 20

20. 2. Germanic consonant-shift: Russer.

20. 3. H. Grassmann in *ZvS* 12.81 (1863).

20. 6. The neo-grammarian hypothesis: E. Wechssler in *Festgabe Suchier* 349; E. Herzog; Delbrück, *Einleitung* 171; Leskien, *Declination* xxviii; 2; Osthoff-Brugmann, preface of volume 1; Brugmann, *Stand;* Ziemer. Against the hypothesis: Curtius; Schuchardt, *Lautgesetze;* Jespersen, *Language;* Horn, *Sprachkörper;* Hermann, *Lautgesetz.*

20. 7. Tabulations of Old English and modern English correspondences in Sweet, *History of sounds.*

20. 8. Algonquian forms: *Lg* 1.30 (1925); 4.99 (1928); E. Sapir in S. A. Rice 292.

20. 9. English *bait,* etc.: Luick 387; Björkman 36.

20. 10. Greek forms: Brugmann-Thumb 143; 362.

20. 11. Observation of sub-phonemic variants: Passy *Étude;* Rousselot, *Modifications;* L. Gauchat in *Festschrift Morf* 175; E. Hermann in *Nachrichten Göttingen* 1929.195. Relative chronology: O. Bremer in *IF* 4.8 (1893).

Chapter 21

21. 1. The symbol > means 'changed into' and the symbol < means 'resulting from.'

21. 2. Simplification of final consonants: Gauthiot.

21. 3. Latin clusters: Sommer 215. Russian assimilations: Meyer 71.

21. 4. Origin of Irish sandhi: Thurneysen, *Handbuch* 138; Brugmann-Delbruck 1.922. English voicing of spirants: Jespersen, *Grammar* 1.199; Russer 97.

21. 5. Palatalization in Indo-Iranian: Delbrück, *Einleitung* 128; Bechtel 62; Wackernagel, *Grammatik* 1.137.

21. 6. Nasalization in Old Norse; Noreen, *Altisländische Grammatik* 39.

21. 7. English *away,* etc.: Palmgren. Irish verb-forms: Thurneysen, *Handbuch* 62.

21. 8. Insertion of stops: Jespersen, *Lehrbuch* 62. Anaptyxis, etc.: Brugmann-Delbrück 1.819.

21. 9. Causes of sound-change: Wundt, *Sprache* 1.376; 522. Relative frequency: Zipf (see note on § 8.7). Experiment misapplied: J. Rousselot in *Parole* 1901.641. Substratum theory: Jespersen, *Language* 191. Homonymy in Chinese: Karlgren, *Études*.

21. 10. Types of *r* in Europe: Jespersen, *Fonetik* 417. Dissimilation: K. Brugmann in *Abhandlungen Leipzig* 27.139 (1909); Grammont; A. Meillet in *MSL* 12.14 (1903). Assimilation: J. Vendryes in *MSL* 16.53 (1910); M. Grammont in *BSL* 24.1 (1923). Metathesis: Brugmann-Delbrück 1.863; M. Grammont in *MSL* 13.73 (1905); in *Streitberg Festgabe* 111; in *Festschrift Wackernagel* 72. Haplology: Brugmann-Delbrück 1.857.

CHAPTER 22

22. 2. The Old English word for "become": F. Klaeber in *JEGP* 18.250 (1919). Obsolescence: Teichert.

22. 3. Latin *apis* in France: Gilliéron, *Généalogie;* Meyer-Lübke, *Einführung* 103. Short verb-forms: A. Meillet in *MSL* 11.16 (1900); 13.359 (1905); J. Wackernagel in *Nachrichten Göttingen* 1906.147. English *coney NED* under *coney;* Jaberg 11.

22. 4. Homonymy: E. Richter in *Festschrift Kretschmer* 167. Latin *gallus* in southern France: Gilliéron-Roques 121; Dauzat, *Géographie* 65; Gamillscheg 40.

22. 6. Othello's speech (Act 3, Scene 3) explained in H. H. Furness' *New variorum edition,* volume 6 (Philadelphia, 1886).

22. 7. Tabu: see note on § 9.10.

CHAPTER 23

Analogic change: Wheeler; Paul, *Prinzipien* 106; 242; Strong-Logeman-Wheeler 73; 217; de Saussure 221; Darmesteter, *Création;* Goeders.

23. 1. Regular versus irregular combinations: Jespersen, *Philosophy* 18.

23. 2. Objections to proportional diagram of analogy: Herman, *Lautgesetz* 86.

23. 3. English *s*-plural: Roedler. Latin *senati:* Hermann, *Lautgesetz* 76.

23. 5. Back-formation: Nichtenhauser; O. Jespersen in *Festskrift Thomsen* 1. English verbs in *-en:* Raith. English verbs in *-ate:* Strong-Logeman-Wheeler 220.

23. 6. Verbal compound-members: Osthoff; de Saussure 195; 311. Popular etymology: A. S. Palmer; Andresen; Hasse; W. v. Wartburg in *Homenaje Menéndez Pidal* 1.17; Klein 55; H. Palander in *Neuphilologische Mitteilungen* 7.125 (1905); J. Hoops in *Englische Studien* 36.157 (1906).

23. 7. Analogic change in syntax: Ziemer; Middleton.

23. 8. Adaptation and contamination: M. Bloomfield in *AJP* 12.1 (1891); 16.409 (1895); *IF* 4.66 (1894); Paul, *Prinzipien* 160; Strong-Logeman-Wheeler 140; L. Pound in *Modern language review* 8.324 (1913); Pound, *Blends;* Bergström; G. H. McKnight in *JEGP* 12.110 (1913); bibliography: K. F. Johansson in *ZdP* 31.300 (1899). In pronouns: Brugmann-Delbrück 3.386. Psychological study: Thumb-Marbe; Esper; Oertel 183. Slips of the tongue: Meringer-Meyer. *Bob, Dick,* etc.: Sundén.

Chapter 24

See the references to Chapter 9.

24. 3. The wattled wall: R. Meringer in *Festgabe Heinzel* 173; H. Collitz in *Germanic review* 1.40 (1926). Words and things: *Wörter und Sachen.*

24. 4. Paul, *Prinzipien* 74.

24. 5. On *hard : hardly*, Uhler.

24. 6. Marginal meanings in aphoristic forms: Taylor 78.

24. 7. Sperber; S. Kroesch in *Lg* 2.35 (1926); 6.322 (1930); *Modern philology* 26.433 (1929); *Studies Collitz* 176; *Studies Klaeber* 50. Latin *testa:* A. Zauner in *Romanische Forschungen* 14.355 (1903). Passage from Wordsworth: Greenough-Kittredge 9.

Chapter 25

25. 2. First phonetic adaptation of borrowed words: S. Ichikawa in *Grammatical miscellany* 179.

25. 3. Scandinavian *sk-* in English: Björkman 10.

25. 5. Latin *Caesar* in Germanic: Stender-Petersen 350. German *Maut* from Gothic: F. Kluge in *Beiträge zur Geschichte* 35.156 (1909).

25. 6. English words with foreign affixes: G. A. Nicholson; Gadde; Jespersen, *Growth* 106. Suffix *-er:* Sütterlin 77.

25. 7. Loan-translation: K. Sandfeld Jensen in *Festschrift Thomsen* 166. Grammatical terms: Wackernagel, *Vorlesungen.*

25. 8. Early Germanic loans from Latin: Kluge, *Urgermanisch* 9; Jespersen, *Growth* 31. Latin loans from early Germanic: Brüch; Meyer-Lübke, *Einführung* 43.

Chapter 26

26. 1. Latin missionary words in English: Jespersen, *Growth* 41. Low German words in Scandinavian: Hellquist 561. Low German and Dutch in Russian: van der Meulen; O. Schrader in *Wissenschaftliche Beihefte* 4.99 (1903). Gender of English words in American German: A. W. Aron in *Curme volume* 11; in American Norwegian: G. T. Flom in *Dialect notes* 2.257 (1902).

West's erroneous statement (*Bilingualism* 46) about the fate of immigrant languages in America is based on an educationist's article (which contains a few figures with diametrically false interpretation) and on some haphazard remarks in a literary essay.

26. 2. Conflict of languages, bibliography: Paul, *Prinzipien* 390; see especially E. Windisch in *Berichte Leipzig* 1897.101; G. Hempl in *TAPA* 1898.31; J. Wackernagel in *Nachrichten Göttingen, Geschäftliche Mitteilungen* 1904.90. Welsh: Parry-Williams.

Place-names: Mawer-Stenton; Meier 145; 322; Dauzat, *Noms de lieux;* Meyer-Lübke, *Einführung* 254; Olsen.

Dutch words in American English: van der Meer xliv; these are not to be confused with the much older stratum discussed by Toll.

French words in English: Jespersen, *Growth* 84; 115.

Personal names: Barber; Ewen; Weekley, *Romance; Surnames;* Bähnisch; Dauzat, *Noms de personnes;* Meyer-Lübke, *Einführung* 244.

26. 3. Germanic words in Finnish: Thomsen; E. N. Setälä in *Finnisch-*

ugrische Forschungen 13.345 (1913); later references will be found in W. Wiget in *Streitberg Festgabe* 399; K. B. Wiklund in same, 418; Collinder

Germanic words in Slavic: Stender-Petersen. In Romance: Meyer-Lübke, *Einführung* 43 with references.

Gipsy: Miklosich, *Mundarten;* bibliography: Black; German Gipsy: Finck, *Lehrbuch.*

Ladin: Meyer-Lübke, *Einführung* 55.

26. 4. Scandinavian elements in English: Björkman; Xandry: Flom; Lindkvist; A. Mawer in *Acta philologica Scandinavica* 7.1 (1932); E. Ekwall in *Grammatical miscellany* 17.

Chilean Spanish: R. Lenz in *ZrP* 17.188 (1893); M. L. Wagner in *ZrP* 40.286; 385 (1921), reprinted in *Meisterwerke* 2.208. Substrata in Romance languages: Meyer-Lübke, *Einführung* 225.

Dravidian traits in Indo-Aryan: S. Konow in Grierson 4.278.

Balkan languages: Sandfeld. Northwest Coast languages: F. Boas in *Lg* 1.18 (1925); 5.1 (1929); *American anthropologist* 22.367 (1920).

26. 5. English and American Gipsies: J. D. Prince in *JAOS* 28.271 (1907); A. T. Sinclair in *Bulletin* 19.727 (1915); archaic form: Sampson.

Jargons, trade languages, creolized languages: Jespersen, *Language* 216. English: Kennedy 416; American Negro: J. A. Harrison in *Anglia* 7.322 (1884); J. P. Fruit in *Dialect notes* 1.196 (1892); Smith; Johnson. West African: P. Grade in *Archiv* 83.261 (1889); *Anglia* 14.362 (1892); E. Henrici in *Anglia* 20.397 (1898). Suriname: Schuchardt, *Sprache;* M. J. Herskovits in *Proceedings 23d* 713; *West-Indische gids* 12.35. Pidgin: F. P. H. Prick van Wely in *Englische Studien* 44.298 (1912). Beach-la-mar: H. Schuchardt in *Sitzungsberichte Wien* 105.151 (1884); *Englische Studien* 13.158 (1889); Churchill. India: H. Schuchardt in *Englische Studien* 15.286 (1890).

Dutch: H. Schuchardt in *Tijdschrift* 33.123 (1914); Hesseling; de Josselin de Jong; Afrikaans: van der Meer xxxiv; cxxvi.

For various Romance jargons, see the studies of H. Schuchardt, listed in *Schuchardt-Brevier* 22 ff.

Chinook jargon: M. Jacobs in *Lg* 8.27 (1932). Slavic German and Italian: Schuchardt, *Slawo-Deutsches.* Russian-Norwegian trade language: O. Broch in *Archiv für slavische Philologie* 41.209 (1927).

Chapter 27

27. 1. The child: Jespersen, *Language* 103; J. M. Manly in *Grammatical miscellany* 287.

27. 2. Gamillscheg 14.

27. 4. Rise of standard languages: Morsbach; Fladieck; Wyld, *History;* L. Morsbach in *Grammatical miscellany* 123. German: Behaghel, *Geschichte* 182; Kluge, *Luther.* Dutch: van der Meer. French: Brunot. Serbian: Leskien, *Grammatik* xxxviii. Bohemian: Smetánka 8. Lithuanian: E. Hermann in *Nachrichten Göttingen* 1929.25. Norwegian: Burgun; Seip.

27. 5. English *busy,* etc.: H. C. Wyld in *Englische Studien* 47.1; 145 (1913). English *er; ar,* etc.: Wyld, *History.*

Obsolete words revived: Jespersen, *Growth* 232; *derring-do:* Greenough-Kittredge 118.

Half-learned words in Romance: Zauner 1.24; Meyer-Lübke, *Einführung* 30.

27. 7. Medieval Latin: Strecker; Bonnet; C. C. Rice; forms in Du Cange.

Chapter 28

28. 1. Rise of new speakers to the standard language: Wyld, *Historical study* 212.

28. 2. Reading: Passy, *Enseignement;* Erdmann-Dodge; Fechner.

28. 4. Foreign-language teaching: Sweet, *Practical study;* Jespersen, *How to teach;* Viëtor, *Methodik;* Palmer, *Language study;* Coleman; McMurry. Bibliography: Buchanan-McPhee. Vocabulary: West, *Learning.*

28. 5. Artificial languages: R. M. Meyer in *IF* 12.33; 242 (1901); Guérard; R. Jones in *JEGP* 31.315 (1932); bibliography in *Bulletin* 12.644 (1908).

26. 6. General tendency of linguistic development: Jespersen, *Progress.*

BIBLIOGRAPHY

General bibliographic aids, including the periodic national bibliographies, are described in H. B. Van Hoesen and F. K. Walter, *Bibliography; practical, enumerative, historical; an introductory manual* (New York, 1928) and in Georg Schneider, *Handbuch der Bibliographie* (fourth edition, Leipzig, 1930).

Bibliography of various language families: W. Schmidt; Meillet-Cohen. Oriental languages, annually: *Orientalische Bibliographie.* Indo-European: Brugmann-Delbrück; annually in *IF Anzeiger*, since 1913 in *IJ;* these annuals list also some general linguistic publications. Greek: Brugmann-Thumb; Latin: Stolz-Schmalz; both of these languages annually in Bursian. Romance: Gröber; annually in Vollmöller, then in *ZrP Supplement.* Germanic, including English, in Paul, *Grundriss;* annually in *Jahresbericht;* the latter, up to 1900, is summarized in Bethge. English: Kennedy; current in *Anglia Beiblatt.* Serials dealing with Germanic languages are listed in Diesch. Germanic and Romance, bi-monthly in *Literaturblatt.*

Items I have not seen are bracketed.

Abhandlungen Leipzig: Sächsische Akademie der Wissenschaften, Leipzig; Philologisch-historische Klasse; Abhandlungen. Leipzig, 1850–.

Acta philologica Scandinavica. Copenhagen, 1926–.

AJP: American journal of philology. Baltimore, 1880–.

Allport, F. H., *Social psychology.* Boston, 1924.

American speech. Baltimore, 1925–.

Andresen, K. G., *Über deutsche Volksetymologie.* Sixth edition, Leipzig, 1899.

Anglia. Halle, 1878–; bibliographic supplement: *Beiblatt; Mitteilungen,* since 1890.

Archiv: Archiv für das Studium der neueren Sprachen. Elberfeld (now Braunschweig) 1846–. Often referred to as *HA* ("Herrigs Archiv").

Archiv für slavische Philologie. Berlin, 1876–.

Arendt, C., *Einführung in die nordchinesische Umgangssprache.* Stuttgart and Berlin, 1894 (= *Lehrbücher des Seminars für orientalische Sprachen zu Berlin,* 12).

Arendt, C., *Handbuch der nordchinesischen Umgangssprache. Erster Theil.* Stuttgart, 1891 (= same series as preceding, 7).

Armstrong, L. E., and Ward, I. C., *Handbook of English intonation.* Cambridge, 1926.

Atti del XXII congresso internazionale degli Americanisti. Rome, 1928.

BAE: Bureau of American ethnology; Annual reports. Washington, 1881–.

Bahlsen, L., *The teaching of modern languages.* Boston, 1905.

Bähnisch, A., *Die deutschen Personennamen.* Third edition, Leipzig, 1920 (= *Aus Natur und Geisteswelt,* 296).

Barber, H., *British family names.* Second edition, London, 1903.

Barker, M. L., *A handbook of German intonation.* Cambridge, 1925.

Baudouin de Courtenay, J., *Versuch einer Theorie der phonetischen Alternationen.* Strassburg, 1895.

Bechtel, F., *Die Hauptprobleme der indogermanischen Lautlehre seit Schleicher* Göttingen, 1892.

Behaghel, O., *Die deutsche Sprache.* Seventh edition, Vienna, 1923 (= *Das Wissen der Gegenwart,* 54).

Behaghel, O., *Deutsche Syntax.* Heidelberg, 1923–32 (= *Germanische Bibliothek,* 1.10).

Behaghel, O., *Geschichte der deutschen Sprache.* Fifth edition, Berlin and Leipzig, 1928 (= *Grundriss der germanischen Philologie,* 3).

Beiträge zur Geschichte der deutschen Sprache und Literatur. Halle, 1874–. Often referred to as *PBB* ("Paul und Braunes Beiträge").

Beiträge zur Kunde der indogermanischen Sprachen. Gottingen, 1877–1906. Often referred to as *BB* ("Bezzenbergers Beiträge").

Belvalkar, S. K., *An account of the different existing systems of Sanskrit grammar.* Poona, 1915.

Benecke, G. F., Müller, W., Zarncke, F., *Mittelhochdeutsches Worterbuch.* Leipzig, 1854–61. Supplemented by Lexer, below.

Benfey, T., *Geschichte der Sprachwissenschaft und Philologie in Deutschland* Munich, 1869 (= *Geschichte der Wissenschaften in Deutschland; Neuere Zeit,* 8).

Bennicke, V., and Kristensen, M., *Kort over de danske folkemaal.* Copenhagen, 1898–1912.

Bergström, G. A., *On blendings of synonymous or cognate expressions in English.* Dissertation, Lund, 1906.

Berichte über die Verhandlungen der sächsischen Akademie der Wissenschaften zu Leipzig; Philologisch-historische Klasse. Leipzig, 1849–.

Berneker, E., *Russische Grammatik.* Second edition, Leipzig, 1911 (= *Sammlung Göschen,* 68).

Berneker, E., *Slavisches etymologisches Wörterbuch.* Heidelberg, 1908– (= *Indogermanische Bibliothek,* 1.2.2).

Bertoni, G., *Italia dialettale.* Milan, 1916 (*Manuali Hoepli*).

Bethge, R., *Ergebnisse und Fortschritte der germanistischen Wissenschaft im letzten Vierteljahrhundert.* Leipzig, 1902.

Beyer, F., and Passy, P., *Elementarbuch des gesprochenen Französisch.* Cöthen, 1893.

Björkman, E., *Scandinavian loan-words in Middle English.* Halle, 1900–02 (= *Studien zur englischen Philologie,* 7; 11).

Black, G. F., *A Gypsy bibliography.* London, 1914 (= *Gypsy lore society monographs,* 1).

Bladin, V., *Studies on denominative verbs in English.* Dissertation, Uppsala, 1911.

Blattner, K., *Taschenwörterbuch der russischen und deutschen Sprache.* Berlin, 1906.

Bloch, J., *La formation de la langue marathe.* Paris, 1920 (= *Bibliothèque de l'École des hautes études; Sciences historiques et philologiques,* 215).

Bloomfield, L., *Tagalog texts.* Urbana, Illinois, 1917 (= *University of Illinois studies in language and literature,* 3.2–4).

Blümel, R., *Einführung in die Syntax.* Heidelberg, 1914 (= *Indogermanische Bibliothek,* 2.6).

Boas, F., *Handbook of American Indian languages.* Washington, 1911– (= *Smithsonian institution; Bureau of American ethnology; Bulletin* 40).

Böhtlingk, O., *Panini's Grammatik.* Second edition, Leipzig, 1887.

Böhtlingk, O., *Die Sprache der Jakuten.* St. Petersburg, 1851 (= volume 3 of A. T. von Middendorf, *Reise im äuszersten Norden und Osten Sibiriens*).

Böhtlingk, O., and Roth, R., *Sanskrit-Wörterbuch,* St. Petersburg, 1855–75; additional matter in O. Böhtlingk, *Sanskrit-Wörterbuch in kürzerer Fassung,* St. Petersburg, 1879–89 and in R. Schmidt, *Nachträge zum Sanskrit-Wörterbuch,* Hannover, 1924.

Boisacq, E., *Dictionnaire étymologique de la langue grecque.* Heidelberg and Paris, 1916.

Bonnet, M., *Le latin de Grégoire de Tours.* Paris, 1890.

Bopp, F., *Über das Konjugationssystem der Sanskritsprache.* Frankfurt am Main, 1816.

Bopp, F., *Vergleichende Grammatik des Sanskrit, Zend, Griechischen, Lateinischen, Litthauischen, Gothischen und Deutschen.* Berlin, 1833. Third edition, 1868–71.

Borthwick, N., *Ceachda beoga gäluingi. Irish reading lessons,* edited in simplified spelling by O. Bergin. Dublin, 1911.

Bosworth, J., and Toller, T. N., *An Anglo-Saxon dictionary.* Oxford, 1898. *Supplement,* by T. N. Toller, 1921.

Bourciez, E., *Éléments de linguistique romane.* Second edition, Paris, 1923.

Braune, W., *Althochdeutsche Grammatik.* Third-fourth edition, Halle, 1911 (= *Sammlung kurzer Grammatiken germanischer Dialekte,* 5).

Bréal, M., *Essai de sémantique.* Fourth edition, Paris, 1908. An English translation of the third (1897) edition, by Mrs. H. Cust, appeared under the title *Semantics* in London, 1900.

Bremer, O., *Deutsche Phonetik.* Leipzig, 1893 (= *Sammlung kurzer grammatiken deutscher Mundarten,* 1).

Broch, O., *Slavische Phonetik.* Heidelberg, 1911 (= *Sammlung slavischer Elementar- und Handbücher,* 1.2).

Brockelmann, C., *Semitische Sprachwissenschaft.* Leipzig, 1906 (= *Sammlung Göschen,* 291).

Brøndum-Nielsen, J., *Dialekter og dialektforskning.* Copenhagen, 1927.

Brüch, J., *Der Einfluss der germanischen Sprachen auf das Vulgärlatein.* Heidelberg, 1913 (= *Sammlung romanischer Elementar- und Handbücher,* 5.1).

Brugmann, K., *Kurze vergleichende Grammatik der indogermanischen Sprachen.* Strassburg, 1902–04.

Brugmann, K., *Zum heutigen Stand der Sprachwissenschaft.* Strassburg, 1885.

Brugmann, K., and Delbrück, B., *Grundriss der vergleichenden Grammatik der indogermanischen Sprachen.* Strassburg, 1886–1900. Second edition, 1897–1911.

Brugmann, K., and Thumb, A., *Griechische Grammatik.* Fourth edition, Munich, 1913 (= *Handbuch der klassischen Altertumswissenschaft,* 2.1).

Brunot, F., *Histoire de la langue française des origines à 1900.* Paris, 1905 –.

BSL: Bulletin de la Société de linguistique de Paris. Paris, 1869 –.

BSOS: Bulletin of the School of Oriental studies, London institution. London, 1917– .

Buchanan, M. A., and McPhee, E. D., *An annotated bibliography of modern language methodology.* Toronto, 1928 (= *Publications of the American and Canadian committees on modern languages*, 8); also in volume 1 of *Modern language instruction in Canada* (= same series, 6).

Buck, C. D., *A grammar of Oscan and Umbrian.* Boston, 1904.

Buck, C. D., *Introduction to the study of the Greek dialects*, Second edition, Boston, 1928.

Bühler, K., *Die geistige Entwicklung des Kindes.* Fifth edition, Jena, 1929.

Bulletin of the New York Public Library, New York, 1897– .

Burgun, A., *Le développement linguistique en Norvège depuis 1814.* Christiania, 1919–21 (= *Videnskapsselskapets skrifter; Historisk-filologisk klasse*, 1917.1; 1921.5).

Bursian, K., *Jahresbericht über die Fortschritte der klassischen Altertumswissenschaft.* Berlin (now Leipzig), 1873–.

Churchill W., *Beach-la-mar.* Washington, 1911 (= *Carnegie institution of Washington; Publications*, 154).

Cleasby, R., and Vigfusson, G., *An Icelandic-English dictionary.* Oxford, 1874.

Coleman, A., *The teaching of modern foreign languages in the United States.* New York, 1929 (= *Publications of the American and Canadian committees on modern languages*, 12).

Collin, C. S. R., *Bibliographical guide to sematology.* Lund, 1914.

Collinder, B., *Die urgermanischen Lehnwörter in Finnischen.* Uppsala, 1932 (= *Skrifter utgivna av K. humanistiska vetenskaps-samfundet i Uppsala*, 28.1).

Conway, R. S., *The Italic dialects.* Cambridge, 1897.

Curme, G. O., *A grammar of the German language.* Second edition, New York, 1922.

Curme, G. O., and Kurath, H., *A grammar of the English language;* volume 3, *Syntax*, by G. O. Curme. New York, 1931.

Curme volume of linguistic studies. Baltimore, 1930. (= *Language monographs published by the Linguistic society of America*, 7).

Curtius, G., *Zur Kritik der neuesten Sprachforschung.* Leipzig, 1885.

Dahlerup, V., *Det danske sprogs historie.* Second edition, Copenhagen, 1921.

Dahlerup, V., *Ordbog over det danske sprog.* Copenhagen, 1919–.

Darmesteter, A., *De la création actuelle de mots nouveaux dans la langue française.* Paris, 1877.

Darmesteter, A., *Traité de la formation des mots composés dans la langue française.* Second edition, Paris, 1894.

Darmesteter, A., *La vie des mots.* Twelfth edition, Paris, 1918.

Dauzat, A., *La géographie linguistique.* Paris, 1922.

Dauzat, A., *Histoire de la langue française.* Paris, 1930.

Dauzat, A., *Les noms de lieux.* Paris, 1926.

Dauzat, A., *Les noms de personnes.* Paris, 1925.

Dauzat, A., *Les patois.* Paris, 1927

Debrunner, A., *Griechische Wortbildungslehre.* Heidelberg, 1927 (= *Indogermanische Bibliothek*, 2.8).

de Josselin de Jong, J. P. B., *Het huidige Negerhollandsch.* Amsterdam, 1926 (= *Verhandelingen der K. akademie van wetenschappen; Afdeeling letterkunde; Nieuwe reeks*, 14.6).

de Laguna, G. A., *Speech; its function and development.* New Haven, 1927.

Delbrück, B., *Einleitung in das Studium der indogermanischen Sprachen.* Sixth edition, Leipzig, 1919 (= *Bibliothek indogermanischer Grammatiken*, 4).

Delbrück B., *Grundfragen der Sprachforschung.* Strassburg, 1901.

de Saussure, F., *Cours de linguistique générale.* Second edition, Paris, 1922.

Deutsche Dialektgeographie. Marburg, 1908–.

de Vries, M., and te Winkel, L. A., *Woordenboek der Nederlandsche taal.* The Hague, 1882–.

Dialect notes New Haven, 1890-

Diesch, C., *Bibliographie der germanistischen Zeitschriften.* Leipzig, 1927 (= *Bibliographic publications, Germanistic section, Modern language association of America*, 1).

Diez, F., *Grammatik der romanischen Sprachen.* Bonn, 1836–44. Fifth edition, 1882.

Donum natalicum Schrijnen. Nijmegen and Utrecht, 1929.

d'Ovidio, F., *Grammatica storica della lingua e dei dialetti italiani.* Milan, 1906 (*Manuali Hoepli*).

Du Cange, C. du Fresne, *Glossarium mediae et infimae Latinitatis.* Second edition, Niort, 1883–87.

Ebert, M., *Reallexikon der Vorgeschichte.* Berlin, 1924–.

Ellis, A. J., *On early English pronunciation.* London, 1869–89 (= *Early English text society; Extra series*, 2; 7; 14; 23; 56).

Englische Studien. Heilbronn (now Leipzig), 1877–.

Erdmann, B., and Dodge, R., *Psychologische Untersuchungen über das Lesen.* Halle, 1898.

Erman, A., *Die Hieroglyphen.* Leipzig, 1912 (= *Sammlung Göschen*, 608).

Esper, E. A., *A technique for the experimental investigation of associative interference in artificial linguistic material.* Philadelphia, 1925 (= *Language monographs published by the Linguistic society of America*, 1).

Ewen, C. L'Estrange, *A history of surnames of the British Isles.* London, 1931.

Fabian, E., *Das exozentrische Kompositum im Deutschen.* Leipzig, 1931 (= *Form und Geist*, 20).

Falk, H., and Torp, A., *Dansk-Norskens syntax.* Christiania, 1900.

Falk, H., and Torp, A., *Norwegisch-dänisches etymologisches Wörterbuch.* Heidelberg, 1910 (= *Germanische Bibliothek*, 1.4.1).

Farmer, J. S., and Henley, W. E., *Slang and its analogues.* London, 1890–1904. Second edition 1903–. Abridged version: *A dictionary of slang and colloquial English.* New York, 1921.

Fechner, H., *Grundriss der Geschichte der wichtigsten Leselehrarten.* Berlin, 1884.

Feilberg, H. F., *Bidrag til en ordbog over jyske almuesmaal.* Copenhagen, 1886–1910.

Feist, S., *Etymologisches Wörterbuch der gotischen Sprache.* Second edition, Halle, 1923.

Feist, S., *Kultur, Ausbreitung und Herkunft der Indogermanen.* Berlin, 1913.

Festgabe Heinzel: Abhandlungen zur germanischen Philolgoie; Festgabe für R. Heinzel. Halle, 1898.

Festgabe Suchier: Forschungen zur romanischen Philologie; Festgabe für H. Suchier. Halle, 1900.

Festschrift für . . . P. Kretschmer. Berlin, 1926.

Festschrift Meinhof. Hamburg, 1927.

Festschrift Morf: Aus romanischen Sprachen und Literaturen; Festschrift H. Morf. Halle, 1905.

Festschrift V. Thomsen. Leipzig, 1912.

Festschrift Wackernagel: Antidoron; Festschrift J. Wackernagel. Göttingen, 1924.

Festskrift til V. Thomsen. Copenhagen, 1894.

Finck, F. N., *Die Aufgabe und Gliederung der Sprachwissenschaft.* Halle, 1905.

Finck, F. N., *Die Haupttypen des Sprachbaus.* Leipzig, 1910 (= *Aus Natur und Geisteswelt*, 268).

Finck, F. N., *Die Klassifikation der Sprachen.* Marburg, 1901.

Finck, F. N., *Lehrbuch des Dialekts der deutschen Zigeuner.* Marburg, 1903.

Finck, F. N., *Die Sprachstämme des Erdkreises.* Leipzig, 1909 (= *Aus Natur und Geisteswelt*, 267).

Finnisch-ugrische Forschungen. Helsingfors, 1901–.

Fischer, H., *Geographie der schwäbischen Mundart.* Tübingen, 1895.

Flasdieck, H. M., *Forschungen zur Frühzeit der neuenglischen Schriftsprache.* Halle, 1922 (= *Studien zur englischen Philologie*, 65; 66).

Fletcher, H., *Speech and hearing.* New York, 1929.

Flom, G. T., *Scandinavian influence on southern Lowland Scotch.* New York, 1901 (= *Columbia University Germanic studies*, 1).

Forchhammer, H., *How to learn Danish.* Heidelberg, 1906. I have seen only the French version, *Le danois parlé*, Heidelberg, 1911.

Franck, J., and van Wijk, N., *Etymologisch woordenboek der Nederlandsche taal.* The Hague, 1912.

Fries, C. C., *The teaching of the English language.* New York, 1927.

Frings, T., *Rheinische Sprachgeschichte.* Essen, 1924. Also as contribution to *Geschichte des Rheinlandes*, Essen, 1922.

Fritzner, J., *Ordbog over det gamle norske sprog.* Christiania, 1886-96.

Gabelentz, G. von der, *Die Sprachwissenschaft.* Second edition, Leipzig, 1901.

Gadde, F., *On the history and use of the suffixes -ery (-ry), -age and -ment in English.* Lund, 1910 (*Svea English treatises*).

Gairdner, W. H. T., *The phonetics of Arabic.* London, 1925 (*The American University at Cairo; Oriental studies*).

Gamillscheg, E., *Die Sprachgeographie.* Bielefeld and Leipzig, 1928 (= *Neuphilologische Handbibliothek*, 2).

Gauthiot, R., *La fin de mot en indo-européen.* Paris, 1913.

The Germanic review. New York, 1926–.

Giessener Beiträge zur Erforschung der Sprache und Kultur Englands und Nordamerikas. Giessen, 1923–.

Giles, H. A., *A Chinese-English dictionary.* London, 1892.

Gilliéron, J., *L'aire clavellus.* Neuveville, 1912.

Gilliéron, J., *Généalogie des mots qui désignent l'abeille.* Paris, 1918 (= *Bibliothèque de l'École des hautes études; Sciences historiques et philologiques*, 225).

Gilliéron, J., *Pathologie et thérapeutique verbales.* Paris, 1921 (= *Collection linguistique publiée par la Société de linguistique de Paris*, 11).

Gilliéron, J., and Edmont, E., *Atlas linguistique de la France.* Paris, 1902–10. Supplement, 1920; maps for Corsica, 1914–15.

Gilliéron, J., and Mongin, J., *Scier dans la Gaule romane du sud et de l'est.* Paris, 1905.

Gilliéron, J., and Roques, M., *Études de géographie linguistique.* Paris, 1912.

Goeders, C., *Zur Analogiebildung im Mittel- und Neuenglischen.* Dissertation, Kiel, 1884.

Graff, E. G., *Althochdeutscher Sprachschatz.* Berlin, 1834–42. Index by H. F. Massmann, 1846. A supplement, *Die althochdeutschen Präpositionen*, Königsberg, 1824, appeared before the main work.

A grammatical miscellany offered to O. Jespersen. Copenhagen, 1930.

Grammont, M., *La dissimilation consonantique dans les langues indo-européennes et dans les langues romanes.* Dijon, 1895.

Grandgent, C. H., *From Latin to Italian.* Cambridge, Mass., 1927.

Greenough, J. B., and Kittredge, G. L., *Words and their ways in English speech.* New York, 1901.

[Griera, A., *Atlas lingüístic de Catalunya.* Barcelona, 1923–.]

Grierson, G. A., *Linguistic survey of India.* Calcutta, 1903–22.

Grimm, J., *Deutsche Grammatik.* Göttingen, 1819–37. Second edition of first volume, 1822. Index by K. G. Andresen, 1865. Reprint with additions from Grimm's notes, Berlin, then Gütersloh, 1870–98.

Grimm, J. and W., *Deutsches Wörterbuch.* Leipzig, 1854–.

GRM: Germanisch-romanische Monatsschrift. Heidelberg, 1909–.

Gröber, G., *Grundriss der romanischen Philologie.* Second edition, Strassburg, 1904–06.

Guérard, A. L., *A short history of the international language movement.* London, 1922.

Guernier, R. C., *Notes sur la prononciation de la langue mandarine de Pékin.* London, 1912 (Supplement to *Maître phonétique*).

Gutzmann, H., *Physiologie der Stimme und Sprache.* Second edition. Braunschweig, 1928 (= *Die Wissenschaft*, 29).

Gutzmann, H., *Sprachheilkunde.* Third edition, Berlin, 1924.

Haag, C., *Die Mundarten des oberen Neckar- und Donaulandes.* School program, Reutlingen, 1898.

Hanssen, F., *Spanische Grammatik auf historischer Grundlage.* Halle, 1910 (= *Sammlung kurzer Lehrbücher der romanischen Sprachen,* 6).

Harvard studies in classical philology. Boston, 1890

Hasse, A., *Studien über englische Volksetymologie.* Dissertation, Strassburg, 1904.

Hatzfeld, A., Darmesteter, A., Thomas, A., *Dictionnaire général de la langue française.* Sixth edition, Paris, 1920.

Hatzfeld, H., *Leitfaden der vergleichenden Bedeutungslehre.* Second edition, Munich, 1928.

Head, H., *Aphasia and kindred disorders of speech.* New York, 1926.

Heepe, M., *Lautzeichen.* Berlin, 1928.

Hehn, V., *Kulturpflanzen und Haustiere.* Seventh edition, Berlin, 1902.

Hellquist, E., *Det svenska ordförrådets ålder och ursprung.* Lund, 1929–30.

Hempl, G., *German orthography and phonology.* Boston, 1897.

Hermann, E., *Berthold Delbrück.* Jena, 1923.

Hermann, E., *Lautgesetz und Analogie.* Berlin, 1931 (= *Abhandlungen der Gesellschaft der Wissenschaften zu Göttingen; Philologisch-historische Klasse; Neue Folge,* 23.3).

Herzog, E., *Streitfragen der romanischen Philologie.* Halle, 1904.

Herzog, R., *Die Umschrift der älteren griechischen Literatur in das ionische Alphabet.* University program, Basel, 1912.

Hesseling, D. C., *Het Negerhollands der Deense Antillen.* Leiden, 1905.

Heusler, A., *Altisländisches Elementarbuch.* Second edition, Heidelberg, 1921 (= *Germanische Bibliothek,* 1.1.3).

Hilmer, H., *Schallnachahmung.* Halle, 1914.

Hirt, H., *Handbuch der griechischen Laut- und Formenlehre.* Second edition, Heidelberg, 1912 (= *Indogermanische Bibliothek,* 1.1.2).

Hirt, H., *Handbuch des Urgermanischen.* Heidelberg, 1931– (= *Indogermanische Bibliothek,* 1.1.21).

Hirt, H., *Die Indogermanen.* Strassburg, 1905.

Hirt, H., *Indogermanische Grammatik.* Heidelberg, 1921– (= *Indogermanische Bibliothek,* 1.13).

Hjelmslev, L., *Principes de grammaire générale.* Copenhagen, 1928 (= *Det k. danske videnskabernes selskab; Historisk-filologiske meddelelser,* 16.1).

Holthausen, F., *Altsächsisches Elementarbuch.* Second edition, Heidelberg, 1921 (= *Germanische Bibliothek,* 1.5).

Homenaje ofrecido a Menéndez Pidal. Madrid, 1925.

Hoops, J., *Reallexikon der germanischen Altertumskunde.* Strassburg, 1911–19.

Hoops, J., *Waldbäume und Kulturpflanzen im germanischen Altertum.* Strassburg, 1905.

Horn, W., *Historische neuenglische Grammatik; Erster Teil, Lautlehre.* Strassburg, 1908.

Horn, W., *Sprachkörper und Sprachfunktion.* Second edition, Leipzig, 1923 (= *Palaestra,* 135).

Hubert, H., *Les Celtes et l'expansion celtique.* Paris, 1932 (= *L'évolution de l'humanité,* 1.21).

Humboldt, W. von, *Über die Kawisprache.* Berlin, 1836–39 (in *Abhandlungen der Akademie der Wissenschaften zu Berlin,* as of 1832). Part 1 was

republished with an elaborate commentary, in two volumes and a supplement, by A. F. Pott, Berlin, 1876–80.

IF: Indogermanische Forschungen. Strassburg (now Berlin), 1892–. Supplement: *Anzeiger.*

IJ: Indogermanisches Jahrbuch. Strassburg (now Berlin), 1914–.

IJAL: International journal of American linguistics. New York, 1917–.

Ipsen, G., and Karg, F., *Schallanalytische Versuche.* Heidelberg, 1928 (= *Germanische Bibliothek,* 2.24).

IZ: Internationale Zeitschrift für allgemeine Sprachwissenschaft. Leipzig, 1884–90.

Jaberg, K., *Sprachgeographie.* Aarau, 1908.

Jaberg, K., and Jud, J., *Sprach- und Sachatlas Italiens und der Südschweiz.* Zofingen, 1928–.

Jahresbericht über die Erscheinungen auf dem Gebiete der germanischen Philologie. Berlin, 1880–.

JAOS: Journal of the American Oriental society. New York (now New Haven), 1850–.

JEGP: Journal of English and Germanic Philology. Bloomington, Indiana (now Urbana, Illinois), 1897–.

Jellinek, M. H., *Geschichte der deutschen Grammatik.* Heidelberg, 1913–14 (= *Germanische Bibliothek,* 2.7).

Jellinek, M. H., *Geschichte der gotischen Sprache.* Berlin and Leipzig, 1926 (= *Grundriss der germanischen Philologie,* 1.1).

Jensen, H., *Geschichte der Schrift.* Hannover, 1925.

Jespersen, O., *Fonetik.* Copenhagen, 1897–99.

Jespersen, O., *Growth and structure of the English language.* Fourth edition, New York, 1929.

Jespersen, O., *How to teach a foreign language.* London, 1904.

Jespersen, O., *Language; its nature, development, and origin.* London and New York, 1923.

Jespersen, O., *Lehrbuch der Phonetik.* Second edition, Leipzig, 1913.

Jespersen, O., *A modern English grammar on historical principles.* Heidelberg, 1909– (= *Germanische Bibliothek,* 1.9).

Jespersen, O., *The philosophy of grammar.* London and New York, 1924.

Jespersen, O., *Progress in language.* London, 1894.

(Jespersen, O., and Pedersen, H.,) *Phonetic transcription and transliteration.* Oxford, 1926 (Supplement to *Maître phonétique*).

Johnson, G. B., *Folk culture on St. Helena Island.* Chapel Hill, 1930 (in *University of North Carolina social study series*).

Jones, D., *An English pronouncing dictionary.* London, 1917.

Jones, D., *Intonation curves.* Leipzig, 1909.

Jones, D., *Outline of English phonetics.* Second edition, Leipzig and Berlin, 1922.

Jones, D., and Woo, K. T., *A Cantonese phonetic reader.* London, 1912.

Journal de la Société des americanistes de Paris, 1895–.

Jutz, L., *Die alemannischen Mundarten.* Halle, 1931.

Kaluza, M., *Historische Grammatik der englischen Sprache.* Second edition, Berlin, 1906–07.

Karlgren, B., *Études sur la phonologie chinoise.* Leiden and Stockholm, 1915 (= *Archives d'études orientales,* 15).

Karlgren, B., *A Mandarin phonetic reader.* Uppsala, 1917 (= *Archives d'études orientales,* 13).

Karlgren, B., *Philology and ancient China.* Oslo, 1926 (= *Instituttet for sammenlignende kulturforskning; Serie A: Forelesninger,* 8).

Karlgren, B., *Sound and symbol in Chinese.* London, 1923 (*Language and literature series*).

Kennedy, A. G., *A bibliography of writings on the English language.* Cambridge and New Haven, 1927.

Kent, R. G., *The sounds of Latin.* Baltimore, 1932 (= *Language monographs published by the Linguistic society of America,* 12).

Kent, R. G., *The textual criticism of inscriptions.* Philadelphia, 1926 (= *Language monographs published by the Linguistic society of America,* 2).

Kenyon, J. S., *American pronunciation.* Ann Arbor, 1924.

Klein, E., *Die verdunkelten Wortzusammensetzungen im Neuenglischen.* Dissertation, Königsberg, 1911.

Klinghardt, H., *Übungen im deutschen Tonfall.* Leipzig, 1927.

Klinghardt, H., and de Fourmestraux, M., *Französische Intonationsübungen.* Cöthen, 1911. English translation by M. L. Barker: *French intonation exercises,* Cambridge, 1923.

Kloeke, G. G., *De Hollandsche expansie.* The Hague, 1927 (= *Noord- en Zuid-Nederlandsche dialectbibliotheek,* 2).

Kluge, F., *Deutsche Sprachgeschichte.* Second edition, Leipzig, 1925.

Kluge, F., *Etymologisches Wörterbuch der deutschen Sprache.* Tenth edition, Berlin and Leipzig, 1924; eleventh edition, 1930–.

Kluge, F., *Urgermanisch.* Third edition, Strassburg, 1913 (= *Grundriss der germanischen Philologie,* 2).

Kluge, F., *Von Luther bis Lessing.* Fifth edition, Leipzig, 1918.

Knutson, A., *The gender of words denoting living beings in English.* Dissertation, Lund, 1905.

Krapp, G. P., *The English language in America.* New York, 1925.

Krapp, G. P., *The pronunciation of standard English in America.* New York, 1919.

Kroeber, A. L., *Anthropology.* New York, 1923.

Kruisinga, E., *A grammar of modern Dutch.* London, 1924.

Kruisinga, E., *A handbook of present-day English.* Fourth edition, Utrecht, 1925; Part 2 in fifth edition, Groningen, 1931–32.

Künzel, G., *Das zusammengesetzte Substantiv und Adjektiv der englischen Sprache.* Dissertation, Leipzig, 1910.

Kussmaul, A., *Die Störungen der Sprache.* Fourth edition, Leipzig, 1910.

Last, W., *Das Bahuvrihi-Compositum im Altenglischen, Mittelenglischen und Neuenglischen.* Dissertation, Greifswald, 1925.

Leonard, S. A., *The doctrine of correctness in English usage 1700–1800.* Madison, 1929 (= *University of Wisconsin studies in language and literature,* 25).

Lepsius, C. R., *Standard alphabet.* Second edition, London, 1863.

Le Roux, P., *Atlas linguistique de la Basse Bretagne.* Rennes and Paris, 1924–.

Leskien, A., *Die Declination im Slavisch-Litauischen und Germanischen.* Leipzig, 1876 (= *Preisschriften der Jablonowski'schen Gesellschaft*, 19).

Leskien, A., *Grammatik der altbulgarischen Sprache.* Second edition, Heidelberg, 1919 (= *Sammlung slavischer Lehr- und Handbücher*, 1.1).

Leskien, A., *Grammatik der serbokroatischen Sprache. 1. Teil.* Heidelberg, 1914 (= *Sammlung slavischer Lehr- und Handbücher*, 1.4).

Leskien, A., *Handbuch der altbulgarischen (altkirchenslavischen) Sprache.* [Fifth edition, Weimar, 1910.]

Leskien, A., *Litauisches Lesebuch.* Heidelberg, 1919 (= *Indogermanische Bibliothek*, 1.2).

Lexer, M., *Mittelhochdeutsches Handwörterbuch.* Leipzig, 1872–78.

Lg: Language; Journal of the Linguistic society of America. Baltimore, 1925–.

Lindkvist, H., *Middle English place-names of Scandinavian origin. Part 1.* Dissertation, Uppsala, 1912 (also in *Uppsala universitets årsskrift*, 1911.1).

Lindsay, W. M., *The Latin language.* Oxford, 1894.

Literaturblatt für germanische und romanische Philologie. Heilbronn (now Leipzig), 1880–.

Ljunggren, R., *Om den opersonliga konstruktionen.* Uppsala, 1926.

Lloyd, R. J., *Northern English.* Second edition, Leipzig, 1908 (= *Skizzen lebender Sprachen*, 1).

Luick, K., *Historische Grammatik der englischen Sprache.* Leipzig, 1914–.

Lundell, J. A., *Det svenska landsmålsalfabetet.* Stockholm, 1879 (= *Nyare bidrag till kännedom om de svenska landsmålen*, 1.2).

Le maître phonétique. Bourg-la-Reine (now London), 1889–.

Marett, R. R., *Anthropology*, New York, 1911 (= *Home university library*, 37).

Mawer, A., and Stenton, F. M., *Introduction to the survey of English place-names.* Cambridge, 1924 (= *English place-name society*, 1.1).

McKnight, G. H., *English words and their background.* New York, 1923.

McMurry, R. E., Mueller, M., Alexander, T., *Modern foreign languages in France and Germany.* New York, 1930 (= *Studies of the International institute of Teachers college*, 9).

Meier, J., *Deutsche Volkskunde.* Berlin and Leipzig, 1926.

Meillet, A., *Aperçu d'une histoire de la langue grecque.* Third edition, Paris, 1930.

Meillet, A., *Les dialectes indo-européens.* Second edition, Paris, 1922 (= *Collection linguistique publiée par la Société de linguistique de Paris*, 2).

Meillet, A., *Introduction a l'étude comparative des langues indo-européennes.* Third edition, Paris, 1912.

Meillet, A., *Les langues dans l'Europe nouvelle.* Second edition, Paris, 1928.

Meillet, A., *Linguistique historique et linguistique générale.* Paris, 1921 (= *Collection linguistique publiée par la Société de linguistique de Paris*, 8).

Meillet, A., *La méthode comparative en linguistique historique.* Oslo, 1925 (= *Instituttet for sammenlignende kulturforskning; Serie A: Forelesninger*, 2).

Meillet, A., *Le slave commun.* Paris, 1924 (= *Collection de manuels publiée par l'Institut d'études slaves*, 2).

Meillet, A., and Cohen, M., *Les langues du monde*, Paris, 1924 (= *Collection linguistique publiée par la Société de linguistique de Paris*, 16).

Meinhof, C., *Grundriss der Lautlehre der Bantusprachen*. Second edition, Berlin, 1910.

Meinhof, C., *Grundzüge einer vergleichenden Grammatik der Bantu-Sprachen*. Berlin, 1906.

Meinhof, C., *Die moderne Sprachforschung in Afrika*. Berlin, 1910.

Meissner, B., *Die Keilschrift*. Leipzig, 1913 (= *Sammlung Göschen*, 708).

Meisterwerke der romanischen Sprachwissenschaft. Munich, 1929–30.

Menéndez Pidal, R., *El idioma español en sus primieros tiempos*. Madrid, 1927 (= *Collección de manuales Hispania*, B2).

Menéndez Pidal, R., *Manual de gramática historica española*. Fourth edition, Madrid, 1918.

Menéndez Pidal, R., *Orígenes del español*. Madrid, 1926 (= *Revista de filología española; Anejo* 1).

Meringer, R., and Meyer, K., *Versprechen und Verlesen*. Stuttgart, 1895.

Meyer, K. H., *Historische Grammatik der russischen Sprache*. Bonn, 1923.

Meyer-Lübke, W., *Einführung in das Studium der romanischen Sprachen*. Third edition, Heidelberg, 1920 (= *Sammlung romanischer Elementar- und Handbücher*, 1.1).

Meyer-Lübke, W., *Grammatik der romanischen Sprachen*. Leipzig, 1890–1902. French translation, *Grammaire des langues romanes*. Paris, 1890–1906.

Meyer-Lübke, W., *Historische Grammatik der französischen Sprache; 1. Teil*. Second edition, Heidelberg, 1913; *2. Teil*, 1921 (= *Sammlung romanischer Elementar- und Handbücher*, 1.2).

Meyer-Lübke, W., *Romanisches etymologisches Wörterbuch*. Heidelberg, 1911–19; third edition, 1930– (= *Sammlung romanischer Elementar- und Handbücher*, 3.3).

Michaelis, H., and Jones, D., *A phonetic dictionary of the English language*. Hannover, 1913.

Michaelis, H., and Passy, P., *Dictionnaire phonétique de la langue française*. Second edition, Hannover, 1914.

Michels, V., *Mittelhochdeutsches Elementarbuch*. Third edition, Heidelberg, 1921 (= *Germanische Bibliothek*, 1.1.7).

Middleton, G., *An essay on analogy in syntax*. London, 1892.

Miklosich, F., *Etymologisches Wörterbuch der slavischen Sprachen*. Vienna, 1886.

Miklosich, F., *Über die Mundarten und die Wanderungen der Zigeuner Europa's*. Vienna, 1872–81 (also in volumes 21–23, 25–27, 30, 31 of *Denkschriften der Akademie der Wissenschaften; philosophisch-historische Klasse*).

Miklosich, F., *Vergleichende Grammatik der slavischen Sprachen*. Weimar, 1852–74; second edition of volume 1, 1879; of volume 3, 1876.

Millardet, G., *Linguistique et dialectologie romanes*. Montpellier and Paris, 1923 (= *Publications spéciales de la Société des langues romanes*, 28).

The modern language review. Cambridge, 1906–.

Modern philology. Chicago, 1903–.

Morris, E. P., *On principles and methods in Latin syntax*. New York, 1901.

Morsbach, L., *Über den Ursprung der neuenglischen Schriftsprache.* Heilbronn, 1888.

MSL: Mémoires de la Société de linguistique de Paris. Paris, 1868–.

Müller, F., *Grundriss der Sprachwissenschaft.* Vienna, 1876–88.

Müller, M., *Die Reim- und Ablautkomposita des Englischen.* Dissertation, Strassburg, 1909.

Nachrichten von der Gesellschaft der Wissenschaften zu Göttingen; Philologisch-historische Klasse. Göttingen.

Navarro Tomás, T., *Manual de pronunciación española.* Madrid, 1918. [English adaptation by A. M. Espinosa, *Primer of Spanish pronunciation.* New York, 1926.]

NED: A new English dictionary on historical principles, edited by J. A. H. Murray. Oxford, 1888–1928.

Neuphilologische Mitteilungen. Helsingfors, 1899–.

Nicholson, G. A., *English words with native roots and with Greek, Latin, or Romance suffixes.* Dissertation, Chicago, 1916 (= *Linguistic studies in Germanic,* 3).

Nicholson, G. G., *A practical introduction to French phonetics.* London, 1909.

Nichtenhauser, D., *Rückbildungen im Neuhochdeutschen.* Dissertation, Freiburg, 1920.

Noël-Armfield, G., *General phonetics.* Third edition, Cambridge, 1924.

Noreen, A., *Altnordische Grammatik: 1. Altisländische und altnorwegische Grammatik.* Fourth edition, Halle, 1923. *2. Altschwedische Grammatik,* Halle, 1904 (= *Sammlung kurzer Grammatiken germanischer Dialekte,* 4; 8).

Noreen VS: Noreen, A., *Vårt språk.* Lund, 1903–18. Selections translated into German by H. W. Pollak, *Einführung in die wissenschaftliche Betrachtung der Sprache.* Halle, 1923.

NS: Die neueren Sprachen. Marburg, 1894–.

Nyrop, K., *Grammaire historique de la langue française.* Copenhagen, 1899–1930.

Nyrop, K., *Ordenes liv.* Second edition, Copenhagen, 1925–26. A German translation by L. Vogt, *Das Leben der Wörter,* Leipzig, 1903. [Second edition, 1923.]

Oertel, H., *Lectures on the study of language.* New York, 1901.

Ogden, C. K., and Richards, I. A., *The meaning of meaning.* London, 1923.

Olsen, M., *Farms and fanes of ancient Norway.* Oslo, 1926 (= *Instituttet for sammenlignende kulturforskning; Serie A: Forelesninger,* 9).

Ordbok över svenska språket, utgiven av Svenska akademien. Lund, 1898–.

Orientalische Bibliographie. Berlin, 1888–.

Osthoff, H., *Das Verbum in der Nominalcomposition.* Jena, 1878.

Ostoff, H., and Brugmann, K., *Morphologische Untersuchungen.* Leipzig, 1878–1910.

Paget, R., *Human speech.* London, 1930.

Palmer, A. S., *Folk-etymology.* London, 1882.

Palmer, H. E., *English intonation.* Cambridge, 1922.

Palmer, H. E., *A first course in English phonetics.* Cambridge, 1922.

Palmer, H. E., *A grammar of spoken English.* Cambridge, 1924.

Palmer, H. E., *The principles of language-study.* London, 1921.

Palmer, H. E., *The principles of romanization.* Tokyo, 1931.

Palmer, H. E., Martin, J. V., Blandford, M. A., *A dictionary of English pronunciation with American variants.* Cambridge, 1926.

Palmgren, C., *A chronological list of English forms of the types alive, aloud, aglow.* School program, Norrköping, 1923.

Panconcelli-Calzia, G., *Einführung in die angewandte Phonetik.* Berlin, 1914.

Panconcelli-Calzia, G., *Experimentelle Phonetik.* Berlin and Leipzig, 1921 (= *Sammlung Göschen*, 844).

La parole. Paris, 1891–1904.

Parry-Williams, T. H., *The English element in Welsh.* London, 1923.

Passy, J., and Rambeau, A., *Chrestomathie française.* Fourth edition, Leipzig, 1918.

Passy, P., *L'enseignement de la lecture.* London, 1916 (Supplement to *Maître phonétique*).

Passy, P., *Étude sur les changements phonétiques.* Paris, 1890.

Passy, P., *Petite phonétique comparée.* Second edition, Leipzig, 1912.

Passy, P., *Les sons du français.* Eighth edition, Paris, 1917 [English translation, *The sounds of the French language.* Second edition, Oxford, 1913.]

Passy, P., and Hempl, G., *International French-English and English-French dictionary.* New York, 1904.

(Passy, P., and Jones, D.,) *Principles of the International phonetic association.* London, 1912 (Supplement to *Maître phonétique*).

Paul, H., *Deutsche Grammatik.* Halle, 1916–20.

Paul, H., *Grundriss der germanischen Philologie.* Second edition, Strassburg, 1900–09. Some of the contributions have appeared in later editions, as separate volumes; see Behaghel, *Geschichte;* Kluge, *Urgermanisch.*

Paul, H., *Prinzipien der Sprachgeschichte.* Halle, 1880; fifth edition, 1920. The second (1886) edition was translated into English by H. A. Strong, *Principles of the history of language*, London, 1889; an adaptation of the same edition is Strong-Logeman-Wheeler.

Pedersen, H., *Le groupement des dialectes indo-européens.* Copenhagen, 1925 (= *Det k. danske videnskabernes selskab; Historisk-filologiske meddelelser*, 11.3).

Pedersen, H., *Linguistic science in the nineteenth century;* English translation by J. Spargo. Cambridge, Mass., 1931.

Pedersen, H., *Vergleichende Grammatik der keltischen Sprachen.* Göttingen, 1909–13.

The phonetic transcription of Indian languages. Washington, 1916 (= *Smithsonian miscellaneous collections*, 66.6).

PMLA: Publications of the Modern language association of America. Baltimore (now Menasha, Wis.), 1886–.

Pott, A. F., *Etymologische Forschungen auf dem Gebiete der indo-germanischen Sprachen.* Lemgo, 1833. Second (entirely different) edition, 1859–76.

Pound, L., *Blends; their relation to English word formation.* Heidelberg, 1914 (= *Anglistische Forschungen*, 42).

Poutsma, H., *The characters of the English verb.* Groningen, 1921.

Poutsma, H., *A grammar of late modern English.* Groningen, 1904–26.

Preyer, W., *Die Seele des Kindes.* Seventh edition, Leipzig, 1908.

Proceedings of the 21st international congress of Americanists. Part 1. The Hague, 1924.

Proceedings of the 23d international congress of Americanists. New York, 1930.

Publications of the English dialect society. London, 1873–.

The quarterly journal of speech. Chicago, 1915–.

Raith, J., *Die englischen Nasalverben.* Leipzig, 1931 (= *Beiträge zur englischen Philologie,* 17).

Rask, R. K., *Undersøgelse om det nordiske eller islandske sprogs oprindelse.* Copenhagen, 1818.

Raumer, R. von, *Geschichte der germanischen Philologie.* Munich, 1870 (= *Geschichte der Wissenschaften in Deutschland; Neuere Zeit,* 9).

Revue des patois gallo-romans. Paris, 1887–93.

Rice, C. C., *The Phonology of Gallic clerical Latin after the sixth century.* Dissertation, Cambridge, Mass., 1902.

Rice, S. A., *Methods in social science.* Chicago, 1931.

Ries, J., *Was ist ein Satz?* Prague, 1931 (= his *Beiträge zur Grundlegung der Syntax,* 3).

Ries, J., *Was ist Syntax?* Second edition, Prague, 1927 (= his *Beiträge zur Grundlegung der Syntax,* 1).

Rippmann, W., *Elements of phonetics.* Second edition, New York, 1903.

Roedler, E., *Die Ausbreitung des s-Plurals im Englischen.* Dissertation, Kiel, 1911.

Romania. Paris, 1872–.

Romanische Forschungen. Erlangen, 1883–.

Ronjat, J., *Le développement du langage observé chez un enfant bilingue.* Paris, 1913.

Rosenqvist, A., *Lehr- und Lesebuch der finnischen Sprache.* Leipzig, 1925 (*Sammlung Jügel*).

Rotzoll, E., *Die Deminutivbildungen im Neuenglischen.* Heidelberg, 1910 (= *Anglistische Forschungen,* 31).

Rousselot, J., *Les modifications phonétiques du langage.* Paris, 1893 (also in *Revue des patois,* volumes 4, 5, and 5 supplement).

Rousselot, J., *Principes de phonétique expérimentale.* Paris, 1897–1908.

RP: Revue de phonétique. Paris, 1911–.

Russell, G. O., *Speech and voice.* New York, 1931.

Russell, G. O., *The vowel.* Columbus, 1928.

Russer, W. S., *De Germaansche klankverschuiving.* Haarlem, 1931 (= *Nederlandsche bijdragen op het gebied van Germaansche philologie en linguistiek,* 1).

Saer, D. J., Smith, F., Hughes, J.; *The bilingual problem.* Aberystwyth, 1924.

Sampson, J., *The dialect of the Gypsies of Wales.* Oxford, 1926.

Sandfeld, K., *Linguistique balkanique.* Paris, 1930 (= *Collection linguistique publiée par la Société de linguistique de Paris,* 31).

Sapir, E., *Language.* New York, 1921.

Scharpé, L., *Nederlandsche uitspraakleer.* Lier, 1912.

Schauerhammer, A., *Mundart und Heimat Kaspar Scheits.* Halle, 1908 (= *Hermaea,* 6).

Schleicher, A., *Compendium der vergleichenden Grammatik der indogermanischen Sprachen.* Weimar, 1861; fourth edition, 1876.

Schmeller, J. A., *Bayerisches Wörterbuch.* Second edition, Munich, 1872–77.

Schmeller, J. A., *Die Mundarten Bayerns.* Munich, 1821. A partial reprint, with an index as a separate volume (*Registerband*), by O. Mausser, appeared in 1929.

Schmidt, J., *Die Verwandtschaftsverhältnisse der indogermanischen Sprachen.* Weimar, 1872.

Schmidt, W., *Die Sprachfamilien und Sprachenkreise der Erde.* Heidelberg, 1926 (= *Kulturgeschichtliche Bibliothek*, 1.5).

Schönfeld, M., *Historiese grammatika van het Nederlands.* Second edition, Zutphen, 1924.

Schrader, O., *Reallexikon der indogermanischen Altertumskunde.* Second edition, Berlin and Leipzig, 1917–29.

Schrader, O., *Sprachvergleichung und Urgeschichte.* Third edition, Jena, 1906–07. English translation of the second (1890) edition, *Prehistoric antiquities of the Aryan peoples.* London, 1890.

Schuchardt, H., *Slawo-Deutsches und Slawo-Italienisches.* Graz, 1884.

Schuchardt, H., *Die Sprache der Saramakkaneger in Surinam.* Amsterdam, 1914 (= *Verhandelingen der k. Akademie van wetenschappen; Afdeeling letterkunde; Nieuwe reeks*, 14.6).

Schuchardt, H., *Über die Klassifikation der romanischen Mundarten.* [Graz, 1900.] Reprinted in *Schuchardt-Brevier*, 166.

Schuchardt, H., *Über die Lautgesetze.* Berlin, 1885. Reprinted in *Schuchardt-Brevier*, 51.

Schuchardt, H., *Der Vokalismus des Vulgärlateins.* Leipzig, 1866–67.

Schuchardt-Brevier: Hugo Schuchardt-Brevier. Second edition, Halle, 1928.

Scripture, E. W., *The elements of experimental phonetics.* New York, 1902.

Seip, D. A., *Norsk sproghistorie.* Christiania, 1920.

Siebs, T., *Deutsche Bühnenaussprache.* Fifteenth edition, Cologne, 1930.

Sievers, E., *Angelsächsische Grammatik.* Third edition, Halle, 1898 (= *Sammlung kurzer Grammatiken germanischer Dialekte*, 3). English translation by A. S. Cook, under the title *An Old English grammar*, Boston, 1903.

Sievers, E., *Grundzüge der Phonetik.* Fifth edition, Leipzig, 1901 (= *Bibliothek indogermanischer Grammatiken*, 1).

Sievers, E., *Ziele und Wege der Schallanalyse.* Heidelberg, 1924 (= *Germanische Bibliothek*, 2.14; also in *Stand und Aufgaben*, 65).

Sitzungsberichte der philosophisch-historischen Klasse der Akademie der Wissenschaften. Vienna, 1848–.

Skeat, W. W., *An etymological dictionary of the English language.* Third edition, Oxford, 1898.

Skeat, W. W., *English dialects.* Cambridge, 1911 (*Cambridge manuals of science and literature*).

Smetánka, E., *Tschechische Grammatik.* Berlin and Leipzig, 1914 (= *Sammlung Göschen*, 721).

Smith, R., *Gullah.* Columbia, S. C., 1926 (= *Bulletin of the University of South Carolina*, 190).

Soames, L., *Introduction to English, French, and German phonetics.* Third edition, London, 1913.

Soerensen, A., *Polnische Grammatik.* Berlin, 1900.

Sommer, F., *Handbuch der lateinischen Laut- und Formenlehre.* Second edition, Heidelberg, 1914 (= *Indogermanische Bibliothek,* 1.1.3).

SPE: Society for pure English; Tracts. Oxford, 1919–.

Sperber, H., *Einführung in die Bedeutungslehre.* Bonn and Leipzig, 1923.

Sprengling, M., *The alphabet.* Chicago, 1931 (= *Oriental institute communications,* 12).

Stand und Aufgaben der Sprachwissenschaft; Festschrift für W. Streitberg. Heidelberg, 1924.

Steinthal, H., *Charakteristik der hauptsächlichsten Typen des Sprachbaues.* Second edition, revised by F. Misteli. Berlin, 1893 (= his *Abriss der Sprachwissenschaft,* 2).

Steinthal, H., *Geschichte der Sprachwissenschaft bei den Griechen und Römern.* Berlin, 1863.

Steinthal, H., *Der Ursprung der Sprache.* Fourth edition, Berlin, 1888.

Stender-Petersen, A., *Slavisch-germanische Lehnwortkunde.* Gothenburg, 1927 (= *Göteborgs k. vetenskaps- och vitterhets-samhälles handlingar,* 4.31.4).

Stern, C. and W., *Die Kindersprache.* Leipzig, 1907.

Stern, G., *Meaning and change of meaning.* Gothenburg, 1932 (= *Göteborg högskolas årsskrift,* 38.1).

Stolz, F., and Schmalz, J. H., *Lateinische Grammatik.* Fifth edition, Munich, 1928 (= *Handbuch der klassischen Altertumswissenschaft,* 2.2).

Stratmann, F. H., *A Middle English dictionary.* Oxford, 1891.

Strecker, K., *Einführung in das Mittellatein.* Berlin, 1928.

Streiff, C., *Die Laute der Glarner Mundarten.* Frauenfeld, 1915 (= *Beiträge zur schweizerdeutschen Grammatik,* 8).

Streitberg, W., *Gotisches Elementarbuch.* Fifth edition, Heidelberg, 1920 (= *Germanische Bibliothek,* 1.2).

Streitberg, W., *Urgermanische Grammatik.* Heidelberg, 1896 (= *Sammlung von Elementarbüchern der altgermanischen Dialekte,* 1).

Streitberg, W., and others, *Geschichte der indogermanischen Sprachwissenschaft.* Strassburg (now Berlin), 1916– (part of *Grundriss der indogermanischen Altertumskunde,* begründet von K. Brugmann und A. Thumb).

Streitberg Festgabe. Leipzig, 1924.

Strong, H. A., Logeman, W. S., Wheeler, B. I., *Introduction to the study of the history of language.* London, 1891 (see Paul, *Prinzipien*).

Studies in English philology; A miscellany in honor of F. Klaeber. Minneapolis, 1929.

Studies in honor of Hermann Collitz. Baltimore, 1930.

Sturtevant, E. H., *Linguistic change.* Chicago, 1917.

Sundén, K., *Contributions to the study of elliptical words in modern English.* Uppsala, 1904.

Sütterlin, L., *Geschichte der Nomina Agentis im Germanischen.* Strassburg, 1887.

Sütterlin, L., *Neuhochdeutsche Grammatik.* Munich, 1924–.

Sweet, H., *An Anglo-Saxon primer.* Eighth edition, Oxford, 1905.

Sweet, H., *An Anglo-Saxon reader*. Eighth edition, Oxford, 1908.
Sweet, H., *Collected papers*. Oxford, 1913.
Sweet, H., *Handbook of phonetics*. Oxford, 1877.
Sweet, H., *A history of English sounds*. Oxford, 1888.
Sweet, H., *The history of language*. London, 1900.
Sweet, H., *A new English grammar*. Oxford, 1892–98.
Sweet, H., *The practical study of languages*. New York, 1900.
Sweet, H., *A primer of phonetics*. Third edition, Oxford, 1906.
Sweet, H., *The sounds of English*. Second edition, Oxford, 1910.
Szinnyei, J., *Finnisch-ugrische Sprachwissenschaft*. Leipzig, 1910 (= *Sammlung Göschen*, 463).
Tamm, F., *Etymologisk svensk ordbok*. Uppsala, 1890–.
TAPA: Transactions of the American philological association. Hartford, Conn. (now Middletown, Conn.), 1871–.
Taylor, A., *The proverb*. Cambridge, Mass., 1931.
Teichert, F., *Über das Aussterben alter Wörter im Verlaufe der englischen Sprachgeschichte*. Dissertation, Erlangen, 1912.
Terracher, A. L., *Les aires morphologiques*. Paris, 1914.
Teuthonista; Zeitschrift für deutsche Dialektforschung und Sprachgeschichte. Bonn und Leipzig, 1924–.
Thesaurus linguae Latinae editus auctoritate et consilio academiarum quinque Germanicarum. Leipzig, 1904–.
Thomas, A., *Nouveaux essais de philologie française*. Paris, 1904.
Thomsen, W., *Über den Einfluss der germanischen Sprachen auf die finnisch-lappischen*. Halle, 1870.
Thorndike, E. L., *A teacher's word book*. New York, 1931.
Thumb, A., *Grammatik der neugriechischen Volkssprache*. Berlin and Leipzig, 1915 (= *Sammlung Göschen*, 756).
Thumb, A., *Handbuch der neugriechischen Volkssprache*. Strassburg, 1910.
Thumb, A., and Marbe, K., *Experimentelle Untersuchungen über psychologische Grundlagen der sprachlichen Analogiebildung*. Leipzig, 1901.
Thurneysen, R., *Die Etymologie*. Freiburg i. B., 1905.
Thurneysen, R., *Handbuch des Altirischen*. Heidelberg, 1909 (= *Indogermanische Bibliothek*, 1.1.6).
Thurot, C., *Notices et extraits de divers manuscrits latins pour servir à l'histoire des doctrines grammaticales au moyen âge*. Paris, 1868 (= *Notices et extraits des manuscrits de la bibliothèque impériale et autres bibliothèques*, 22.2).
Tijdschrift voor Nederlandsche taal- en letterkunde. Leiden, 1881–.
Toll, J. M., *Niederländisches Lehngut im Mittelenglischen*. Halle, 1926 (= *Studien zur englischen Philologie*, 69).
Torp, A., *Nynorsk etymologisk ordbok*. Christiania, 1919.
Torp, A., *Wortschatz der germanischen Spracheinheit*. Göttingen, 1909 (= A. Fick, *Vergleichendes Wörterbuch der indogermanischen Sprachen*, volume 3, fourth edition).
Torp, A., and Falk, H., *Dansk-Norskens lydhistorie*. Christiania, 1898.
Tourtoulon, C. J. M., and Bringuier, M. O., *Étude sur la limite géographique de la langue d'oc et de la langue d'oïl*. Paris, 1876.
Travaux du Cercle linguistique de Prague. Prague, 1929–.

Travis, L. E., *Speech pathology*. New York, 1931.

Trofimov, M. V., and Jones, D., *The pronunciation of Russian*. Cambridge, 1923.

Uhlenbeck, C. C., *Kurzgefasstes etymologisches Wörterbuch der altindischen Sprache*. Amsterdam, 1898–99.

Uhler, K., *Die Bedeutungsgleichheit der altenglischen Adjektiva und Adverbia mit und ohne -lic (-lice)*. Heidelberg, 1926 (= *Anglistische Forschungen*, 62).

Uhrström, W., *Pickpocket, turnkey, wrap-rascal and similar formations in English*. Stockholm, 1918.

University of Washington publications in anthropology. Seattle, 1920–.

van der Meer, M. J., *Historische Grammatik der niederländischen Sprache*. Heidelberg, 1927 (= *Germanische Bibliothek*, 1.1.16).

van der Meulen, R., *De Hollandsche zee- en scheepstermen in het Russisch*. Amsterdam, 1909 (= *Verhandelingen der K. akademie van wetenschappen; Afdeeling letterkunde; Nieuwe reeks*, 10.2).

Verwijs, E., and Verdam. J., *Middelnederlandsch woordenboek*. The Hague, 1885–1930.

Viëtor, W., *Die Aussprache des Schriftdeutschen*. Tenth edition, Leipzig, 1921.

Viëtor, W., *Deutsches Aussprachewörterbuch*. Third edition, Leipzig, 1921.

Viëtor, W., *Elemente der Phonetik*. Sixth edition, Leipzig, 1915.

Viëtor, W., *German pronunciation*. Third edition, Leipzig, 1903.

Viëtor, W., *Die Methodik des neusprachlichen Unterrichts*. Leipzig, 1902.

Vollmöller, K. G., *Kritischer Jahresbericht über die Fortschritte der romanischen Philologie*. Munich and Leipzig (then Erlangen), 1890–1915.

Vondrák, V., *Vergleichende slavische Grammatik*. Second edition, Göttingen, 1924–28.

Vox: Internationales Zentralblatt für experimentelle Phonetik; Vox. Berlin, 1891–1922.

Wackernagel, J., *Altindische Grammatik*. Göttingen, 1896–.

Wackernagel, J., *Vorlesungen über Syntax; Erste Reihe*. Second edition, Basel, 1926. *Zweite Reihe*, Basel, 1924.

Walde, A., *Lateinisches etymologisches Wörterbuch*. Second edition, Heidelberg, 1910; third edition, 1930– (= *Indogermanische Bibliothek*, 1.2.1).

Walde, A., and Pokorny, J., *Vergleichendes Wörterbuch der indogermanischen Sprachen*. Berlin and Leipzig, 1930.

Warnke, C., *On the formation of English words by means of ablaut*. Dissertation, Halle, 1878.

Weekley, E., *A concise etymological dictionary of modern English*. New York, 1924.

Weekley, E., *The romance of names*. Third edition, London, 1922.

Weekley, E., *Surnames*. New York, 1916.

Weigand, G., *Linguistischer Atlas des dacorumänischen Sprachgebeites*. Leipzig, 1909.

Weiss, A. P., *A theoretical basis of human behavior*. Second edition, Columbus, 1929.

West, M., *Bilingualism*. Calcutta, 1926 (= *Bureau of education, India; Occasional reports*, 13).

West, M., *Leaning to read a foreign language.* London, 1926.

De West-Indische gids. The Hague, 1919–.

Wheatley, H. B., *A dictionary of reduplicated words in the English language.* London, 1866 (Appendix to the *Transactions of the Philological society* for 1865).

Wheeler, B. I., *Analogy and the scope of its application to language.* Ithaca, 1887 (= *Cornell university studies in classical philology,* 2).

Whitney, W. D., *Language and the study of language.* New York, 1867.

Whitney, W. D., *The life and growth of language.* New York, 1874.

Whitney, W. D., *A Sanskrit grammar.* Third edition. Boston, 1896.

Wilmanns, W., *Deutsche Grammatik;* volume 1, third edition, Strassburg 1911; volume 2, second edition, 1899; volume 3, 1906.

Wilson, S. A. Kinnier, *Aphasia.* London, 1926.

Wimmer, L., *Die Runenschrift.* Berlin, 1887.

Winteler, J., *Die Kerenzer Mundart.* Leipzig, 1876.

Wissenschaftlich Beihefte zur Zeitschrift des Allgemeinen deutschen Sprach vereins. Leipzig, 1891–.

Wissler, C., *The American Indian.* Second edition, New York, 1922.

Wörter und Sachen. Heidelberg, 1909–.

Wrede, F., *Deutscher Sprachatlas.* Marburg, 1926–.

Wright, J., *The English dialect dictionary.* London, 1898–1905.

Wright, J., *The English dialect grammar.* Oxford, 1905 (also as part of his *English dialect dictionary*).

Wright, J., and E. M., *An elementary historical New English grammar* London, 1924.

Wright, J. and E. M., *An elementary Middle English grammar.* Second edition, London, 1928.

Wundt, W., *Sprachgeschichte und Sprachpsychologie.* Leipzig, 1901.

Wundt, W., *Völkerpsychologie; Erster Band: Die Sprache.* Third edition, Leipzig, 1911.

Wyld, H. C., *Historical study of the mother tongue.* London and New York, 1906.

Wyld, H. C., *A history of modern colloquial English.* London, 1920.

Wyld, H. C., *A short history of English.* Third edition. London and New York, 1927.

Wyld, H. C., *Studies in English rhymes from Surrey to Pope.* London, 1923.

Xandry, G., *Das skandinavische Element in den neuenglischen Dialekten.* Dissertation (Münster University), Neu Isenburg, 1914.

Zauner, A., *Romanische Sprachwissenschaft; 1. Teil.* Fourth edition, Berlin and Leipzig, 1921. *2. Teil.* Third edition, 1914. (= *Sammlung Göschen,* 128; 250).

ZdP: Zeitschrift für deutsche Philologie. Halle, 1869–. Often referred to as *ZZ* ("Zachers Zeitschrift").

Zeitschrift für Eingeborenensprachen. Berlin, 1910–.

Zeuss, J. K., *Grammatica Celtica.* Berlin, 1853; second edition, by H. Ebel, 1871.

Ziemer, H., *Junggrammatische Streifzüge im Gebiete der Syntax.* Second edition, Colberg, 1883.

Zipf, G. K., *Selected studies of the principle of relative frequency in language.* Cambridge, Mass., 1932.

ZrP: Zeitschrift für romanische Philologie. Halle, 1887–; Supplement: *Bibliographie.*

ZvS: Zeitschrift für vergleichende Sprachforschung. Berlin, 1852–. Often referred to as *KZ* ("Kuhns Zeitschrift").

TABLE OF PHONETIC SYMBOLS

The phonetic alphabet used in this book is a slightly modified form of the alphabet of the International Phonetic Association. The main principle of this alphabet is the use of a single letter for each phoneme (distinctive sound, see Chapter 5) of a language. The symbols are used very flexibly, and represent rather different sounds in the transcription of different languages, but the use is consistent within each language. Thus, [t] represents an English sound in *tin* [tin] and a somewhat different French sound in *tout* [tu] 'all.' Additional symbols are used only when a language distinguishes additional phonemes; symbols such as italic [*t*] or capital [ᴛ] are used in addition to [t] only for languages like Russian or Sanskrit which distinguish more than one phoneme of the general type of [t].

The follo ing indications are to be read: "The symbol . . . represents the general type of the sound in . . ."

[a] American English *palm* [pam], French *patte* [pat]
[ɑ] British English *palm* [pɑːm], American English *top* [tɑp]
[ʌ] English *cut* [kʌt]
[b] *bib* [bib]
[c] unvoiced palatal stop
[ç] unvoiced palatal spirant
[d] *did* [did]
[ð] *then* [ðen]
[ʤ] *jam* [ʤɛm]
[e] *pet* [pet], French *été* [ete]
[ɛ] *add* [ɛd], French *dette* [dɛt]
[ə] *bird* [bəːd], *bitter* [ˈbitə], *fair* [fɛə]
[f] *fat* [fɛt]
[g] *gag* [gɛg]
[ɣ] voiced velar spirant
[h] *hid* [hid]
[i] *bit* [bit], French *fini* [fini]
[ï] high unrounded back vowel
[j] *yes* [jes], *gay* [gej]
[k] *cook* [kuk]

[l] *lull* [lʌl]
[ʎ] Italian *figlio* [ˈfiʎo]
[m] *mad* [mɛd]
[n] *none* [nʌn]
[ŋ] *sing* [siŋ]
[ɲ] French *signe* [siɲ]
[o] American English *cut* [kot], French *eau* [o]
[ɔ] *top* [tɔp], *saw* [sɔː]
[ø] French *peu* [pø]
[œ] French *peuple* [pœpl]
[p] *pin* [pin]
[r] *red* [red], French *riz* [ri]
[s] *see* [sij]
[ʃ] *show* [ʃow]
[t] *ten* [ten]
[ʧ] *chin* [ʧin]
[θ] *thin* [θin]
[u] *put* [put], French *tout* [tu]
[v] *veil* [vejl]
[w] *woo* [wuw]
[x] German *ach* [ax]
[y] French *vu* [vy]
[ɥ] French *lui* [lɥi]
[z] *zoo* [zuw]
[ʒ] *rouge* [ruwʒ]
[ʔ] glottal stop

Additional signs:

When a language distinguishes more than one phoneme within any one of the above types, variant symbols are introduced; thus, capitals denote the domal sounds of Sanskrit [ᴛ, ᴅ, ɴ], which are distinct from dental [t, d, n], and capital [ɪ, ᴜ] denote opener varieties, distinct from [i, u], as in Old Bulgarian; italic letters are used for palatalized consonants, as in Russian [*bit*] 'to beat,' distinct from [bit] 'way of being.'

A small vertical stroke under a letter means that the sound forms a syllable, as in *brittler* [ˈbritḷə].

A tilde over a letter means that the sound is nasalized, as in French *bon* [bõ]. A small raised [ʷ] means that the preceding sound is labialized.

The mark [ˈ] means that the next syllable is accented, as *be-*

nighted [be'najted]. The signs [" ˇ ˌ] are used in the same way, wherever several varieties of accent are distinguished. Numbers [1 2 3 4] indicate distinctions of pitch.

The colon means that the preceding sound is long, as in German *Kahn* [ka:n], contrasting with *kann* [kan].

Other marks of punctuation [. , ?] denote modulations in the sentence; [¿] is used for the modulation in *Who's there?* ['huw z 'ðɛə¿], contrasting with *Are you there?* [ɑ: ju 'ðɛə?].

शब्दानुक्रमणिका

तुलनात्मक भाषा-विज्ञान

मूल० ले० डा० पी० डी० गुणे, अनु० डा० भोलानाथ तिवारी

पुस्तक को आधुनिकतम बनाने तथा इसकी उपादेयता में वृद्धि करने के लिए आधुनिक विषयों का समावेश कर देने से यह अपने विषय की एक पूर्ण पुस्तक हो गई है। विद्यार्थियों के लिए ऐसे सामान्य सिद्धान्तों के मूल तत्वों का विवेचन करने वाली यह सर्वाधिक सुविधाजनक संक्षिप्त पुस्तक है जो भाषाओं के किसी विशिष्ट वर्ग अथवा परिवार के विशेष अध्ययन के आधार या उसकी पृष्ठ-भूमि हैं। साथ ही इसमें भारत में आर्यभाषा की—प्राचीन, मध्यवर्ती एवं आधुनिक—तीनों ही अवस्थाओं में उसके विकास का पर्याप्त, पूर्ण तथा अनेक व्याख्यात्मक उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकृत विवरणात्मक इतिहास भी है।

सात टिप्पणियाँ, तीन परिशिष्ट इस संस्करण में जोड़े गए हैं। उच्चारण, अवयवों का चित्र, तालिकाएँ, चार्ट, भारत का भाषिक मानचित्र, पारिभाषिक कोश आदि से ग्रंथ की उपयोगिता में और भी वृद्धि हो गई है।

भाषा-विज्ञान

मू० लेखक : एफ० मैक्समूलर : अनु० डा० उदयनारायण तिवारी

भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् मैक्समूलर ने लंदन के 'रायल इंस्टीच्यूट' के तत्त्वावधान में भाषा-विज्ञान के संबंध में नौ भाषण दिये थे। इन भाषणों को पूर्ण रूप से परिवर्तित-परिवर्धित एवं संशोधित करके पुस्तक का रूप दिया। अपने इस नवीन रूप में इस पुस्तक में चौदह अध्याय हैं। इन अध्यायों में इतनी सामग्री है जो हिन्दी में अब तक नहीं आ सकी है। प्रस्तुत पुस्तक विद्वान् लेखक के अन्य पुराने ग्रंथों की भांति 'क्लासिकल' महत्त्व की है। इसका अविकल अनुवाद प्रांजल हिन्दी में भाषा-विज्ञान के प्रकांड पंडित डा० उदयनारायण तिवारी ने किया है। परिशिष्टों में अभिनव सामग्री को भी दे दिया गया है।

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना

बंगलौर मद्रास